

हिन्दे घर

कलचर पर हर तरह की किताबें मिलने का एक बड़ा केन्द्र—पाठक हिन्दी, उदू, अंग्रेज़ी की अपनी मन-पसन्द किताबों के लिये हमें लिखें।

हमारी नई कितावें

महात्मा गाँनधी की वसीयत

(हिन्दी श्रीर उर्दू में) लेखक—गान्धीवाद के माने जाने विद्वान : हर्रु श्री मंजर श्रली सास्ता सके 225, क्रीमत दो रूपया

गोंन्धी बाबा

(षच्चों के लिये बहुत दिलचस्प किताब)
लेखिका—क़ुद्सिया जैदी
भूमिका—पन्डित जवाहरलाल नेहरू
मोटा काराज, मोटा टाइप, बहुत-सी रंगीन तसबीरें
दाम दो रुपया

—: ०: —
पंडित सुन्दरलाल जी की लिखी कितावें
गीता और क्रूरान

275 सके. दाम ढाई रूपया

हिन्दू मुसलिम एकता

100 सके, दाम बारह आने

महात्मा गाँनधी के बलिदान से सबक्ष

क़ीमत बारह आने

पंजाब हमें क्या सिखाता है

क्रीमत चार आने

बंगाल ऋौर उससे सबक्र

क्रीमत दो श्राने

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी

145 मुट्टोगंज इलहबद

هندی گهز

کلچر پر ہر طرح کی کتابیں ملنے کا ایک برا کیندر۔ باتھک ھندی ' اُردر' انگریزی کی من پسند کتابوں کے لئے ھیس لکھیں ۔

هماری نئی کتابیں مهانه کاندهی کی وصیت (هندی اور اردو سیس)

لیمهئں۔۔گاندھیواں کے مانے جانے ودوان: ۔۔ورکیه شری منظر علی سوخته صفحے 225' نیمت دو روپیه

-:0:-

كندهي بابا

(سچاں کے اگم بہت داخیسپ کتاب) لیکھکا۔۔۔قدسیم زیدی بھوہکا۔۔۔۔پذذت جوالفر لال نہوو

موثا كاعذ مُوتا دَائِبُ بهتُ سَي رَبُكِينَ نصويريس دام دو رويه

--:o:--

پندت سندرلال جي کي لکھي نتابيس

عيماً اور قران

97.5 صفيحه دام دهائي رويد

هندر مسلم ايكتا

ال منحد دأم بارة أني

پنجاب ھہیں کیا سکھاتا <u>ھے</u> تیت چار آنے

بنگال اور اُس سے سبق تیبت درانے.

هندستاني كلجر سوسائتي

141 متھی گنج الدآباد

सां छातक साहित्य

سانسكرتك ساهتيه

हजरत मोहम्मद और इसलाम

लेखक-पारिडत सुन्दरलाल, मूल्य-तीन रूपया इसलाम के पैग्रम्बर के सम्बन्ध में भारतीय भाषाओं में इस से सुन्दर कोई दूसरी पुस्तक नहीं

हजरत ईसा ऋोर ईसाई धर्म लेखक-पन्डित सुन्दरलाल, मूल्य-डेद रुपया

महात्मा जरथुन्न ऋौर ईरानी संस्कृति लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, क्रीमत-दो रुपया

यहूदी धर्म और सामी संकृति लेखक-विश्वनभरनाथ पांडे, कीमत-दो मपया

प्राचीन मिस्र की सभ्यता और संक्रति लेखक—विश्वन्भरनाथ पांडे, क्रीमत—दो क्राया

सुमेर बाबुल और असुरिया की ।चीन संकृति

धुमर वाबुल आर अधारया का ।चान सक्र लेखक—क्रिवम्भरनाथ पांडे, क्रीमत—दो रुपया

प्रचीन यूननी सभ्यत श्रोर संकृति.

लेखक-विश्वमभरनाथ पांडे, क्रीमत-दा रुपया

गंगा से गोमती तक

(प्रगतिशील कहानी संग्रह) लेखक--श्री मुजीब रिजवी, कीमत-दा रुपया

भाग स्रोर स्रांस्

(भावपूने सामाजिक कहानियाँ) रेखक—डाक्टर अस्तर हुसेन रायपुरी, कीमत—डेढ़ रूपया

्कुरान और धर्मिक मतभेद

खिक-मौलाना अबुलकलाम त्राजाद, क्रीमत-डेढ़ रूपया

संकर

(प्रगतिशील कविताश्चों का संप्रह) लेखक—रघुपति सहाय फिराक्र, क्रीमत – तीन रुपया حضوت محمل اور إعلام

لیہ کے پنتس سندر لال' مولیہ ستین روپیہ اِسلم کے پینسر کے سبندہ میں بہارتیہ بھائاؤں میں اِس سے سندر کوئی دوسری پستک نہیں

حضرت عيسي اور عيسائي دهرم ليهك بندت سنر ال

مهادها زر تهستر اور ایرانی سنسکردی لیهک مهمیورنانه یاندے نیست درویه

یهودی دهرم ارد سامی سنسکوتی لیمهک رشومهور ناته باندے سیت-در رویه

پراچین مصر کی سبهیتا اور سنسکرتی لیمک سرشره بر نانه باندے نست در رربیه

سمير بابل اور الورياكي براچين سنسكرتي ليعك ربيه باندے اليعك ربيه

پراچین بونانی سبهیتا اور سنسکرتی اینک بروربیه اندے تیست در روبیه

گذگا سے گومتی تک (پرکتی شیل نہانی سن^یرہ)

لیکهک ـ شری مجیب رضوی تیست - د رویه

أک اور انسو

(بهاوپورن سمآجک کهانیان) لهمک سخاکتر اختر حسین رائه پوری ٔ قیمت - تیزه رویه

قرأن اور دهارمک معابهید لینهک-موادا ابرنام آزاد' نیست-تیزه زرپیه

جهنكار

په درگتی شهل کویتاؤں کا سنکره) لهکهک—رگهریتی سہائے فراق ' میست—تین ردیه

मिलने का पता क्ष् ४ छ

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी उर्गातिक अध्या किन्दुस्तानी कलचर सोसायटी

145 मुद्दीगंज, इसहबद المآباد 145

•			
•			
•			

नए-नए रास्ते खुलने की आशा है. आकाश के दूसरे गोलों के साथ हमारा सम्बन्ध मानव उन्नति के मार्ग पर एक बहुत बद्दा सीमा चिन्ह है. मानव समाज की इससे बहुत बढ़ी आधिक और नैतिक काया पलट हो सकती है.

एक खास मजाक की बात इस बनावनी चाँद के सम्बन्ध में यह हुई कि हीरोशिमा और नागासाकी के बमों द्वारा इन्सानी बरबादी से जिन लोगों के अतःकरन (ज़मीरों) को चोट नहीं लगी थी, जो लाखों बन्दरों सौर सुअरों का हर साल अपने साइन्सी तजरबों के लिए तड़पा-तड़पा कर मारते रहते हैं, रूसी सैटिलाइट की एक कुतिया की मौत का ख्याल करके ही उनके दिल पिघल गए और उनकी छातियों से दूध टपक पड़ा!

हम सोवियत रूस को , दुनिया को श्रौर दुनिया की जनता का इस नई ईजाद के लिए दिल से बधाई देते हैं.

15-11--57

—सुन्दरताल

فقر نائے راستے کیلئے کی آشا ہے۔ آگاہ کے دوسرے گواہل کے ساتھ مسارا سمیندہ مائر آئٹی کے مارک پر ایک بہت ہوا سما چنھ ہے۔ گا او سماے کی اِس سے بہت بڑی آرتیک اور نینک کایابات ہو سمتی ہے۔

آیک خاص مذاق کی بات اِس بناوئی چاند کے سمبادہ میں یہ ہوئی کہ میروشما اور ناکا سائی کے بموں دوارا انسانی بربادی سے جن لوگوں کے انتہ کون (ضمیروں) کو چوت نہیں لکی تھی جو لابھوں بندروں اور سوروں کو هر سال اپنے سائنسی نتجربوں کے لئے ترپا کو مارتے رہتے میں وسی سیتیلائٹ کی ایک کتیا کی موت کا خیال کر کے می اُن کے دل پکیل گئے اور ایک کتیا کی حودہ ٹیک پڑا ۔

ھم سرویت روس کو' دنیا کو اور دنیا کی جلتا کو اِس نئی ایجاد کے اٹنے دل سے بدھائی دیتے دیں .

--سندر لال .

15. 11. 57

میں وہ کہیں بیٹر اور عام جنتا کے لئے کہیں ادمک متکو قد وشو شائٹی کے قایم کرنے میں بھی امریکی راستے کے مقابلے میں وہ کہیں ادھک سہائک ہے اُس راستے میں اور گائدھی جی کے بتائے ہوئے راستے میں سمنوے بھی ہو سکتا ہے اور هنارے اور دنیا دونوں کے لئے هتکر ہو سکتا ہے . یو همارے لئے اِس سے سب سے بڑی ضرورت یہی ہے کہ ہم راجنیتک ٹیتک آرتهک ادبوگ اور ساماجک سب معاملوں میں پہلے اپنے اندر نگاہ قالیں اور دیش کی کروروں غریب جانتا اُس کی اوشکتاؤں اور اپنے آدرشوں کو نگاہ میں رکھتے ہوئے اپنے آگے کا راستہ طے کریں اور وشواس کے ساتھ اُس پر چلیں ،

وس کا مفارقی چاند

بجیلے کیے سیناہ سے دنیا بھر کے لوگیں کی نگامیں سوریت ررس کے دونوں سیڈولائٹ کی طرف جا رھی ھدی جاموں اوگ بلارئی چاند بھی کہتے میں. دنیا بھر کے اخباروں میں جتنی چرچا اِن بِقَاوِتْی چاندوں کی ہوئی ہے اُدنی شاید ہی کبھے کسی اُور جيز كي هوني عو . إس كهنا كي عمين دو خاص نتينج معلوم هرتے هیں . بلا یه که دنیا کو بده سے بحجائے اور شانتی قایم ركيني ميں إس سے بہت بوى مدد مل سكتى الله . دنيا نے ديكا لها که سائنسی آندی کی قرو میں روس دوسرے سب دیشوں سے امیں آگے نکل گیا ، روس کی ایجاد نے یہ ثابت کر دیا که یہ زمانہ جنتا کا زمانہ ہے اور سائنسی اور دماغی دور میں بھی کرئی سامراج وادی دیش سامهموادی یا سماج واوی دیشوں سے آنت میں بازی نہیں لے جا سکتا . دوسرے دیشوں کے اندوروني معاملون مين بار بار دخل دينهوالے سامولے وادى ديشوں كے غلط منصوبوں كو يھى اِس سے كانى دهكا پہنچا هـ . يه يهى ظاهر ہے کہ اِس طرح کے غلط منصوبے ابھی ختم نہیں ہوئے میں ۔ حال میں امریکہ اور انکلینڈ کی طرف سے جو خبر تعلى هے كه ولا پنجاس اور چهوئے ، بزے واشقروں كو اپنے ساتھ الله کر کیونست دیشیں اور خاص کر روس کے خلاف ایک ٹیا مرجه كهرا كرنا جاهتے هيں' وقح خاصي أفسوسناك هـ ظاهر ھے کہ دنیا کے دونوں پردھان اکھاورں میں ایک دوسرے کو مان نے کہانک اچھا آبھی ملی نہیں ہے، پر همیں وشواس کے که دنیا کے چھوٹے چھوٹے اور پھھوڑے مواء دیش اِس بات کو سنجھائے جا رہے ھیں اور سمجھیں گے که اِس طرح کی گٹس میں شامل ھونا اُن کے لئے کتنا گھانک اور دنیا نے لئے دتنا خطرناک هے . عل ملا كر هميں وشواس هے كه روس كى اِس دائى أيجاد گا اثر سجس کا یدھ ردیا کے ساتھ ہیں گہرا سمبادھ ھے۔دنیا کی شاہئی کے لئے اچھا ھی ھوگا ۔

دوسرا برا تتیجہ روس کی اِس نئی ایجاد کا یہ مواا که ورنیا کی جنتاء اُس کی آرتیک اُنٹی' اُس کے سواستی' اُس کے ساتیہ' اُس کے بیلاؤ اور اُس کی خوشتھائی کے لئے اُب

में वह कहीं अधिक सहायक है, इस रास्ते में और गाँधी जी के बताए हुए रास्ते में समन्वय भी हो सकता है और हमारे और दुनियाँ दोनों के लिए हितकर हो सकता है. पर हमारे लिए इस समय सबसे वड़ी जरूरत यही है कि हम राजनैतिक, नैतिक, आर्थिक, औद्योगिक और सामाजिक सब मामलों में पहले अपने अन्दर निगाह हाले और देश की करोड़ों रारीब जनता, उसकी आवश्यकताओं और अपने आवशों को निगाह में रखते हुए अपने आगे का रास्ता तय करें और विश्वास के साथ उस पर चलें.

रूस का बनावटी चाँद

पिश्रले कुछ सप्ताह से दुनिया भर के लोगों की निगाहें स्मावियत रूस के दोनों सेटिलाइट की तरफ जा रही हैं जिन्हें लोग बनावटी चाँद भी कहते हैं. दुनिया भर के अखबारों में जितनी चरचा इन बनाबटी चांदों की हुई है उतनी शायद ही कभी किसी और चीज की हुई हां. इस घटना के हमें दा खास नतीजे मालूम होते हैं. पहला यह कि दुनिया को युद्ध से बचाने छोर शानित क़ायम रखने में इससे बहुत बड़ी मद्द मिल सकती है. दुनिया ने देख लिया कि साइन्सी उन्नति की दौड़ में रूस दूसरे सब देशों से कहीं आगे निकल गया. रूस की इस इंजाद ने साबित कर दिया कि यह जमाना जनता का जमाना है और साइन्सी और दिमारी दौड़ में भी कोई साम्राज्य वादी देश साम्यवादी या समाज-बादी देशों से अन्त में बाजी नहीं ले जा सकता. दूसरे देशों के अन्दरूनी मामलों में बार-बार दुख्ल देने वाले साम्राज्य बादी देशों के रालत मनसूबों को भी इससे काफी धक्का पहुँचा है. यह भी जाहिर है कि इस तरह के ग़लत मनसुबे अभी खत्म नहीं हुए हैं, हाल में अमरीका और इंग्लैन्ड की त्रफ से जो खबर निकर्ला है कि वह पचास श्रीर छाटे बड़े राष्ट्रों को अपने साथ मिलाकर कम्युनिस्ट देशों और खासकर रूस के खिलाफ एक नया मोर्चा खड़ा करना चाहते हैं, वह खासी अफसोसनाक है. जहिर है कि दुनिया के दोनों प्रधान अखाड़ों में एक दूसरे की मिटाने की बातक इच्छा अभी मिटी नहीं है. पर हमें विश्वास है कि दुनिया के छोटे-छोटे श्रीर पिछड़े हुए देश इस बात को सममते जा रहे हैं और समभेंगे कि इस तरह की गुट्टां में शामिल होना बनके अपने लिए कितना घातक और दुनिया के लिए कितना खतरनाक है. कुल मिलाकर हमें विश्वास है कि रूस की इस नई ईजाद का असर--जिसक। युद्ध विद्या के साथ भी गहरा सम्बन्ध है-दुनिया की शान्ति के लिए व्यक्ता ही होगा.

दूसरा बड़ा नशीजा रूझ की इस नई ईजाद का यह होगा कि दुनिया की जनता, उसकी आर्थिक उज़ति, उसके स्वास्थ्य, उसके फैलाव और उसकी खुशहाली के लिए अब

عُورًا كرديا . حال مين روس سه مدد ك سنتهبوت كي غيرين نجیبی میں . منابی رائد اِس بارے میں مات ہے . سب سے پہلے یہ که ند هم یه چاهتے هیں اور نداس کی ضرورت مانتے ھیں که بھارت کسی بھی دوسرے دیش کے سامنے اِس بات کے لیٹے ھاتھ بسارے پاکسی سے کسی روپ میں قرضہ لے ، دوسرے نه که اگر کسی سه مدن اینی هی هر تو وه بجهائه دأن یانقد قریے کے کیول مال کے آدان پردان کے روپ میں ہوئی چاہیہ اور وه بهی ادنی حیثیت اور اُپنی بساط دیکه کر . چین کی آرتهک کلهنائیاں آہے دسبرس بہلے شماری آجال کی کلهنائهیں سے کم نہیں تھیں ، پر چین نے کسی سامراہ وادی دیش کے سامنے ھاتھ نہیں پسارا اپنی اربوکک (صفعتی) اُنٹی کے لیئے چین نے کیول روس سے تهرزی بہت مدد لی ہے ، اور وہ مدد بھی ' جہاں تک ھیں سلوم ہے' کیول اِس روپ میں تھی کھ نیبی ارب امریکی ڈالر کی قیمت کا مال 6 مشینیں أتهادي کي چين کو شرورت تهي أور روس ديم سکتا تها روس چین کو یانچ ہرس کے آندر بانچ قسطوں میں دے' اور اتنی هی قیمت کا مال؛ ایسا جس کی روس کو قبرورت هے أور چهن درم سكتا ها، كچا مال أنيادي، چهن روس كو دس سال کے اندر دس قسطوں میں دے' اور اِس لین دین میں روس کا جو روبعد مجه دنوں انکارہے اس کے لیئے ایک فیصدی حالاتم سود کے حساب سے انفاھی ادھک مال چوں لینے بہاں سے روس جانے والے مال میں بوعادیم اور بس . تیسرم هماری مان رائم یه بهی هے که اِس طرح کی اگر کوئی مدد لینی هی ھو تو مدیں سامراہے وادی دیشوں کے بجوائے جہاں تک ھوسکے کمهراست یا فیر سامراج رادی دیشوں کی مدد کا ادھک سواگت کرنا چاهیئے . اِس نگاه سے یدی روس سے بھارت کا اِس طرح استجهوته هدين أمريكه يا الكلفيد كي مدد سي تياز كرسك تر أس ورجم لك هم أعه غنيمت سمجهتم هين .

آملی علج

لیکن انت میں هم پهر دوهرا دینا چاهتے ههں که دیش کے جن دلهیں کی اوپر کے خط میں چرچا کی گئی ہے اُن کا اصلی علیے همارا اِن سب بانوں میں مہانما کاندهی کے بتائم هوئے راستے کو ٹهیک ٹهیک سمجھنا اور آس پر عمل کرنا هی هو سکتا ہے انکلیلڈ اور امریک کے پوہجی وادمی راستین کی اِنظل جو هم اِس سمے کر رہے هیں' همارے اِن داهیں کو اور احمک بڑھا دیکی ، روس اور چھن کا کمیونسسک راسته یهی اُنگریزی یا اُمریکی راستے کے ستابلے ایک راسته هو سکتا ہے اور ہے انگریزی یا اُمریکی راستے کے ستابلے

साका कर दिया. हाल में रूस से मदद के सममीते की खबरे' छपी हैं. इसारी राय इस बारे में साफ है. सबसे पहले यह कि न हम यह चाहते हैं और न इसकी जरूरत मानते हैं कि भारत किसी भी दूसरे देश के सामने इस बात के लिए हाथ पसारे, या किसी-से-किसी रूप में करजा ले. दूसरे यह कि अगर किसी से मदद लेनी ही हो तो वह बजाय दान या नक़द क़रजे के केवल माल के आदान प्रवान के रूप में होनी चाहिए और वह भी अपनी हैसियत और अपनी विसात देखकर. चीन की आर्थिक कठिनाइयाँ आज से दस दरस पहले हमारी आजकल की कठिनाइयों से कम नहीं थीं. पर चीन ने किसी साम्राज्यवादी देश के सामने हाथ नहीं पसारा. अपनी श्रीद्यांगिक (सनश्रती) उन्नति के लिए चीन ने केवल रूस से थोड़ी बहुत मदद ली है, और बह मदद भी, जहाँ तक हमें मालुम हैं केवल इस रूप में थी कि तीन अरब अमरीकी डालेर की कीमत का माल, मशीने इत्यादि, जिसकी चीन को जरूरत थी और रूस दे सकता था, रूस चीन को पाँच बरस के अन्दर पाँच किस्तों में दे, और उतनी ही कीमत का माल, ऐसा जिसकी रूस को जरूरत है और चीन दे सकता है, कच्चा माल इत्यादि, चीन रूस को दस साल के अन्दर दस किस्तों में दे, और इस लेन देन में रूस का जो रुपया कुछ दिनों अटका रहे चसके लिए एक की सदी सालाना सूद के हिसाब से उतना ही र्षाधक माल चीन अपने यहाँ से रूस जाने वाले माल में बढ़ा दे, और बस. तीसरे हमारी साफ राय यह भी है कि इस तरह की अगर कोई मदद जेनी ही हो ता हमें साम्राज्यबादी देशों के बजाय जहाँ तक हो सके कम्य्र्निस्ट या रौर साम्राज्यवादी देशों की मदद का अधिक स्वागत करना चाहिए. इस निगाह से यदि रूस से भारत का इस तरह का समम्तीता हमें अमरीका या इंगलैन्ड की मदद से बेनिजाज कर सके तो उस दरजे तक हम उसे रानीमत सममते हैं.

असली इलाज

लेकिन अन्त में हम फिर दुहरा देना चाहते हैं कि देश के जिन दुखों की ऊपर के ख़त में चरचा की गयी है उनका असली इलाज हमारा इन सब बातों में महात्मा गाँधी के बताय हुए रास्ते को ठीक-ठीक समम्मना और उस पर अमल करना ही हो सकता है, इंगलैन्ड और अमरीका के पूँजी-बादी रास्तों की नक्ल, जो हम इस समय कर रहे हैं, हमारे इन दुखों को और अधिक बढ़ा देगी. रूस और चीन का कम्युनिस्ट रास्ता भी एक रास्ता हो सकता है और है. इंग्रेजी या अमरीकी रास्ते के मुकाबले में वह कहीं बेहतर और आम जनता के लिए कहीं आधिक हितकर है. विश्व-शान्ति के क्रायम करने में भी अमरीकी रास्ते के मुकाबले

تجررين أور يتكرن مين جنع هين سچى سيهاتا ولا الدارة أس حالت سے كرنا چاهئے جس ميں ديش كے سب سے نیجے کے لوگ سب سے غریب لوگ رعلے میں . پرتجی یٹی کے ارتم نیتی کی کسوٹی اِس کے ٹھیک التی ہے۔ ہمارے آب کل کے شاسک جیسے بھی ہوسکے دیش کی کل ادبوگک (منعلی) أبير اور ديش كاكل دهن بوهاني كي چلتا ميل هیں ۔ دیش کے الهوں اور کورووں فریبوں مودوروں کسانوں اور دستکاروں کو اوپر اٹھانا اُن کے لئے اِتنے ادھک مہتو کی اور اِنْلَى جَلْدَى كَي چَيْرُ نَهِينِ هِ . يَهُ عَلَمَ أُرْتِيكَ نَيْلَى هِي همارے اِس سمے کے ادھک تر دنہیں کا کارن ہے . همیں پیرا بشواس ہے کہ اگر اِس معاملے میں ہم کاندھی جی کے بتائے رامتے یر چلے عوتے یا اب بھی چلیں تو همیں باهر کے کسی ریعی سے ایک بیست بھی بھیک یا قرض مانکنے کی ضرورت نہیں ہے . اِس بارے میں کاندھی جی کا رچار اور کیبونسٹ وچار کئی باتوں میں الگ آنگ مرتے موثے بھی بہت درجے تک مُلِمَّ هوا ميں . بر رونا يهي هے كه هماري أَج كي ارتهك نيتي نه كاندهى وادى هے لور نه ماركس وادى . همارى أجكل كى ارتهک تبعی شده پرنجی روادی هے، جو انت میں سامراجیہ وان کی طرف لے جائے بغور نہیں رہ سکتی ، ابھی سے جب که برانت یرانت میں همارے لاکھوں بنکر بھوکے مرفے هیں اور انوں کاؤں کے کولھو پہٹ پڑے ہوئے ہیں ممیں اُپنی ملوں کے لیجے اور ملوں کی چھنی بھنچنے کے لئے دیش کے باعر منڈیس کی عص رمتی ہے ، ام بار بار کہ چکے که دیش کی جنتا کے مت ہیں یہ نیتی غلط ارر برہادکن ہے .

اپنی اِس غلط ارتهک نیتی کے کان دوسوے دیشوں کے ماسنے ہاتھ پسارنے نے ہمارے اندر راشتریت سمبلدھوں میں بھی بیچیدگیاں پیدا کردی ھیں۔ شری کے کے کرشنامچاری نے امریکت میں اور دوسوے سامراچیت وادی دیشوں میں جس طرح کی گری ہوئی باتیں کہیں اُن پر دیش اور پارلیمیات کے اُندر کانی لے دیے میچ چکی ہے۔ شری کرشنامچاری نے بہارت لی انتر راشتریت اِستیمی کو امریکت میں غلط چترت کیا اور اپنے نیش کو لجایا اِس میں کوئی سادیت نہیں ہوسکتا۔ ''نیوبارک نائمس'' کے سموادداتائے شری کوشنامچاری کی تردید کی ہے وہ شری کوشنامچاری کو اِس وشے میں نابیعار تہرانے کے لیئے کانی ہے ، همارے پردھان ساتری کو اُن نا بچای اِس ایئے کونا پرتا ہے کہ بدقسمتی سے پردھان ساتری کو اُن نا فروری ہے اُنے میں دیکس کے برہنے کے لئے یاہر سے پیست آنا فروری ہے اُنے میں دیکس کے برہنے کے لئے یاہر سے پیست آنا فروری ہے اُور شری کوشنامچاری نے جیسے بھی بن پڑے پیست آنا فروری ہے اور شری کوشنامچاری نے جیسے بھی بن پڑے پیست لانے کی

ایک دوسری پیجیدگی هماری اِس فلط چال نے یه پیدا رصی که اُس نے همیں مدد دینے والوں میں روساور امریکه کو اور ایک بار پور پرتی اسپردهی زرتیبوں) کے روب میں لار

तिजोरियों और बंकों में जमा है', सच्ची सफलता का अन्दाजा उस हालत से करना चाहिये जिसमें देश के सब से नीचे के लोग, सब से रारीय लोग रहते हैं. पूँजीपित की अर्थनीति की कसौटी इसके ठीक उल्टी है, हमारे बाजकत के शासक जैसे भी हो सके देश की क़ल श्रीद्योगिक (सनग्रती) उपज और देश का कुल धन बढाने की चिंता में हैं. देश के लाखों श्रीर करोड़ों ग्ररीबों. मजदरों. किसानों और दुस्तकारों को ऊपर उठाना उनके लिये इतने अधिक महत्व की श्रीर इतनी जल्दी की चीज नहीं है. यह रालत आर्थिक नीति ही हमारे इस समय के अधिकतर दुक्खों का कारण है. इमें पूरा विश्वास है कि अगर इस मामले में हम गांधी जी के बताए रास्ते पर चले होते या श्रव भी चलें तो हमें बाहर के किसी देश से एक पैसा भी भीख या कर्ज माँगने की जरूरत नहीं है. इस बारे में गांधी जी के विचार और कम्युनिस्ट विचार, कई बातों में अलग चलग होते हुए भी, बहुत दूरजे तक मिलते हुए हैं. पर रोना यही है कि हमारो आज की आर्थिक नोति न गांधी बादी है और न मार्क्सवादी. हमारी आजकल की आर्थिक नीति शुद्ध पूँजीवादी है, जो अन्त में साम्राज्यवाद की तरफ ले जाए बरौर नहीं रह सकती, अभी से जब कि प्रान्त प्रान्त में इमारे लाखों बुनकर भूखे मर रहे हैं और गांव गांव के कांल्ह पट पड़े हुए हैं, हमें अपनी मिलों के कपड़े और मिलों भी चीनी बेचने के लिये देश के बाहर मिन्हयों की तलाश रहती है. हम बार बार कह चुके हैं कि देश की जनता के हित में यह नीति रालत और बरबादकुन है.

अपनी इस ग्रलत आर्थिक नीति के कारण दूसरे देशों के सामने हाथ पसारने ने हमारे अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में भी पेचीवगियां पैदा कर दी है. श्री के के करणम-चारी ने अमरीका में और दूसरे साम्राज्यवादी, देशों में जिस तरह की गिरी हुई बात कहीं उन पर देश और पार्तिभेंट के अन्दर काफी ले दे मच चुकी है. श्री कृष्णम-चारी ने भारत की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति को अमरीका में रालत चित्रित किया और श्रपने देश को लजाया इसमें कोई सन्देह नहीं हो सकता. "न्युयार्क टाइम्स" के सम्बादवाता ने श्री कृष्णमचारी की तरदीव की. जिस तरह तरबीट की है बह कृष्णमचारी को इस विषय में गुनहगार ठहराने के लिये काफी है. हमारे प्रधान मन्त्री का उनका बचाब इसनिये करना पडता है कि बदक्षिरमती से प्रधान मन्त्री की राय में देश के बढ़ने के लिये बाहर से पैसा आना जरूरी है और श्री कृष्णमचारी ने जैसे भी बन पड़े पैसा खाने की कोशिश में कसर नहीं उठा रखी.

एक दूसरी पेचीवृगी हमारी इस ग्रलत चाल ने यह पैदा कर दी कि उसने हमें मदद देने वालों में रूस और अम-रीका को फिर एकबार प्रतिस्पर्धी (रक्तीबों) के रूप में लाकर तरफ अन्दर की यह पिछ-घसीट और वरवावकृत शिक्षां दोनों के बीच से देस की नाव को सफतता पूर्वक लेकर बेजा सकने वाला आदमी हमें अभी दूसरा दिसाई नहीं देता, जवाहरताल जी की देशभिक, सर्चाई और बहादुरी में भी किसी को सन्देह नहीं हो सकता.

देश के दुखां का मृल कारण

देश के इस समय के उन दुखों का जिनकी उपर के खत में चरचा है मूल कारण हमें यह दिखाई देता है के देश के श्रीर कांग्रेंस के अनेक चड़े बड़े नेताओं को शायद कभी भी महात्मा गांघों के श्रार्थिक (माली), श्रीदांगिक (मनअती), श्रीर एक दरजे तक नैतिक (इखजाकी) सिद्धान्तों में विश्वास नहीं हुआ. देश के इस समय के अधिकतर नेता श्रंगरेजी तालीम की उपज हैं, श्रीर श्रनेक अच्छाइयां रखते हुए भी श्रीर बरसों महात्मा गांधी के मजदांक रहते हुए भी, पच्छमी तालीम के ग्रजत श्रसर से उपर नहीं उठ सके.

बाहर से पैसे की मदद और हमारी आर्थिक नीति

िखले अगस्त के महीने में तोक्यां के अन्दर हम एक दिन एक अमरीकी दोस्त से बातें कर रहे थे. हम उनसे कह रहे थे कि एशियाई देशों की इच्छा और उनके दित के विरुद्ध अमरीका का एशियाई देशों के उद्योग धन्धों में अपनी पूँजी लगाना और इस तरह उन देशों के अन्दर के मामलों में जबरदस्ती दखल देना बड़ी रालत चीज और आर्थिक साम्राज्यवाद (इकानामिक इम्पीरियलीचम) की जड़ है, इत्यादि. हमारे अमरीकी दोस्त ने तुरन्त उलट कर हमें जवाब दिया, उनके शब्द हमें अब तक याद हैं— "you cannot say that. Your own......has been going on his knees requesting U.S.A. to invest money in India and promising them all sorts of concessions, no nationalisation or socialisation for fifty years and so forth."

अर्थात्—"आप यह नहीं कह सकते. आपका अपना
...... घुटनों के बल अमरीका से प्रार्थना करता रहा है कि
अमरीका भारत में अपनी पूँजी लगावे, और इसके बदले
में अमरीका से हर तरह की रिआयतों का वादा करता
रहा है, जैसे यह कि भारत सरकार पचास साल तक
ऐसे उद्योगों की जिनमें अमरीका की पूँजी लगी होगी
राष्ट्र की या समाज की सम्पत्ति नहीं बनाएगी, हत्यादि."

महातमा गांधी का उसूल था और हमें विश्वास है कि वह सोलह आने ठीक था कि किसी भी देश की आर्थिक सफलता का अन्दाजा उन धनराशियों से नहीं करना आहिये जो वहां के बड़े बड़े लोगों और अभीरों की

مارت الدر كى يه په كيسيك اور يربادكن هكتيان المارت كردكت الدركت كردوكت كوروكت كو سيالاً دروكت كو سيالاً دروكت كو لي حا سكل والا أدمى همين ابهى دوسوا داولى البهى ديش يهكى سبيالى البهى ديش يهكى سبيالى الرويهادرس مين بهى كسى كو سديه نهان هو سكتا .

ديون کے دکھیں کا مہل کارن

ادیس کے اِس سمے کے اُن دکھوں کا جن کی اُرپر کے خط میں چرچا ہے مول کارن عمیں یہ دکھائی دینا ہے کہ دیش کے کانیک بچے بچے نیتاؤں کو شاید کبھی بھی مہاتما گاندھی کے آرتیک (مائی) اددیوکک (صنعقی) اُور ایک درچے تک نیتک (اخلاقی) سدعائتوں میں وشواس نمیں هوا۔ دیش کے اِس سمے کے ادعکتر نیتا اماریوی تعلیم کر ایج هیں اور انیک اچھائیاں رئیتے هوئے بھی اور برسوں مہانما گاندھی کے نودیک رہتے ہوئی بھی، پنچھی تعلیم کے غلط اُدر سے گاندھی کے نودیک رہتے ہوئی

باهر سے بیسے کی مدد اور هماری ارتبک نیتی

بعجیلے اگست کے مہینے میں ترکیر کے اندر ہم ایک دن ایک امریکی دوست سے باتیں کروھے تھے. ہم اُن سے کہ رف تھے کہ راحہ تھے کہ ایمیائی دیشوں کی اِچھا اور اُن کے ہست کے رزدہ المریحہ کا ایشیائی دیشوں نے ادیوگ دهندوں میں اپنی پرنجی زہردستی دخل دینا بری فلط چیز اور ارتیک عاموا راد الاتیک اپیریل ازم) کی جر ھے ایناری مارے امریکی دوست نے ترقب الت کر هیں جراب دیا اُن کے شہد هیں اب تک یاد هیں جراب دیا اُن کے شہد هیں اب تک یاد هیں جراب دیا اُن کے شہد هیں اب تک یاد هیں دوست نے ترقب اللہ کا دوست نے ترقب اللہ کا دوست کے اس است کر هیں جراب دیا اُن کے شہد هیں اب تک یاد هیں۔....has been going on his knees requesting U. S. A. to invest money in India and promising them all sorts of concessions, no nationalisation or socialisation for fifty years and so forth."

ارتہا تہ۔ '' آپ یہ نہیں کہہ ساتے اپ کا اینا... گھانوں کے ہل امریکہ سے پرارتہا کوتا رہا ہے کہ امریکہ بیارت میں اپنی پرنجی لگارے' اور اس کے بدلے میں امریکہ سے ہو طرح کی رہایتیں کا وعدہ کوتا رہا ہے' جیسے یہ که بھارت سرکار دچاس سال تک ایسے ادبوگوں کو جن میں امریکہ کی پونجی لگی ہوگی راشار کی یا سماج کی سمیتی نہیں بنائے گی' افعادی ۔''

مہاتما گاندھی کا اصرل تھا اور ھمیں وشواس ھے کہ وہ سولہ آنے ٹھیک تھا کہ کسی بھی دیھی کی آرتیک سیھاتا کا اندازہ اُن دھن راشیوں سے نہیں کرنا چاھیے جو وہاں کے بڑے ایڑے لوگوں اور اُمھروں کی

देश की पिछ घसीट शक्तियाँ

दूसरी ओर देश में अभी तक इस तरह की पीछे वसीटने वाकी शक्तियों का भी जोर खत्म नहीं हुआ है जो अगर क़ाबू पाजाएं तो देश को रसातल में पहुँचाए बिना नहीं रह सकतीं. इन्हीं शक्तियों ने महात्मा गांधी की जान ली. पंजाब के "हिन्दी रक्षा आन्दोलन" पर हम अपने विचार प्रगट कर चुके हैं. यह गुलत आन्दोलन अधिकतर इसी तरह की शक्तियों का कारनामा है.

हाल में पंजाब हिन्दी रक्षा आन्दोलन के दो मुख्य कार्यकर्ता दिस्ली में हमारे एक प्रतिष्ठित मित्र से मिलने आए. हमारे मित्र ने उनसे इस आन्दोलन की निरर्थकता पर बातें की. इस पर उन दोनों में से एक ने बड़ी संजीदगी के साथ कहा—''मुख्य प्रश्न हमारे सामने हिन्दी का नहीं है, मुख्य प्रश्न जवाहरलाल और जवाहरलाल की सरकार को गिराना है.'' यह भी एक खुली बात है कि इस आन्दोलन में पंजाब भर के अन्दर और कहीं कहीं पंजाब से बाहर भी पंडित जवाहरलाल नेहरू को हिन्दुओं का विरोधी दशी कर जनता की नजरों में गिराने की काकी कोशिश की गई है.

देश को पीछें घसीटने वाली और बरबादी के ,गड्ढे में मिराने वाली ये शक्तियां जगह जगह और भी तरह तरह के ह्रप घारण करती रहती हैं.

पंजाब के इस राजत हिन्दी आन्दोलन से देश को और खासकर हिन्दो को कितना नुक्रसान पहुंचा है इसका कुछ अन्दाजा इस एक बात से लगाया जा सकता है कि हमारी पार्लिमेंट के अठासी मेन्बरों ने सरकार को यह नाटिस दे दिया है कि सन् 1990 से पहले हिन्दी का अंग्रेजी का स्थान देने की बात न की जावे. श्री राजगोपालाचारी जैसे अनेक नेताओं ने तो यह साफकह दिया है कि अंगरेजी की जगह हिन्दी को अगर कभी भी सरकारी अन्तर्भादेशीय भाषा बनाने की कोशिश की गई तो बलकान को तरह देश के दुकड़े दुकड़े हो जावेंगे. पंजाब के नादान हिन्दी प्रेमियों और उनके मददगारों ने राष्ट्र भाषा की हैसियत से हिन्दी को सत्म कर देने में अपनी तरफ से कोई कोशिश एठा नहीं रखी.

पं॰ जवाहरलाल नेहरू और उनकी सरकार

इन नाजुक हालात में वर्तमान शासन के अन्दर अनेक दोवों के होते हुए भी—और वह दोष बढ़े गहरे दोष हैं— हमें पंडित अवाहरलाल नेहक का अस्तित्व और देश के शासन की बाग का चनके हाथों में होना बहुत ही सनीमत मालूम होता है. कई बातों में हमारा उनका गहरा मतभेद है. पर एक तरक नाजुक अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति और दूसरी

دیمی کی رحی گیسیت شکتیاں

دوسوی اور دیفی میں ابھی تک اِس طرح کے پیچھے گھسیٹنے والی شکٹیس کا زور بھی ختم نہیں ھا ھے جو اگر تابو با جائیں تو دیفی کو رسائل میں پہنچائے بنا نہیں وہ سکٹیں انہیں شکٹیوں نے مہانا کاندھی کی جان لی ، پنجاب کے اشدی رکھا آندولی' پر هم وچار پرگٹ کر چکے هیں ، یہ ناط آندولی ادھکٹر اِسی طرح کی شکٹیوں کا کارنامہ ھے .

حال میں پنجاب هندی رکشا آندولی کے دو مکھنے کاریهکرتا ۔

الی میں همارے ایک پرتشتهت متر سے ملنے آئے . همارے متر نے بن سے اِس آندولی کی نورتهکتا پو باتیں کیں۔ اُس پر اُن دولوں بی سے ایک نے بڑی سنجیدگی کے سانه کیا۔ ''مکھیئ پرشن ممارے سامنے هندی کا قبین هے' مکھیئ پرشن جواهر لال اُور اُهر لال کی سرکار کو گرانا هے ۔'' یہ بھی ایک کہلی بات هے اِس آندولی میں پنجاب بھر کے اُندر اور کییں کہیں پنجاب یہ اِس آندولی میں پنجاب بھر کے اُندر اور کییں کہیں پنجاب یہ باهر بھی پندت جواهر لال نہرو کو هندؤں کا ویرودهی درشا جاهر بھی پندت جواهر لال نہرو کو هندؤں کا ویرودهی درشا جنتا کی نظروں میں گرانے کی کانی کوشش کی

دیھی کو روجھ گھسیتنے والی اور بریادی کے گڑھ میں گرائے لی یہ شکتیاں جگہہ جگہہ اور بھی طرح طرح کے روپ دھارن بی رھتی ھیں ۔

پنجاب کے اِس غلط آندوان سے دیش کو اور خاص کر ندی کو کتنا نقصان پہنچا ہے اِس کا کنچھ اندازہ اِس ایک ت سے اگایا جا سکتا ہے کہ ھماری پاریلیدائٹ کے اقباسی ممبروں سرکار کو یہ نوٹس دے دیا ہے کہ سن 1990 سے پہلے ھندی انکریزی کا استہان دینے کی بات نہ کی جارہ ، شری راج بالاآچاری جیسے انیک نیتاؤں نے تو یہ صاف کہہ دیا ہے انکریزی کی جکہت ھندی کو اگر کبھی بھی سرکاری آنٹر ادیشیہ بھشا بنانے کی نوشش کی گئی تو بلقان کی طرح دیش تکڑے ھو جاریں گے ، پنجاب کے نادان ھندی پریمیوں اور تیئے میں اپنی طرف سے کوئی کوشش آنیا نہیں رہی .

دت چراهر ال تهرو اور أن كي سرهر

اِن نازک حالت میں ورتمان شاسن کے اندر آنیک دوشوں هیتے هوئے یھی۔۔۔۔اور وہ دوش ہوے گہرے دوش هیں۔۔۔۔مدین عدر آفر قل نہرو کا آستیتو اور دیش کے شاسن کی باگ ن کے جاتھوں میں ہوتا ہیں۔ هی فلیست معلوم هوتا ہے ۔ یہ ایک یاکی میں همارا آن کا گہرا متیهید ہے ۔ پر ایک یاکی میں همارا آن کا گہرا متیهید ہے ۔ پر ایک نے گارک آفرراشگری اِنتہتی آور دوسوی

है, न कि एस का स्वयाल करना और अपने दिल पर .साराव नकूश (असर) बालना और दिल को मैला करना."

देश के दिल की आवाज

जाहिर है जपर की हर बात हर अंश में ठीक नहीं कही जा सकती. कहीं कहीं अत्युक्ति (मुबालगा) की मात्रा भी साफ है. लेकिन इस में भी शक नहीं कि जिन मित्र ने यह .सत लिखा है उनके यह दिल की आवाज है. एक वह ही नहीं, लगभग ये ही या इसी तरह की बातें आज लाखों देश वासियों की जवान पर हैं. इसमें कोई शक नहीं कि यह आवाज इस समय देश के दिल की आवाज हैं.

दिल्ली में इमने भारत सरकार के एक क ने और जिम्मे-दार कमनारी को यह खत पढ़कर सुनाया. उन्होंने बढ़े क्यान के साथ सुना. उनका चंहरा कुछ गम्भीर मालूम हुआ. इमने सममा शायद उन्हें यह बातें अच्छी नहीं लगीं, इमने मिल्न-कते हुए कहा:—"इन बातों में कुछ सचाई तो अवश्य है." उन्होंने तुरन्त उसी गम्भीरता के साथ जवाब दिया:—''जी नहीं! कुछ सचाई नहीं, पूरी सचाई है, इसमें जो लिखा है वह बिलकुल सच है." इमारी उनकी इस पर देर तक बातें होती रहीं.

अंग्रेजी की एक कहावत है—'जनता की आवाज भग-बान की आवाज होती है.' इसी से मिलती हुई उर्दु की एक कहाबत है—'आवाज -ए-.खल्क को नक्कारए .खुदा सममो.' इसमें कोई शक नहीं कि ऊपर के स्नत की वातों में एक बहुत बड़ा अंश सचाई का है.

भाज की कांगरेस

वयालीस वरस हमने अवने नाचीज हैंग से कांगरेस की सेवा की है और कांकी नजहीं कसे तन्मय होकर की है. कांगरेस का देश पर बहुत बड़ा अह-सान है. हमारे दिल में अब भी कांगरेस का बड़ा आदर है. कांगरेस और कांगरेस सरकार दोनों में इस समय भी काफी ऐसे लोग हैं जिनसे बहुकर आदमी देश में मिलना कठिन है. पर इसमें भी सन्देह नहीं कि कांगरेस संस्था आजादी मिलने के बाद से तेजी के साथ नीचे को जा रही है, काँगरेसो नेवाओं, भारा सभाओं और पार्लिमेंट के कांगर देशी मेन्बरों और कांगरेसी मिनिस्ट्रों में बाज काफी वाशद ऐसे लोगों की है जो देश की बाजादी के संप्राम के दिनों में शायद कहीं दिसाई भी न देते थे. काफी मिनिस्टर ऐसे हैं जिन्हें इसारे जैसे लोग पहचानते भी नहीं, जो बिन् 1947 के बाद कांगरेसी बने हैं, और बाज कांगरेस के बड़े से बड़े मशविरों में उनकी आवाज सनो जाती है.

ها تعكد أس كا خيال كرنا لور أين دل ير خراب لقوهي (الر) والنا أور دل كو ميلا كرنا ."

ديمن کے دل کی آواز

ظاهر کے آرپر کی هر بات هر آئش میں ٹینک ٹینس کیی جا سکتی ، کینس کیی انبشیرکٹی (مبالغه) کی ماترا بھی صف کے ایکون اس میں بھی شک نہیں که جن ماتر نے یہ خط ایکا کے آراز کے ، ایک راہ هی نہیں الگ بگ یہ دی یا ایس مارےکی باتیں آج لائیں دیھی راسیس کی ابان پر هیں ، ایس میں کرئی شکنیس که یه آراز اِس سے بیش کے ذل کی آراز ہے ،

دلی میں هم لے بهارت سرکار کے ایک اُولیتے اور زمعدار لرمعتاری کو یہ خط پڑھ کر سلایا ، اُنہیں لے بڑے دھیان کے اباد اُن کا چہرہ کچے گبیور معلوم ھوا ، هم لے سنجیا نابد اُنهیں یہ باتیں اجھی نہیں لکیں ، هم لے جہجیکتے ھوئے لہاء۔"اِن باتیں -یں کچے سچائی تو آوشهہ ہے ،" اُنہیں لے نرنت اُسی گماههران کے ساتھ جواب دیا :۔"جی نہیں ا کچے نہیں اُنکی سچائی فہدن پرری سچائی ہے اُس میں جو لکھا ہے رہ یالکل سے ہے ،" هماری اُن کی اِس پر دور نک باتیں ھوتی بھیں ،

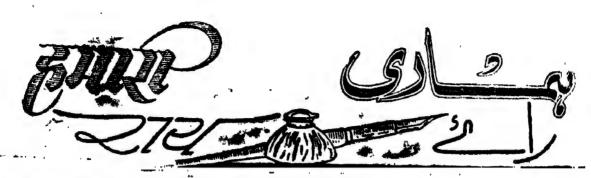
انگویزی کی ایک کہارت فسے 'جلتا کی آواز بھگوان کی آواز مھڑوان کی آواز ہوگوان کی آواز ہوگوان کی آواز خوا سے ملتی جلتی آردو کی ایک کہارت فسے الآواز خوا سمجھو ایس میں کوئی شک میں کہ آوپر کے خط کی باتوں میں ایک بہت ہوا انھی سجھائی کا فی۔

آے کی کانکریس

بھالیس برس ہم نے اپنے ناچیز تھنگ سے کانگریس کی میوا کی ہے اور کانی نزدیک سے تنہ ہو کو کی ہے کانگریس کا دیھی پر بہت ہزا احسان ہے ۔ ہمارے دل میں اب بھی کانگریس کا ہزا آدر ہے ۔ کانگریس اور کانگریس سرکار دونوں میں اِس سمے بھی کانی ایسے لوگ بھیں جن سے برہ کر آدمی دیھی میں ملکا تیوں ہے پر اِس میں بھی سندہہء تہیں کانگریسی سائستھا آزادی مللے کے بعد سے تیوی کے ساتھ نیچے کو جا رھی ہے ۔ کانتریس نیتائی' دعارا سہاؤں اور پارلیمنٹ کے خانگریسی ممبروں اور کانگریسی منسٹروں میں آج کانی تعداد ایسے اوکوں کی ہے جو دیش کی آزادی کے سائرلم کے دنوں میں ہیاہے بھی نہیں دیائی بھی دی دیوں جو میں جو بیس جابوں ہمارے جیسے لوگ بہتھائیے بھی نہیں ہیں جو میں جو بیس جابوں ہمارے جیسے لوگ بہتھائیے بھی نہیں ہیں جو بیت کانگریس کے میں جو بیتے ہی نہیں جابی ہیں جابی

के चलाने के पहले उसके लिये बुनियाद मजबूत बनानी थी. यानी हारियार, काशिल, मातिबर (विश्वसनीय) लाग जिम्मेदार बनाने थे, और इकूमत का डर होना चाहि-ये था, न कि इस .कद्र आजादी दे दी कि हर शख्स अपने फ्रायख (कतव्यों) को भूल बैठा और मन माना जो चाहा सो कर रहा है. कोई पुरसों हाल नहीं. दम्तरों की अजीवो .गरीब हालत है. किसी के काम करने से मतलब नहीं. समा खराशी (कान खाना) और गोलबाजी (पार्टीवन्दी), फिरकाबन्दी से फ़रसत नहीं. मालम नहीं यह हकूमत इस तरह कब तक और कैसे चलेगी. लोगों के दिलों में हर, तहचीब, घेम, आजजी (नम्रता) जैसी चोंचें रह नहीं गई हैं. नई रोशनी के लाग और लड़के सिर्फ इसी धुन में रहते हैं कि किस'तरह दूसरे की आँखों में घुल फोंके और जियादह से जियादह फायदा उठावें. विवाय इसके कुछ नहीं कहा जाता-.खुदा हाफिज ! बाहर चाहे हिन्दु-स्तान की कुछ भी .कद्र ही या नाम हा, अन्द्रनी हातत ता अवतर'ही नजर आती है. ऐसा मालूम होता है कि हिन्दु-स्तान मगरबी (पच्छमी) चका चौध में श्रा गया है श्रीर चसका दिलदादा (प्रेमी) हो गया, जो कि निशान बर-बादी और जवाल (पतन) का है, हमारे देश में भी कार-खानेजात बकसरत खुलते जा रहे हैं जिसकी वजह से दस्तकारी का जवाल और बेरोजगारी बढ़ती जा रही है. एजुकेशन का बुरा हाल है. वह दिन बदिन एक्सपेनिसव (.सरचीली) श्रीर वेसूद (निरर्थक) सी हां गई है. जमाने के बदलने से या रविश (गति) से इर चीज और तौर तरीक में बेहतरी की सूरत पैदा करनी थी. इस नए पैसे ने जिन्दगी श्रलग तल्ख (कड़वी) करदी. बाजारों में जल्द कोई जीज मिलती नहीं, इसका बदल पुराने पैसे में अनपढ़ और ग़रीब दुकानदार जानते नहीं, और होशियार लोगों ने अपनी कमाई की सुरत निकाल ली. चाहिये तो यह था कि जिन्दगी की रविश (चाल) बिलकुल सादा और पाक हा, दिलों में नेकी, इमदर्दी, सेवा का भाव पैदा हो, न कि सिनेमा और तरीक तालीम व कायदे कानून उलम्बन पैदा करने बाले बनाकर लोगों को खीर नई जेनरेशन (नसल) के आदशं को गिरा दिया. क्या यही इसारी चुनीद्द (चुनी हुई ; हकूमत का शेवा (तरीका) है ऐसी हेमांकेसी से तो .गुलामी बदरजहाँ बेहतर था ! खेर, कहाँ तक कहा जावे. श्रीर श्राप पर तो सब रोशन है. मेरा कहना सरज को चिराग दिखाना है. लेकिन सिफ यही है कि आप से दिल का बाम कुछ हलका करने को जी चाह घठता है. फिर भी साचता हूँ कि जो कुछ हो रहा है मालिक (ईश्वर) की मीज (इच्छा) से दी है. इसमें आगे चलकर कुछ कायदा मक्रसूद (बहिच्ट) होगा. शिकवा शिकायत करना बेकार है, खराब चीज की तरफ से भाँस हटा लेना ही बेहतर

کسے استیں کے جلالے صربالے آس کے لئے بنیان مضیوط بناتی تهي . يعلى هوهيارا قابل معتبر (رشواسنهه) لوك ومعدار بنائے تھے . أور حكومت كا در هونا چاهئے تبا ا نه كه إس قدر آؤادی دے دی که هر شخص اپنے فرائض (کرتوبوں) کو بهول بيقها أور مم مانا جو جاعا بدو كر رها هي. كوثي يرسان حال نهين . دفتون كي عجيب و غريب هانت هـ . كسي كو کلم کولے سے مطلب ٹہیں . سمع خواشی (کان کہانا) اور غول بازی (پارٹی بازی) وقع بلای سے فرصت نہیں ، نه معلوم یہ حکیمت اِس طرح کب نک اور کیسے چلے گی . لوگوں کے دلس میں قرا فهذیب بریم عاجزی (امرتا) جیسی چیزیں ره نہیں کئی میں ، نئی روشنی کے لوگ اور لڑکے صرف اِسی دھی میں رہتے ھیں کہ کس طرح دوسرے کی اُنکھوں میں دعول جهونمين أور زيادة سے زيادة فائدة أنهارين ، سوائے اِس کے کچے نہیں کیا جاتا۔ خدا حافظ إ باعر چاھے عندستان کی کچه بهی قدر هو یا نام هو اندرونی حالت تو بدنو هی نظر أتى هے ایسا معلوم هوتا هے دع هديستان مغربي (پنجهمي) حلاجرنده مين آنگيا هـ ارز أس لا داداده (يريمي) هو كها هـ؟ جو نشان بربادی اور ذوال (یتن) کا فع ، همار می میں يه کارخالے جات بکترت کیاتہ جا رہے دیں جس کی رجه سے دستکاری کا ذرال اور پروزگاری بزمتی جا رمی هے . ایجونیشن کا برا حال هـ . وه دن بدن ايكسپينسو (خرچهلي) اور يهسود (نورتیک) سی در گئی ہے . زمانه کے بدلنے سے روش (گئی) سے در چیز اور طور طریقے میں بہتری کی صورت پیدا کرنی تھی . اِس نئے پیسے نے رندگی الگ نلخ (کوری) کو دی ، بازاروں میں جلد کوئی چیز ملتی نہیں ، اِس کا بدل پرائے يرسم مين ابن يوء اور يرائي دوكاندار جانتي نيين اور موشيار لوگرں نے اپنی کمائی کی صورت نکال لی ، چاهلے لو یہ تھا که روهی (چال) بااعل ساده اور باک هو داون مهن نهدی حمدردی سودا کا بهاؤ پیدا هو . نه نه سلیما اور طریقه تعلیم قامدے قانون الجهن پیدا کرنے والے بلائر لوگور) کو اور نگی جهزیشن (نسل) کے آدرهی کو کوا دیا . کیایهی هماری چلیدة (چنی هوئی) حکومت کا شهرا (طریقه) فی . ایسی دیمو کریسی سے تو غلمی بدرجها بہتر تبی ا خیرا کیاں تک کیا جارت ، اور آپ پر تو سب روشن ه . ميرا کينا سبرے کو چراغ دايان هـ ، ليكن مرف يهي هـ كه أب عـ دا ك برجه كچه ملکا کرنے کو جی چاد اُٹینا ہے ، پھر بھی سوچتا ھوں کا جو كيه هو رعا هے - الك (ايشور) كي موج (اُجها) سه هي هـ إسى میں آگے چل کر ضرور کھے فائدہ مقصود (اددرشت) هوگا ، شکوہ شكليت بيكار هـ خراب جيز كي طرف ص أنه هنا لينا هي بيتر



देश की हालत पर एक खत

देश और सरकार के एक सच्चे हितचिन्तक, नेक, ईमा-नदार, समकदार, ग्रेर जानिबदार, और तजरबेकार मित्र का हमारे पास एक .खत आया है. "नया हिन्द" के भी वह ग्रुह्म से प्रेमी रहे हैं. उस खत का एक हिस्सा, उन्हीं शब्दों में हम नीचे दे रहे हैं. कमानों के अन्दर के शब्द हमारे हैं. वह लिखते हैं —

"जमाना कुछ ऐसा .खराव आगया है कि इतसान .खुर्गरज होता जा रहा है. सेवा भाव और प्रेम भाव बिलकुल नेस्त नाबूद होते जा रहे हैं. हरेक श्रपने कारबार में मरा गूल श्रीर परेशान है. मह गाई श्रीर टैक्स बढ़ते जा रहे हैं जिसकी वजह से जिन्द्गी बबाले जान बन गई है, अगर कोई ईमानदारी, नेकनीयती से रहना चाहे भी तो हजार मुशकिलों और मुसीबतों का सामना करना पड़ता है. बेईमानी, रिश्वतस्वोरी, दग्नाबाजी श्रीर मूट का बोल बाला है, जिसकी'जिम्मेदार हमारी मौजूदा हकूमत और कारकुनों का गिरा हुआ कैरेक्टर है. पब्लिक पर इस क़द्र टैक्स लगा दिये हैं कि जिनका असर बेचारी मिहिल क्लास पर पड़ रहा है और वह पिसी जा रही है, और पूँजी वाले या धन्या करने वाले अपनी चालाकी भीर ऐयारी से .खुश और मालामाल हैं और बेईमानी का मौक़ा मिल रहा है, जो कपया हकूमत इकट्टा कर रही है या आमदनी बढ़ा रही है वह विलक्क वेतरतीं की और बेहदा तीर से बरबाद हो रहा है. या यह कहा कि चन्द चालाक और ग्रहार लोगों की जेबों में जा रहा है. यह फर्स्ट श्रीर सेकेएड फाइव इयर ध्तैन्स सिक काराजी घोड़े हैं या दुनिया की आँखों में धूल मोंकी जा रही है. देखना तो यह है कि जिस .कदर कपया ्यु के हो रहा है क्या बाक्रई हुआ भी है और काम भी उसके एक्स हुआ है ? लेकिन इसकी ग्रांस किसकी है ? यह सर क्ष सोल कौन ले ? जो हो रहा है होने दो ! किसी स्कीन

ویش کی حالت پر ایک خط

دیش اور سرکار کے ایک سچے هت چنتک نیک ایماندار سنجهدار فهر جانب دار اور تجربهکار متر کا همارے پایس ایک خط آیا ہے ، "نی اهند" کے بھی وہ شروع سے پریمی رہے هیں ، اس خط کا ایک حصه انهیں کے شدوں سیں هم نیجے دیے رہے ہیں ، کمانی کے اندر کے شدد همارے هیں ، وہ لکھتے ہیں ۔

الإمانة كي ايسا خراب هر كيا ه كه إنسان خود فرض هوتا جا رها هـ . سيرا بهاؤ اور يريم بهاؤ بالعل نيست ناورد هوتي جا رہے میں . هر ایک ایے کاربار سهن مشغول اور پریشان ہے . مهلکائی اور تیکس بوهتے جا رہے هیں جس کی وجهه سے زندگی وبال جان هو گئی هے . اگر کوئی ایمانداری نیک نیتی سے رهنا چاہے ہوں تو هزار مشکلوں اور مصیبتوں کا سامنا كرنا يوتا هـ يرأيداني؛ رشوت خورس؛ دفاباري أور جهوت كا بول بالا هے ، جس کی زمعدار هماری موجودہ حکومت اور كاركنين كا كرا هوا كهريكو هي يبلك ير إس قدر فيكس لكا و دیئے میں که جس کا اثر بےچاری مذل کالس پر پر رہا ہے اور وہ پسی جا رہی ہے، اور پرفنجی والے یا دہندا کرنے والے اپنی چالانی اور عداری صد خوش اور مالا سال هیں اور یے یمانی کا موقع مل رها هے ، جو رویه، حکومت اللها کر رهبی هے یا أمانى بوعاً رهي هه وه بالكل يرتونيبي أور بيهودة طور عد يوبان هو رها ھے یا یہ کہر که چند چالاک اور غدار لوگیں کی جیبیں میں جا رها ہے ، یه فرست أور سيكند فانوايو يلين صرف كافدى گهروت هيں يا دنيا کي اُنکيس ميں دھول جهولکي جا رهي هے . ديكينا تو يه ها كهجس قدر رويه خرج هو رها هايا وأقعى هوايمي ہے اور کام بھی اُس کے عهوض ہوا ہے ؟ لیکن نه اِس کی غرض کسی کو ہے ؟ یه سردود کون مول لے ؟ جو هو رها ہے هوئے دو !

18 حصوں میں تقسیم کو دیا گیا ہے تاکہ مضوق اسائی سے سمجھ میں آ سکیں اور جلدوں میں گاندھی جو کی زندگی کی نقشنی آن کے جیوں دوشن کی جہانکی همیں دیکھنے کو ملتی ہے ۔ اِن سے همیں سبق ملکا ہے کہ جس راسلے پر چل کر آج بحجھم زندگی اور موت کا کھیل کھیل رہا ہے اس سے سندستان کو دیسے بحیایا جا سکتا ہے اور خود اِس خودکشی سے دیسے اپنے کو بحیا سکتا ہے اور خود اِس خودکشی سے دیسے اپنے کو بحیا سکتا

پہلی جَلد کے بہلے حصے میں سرراج سماج واد اور سامیہ واد کی چرچا ہے کہ جو شرم کرے وہی کہائے کا حقدار ہے ۔ نیسرے میں آرتیک براہری کا سدھانت پیش کیا گیا ہے ۔ چراہے میں درائشی امیروں کو بتایا گیا ہے نہ آن کی جائیداد آن نے پاس منعض تہائی یا دھروھر کی شال میں ہے وہے اُس کے مالک نہیں ہیں ۔

دوسرو جلد کے پہلے حصے میں مشیزی اور ادیوگ واد کی چرچا ھے ایس میں یہ دکھایا گیا ھے که زندگی میں مشینوں کی مناسب جکه کیا ھے ، دوسرے میں سودیشی کی ویوبچنا کی گئی ھے ، تدسرے میں ابهادن کے سرروپ پر تفصیل میں بعدث کی گئی ھے ، چونہ میں گؤں کے ادیوگ دھندوں کی ملک کے آرتھک نظام میں مناسب جگه، آنکی گئی ھے ، پانچویں میں اهادی کے بنیادی پہاو اور وکیندرت ادیوگ واد میں اس کی مہتنا کو دکھایا گیا ھے ، چٹھویں میں دوسرے ھاتھ کے دھندھوں کا ذکر کیا گیا ھے اور ساتویں میں نمائشوں کو کس تعلگ سے کونا چاھئے اِس پر وچار نمائشوں کو کس تعلگ سے کونا چاھئے اِس پر وچار کیا گیا ھے ۔

تیسری جاد کے پہلے حصے میں کام اور مزدوری کی چرچا

ق که کس طرح مزدور کی شوش کو ختم کیا جا سکتا ہے او دوسرے میں مزدوری نے در پر بعدت کی گئی ہے که کم سے کم مزدوری کتنی ہوتی چاہئے اتنی که جس سے پیت بہرا جا سکے اور اِنسان اِنسان اِنسان کی طرح زا سکے قیسرے میں کسائوں سکے اور اِنسان اِنسان کی طرح زا سکے قلال گیا ہے ، چوتھے میں اُحداباد کی مشہر ہوتال پر روشنی ڈالی گئی ہے جس کے ٹیتا احداباد کی مشہر ہوتال پر روشنی ڈالی گئی ہے جس کے ٹیتا خود لاسدی جی می نیم ، پانچویں میں وتال اور بیمیٹلگ خود لاسدی جی ہی دیواروں کو کس طرح شافتی سے سلجھایا سائویں میں اُدیواکی دیواروں کو کس طرح شافتی سے سلجھایا جا سکتا ہے اِس کے آصول سمجھائے گئے ہیں ۔

ھری بہتر نے بڑی محنت کے ساتھ اُن جلدوں کا سمپادن کیا تھے ، هم نوجیوں نہلشانگ عاؤس کو اِدنے اُپیوگی پرکاشن کے لئے بدھائی دیتے ھیں ، مداری درخواست شے که رأے تیتی اور مؤدوروں کی تحریک میں دلچسپی لیلے والے هر کاریکرنا اور دیھی بہت دیشواسیوں کو اِن جلدوں کا گمییور اددھیں کونا چاھئے نہ جیوائی صفائی سب بہت عمدہ شے .

سسوي، نا يالتس

18 हिस्सों में तकसीम कर दिया गया है ताकि मजमून आसानी से समक में था सकें. इन जिल्हों में गान्धी जी की जिन्हगी की फ़िलासकी, उनके जीवन दर्शन की माँकी हमें देखने का मिलती है. इनसे हमें सबक मिलता है कि जिस रास्ते चलकर आज पिछ्डम जिन्हगी और मीत का खेल खेल रहा है उससे हिन्दुस्तान का केसे बचाया जा सकता है और खुद पिछ्डम इस खुशकुशी से कैसे धपने का बचा सकता है ?

पहली जिल्द के पहें हिस्से में स्वराज, समाजवाद और साम्यवाद की चर्चा है. दूसरे में इस बात की चर्चा है कि जो श्रम करे वही खाने का हक़दार है. तीसरे में आर्थिक बराबरी का सिद्धान्त पेश किया गया है, चौथे में पैदायशी अमीरों का बताया गया है कि उनकी जायदाद उनके पास महजू शांती या अराहर की शक्ल में है, वे

उसके मालिक नहीं हैं.

दूसरी जिल्द के पहले हिस्से में मशीनरी और उद्योग-बाद की चरच। है. इसमें यह दिखाया गया है कि जिन्दगी में मशीनों की मुनासिब जगह क्या है. दूसरे में स्वदेशी की विवेचना की गई है. तीसरे में उत्पादन के स्वरूप पर तफ़-सील में बहस की गई है. चौथे में गाँव के उद्योग धन्धों की मुल्क के आर्थिक निजाम में मुनासिब जगह आँकी गई है. पाँचवें में खादी के बुनियादी पहलू और विकेन्द्रित उद्योग-बाद में उसकी महत्ता को दिखाया गया है. छठवें में दूसरे हाथ के धन्धों का जिक किया गया है और सातवें में नुमा-इशों को किस ढंग से करना चाहिये इस पर विचार किया है.

तीसरी जिल्द के पहले हिस्से में काम और मजदूरी की चरचा है कि किस तरह मजदूर के शोषण का खत्म किया जा सकता है ? दूसरे में मजदूरी की दर पर बहस की गई है कि कम-से-कम मजदूरो कितनी होनी चाहिये हतनी कि जिससे पेट भरा जा सके और इनसान-इनसान की तरह रह सके. तीसरे में किसानों और मजदूरों के संगठन पर प्रकाश डाला गया है. चौथे में घहमदाबाद की मशहूर हड़ताल पर रोशनी डाली गई है जिसके नेता खद गान्धी जी थे. पाँचवें में हड़ताल और पिकेटिंग की चरचा है. खाँठवें में किसानों और जमींदारों की चरचा है. साँतवें में खौद्यांगिक विवादों को किस तरह शान्ति से सुलमाया जा सकता है इसके इसल समझाये गये हैं.

श्री खेर ने बड़ी मेहनत के साथ इन जिल्दों का सम्पादन किया है. इम नवजीवन पिलिशिंग हाउस को उतने उपयोगी प्रकारान के लिये बधाई देते हैं. इमारी दरखास्त है कि राजनीति और मजदूरों की तहरीक में दिलचस्पी लेने वाले हर कार्यकर्षा और देश भक्त देशवासियों को इन जिल्दों का गम्भीर अध्ययन करना चाहिए. अपाई सफाई सब बहुत उन्हा है.



ECONOMIC AND INDUSTIAL LIFE AND RELATIONS, VOLS. (i), (ii) AND (iii)

जिन्द्गी के आधिक (इस्तसादी) और श्रीद्योगिक पहलुओं और कारखाने के मालिकों और मजदूरों के आपसी सम्बन्धों पर महात्मा गान्धी के लेखों, खुतों, तक्ष-रीरों, उपदेशों और बातबीतों का संग्रह (मजमुआ). संग्रह-कार और सम्पादक—वी॰ बी० खेर; शाया करने वाले नवजीवन पब्लिशिंग हाउस श्रहमदाबाद; तीनों जिल्दों के दाम आठ उपया.

महात्सा गान्धी न सिर्फ मुल्क के सियासी नेता थे बल्कि नई बुनियादों पर दुनिया की तामीर करने की तालीम देने वाले भी थे. पच्छिम ने यूरोप और श्रमरीका के मुल्कों और रियासतों में इस दरजे कारखाने बनाये और इन कार-खानों की पैदाबार को इस क़दर यकजाई (केन्द्रित) कर दिया कि मुल्कों की दौलत चन्द पूँजीपतियों के हाथों में इकटा हो गई और अमीरों और रारीबों के बीच की खाई इतनी गहरी और चौड़ी हो गई और वह नफरत और श्रापसी कशमकश से इतनी भर गई कि उसने पिछमी सभ्यता और तहजीब की बुनियादों को ही जड़ से खोखला कर दिया. अभीर बेहद अमीर हो गये और रारीव बेहद रारीब हो गये. रारीबों के पेट खाली हो गये और अमीरों की पेटियाँ भर गईं. पिछम ने उसका एक ही हल निकाला बीर वह हिंसात्मक समाजवाद. गान्धी जी ने तजवीज की कि इस हल के नतीजे में हम दो खीफनाक जग देख चके हैं और तीसर जंग की जिस पैमाने पर तैयारियाँ हो रही हैं उससे मर्ज और मरीज दोनों ही खुल हो जायेंगे. मर्ज को ठीक करने के लिए गान्धी जी का नुसखा था-अहिसात्मक शोसलीयम. इसे कैसे दुनियाँ में कायम किया जाय, समाज को कैसे इस तरफ लाया जाय, बालच का कैसे त्याग में बदला जाय, नफरत के दरिया का कैसे महत्वत के सरवश्मे में बदला जाय, किन बुनियादों पर मजुदूरों का संगठन किया जाय, अमीरों और रारीकों के फूर्क को मिटाकर कैसे समाज में बरावरी के इतवे को क्रायम किया जाय, उत्पादन का किस तरह विकेन्द्रीकरण किया जाय और दुनिया की तहजीब को किस तरह हिंसा की बुनियादों से इटाकर अहिसा की बुनियादों पर काथम क्या जाय-इसकी तफ्सील आपको इन तीन जिल्दों के करीय साठ सी सफों में देखने को मिलेगी. इन जिल्दों को ECONOMIC AND INDUSTRIAL LIFE AND RELATIONS, Vols. (i) (ii) AND (iii)

وندگی کے ارتبک (اقتصادی) اور اردیوکک پہاوؤں اورکارخانے لے ماکنوں اور مزدوروں کے آپسے سمبادہوں پر مہاتما گاندھی لے لعکھوں از خطوں تقریروں اور بسوادگ وی وی ماکرہ کار اور سمبادگ وی وی ماکرہ کار کار اور سمبادگ وی وی ماکرہ کار کار اور سمبادگ وی وی ماکرہ کار کار اور سمبادگ هاؤس احمداداد کی تینوں ماکوس کے دام التب رویا ہے .

مهاتما کاندهی نه صرف ملک کے سیاسی نیتا تھے بلکہ لئی بنهادوں یر دنیا کی تعمیر کرنے کی تعلیم دینے والے ابھی تھے ۔ نجوم نے یورپ اور امریکہ کے ملکوں اور ریاستوں میں اِس درجے الرخالي بنائد أور إن كارخانون كي يدداوار كو اس ددر يعجاني اکیندرت) کردیا که ملکس کی دولت چند پونجی بتیس کے ھاتھوں میں الالها ھو گئی اور امیروں اور غریبوں کے بینے کی نهائی اتلی گهری اور چوزی هوکئی اور وه نفرت اور آپسی کشمکس سے اتنی بھر گئی که اُس نے بحصے سابھتا اور نہتیب کی بنیادوں کو ھی جو سے نہرکھ کو دیا ، امیر ہے حد امهر هو گئے اور غریب ہے حد غریب هو گئے ، غریبوں کے بیت خالی هو گئے اور امیروں کی پیتیاں بھو گئیں، پحچم لے إس كا أيك هي حل نكالا أور ولا منساتمك سماجواد . كاندهي جی لے تجویز کی که اِس حال کے التیجے میں هم دو خوفناک جنگ دیم چکے میں اور تیسرے جنگ کی جس پیمانے پر تهاریاں عو رعی عیں اُس سے مرض اور مریض دونوں عی ختم مو جانیں گے . مرض کو تبدک فرنے کے لئے کاندھی جی کا فسطع نها-اعنسانمك سوشلزم . أسع نيسم دنها مين قايم كها جانه مماج كو كيسم إس طرف لايا جانه الله كو ليسم تياك مھی بدلا جائے انفرت کے دریا کو کیسے محبث کے سرچشم میں بدلا جائے' ان بلیادوں یہ مزدورں کا منکٹھی کیا جائے' اسپروں اور غریدوں کے فرق کو سٹا کر کیسے سمانے میں برابری کے رقب کو ناہم کیا جائے اُدادن کا کس طوح کیندریکون کیا جائے اور دنیا کی نہذیب کو کس طرح عاسا کی بلیادوں سے منا کر اهنسا نی بنهادوں در قایم کیا جائے۔ اِس کی تعصیل آپ کو اِن تین جلدوں کے قریب آئے سو صفحتوں میں دیکیا۔ کو املے کی ، اِن جلدوں کو

इन टोपिबों के इस्तेमाल का भी कजीव हाल होता है. कोई इनको किसी के ख़ौफ से लगाता है तो कोई इनका बच्चोग जाती लोभ से करता है. कोई किसी पालिसी से लगाता है तो कोई रयाकारी से. लिहाजा सियासी टोपी एक ग्रुबहें की चीज हो कर रह गई है और 'अविश्वास' की काप बसपर लग गई है इसलिये बसकी पोजीशन किसी हाल में साफ नहीं रही.

यह टोपियाँ और मन्द्रियाँ प्रचार तो अपना अधिक रक्षती हैं समाचार से भी अधिक, परन्तु सर रहते हुए भी अगर इक्कत न पा सकें तो 'अक्स्तु'.

लाखों मनुष्य रंग विरंगे लेकित लगाये हुये हैं अपने सरों पर, लेकिन हमारी नजर और अनुभार में कितने ही वह सर है कि जो वे लेकित हैं और ज्यादा आनरेबित . اِن کوپئیس کے استعمال کا بھی عجیب حال ہوتا ہے ، کوئی اِن کو کسی کے خوف کاتا ہے تو کوئی اِن کا ایبوک ڈائی لوبھ سے کرتا ہے ، کوئی کسی پالیسی سے لگاتا ہے تو کوئی ریاگاری سے درتا ہے ، کوئی کسی پالیسی سے لگاتا ہے تو کوئی میاور سے وارد اللہ اللہ کسی حال میں چہاپ اُس پر لگ گئی ہے اِس لئے اُس کی پوزیشن کسی حال میں جہاپ اُس پر لگ گئی ہے اِس لئے اُس کی پوزیشن کسی حال میں صاف نہیں رہی ۔

یه تربیاں اور جهندیاں پرچار تو اپنا ادھک رکھتی میں سماچار سے بھی ادھک' پرنتو سر پر رہتے ہوئے بھی اگر عوت ته پاسکیں تو اچرج' .

لاکھوں ماشیہ رنگ ہونگ لیبل لگائے ہوئے میں آپنے سروں پر کی لیکن هاری قطار آبر انوبھو میں کتانے میں وہ سر که جو پر لیبل میں وہادہ آنرا ایبل میں ،

700 PAGES, 82 ILLUSTRATIONS 2 COLOURED MAPS

"CHINA TODAY"

PRICE

BY PANDIT SUNDARLAL

Rs. 7. 50.

A vivid narration of the glorious and wounderful schievements of New China... A picture of China which is both convincing and authentic... the best book that has come out so far on New China in the English language ... the most objective in approach and comprehensive in treatment.

—National Herald, Lucknow.

Highly informative...throws vivid light on conditions obtaining in that country...s book which deserve to be widely known.

—Leader, Allahabad.

Encyclopæedic...characterized by soute observation of detail as well as by. instinctive grasp of thes fundamental perspective...To read it is veritably like accompanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New China.

— Blitz Bombay

A mine of information which gives a picture of China as nothing else dose...the best guide to New. China...Those who would like to understand what is happeing in New China can do not better than to study it

—Bharat Jyotl, Bombay.

The wealth of information it gives on China new and old...makes fascinating reading...is comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs.

—Indian Express, Madras.

China Today is an eloquent tribute to his (Pandit Sundarlal's) shrewd understanding of men and matter... brings to the lighty mighty endeavour of the Chinese People to rebuild theirgreat nation on firm new foundations or a tomorrow which is theirs.

—Vigil, Delhi

दिमानों के अन्दर सियासी सिवड़ी पकती रहती हैं और सरवेश दका रहता है सोपड़ी की देगनी पर—बाज मूले और नदीदे अधगली ही सा जाते हैं दकनी खोलकर, और बाज जजी भी नहीं छोड़ते ने सबरे होकर, जिसके नवीजे में या तो उनके पेट में दर्द बठने लगता है या बद-हजमी हो जाती है. यह सियासी बदहजमी समाजी जिन्दगी के लिये निहायत ख्तरनाक है जिसका ख्मयाजा बुरी तरह अगतना पड़ता है न केवल उस एक व्यक्ति को बल्कि सारी देगनी को.

यह 'सरपेश' क्रीम-फ्रोश भी साबित होते हैं बाज-बाज समय. क्रीम-फ्रोशी का सीदा सूदमन्द साबित होता है इनके लिये. इसलिये वह टोपियाँ अपनी रंगीन कमाई से आलीशान काठियाँ बनाती है बक्रीया अपनी जिन्दगी ऐश आराम स गुजारने के लिये—आज हमारी नजर में बहुत सी ऐसी टोपियाँ भी है और इनकी बनाई हुई कोठियाँ भी.

यह रंग-बिरंग की टोपियाँ जैसे किशतियाँ हों रंगीन बादबान वाली और चल रही हों जीवन के समुन्दर पर विचार धाराओं के सहारे सहारे.

या जैसे यह टोपियाँ साइज में जैसे कमरशियल लिफाफों, पर रंग में गोया सियासी इशारे.

यह टोवियाँ अपने-अपने रंग में सन्देश लिये फिरती हैं इधर से उधर.

हर टोपी नीति रखती है अपनी-अपनी और पैताम अपना अपना. इसलिये यह कहना ठीक है कि हर टोपी प्रचारक भी है और प्रकाशक भी, मगर क्योंकि इनके रंग पक्के और बचन सबे नहीं इसलिये मार खा जाती हैं सियासत के मैदान में और आ गिरती हैं अन्त में सत्य के चर्यों में.

दिमारी भावनाओं का अधर टोपियों पर अवश्य पड़ता है. इसी का यह कारण होता है कि वाज टोपियाँ काली, बाज पीली और बाज लाल या मुफेद नजर आती हैं. ऊपर से जो भी उनके रग हों पर भीतर से अकसर काजी होती हैं और तास्मुब के उन पर जाले हाते हैं. इसलिये जा कुछ वह देखती हैं जालेहार आखों से.

अब किसी पार्टी का पार्टी से और नीति का नीति से बिरोध होता है तो उसका आप से लाजमी तौर पर विचार बदलता है— उसल पलटता है. विचार और स्थाल बदलता है तो मार्ग भी बदलता है और मार्क भी. ऐसी ही हालत में सर डापियाँ बदलते हैं और टोपियाँ सर बदलती हैं. बाज टोपियाँ "फ़िट सिर" न मिलने के कारण उड़ती फिरती हैं हवा में सा अटकी रह जाती हैं स्मतूल फ़िया में.

حمالان کے اتعار سیاسی کیتھوں پہلی رمتی ہے اور سروراف کھٹا رفقا ہے کیوپوں کی دیکھوں پر سے بعض یہو کے اور شدیدے گھھ الی می کہاجاتے میں تمثنی کیول کرا اور بعض جانی بھی کیھیں جوور تے ہے صورے موکو' جس کے نتیجے میں یا تو اُن کے پہلی میں دود آئینے لکتا ہے یا بدمقسی موجانی ہے - یہ سیاسی چینقسی مماجی زندگی کے لئے نہایت خطرفاک ہے جس کا خمیلوہ برس طرح بھکتا ہوتا ہے نہ کیول اُس ایک ویکٹی کو

یہ اسریوس کو فروش بھی گاہت ہوتے میں بدش بعض سلے . قوم فروشی کا سودا سودماد گاہت ہوتا ہے اُن کے لئے . اُس لئے وہ گویداں اُیٹی رنگری کے دائے سے عالیشان کوئیداں بنانی میں بقیم اُرام سے گزار نے کے ائے ۔ آج میاری نظر میں بہت سی ایسی گویداں بھی میں اور اُن کی بنائی ہوئی کوئیداں بھی میں اور اُن کی بنائی ہوئی کوئیداں بھی ۔

یہ رنگ برنگ کی توبیاں جیسے کشتیاں ہوں رنگین بادیان والی اور چلرھی موں جھوں کے سمندر پر وچار دھاراؤں کے سھارے سھارے ،

یا جیسے یه توپیاں سائز میں جیسے کنوشل لفانے؛ پر رنگ میں گیا سیاسی اشارے .

یه توبیان اپنے اپنے رنگ میں سندیش نئے پورتی هیں ، ادهر سے آدهر ،

هر تربی نیتی رکھتی ہے اپنی اپنی اور پینام اپنا اپنا ،
اسپئے یہ کہنا ٹھیک ہے کہ هر تربی پرچارک بھی ہے اور
پرکاٹک بھی مکر کیونکہ اِن کے رفک پکاور رچن سچےنہیں اس
لئے مار کیلجاتی هیں سیاست کے میدان میں اور آ گرتی هیں
ائٹ میں ساید کے جرنیں میں ،

دمانی بهاؤناؤں کا اثر ترپیوں پر ارشهہ پرتا ہے ۔سی کا یہ کاری ہونا ہے کہ بعض ترپیاں کالی' بعض پیلی اور بعض لال یا سفید نظراتی هیں، ارپر سے جو بھی اُن کے رنگ میں پر بھیتر بھے اکثر کائی ہوتی ہیں اور تعصب کے اُن پر جالے ہوتے هیں ، اِس لائے جو کچھ رہ دیکھتی هیں جائے دار آنکھیں سے ،

جب کسی بارٹی کا پارٹی سے اور نہتی کا نہتی سے ورودہ ہوتاہے ۔ تو اسکی اور سی الزمی طور پر وجار بدلتا ہے ۔ خیال پاکتا ہے ۔ وجارزاور خیال بدلتا ہے تو مارک بھی اور مارک بھی ، ایسی ہی حالت میں سر تربیاں بدلتے ہیں اور ٹرییاں سر بدلتی ہیں اور ٹرییاں اور فیا سر کا نہ مالی کے کارن اوتی پھرتی ہیں ہوتی ہوتی ہوتی ہوتی ہوتی ہوتی ہیں سے اس فاما میں ، इन्तिसम्ब का भाष यह रक्षणी हैं अपने बाब में.
सलबार की काट यह रक्षणी हैं अपनी घार में.
जिदाल क्षणाल में खून की नद्बों यह बहावी हैं.
अमन बाराती में सुलह के फरहरे यह उदाती हैं.
बरगाह की कलसी पर हिलाल का परचम यह लहराती हैं.
यासन के मबन पर इठला इठला के यह चलती हैं.
शासन के मबन पर इठला इठला के यह चलती हैं.
जनसंघ के संगठन से अखन्ड अखन्ड यह पुकारती हैं.
वृत्तित के मन मन से दमन दमन यह विल्लाती हैं.
सुखं कीज के मोने से नारा इंकलाब का यह लगाती हैं.
पक्ता के संगम पे गङ्गा जमनी राग यह आलापती हैं.
प्रेम के मन्दिर पे धार्मिक भाव यह जगाती हैं.
पीपल के दरस्त पे हिन्दू मुसलिम किसाद यह कराती हैं.

यदि 'विश्व शान्ति' के अन्दोलन इनके दम से चलते हैं तो 'विश्व युद्ध' के ह गामों में मखे इनके लहराते हैं.

यह सब कुछ सही; इनकी तमाम रंगीनियाँ, दिल-परिपयाँ और खूबसूर्रातयाँ खपनी जगह गर, लेकिन इस-तक्तलाल नहीं होता इनके मिखाज में. धैय नहीं होता इनके स्वाभाव में—हवा का उख देखकर यह अपना उख फेरती हैं और फिखा का रक्ष भांप कर यह अपना रंग बदलती हैं. कितनी तलव्यन मिखाज होती हैं यह और कितनी हवा परसद !

मंडियों भीर टोपियों का एक दूसरे से ऐसा ही सम्बन्ध है जैसे हर रंग को रंग से निस्नत, लेकिन जब हवा साथ नहीं देती समय का तो हम देखते हैं रंग विरंग की टोपबों उदती फिरती हैं पवन में या जलती नजर आती हैं डाग्नि में.

जैसे किसी राज का सिक्का बालू रहता है राज भर में, इसी प्रकार राज-रंग की टोपियाँ परछाई होती हैं राज-बलन की. जैसे किसी खोट के कारण या किसी नीति के धानुसार सिक्का टकसाल बाहर हो जाता है, वैसे ही टोपियाँ भी यकायक एड़ जाती हैं सरों से और दूसरी आ बैठती हैं उनकी जगह.

टोपियाँ हरकन का काम भी देती हैं, इसलिये इनको सरपोश भी कहा जा सकता है, सरपोश बनकर यह बहुत से बड़े-बड़े बेवक फों की ऐव पोशी भी करती हैं और बहुत से शासकों को नई-नई आकर्तों से बचावी हैं उनके पाप हांककर.

यह रंगीन सरपोश कितने खूबसूरत ऐव पोश होते हैं सब्धुष. लेकिन इनके नीचे कितना गन्दा मादा परवरिश पाता रहता है कभी-कभी. आख़िर यह कि अन्दर ही अन्दर कुलते-फूलते किसी भी बक्त वह फूड निकलता है और खारा भेद खुल जाता है चदवू फेलकर.

اِنْکُتَامُ کا بھاؤ یہ رکھتی ھیں اپنی دھار میں و طوار کی کاف یہ رکھتی ھیں اپنی دھار میں جوال قات میں خون کی ندیاں یہ بہاتی ھیں و اس آشتی میں صاح کے پھربرے یہ آراتی ھیں و درگاہ کی کانی پر مال کا پرچم یہ لہراتی ھیں و بھرنگ الی کی چھڑی پر مال کا پرچم یہ لہراتی ھیں و بھرن کی بھرن پر اِلْهُلَّا اِنَّهُلَّا کے یہ چلتے ھیں و اساس کے بھرن پر اِلْهُلَّا اِنَّهُلَّا کے یہ چلتے ھیں و اس ساتھ کے سنگھیں سے آئیلڈ آئیلڈ اُنہاڈ یہ پکارتی ھیں و دات کے من من سے دمن دمن یہ چلاتی ھیں و دات کے من من سے دمن دمن یہ چلاتی ھیں و ایکنا کے سائم یہ کنکا جملی راگ یہ البائی ھیں و دیم کے مدر یہ دھارمک بھاؤ یہ جگاتی ھیں و دیم کے مدر یہ دھارمک بھاؤ یہ جگاتی ھیں و دیم کے درخت یہ ھلاو مسلم نسان یہ کرانی ھیں و درخت یہ ھلاو مسلم نسان یہ کرانی ھیں و درخت یہ ھلاو مسلم نسان یہ کرانی ھیں و

بدی 'وشو شانتی' کے آلدولن اِن کے دم سے چلتے هیں ، تو 'وشو یده' کے هنگامہر میں جہاتے اِن کے لہرائے هیں .

یه سب کیچ سهی را ان کی تمام راکیفیاں دانچسپیاں اور خوبصورتیاں اپنی جگه یو ایکن استقل نہیں ہوتا اِن کے مزاج میں معلی دریا اِن کے سربیاؤ میں سوا کا رنگ بھائپ موا کا رنگ بھائپ کریے اپنا رنگ بدلتی میں اور فضا کا رنگ بھائپ کریے اپنا رنگ بدلتی میں کتنی تلون مزاج ہوتی میں یہ اور کتنی موا پرست اِ

جهاتیوں اُرر اُریفوں کا ہیک درسرے سے ایسا هی سمباده هے جیسے رنگ کو رنگ سے نسبت' لیکن جب هوا ساته نہیں دیتی سمے کا تو هم دیکھتے هوں رنگ برنگ کی اُرپیاں اُرتی پورتی هیں پوری میں یا جلتی نظر اُ تی هیں اگری میں .

جیسے کسی رأج کا سکه چالو رهتا ہے رأج بھر میں' اِسی پرکار رأج رنگ کی قویفاں پرچھائیں هوتی هیں رأج چال کی ، جیسےکسی کھرت کے کا ربی یاکسی نتیں کے انوسار سکه تکسال باعو هو جاتا ہے ویسے هی توپیاں بھی یکایک اُو جاتی هیں سروں سے اور دوسری آ بیتھتی هیں اُن کی جکهه ،

ترپیاں تمکن کا کام بھی دیتی میں واس لئے اِن کو سرپوش بھی کہا جا سکتا ہے ، سرپوش بین کر یہ پہت سے بڑے اور جات سے بڑھی کرتی میں اُرر بہت سے شاسکیں کو لئی لئی آفتیں سے بمچاتی میں اُن کے پاپ تمانک کی ۔

یہ رنگین سرپوش کتاہ خوبصورت عیب پوش ہوتے ہیں سے سے سے میے لیکن اِن نے نیچے کتا گندہ مادہ پرورش پاتا رہتا ہے کیمی کیمی کیمی کیمی کیمی کیمی کیمی وقت نکلتا ہے اور سارا بھید نیل جانا ہے بدور بھیل کر ۔

157 years

मंडियाँ बेजवान होती हैं लेकिन आवाज रखती हैं
अपनी हरकत में. अपनी हरकत से वह अपना मतलब प्रगट
करती हैं और अपने रक्त से अपना संदेश देती हैं. इनके रंग
में एलान होता है जंग का भी, पैराम होता है अमन का भी,
इनके खाये में तहरीक होती है इंनक़लाव की, इनकी सरपरक्ती में तक़रीब होती है बग़ावत की, मूख के मारे इनके
गहवारे में पलते हैं और खून के बारे इनकी लहरों में रहते
हैं. इनसानी खून से यह अपना कपड़ा रंगतीं हैं और खून का
अरता इनका इनक़लाब का न्यांता देता है. इनकी मचलती
लहरें हवा को अपना हमनवा बनाती हैं और फिजा पे बाते
जाते रक्त इनको अपना हमनवा बनाती हैं.

मंडी के रक्त से शासन का रहोबदल हांता है. और टोपी की बदला बदली से नीति में तबदीली आती है (जैसी नीति वैसी टोपी) जब विचार बदलता और ख्याल पत्तटता है तो उसका असर खोपड़ी पर पड़ता है. खोपड़ी से क्या क्या गुल खिलते और मेद निकलते हैं वह सब इन टोपिबों का ही असर होता है, क्योंकि टोपियों को दिमारा से पका हुआ साहा तैयार मिलता है.

पार्टी की नीति का—मिडियाँ अपने ऊँचे स्थान से हुक्म चतावी और फरमान जारी करती हैं. सलाम करने वाले मुक मुक जाते हैं उनके सम्मुख. नमस्कार करने वाले कमान हो जाते हैं इनके सामने दरबार में.

श्रलम-बरदार उनकी वफादारी का हलफ उठाते श्रीर प्रण (पहद) करते हैं इताश्रत गुजारी का—बह उन सब को श्रपनी सरपरस्ती में लेकर उनके पक्ष में श्रपनी राय जताती हैं.

मंखिया कभी हरकत करती हैं कभी साकित (जामोश) रहती हैं. जब हरकत करती हैं तो जैसे साँप लहराते और बल खाते हैं. अपनी हरकत से वह हरकत लाती हैं समाम में और हवायें लाती हैं पहसास की अवाम में. जब खामाश रहती हैं तो जैसे फिजा खामोश, जब चलती हैं ता चलती ही चली जाती हैं पूरब से पच्छिम, फिर पलट कर दिक्सन से उत्तर तक. जब चुप रहती हैं तो प्ला तक दम साध जाता है उनकी एक चुप पर, लेकिन इनकी चुप में भी मसलहत होती है. वह अपनी चुप के बक्के में बहुत कुछ काम कर सेती हैं चुपके चुपके.

खलामती कौं सिल में लहरा कर यह अमन शान्ति की जुमाइन्दर्गी करती हैं मगर क्रान्ति से भी साजवाज रखती हैं.

पीस कान फ्रेंस में एक कर हवा अमन की यह वांधती

हैं पीस-मेकर बनकर.

(UNO) यूनो की फ़ौजे' लेकर यह आगे आगे जाती हैं चीक्-आफ़ दी आर्मी होकर. समाज-सभा की स्थापना करके मार्थना और धर्म के पाठ पढ़ाती हैं.

جہندی کے رنگ سے شاسن کا رد و بدل ہونا ہے ۔ اور ٹوپی کی بدلا بدلی سے تیتی میں تبدیلی آئی ہے (جیسی ٹیٹی ویسی ٹرپی) . جب وچار بدلنا اور خیال پلٹتا ہے تو اُس کا اثر کھورتوں پر بڑنا ہے ، کھربتی سے کیا کیا گل کیاتے اور بیید تکلتے ہیں وہ سپ اِن ٹرپیوں کا ہی اثر ہوتا ہے ، کیونکہ ٹوپیوں کو دمائے سے پکا ہوا مادہ نیار ملتا ہے .

پارٹی کی نہتی کا جہانتیاں اپنے اونچی استہاں سے حکم جاتی اور فرمان جاری کوئی ہیں ، سالم کرنے والے جہاک جہک جاتے ہیں اِن کے ساماء ، ''نسسکار کرنے والے کمان ہو جاتے ہیں اِن کے ساماء دربار میں ،

علمهردار اِن کی وفاداری کا حلف اُٹھاتے اور پرن (عهد) کرتے هیں اطاعت گذاری کا سرة اُن سب کو اپنی سوپرسٹی میں اینی رائد جاتاتی هیں ۔

جهندیاں کبھی حرکت کرتی ہیں کبھی ساکت (خاموش)
رہتی ہیں ، جب حرکت کرتی ہیں تو جیسے سانپ لہراتے
اور بل کھاتے ہیں ، اپنی حرکت سے وہ حرکت التی ہیں سماج
میں اور ہوائیں التی ہیں احساس کی عوام میں ، جب
خاموش رہتی میں تو جیسے نفا خاموش ، جب چلتی ہیں
تو چلتی ہی چاتی ہیں پورب سے پنچھم تک اور پھر پات
کو دہوں سے افر تک ،

جب چپ رهتی هیں تو پتا ک دم سادھ جاتا ہے اُن کی ایک چپ پر' لیکن اُن کی چپ میں بھی مصلحت موتی ہے وہ اپنی چپ کے وقفے میں بہت کچھ کام کر لیکی هیں چھکے چھکے ۔

مالمتی کولسل میں ایوا کو یہ اس شانتی کی تمایندگی کرتی بھی مکر کوائتی سے بھی سازبار رکھتی بھیں ،

"پيس كاتمونسون مين از كر هوا امن كي يه باندهتي هين-

پيس ميکر ين کر .

(UNO) یو لو کی فوجیں لے کر یہ آگے آئے جاتی هیں چیف- آف- دی- آرمی هو کر ، ساچ سبھا کی استھادنا کو کے پارٹی اور دهرم کے پاٹھ پڑھاتی هیں ،

टोपियाँ और मंडियाँ

श्री अब्दुल हलीम अंसारी

दोनों तरजुमान होते हैं अपने अपने लक्ष और मत के. दोनों पैताम होते हैं अपने अपने संघ और मन क.

टोपियाँ जब सरपर होती हैं तो कुछ लेती हैं दिमारा से और कुछ देती भी हैं दिमारा को.

दिमारा उनके प्रभाव से बहुत सी चीजें स्वीकार करते हैं और टापयाँ कुछ प्रभाव अपनी भरती भी हैं दिमारों के भीतर. टोपियाँ पार्टी परिचय का काम करती हैं अपने ऊँचे स्थान से. टोपियाँ नीतियाँ रखती हैं अपनी अपनी ठर्ज और रगत में जैसे मंडियाँ क्रांतियाँ रखती हैं अपनी अपनी लहर और हरकत में. विशेष रक्ष और विशेष रक्ष की टोपियाँ और मंडियाँ निशानियाँ हाती हैं जो अपनी अपनी संस्थाओं की नुमायन्दगी करती हैं, जिनके प्लान और प्रोप्राम वैसे ही अलग अलग हाते हैं जैसे छूत छात के स्थान अलग अलग एक के स्टेज पर दूसरा नहीं जा सकता. दूसरे की सीमा में तीसरा नहीं आ सकता. जो क्रीमी सुधारकों के 'लक्ष जी एकता' के मरकज (कन्द्र) होते हैं वहीं मूल में सियासी छुआछूत के संगठन होते हैं.

महियाँ प्रेम और एकता का पैग्राम देती हैं मिली-जुली सभा में—कितनी ठन्डी और शान्त पूर्ण होती हैं, उनकी वह शीतल छाया और प्रेम सभा—जाहिर में कितनी श्रच्छी होती हैं वह प्रेम भरी मंडियाँ और दिलकश उनकी रंगी-नियाँ.

यह एकता का संगठन रचाती हैं और मेल मिलाप का संगम बनाती हैं. यही अपने ताने बाने से क्रीमी जामे तैयार करती हैं. लेकिन क्रीम का शीराजा भी यही बिखेरती हैं और एकता का दामन भी यही नो बाती हैं. फिरकेंबारी की आग भी यही बुमाती हैं लेकिन अपने दामन से हवा देकर इस आग को भदकाती मी यही हैं. मुखालिक हवा को भाप यह रोकती हैं लेकिन काट भी यही करती हैं हवा का, औरी इखभी इसका यही फेरती हैं. यह दबी आग पर फूंक मारत-हैं लेकिन सुजगी आग पर खाक भी यह डालती हैं. संगठन यह बनाती और बिगाइती हैं. हलचल यह मचाती और द्वाती हैं. नरेशक चूंकि दा उखी इनकी पालिसी होती है और दोतरका इनका उख, इधर इझ तो उधर इझ, कभी इझ तो कभी इझ.

توپیاں اور جھنتیاں

شرى عبدالتطيم انصارى

دونوں ترجمان دوتے میں اپنےاپنے اعص اور ست کے . دونوں پینام دوتے ہیں۔ اپنے اپنے سنام آور من کے . ٹہپیاں جب سر پر ہوتی ہیں تو کچھ لیتی ہیں دماغ سے اور کچھ دیتی بھی ہیں دماغ کو .

دماغ آن کے پربھاؤ سے بہت سی چدویں سوٹیکار کرتے ہیں اور توپیاں کچھ پربھاؤ اپنے بھرتی بھی ہیں دماغرں کے بھیتر ، توپیل پارٹی پریتچے کا کام کرتی ہیں اپنے ارنتچے استیان سے قریبیاں ٹیٹیاں رکھتی ہیں آپنی اپنی طرز اور رنگ میں جھسے جھندیاں کرانتیاں رکھتی ہیں اپنی اپنی اپنی لهر اور حوکت میں وشیعی رنگ او وشیعی تھنگ کی توپیاں اور جھندیاں نشانیاں ہوتی ہیں جو آپنی اپنی سنستھاؤں کی نمایندگی کرتی ہیں وہن جو پلان اور پروگرام ویسے ھی الگ انگ ہوتے ہیں جیسے چھوت چہات کے استھان انگ الگ ایک عبرا نہیں آ سکتا ، جو قومی سدھارکوں کے "لفظی ایکنا" کے موکز (کیندر) ہوتے ہیں وہی مول میں سیاسی چھوا چھوت کے موکز (کیندر) ہوتے ہیں وہی مول میں سیاسی چھوا چھوت کے موکز (کیندر) ہوتے ہیں وہی مول میں سیاسی چھوا چھوت کے میکٹین ہوتے ہیں وہی مول میں سیاسی چھوا چھوت کے میکٹین ہوتے ہیں وہی مول میں سیاسی چھوا چھوت

جهادیاں پریم اور ایکنا کا پیغام دیتی هیں ملی جلی سبها میں و مثلی تهندی اور شانت پورن هوتی هے اُن کی وہ شهنل چهایا اور پریم سبهاسطاهر میں کننی اچهی هوتی هیں وہ پریم بهری جهندیاں اور دلکش اُن کی رنگینیاں .

یه ایکنا کا سنکتهی رچاتی هیں اور میل سلاپ کا سنکم بناتی هیں . یہی اپنے تانے بانے سے قومی جامع تیار درتی هیں ۔ لیکن قوم کا شهرازة بھی یہی بہهرنی هیں اور ایکنا کا دامن بھی یہی نوچاتی هیں . فرقه واری کی آگ بھی یہی بحجہاتی هیں لیکن اپنے دامن سے هوا دیگر آگ کو بھڑکاتی بھی یہی هیں . مخالف هوا کی بھائپ یه رونتی دیس لیکن کا بھی یہی کرتی هیں هوا کا اور بخ بھی اس کا یہی یبدرتی هدی . یه دبی آگ پر جاک بھی یه تالتی پھونک مارتی هیں ایکن سلکی آگ پر حاک بھی یه تالتی هیں . سنگھن یه بناتی اور بگارتی هیں . هلچل یه محجاتی اور دباتی هیں . هلچی نو ادهر کحجه کو دو طرفه اور کا رخ ادهر کحجه تو ادهر کحجه کو کھی کحجه دو

भनेकता में एकता यानी कसरत में बहरत

की देवी मानी जाती है. शिव का विवाह गीरी काली से हुआ. गीरी का धर्य है सफेद और काली का अर्थ है काली. गीरी प्रेम को .जाहिर करती है और काली नकरत को. इन दोनों की किया और प्रतिक्रिया से ही सृष्टि का अन्त होता है. इस तरह भारत के पुराणों में इस विश्व के सारे फैलाव को कहानियों के रूप में सममाया गया है, ताकि कम समम आदमी भी आसानी से समम सके. इस ढंग से उसमें ऐसी बातें भी कह दी गई हैं जिन्हें ठीक ठीक सममने के लिये बड़ी ज्याख्या की .जरूरत है.

इसी तरह शरीर विद्या (फिजियालोजी) का हाल है जिसमें वैद्यक विद्या (इल्मेतिब), इल्मे सेहत, दिन और रात का बनना, मौसमों का बनना, नसलों की पैदाइश, कफ, बात और पित्त सब अपनी अपनी जगह आ जाते हैं.

इसी तरह रोगों (पैथालोजी) का हाल है. रोग भी तीन तरह के हाते हैं—शरीर के रोग, मन के रोग और जीवनी शिक्त के रोग. इसमें भी शक नहीं कि यह सब अलग अलग चीजें एक दूसरे में रली मिली हुई हैं. हम कह चुके हैं कि .कुदरत में कोई ऐसी लकीरें या दीवारें हैं ही नहीं जा एक चीज को दूसरी चीज से या एक किस्म की चीजों को दूसरी किस्म की चीजों से अलग करती हों. हकीकृत एक अथाह और बेपायां, बे किनार समन्दर हैं जिसमें हम सब बुल-बुलों की तरह बनते और बिगइते और फिर बनते और बिगइते रहते हैं. कड़े से कड़े रोग .कुवने इरादो से, मन की अवस्थाओं से अच्छे किये जा सकते हैं और सुक्म से सूक्ष्म मानसिक विचार जड़ भीषियों द्वारा बदले जा सकते हैं.

इनसाइक्लोपीडिया ब्रीटेनिका में प्राणीशास्त्र (जुआेलो-जी) पर निबन्ध इस सम्बन्ध में पढ़ने योग्य है. सब जगह वही तीन के जोड़े और वही अनेकता में एकता यानी कस-रत में बहदत.

البيانا مول ليكا يدني كارت مول وهوت

کی جدیوں ماتی جاتی ہے ۔ دو کا ریواہ گوری کائی سے ہوا ۔
گوری کا آرته شے سفید آور کائی کا آرتم شےکائی ، گوری پریم کو ظاہر
کوتی شے آور کائی تفریعا کی ، اِن درنیں کی کریا آور
پرتیکریا سے هی سرشتی کا آنت هرتا ہے ، اِسی طبح
بھارت کے پرائرں میں اِس شو کے سارے پھیاڑ کو کیائیوں کے
روی میں سبحہایا گیا ہے، ناکہ کم سبحہ آدمی بھی اُسائی سے
سبحہ سکے ، اِس تھنگ سے اُس میں ایسی بائیں بھی کہا
دی گئیں ہیں جنییں ٹھیک ٹھیک سبحہائے کے اللہ بڑی

اِسی طرح شریر ردیا (فزیالہجی) کا حال ہے جس میں ویدگ ردیا (علم طب) علم صحت دن اور رات کا بننا مرسموں کا بننا اسلوں کی پیدائش کف وات اور یت سب اپنی البی جگہء آ جاتے ہیں ۔

اسی طرح روگوں (پیتھانوجی) کا حال ہے. روگ بھی
تین طرح کے ھرتے ھیں۔۔۔۔شریر کے روگ می کے روگ اور جھون
شکتی کے روگ ، اِس میں بھی شک نہیں کہ یہ سب الگ
الگ چھڑیں ایک دوسرے میں رلی ملی ھوئی ھیں ، ھم کہہ
الگ چھڑیں ایک دوسرے میں کوئی ایسی اکھریں یا دیواریں ھیں ھی
نہیں جوایک چیز کو دوسری چھڑ سے ایک قسم کی چیؤوں
کو دوسری قسم ہی چیزوں الگ کرتی ھوں۔ حقیقت ایک اتهاه
اور پیایاں پیکنار سمندر ہے جس میں ھم سب بلبلیں کی
طرح بنتے اور بکڑتے اور پھر بنتے اور بکڑتے رهتے ھیں۔ کرے سے نوے
دوگ قوت آرادی سے می کی اوستھاؤں سے اچھے کئے جا سکتے
ھیں اور سوکشم سے سوکشم مانسک وچار جر اوشدھھوں دوارا

انسایکلہپیتیا ہراینیکا میں پرانی شاستر (زرالاجی) پر نبادھ اِس سمبندہ میں پرتانے یوگیہ ہے ۔ سب جگہہ وہی نین تین کے جوڑ اور وعی اِنیکتنا میں ایکتا یعنی کثرت میں وحدت .

और कारण शरीर कहा जाता है और जिन्हें ईसाई सन्त सेन्ट पाल ने 'बाडी, सोल एएड स्पिरिट' के नाम से पुकारा है, इन तीनों का एक दूसरे से नाता एक अलग और दूसरा विषय है.

मन्दन्तर विद्या यानी ऐन्थ्रापालोजी के अन्दर हम चित्त विद्या (साइकालोजी), देह विद्या (फिकियालोजी) और समाज शास्त्र (सोशियालोजी) तीनों को शामिल कर सकते हैं. यही तीन आत्मा, गैर आत्मा और इन दानों का मेल है. यही माइन्ड, मैटर और लाइक यानी चेतन, अचेतन और प्राण हैं.

इस तरह चक्कर पूरा करके हम फिर उन्हीं उसूलों पर आजाते हैं. हमारा झान (इल्म) और हमारा अनुभव (तजरबा) जितना बढ़ता जाता है और हमारी अन्दर की शक्तियाँ जितनी जितनी खुलती जाती हैं उतना उतना ही जिन चीजों को हम दूर और निकम्मा समफते थे उन्हें नजदीक और काम का समफने लगते हैं. निजी स्वार्थ और .खुद्गारजी की निगाह से यही चीजें हमारे दुनियाबी सुख सौख्य को बढ़ाने वाली साबित होती हैं और त्याग और हफ़ीकी शान्ति की निगाह से यही चीजें हमें सबके साथ इसारी एकता दिखलाकर लोक संमह यानी खिदमते खल्क में जियादह से जियादह मदद देने वाली बन जाती हैं.

इतिहास (तारीख) में तीन चीजें . सास होती हैं. एक विधिवार हालात जिसे कानालाजी कहते हैं जिसका सम्बन्ध काल यानी समय से हैं. दूसरे भूगोल यानी जियोगेफी जिसका सम्बन्ध देश और जगह से हैं. तीसरे घटनाओं का बयान यानी नैरेटिव जो इतिहास का मुख्य अंग है, जिसका सम्बन्ध गति यानी हरकत से हैं. यह तीनों भी उसी शिक्त के कारनामें हैं जो अकेली ही, सब कुछ कर सकती है और जिसके बिना कहीं कुछ किया ही नहीं जा सकता. इन्ही अथों में ईश्वर अल्लाह को सर्व शिक्तमान कादिरे मुतलक या 'आलमाइटी' कहा जाता है.

यदि इम इतिहास को ध्यान से देखें तो इतिहास के यही तीन रूप गौरी, काली, और शक्ति के रूप में दिखाई देते हैं. इन्हों के .जिरये दुनिया के सब पदार्थ, सब जानदार सब राष्ट्र, .कीमें नसलें और सभ्यताएँ पैदा होती हैं, बद्तीं हैं और गिर कर खत्म हो जाती हैं. इन्हीं तीनों ताक्ततों को बद्दाा, बिच्यु और शिव या रुद्र नामों से पुकारा गया है. यही तीनों नाम तीनों गुर्यों रजस, सत्व और तमस को .जाहिर करते हैं. इन्हां का बिवाह 'सरस्वित' से हुआ जो झान की देवी मानी जाती है, क्योंकि कम बिना झान के निष्फल है और झान बिना कम के .खतरनाक. बिच्यु का विवाह लक्ष्मी से हुआ जो धन और सुख सीस्थ

أور كاين شرير كها جاتا هے أور جنهيں عيسائي سنت سنيت بالل في الله على الله أن الله الله الله على الله الله على الله الله دوسرے سے ناتا ايك الك أور دوسرا وشد هـ .

مارئتر ردیا یعلی ایلتهراپالوجی کے اندر هم چت ردیا (ساتیکالوجی) دبهه ودیا (نزیالوجی) اور ساج شاستر (سوشیالوحی) تیلوں کو شامل کرسکتے هیں یہی تین أتما فهر انما اور اِن دونهں کا میل شے ، یہی مائلت میڈر اور لائف یعلی چھتن اور پران هیں ۔

اسی طرح چکر پررا کرکے دم پھر انبھن اصولی پر آجاتے میں ممارا گیان (علم) اور دارا انبھر (نبجربه) جتنا بچھتا جاتا ہے اور هماری اندر کی شکتیاں جتنی جتنی کہلتی جاتی دیں اتنا اتنادی جن چیزرں کر دم درر اور نکما سمنجھتے تھے اُنھیں نزدیک ارر کام کا سمنجھنے لکتے دیئی نبجی سرارتھ اور خود غرضی کی نگاہ سے یہی چیزیں دنیاری سکو سرکھیه کو بودائی تابت دوتی دیں اور تیاگ اور حقیقی شائتی کی نگاہ سے یہی چیزیں دست کے ساتھ هماری ایکتا دکھا کر لوگ سنگرہ یعنی خدمت خلق میں زیادہ سے زیادہ مدد دینے والی بن جاتی دیں .

انهاس (تاریخ) میں تین چیزیں خاص هوتی هیں .
ایک تنبی وار حالات جسے کرانالوجی کہتے هیں جس کا سمبده کال یعنی سے سے ، دوسرے بهوگول یعنی جیوگرینی جس کا سمبده دیش اور جاہت سے فے تیسرے گیتناؤں کا بیان یعنی نریتو جو اتباس کا مکھیت انگ فے' جس کا سمبده گتی یعنی درکت سے فے ، یہ تینس بھی اسی شکتی کے کارنامے هیں یعنی درکت سے فے ، یہ تینس بھی اسی شکتی کے کارنامے هیں جو انبلی هی سب کنچه کر سکتی فے اور جس کے بنا کہیں جو انبلی هی سب کنچه کر سکتی فے اور جس کے بنا کہیں حجہ کیا هی نہیں جا سکتا ۔ اِنہیں ارتہوں میں ایشور اللہ کو سروشکتیمان' قادر مطابق یا 'اَلمائیٹی' کہا جاتا ہے ۔

یدی هم اِنهاس دو دهیان سے دیکھوں تو انهاس کے یہی تین روپ گوری کالی، اور شکتی کے روپ میں دکھائی دیتے عیں اِنهیں کے ذریعے دنیا کے سب پدارنہ، سب جاندار، سب راشتر، قومیں، نسلس اور سبھیائیں پیدا هرتی هیں، برهتی هیں اور گر کر ختم هو جاتی هیں ، انهیں تینیں طاقتیں کو برهما، وشنو اور شو یا رودرناموں سے پکارا گیا ہے ، بھی تین نام تینیں گئیں رحمی، ستو اور تمس دو ظاہر کرتے هیں میرهماکا ویواہ، نسرسوتی، سے هوا جو گیاں کی دیہی، مانی جاتی ہے کیونک کوم بنا نیان نے نشھال ہے اور گیاں بنا کرم کے خطرناگ ، ویواہ کشھی سے عوا جو دھی اور سکھ سوکھیہ وشنو کا ویواہ کشمی سے عوا جو دھی اور سکھ سوکھیہ وشنو کا ویواہ کشمی سے عوا جو دھی اور سکھ سوکھیہ

3/21/200

भारत के "इतिहास" में मानव इतिहास के सास सास युगों का वर्धन है.

यूरोपियन विद्वान बर्गसन ने जिसे 'टापर, इन्सर्टिक्ट और इनटेलीजेन्स' कहा है बसी को भारत के पुराक्षों में 'तमस, रजस और सत्त' कहा गया है. देवी भागवत में इसे बड़े विस्तार के साथ बयान किया गया है.

इस ऊपर कह चुके हैं कि आजकत की सान्इस के अनुसार कृदरत की सारी ताक़तें एक तरह विजली की ताक्रत के अन्दर श्रा जाती हैं. यह विश्वास बढ़े बढ़े साइन्स-दानों का विश्वास है. हो सकता है कि अगला क्रदम साइन्स यह ले कि वह विजली की ताक़त को विश्वव्यापी प्राण् यानी सबकी जान के साथ मिलाकर एक कर दे. इसी विकान को अंगरेजी में ऐनीमामुन्डी या वाइटैलिटी कहते हैं. इसी प्राण या जान को माइन्ड फोर्स भी कहा जाता है. यही वह इच्छा शक्ति, वह कुवते इरादी यानी रूहे कुल की जहर में आने की वह इच्छा है जिसकी बाबत उपनिषदों में कहा गया है- 'मैं एक हूँ और बहुत हो जाऊं'. इसलाम में इसी को अल्लाह के मुंह से 'हा जा' कहना बताया गया है. यह व्यापक इच्छा शक्ति ही झान शक्ति, बुद्धि शक्ति या संकल्प शक्ति के जरिये काम करती है. यही विश्व की क्रिया शक्ति है. क़द्रत की सारी शांक थाँ इसी के अन्दर समाई हुई हैं और इसी से काम कर रही हैं.

मामूली नल से निकला हुआ पानी का फौदारा बहुत बड़े दबाब के अन्दर फ़ीलाद की छड़ से जियादा सख्त हो जाता है, हवा का एक जबरदस्त मोंका अपनी हरकत की तेजी की बजह से समन्दर के ऊपर पानी की उलटी मीनार या सहारा के रेगिस्तान में रेत की भीनार बन जाता है. ठांस बीजें तरल हो जाती हैं, तरल गैस यानी हवा बन जाती हैं. गैसें और अधिक लतीक होकर ईथर बन जाती हैं, बरौरह बरीरह. इसी तरह इनकी तेजी को कम करने और वहाव को बढ़ाने से तरह तरह की लहरें पैदा हो जाती हैं जिन्हें साइन्सदौ 'वेठज' कहते हैं. अन्त में जाकर ये सब गात, हरकत और लहरें बाहे पिन्ड के अन्दर और चाहे ब्रह्मान्ड के अन्दर इसी विश्वारमा की गति है जो अपनी माया (बीजा) के जरिये एक से अनेक माखूम हाने लगता है. इसी से अनगिनत नाम और रूप पैदा होते हैं. आत्मा के इसी अपने चारों तरफ के जृत्य को पुराखों में शिव का तान्हव नृत्य कहा गया है.

जो शक्ति आत्मा और ग्रीर आत्मा में नाता जोड़ती है उसी को योगभाष्य में 'चित्त बत्त' और महामारत और पुरायों में 'काम संकल्प शक्ति' कहा गया है. इसी से महुष्य के वह तीन शरीर बनते हैं जिन्हें स्थूब शरीर,

المالة مين ليكة يعلى كليت مين وهدت

بھارت کے ''انہاس' میں ماتو انہاس کے خاص خاص انہاں افا رولن ہے۔

اور انسانک کیا هے اسی کو بھارت کے پراتوں میں انہس ارجس اور ستو کیا گیا ہے ، دیوی بھاگوت میں اِسے بڑے وستار کے ساتھ بھاں کیا گیا ہے ،

هم أويو كهه چه هيں كه آجكل كى سائنس كے انهمار قدرت كى سارى طاقت الك عارج بجاى كى طاقت كے اندر المائى هيں ، به وشواس برے برے مائنسدانوں كا وشواس فے ، هوسكتا هے كه اگلا قدم سائنس يه لے كه وه بجلى كى طاقت كو وهؤيايى والى يعلى سب كى جان كے ساتھ سلا كر ايك كو درے ، اسى وگياں كو انگريؤى ميں أبليما موندى يا وانگيلتى كهتے هيں ، اسى يوان ياجان كو مائند فورس بهى كها جاتا هے ، يهى وه اچها هى جس كى بابت اپنشدوں ميں كها گيا هے ۔ الله كى منه سے امر بهت هوجاؤں ، اوستم ميں كها گيا هے ۔ الله كى منه سے امورجا كهنا بتايا كيا هے ، يه وياپك اچها كها بتايا كيا هے ، يه وياپك اچها كم كرتى هى ، قدرت كى سارى كم كم كرتى هى ، يهى وشوكى كويا شكتى هے قدرت كى سارى كم كرتى هى ، قدرت كى سارى كم كرتى هى ، قدرت كى سارى همتيان اسى كے اندر سمائى هوئى هيں اور اسى سے كام كررتى هى ، قدرت كى سارى

مممولی نل سے نکل ہوا پانی کا فوارہ بہت ہو ۔ دیاؤ کے اندر فوادد کی چیز سے زیادہ سخت ہو جانا ہے . ہوا کا ایک وہردست جہرنکا اپنی حرکت کی نیزی کی وجہ سے سمندر کے آور بانی کی اللّی مینار یا صحارا کے ریکستان میں ریت کی مینار بن جانا ہے . ٹیوس چیزیں قرل ہو جاتی میں' ترل گیس یعنی ہوا ہیں جاتی ہیں' وضورہ وفیرہ . اِسی طرح اِن کی گیس یعنی کو کم کرنے اور بہاؤ کو بڑھانے سے طرح طرح کی ابریں تینوں کو کم کرنے اور بہاؤ کو بڑھانے سے طرح طرح کی ابریں بیدا ہوجاتی ہیں جنہیں سائنسدار 'ویپز' کہتے ہیں ، اثب بیدا ہوجاتی ہیں جائیں سائنسدار 'ویپز' کہتے ہیں ، اثب اور چاھ برسانت کے اندر' اُسی وشوانما کی گئی ہے چو اور چاھ برسانت کے اندر' اُسی وشوانما کی گئی ہے چو اپنی میں مانا (ابلا) کے ذریعے ایک سے انیک معلم ہونے لگٹا ہے . اپنی میں انگلت نام اور روپ پیدا ہوتے ہیں ، آنما کے اِسی اپنے چاروں طرف کے نرتیء کو پرائوں میں شوکا تائذو نرتیء کیا ہے .

جو شککی آنما اور غیر آنما میں نانا جورتی ہے اُسی کو یوگ بیاشتہ میں 'جسال' اور مہابیارت اورام پرانیں میں ' کام سندلپ شکلی' کہا کیا ہے ۔ اِسی سے ماشفہ کے وہ تین ہریر بنتیا عیں جنہیں استجال شریر'

一种等於於 李觀縣

یک دوسوے کے سالھ خلت ملت ہوتی رهی هیں۔ سبجی بات یہ ہے اور هم شبیشہ یه کہ سکتے هیں که هم سب شاریرک نگاہ سے اور آنما کی نگاہ سے دونوں نگاهوں سے آیک دوسوے کا آنگ میں اور آیک هیں' پبر بھی هو ایک اینا الگ ساپیکش وجود بھی رکھتا ہے۔ اِسی کا نام آیکنا میں انهکتا' یعنی وحدت میں کثرت اور کثرت میں وحدت ہے۔

انجیل میں لکھا ہے:۔۔''ایشرریہ قانوں کے انہمار سب چیزیں ایک دسرے کے وجود میں مل جاتی ھیں ،'' کارن صاف ہے کیونکہ سب ایک ھی چیئن کی کلیفا سے پیدا ھوئی عیں اور اُسی ایک کلیفا کے انگ ھیں ،وہ سبجگہ حاظر ناظر' سرویارگ 'سرو شکتیمان' روح کل' سب کو سب کے اندر ایک کئے ھوئے ہے . یوپ کے مشہور ساملسدان ڈاکٹر ایلیمسس دیرل کے ایکی پستک ''مین اس سچائی کو مائنس کے ایکی پستک ''مین اِس سچائی کو مائنس کے شیدوں اور سائنس کے طریقے سے بڑی سندرتا کے ساتھ بیان کھا اور سمجھایا ہے ۔

یہی لارن ہے که آدمی کے دل میں اِس بات کی زبردست اور گہری لکن ہے که وہ اِس بهلتا میں ایکتا کو دیکھ سکے ، اِسی لئے سائنس پرکرتی کی سب شکتیوں کو اپنے آدھیکار میں لائے کی کوششوں میں ایک رھتی ہے ، اِسی لئے مائو سماج دھیرے دھیرے اِسی ایکتا فو ساکشات ترنے کی طرف قدم بڑھا رہا ہے ۔ سب کے ساتھ اپنی ایکتا کو ساکشات کرنے میں ھی سرو شکتی متا کا رہسیه یعنی قدرت کامل کا راز چیها مواہے .

جیرتش ودیا بعلی علم نجوم (ایسٹرانومی) کے اندر یموگول ودیا (جهوگریشی) اور بهوگریم ودیا (جهوگریش) دونوں شامل هیں پرانوں کے انوسار هماری اِس دعرتی کی رچنا میں سات آورن هیں اِنهیں کرمٹی' پائی آک' هوا وغیرہ ناموں سے پکارا جاتا هے اِسی جهوتش کے اندر بهوتل ودیا (فزیوگرانی) اور اِسی میں ونش ودیا (باایولجی) شامل هے ونش ودیا میں منی ودیا (منوالوجی)' ورکش ردیا (بائینی)' پرانی ودیا کا هی ایک پرانی ودیا کا هی ایک پروپ منونتر ودیا یعنی اینتهرا یالمجی هے ۔

بوارت کے پرانیں میں پانچ خاص چیزوں کا بھان آتا ہے:
ایک سرگ یعلی دفیا کیسے بلی دوسرے پرتی سرگ یعلی
دفیا کیسے ختم ہوتی ہے، نیسرے ونش یعلی جاندار کیسے بھدا
موڑ میں چوتھ ملونٹو یعلی ملشید کی پیدائش کا انہاس
بانتھیں رنشانو چرت یعلی ملشید کی تسلیں کا انہاس الیوں
بانتھیں کے سانو سانو پرانیں میں اوتاروں کا ذار ہے ۔ اوتار کا
سلاب ہے ''جاول' نے ذریعے اُس الله کی قدرت اور اُس
کی مکتی کا خاص خاص چیزوں یا آدمیں میں طہور ۔

एक दूसरे के साथ खिल्त मिल्त होती रही हैं. सच्यी बात यह है और हम शब्दशः यह कह सकते हैं कि हम सब शारीरिक निगाह से बौर आत्मा की निगाह से दोनों निगाहों से एक दूसरे का अंग हैं और एक हैं, किर भी हर एक अपना अलग सापेक्ष वजूद भी रखता है. इसी का नाम एकता में अनेकता और अनेकता में एकता, यानी बहदत में कसरत और कसरत में बहदत है.

इंजील में लिखा है:—"ईश्वरीय कानून के अनुसार सब चीज़ें एक दूसरे के बजूद में मिल जाती हैं." कारण साफ है क्योंकि सब एक ही चेतन की फल्पना से पैदा हुई हैं और उसी एक कल्पना के आंग हैं. वह सब जगह हाजिर नाजिर, सब व्यापक, सब शक्तिमान, रूहेकुल, सबको सबके अन्दर एक किये हुए है. यूराप के मशहूर साइन्सदां" इाक्टर ऐलेक्सिस कैरल ने अपनी पुस्तक "मैन दि अन्नोन में इसी सचाई को साइन्स के शब्दों और साइन्स के तरीक्रे से बड़ी सुन्दरता के साथ बयान किया और सममाया है.

यही कारण है कि आदमी के दिल में इस बात की जबरदस्त और गहरी लगन है कि वह इस मिन्नता में एकता को देख सके. इसीलिये साइन्स प्रकृति की सब शक्तियों को अपने अधिकार में लाने की कोशिशों में लगी रहती है. इसीलिये मानव समाज धीरे धीरे इसी एकता को साक्षात करने की तरफ क़दम बढ़ा रहा है. सबके साथ अपनी एकता को साक्षात करने में ही सब शिक्तिमत्ता का रहस्य यानी कृदरते कामिल का राज खिपा हुआ है.

ज्योतिष विद्या यानी इल्मेनजूम (ऐस्ट्रानोमी) के अन्दर भूगोल विद्या (जियोनिकी) चौर भूगमें विद्या (जियोलाजी) दोनों शामिल हैं, पुराणों के अनुसार हमारी इस धरती की रचना में सात आवरण हैं. इन्हों को मिट्टी,पानी, आग, हवा वरोरह नामों से पुकारा जाता है. इसी ज्यांतिष के अन्दर भूवल विद्या (फिजियोआफी) और इसी में बंश विद्या (बायो-लाजी) शामिल हैं. वंश विद्या में मिण विद्या (मिनरालोजी) हुछ विद्या (बाटेनी), प्राणी विद्या (जूआलोजी), आ जाती हैं. प्राची विद्या का ही एक क्ष्म मन्वन्तर विद्या यानी ऐन्था-पालोजी है.

भारत के पुरायों में पाँच खास चीजों का बयान झाता
है:—एक सर्ग यानी दुनिया कैसे बनी, दूसरे प्रति सर्ग यानी ह
दुनिया कैसे खत्म होती है, तीसरे वंश यानी जानदार कैसे
पैदा हाते हैं, चीथे मन्यन्तर यानी मनुष्य की पैदाइश का
इतिहास और, पाँचने वंशानुचरित यानी मनुष्य की नसलों
का इतिहास. इन्हीं पांचों के साथ साथ पुरायों में अवतारों
का जिक है.अवतार का मतलब है ''दुखूल' के जरिये उस
अस्लाह की कुदरत और उसकी शक्ति का सास खास बीजों
या आदिनयों में जहूर.

भागवत में और योग वासिष्ट में लिखा है.

कि:—"सब बीजों, हर जगह, हर तरह से और हर समय मीजूद हैं." योग भाष्य में लिखा है:—"सब में सब की आत्मा हैं. सब में सब के सब गुण मीजूद हैं." मशहूर साइन्सदों जीन्स लिखता है:—"हर इलेक्ट्रान सारे विश्व भर में फैला हुआ है." एक दूसरा साइन्सदों ह. ऐले क्सस केरब लिखता है:—'मनुष्य का आपा सब जगह यानो सारे विश्व में फैला है." योग वासिष्ट में लिखा है:—'श्रुख दुनियाओं में हैं और दुनियाएँ अगुओं में हैं."

इस बुनियादी सचाई के हाते हुए भी हम बीजों को अलग अलग नाम दे लेते हैं. यह नाम हम हर चीज के किसी न किसी अलग गुण या उसकी किसी न किसी खास सिफ़त के कारण देकर अपना काम चलाते हैं. न्याय शास्त्र में, यांग वासिष्ट में और ब्रह्म सूत्रों में इस बात को बहुत अच्छी तरह खोल कर और विस्तार के साथ बयान किया गया है.

दुनिया के सब नाम रूप श्रादमी ने श्रपनी श्रासानी के लिये गढ़े हैं. इन नाम रूपों पर ही सब साइन्सों की बुनियादें हैं, नहीं तो कृद्रत में सब एक है, सब रोशनियों की किरने एक दूसरे में मिली हुई हैं. शवनम (श्रोस) की बूँद के अन्दर आफताब (सूर्य) मीजूद है और शबनम की बूँद श्राफताब के धधकते हुए गाले के श्रन्दर मौजूद है मैं जब उत्तरी ध्रुव और दक्किनी ध्रुव यानी कुतुव शुमाली और कुतुष जनूवी की बात करता हूँ तो वह मेरे मन के अन्दर होते हैं और मेरा मन उनमें मौजूद होता है. यह अनन्त श्राकाश और उसके अन्दर अरबो खरबों श्रीर शंखों सितारे और सैयारे सब मेरी छोटी सी श्राँख के अन्दर हैं श्रीर इन सब में भी सब का देखन वालों की श्रांखें मीजूद हैं. बेतार के रेडिया ने साबित कर दिया है कि सब आवाजें, सब जगह से उठन वाली सब जगह सुनी जा सकती हैं श्रीर सब जगह मीजूद हैं. जा सितारे श्रीर सैयारे एक दूसरे से कंगड़ों और अरबो मील की दूरी पर हैं उन सब पर रोशनी की किरनों के द्वारा बराबर एक दूसरे का श्रक्स पढ़ता रहता है. हमारे शरीर के सब तन्तु हमारे खून के जरिए एक दूसरे से मिले रहते हैं. हर छोटे से छाटे ऐटेम की हर हरकत विश्व भर की अनिगनत हरकतों का नतीजा होती है भीर वह खुद अपने द्वारा अनिगनत हरकतों को जन्म देती है. हर मनुष्य अनगिनत पुरखों की श्रीलाद हाता है और उसी तरह अनिगनत मनुष्यों का पुरस्ता हाता है. यदि हम दुनिया के मनुष्यों के सब पिछले रिश्तों का पता लगा सकें तो हमें मालूम होगा कि हर मृतुन्य, दुनिया भर के बाक़ी सब मनुष्यों के साथ खून के रिस्ते सं जुड़ा हुआ है. इनसान की सारी तसलें बराबर بهاگوت میں آور یوگ ولسمت میں لیا ہے کہ:۔۔''سب جھویں ہو جگھ ہو طرح سے اور ہر سیے موجود ہیں ۔'' موگ بھائیہ میں لیا ہے:۔۔''سب میں سب کی آتنا ہے ۔ سب میں سب کے گئ موجود ہیں ۔'' مشہور سائلسدان سب میں سب کے گئ موجود ہیں ۔'' مشہور سائلسدان ہے ۔ جینس لکھٹا ہے:۔۔' ہو آدلیکڈ،ان سات بھو بھر میں پہلا موا ہے ۔'' ایک حوصوا ساسد قائر سائس دیرل لیمنا ہے:۔۔ ہوگ ایک حوصوا ساسد قائر سائس دیرل لیمنا ہے:۔ بوگ واسمت میں لکھا ہے:۔ انو دوراؤں میں میں اور دونیانیں اوروں میں ہیں اور دونیانیں اوروں میں ہیں ۔''

اس بنهادی سجائی کے هوتے هوئے بھی هم چیزوں کو انگ الگ نام دے لیتے هیں ، یہ نامهم هر چیز کے کسی نه کسی انگ کی کارن دے انگ کی یا آس کی کسی نه کسی خاص صفت کے کارن دے کو اپنا کام چلائے هیں ، نیائے شاستر هن' یوگ واسشت میں لور برهم سوتروں میں اِس بات کو بہت اچھی طوح کول کر ارد وسئل کے ساتھ بیان کیا گیا ہے ،

دنیا کے سب نام روپ آدمی نے اپنی اسانی کے لئے کوا هیں . اِن نام روپوں پر هی سب سائنسوں کی بغیادیں هیں . نهین تو قدرت میں سب ایک هیں . سب روشنیوں کی کوئیں ایک دوسرے میں ملی ہوئی ہیں ، شینم (اوس) کی بہند کے اندر آفتاب (سبریه) موجود ہے اور شبام کی بوند أنتاب كي ددهكت هون كولي كي أندر موجود هي ميں جب أدرى دهرو اور داینی دهرو یعلی قطب شدالی اور قطب جاویی کی یات کرتا میں تو وہ مهرم من کے اندر هوتے هیں اور عرا من ان میں مرجود عونا ہے۔ یہ انتت آکھ اور اُس کے اندر ارہوں کھویوں اور شنکھوں ستارے اورسیارے سب میری چھوٹی سی آنکھ کے الدر هيل أور إي سب مهريهي سبكو ديكهام واول كي أنهيل موجود هیں ، برتار کے وبقیو لے یہ ثابت کر دیا ھے تم سپ آواوين مه جلهه سے اثبت والی سه جله سنی جا سکتی هیں اور سب چکیه موجود عیں ، جو سقارے اور سیارے ایک دوسرے سے کروروں اور اربوں میل کی دوری پر میں آن سب پو روشنی کی کونوں کے دوارا برابر ایک دوسرے کا عکس پوتا رهتا ھے مدارے شریر کے سب نلتو همارے خون کے ذریعے ایک دوسرمه مل رهاء هين. هر چهول سه چهول أيلم كي هر حوكت رهو بهر کی انتخت حرکارل کا نایجه مرتی کے اور وہ خودالنے دولوا الكلت حركتون كو جنم ديتي. هرمنشية انكنت دركيون كي اولاد هوتا ها اور، أسى طرح انكنت منهيون كا يدنها هونا ها، يدىهم ونها کے ماشیس کےسب پحیل رشتیں کا پاته لگا سکیں تو هدیں معلوم ہوٹا که هرماشیه دنیا بہر کے بانی سب منشهوں کے ساتھ خیرں کے رفتے سے جوا ہوا ہے ۔ اِنسان کی ساری نسلیں ہرابر

يعلى ساولت روشلي يعلى لائت كرمي يعلى هيدى بعجلی (ایلیکاری ساتی)، اور طارح طارح کی کونیاں (ريز) اور ان سے سمبندھ رکياتے والی وديائيس الجاعی هيں ، أنت مهل جا كر إن سب كا سمبندھ ودوت يعلى بعملي سے بدایا جاتا ہے . الو یعنی ایٹم کی بابت أبهي تك یورپ کے ودوانوں میں انگ الگ وچار میں ، کوئی اِسے ایک چھوٹی سی چورٹی مادی یعلی ٹھوس چیز سنجھتے میں اور كرئى كيول أيك لهر (ويو) يا شكتى (انرجى) بناتے هيں . ایسے هی دو وچار روشنی کے بارے میں بھی را چکے هیں . تيسر عصم مين جيوته شاستر هے جسم انكريزي مين ایسارا نومی کیتے عیں . اِس تیسرے حصہ میں بھی آریر کے دونوں آکار آیک طرح سے مل جاتے میں . اِس میں سب براهمانقون يعنى آلاهى كركولون اننت سوريون ستارون سيارون سوریه جکتوں اسمانوں کا بلنا کی کائنا اُن کے آپس کے رہتے اور ایک دوسرے پر اُن کے افر عماری زمیں کے رہنے والی پر أن كے اثر اسب أ جاتے هيں .

اِس نگاہ سے جوتھ کے دوبھاگ ھو گئے ھیں ۔ ایک گئیت یعنی المسترالاجی . یعنی معمولی ایسترالوجی ازر دوسرا پھلت یعنی المسترالاجی . انہیں دونوں کو نجوم بھی کہتے ھیں ۔ ان کا سمبندھ ھماری دھرتی کی بناوت شماری سمے کے وبھاگوں شمارے موسموں مالتوں اور ھماری دھرتی کے اندر کی دھاتوں شمارے موسموں شمارے جوار بھاتوں شمارے سموم و طونانوں جنھیں انگریزی میں میں Simooms and Typhoons کہتے ھیں شمارے زلزلوں طرح طرح کے جا جرون ونسپتیوں اور اِنسانی فوموں کی پیدائشوں وغیرہ وغیرہ یہی بالکل صاف ہے ، اِس پر ھمارے بیدائشوں وغیرہ وغیرہ یہی بالکل صاف ہے ، اِس پر ھمارے بیدائشوں وغیرہ وغیرہ سو سال پیتھس سال سو سال کوتشی بانچ سال سال جوتشی بانچ سال سال جوتشی بانچ سال سو سال کارہوں دنیاؤں سے ہے جوتش گا وشیئے ہے ۔

یه بات یهی حاف محجه میں آسکتی هکه یه سب چهزیں اور سب سائلسیں ایک دوسرے میں مل جاتی هیں. اگر ایڈموں سے دنیائیں بہودے میں دنیائیں بنی دیں تو هر ایڈم کے اندر سب دنیائیں موجود عیں اور چهرف سے بہوا اور چهرف سے چهرفا دونوں بےانت هیں . جکہہ' سے اور حرکت یعنی اِسهیس' قائم اور موشن سب درشقا یعنی آنیا کے من کی حالتیں هیں . اِن سب کا استتو سابیکش یعنی ایل سب کی حالتیں هیں . اِن سب کا استتو سابیکش یعنی اور دور ایک دوسرے کے سمبندہ سے هے . دوربین کو اگر عم دهیان کے دیکھیں' چلتی ریل کو پاس سے کھڑے هو کر اور پهر دور باز سے کھڑے هو کر اور پهر دور باز سے کھڑے هو کر دیکھیں تو یه بات صاف سمجھ میں آجاتی میں آجاتی میں آبانی ساتے سیتی میں آبانی میں ایک دوس کی حالتی دیکھیں اور گہری نیفن پر نگاہ ذالیں تب بھی هم اِسے سکتے سکتے هیں ۔

यानी साइन्ड, रोशनी यानी लाइट, गरमी यानी हीट, विजली(इलेक्ट्रीसिटी), और तरह तरह की किरनें (रेख) भीर इनसे सम्बन्ध रखने बाली विद्याएँ आजाती हैं. अन्त में जाकर इन सब का सम्बन्ध बिद्य त यानी बिजली से बताया जाता है, अगु यानी ऐटम की बाबत अभा तक मूरोप के विद्वानों में अलग अलग विचार हैं. काई उसे एक हाटी से होटी मादी यानी ठोस चीज सममते हैं और कोई केवल एक लहर (वेव) या शक्ति (इनरजी) बताते हैं. ऐसे ही दो विचार रोशनी के बारे में भी रह चुके हैं. तीसरे हिस्से मैं ज्योतिष शास्त्र है जिसे अंगरेजी में ऐस्ट्रानोमी कहते हैं. इस तीसरे हिस्से में भी उत्तर के दोनों आकार एक तरह से मिल जाते हैं, इसमें सब ब्रह्मान्हों यानी आकाश के गोलों, अनन्त सूर्यों, सिवारों, सैयारों, सौयं जगतीं, आसमानों का बनना, चक्कर काटना, उनके आपस के रिश्ते और एक दूसरे पर उनके असर, हमारी जमीन के रहने वालों पर उनके असर, सब आजाबे हैं.

इस निगाह से ज्योतिष के दो भाग हो गए हैं. एक
गिश्तित यानी मामूली ऐस्ट्रानोमी चौर दूसरा फलित यानी
ऐस्ट्रालोजी. इन्हीं दोनों को नजूम भी कहते हैं. इनका
सम्बन्ध हमारी धरती की बनाबट, हमारे समय के विभागों,
हमारे मन की हालतों चौर हमारो धरती के अन्दर की
यातों, हमारे मौसमों, हमारे ज्वार भाटों, हमारे सम्मूम व
तूफानां जिन्हें अंगरेजी में Simooms and Typhoons
कहते हैं, हमारे जलजलां, तरह तरद के जानवरों,
बनस्यतियों चौर इनसानी कौमों की पैदायशों वरीरह
वरीरह से भी बिलकुल साक है. इस्रा पर हमारे ज्यातिषो
पाँच साल, सात साल, बारह साल, खत्तीस साल, सो साल,
बारहसी साल, खत्तीस सी साल, चार हजार तान सी बास
साल बरीरह के युग बना लेते है. इन सबका सम्बन्ध उन
धरवों खरवां दुनिया हा से है जा ज्यातिष का ।वषय है.

यह बात भी साफ समक म आ सकता है कि ये सब बीजें डीर सब साइन्सें एक दूसरे में मिल जाती हैं. अगर पेटमों से दुनियाएँ बनी हैं तो हर ऐटम के अन्दर सब दुनियाएँ मीजूद हैं. बड़ के दरकत में बीज और बीज में पूरा दरकत मीजूद हैं. बड़े से बड़ा और छोटे से छोटा होनों बेअन्त हैं. जगह, समय और हरकत यानी स्पेस, टाइम और मोशन सब द्रष्टा यानी आत्मा के मन की हालतें हैं. इन सबका अस्तित्व सापेक्ष यानी केवत एक दूसरे के सम्बन्ध से हैं. दूरबीन को अगर हम ज्यान से देखें, चलती रेल को पास से खड़े होकर और फिर दूर पहाड़ से खड़े हाकर देखें तो यह बात साफ समक में आ जाती है. हम अपने सपनों और गहरी नींद पर बिगाह डालें तब भी हम इसे समक सकते हैं.

المالي إله بل الره بين رهيد

पर केवल इस मादी दुनिया, इस अचेतन अगत की निगाइ से भी अगर इम जरा ज्यान से देखें तो इमारे सब आदि और अन्त, आगाज और अंजाम, सब एक दूसरे में मिल जाते हैं. मानव समाज के अन्दर न कोई अलग नस्ल है और न कोई अलग राष्ट्र या क्रीम. साइन्स भी इस जीज को मानती है कि इनसान की सब नसलें एक दूसरे में मिली हुई हैं. सब में सब का खून है. कोई किसी से जुदा नहीं. आजकल की राजनीति भी इस जीज को सममती जा रही है और इसे जल्दी से जल्दी साक्षात कर लेना बाहती है कि दुनिया में कोई अलग राष्ट्र नहीं, कोई अलग की मानती है कि दुनिया में कोई अलग राष्ट्र नहीं, कोई अलग कीम नहीं. सब सब में हैं और सब एक हैं. इसे समम लेना ही असली बहबूदी के रास्ते पर जलना है. यही ईश्वर अस्लाह को समम्तने का जीना है.

अगरेज किं टेनिसन ने लिखा है: "हर आद्मी के छोटे से वजूद के दोनों तरफ एक अथाह गहरा समन्दर है जिसमें से एक तरफ से निकल कर वह उसी में द्सरी तरफ जा मिलता है". गीता में लिखा है:--"सब भूत यानी प्राची ग्रुक में भन्यक्त यानी ग्रैर जाहिर मिले हुए थे, बीच में यह सब अलग अलग व्यक्त यानी जहूर पिजीर हुए और आस्त्रीर में फिर यह सब अव्यक्त यानी एक दूसरे में मिल जावेंगे". हम सब रौब (अज्ञात) से आये हैं और रौब ही की तरफ जा रहे हैं. हमारी जो यह बीच की हालत है यही हमारी सारी इनसानी तारी ख़ है. संस्कृत में इसी को इति-हास-पुराण कहते हैं. सब इतिहास-पुराण इसी बीच की हालत को बयान करते हैं. इसमें हमारी सग यानी खिल-कत, इसारा विकास यानी इतेका (प्वोलूशन), और प्रलय यानी कृयामत (डिजोलूशन), सब आ जाते हैं. इसी में महाभूतों यानी ऐटम्स और जीव प्राम यानी सब जानदारों का हाल शामिल है.

हरवर्ट स्पेन्सर ने इस सचाई को अपनी पुस्तक "दि सिन्थेटिक किलासोकी" में बड़ी सुन्दरता से दशीया है. रूसी सन्त विदूषी मैडम ब्लेवेट्सकी ने अपनी पुस्तक "दि सीक्टंट डाकट्रिन" की तीन बड़ी बड़ी जिल्दों में इसे और भी अधिक सुन्दरता के साथ बयान किया है. यह दोनों पुस्तकें इस मामले में भारत के इतिहास-पुराग्य का ही नया रूप हैं.

विश्व के इस इतिहास को बार हमारी सारी साइन्सों बार विद्याओं को तीन हिस्सों में बाँटा जा सकता है. एक पंचमूत-शास्त्र जिसमें बाजकल की सब के मिस्ट्री, फिजि-क्स, उन अग्रुओं बार परमाग्रुओं का हाल, जिन्हें न्यूट्रान प्रोटान, इलेक्ट्रान वर्षो रह नामों से पुकारा जाता है, सब गैसें, धारों, तरल पदार्थ, ठोस पदार्थ सब इसी में बा जाते हैं. हसरें मूतराक्ति-शास्त्र, जिसमें कुछ फिजिक्स, कुछ डाय-वेसिक्स शासिल है. इसमें शक्ति, इनरजी, फोर्स, बाबाज,

विसम्बर '57

انگریا کہی گینیس نے لیا ہے، "اور آدمی کے چھوٹے
سے رجود کے دولوں طوف ایک اتھاہ گھرا سمندر ہے جس میں
سے ایک طرف سے نکل کر وہ اسی میں دوسری طوف جا ملتا
فی '' گیتا میں لیھا ہے: "سب بھوت یعلی پرائی شروع میں
اویکئی یعلی غیر ظاہر ملے ہوئے تھے' نیچ میں یہ سب انگ
اگی ویکت یعلی ظہور بذیر ہوئے اور آخیر میں بھریہ سب غیب
الگ ویکت یعلی ایک دوسرے میں مل جاریں گے ، هم سب غیب
اویکت یعلی ایک دوسرے میں مل جاریں گے ، هم سب غیب
هماری یہ جو ایچ کی حالت ہے یہی هماری ساری اِنسانی
تاریخ ہے سنسکرت میں اِسی کو اِنہاس پرران کہتے هیں ،
تاریخ ہے سنسکرت میں اِسی کو اِنہاس پرران کہتے هیں ،
انہ سب میں ہماری سرگ یعنی خالت کو بھان کرتے ہیں ، اِس
میں هماری سرگ یعنی خالت' ہمارا وکابس یمنی اُرتقا
اُ جاتے ہیں ، اِسی میں مہابھوتوں یعلی اُنٹیس اور جیو گرام
اُ جاتے ہیں ، اِسی میں مہابھوتوں یعلی اُنٹیس اور جیو گرام

هربری اسیاسر نے اِس معجائی کو اپلی پستک الدی ساتھیں کا فالسنی اُ میں بڑی سادرنا سے درشایا ہے، روسی سات ودوشی میڈم بولے ویاسکی نے لپلی پستک الدی سیکریٹ ڈاکٹرن کی تین بڑی بڑی جادوں میں اِسے اور بھی ادھک سادرنا کے ساتھ بیان دیا ہے ، یہ دونوں پستکیں اِس معاملے میں بھارت کے انہاس پوران کا هی نیا روپ هیں ه

وشو کے اِس اِنہاس کو اور ھاری ساری سانلسوں اور ودیاؤں کو تین حصوں میں بانقا جا سکتا ہے ، ایک پنج بھوت عاستر جس میں آجال کی سب کیمسٹری نواس انہاں اور پرمانوؤں کا حال ، جنہیں نیو ٹران پررٹان ایایکٹران میوء ناموں ، سے پکارا جاتا ہے سب کیسیں دھانیں نول پدارن ٹیوس پدارت سب اِسی میں اُجاتے ھیں ، دوسرے بھوت شکتی شاسٹر ، جس میں کچھ فوٹس کچھ قائے دوسرے بھوت شکتی شاسٹر ، جس میں کچھ فوٹس کچھ قائے دوسرے بھوت شکتی شاسٹر ، جس میں کچھ فوٹس کچھ قائے دوسرے بھوت شکتی شاسٹر ، جس میں کچھ فوٹس کچھ قائے

श्रनेकता में एकता यानी कसरत में वहदत

डाक्टर भगवानदास

पिछले लेखों में हम आत्मा भीर अनात्मा की चरचा कर चुके हैं, और आत्मा यानी रूह को ही अस्त वजूद और अनत्मा यानी रूह को ही अस्त वजूद और अनत्मा यानी बाहर की सारी दुनिया को एक तरह से फरेब, माया या धोखा दिखा चुके हैं. हम यह भी बता चुके हैं कि आत्मा या रूह यानी अस्त वजूद एक ही है, उस एकता में अनेकता यानी वहदत में कसरत भी एक धोखा है. वही अल्लाह है. वही हम सब का "मैं" है. वही है, और कुछ है ही नहीं. इस लेख में हम यह दिखाना चाहते हैं कि इस दुनिया में अनात्मा की सारो साइन्सें, सब जड़ विद्याएँ, इस दिखाई देने वाले विश्व आतमे जहूर से ही सम्बन्ध रखती हैं और इसी का इतिहास हैं.

दन साइन्सों में से एक एक के लिये हमें एक एक विषय यानी एक एक महदूद दुनिया, परिमित सृष्टि गदनी पड़ती है. हमें कोई ऐसा मजमून लेना पड़ता है जिसका छुरू भी हां और आखीर भी, जबिक असल वजूद में कहीं कोई अलहदगी, कोई सिरा, कोई छुरू या कोई आखीर, है ही नहीं. सारा वजूद, सारा आस्तित्व, अस्ल हकीकृत एक बे-अन्त समन्दर है, एक दरियाए बेकिनार है जिसका न कोई आर है और न कोई छोर. पर हमारे लिए इस दुनिया को सममने के सिवाय इस तरह के फरजी दुकड़े कर फरके देखने के और कोई तरीक़ा भी नहीं है.

मिसाल के तौर पर हमने अपना एक सौर्य जगत, एक निजामे शम्सी कर्ज कर रखा है. उसी के अन्द्र हमारी धरती का यह गोला है, इनकी हमने एक एक इकाई बना रखी है, तब हम इनकी अलग अलग साइन्सें बना पाते हैं और उनमें अलग अलग सोज कर सकते हैं.

पेसे ही मानव इतिहास को सममते के लिये हमें अलग अलग नसलें, जातियों और राष्ट्र यानी क्रीमें फर्ज कर लेनी पक्ती हैं. हर जाति या क्रीम का हम एक प्रारम्भ यानी आसाज और एक अन्त यानी अंजाम मान लेते हैं. फिर इस तरह के एक ही फ्राजी राष्ट्र की आयु के भी हम अलग अलग फ्राजी दुकड़े कर लेते हैं और दुकड़ों को राष्ट्र के इतिहास के अलग अलग युग (जमाने) मान लेते है. यही हमारी दिमागी दौड़ के लिये अलग अलग मैदान हो आते हैं.

انیکتا میں ایکتا یعنی کثرت میں وحدات

(تائتر بهتران داس)

پیچیلے ایکھیں میں هم آنما اور اثانما کی چوچا کو چکے هیں اور آنما یعنی روح کو هی اصل وجود اور اثانما یعنی باهر کی ساری دنیا کو ایک طوح سے فریب مایا یا دھوکا دکیا چکے هیں د آنما یا روح یعنی اصل رجود ایک هی هی آس ایکنا میں افیکنا یعنی رحدت میں کثرت بھی ایک دھوکا ہے وهی اللہ ہے وهی هم سب کا "میں" ہے ، وهی ہے اور کچے ہے هی نہیں اس لیکھ میں هم یہ دکھانا چاهتے هیں که اِس دنیا میں آنا نما کی ساری سائنس سب جز ودیائیں اِس دنیا میں آنا نما کی ماری سائنس سب جز ودیائیں اِس دنیا میں انا نما کی ماری سائنس سب جز ودیائیں اِس دنیائی دینے والے وشو عالم ظہور سے هی سمبندہ رکھتی هیں اور اسی کا انہاس هیں .

ان سائنسوں میں سے ایک ایک کے لئے همیں ایک ایک وشے یعنی ایک ایک محدود دنیا، پریمت سرشتی گرهئی پرتی ہے ، همیں کوئی ایسا مضمون لینا پرتا ہے جس کا شروع بھی هو اور اخیر بھی، جب که اصل وجود میں کہیں کوئی علیحدگی، کوئی سرا، کوئی شروع یا کوئی اخیر، ہے هی نہیں ، سارا وجود، سارا استتر، اصل حقیقت ایک برانت نہیں ، سارا وجود، سارا استتر، اصل حقیقت ایک برانت نہیں ہے اور ہوئی نہیں جھور ، پر همارے نئے اِس دنیا کو سمجھنے کے سوائے اِس طریقہ بھی نہیں ہے ور کوئی

مثال کے طور پر ہم نے اپنا ایک سوریہ جائے ایک نظام شمسی فرض کر رکھا ہے۔ اُسی کے اُندر ہماری دھرتی کا یہ گولا ہے، اُنی بنا رکھی ہے۔ کا یہ گولا ہے، اِن کی ہم نے ایک ایک اکائی بنا رکھی ہے۔ تب ہم اِن کی الگ الگ سائنسیں بنا پاتے ہیں اور اُن میں الگ الگ کہرے کر سکتے ہیں ۔

ایسے هی ماتو اِتهاس کو سمجھنے کے لئے همیں الگ الگ نسلیں جاتھاں اور راشتر یعنی تومیں درض کر اُفلی پڑتی هیں . هو جاتی یا قوم کا ایک هی درضی راشتر کی وایو کے بھی هم الگ الگ فرضی تکوے کر لیتے هیں اور تکورں کو راشتو کے اتهاس کے ایک پرارمیم یعنی آغاز اور ایک المت یعنی انجام مان لیتے هیں ، پھر اِسطوے کے هم الگ الگ یک رزماتی) مان نیتے هیں ، پھی هماری دمائی دور کے لئے الگ الگ میدانی هو جاتے هیں ،

ं देवाइयात अहिब

अनाजील—बाइबिल (इंजील का बहु बचन)
सालिक—इंश्वर-प्रमी, श्रासार—लक्ष्मण (असर का
बहुबचन) नजात—मोक्ष हालिक—मीत
तप्रदीद—संहन हक—ईश्वर
मा अन्त्रिला मिन क्रब्लिक—''यही बाते हमने पहली
धर्म पुस्तकों में कही हैं''.

पे ईश्वर प्रेमी तू गीठा और बाइविल को भी पढ़ और यह मालूम कर कि मोक्ष के लक्षण और मौत का कारण क्या है. पे 'मुहिब' ईश्वर की किताबों का खंडन नहीं करना चाहिये. क़ुरबान में भी लिखा है कि "यही बातें हमने पहली धर्म पुस्तकों में कही हैं".

(29)

करते हैं मसाजिद में यह घरलाह को बन्द, मंदिर को सममते हैं समाँ से वह बुलंद, हिन्दू-ओ-मुसलमाँ हैं यह दोनों जाहिल, लड़ते हैं मजाहिब पे कहीं दानिशमंद? मसाजिद—(मसजिद का बहु बचन) समाँ—आकाश (ईश्वर से मतलब है) बुलंद—ऊँवा जाहिल—मुखं मजाहिब—धर्म (मजहब का बहु-बचन) दानिशमंद—सममदार

मुसलमान मसजिदों में अल्लाह को बंद किये हुए हैं. हिन्दू मंदिर को ईश्वर से भी ऊँचा सममते हैं. यह दोनों ही मूर्ख हैं. सममत्वार लोग कहीं धर्म के पीछे लड़ाई करते हैं?

فأعات منص

المجول باتبل (العيل كا بهررون) سالك بيورون پريمى أثار اكتشن (اثر كا يهر رون) نجات ركف، الله حالك من دريد نهائن حق الشور "ماأنول من قبلى المرم يستوس ميل لهى هيل .

ام ایشور پریمی تو گیتا اور بائیبل کو بھی پڑھ اور یہ معلوم کو که موکش کے اکشن اور موت کا کابن کیا ہے ، ام محتب ایشور کی کتابوں کا کینتن نہیں کرنا چاہیے ، قرآن میں بھی لکھا ہے کد^{ور} بھی بانیں ہم لے بہلی دھرم پستکوں میں کھی ھیں ۔

(29)

کرتے هیں مسلجد میں یه الله کو بند؛ مندرکو سمجھتے دیں سماں سے وہ بلند؛ هندو ومسامان هیں یه درنہی جاهل؛ لرتے هیں مذاہب پدنهیں دانص مند؟

مساجد (معدد کا بهر وچن) سمال آکاش (ایسور سے مطاب ہے) بلغد ارتبیاء جامل مورکع مذاهب دهرم (مذهب کا بهر وچن) دانش منی معیدار

مسلمان مسجدوں میں الله کو بند کئے هوئے هیں۔ مندر کو ایشور سے بھی آوندیا سمجھتے هیں ، یه دونوں هی موری هیں دهرم کے پیچھے لوائی کرتے هیں ؟

शाही—बादशाहत ग्म—रंज बद्ध—शंकाएँ नजातं—छुटकारा हक्क—ईश्वर धागाही—परिचय

जन तक शराब नहीं होती, मझली और मुरगी बेकार होती है. जब तक कक़ीरी न हो बादशाही दुनिया के लिए मुसीबत हो जाती है. ऐ 'मुहिब' हम जबतक ईश्वर का न सममेंगे तब तक दुनिया की चिन्ताओं और दुखों से छुट-कारा नहीं मिल सकता.

(26)

जिस दिल में न हो उस बुते दिलदार की याद, होती नहीं उस कृष्य को हिस्से बेदाद, आक्रिल है तो भाग अहले दुई से सी कोस, इस नम्म की यारी का है अंजाम फ्सार. बुते दिलदार—प्रियतम (ईश्वर) क्रष्य—मन, अंतर । हिस्से बेदाद—अन्याय की अनुभूति आकृल—सममत्वार अहले दुई—ईश्वर को संसार से अलग सममने वाले नमस—मन अंजाम—नतीःजा फिसाद—मगड़ा

जिस दिल में ईश्वर की याद नहीं है वह अन्याय करता है तो उसे दुख नहीं होता. अगर तू सममदार है तो ईश्वर को संसार से अलग सममने वालों से अलग रह. अपने मन की बात मानने का नतीजा हमेशा मगड़ा ही होता है.

(27)

इस जाते अहद के हैं अजब रंग हजार, बुसबुल है कहीं और कहीं है गुल्जार, इस आलमे अश्काल से खूटेगा वही, रखेगा जो हर वक्त ख़्याले दिलदार. जाते अहद—ईश्वर गुल्जार—बाग् आलम—दुनिया, अश्काल—रूप (शक्ल का बहु वचन) दिलदार—प्रियतम (ईश्वर)

उस एक परमेश्वर के हजार रंग हैं. कहीं वह बुलबुल है और कहीं बाग. जो आदमी हमेशा ईश्वर का ज्यान खेगा उसीको इस रूपों के संसार से मुक्ति मिलेगी.

(28)

गीता को, अनाजील को ऐ सालिक पढ़, आसारे नेजातो सबचे हालिक पढ़, तरदीद न कर हक की किताबों की 'मुहिब' करकान में ''मा अंजल मिन क्रब्लिक'' पढ़, فقرسفتیری فرسرنیج وهرست شکائیس نعات می ایمان می ایمان می ایمان می ایمان ایمان

جب تک شراب نہیں عوتی مجھلی اور موفی بیکار موفی بیکار موفی کے لئے مصبت عربی کے لئے مصبت عربی کے ایک محب تک ایشور کو نہ سحاب کے تب تک دنیا کی چنتاوں اور دکوس سے چھٹکارا نہیں مل سکتا ۔

(26)

جس دل میں نے ہوآس بت دادارکی یاد ہوتی ٹیوں اُس قلب کو حس ہے داد عاقل ہے دوبھاگ اہل دوئی سے سو کوس ا لِس ٹفس کی یاری کا ہے زنجام نساد

بتدادار بریتم (ایشور) قاب من انتو جس به داد انداز کی انویهوتی عاقل سمجهدار اهل دوئی ایشور کو سنسار سے آلگ سمجهند والد نفس من انجام تیجه نساد جهازا

جس دل میں ایشور کی یاد نہیں ہے وہ انیائے کرتا ہے تو أسے دکھ نہیں هوتا ، اگر تو سمجهدار ہے تو ایشور کو سنسار سے الگ سمجھنے وانوں سے الگ رہ ، اپنے من کی بات مانئے کا تنبیجہ عمیشہ جہکڑا ہی ہونا ہے ،

(27)

أس ذات احد كے هيں عجب رنگ هزار' بلبل هے؛ كہيں اور كہيں هے گلزار' اِس عالم اشكال سے چهرتيكا رهی' ركھے كا حور هررتت خهال دادار.

ذات احد-ایشور گازار-یاغ عالم-دنیا آشکال-روپ (شکل کا بهو رچن) دادار-پریتم (ایشور)

آس ایک پرمیشور کے موار رنگ هیں . کہیں وہ بلیل هے اور کہیں باغ ، جو آدمی ممیشہ ایشور کا دھیاں رکھکا اُسی کو اِس رویوں کے سلسار سے مکتی ملے گی .

(28)

گیتا کو اتباجیل کو اسے سالک پڑھ اُ آگار نعیات و سبب حالک پڑھ اُ ترید نه کو حق کی کتابیں کی محتب اُ قوابی میں ''ماانزل می قبلق'' پڑھ' आहिल-गूर्क गाफिल-वेस्ट्यर बस्ताइ-ईरवर की सीगंद आक्रिल-योग्य

वीवाना—पागल

勒

मैंने माना कि तू इस समय बढ़ा विद्वान माना जाता है और तुमें विद्वानों के कपढ़े पहनने का अधिकार है लेकिन अगर तुमें अपनी और खुदा की खुबर नहीं है तो ईश्वर की सौगन्द तू विद्वान नहीं, पागल है.

(23)

हिन्द्-भो-मुसलमाँ में धगर्चे दिल है, भाई का मगर भाई 'मुहिब' कातिल है, हो जाए धगर तकरिक्र-ए-बहमी दूर, भक्तवाम का इत्तिहाद क्या मुश्किल है ? कातिल—हत्यारा तकरिक्र-ए-बहमी—बेकार का मतभेद आक्रवाम—जातियाँ (क्रीम का बहुबचन) र्इत्तिहाद —एकता

अगर्चे हिन्दू और मुसलमान दोनों के सीने में दिल है मगर फिर भी भाई भाई का .खून वहा रहा है. अगर दोनों का बेकार का मत भेद दूर हो जाए तो इन दोनों जातियों का मिलना क्या मुशकिल है ?

(24)

है दोस्तीए शहले-बतन गैर पै शाक, लेकिन है बिरादर का बिरादर मुश्ताक, साँपों से नहीं कम हैं 'मुहिब' वह इंसाँ, जो हिन्दु-ओ-मुस्लिम में बदाते हैं निफाक. शहलेवतन—देशवासी शाक—असहा मुश्ताक—प्रेमी निफाक—दुश्मनी देशवासियों में आपस का प्रेम दूसरे लोग नहीं देख सकते. लेकिन भाई को भाई से प्यार तो होता ही है. ऐ 'मुहिब' वह लोग जो हिन्दुओं और मुसलमानों में मगड़ा बताते हैं साँपों से कम नहीं हैं.

(25)

बे मैं के हैं बेलुत्क यह मुरगो माही, बे कुक के ध्रवारे जहाँ है शाही, दुनिया से गृमो बद्य से न पार्थेंगे नजात, जब तक न हक से हो 'मुह्दिय' आगाही. मै—शराब

सं-शराब मुर्गो मादी-मझली और (मुर्गी का गास्त) कुक्-सक्रीरी द्ववार-दुर्भीग्य معامل سمورتها فاقل بي غيرا والعسليشوركي سوكندا عاقل سوكندا عاقل بوكيفا ديوانيسياكل .

میں نے مانا کی تو اِس سے بڑا ودبان مانا جاتا ہے اُور تحجے اُدی تحجے دورانی کے کیڑے پیننے کا ادھیکار ہے لیکن اگر تحجے اُدی اُور خدا کی خبر نہیں ہے تو ایشور کی سرگند تو ودران نہیں یاگل ہے .

(23)

هلدو و مسلمان میں اگرچه دل هے، بھائی کا مکر بھائی امححب، قاتل هے، هو جائے اگر تفرقهٔ وهمی دور، اقوام کا انتخاد کیا مشکل هے ؟

قاتل حقایارا تفوتهٔ همی بیکار کا مت بهد، اقوام ب جاتیاں (قوم کا بهو وچن)، انتحاد ایکتا .

اگرچہ ھندو اور مسلمان دونوں کے سینے میں دل ہے معر پھر بھی بھائی بھائی کا خوں بہا رہا ہے اگر دونوں کا بھکار کا متبھید دور ہو جائے تو اِن دونوں جاتیوں کا ملنا کیا مشکل ہے ہی

(24)

ه دوستگی اهل وطن فیر پی شاق' لیکن هے برادر کا برادر مشتاق' سانپیں سے نہیںکم هے 'سحب' وہ اِنسان' جو هددو و مسلم میں بڑھاتے هیں لغاق ۔

اهل وطن ديف واسى، شاق - أسهد، مشتلق - پريمى، نفاق - نفاق

دیھی واسیبی میں آپس کا پریم دوسرے اوک نہیں دیکا سکتے لیکن بھائی کو بھائی سے پریم نو ہوتا ہی ہے اے اسمائے وہ لوگ جوا ہلاؤں اور مسلمانوں میں جھکوا برہا تے ہمی سانہوں سے کم نہیں ہیں ۔

(25)

پے مئے کے ہے پے لطف یہ مرغ و ماھی' پے فقر کے ادبار جہاں ہے شاھی' دنیا کے غم و رھم سے نہ پائیس کے نجات جب نک نہ حق سے ھواستعب'آگا ھی۔

مئرسشراب مرغ و ماهیسمههای آور مرغی (کا گهمت) ادبارسدریهاکیه

257 years

A CONTRACTOR STATE OF THE STATE

दीद—दर्शन खुदावंदे जलील—महान ईरवर खुलील—हजरत इन्नादीम का नाम जात—व्यक्तित्व वलील—समूत, तर्क झंदील—मदा तैम्प

यदि तू ईश्वर को देखना चाहता है तो इब्राहीम की भाँति अपने को संसार की हर चीज में समक. ऐ 'मुहिब' हर आदमी खुद ही इस बात'का सबूत है कि वह ईश्वर से एका-कार है. सूरज के दिखाने के लिये सूरज ही 'क्रंदील हो सकता है, इसी नरह ईश्वर से एकाकार होना स्वयं सिद्धि है.

(20)

क्या ढ्रंढता है काबे की गिल में उसकी, मेहराव में या फर्श की सिल में उसकी, बर्बाद न कर उम्र जहाँगर्दी में, घर बैठ के देख अपने ही दिल में उसकी. काबा—मक्का में मुसलमानों का कीर्थ गिल — मिट्टी, जहाँगदी — दुनिया में घूमना.

ईश्वर तुमे न काबे की मिट्टी में मिलेगा न वहाँ की मेह-राव में और न फर्श के पत्थर में. दुनिया में घूम कर उम्र वर्षाद न कर. ईश्वर को अपने दिल में देख.

(21)

क्या रूहे खुदा क़ब्ले मजाहिर में है नेस्त? क्या रूहे जाने मर्द मक्ताबिर में है नेस्त? देख अपने खयाल को मुका कर गर्दन, बातिन में तो इस्त और जाहिर में है नेस्त. कल्य—मन,श्रंतर मजाहिर—प्रकट वस्तुएँ

चनोमर्द—स्त्री पुरुष मकाबिर—(क्रत्र का बहु वचन) नेस्त—नहीं है बातिन—मन, श्रंतर.

क्या भगवान की आत्मा प्रकट वस्तुओं के श्रंदर नहीं है ? वह ऐसे ही उनके अन्दर है जैसे क्षओं में मनुष्यों की आत्माएँ. तू गर्दन मुका कर भगवान का ध्यान कर तो उसे देखेगा. वह दिल के अन्दर है, बाहर कहीं नहीं.

(22)

माना कि तू इस वक्त का अस्लामा है बर में भी कजीलित का तेरे जामा है, जाहिल जो रहे खुद से खुदा से ग्राकिल, बस्लाह तू आकिल नहीं दीवाना है.

भल्लामा—विद्वानं वर—शरीर कंजीजव—योग्यता जामा—पोशाक ويد ديل خداوند جليل سمهان ايهور خليل حصرت ابراهيم كا نام ذات ويعتنو دليل دبوت ترك

یدی تو ایشور کو دیکھنا چاهتا ہے تو ابراهیم کے بھائٹی آپنے کو سلسلر کی هر چھڑ میں سنتھ . اے اسحب هر آدمی خود هی اِس بات کا ثبوت ہے که ایشور سے ایکا کار ہے . سورج کے دکھائے کے لئے سورج هی تندیل هو سکتا ہے؛ اسی طرح ایشور سے ایکاکر هونا سویم سنھی ہے .

(20)

کیا تھونت ہے گیہ کی گل میں اُس کو محواب میں یا نوھ کی اس میں اُس کو محواب میں اُس کو پریاد نے کو عمر جہاں گردی میں اُس کو یا گر بیٹھ کے دیکھ اپنے ھی دل میں اُس کو ی

کعبہ۔۔۔مکہ میں مسامانہی کا نیرتھ' گل۔۔۔مٹی' جہاںگردی۔۔۔دنیا میں گھرمنا ۔

ایشور تنجیے نہ کیےکی مٹی میں ملیکا نہ رهاں کی محراب میں اور نے فرش کے پنہر میں ۔ دنیا میں گھرم کر عمر برباد نہ کرنا ۔ ایشور کو اپنے دل هی میں دیکے ۔

(21)

کیا روح خدا قلب مظاهر میں ہے نیست ہی کیا روح روں و مود مقاہر میں ہے نیست ہ دیکھ اپنے خیال کو جبکا کر گردن' باطن میں ہے نیست ۔

قلب سمن انتر طاهر برکت رسترئین زن و مرد استری پرهی مقایر (قبر کا بهروچن) نیست نهین ها باطن سمن انتر .

کیا بیکوان کی آتما پرکٹ وستوؤں کے اندر نہیں ہے ؟ وہ ایسے ھی اُن کے اندر ہے جیسے قبروں میں ملشیوں کی آنمائیں۔ تو گردیں جیکا کر بیکوان کا دھیاں کر تو اسے دیکھے گا ، وہ دل کے اندر ہے باہر کہیں نہیں ،

(22)

مانا که نو اِس رقت کا طبع هـ، برومین بهی فضیلت کا تیرے جامه هـ، جامل جو ره خود سه خدا سه فانل، ولاء نو مانل نهیں دیوانه هـ .

علىمسودولي) برسشوير نفيلت بركتا جامع برشاك

रुवाइयात मुहिब

श्री 'मुहिब'

(17)

सब एक हैं हिन्दू-श्रो-मुसलमाँ जंगी. करती है अलग इनको दिलों की तंगी, हर रंग हुआ दूब के जिस खुम में साक, बह जुम है मुहम्मद की 'मुहिब' बेरंगी.

खंगी—काला (यहाँ मतलब पापी से है) खुम— शराब का मटका

बेरंगी-(यहां तात्पय निस्पृहता से है)

हिन्दू और मुसलमान दोनों एक से पापी हैं. इन दोनों को दिलों की तंगी अलग करती है. ऐ 'मुहिब' मुहम्मद साहब की निरपृहता हर एक पाप को थो देती है.

(18)

बातिन है वही हक, वही जाहिर है, फाइल है वही श्रीर वही कादिर है, हिन्दू-श्रो-मुसलमाँ पे नहीं कुछ मौकूफ, जो मुनिकरे वहदत है वही काफिर है. बातिन—छिपा हुआ जाहिर—खुला फाइल—करने वाला कादिर—शक्तिमान मौकूफ—निर्भर

मुनाकिरे बहदत—ईश्वर की एक रूपता को न मानने बाला.

वही ईश्वर खुला भी है, छिपा भी है, वही सब छछ करता है और वही सर्व शिक्तमान है. चाहे हिन्दू हो चाहे सुसलमान, ईश्वर की एक रूपता जो भी न मानेगा वह काफ़िर कहा जायगा.

(19)

गर चाहता है दीदे खु, दावंदे जलील, देख चाप को हर चीज में मानिन्दे ख्लील, तू जात पे अपने हैं 'मुहिब' आप दलील, " , सूरज के दिखाने को है सूरज इंदील.

رباعيات محب

شرى لمتدب)

(17)

سب ایک هیں هندوودمساماں زنگی کو کرود کی علکی کو دائی کی علکی محروفات هور نامی میں صاف کو خص خم میں صاف کو خص کی استحب ایورنگی کی ا

زنگی سکالا (یہلی مطلب پایی سے فے) خم سشراب کا ملک میں میں ہے۔) .

علدو اور مسلمان دوتهن ایک سے پاپی هیں ، ان دونوں کو دلیں کی تنگی الگ کرتی ہے ، اے محصب محمد صاحب کی تھی پرھا مر ایک پاپ کو دھو دیاتی ہے ،

(18)

ہامان ہے وہی حق' وہی ظاہر ہے' فاعل ہے وہی اور وہی تادر ہے' هادرہومساماں یہ تہیں کچے مرقوف جو ماکر وحدت ہے وہی کانر ہے۔

باطن سچیها هوا؛ ظاهر کها فاعل کرنے والا قادر سه شمکی مان موقوف نویم منکر وحدت ایشور کی ایک رویتا کو نه ماننے والا .

وهی ایشور که بهی هے چهپا بهی هے وهی سب کجه کوتا هے اور وهی سرو شکتیمان هے ، چاهے هندو هو چاهے مسلمان ایشور کی ایک روپتا جو بهی نه مانے کا وہ کادر کہا جائیا .

(19)

اگر چاهتا هے دید خداراد جلیل ا دیم آیکو هر چیز میں مائند خلیل ا تو ذات به اپنے هے امصب آپ دلیل ا صورے کے دکھانے کو هے سورے قادیل ، बसे जरूर दे दो; क्योंकि विवाशक उसने आग की गरमी बरदास्त करके खाना तैयार किया है और उसका सारा प्रबन्ध किया है."

—शबुदुरैरह, बुखारी: शबुदाऊद: तिरमिषी.

मुहम्मद् साहब ने कहा:—"एक दूसरे के साथ हाथ मिलाओं ता एक दूसरे के खिलाफ तुम्हारे सब बुरज यानी द्वेष तुम्हारे दिलों से मिट जावे गे; एक दूसरे को हदीये यानी मेंट दिया करों, इससे तुम में एक दूसरे के साथ मुह्ज्बत बढ़ेगी, और इससे तुम्हारे दिलों की गहरी से गहरी नफुरते भी मिट जावे गी."

—चता-चल-खुरासानी, मुसबिम.

सुहम्मद साहब ने कहा कि — "अपनी पारसाई (बार्मिकता) का ज्या सा भी मजाहरा (दिखावा) करना 'शिर्क' है, यानी अल्लाह के सिवा दूसरे की इवादत करने के बाराबर है."

-- उमर बिन अल ख्ताब, मुआज बिन जबल से, इन्न माजह: बेहक्री.

—श्रनुवादक—श्री मुजीब रिजवी.

اس خرور در درو کیرانته بلا شک اس نے آگ کی گرمی برداشت کر کے کیانا تیار کیا ہے اور اس کا سارا پربندہ کیا ہے۔''

-ابرهريره بنخارى: ابرداعود: ترمذى .

محدد صاحب نے کہا:۔۔"ایک درسرے کے ساتھ عام ماؤا تو ایک درسرے کے خلاف نموارے سب بغض یعلی دریش تموارے دارس سے محت جاریس کے ایک درسرے کو هدیے یعلی بھیلت: دیا کروا اِس سے تم میں ایک درسرے کے ساتھ محبت بڑھے گیا اور اِس سے تموارے دارس کی گوری تفرتیس بھی محت جاریس گی ۔"

-عطاالخواساني، مسلم،

محصد المحسب نے کہا که "اپنی پارسائی (دھارمکتا) کا غرا سا بھی مظاهرہ (دکھارا) کرتا اشرک کے یعنی اللہ کے سوا دوسرے کی عبادت کرنے کے برابر کے ۔''

-عمر بن الغطاب، معاذ بن جهل عه، أبن ملجه: بهيقي .

الوادك-شرى منجيب رضوى .

سعد ملعه کی ایم حمالی

रेतल्यर ने कहा कि:—"तुम में से कोई ईमान बाला नहीं है जब वक कि क्सने क्स वालीम के खरिये जो मैंने लाकर दी है व्यपनी शहबवों पर क्राबू हासिल म कर लिया हो:"

—अब्दुल्लाइ विन धमक नवावी.

पैराम्बर ने कहा :—"ऐ चबुज र ! इनसानों की तंजीम यानी संगठन से बढ़कर कोई अक्रलमन्दी का काम नहीं है, अपनी नफ्स पर कृष्ट् रखने से बढ़कर कोई तक्रवा यानी परहेजगारी नहीं है और सबके साथ अच्छा बरताब करने से बढ़कर कोई तारीक की बात नहीं है."

--अबुजर, बेहकी.

जाबिर कहता है कि :—"रसूल से एक आदमी की चरचा की गई जो बहुत इवादत करता था और उसी में जगा रहता था, फिर रसूल से एक ऐसे आदमी की चरचा की गई जो अपने को गुनाह से बचाता रहता था. इस पर रसूल ने कहा—'इवादत करने वाला उसके बराबर नहीं हो सकता जो गुनाह से अपने को बचाता है."

-जाबिर, तिरमिषी.

मुहम्मद साहब ने कहा कि :-

"तम्हारे ख़िदमतगार तुम्हारे भाई हैं और तुम्हारे जान माल की रक्षा करते हैं; चल्लाह ने उन्हें तुम्हारे हाथों में सौंपा है; जिस किसी के हाथों में उसका भाई हो उसे बाहिये कि उसे वही खाना खिलावे जो , जुद खाता है और वही कपड़े पहनावे जो , जुद पहनता है. उनसे कोई ऐसा काम न लो जो उनकी ताकृत से बाहर हो और अगर तुम उनसे कोई ऐसा काम लो तो उन्हें उस काम के करने में अबुद महद दो."

—मारूर बिन सुबैद, बुखारी: मुसलिम: श्रवुदाऊदः विरमिश्री.

मुह्म्मद साहब ने कहा :—''जब कभी तुम में से किसी का खिदमत्गार तुम में से किसी के पास खाना जेकर आवे, तो अगर तुम बसे अपने साथ बिठाकर खाना ज खिलाओ, तो कम से कम इस खाने में से दो बार लुक्मे --عبدالله بن عموراً لواري .

پینمبر لےکہاہست^{ور}ا آبرذر! اِنسانیںکی تنظیم یعنی سلکاہیں سے ہوہ کر کرئی عقلمادی کا کام نہیں ہے اپنے ناس پر قابو وَکہا سے بوہ کر کوئی نہیں ہے اور سب کے ساتھ اچھا برنای کرنے سے بوہ کر کوئی تمریف کی بات اُجھیں ہے۔"

-- أبوذر، بهيقي .

جاہر کہنا ہے کند۔۔۔''رسول سے ایک آدمی کی چرچا کی گئی جو بہت عبادت کرنا تھا اور آسی میں لگا رہنا تھا بھر رسول سے ایک ایسے آدمی کی چرچا کی گئی جو اپنے کو گفاہ سے بیچانا ربتا تھا ۔ اِس پر رسول نے کہا۔۔'عبادت کرنے والا اُس کے برابر نہیں ہو سکتا جو گفاہ سے اپنے کو بیچاتا ہے ۔''

-جابر' ترمذی ،

محدد ماحب لے کہا کد: ۔

مسمورور بن مويد عضارى: مسلم: أبرداعود: ترمذى .

معمد ملحب لے کہا۔۔ "جب کبھی تم میں سے کسی کا خدمتگار تم میں سے کسی کے پاس کہانا لے کر آرے؛ تو اگر تم اسے لیے سانو بگہاکر کہانا تعاملون توکم سے کم اسکیالے میں سے دو چارلتے

मुद्रमाद साह्य ने कहा कि:—"हर आदमी को चाहिये कि अपने घर में घुसते वक्त अपनी बीबी और बच्चों को सलाम करे."

—श्रनस, तिरमिजी.

अनस कहता है कि :—
''मुहम्मद साहब जब कभी बच्चों के पास से निकतते
थे तो उन्हें 'सलाम'! करते थे.''

—अनस, बुखारी: मुसलिम.

जरीर और अनस दांनों का बयान है कि :—
''पैग्म्बरे ख़ुदा जब कभी औरतों के पास से निकलते
थे तो उन्हें 'सलाम' ! करते थे.''

-- जरीर, बहमद; धनस; बुखारी.

मुहम्मद साहब ने कहा कि:—"जो आदमी सवारी के ऊपर चला जा रहा हा उसका फर्ज है कि उस आदमी को सलाम करे जा पैदल चला जा रहा है; जो आदमी पैदल चला जा रहा हो उसका फर्ज है कि उस आदमी को सलाम करे जो बैठा हो, और जो लाग थोड़ी तादाद में हां उनका फर्ज है कि अपने से बड़ी तादाद वालों को सलाम करें."

-अबु हुरैरह, बुखारी: मुसलिमः तिरमिजीः अबुदाऊद.

अनस कहता है: - "पैराम्बर साहब सुभ.से कहा करते थे-- 'ऐ मेरे बच्चे ! जब तू अपने बाल बच्चों में आय ता उन्हें सलाम कर, यह चीज तेरे लिये और तेरे घर बालों के लिये दोनों के लिये बरकत साबित होगी.'"

-- अनस, तिरमिजी.

मुहम्मय साहब ने कहा:—"जब तुम लोग अपने घरों के अन्दर जाओं तो घर के लोगों को सलाम करो और जब बाहर निकलों तो घर के लोगों से सलाम करके बिदा जो."

-कतादह, बेहकी.

लोगों ने पैराम्बर से पूछा:—"नजात क्या है ?" पैराम्बर ने जवाब दिया—"अपनी खबान पर काबू रखों और घर में बैठकर शुनाहों पर रोखो."

-- उक्वइ बिन आमिर, तिरमिजी.

ممتعد صلحب کے کہا کہ: سعر آدمی کو چاہئے کہ آپئے گھر میں گسٹے وقت آپئی بنیوں آور بنچوں کو سلم کرے ،''
سانس' ترمذی ،

انس کہنا ہے کہ:—
''محدد حاصب جب کبھی بچوں کے پاس سے نکلتے تھے
تو آنھیں 'سلم' ! کرتے تھے ۔''
سانس' بخارے: مسلم .

جریر اور انس دونوں کا بیان ہے کہ:—
''پینمبر خدا جب کبھی عورتوں کے پاس سے نکلتے تھے تو آنھیں 'سلام' اِ کرتے تھے ۔''

-جرير احد انس؛ بخارى .

معصد صاحب نے کہا کہ: ۔۔۔''جو آدمی سواری کے اُرہر چلا جا رہا ہو اُس کا فرض ہے کہ اُس آدمی کو سلام کرے جو پیدل چلا جا رہا ہو اُس کا فرض ہے کہ اُس جو جا رہا ہو اُس کا فرض ہے کہ اُس آدمی کو سلام کرے جو بیٹھا ہو' اور جو لوگ تھوڑی تعداد میں ہوں اُن کا فرض ہے کہ اپنے سے بڑی تعداد والوں کو سلام کریں ۔''

سابو هريره بخارى: مسلم: ترمذى: ابوداعود .

الس کہنا ہے:۔۔''پینمبر صاحب مجھسے کہا کرتے تھے۔۔'اے میرے بچے ! جب تو آپنے بال بچوں میں جائےتو اُنھیں سلم کر' یہ چیز تیرے اُنے اور تیرے گھر والوں کے لئے دونوں کے لئے برکت ثابت ہوگی ''

--انس[،] ترمنی .

محصد صاحب نے کہا۔۔۔ جہ تم لوگ آپنے گھروں کے اندو جاؤ تو گھر کے لوگوں کو سالم کرو آور جہ باہر نکلو تو گھر کے لوگوں سے سالم کر کے بدأ لو .''

ـــ قتاده بهيقي .

اوگرں نے پینمبور سے ہوچھا:۔۔۔'نجات کیا نے ؟ '' پینمبو نے جواب دیا'۔۔۔''ایٹی رہاں پر قابو رکبو اور گبر میں بیٹھ کر اپنے گناموں پر روڈ ۔''

مسعقبه بن عامراً تزملی .

معلق ماهب في لعم مديلين

एक बर् अरब पैग्रम्बर के पास आया और कहने लगा:—"मुमें कोई ऐसा काम बता दीनिये जिससे मैं जन्नत में जा सकूँ." पैग्रम्बर ने जवाब दिया—"तुमने बात थोड़ी कही पर सवाल बहुत बड़ा किया. अगर कोई जानदार तुम्हारे पास हैं तो उन्हें आजाद कर दो, अगर कोई गुलाम तुम्हारे पास हैं तो उन्हें भी आजादो दे दो. तुम्हारा कोई नातेदार अगर तुम्हारे साथ बुराई करे तो तुम उससे प्यारं करो; और अगर तुम यह न कर सको तो भूखों को खाना खिलाओ और प्यासों को पानी पिलाओ, और लोगों से नेक काम करने के लिये कहा और बुरे काम करने से उन्हें मना करो; अगर तुम यह भी न कर सको तो अपनी जवान बन्द रखो जब तक कि उससे कोई अच्छी बात न निकले."

सस काइ अच्छा बात न निकल.'' ابن عازب' بہنٹی ۔ —बरा विन घाजिब, वेहक़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा कि:-

'क्रयामत के दिन सात तरह के आदिमयों को अल्लाह अपने साप में ले लेगा, और इस दिन सिवाय अल्लाह के श्रीर किसी का साया काम न देगा: एक वह श्रादमी जो कोगों के ऊपर सरदार है श्रीर सबके साथ इन्साफ का बरताव करता है; दूसरे वह जत्रान श्रादमी जिसने श्रानी जवानी को श्रष्ठाह की खिद्मत में बिताया हो; तीसरे वह आदमी जो जब भी दुश्रा माँगने की जगह से निकलता है तो जब तक फिर उसी जगह वापिस न श्रा जावे उसका दिल उसी जगह अटका रहता है; चौथे वह श्रास्ताह के लिये एक दूसरे में प्यार करते हैं; उसी के लिये मिलते हैं श्रीर उसी के लिये अलग हाते हैं: पाँचवे वह आदमी जो अल्लाह को याद करता गहता है और जब भी याद करता है तो उसकी आँखों से आँसू गिरते रहते हैं; छटे वह आद्मी जिसके दिल को अगर काई ऊँचे खानदान की और खुबसूरत औरत भा अपनी तरफ खाँचती है तो बह कहता है,--'सचमुच, में अल्लाह से डरता हूँ;' और सातवें वह आदमी जो .सैरात देता है और उसे छिपाता है, यहाँ तक कि उसका दाँया हाथ जो कुत्र देता है उसकी उसके बाँए हाथ तक को खबर नहीं होती."

—श्रबु हुरैरह, बुखारी: मुसलिम.

सुहम्भद साहब ने कहा कि:—"आदिभयों में सब से ज़ियादह लायक वह है जो दूसरों का उनसे पहले सलाम करता है."

—अबु उमामइ, अबु दाऊदः तिरमिजी.

محدد ماحب نے کہا کہ:۔۔

القيامت كي دن سات طرح كي أدميون كو الله أيني سائد میں لے ایکا اور اُس دوں سوائے آاله کے کسی کا سایہ کام نہ درے کا ایک وہ ادمی جو لوگوں کے اُریر سردر ہے اور سب کے ساته انصاف کا برناؤ درتا کی درسرے وہ جوان آدمی جس له اینی جوانی کو الله کی خدمت میں بتا یا مود تیسرے وہ أدمى جو جب بھى دعا مانكنے كى جكه سے نكلتا ہے تو جب تک بهرأسی جایم وایس نمآجارے اس کا دل اسی جایم الكا رهمًا هـ: چوته وه دو أدمى جو الله نے لئے ايك دوسرے سے ییار کرتے سیں کا اس کے لئے ملتے میں کسی کے لئے الگ موتے هين بالحويل وه آدمي حو الله كو ياد كرنا رهنا هے اور جب بھے یاد درقا ہے تو اسمی آنمیں سے آنسو گرتے رہتے میں چھتے وہ آدمی جس کے دل کو اگر کوئی اولیجے خاندان کی اور خوبصورت عورت بهي أيلي طرف الهيلجيتي هي تو ولا كهنا هـــ السيم ميم عين الله سه قرنا عرب اور ساتوين ولا أدمى جود خورات دية ها اور أح چوپانا هـ ، يهال نک كه أس كا دايال ماتم جو نعچ دیکا ہے اُس کی اُس کے ہائیں مانم تک کو خبر

سابو هريره بخارى: مسلم .

معمد ماحب نے کہا کہ:۔۔''آدمیوں میں سب سے زیادہ التی رہ ہے جو درسروں کو اُن سے پہلے سالم کوتا ہے ۔''

ابو المامة عبدالله: عمدي

मुहम्मद साहब की कुछ हदीसें

डाक्टर मिरजा अबुल कजल

मुहम्मद साहब ने कहा :---

"क्रयामत के दिन हर आदमी से 'पाँच बातों की बाबत सवाल किया जाबेगाः उसकी जिन्दगी की बाबत यह कि तूने अपनी जिन्दगी कैसे बसर की; उसकी जवानी की बाबत यह कि तुम जवान से बुढ़े कैसे हो गए; उसकी दीलत की बाबत यह कि तुमने दीलत कैसे कमाई और यह कि वह दौलत किस किस काम में खर्च की; और उसके इस्म की बाबत यह कि तुमने अपने इस्म का क्या उपयोग किया."

-इच्ने मसऊद्, तिरमिजी.

अबु मूसा कहता है कि:—''मैं अपने दो भतीजों को लेकर रसूल के पास गया. मेरे भतीजों में से एक ने कहा,—'ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह ने जो मुल्क आपको हुकूमत करने के लिये दिया है उसके किसी हिस्से पर हम दोनों को गवरनर मुक्तरर कर दीजिये.' मेरे दूसरे भतीजे ने भी यही बात कही. इस पर पैगम्बर ने जवाब दिया,—'अल्लाह की क्रस्म! मैं किसी ऐसे आदमी को कहां अहं सर मुक्रेर नहीं करता जो खुद मुक्त से मुक्तरेर किये जाने के लिये कहता है, या जो अफ्सर होने की इच्छा रखता है."

- अबू मूसा, बुखारी: मुसलिमः अबु दाऊदः नसाई.

धनस कहता है:—"मैंने यह देखा कि जब कभी पैराम्बर के सामने कोई ऐसा मामला लाया गया जिसमें किसी ने किसी को कोई नुक्रसान पहुँचाया हो छौर जिसे मुक्रसान पहुँचा है वह बदला लेना चाहता हो तो पैराम्बर ने हमेशा यही हुकुम दिया कि माफ कर दां."

—श्रनस, श्रबु दाउदः नसाई.

मुहन्मद साहब ने कहा:—"महलाइ नेक है और वह लोगों से सिवाय नेक कामों के और कोई काम क़ बूल नहीं करता."

—श्रवु हुरैरह, मुसलिम : तिरमिजी.

محمد صاحب کی کچھ حدیثیں

قاكتر مرزا ابوالغفال

محدد ماحب نے کہا:۔۔۔

التهاست کے دُن ہر آدمی سے بانچ باتوں کی بابت سوال کا جائیگا: اُس کی زندگی کی بابت یہ کہ تو نے اپنی زندگی کی بابت یہ کہ تو نے اپنی زندگی کی بابت یہ کہ تم جوان سے بوڑھے کیسے ہو گئے؛ اُس کی دولت کی بابت یہ کہ تم نے دولت کی بابت یہ کہ تم نے دولت کی بابت یہ کہ تم نے کہ اور اُس کے علم کی بابت کہ تم نے اپنے علم کا کیا اُپھوگ کی؛ اور اُس کے علم کی بابت کہ تم نے اپنے علم کا کیا اُپھوگ

ـــابن مسعود، ترمذی .

أبو موسئ كها هـ كه:—"مين أپنے دو به آيتجون كولے كر وسول كے پاس گيا . ميرے به آيتجون مين هـ ايک نے كها— الله كے رسول ! الله نے جو ملک آپ كو حكومت كولے كے لئے ديا هـ أس كے كسى حصه پر هم دونين كو كورتر مقرر كو ديتجيئه . ميرے دوسرے به آيت نے بهى يهى بات كهى . اِس يو يهنمبر نے جواب ديا—"الله كى قسم! مهن كسى ايسے يو يهنمبر نے جواب ديا—"الله كى قسم! مهن كسى ايسے آدمى كو كهن أفسر مقرر نهين كرنا جو خود مجهسے مقرر كئے جانے كے لئه كهنا هـ يا جو أفسر هونے كى اِچها ركهنا هـ يا

-ابن موسى بخارى؛ مسلم: ابوداعود: نساعى .

آئس کہنا ہے:۔۔'' امیں نے یہ دیکھا کہ جب کبھی پیغمبر کے سامنے کوئی آیسا معاملہ لایا گیا جس میں کسی نے کسی کو کوئی نقصان پہنچا ہو وہ بدنہ لینا چاھتا ہو تو پیغمبر نے ہمھتہ یہی حکم دیا کہ معاف

ــانس١٤ بوداءود: نساعي .

سیس محمد صلحب نے کہا: ۔۔ "الله نیک هے اور وہ لوگوں سے سوائے نیک کاموں کے اورکوئی کام قبول نہوں کرتا ،"

ســأبو هريرة مسلم : قرمتى .

सन् 1905 का स्वदेशी बांदोबन..

बराबर पैदल ही आया जाया करते थे. मेरे दिल पर चिन्ता-मिया जी का, उनकी सादगी और सच्चरित्रता का बहुत असर पड़ा. हालाँकि मेरे विचार उनसे नहीं मिलते थे लेकिन फिर भी उस समय से लेकर आख़ीर तक मेरे ऊपर हमेशा उनकी मेहरबानी बनी रही.

चिन्तामिं जी को स्वदेशी आन्दोलन के बढ़ते हुए सैलाब को रोकने के लिये इलाहाबाद लाया गया था . खास तौर पर युनिवर्सिटी के अन्दर विद्यार्थियों पर गरम दब के बढ़ते हुए असर को रांकने का काम चिन्तामाण जी के सुपूर्व किया गया. चिन्तामणि जी बहुत अच्छे वक्ता थे. हनकी दलीलों की काट आसान न थी. उनके प्रोपेगेन्हा का . श्रीगरोश जहाँ तक मुक्ते याद है, श्राक्सफोर्ड कैन्त्रिजबोर्डिंग हाउस से हुआ था, जो अब गालिबन हालेन्ड हाल के नाम से प्रसिद्ध है. उनके पहले लैक्चर में मैं भी मौजूद था. हाल ठसा ठस भरा हुआ था. प्रोफो सर भी मौजूद थे. चिन्तामणि जी ने स्व-देशी और बायकाट के रिवलाफ बड़ी तर्क पूर्ण तकरीर की. ज्योंही उन्होंने बोलकर खत्म किया विद्यार्थियों ने आवाजें लगाई - "सुन्दरलाल जी भी बोलें." दोनों तरफ के ख्याल विद्यार्थियों ने सुने श्रीर जब बोट लिये गये तो कुल इने गिने चार वोट चिन्तामणि जी को मिले और क्रीब चार सी उनके रिवलाफ. चिन्तामिया जी ने प्रेम से आकर मुक्तसे हाथ मिलाया और कहा-"वधाई !" उस पहली मीटिंग का तजरबा इतना मँहगा पड़ा कि फिर बायकाट के विराधियों को युनिवर्सिटी के किसी होस्टल में दूसरी मीटिंग करने का साहस न हवा.

[बाक़ी छगले नम्बर में]

سي 1905 كا سوديهي الدولي...

یرابر پهدل هی آیا جایاکرتے تھے ، مهرے دل پر چلتانی چی کا کا کی سادگی اور سمچرترانا کا بہت اگر پڑا ، حالانکه مهوسے وچار آن سے تبیدن بهر بهی آس سے سے لیے کر آخر تک میرے اوپر همیشه آن کی مهربانی بنی رهی ،

چلتاملی جی کو سودیشی آندوان کے بجمتے ہوئے سیالب کو روکلے نے اللہ الماليان لايا كيا تها . خاص طور يہ يوندورستى کے اندر ودیارتھوں پر گرم دل کے بڑھتے ھوٹے اثر کو روکنے کا کم چنداملی جی کے سپرد کیا گیا ، چنداملی جی بہت أچهے وکتا تھے . اُن کی دلیلوں کی کاشآسان نع تبی ان کے پروپیکینڈا كا شرى كنيش جهال تك مجهر ياد هـ السفورة كيبرج بورةنگ هاؤس موا تها جو أب غالباهاليند مال كے قام يرسده ھے۔ اُن کے پہلے لکنچر میں میں بھی موجود تھا ۔ ھال تھسا تھس بهرا هوا تها ، پررفیاس بھی موجود تھے ، چنتاءلی جی لے سودیھی اور بائیکات کے خالف بڑی ترک پارن تقریر کی . جهرس می آنهرس لے بول کر ختم کیا ردیارتهیرس لے آواؤیں لگاٹیں۔ "سلام الل جی ہمی بولیں" دونوں طرف کے خیال ودیارتھ و لے سنے اور جب ووٹ لئے گئے تو کل اِنے گئے چار ووق چذامنی جی کو ملے اور قریب چار سو ان کے خلف ، چنتامنی جی نے پریم سے آئر مجھ سے عاتم مالیا اور کہا۔ "الدهائي إن يهلى ميثنك كا تجربه أننا مهنكا يرا كه يهر پائیکات کے ورودھیوں کو یوٹیورسٹی کے کسی ھوسٹل میں دوسری میٹنگ کرنے کا ساعس تہ ہوا ،

[باقى أكلے نمبر ميں]

[बाकी सफा 264 का]

बहुत सी बातें के कर दीं जो हिन्दुओं को विदेशी लगती थीं. अपनी इस कुरबानी से उन्होंने हिन्दोस्तान की मिली-जुली कल बर की वह शानदार कहानी लिखी कि जिसकी माँकी हमें मँमले जमाने में बनी हुई हर किताब और हर तस्बीर में, हर किले और हर महल में, हर शेर और हर नक्म में मिलती है.

[अंग्रेज़ी से अनुवादक—वि० ना० पांडे]

[باقىمنحه 264 كا]

بہت سی بائیں ترک کردیں جو ھندؤں کو ردیشی انگئی تھیں ۔ اپنی اِس قربانی سے اُنہیں نے عندستان کی ملی جلی کلجھر کی وہ شاندار کہائی انہی که جس کی جہانکی ھمیں منتجلے زمانے میں بنی ھوئی ھرکتاب اورھر تصویر میں عرقام اور محل میں عرفام میں ملتی ہے ۔

[انگریزی سے انوادک وی . نا . باندے]

मजबूर होकर घर लीट जाऊँ तो इलाहाबाद में आन्दोलन ठन्डा पड़ जायगा. मकान मालिक बेबारा बड़ा परेशान हुआ. पुलिस के सामने उसने इक्रारनामा रक्खा. सरकारी बकील से भी सलाह मशबिरा लिया गया, मगर मुक्ते निकालने की कोई कानूनी सूरत न निकली. जाब्ते से श्रव हमारी पार्टी का श्रद्धा 56 चौक गंगादास में कायम हो गया.

इसी बीच कुछ ऐसे वाक्रे यात पेश आये जिनसे गरम दक्त के हिन्दुस्तान के नक्ष्शों में इलाहाबाद की एक ख़ास जगह हो गई.

जो बुजुर्ग हमें मदद श्रीर सलाह मशांवरा दिया करते थे उनके ख़िलाफ़ सरकार ने क़द्म उठाने :शुरू किये. सबसे पहला हमला पंडित श्रीकृष्ण जोशी पर हुआ, वह सरकारी अफ़सर थे और डिप्टी कलेक्टरी के ब्रोहदे पर थे, उन्हें बरखास्त कर दिया गया. बाबू शिष भूषण चटर्जी का इलाहाबाद से ग्राजीपुर तबादला कर दिया गया. पंडित बालकृष्ण भट्ट को कायस्थ पाठशाला की मैनेजिंग कमेटी पर जार डालकर नौकरी से बरखास्त करा दिया गया और अन्त में कायस्थ पाठशाला की मैनेजिंग कमेटी के जिर्ये बाबू रामानन्द चटर्जी को प्रिंसपल के पद से इस्तीफा देने को मजबूर कर दिया गया. प्रिन्सिपल के पद से हटकर बाबू रामानन्द ने इलाहाबाद में ही इन्डियन प्रस से, 'प्रवासी' नामक बंगला मासिक पत्र और 'Modern Review' नामक अंगेजी मासिक-पत्र निकालना शुरू किया. बाद् में शमानन्द बाबू कलकत्ते चले गये और अपने दोनों पत्र भी फलकत्ते से जाकर निकालने लगे.

सर तेजबहादुर सप्न को, जो उस समय डाक्टर सप्न थे, मुक्तसे बेहद दिली मोहञ्चत थी हालाँकि राय उनकी माल-बीय जी से मिलती थी. यही क्रेफ्यित डाक्टर सच्चि-दानन्द सिन्हा झौर मुंशी ईश्वर शरण की थी.

इलाहाबाद से उस जमाने में 'नीम सरकारी' दैनिक 'पायोनियर' और नरम दल का दैनिक 'इन्डियन पीपुल' का सम्पादन काली बाबू करते थे किन्तु काली बाबू भी नरम दल के नेताओं की नज़रों में उतने नरम न थे जितना कि वे उम्मीद करते थ. चुनानचे मालवीय जी, पंडित मोतीलाल जी और दूसरे नरम दली नेताओं ने मिल कर 'लीडर' का प्रकाशन शुक्त किया. 'इन्डियन पीपुल' भी 'लीडर' में ही मिला लिया गया. 'लीडर' के सम्पादन में मदद देने और गरम दल के नीजवानों से मोर्चा लेने के लिये स्वर्गीय सी० वाई० चिन्तामिया को इलाह बाद बुलाया गया. यह ता याद नहीं रहा कि चिन्तामिया जी उस समय कहाँ रहते थे लेकिन इतना मुक्ते बाद है कि वे साउथ रोड में 'लीडर' के दमतर में

معیور هوکر گیر لوت جاؤں تو الفآبان میں آندولی الفتا اور جائیگا مکلی مانک ہے چارہ ہوا پریشان هوا و پریشان کے سامنے اُس نے اِتوار نامہ رکیا و سرکاری وکیل سے بھی صلاح و مشورہ لیا گیا مکر منجھے نکالنے کی کوئی قانوئی صورت نہ نکلی فائطہ سے آب هماری پارٹی کا اُقا 56 چوک گنگا داس میں قایم موگیا و

اِسی بیچ کچھ ایسے واتعات پیش آئے جن سے گرم دل کے هندستان کے نقشے میں الدآباد کی ایک خاص جکم هو گئی ه

جو بزرگ همیں مدد اور صلاح مشورہ دیا کرتے تھے ان کے خلاف سرکار نے قدم اُٹھانا شروع کیئے اس سے پہلا حمله پنت شری کوشن جوشی پر ہوا ، وہ سرگلی افسر تھے اور ذیعی کلکٹری کے عہدے پر تھے ، اُٹھیں برخاست کردیا گیا ، بابو شسشی بھوشن چٹرجی کا الدآباد سے غازی پور تباداء کر دیا گیا ، پنت بال کرشن بھت کو کائستہ پائے شالا کی منیجنگ کمیٹی پر زور ڈال کر نوکری سے برخاست کرا دیا گیا اور افت میں کائستہ پائے شالا کی منیجنگ کمیٹی کے ذریعے بابو رامانند چٹرجی کو پرنسیل کے پد سے استعفیل دینے کو مجبور کر دیا گیا ۔ پرنسیل کے پد سے استعفیل دینے کو مجبور کر دیا گیا ۔ پرنسیل کے پد سے استعفیل دینے کو مجبور کر دیا گیا ۔ پرنسیل کے پد سے استعفیل دینے کو مجبور اور قاندین پریس سے "پرواسی" نامک بنکلا ماسک پٹر میں ھی انڈین پریس سے "پرواسی" نامک بنکلا ماسک پٹر اور "Modern Review" نامک ادکریزی ماسک پٹر نکاللا شروع کیا ۔ بعد میں رامائند بابو کلکتے چلے گئے اور اپنے دونوں شروع کیا ۔ بعد میں رامائند بابو کلکتے چلے گئے اور اپنے دونوں پٹر بھی کلکتے سے جاکر نکالئے لئے ۔

سرتیج بہادر سپرو کو جو اس سے قاکلو سپرو تھے' مجھسے بے حد دای محبت تھی حالانکہ رائے اُن کی مالویہ جی سے ملتی تھی ۔ یہی کینیت قائلو سچدا نند سنہا اور منشی ایشور شرن کی تھی ۔

الدابان سے اُس زمانے میں 'نهم سرکاری' دینک پایرنیز' اور فرم دل کا دیلک انتہیں پیپل' نکلتے تھے ۔ 'انتہیں پیپل' کا سمیادی کالی باہو بھی نرم دل کے سمیادی کالی باہو بھی نرم دل کے نیکاؤں کی قطروں میں اُناء نرم نے تھے جتنا که وے امید کرتے تھے ۔ چناتچہ مالویہ جی' پنتہ موتی الل جی اور دوسرے نوم دای نیتاؤں نے مل کر 'نیڈر' کا پرکاشی شروع کیا ۔ 'انتہیں پیپل' بھی 'لیڈر' میں ھی مظ لیا کیا ، 'لیڈر' کے سمیادی میں مدد دیاہ اور گرم دل کے نوجوانوں سے مورچہ لینے کے نئے سررگیہ سی وائی ۔ چنتامنی کو الدابان بالیا گیا . لینے کو یاد نہیں رہا کہ چنتامنی جی اُس سے کہاں رہتے تھے لیکی اُنٹ میچی یاد شکہ وے ساؤتھ روت میں 'لیڈر' کے دفتر میں لیکی اُنٹ میچی یاد شکی وے ساؤتھ روت میں 'لیڈر' کے دفتر میں

पिता जी क्या खयाल करेंगे. मगर सब कुछ सोचने के बाद में आख़री निश्चम पर पहुँच गया.

बाइस चान्सतर ने पूछा-- 'क्या .फैसला किया ?'

मैंने जवाब दिया—"आपकी सलाह न मानने का मुक्ते बढ़ा अफ़्सांस है. मेरी गुस्ताख़ी माफ़ हो, मैं बहुत मजबूर हूँ."

दूसरे दिन मैं वाइस चान्सलर के हुक्म से यूनि-वर्सिटी से चलग कर दया गया. इस तरह मेरे विद्यार्थी जीवन का चन्त हां गया.

मेरे युनिवर्सिटी और हिन्दू बोर्डिंग हाउस से निकाले जाने के बाद साथियों के दिल गुस्से से भर गये. नित्या-नन्द चटर्जी मेरे साथ ही एल-एल० बोठ में पढ़ते थें. युनिवर्सिटी से मेरे निकाले जाने के बाद उन्हें एक दिन भी युनिवर्सिटी में रहना गवारा न हुआ. उन्होंने वाइस चांस-लर का मेरे साथ किये गये अन्याय के खिलाफ एक सख्त ख़न लिखा और उस खन के साथ साथ एल एल बी० के दुर्जे से अपना इस्तीफा भी भेज दिया.

बार्डिंग हाउस से निकलने के बाद् मैंने दोस्तों के साथ मकान की तलाश शुरु की. आगे-आगे हम लोग पहुँचते थे और पीछे-पंछे तीन-चार पुलिस के दरारा। और आधे दर्जन सिपाही. मकान मालिक यदि अपना मकान किराये पर देने को राजी भी हो जाता था तो पुलिस बाले उसे बाद में इतना डराते-धमकाते थे कि वह अपनी बात से फिर जाता था. कई घन्टे सर्क किये, कई खाली माकानों को देखा मगर पुलिस के डर के मारे सभी मकान मालिक अपने बादे से फिर गये. आख़िर में वह रात मुक्ते नित्यानन्द के यहाँ बितानी पड़ी.

दूसरे दिन कुछ और दोस्त, जिनसे पिलस वाले पूरी तरह वाकिफ न थे, मकान की तलाश में निकले. आख़ीर में बौक गंगावास में 56 नम्बर का मकान किराये पर लेने का उन्होंने फैसला किया, होशियार दोस्तों ने, जिनमें एक या दो वकील भी थे, मकान मालिक से यह इक्रार-नामा लिखवाया—"वाहे कैसी ही आफ़त इनसानां, आफ़ते सुलतानी और आफ़ते नागहानी आये साल भर तक न किरायेदार मकान खाली करेगा और न मकान मालिक ही किरायेदार को हटायेगा." जब इक्रारनामा लिख लिया गवा और मकान मालिक के उसपर दस्तख़त हां गये तो एक दोस्त उसे मेरे दस्तख़त के लिये मेरे पास लाये. फीरन ही हम लोग अपना सामान लिये दिये माकान में दाख़िल हां गये. इस्त मामूल पुलस भी हमारे पीछे पीछे पहुँची. मकान मालिक से उसने और दिया कि वह मुक्ते मकान से अलग करें, लस का ख़याल था कि अगर मैं इलाहाबाद से

با جي تيا خيال کريں کے ، متر سب کچے سوچنے کے بعد ميں آخرى نفضے پر بہنچ کيا .

وأنس والسار في پوچهاسو كيا فيصله كيا ؟ ٥٠

میں کے جواب دیا۔۔۔ آپ کی ملاح ته ماناہ کا مجھے ہوا افسوس کی میں بہت معاف عوا میں بہت مخبور ہوں ہ²³

درسرے دی میں وانس چانسلر کے حکم سے پرنیبرستی الگ کو دیا گیا ۔ اِس طرح میرے ودیار تھی جنہیں کا انت حد گها ..

مدرے یونیورسٹی اور هددو بوردنگ هاوس سے تکالے جائے بعد ساتھیوں کے دل غصے سے بھر گئے ، نتیا ندد چٹر جی معورے ایل، ایل، ایل، بی، میں پڑھتے تھے، یونیورسٹی میں رھئا فکالے جائے کے بعد اُنھوں ایک دن بھی یونیورسٹی میں رھئا گوارا نه هوا ، اُنھوں نے وائس چانسلر کو میرے ساتھ کئے اُنھائے کے خلاف ایک سخت خط لکھا اور اُس خط کے ساتھ ساتھ ساتھ ایل، ایل، بی، کے درجے سے اپنا استیفیل بھی معتبے بودیا ،

بررقنگ هاؤس سے نکلنے کے بعد میں نے دوستوں کے ساتھ مکان کی تاہم شروع کی۔ آگےآگے هم لوگ پہنچتے تھے اور پیچھے پسچے تین چار پولیس کے دروغه اور آدھے درجن سپاهی ، مکان مالک بدی اپنا مکان کرایہ پر دینے کو راغی بھی هو جاتا تھا تو پولیس والے آسے بعد میں اتا تراتے دھمکاتے تھے که وہ اپنی بات سے پھر جاتا تھا ، کئی گہنٹے صرف کیئے گئی خالی مکان کو دیکھا مکر پولیس کے تر کے مارے سبھی مکان مالک آپنے وعدے سے پھر گئے ، آخیر میں وہ رات مجھے نتیائند کے بہاں باتا ہی پوی

دوسرے دی کچھ اور دوست جن سے پولیس والے پاری طوح وانف نه تھے مکان کی ناهی میں انکلے اخر میں چوک گنگاداس میں 56 تمبر کا مکان کرائے پر لیانے کا انہوں بھی تھے مکان مالک ہیں ہوئیار دوسترں لے جن میں ایک یا دو وکیا ہیں تھے مکان مالک سے یہ افرازنامہ تھوایا۔۔ جہائے کیسی هی آنت انسانی آئے سال بھی آنت انسانی آئے سال بھی تک نه کرایه دار کو مقائے کا یک جب افراز نامہ لیم ایا گیا اور مکان مالک هی مالک کے اِس پر دستخط هرگئے تو ایک دوست آسے میرے مالک کے اِس پر دستخط هرگئے تو ایک دوست آسے میرے ایک سمان لئے دیا میں مالک هران ایک ایک میں داخل ہوگئے دو ایک عوست آسے میرے مالک سے اس ایک میں داخل ہوگئے . حسب میدول پولیس بھی عمارے پہنچھے پینچھے پینچھے مکان سے الگ میدول پولیس کے زور دیا کہ وہ مجھے مکان سے الگ مالک سے آس کے زور دیا کہ وہ مجھے مکان سے الگ

ولیہ ڈگیس جیسے لیکھیں کی کتابیں اُنہیں نے دھیاں سے یوعیں ۔ اِٹائی آدی کے سوتنعراتا سنکرام کا اتباس بھی اُنہوں نے پوعا ۔ ٹھیک اُس سے ایک چھوٹی سے گھٹنا ھوٹی جس نے منظر طی کی زندگی پر گهرا اثر قالا ، مهررسنقرل خالیم کے پرنسهل جے . جی جينكو أن دنون ايم . أ كو انكريزي يرهايا كرتے ته . جينكو لے منظر علی سے بھارت کے آئے دوں کے دشکالوں اور اور کے کارٹوں یو ایک نبنده لاین کو کیا ہے جو تتابیں کورس میں پوهائی جائی تهیں آن میں اِن دشکانوں یا تعطوں کی وجه ہارہی کی کمی بتایا گیا تھا ، لیکن نئی کتابیں یوس دوٹے منظر علی لے اس کی وجه اپنے نبندھ میں انگریزوں کی شوشن ثیتی کو بایا . پرنسهل جینای کو نباده یوه در غصه آگیا ۔ اُنہوں نے منظر علی کو ڈانٹا ڈیٹا اور سمجھا کو نبندھ بدلنے کو نہا - منظر علی نے اینی رائے نه بدلی ، اِس پر وہ ایم . اے کلس سے نکال دیئے گئے . سن 1908 میں انہوں نے ایل . ایل . بی یاس کرلیا . اِس سب کا نتیجه یه هوا که م ظر علی همارے دل میں جی ، جان اور جوش حروش کے ساته شامل هوكئے.

ودیاربھیوں کے اندر گرم دل نے بڑستے ہونے پربھاؤ دو دیکھ کر بو، پی، فی سرکار چوننی ہو گئی ، یونیورسٹی نے واٹس چادسلر کے ساتھ مل کو اُدھرں نے مم ہوگرں کے حالف قدم اُٹھانے کا فیصلہ بیا۔ میں ھی پیش پدھی بھا اِس لیٹے میرے ھی حالف پہلے قدم اُٹھائے کی بات سوچی گئی ،

سب سے پہلے مجھ یہ هندر بیردنگ ماؤس سے نعلنے کا نولس معمیل در دیا نه ، ما چ ۱۹۷7 میری بها استخان دریب بها رداست د دریدل . مشدان مهدم مر بے عد مدری کو تھا ، میرا سامان بورقانگ ھاؤس کے سرے نے اھر او دیا گھا ، مالوید کے بعدور ہو قانگ ساؤس نے شروا دیدان تھے اور معجم موسئل سے ألگ كاتے دون انهيں بيدد ١٠١٠ و بها جباع سانها یه دهووریل بدا رقع نها ده این نهال ره در اسی پڑھائی جاری ردھوں کونیورسٹی ادھیکاریوں نے پاس سے یہ پروانه آیا که مجهه آیل. ایل. بی. کلس سے رستی دیت دیا جانا هے ، وائس چانسلر نی آور سے یہ بھی کہا گیا تع یدی میں وعدہ کر نوں که استحان ختم هولے تک راج نیتی میں میں کوئی بھاک نہیں لونگا تو مھرے نکالے جالے کا حکم رد کیا جا سكتا ها، يه يهي كها كيا كه أيسي صورت مين هدر بوردنگ ھاؤس سے بھی مجھے انگ کرنے کا حکم بھی واپس لے لیا جائیگا ، میں لے تهروی دھر نک سوچا ، وندنی بھارت ماتا کی تصویر مهرم سامنه آئی ، آینی زندگی کی مور پر میں کھڑا تھا ۔ میرے اِس وقت کے فیصلے پر میری اُگ کی رندگی کا دارہ مدار تھا . میں نے یہ بھی سوچا که میرے بروھے

बिलियम डिग्बी जैसे लेखकों की किताबे' चन्होंने ज्यान से पर्डी. इटली बादि के स्वतंत्रता संघाम का इतिहास भी इन्होंने पढ़ा. ठीक इस समय एक छोटी सी घटना हुई जिसने मंजर अली की जिन्दगी पर गहरा असर डाला. न्योर सेंट्रल कालेज के पिंसिपल जे० जी॰ जेनिंग्ज वन दिनों एस॰ए० को अंगरेची पढाया करतेथे. जेनिंग्ज ने मंजर अली से भारत डे आए दिन के दुष्कालों और उनके कारणों पर एक निबन्ध लिखने को कहा, जो किताबें कोर्स में पढाई जाती थीं उनमें इन दुष्कालों था कहतों की बजह बारिश की कमी बताया गया था. लेकिन नई कितावें पढे हुये म'जर मली ने इसकी वजह अपने निवन्ध में अंगरेजों की शोषण नीति को बताया. प्रिंसिपल जेनिंग्ज को निबन्ध पढकर गुरसा था गया. उन्होंने म'जर अली का डाँटा डपटा और समका कर निबन्ध बदलने की कहा, मंजर अली ने अपनी राय न **पद्ली, इस पर वह एम**० ए० क्लास से निकाल दिये गये. सन् 1908 में उन्होंने एल• एल० बी० पास कर लिया. इस सबका नतीजा यह हुआ कि मंजर अली हमारे दल में जी-जान और जोश .खरांश के साथ शामिल हो गये.

विद्यियों के अन्दर गरम दल के बढ़ते हुये प्रभाव को वेसकर यू० पी० की सरकार चौकन्ना हो गई. यूनिव सेटा के बाइस चान्सलर के साथ मिलकर उन्होंन हम लागों के ख़िलाफ़ .कदम उठाने का .फैसला किया. मैं हा पेश पेश था इसलिये मेरे खिलाफ पहले .कदम उठाने की बात सोची गई.

सबसे पहले मुम्त पर िन्द् बार्डिंग हाउस से निकलने का नोटिस सत्माल कर दिया गया, माचे 1907 का महीना था. इस्तहान ,कर'व थ , बहुतन हा ,फाइन न उर्रा न अक्षा १ १ १ था । १ १ में अभी व हिंग हाउस रे र विरोध पर १००० समाच का विन्दू कांद्र संस्कृतिक एतः है। श्रे । ुमें अस्टत सं अलग करते दुवे १ हे १६५ हुन। हुन। या । बाक साथ यह राजिया च बना रहे थे के में तहा रहकर अना नद जारी रखे, यानवार्सटी आधकारिया के पास से यह परवाना श्राया कि मुमे एल० एल० बी० क्लास से रस्टीकेट किया जाता है. बाइस चांसतर की चोर से यह भी कहा गया कि यदि में बादा कर लूँ कि इन्तहान .खत्म होने तक राजनीति में काई भाग न सूँगा तो मेरे निकाले जाने का हुक्म रह किया जा सकता है, यह भी कहा गया कि ऐसी सूरत में हिन्दू बो। ब ग से भी मुमे बलग करने का हुक्म भी वापस ले लिया जायगा. मैंने थोड़ी देर तक सोना. वन्दिनी भारत माता की सरबीर मेरे सामने काई. अपनी जिन्दगी की मोद पर मैं सदा था. मेर इस वक्त के .फैसले पर मेरी आगे की जिन्दगी का दार मदार था. मैंने बह भी सोचा कि मेरे बूढे

أور لعهدين أيل . أيل . بي ك وديارتهي ته . اله جالاتو كها فے بعد میں للدون جاکر التجینیونگ پڑھی اور ہی ، بی ، سی آئی ، ریلوسے کے توریزنل انتجینیر هوگئے ، سورگیته رأم پرسان سلک هندی کی کویکری سوبهدر کماری چوهان کے بوت بھائی تھے ، یولیس میں دارہ ع تھے ، استینہ ا دے کر کرانت کان بارثى ميں شامل هزكئي، لجهين برساد كي يتا رأئه بهادر اله پراگ داس سیش جم ته اور لجیس برساد بھی بعد میں سيهن جعبى عدى رينائر مراء جب نك جيئه نهادى هي پهنته وھے اور اِس کے لئے کئی سال اُن کی ترقی رکی رھی .

بھائی منظر علی سوخته کے ساتھ مهرا دریم انتا ہوما که هم هولیس ایک جان دو قالب کی طرح بن گئے . ملظر علی کا جلم سن 1884 میں بدایوں میں عوا تھا ، اُن کے بتا شیخ مہارک علی نواب ہدایوں کے چھیوے بھائیوں میں سے تھے . ایک یرانے صوفی ساسلے سے اُن کے گھرانے کا سمندھ تھا ، اُسی سے خاندان کی ال سرخته بعنی تدکده یا جا هوا پرکئی . 1857 میں اِن کے خاندان نے انقلاب میں حصہ لھا' اور فترجع میں خاندان کے بہت سے لوگ اوائی کے میدان میں مارے گئے . بہتیں کو پھانسی لکی اور خاندان کی تمام جائداد فیط مر گئی ، شدم مبارک علی فارسی کے ودران تھ ، نوکری کی ناهل میں الدآباد آکر یندت موتی لال فہرو کے بہاں منشی ہوگئے۔ موتی لال جی نے همیشہ أن كے سانھ دوست اور يهائی كا سا برتاؤ كيا . منظر على كا خاندان أثنديهون مين هي رهمًا نها . منظر على رهيل ره كر برح هوئه . نبهرو خاندان كے سانه أن كا أخير تك يريم سمبلده قايم رها. سب أنهين عام طور یر منا بھائی کہ کر یکار تے تھے .

بلک بھاک کے زمانے میں منظر علی مہرے ساتھ ھی مهررسنقرل کالم میں ایم . اے اور ایل . ایل . می . ساتھ ساتھ یوھ رہے تھے ۔ ایل ، ایل ، ہی ، کے اور ودیارتھوں میں بھائی وروشوتم دأس تنتن سوركيه رما كانت مالويه مدهيه ورديش کے معیدہ منتری سررگیہ روی شنعر شعل؛ ڈاکٹر کیلس نانه کاتجوہ اور شرق درا شنکر مہاا اس تھ ، نیچے کے درجوں مين ينتت گيرند ولبه ينت سررگيه اچاريه لريندرديوا سورگهم گلیهی شنک ودیارتهی ونیکتیهی نواین نیواری اور سورگید کرشلا کانت مالوید بھی تھے . حالانکد یدلوگ بارثی کے میر نہیں تھے لیکن راج نیکی سے آنہیں پوری مدردی تھی بعد میں آئی میں آگے کی بعد میں آئی میں آگے کی لاتن میں لائر کھڑا کردیا اور بڑی بڑی قربانیاں اِن لوگوں نے ئیں .

بنگ بہنگ کے آندولن کا منظر علی پر گہرا اثر پڑا. دیش کی آرتیک آرر راج نیتک کیفیت کو انہوں نے سنجھانا شروع کیا ، دادا بھائی نوروجی' رمیش چندر دت'

और तक्ष्मण पल-पल. बी. के विद्यार्थी थें. लाला जगन्नाथ खरना ने बाद में खन्दन जाकर इंजीनियरिंग पढ़ी और बी. बी. बी. बाइ. रेलवे के दिवीजनल इंजीनियर होगये. स्व-र्गीय रामप्रसाद सिंह हिन्दी की कवियित्री सुभद्रा कुमारी चौदान के बढ़े भाई थे. पुलिस में दारोगा थे. स्तीका देकर कान्तिकारी पार्टी में शामिल हो गये. लक्ष्मण प्रसाद के पिता रायबहादुर लाला प्रागदास सेशन्स जज थे और लक्ष्मण प्रसाद भी बाद में सेशन्स जजी से ही रिटायर हुये, जब तक जिये खादी ही पहनते रहे और इसके लिये कई साल उनकी तरका इकी रही.

माई मंजरवाली सोख्ता के साथ मेरा प्रेम इतना बढ़ा कि इस दोनों 'एक जान दो क़ालिब' की तरह बन गये. मंजर-अली का जन्म सन् 1884 में बदायूँ में हुआ था. उनके पिता शेख मुबारक अली नवाब बदायूँ के चचेरे भाइयों में से थे. एक पुराने सूकी सिलसिले से उनके घराने का सम्बन्ध था. इसी से ख़ानदान की घल्ल 'सोस्ता' यानी 'द्रध' या 'जला हुआ' पड़ गई. 1857 में इनके ज्ञानदान ने इन्क्लाब में हिस्सा लिया, और नतीजे में खानदान के बहुत से लोग लड़ाई के मैदान में मारे गये. बहुतों को फाँसी लगी धौर .सानदान की तमाम जायदाद जब्त हो गई. शेख सुवारिक अली फारसी के विद्वान थे. नौकरी की तलाश में इलाहाबाद आकर पंडित मोतीलाल नेहरू के यहाँ मुन्शी हो गये. मोतीलाल जी ने इमेशा चनके साथ दोस्त और भाई का सा बर्ताव किया. मंजर अली का सानदान श्रानन्द भवन में ही रहता था. मंजर श्रली वहीं रहकर बढ़े हुये. नेहरू .खानदान के साथ उनका आसीर तक प्रेम सम्बन्ध कायम रहा. सब उन्हें आम तौर पर मन्ना भाई कह कर प्रकारते थे.

बंग भंग के जमाने में मंजर अली मेरे साथ ही स्वोर सेंट्रल कालेज में एम० ए॰ श्रीर एल-एल॰ बी॰ साथ साथ पढ गृहे थे. एल-एल० बी० के और विद्यार्थियों में भाई पुरुषात्तमदास टएडन, स्वर्गीय रमाकान्त मालवीय, मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री स्वर्गीय गविशंकर शुक्ल, डाक्टर केला-सनाथ काटजू, और श्री दुर्गाशङ्कर मेहता भी थे. नीचे के दरजों में पंडित गोविन्द बल्लभ पन्त, स्वर्गीय आचार्य नरेन्द्र देव. स्वर्गीय गरा शा शाहर विद्यार्थी, वेंकटेश नारायन तिवारी और स्व॰ कृष्णाकान्त मालबीय भी थे. हालाँकि ये लोग पार्टी के मेम्बर नहीं ये लेकिन राजनीति से इन्हें पूरी इमद्दी थी. बाद में उसी इमद्दी ने इन्हें आजादी की लड़ाई में आगे की लाइन में लाकर खड़ा कर दिया और बड़ी बड़ी करवानियाँ इन लीगों ने कीं.

बंगम'ग के आन्दोलन का मंजर अली पर गहरा असर पड़ा, देश की आर्थिक और राजनैतिक क्रैफ़ियत को उन्होंने असमना शुरू किया. दादाभाई नीरोजी, रमेश चन्द्र दत्त

और अद्धा पैदा हो गई और एन्हें भी गुक्त दिली प्रेम हो गया. हालाँ कि मेरे विचार उनसे नहीं मिलते थे लेकिन जब जब मैं पूना जाता था ठहरता लोकमान्य के यहाँ था मगर पूज्य गोखल से मिलने जहर जाता था. श्री गोखले के साथ मेरा यह प्रेम सन्दन्ध उनकी मौत के समय तक बराबर बदता ही गया और आज भी मैं उन्हें प्रेम और आदर से याद करता हूँ.

गोखले जी की इलाहाबाद यात्रा से यहाँ की राजनैतिक हालत पर कोई खास असर नहीं पड़ा. नरमदली नेताओं ने फिर आपसमें सलाह करके 1907 में ही यू. पी. पोलिटिकल कान्केंस का इजलास यहाँ करने का कैसला किया. मेया हाल में पंडित मोतीलाल नेहरू की सदारत में सम्मेलन हुआ. पार्टी की हिद्दायत पर मैं भी इस कान्केंस में दर्शक की हैसि-यत से शामिल हुआ. मुक्ते मोतीलाल जी के वे फिक्करें याद रह गये हैं जो हन्होंने सदर की हैसियत से कहे थे. उनके लक्ष्य हैं:—

"For Indians to talk of Swaraja and ofturning out the British is like a pygmy witha broom in his hand trying to fight the giant."

यानी—''हिन्दुस्तानियों के लिये स्वराज्य की और अंग्रेंजों को निकालने की बात करना वैसा ही है जैसे कोई नाचीज आदमी बड़े भारी जिन्न से माड़ू लेकर लड़ने की काशिश करे,"

मोतीलाल जी के इस फिक़रें को सुनकर दर्शकों ने इतना हो हस्ला मचाया कि मालूम दुआ कान्मेंस दूट जायगी, मगर बड़ी कोशिशों के बाद लोग ज़ामांश हुए.

मोतीलाल जी उस जमाने मैं नरमदल वालों के सरताज सममें जाते थे. एक बार वे प्रसिद्ध इतिहासकार मेजर बामनदास बसु से एक दावत में इलाहाबाद में मिले. मेजर बसु धाती पहनकर उस सरकारी अफसरों की दावत में गये थे. मोतीलाल जी ने इनकी धाती की आर इशारा करके उन्हें टोका :—

"Major Basu! you appear to have got Swaraja."

थानी—"मेजर बसु, मालूम होता है कि आपको तो स्वराज्य मिल गया."

रारज यह कि यू. पी. पोलिटिकल कान्त्रोंस का इजलास भी बढ़ती हुई आजादी की चाह को कम न कर सका. हमारे काम का दायरा बढ़ा और नये नये साथी पार्टी में भरती होने लगे. इन नये साथियों में स्वर्गीय मंजरञ्जली सोखता, स्व-गीय बाबू लक्ष्मणं प्रसाद, स्वर्गीय लाला जगनाथ सना और स्वर्गीय ठाकुर रामप्रसाद सिंह मुख्य थे. इनमें मंजर اور شردها پیدا هو گئی اور آنهیں بھی میچھسے دای پوہم هو گھا۔ حالائکہ میرے رچار آن سے نہیں ملتے تھے لیکن جب جب میں پونا جاتا تھا تہرتا لوکبائیہ کے یہاں تھا مکر پہجیہ گوکیلے سملنے ضورر جاتا تھا ، شری گوکیلے کے ساتھ میرا یہ پریم سمبندھ آن کی موت کے سمے نک برابر بڑھکا ھی گیا اور آج بھی میں آنھیں پریم اور آدر سے یاد کرتا ھوں ،

گوکیلے جی کی التآبان یاترا سے یہاں کی راجایتک حالت بر کوئی خاص اثر نہیں پڑا ۔ نرم دلی نیتاؤں نے بھر آپس میں صلاح کر کے 1907 میں ھی یو، پی، پولیٹکل کانفرنس کا اجالس بہاں کرنے کا نیصلہ کیا ۔ میٹو ھال میں پلات موتی لالنہ و کی مدایت پر میں بھی اِس کانفرنس میں درشک کی حدثیت سے شامل ھوا ، مجھے موتی لال جی کے وے نقرے یاد راہ گئے ھیں جو آنہرں نے صدر کی حیثیت سے کہے تھے ، اُن کے لفظ ھیں:۔۔

"For Indians to talk of Swaraja and of turning out the British is like a pygmy with a broom in his hand trying to fight the giant."

یعنی -- "هندستانه رس کے لئے سورا جیمکی اور انگریزوں کے نکالنے کی بات کرنا ویسا می ہے جیسے دوئی ناچیز آدمی ہوے بہاری جی سے جہارو لے کر اونے کی کوشص کرے ."

موالی لال جی کے اِس نقرے کو سن کر درشاہوں نے اتنا هو هله منچایا که معلوم هوا کانفرنس تُوت جائیگی مگر بڑی کوشھوں کے بعد لوگ خاموش هوئے .

موتی الل جی اُس زمانے میں قرم دل والوں کے سرتاج سمجھے جاتے تھے ۔ ایک بار وے پرسدھ اِقہاسکار مهجر بامن داس بشو سے ایک دعرت میں الداباد میں ملے ، مهجر بسو دھوتی پہن کر اُس سرکاری انسروں کی دعوت میں گئے ۔ مہتر تھے ، موتی الل جنی نے اُن کی دعوتی کی اُور اشارہ کر کے اُن کی دعوتی کی اُور اشارہ کر کے اُنسبہ ٹکا بسب

"Major Basu! You appear to have got Swaraja."

يعنى ســرامروجو يسوم معلوم هوتا هے آئي كو تو سوراجيه مل گيا ، ، ،

غرش یه که یو ، پی ، پرایةکل کانفرلس کا لجالس بهی برهای موئی آزادی کی چاه کو کم نه کرسکا ، هماری کام کا دایره برها اور مئی لیئے ساتھی پارٹی میں بورتی هوئے لیے اس لیئے ساتھیوں میں سورکیه منظر علی موخکه سورکیه بابو لعجموں پرسات سورگیه لاله جکاناته کها اور سورگیه تها ران میں منظر سرگیه تها ران میں منظر اور سورگیه تها ران میں منظر

सन् 1905 का स्वदेशी आन्दोलन और मेरा राजनैतिक जीवन

पंडित सुन्दरलाल

मुल्क के सियासी नक्षरों में इलाहाबाद की एक ख़ास जगह बन गई. ख़ुदीराम बास, मुजफ्करपुर बम दुर्घटना से दा महीने पहले इलाहाबाद आये. उनके बाद रासिबहारी बास, अर्थवन्द बाबू के भाई बारीन्द्र कुमार घोष, सूफी अन्वा प्रसाद, भगतसिंह के चचा सरदार अजीतसिंह और लाला हर द्याल आदि नेता बारी-बारी से इलाहाबाद आए. गुप्त सभाओं में उन्होंने हम लोगों की यह गुप्त सभायें चौक गंगादास के 56 नम्बर के मकान में हुआ करती थीं. यह मकान मैंने किराये पर ले लिया था. उस जमाने के चौक गंगादास के लड़कों में बड़ी देश भक्ति और निडरता थी. हमारी भीटिगों के बक्त वह ऐसा चौकस पहरा बैठा देते कि ख़ुकिया पुलिस की वहाँ पर-छाई तक न फटक पाती.

इलाहाबाद की यह कैंकियत देखकर नरम दली नेताओं की परेशानी बहुत बढ़ गई. मालवीय जी ने स्वर्गीय गोखले को निमंत्रण देकर इलाहाबाद बुलाया. लाल-पाल-बाल (लाला लाजपत राय, बिपिनचन्द्र पाल और लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की त्रिमृति को लाग इसी नाम से पुकारतेथे) के व्याख्यानों के असर का वे काटना चाहते थे. किन्तु खुर्ल मैदान में श्री गोखले का व्याख्यान कराने की हिम्मत नहीं पड़ी. पुराने कायस्थ पाठशाला के हाल में श्री गोखले की मीटिंग हुई. क्रगीब दो सौ श्रादमी व्याख्यान सुनने के लिये मौजूद थे. मैं भी कौतृहत वश उस मीटिंग में चला गया. मेरी तरक इशारा करके लोगों ने शिकायत की कि इसी लड्के ने इलाहाबाद में आग सुलगा रक्खी है. गांखले ने मुक्ते अपने पास बुलाया श्रीर मुक्तसे वादा लिया कि मैं दूसरे द्नि उनसे जरूर मिलूं. दूसरे दिन डाक्टर सिच्चिदानन्द सिनहा के यहाँ गोखले जी की दावत थी. वहीं मैं पहुँच गया. इसला होने पर श्री गांखले न मुक्ते वहीं बुलाया. मुक्ते देखते ही सब ने एक साथ मेरी शिकायतें शुरू कर दीं. मगर गोखले जी बहुत प्रेम से मुमसे मिले. मुमसे उन्होंने कहा-"मैं ता तुम्हारे जैसं नीवजवानों की तलाश में हूँ. मुक्ते तो तुम्हारे न जैसे ही युवक चाहियें," श्री गोखले से मेरी जो बातें उस अवसर पर हुई उससे मेरे दिल में उनके लिये बेहद इज्जत

سی 1905 کا دیشی آندولی ارر میرا راجنیتک جیون

ينتت سندر لال

ملک کے سیساسی نقشہ میں العآباد کی ایک خاص جکہہ بن گئی . خودسی رام ہوس' مظارپور ہم درگھٹنا سے دو مہینے پہلے العآبان آئئے آن کے بعد راس بہاری ہوس' لروند باہو کے بھائی باریلدرکمار گھرھی' صونی امبا پرساد'بیکت سنگھ کے چنچا سردار اجیت سنگھ اور لاله هر دیال آدی نیتا باری باری سے العاباد آئے۔ کہت سبباؤں میں آنہوں نے هم لوگوں سے باتیں کیں کاریہ کرم بلایا اور چلے گئے ۔ هم لوگوں کی یہ گیت سببائیں چوک گنگا داس کے گئ نمبر کے مکان میں ہوا درتی تھیں ، یہ مکان مینے کرایہ پر لے لیا تھا ، اس زمانے کے چوک گنگاداس کے لڑکوں میں بڑی دیھی بہتھا دیتے کہ خفیہ ہواس کی وہاں وہ ایسا چوکس پہری ببتھا دیتے کہ خفیہ ہواس کی وہاں پرچہائیں تک نہ پہتک بانی .

الداواد کی یه کیفیت دیکه کر نرم دلی نیتاوں کی پریشانی بہت ہوہ تئی ، مااویہ جی لے سورگیہ گوالے کو نستران دے كو الدآباد بال . لا . يال - بل (لالع راجهت رائه وين جندر يال اور لوکمائیہ بال گنگا دھر للک کی تربی مورتی کو لوگ اِسی نام سے بکارتے تھے کے ویاکھیانوں کے اور کو وسے کاٹناچافتے تھے۔ کنتو کھلے میدان میں شرق گوکیلے کا ویاکھیاں کرانے کی هدت نہیں یری برانے کاستہ بائہ شالا کے حال می س شرق گوکیلے کی میتنگ هوئی . قربب دو سو آدسی ویائهدان سننے کے لئے موجود تھے . مهن به کترهاره اُس میتنک مین چلا کیا ، مهری طرف شارہ کر کے لوگوں نے شکایت کی که اِسی لڑکے نے الداباد میں أك سلكا ركهي هم ، كوكيل له منجم اليد باس ياليا أور مجهس اوعدة لها كه ميں دوسرے دن أن سے ضرور ملوں . درسرے دن قائلہ سجدانند سنہا کے بہاں گرکھلے جی کی دعرت تھی . وهیں میں بہنچ کیا . اِطلاع هونے پر شری کوایلے لے منجه مهدر بلوایا مجے دیکھتے عی سب نے ایک ساتھ میری شکائیتیں شروع د دیں ، مکر گرگیلے جی بہت پریم سے مجہسے ملے ، مجیسے أنهيں لے كها-"ميں تو تمهارے جيسے توجوانوں کی نقص میں میں مرب منجهے تو تبہارے جیسے هی پورک چاهای ، شری کوایلے سے میری حو باتیں اُس اوسر ہر عولیں اُس سے میرے دل میں اُن کے اللہ بےحد عزت

सियासी पद्धति के ऐसे ज़रूरी और लाजमी जुज बन गये थे कि जब 1857 की पहली आजादी को जंग छिड़ी तो डसमें आजाद फीजों ने सुरात बादशाह बहादुर शाह को ही अपना कोमी नेता बनाया, हालाँ कि सुरात बादशाह के पास न तो खजाना ही था और न कीज ही.

भाषा (ज्वान), साहित्य (श्रद्व), विज्ञान (साइंस), दर्शन (फ्लस फा), कला (श्राट, श्रीर धर्म सम्बन्धी बातों के श्राधार पर हमें यह मानना पढ़ेगा कि मुसलमानों श्रीर हिन्दुश्रों ने सिद्यों एक साथ रह कर एक मावना (जज्बा), एक से रहन सहन श्रीर एक सी मिली जुली तहजीव श्रीर कलचर को तरक़्की दी. एक से माली (श्रिथंक ढोंचे की बुनियाद पर उन्हों ने मिली-जुली शानदार हिन्दोस्तानी कलचर का महल खड़ा किया. चाहे मुगल बादशाह के मातहत लोगों को देखा जाय या किसी सूबे के नीम श्राजाद सूबेदार के मातहत रहने बालों को, ये लाग रीति-नीति में, सदाचार में, मज़हबी उस्तों में, सियासत श्रीर हुकूमत की बातों में, कला श्रीर श्रार्ट में तथा जिन्दगी के नुक्ते नजर में मरोठों, राजपूतों, सिक्खों श्रीर जाटों या दूसरे हिन्दोस्तानियों से जुता न थे.

ु पुराने जमाने का अगर हम ग़ैर जानिबदारी से अध्य-यन करें तो हम इसी नतीजे पर पहुँचते हैं कि मध्य युग में हिन्दू मुसलमानों के आपसी सम्बन्धों के इतिहास में ऐसी कोई बात हमें नहीं मिलती जिससे बटबारे से पहले के हिन्दोस्तान के फिरकेवाराना दगों श्रीर मगडे-फि साद की अड़ें हम उनमें खाज सकें. इसके बरिख लाफ उस जमाने की तारीख (इतिहास) से यह जाहिर होता है कि मध्य युग के मुसलमान शासक बिना भेदभाव के हुकूमत करते थे. बह हिन्दू श्रीर मुसलमानों दानों के साथ एक सा बरताव करते थे. हुकूमत के मामजों में, आटे श्रीर कलचर के मामलों में, अदब और शायरी के मामलों में वह कोई भेद भाव नहीं करते थे. वह हिन्दु श्रों का, हिन्दू मजहब का, हिन्दू रहन-सहन और आचार-विचारों का, हिन्दू दर्शन श्रीर श्रध्यात्म को बारीकी से देखते और सममते थे और चस पर अमल करने की काशिश करते थे. मुसलमान बादशाहों, मुलतानों श्रीर सूबेदारों के इस रवैये का देख-कर हिन्दोस्तान का आम मुसलमान भी हिन्दुस्तानियत की दावदार बन गया. वह हिन्दुस्तान का दम भरने लगा. मुस्रालम जनता ने हिन्दू रीति-रिवाजों को अपना लिया. दूसरी तरफ हिन्दुओं की प्राचीन और सच्ची बदीश्त या सहन शीलता और विभिन्नता में भी एकता खोज निकालने की जबरद्स्त ख्वाहिश ने माहब्बत से बढ़ाये हुए मुसलमा-नों क हाथ को उसी मोहब्बत के साथ क़ुबूल किया. इसका असर यह हुआ कि मुसलमानों ने अपना कलचर स ऐसी [बाक्रो सफा 271 पर]

سیاسی پدھٹی کے ایسے ضروری اور الزمی جوڑ بین گئے تھے که جب 7 18 نی بہلی آزادی کی جنگ چہڑی تو اس میں آزاد فرجوں نے منل بادشاہ یہادر شاہ کو ھی اپنا تومی نہا اور نہ بنایا حالانکہ منل بادشاہ کے پاس نہ تو خزانہ ھی تھا اور نہ فوج ھی ،

بھاٹھا (زبان)' ساھتیہ (ادب) ' وگیان (سائنس) ' درشن (ناسفہ) ' کالا (اُرت) ' اور دھرم سیندھی باتوں کے درشن (ناسفہ) ' کلا (اُرت) ' اور دھرم سیندھی باتوں کے اُدھار پر ھیس یہ ماننا پڑھکا کہ مسلمانیں اور ھندؤں نے صدین ایک ساتھ رہ رو اُرک ایک سے بھاؤنا (جذبه) ' ایک سے رہن سہن اور ایک سی ملی جلی تہذیب اور دلنچر کو ترقی دی ، ایک سے مالی (ارتهک) تعانیجے کی بنیاد پر اُنہوں نے ملی جلی شاندار ھنستانی کلچرکامحل کھڑاکھا، چاھمیل بادشاہ کےمانحت شاندار ھنستانی کلچرکامحل کھڑاکھا، چاھمیل بادشاہ کےمانحت لوگوں کو دیکھاجائے یا کسی صوبے کے نیم آزاد صو بیدار کے ماتحت رہنے والوں کو' یعلوگ ریتی ۔ نیتی' میں سدا چار میں' مذہبی اُمولوں میں' سیاست اور حکومت کی باتوں میں' کلا اور آرت میں نتیے اور جاتوں یا دوسرے ھندستانیوں سے جدا نہ تھے ،

برائے زمانے کا اگر مم غیر جانب داری سے انھیں کریں تو ھم سی نتیجے پر پہنچتے هیں که مدهد، یک میں هندو مسلمانوں کے آپسی سمبندھوں کے اتہاس میں ایسی کوئی بات ھمیں نہیں ملتی جس سے بٹوارے سے پہلے کے هدومتان کے فرف وارانه دنگه اور جهکرے نساد ہی جزیں هم أن میں تهوج سكين ! إس كے بردالف أس زمالة كى تاريخ (إنهاس) سے یہ ظامر ہودا ہے کہ مرہیم یک کے مسمان شاسک بنا بھید بھاؤ کے حکومت کرتے تھے۔ وہ هندو اور مسلمانوں دونوں کے ساتھ ایک سا ہرتاؤ کرتے نھے . حکوست کے معاملیں میں اُرف اور المجر کے معاملوں میں ادب اور شاعری کے معاملوں میں ولا كوثى بهيد بهاؤ نهين كرتے تھے ، ولا هندوں كو هندو مذهب کو مندو رهن مهن اور اچار ، وچارون دو هندو درشن اور ادھیاس کو بازیکی سے دیکھتے اور سمجیتے تھے اور اسی پر عمل كرنے كى دوشھى كرتے نهے، مسلمان بادشاھوں سلطانوں أور صوبهداروں کے اِس رویے کو دیکھ کر هندوستان کا عام مسلمان به منستانیت کا دعریدار بور کیا . وه مندستان کا دم بهرنے لگا. مسلم جنتا نے هندو ریت رواجوں کو اونا لیا . دوسری طرف هندوں کی براچین اور سچی برداشت یاسین شیلتا اور وبهنتا میں بھی ایکا کھوے نکاللے کی زبردست خواعش نے محبت سے بوعائد هونے مسلمانوں نے هانه کو اُسی محبت کے سانه قبول کیا ، اِس کا اثر یہ ہوا کہ مسلمانین نے اپنی کلچر سے ایسی [باتى منعه 271 ير]

में हमें सिफ कुछ शासकों की हुकूमत में थोड़ी बहुत कट्टरता या क्यावती की मिसलें मिलती हैं. और इन शासकों के बारे में भी यह साबित किया जा सकता है कि उनकी क्यावतियों की वजह कुछ और ही थी और उनका बार भी थोड़े से लोगों को ही सहना पड़ा.

कई घटनाओं से यह सावित होता है कि धार्मिक मत-भेद का ज्यादा असर नथा. मिसाल के तौर पर अगर मोहदों की ही बात ले ली जाय तो यह साफ है कि मुसल-मान बादशाहों के यहाँ हिन्दू ऊँचे से ऊँचे श्रोहदों पर मुक्रेर किये जाते थे. बग्रैर हिन्दुत्रों की सलाह के मुसल-मान हाकिम एक कदम भी न चलते थे. श्रीरंगजेब ऐसे बादशाह के बड़े से बड़े जनगल भी राजपूत राजा थे. मह-मूद राजनवी ने खुरासान जीतने के लिये अपने जिस जनरल को भेजा वह तिलक नाम का एक ब्राह्मण था. हम देखते हैं कि उस समय की आपसी लड़ाई में हिन्दुओं श्रीर मुसलमानों की श्रलग श्रलग मजहबी हैसियत से कभी लड़ाई नहीं हुई. मुसलमान सुलतानों के हिन्दू सेना-पित और हिन्दू राजाओं के मुसलमान सेनापित अपने ही मजहब बालों से लड़ते हुए नजर त्राते हैं. इतिहास में ऐसे हिन्दू श्रीर सुसलमानों के सैकड़ों किस्से भरे पड़े हैं जहाँ दोनों ने अपने मालिकों की तरफ वकादार रहकर अपने ही मजहब वालों के साथ भंयकर लड़ाई लड़ी. ऐसी भी मिसालें हैं कि जहाँ हिन्दुओं के साथ हिन्दुओं ने द्गाबाजी की है और मुसलमानों ने मुसलमानों के साथ. असली बात तो यह है कि उस समय जाती श्रहसानों का ही सबसे ं क्यादा असर पड़ता था, न कि कौम, मजहब या मुल्क का. पस जमाने की बकादारी की भावना (जजबा) सिर्फ दो शब्दों में जाहिर होती है-- 'नमक हलाल' और 'नमक हराम'.

यह भी याद रखना चाहिये कि हिन्दोस्तान के मुसल-मान हाकिमों ने, बाहे वह जहाँ से आये हों, दर अस्ल हिन्दोस्तान को ही अपना घर बना लिया था. बाबर फर-राना से आया और वह कभी कभी समरकन्द लौटने के मीठे सपने भी देखता था. लेकिन बाबर और उसकी श्रीलाद इसी मुल्क में रहीं. किसमत उन्हें यहाँ खांच लाई और हिन्दोस्तान के बाहर से सारे नाते-रिश्ते उन्होंने तोड़ लिये. उनके अपने बतन में उनके खानदान के अनिगनत दुश्मन थे जो मौक्ता पाते ही उनका सब कुछ छीन लेने पर उतारू थे. ऐसी हालत में उन्हों ने हिन्दोस्तान की जनता की जिन्दगी में अपने आपको मिला-खरा दिया. हिन्दुस्तान की जनता की जिन्दगी के साथ उन्होंने हमदर्शी दिखाई और उनके मुख दुख में सच्चे साथी बने. यह काई छाटा बात नहीं है. मुग्नल बादशाह हिन्दोस्तान की समाजी और فهر همیون صرف کنچه فاسکین کی حکومت میں تیوری بہت کارتا یا زیادتی کی مثالیں ملتی هیں . أور اِن شاسکوں کے بارے میں بھی یہ ڈیت کیا جا سکتا ہے کہ اُن کی زیادتیوں کی وجه کنچه اور هی تبی اور اُن کا وار بھی تبورے سے لوگوں کو عی سہنا پڑا .

كلَّى كَهْمْنَاوِن عديد دابت هودًا هے كه دهارمك مت بهيد کا زیادہ اثرنہ تھا ۔ مثال کے طور پر اگر عهدوں کی هی بات لے لی جائے تو یہ صاف ہے کہ مسلمان بادشاموں کے یہاں ھندو أونج سے اونجے عهدوں پر مقرر کاے جاتے تھے ، بنھر هندؤں کی صلح کے مسلمان حالم أیک قدم بھی له چلتہ تھے . اورنگزیب ایسے بادشاہ کے بڑے سے بڑے جذرل بھی راجورت راجا تھے. محمود غزنوی نے خراسان جیتنے کے نئے اپنے جس جنرل کو بهیجا و الک نام کا ایک براهمن تها ، هم دیمها هیں که اُس سے کی آیسی لوائی میں هندوں اور مساماتوں کی آنگ آنگ مذهبي حدثيث سے كبهي لوائي نهيں هوئي . مسلمان سلطانوں کے هندو سینایتی اور هندو راجاؤں کے مسلمان سینایتی اپنے هی من مب والوں سے اوتے عوالہ نظر آتے هیں . اِنهاس میں ایسے ملدو اور مسلمانوں نے سیکورں فصم بھرے یوے عیں جہاں دونوں نے اپنے مالکیں کی طرف وفادار رہ کر اپنے ھی مذھب والس کے ساتھ بھینکر توائی لڑی ، ایسی بھی مثالیں ھیں که جہاں مدوں کے ساتھ مندوں نے دغایاری کی ہے اور مسلمانیوں نے مسلمانوں کے سابھ ، اصلی بات تو یہ ہے کہ اُس سے ذانی احسائس کا هی سب سے زیادہ اثر پڑتا تھا' نہ کی قرم' مذهب يا ملك كا . أس وماني كي وماداري كي بهاؤنا (جذية) صرف دو شبدول میں ظاهر هوتی هے۔ انیک حال اور انیک حرام ،

به بهی یاد رکهنا چاهئے که هندستان کے مسلمان حاکبوں نے واقعے وہ جہاں سے آئے هوں ' دراصل هندسان کو هی اپنا گهر بنا لیا تھا ، باہر فرغانه سے آیا ارر وہ دیهی کیهی سوتند لوئنے کے میٹھے سیاء بھی دیکیٹا تھا ، لیکن باہر اور اس کی اولاد اِسی ملک میں رهیں ، قسمت اُنهیں یہاں گهنچ لائی اور هندستان کے باہر سے سارے ناتے رشتہ اُنهیں نے تور لئے ، اُن کے هندستان کے حاندان کے انگنت دشمن تھے جو موقع باتے هی اُن کا سب کچھ چھین لینے پر اُنارو تھے ، ایسی حالت یاتے هی اُن کا سب کچھ چھین لینے پر اُنارو تھے ، ایسی حالت میں اُنہیں نے هندستان کی جنتا کی زندگی کے سانھ اُنہیں نے معدردی دکھائی اور اُن کے سانھ دیو میں سیچے ساتھی بنے آب کو همدردی دکھائی اور اُن کے سانھ دیو میں سیچے ساتھی بنے ، یہ میدردی دکھائی اور اُن کے سان یادشاہ هندستان کی سماجی اور

रामायण के मशहूर लेखक गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है—

जित देखीं तित वोय। काँकर, पाथर,ठीकरी सब में देखूँ तोय'॥

अस्लाह कहाँ नहीं है ? वह हर जगह है और कहीं भी नहीं है! वही मूरत में है और वही पुजारी में भी है. वही इक्ष्म में भी है और वही इसलाम में भी है! वही हिन्दुओं में भी है और वही मुसलमानों में भी है! इनसान ने अपनी कम अक्ष्मली की वजह से दुई का परदा डाल रक्सा है इसीलिये वह अपने गुक्स में यह सममने लगा है कि अस्लाह यहाँ है और वहाँ नहीं है, वह इसलाम में है और इक्ष्म में नहीं है.

ऐसी बहुत सी मिसाले आसानी से दी जा सकती हैं कि हिन्दुस्तान में इसलाम ने हिन्दुओं की पूजा के तरीक़ों से बहुत सी बातें अपने अन्दर शामिल कर ली हैं. माला, प्राणायाम, योगाभ्यास, वेदान्त, फलसफ़ा—सब इसलाम में शामिल हो गये. हिन्दू मजहब और इसलाम के संगम को ही 'प्रे म धर्म' या 'मजहबे इश्क ' के नाम से पुकारा गया. यहाँ उसकी तकसील में जाने की जरूरत नहीं है. इतना ही कह देना काफी है कि बिना .खास कोशिश के ही यह दानों मजहब आसानी से एक दूसरे से मिल जुल गये. कबीर, नानक, दादू, चैतन्य, तुकाराम, शाह.कर्लंदर, बाबा .फरीद, चिश्ती और दूसरे सूफी सन्तों ने कामयाबी के साथ हिन्दास्तान की जनता में एक ऐसा धर्म फैला देने की कोशिश की जिसमें हिन्दू-मुसलमानों, दोनों की मजहबी .खुबियाँ शामिज थीं.

मध्य युग के धार्मिक साहित्य (श्रद्व) से, चाहे वह मुसलमानों का हो या हिन्दुचों का, पढ़ने वाला उसके श्राजादाना नुक्ते नजर श्रीर उदार दृष्टि से जरूर प्रभावित हो जावेगा . हिन्दुओं और मुसलमानों खेनों ने यह महसूस कर लिया था कि ऊपरी रीति रिवाजों, रुदियों और कर्म-कांडों और पूजा और परिस्तिश के बाहरी ढँगों में चाहे जो .फर्क हों, मजहबी जिन्दगी की भीतरी और बुनियादी सचाई दोनों में एक सी थी. इसीलिये मध्य युग के सूफी सन्तों ने हिन्दू धर्म और इसलाम के बाहरी तरीक़ों को श्रहमियत न देकर उनकी भीतर की सुन्दरता पर ही जोर दिया, यही वजह है कि उस जमाने के हिन्दू और मुसलमान दास्ती और माहब्बत के साँचे में ढल गये. दोनों के लिये एक ही मुल्क, एक ही राज, एक ही शहर, एक ही मोहल्ले, और श्रीर एक ही गली में मित्रता श्रीर शांति से रहना सुमिकन हो सका. दोनों मजहबी तास्युव को कम करने में कामयाव हुए, पूरे एक हुजार वर्ष के मुश्तरका (सम्मिलित) इतिहास

رامائی کے مشہور لیکھک گرسواسی تلسی داس جی نے لئے ہے :-

جت ديكهون تت توثيه كانكر والهور الهور الهور الهور الهور الهيكري سب مهن ديكهون توثيد.

الله كہاں نہيں ہے ؟ وہ هر جكہہ ہے اور كہيں يہى نہيں ہے ! وهى مورت ميں ہى ہے اور وهى پوجارى ميں بهى ہے ، وهى كنو ميں بهى هے اور وهى إسلام ميں بهى هے ! وهى هندؤں ميں بهى هے اور وهى مسلمانوں ميں بهى هے ! انسان نے اپنى كم عقلى كى وجه سے دوئى كا يوده قال وكها هے إسى اله وه اپنے غوور ميں يہ سمجھنے لكا هے كه الله يہاں هے اور وهاں نهيں هے، وه إسلام ميں هے اور كفر ميں نہيں هے .

ایسی بہت سی مثالیں آسانی سے دبی جا سکتی هیں که هندستان میں اِسلام نے هندوں کی چوجا کے طریقوں سے بہت سی ہاتیں اپنے اندر شامل کر لی هیں۔ مالا پرانا یام پوگا بھیاس ویدانت فلسفه—سب اِسلام میں شامل هو گئے۔ هندو مذهب اور اِسلام کے سنگم کو هی 'پریم دهرم' یا 'مذهب عشق' کے نام سے پکارا گیا . یہاں اُس کی تفصیل میں جائے کی ضرورت نہیں ہے . اِننا هی کہه دینا کافی ہے که بلا خاص کوشش کے هی یه دونہی مذهب آسانی سے ایک دوسرے سے مل جل کے هی یه دونہی مذهب آسانی سے ایک دوسرے سے مل جل کئے ۔ کبیر' نانک' دادر' چیتن' تکارام' شاہ تلند' 'بابا فرید' چیتن کامیابی کے ساتھ هندستان چشتی اور دوسرے صوفی سنتوں نے کامیابی کے ساتھ هندستان کی جنتا میں ایک ایسا دھرم پھیلا دینے کی کوشش کی جس میں هندو مسلمانوں' دونوں کی مذهبی خوبهاں شامل میں هندو مسلمانوں' دونوں کی مذهبی خوبهاں شامل

مدھیت یک کے دھارسک ساھتیہ (ادب) سے چاھے وہ مسلمانوں کا عمریا ھندوں کا پڑھنے والا اُس کے آزادانہ نقطے نظر اور ادار درشتی سے ضرور پربھاوت ھو جاوے گا ۔ ھندوں اور مسلمانوں دونوں نے یہ محسوس کر لیا تیا دہ اوپری ستری رواجوں' رزھیوں اور اور کرم کاندوں اور پوجا کے اور پرستھ کے باھری دھنکوں میں چاھے جو فرق ھوں' منھبی زئدگی کی بھیتری اور بنیادی سچائی دونوں میں ایک سی تھی ۔ کی بھیتری اور بنیادی سچائی دونوں میں ایک سی تھی ۔ کے باھری طریقوں کو اھیت نے دے در اُن کی بھیتر کی سندرتا پر ھی زور دیا ، یہی وجهہ ھے کہ اُس زمانے کے ھندو اور مسلمان پر ھی زور دیا ، یہی وجهہ ھے کہ اُس زمانے کے ھندو اور مسلمان یوستی اور محب کے ساندیے میں تعل گئے ، دونوں نے لئے ایک ھی ملک' ایک ھی راج' ایک ھی شہر' ایک ھی محلے اور ایک ھی کہ میں متونا اور شاستی سے رھنا ممکن ھو سکا ، دونوں منھبی تعصب کو کم کرنے میں کامیاب عوثے ، سکا ، دونوں منھبی تعصب کو کم کرنے میں کامیاب عوثے ، پورے ایک ھزار ورھی کے مشترکه (سمات) انہاس سکا ، دونوں منھبی تعصب کو کم کرنے میں کامیاب عوثے ،

डन्होंने .करीब-.करीब सभी मशहूर हिन्दू पंथों का .फारसी में तरजुमा कर डाला. डपनिषद, महाभारत, रामायन, भगवदगीता, धर्मशास्त्र, पुराण, योगबशिष्ट, योगसूत्र, वेदान्त-शास्त्र आदि सभी पंथों के .फारसी में तरजुमें किये गये.

इनके बाद के लेखकों में शेख बहमद .फारूकी (1563-1624 जोकि मुजाहिद-अलीफ-ए-सानी के समान ही मश-हूर है और मिर्चा जान जानान मजहर (1699) के नाम लिये जा सकते हैं. मजहर साहब ने हिन्दु शंका मूर्ति पृजा के बारे में लिखा है—

"मूर्ति पूजा—मुसलमान सूफियों की ध्यान और साधना यानी 'जिक ' के समान ही है. इसलाम के पहले अरब के बाशिन्दों के विश्वास से इस मूर्ति पूजा की कोई समानता नहीं है, अरब के बाशिन्दे सममते थे कि मूर्तियों ही में .खुद शक्ति और असर भरा हुआ है. वे महज्ज परमात्मा को पाने का जरिया मात्र नहीं हैं, जबकि हिन्दुस्तान के मूर्ति पूजक मूर्ति यों को अल्लाह तक पहुँचने का सिर्फ एक जरिया मानते हैं."

इतना ही न था. एक श्रोर मुसलमान श्रालिम श्रपनी छान-बीन श्रीर दलीलों के जिरिये हिन्दू श्रध्यातम श्रीर फलसफे का सममाने की काशिश करते थे ता दूसरी श्रीर उसे फलसके की श्रपनी जिन्द्गी में उतार कर उसका श्रभ्यास करते थे. 'गुलशने राज' के मशहूर लेखक महमूद शिवस्तारी (1317) ने बुतपरस्ती के बारे में लिखते हुये इसलाम से उसका मेल श्रीर उसकी बराबरी इस तरह सममाई है:—

"मूति इस दुनिया में मोहब्बत श्रीर एके की तस्त्रीर स्वींचकर रख देता है. जुन्नार या जनेऊ पहनने का क्या मतलब है ? जनेक परनन का मनलब यह है कि जनेक पहनने वाला तान तरह का खिद्मता (सेवा) का अहद लेता है-(1) अपने माँ बाप और खानदान की खिद्-मत (2) जनता की खिदमत और (3) अल्लाह की खिदमत, जनेऊ क तीन तागे इन्ही तीन तरह का से गश्रों का याइ दिलाते हैं. 'कुफ्' हो चाहे 'दीन' दानों का मकसद श्ररलाद तक पहुँचना है. मूर्ति पूजा कहती है कि ईश्वर एक है अगर मुसलमान यह समभ ले कि मृति क्या है ता वह यह भी समम जायगा कि मृति पूजा भी अल्लाह तक पहुँचन का जरिया है: और यदि मृति पूजक जान ले कि मृति क्या है तो वह ईश्वर के रास्ते से कभी न भटकेगा. मूर्ति के पुजारी ने मूर्वि को सिर्क बाहर से देखा इसीलिये वह 'काफर' हो गया और मुसलमान ने भी मूर्ति को छि.फ बाहर से देखा इसीलिये वह भी मृति के राज (रहस्य) को न समम सका और इन्साफ, की रू से अपने मजहब से इट गया.

الهبال في تربب قريب سبهو مشهور هدو گرنتهون كا قليسي محدد درجه كرنتهون كا قليسي محدد درجه درجه كرده كاله كرده درجه برك سهترا ويدانت شاشتر آجي سبهرا ويدانت شاشتر آجي سبهرا گردهون كردهون كردهون

ان کے بعد کے لیکھیں میں شیع احمد ناروتی (1624-1563) جو که متجادد الیف، ا۔ ثانی کے سمان هی مشہور فی اور مرزا جان جالی مظہر (1699) کے نام ناہ جا سکتے هیں ، مظہر صاحب نے هندؤں کی مورتی پوجا کے بارے میں لیا ہے :۔۔۔

"مورتی پوجا--مسلمان صوندوں کی دھان اور سادھنا یعنی فاکو" کے سمان ھی ہے ۔ اِسلام کے پہلے عرب کے باشندوں کے وشواس سے اِس مورتی بوجا کی کوئی سمانتا نہیں ہے ، عرب کے باشندے سمجھتے تھے کہ مور"دوں ھی میں خود شکتی اور اثر بھوا ھوا ہے ، وہ محتف پرمانما کو پانے کا ذریعہ ماتر نہیں ہے جبکہ ھادستان کے مورتی پوجک مورتیوں کو اللہ تک پہچنے کا صوب ایک ذریعہ ماتے ھیں ۔"

اتنا هی له تها ۔ ایک اور مسلمان عاام اپنی چهان بین اور دابیلوں کے ذریعہ هادو ادهیاتم اور داسفے کو سمجیلے کی کوشش کرتے تھے تو دوسری اور اس فلسفے کو اپنی زندگی میں افار کر اس کا ابیهاس کرتے تھے ۔ 'گلشن راز' کے مشہور لیکھا محصود شبستاری (1317) نے بحت پرستی کے بارے میں لکھتے ہوئے اسام سے اس کا میل اور اس کی برابری اِس طرح سمجھانی ہے :۔۔۔

"مورنی اِس دنیا میں محبت اور ایکے نی تصویر پہنچ کو رکھ دیتی ہے ، زنار یا جن و پہنلے کا کیا حطلب ہے ؟ جنیؤ پہنلے کا کیا حطلب ہے ؟ جنیؤ پہنلے کا مطلب یہ ہے کہ جناؤ پہنلے والا تین طرح کی خدمتوں (سیوا) کا عبد لیتا ہے۔ (1) اپنے ماں باپ اور خاندان کی خدمت ، جنیؤ خدمت (2) جنتا کی خدمت آورر 3) الله کی خدمت ، جنیؤ کو تین بائے اِنھیں تین طرح کی سهواؤں کی باد دائے عیں، "کمرا هو چاہے ادین دونوں کا مقصد آلمه تک پہلچنا ہے ، مردی پوچا کہتی ہے کہ ایشور ایک ہے ، اگر مسلمان یہ سمجھ لے که مورتی کیا ہے تو وہ یہ بھی سمجھ جائیگا که مورتی پوچا بھی الله تک پہلچنے کا ذریعہ ہے اور یدی مورتی پوچا بھی کہ مورتی کے بوجاری لے مورتی کو صرف باہر سے کبھی نہ بیٹکے گا ، مورتی کے بوجاری لے مورتی کو صرف باہر سے دیکھا اِس لُلُه وہ ایک اور مسلمان لے بھی مورتی کو صرف باہر سے دیکھا اِسی لُلُه وہ ایک اور مسلمان لے بھی مورتی کو صرف باہر سے دیکھا اِسی لُلُه وہ اپنے مادی کے زاز (رہسیہ) کو نہ سحجھ سکا دیکھا اِسی لُلُه وہ اپنے مذہب سے ہیٹ گیا ،

हिन्दुस्तान भीर इसलाम

डाक्टर सयद महमृद

इसलाम के दुश्मनों ने, जिनमें .सास तौर पर यूरोप के इतिहास लेखक हैं, इसलाम को बदनाम करने की भरसक कोशिश की है. उन्होंने इसलाम के ख़िलाफ हर तरह का मूठा प्रचार किया है, इस प्रचार का नती जा यह है कि ग्रैर मुसलिम दुंनया का .करीय-करीब इस बात का यकान हो गया है कि इसलाम कठमुल्लापन, तास्मुन, मारकाट श्रीर .कलेग्राम का प्रचार करने वाला मजहब है, हाँलाकि सचाई इसके विलक्कल खिलाफ है. यह सही है कि मौलवियों का एक तबका ऐसा था जो इसलाम को सबसे ऊँचा मजहब मानता था, लेकिन ऐसे मुमलमानों की भी कोई कमी न थी जो सब मजहबों में सचाई ढूदने की बराबर कोशिश करते रहते थे. ऐसे मुसलमानों की भी कभी न थी जो सब मजह-बों में बुनियादी सचाई केदरा न करते थे और चाहते थे कि सब मचह्य मिल जुल कर रहें. ऐसे भी बेशुमार मुसलमान फ्क़ीर श्रीर सूफ़ी थे जो अल्लाह के रास्ते पर सिफ़ सचाई का ही सहारा लेकर चलते थे. ये फ़क़ीर श्रीर सुकी कहते थे कि अलग अलग मजहब अल्लाह तक पहुँचने के महज अलग मलग रास्ते की तरह हैं जिनका मक्सद एक उसी अल्लाह तक पहुँचना है. ऐसे बहुत से मुसलमान दरवेश श्रीर उपा-सक ये जो बिना किसी भे द भाव के हिन्दु श्रों और मुसलमानों, अमीरों और रारीबों सबको परमात्मा के एक ही रास्ते पर. यानी नेकी और सचाई के रास्ते पर चलने का उपदेश देते थे.

यूरोप बालों ने नो बहुत बाद में आजादी के साथ मुख्न निल्फ कर कि मान कर कि विद्या जारी की और बहुत से आलम हुए हैं जिन्हान अपना किताबां में खालस अक्ष्ल को कसीटी मानकर रौर जानिबदारी (निष्ध्रता) के साथ मुख्तलिफ मजहबों के एक से बुनियादी उस्लों पर रोशनी डाली है. इनमें सबसे मशहूर बिद्धान और आलिम अबू रेहान अलबेसनी थे. उन्होंने ग्यारहवीं सदी म तफनील के साथ हिन्दू मजहब, हिन्दू फलसफे. और हिन्दू शास्त्रों पर लिखा है.

दन्दुर निक्म के ले समान में जिमे 'मध्ययुव' नहां जाता है, दिनदुशों क धार्मिक सादृश्य का पदने आर सम-सन कालये मुसलमान विद्वानों ने बड़ी मेहनत का है.

هندستان اور إسلام

قاكتر سهد محمود

اِسلام کے دشمنوں لے جن میں خاص طرر پر یورپ کے اِتهاس الهکهک هیں، اِسلام کو بدنام کوئے کی بهرسک کشش الی ہے ۔ اُنھوں نے اِسلم کے خلف مر طرح کا جھوٹا پرچار کیا زيب إس بات كأ يقين هو كيا ه ته إ الم كله ملابن تعصب مار كات أور قتل عام كا يرجار كرنے والا مذهب هے . حالانكه سجائي اس کے بالکل دالف ہے ، يه صحيم هے که مواويوں کا ایک طبقه ایسا نها جو اِسلم کو سب سے اُونچا مذهب مانتا ها' ليكن أيسم مسلمانوں كي بهي كوئي كمي نه تهي جو سب مذهبوں میں سچائی تھرندهم کی بوابر لوشش ارتے رهتے نھے . ایسے مسلمانوں کی بھی کمی نے تھی جو سب مذہبوں سیں بنیاسی سچائی کے درشن کرتے تھے اور چاھتے تھے که سب شعب مل جل کر رهیں . ایسے بھی بےشمار مسلمان فقدر آبر موفی نہے جو اللہ کے راستے ہو صوف سجائی کا هی سهارا لے کو چلتے تھے . یہ فقیر اور صوفی کہتے تھے که الگ الگ مذهب لله تک پہنچنے کے محض الگ انگ راستے کی طرح دیں جن كا مقصد أيك أسى الله تك يهندونا هي. أيس بهت ع سلمان دردیش او: اداسک تھے جو بنا کسی بھید بھاڑ کے بلدون أور مسلمانون اميرون أور غريبون سڀكو يرماتما كے ايك می راستے پر علمی نیکی اور سچائے کے راستے پر چلنے کا اُپدیس الله تهي

پورپ والوں نے تو بہت بعد میں آزادی کے ماتھ مختلف دعرموں کی چھاں ہیں فرنے کی ودیا جاری کی اور وہ یوں مرف اِنے گنے لوگوں نے ؛ لیکن مسلمانوں میں ایسے بہت سے عالم ہوئے ہیں جانوں نے اپنی کتابوں میں خالص عقل کو سوئی مان کو غیر جانبداری (نشهکشتا) کے ساتھ مختلف مذہبوں کے ایک سے بنیادی اصوابی پر روشنی تالی ہے ، اِن میں سب سے مشہور ودوان اور عالم ابوریحان البیرونی تھے ، ان انہوں نے گیارہویں صدی میں تفصیل کے ساتھ ہندو مذہب انہوں نے گیارہویں صدی میں تفصیل کے ساتھ ہندو مذہب عدر فلسنے اور ہندو شاستروں پر لکھا ہے .

هندختان کے منتجلے زمالے میں جسے 'مدھیدیگ' کہا جانا ہے' ھندوں کے معارمک سعتید دو پڑھدے ور سعجلے کےلئے مسلمان ودوانس لے بڑی متعنت کی ہے۔ लियं आज तक 'विश्व बाटिका' या बारो दुनिया' (Garden of the world) के नाम से मशहूर है. इतिहास लेखक सर विलियम स्थार के मुताबिक :--

'भैसोपोटामिया का यह कुल दोकाव सदा से करव बर्कों से ही काबाद रहा है और काल्डिया और दिक्कानी शाम दर करल करव के ही हिस्से हैं. इस प्रदेश में रहने वाले कवीले, जिनमें उस समय कुछ प्रचीन मूर्ति पूजक थे और अधिकतर कम से कम कहने के लिये ईसाई थे, श्रारव जाति के मजबूती से जुड़े हुये श्रंग थे और इस हैसियत से नए करव धमें यानी इसलाम के दायरे में शामिल थे." 88

अरब के ये दोनों प्रान्त शाम और इराक सदियों से पिन्द्रम की रोमी दुकूमत और पृरब की ईरानी शहनशाहि-यत के मातहत चले आते थे. इसी प्रदेश में इन दोनों विशाल बादशाहतों की सरहदें एक दूसरे से मिलती थीं. सन् 527 ई० के बाद से इन दोनों बादशहतों में पूरे सी बरस तक लगातार जंग होती रही जिनमें कभी ईरानी विजेता यूरोपीय महाद्वीप के अन्दर तक अपनी सस्तनत बढ़ा ले जाते थे और कभी रोमी सेना फिरात के किनारे तक आ पहुँचती थी. सरहृद के इन प्रदेशों की क्रिस्मत वार बार बद-लती रहती थी. ठीक इस समय पूरा शाम और इराक का इस्तर-पच्छिमी भाग रोम के मातहत या और बाक़ी इराक ईरान के अधीन जबकि दक्खिन के रेगिस्तानी अरब क्रवीलों ने मोहम्मद साहब ही के वक्त में अपना नाता मदीने की नई कौसी सरकार के साथ जोड़ लिया था शाम और इराक का जरखेज अरब इलाका विदेशियों के कृत्जे में था और वहां की अरब प्रजा गुलामी के दिन काट रही थी.

ऐसी सियासी कैंफियत में धरष की नई क़ौमी सरकार के नेताओं की विदेशियों की गुलामी में आहें भरते हुए इस धरब इलाके को गुलामी से छुड़ाकर मदीने के साथ मिलाने की खाहिश एक क़ुद्रती और जायज खाहिश थी. लेकिन इससे भी ज्यादा गहरे सबब थे जिन्होंने अबुबक और उस के सलाहकारों का इराक और शाम की राजनीति में दखल देने और ईरान कौर शाम की जबरदस्त और ताकतवर बाद-शाहतों से लोहा लेने पर मजबूर कर दिया.

बाकी अगले नम्बरों में 1

الے آے تک 'رشر بالیکا' یا 'باغ دنیا' Garden of the) کی نام سے مشہور ہے ۔ اِنہاس لیکٹ سرزلیم میور کے مطابق :—

"مهسو پوئامها کا یہ کل دو آب مدا سے عرب بدوں سے ھی آباد رھا ہے اور کالیڈیا اور دکھنی شام دراصل عرب کے ھی حصہ ھیں ، اِس پردیش میں رھنے والے تبدلے ' جن میں اُس سمہ پواچین' مورتی پوجک تھے اور انھکٹر کم سے کم کہنے کے اُنہ عیسائی تھے' عرب جاتی کے مضبوطی سے جرتے ہوئے انگ تھے اور اِس حیثیت سے ٹیے عرب دھرم یعنی اِسلم کے دائرے میں شامل تھے '' ﷺ

عرب کے یہ دوئرں پرانت شام اور اعراق صدیوں سے پنچھم ماروں وہ حکومت اور پورب کی ایرائی شہنشاھیت کے مائٹھمت چلے آتے تھے، اِسی پردیش میں اِن دونوں وشال مائٹھمت چلے آتے تھے، اِسی پردیش میں اِن دونوں وشال مائٹھمتوں کی سوحدیں ایک دوسرے سے ملتی تھیں، سن بورے سو بوس تک لگاتار جنگ مونی رھی جن میں کبھی ایرائی وچیا پورپی مہادیپ کے اندر تک اپنی سلطنت بڑھا لے جاتے ویرا کبھی رومی سینا فرات کے کنارے تک اُرپنچتی تھی، تھے اور کبھی رومی سینا فرات کے کنارے تک اُرپنچتی تھی، شوحد کے اِن پردیشوں کی قسمت بار بار بدلتی رھتی تھی، شوحد کے اِن پردیشوں کی قسمت بار بار بدلتی رھتی تھی، شوحت تھا اور باتی اعراق ایران کے ادھیں، جب که دنھی مائٹ روم کے ریکستائی عرب قبیلوں نے محمد صاحب ھی کے وقت میں اینا ناتا مدینے کی نئی قومی سرکار کے ساتھ جوڑ لیا تھا شام اور اعراق کا زرخیز عرب علاتہ ودیشیوں کے قبضے میں تھا اور وھاں اعراق کی عرب پرجا غلامی کے دن کات رھی تھی .

ایسی سیاسی کیفیت میں عرب کی نئی قومی سوکار کے نیکاؤں کی ودیشیوں کی فلامی میں آھیں بھرتے ھوئے اِس عرب علقے کو فلامی سے چھڑا کر مدینے کے ساتھ ملفے کی خواھش ایک قدرتی اور جائز خواہش تھی ۔ لیکن اِس سے بھی زیادہ گہرے سبب تھے جنہوں نے ابوبکر اور اس کے صلاحکاروں کو اعراق اور شام کی راج نیتی میں دخل ھینے اور ایران اور روم کی زبردست اور طاقترر بادشاھتوں سے لوھا بینے پر مجبور دردیا ۔

[باقى الله نسورس ميس]

फिर से धुशासन कायम किया. ग्रं अह कि बारह महीने के अन्दर राज भर में फिर से शान्ति, अमन और व्यवस्था कायम होगई. जिन बागियों ने सुद अधीनता स्वीकार कर ली अबुवक ने उनको माफ कर दिया.

[6]

श्रव हम श्रव के भूगोल (जुराराफिया) की श्रोर एक नजर डालना चाहते हैं. श्रगर श्ररव में वह सब इलाका शामिल किया जावे जो भौगोलिक लिहाज से साफ साफ श्चरब के जजीरे में शामिल है, जिसमें श्चरब जाति के लोग बसते हैं और जहाँ अरबी भाषा बोली जाती है, तो अभी तक अरब का एक बहुत बड़ा और जरखेज इलाका मदीने की क्रीमी सरकार से बाहर श्रीर विदेशियों के क्रब्जे में था. अगर हम अरब की भौगोलिक सरहर्दे मुक़र्रर करना चाहें तो ईरान की खाड़ी से लेकर हिन्द महासागर, लाल समुद्र, स्वीज नहर तक तीनों श्रोर का समुद्र तट, उसके बाद उत्तर में लेबेनान वर्वत में मिला हुआ रूम सागर का किनारा श्रीर ऊपर जाकर छोटी छोटी पहाड़ियों का वह सिलसिता जो एशिया कोचक से शाम की श्रलग करता है श्रीर दुजला श्रीर फिरात नाम की वड़ी निदयाँ जो इन पर्वतों से निकल कर एक दूसरे के बरावर बगावर वहती हुई, गंगा और जमुना की तरह एक दूसरे में मिलकर ईरान की खाड़ी में जा गिरती हैं. या दुजले से पूरव की वे पहाड़ियाँ जो आजकल इराक़-अरबी को इराक़-श्रजमी से अलग करती हैं, अरब की कुद्-रती भौगोलिक सरहदें हैं. इसके सिवाय अरब की कोई दसरी सरहदें मुक़र्रर की ही नहीं जा सकतीं. ईरान की खाड़ी के पच्छिम के प्रदेश बहरैन को बसरा के मैदान से अलग करना जबकि दोनों के बीच कोई भौगोजिक रेखा नहीं है श्रीर दोनों में सदियों से एक ही क़बीलों के लाग श्राबाद चले आते हैं. या शाम के रेगिस्तान को नज्द के रेगिस्तान से अलग सममना क़ुद्रती हद बन्दी के उसूलों के ख़िलाफ एक वेइन्साफी होगी.

द्जला और फिरात का दो आब 'मैसोपोटामिया' या 'इराक्क' के नाम से मशहूर हैं. पुराने इतिहास में इसी इलाक़े को सुमेर या वैबीलोनिया (बाबुल, कहा गया है. इस का अधिक दिक्सनी भाग 'काल्डिया' या 'अल्द कहलाता है. काल्डियाके उत्तर में बादुल और असुरिया के बहुत पुराने देश हैं. दजला और फिरात की नहरों का हजारों बरस पुराना सिल-सिला इस समय तक केवल अपने अवशेषों द्वारा संसार के निर्माण कला विशारदों को चिकत करता रहा है. उत्तर में शाम (सुरिया) संसार की सभ्यता का लगभग उतना ही प्राचीन और सतना ही मशहूर केन्द्र रह चुका है. काल्डिया का प्रदेशक पने दिल को लुभाने बाले नजारों और सरसङ्जी के

پھر سے سوشاسی قایمگیا، غرض یہ که بارہ مہینے کے اثدر رأے بھر میں پھر سے شائتی، اص اور ربوستیا قایم مو گئی ۔ جس باغیرن نے خود ادھینتا سویکار کو لی ابوبکر نے اُن کو معاف کو دیا ۔

[6]

اب هم عرب کے بھوگول (جغرافه) کی اور ایک فظر قالنا چاها، هيو . أكر عرب مين وه سب علاقه شامل كيا جارم جو بھوگیلک لحاظ سے ماف ماف عرب کے جزیرے میں شامل ھے کہس میں عرب جاتی کے لوگ ہستے ھیں اور جہاں عربی بهاشا بولی جالی هے تو آبھی تک عرب کا آیک بہت برا اور ورخیر علقه مدیلے کی قرمی سرکار سے باہر اور ودیشیوں کے قبضے میں تھا . اگر هم عرب کی بهوگراک سرحدیں مقرر کرنا چاهیں تو ایران کی کہاری سے لے کر هند مراساگر کل سمدر سویو نہر تک تینوں اور کا سمدر نت اس کے بعد اتر میں لبنان یروت سے ملا ہوا روم ساگر کا کنارہ اور آوپر جاکر چھوٹی چھوٹی مهازيون كا ولا ملسله جو أيشها كوچك سے شام كو ألگ كرتا ہے اور دجله اور فرات نام کی بڑی ندیاں جو اِن پروتوں سے نکل کر ایک دوسرے کے برابر برابر بہتی طوئی کنکا اور جمناکی طرح ایک دوسرے میں مل کر ایران کی کہاری میں جا گرتی هين يا دجلے سے پررب کي وے بهارياں جو آجکل اعراق عربی کو اعراق عظمی سے الگ کرتی هیں عرب کی قدرتی بھرگولک سرحدیں ھیں ۔ اِس کے سوائے عرب کی کوئی دوسری سرحدیں مقرر کی ھی نہیں جا سکتیں . ایران کی کھاڑی کے پنچھم کے پردیش بحرین کو بصرہ کے میدان سے الگ کرنا جب که دونوں کے بدیج کوئی بھوگولک ریکھا نہیں ھے اور دونوں میں صدیوں سے ایک ھی قبیلوں کے اوگ آباد چلے آتے میں' یا شام کے ریکستان کو نود نے ریکستان سے الگ سمجهنا قدرتی حدیندی کے اُصواس کے خاف ایک بے انصافی هو کی .

دجلت اور فرات کا دوآب کمیسو پرتامیا یا کوات کے نام سے مشہور پرانے انہاس میں اِسی علقے کو سرمیر یا بیبیلونیا (بابل) کہا گیا ہے۔ اسکا ادھک دکھنی بھاگ کالیڈیا یا خطک کہلتا ہے۔ کالیڈیا کے آنر میں بابل اور اسوریا کے بہت پرائے دیش میس ، دجلت اور فرات کی تہروں کا هزاروں برسی پرانا سلسله گس سے تک کیول اپنے اوشیشوں دوارا سلسار کے نرمان کلا وشاردوں کوچکت کرتا رہا ہے۔ اتر میں شام (سوریا) سلسار کی سبہنا کا لگ بیگ اتناهی پراچین اور اتنا هی مشہور کیلدر رہ چکا سیمنا کا پردیش آینے دار کو لبھائے والے نظاروں اور سرمیؤی کے

अरव खालिद की ओर मारे गए. बनी हनीफा के जिन लोगों ने बराबत में हिस्सा न लिया था बनका एक प्रतिनिधि मण्डल अबुबक से मिलने मदीने गया. अबुबक ने उनके साथ प्रेम और इज्जत का बर्ताव किया. इन अरबी ने भी अब अरब ख़लीफा की मातहती और इसलाम दोनों को कुबुल कर लिया. जिस तरह ख़ालिद ने उत्तर और मध्य अरब की बगावतों को शान्त किया उसी तरह दूसरी टोलियों ने दूसरे सेनापतियों के अधीन पूरब और दक्खिन के प्रान्तों में फिर से सुशासन क्रायम किया.

बहरैन प्रान्त के ईसाई सरदार मोजेर ने मोहम्मद साहब के समय में इसलाम कुबुल कर जिया था. मोजेर के उत्तरा-धिकारी ने अबुबक के खिलाफ बगाबत खड़ी कर दी और अपने को फिर से ईसाई जाहिर किया. बहरैन के मुसलमान रेजिडे एट अला ने उसे एक दिन शराब के नशे में चूर पाकर गिरफ्तार कर लिया और उस प्रान्त को अपने काबू में कर लिया. होजेफ के मातहत एक सैन्यदल ने उमान प्रान्त में फिर से सुशासन कायम किया.

तिहामा में कुछ वह डाकुश्रों ने मौका पाकर श्रपनी पुरानी श्राइत के मुताबिक काफिलों को लूटना शुरू कर दिया श्रीर थोड़े दिनों के लिये उस इलाक में राह चलना नामुमिकन कर दिया. इनके एक सरदार फुजाश्र ने ख़लीफा के पास श्राकर यह कहकर कि मैं श्रास पास के बारियों को शान्त करना चाहता हूँ. कुछ श्रस्त्र-शस्त्र हासिन कर लिये श्रीर फिर इन्हीं हथियारों की मदद से उस संकट के समय में तिजारती तथा दूसरे काफिलों की लूट मार जारी कर दी. श्रबुवक ने फुजाश्र को पकड़वा मंगाया श्रीर इस द्याबाजी की सजा में मदीने के क्रबरिस्तान के पास जिन्दा जलवा दिया.

श्राम तौर पर श्रबुबक अपने फैसलों में नरम दिल था श्रीर शरण में श्राये श्रुबु के साथ उदारता का वर्ताव करता था.† फुजाश्र की सजा की श्रार इशारा करते हुये श्रबुबक अपने श्रन्त के दिनों में श्रकसर कहा करता था—"यह काम मेरी जिन्दगी के उन तीन कामों में से हैं जिनकी बाबत में सोचा करता हूँ कि श्रगर मैंने ये न किये होते ता श्रच्छा था." लेकिन फुजाश्र की यह सजा दूसरों के लिये एक नसीहत हो गई. श्ररब की उस समय की हालत पर इसका हराबना श्रसर पड़ा.

यसन में अबुबक ने एक ईरानी सरदार फीरोज का हाकिस मुक्तरर करके भेजा. वहां के कुछ अरबों ने फीरोज के ख़िलाफ बग्नावत की लेकिन बग्नावत शान्त कर दी गई. इसी प्रकार मुहाजिर और अकरमा ने हज़मीत के सूबे में فرت خالد کی آورمارے گئے بئی حقیق کے جن لوگوں نے بفاوست میں حصنہ نے لیا تیا اُن کا ایک پرتیندہ مندل آبوبکر سے مللے مدیلے گیا ، آبوبکر لے اُن کے ساتھ پریم اور عوت کا برتاؤ قیا ، اُبوبکر لے اُن کے ساتھ پریم اور عوت کا برتاؤ قیا ، کو قبول کرنیا ، جس طرح خالد نے آتر اور مدھیہ عوب کی بفاوتوں کو شانت کیا اُسی طرح دوسری تولیوں نے دوسرے بفاوتوں کو شانت کیا اُسی طرح دوسری تولیوں نے دوسرے سینا پتیوں کے اُدھین پورو اور داہن کے پرائٹوں میں پیو سے سوشاسی قایم کیا ،

بحویں پرانت کے عیسائی سردار موزیر نے محمد صاحب کے سمے میں اسلم قبول کو لیا تھا ، موزیر کے افرادھیکاری نے ابوبکر کے خلاف بغاوت کوتی کر دی اور اپنے کو پہر سے عیسائی ظاہر کیا ، بحورین کے مسلمان ریڈیڈنیٹ اله نے آسے ایک دن شواب کے نشے میں چور پا کر گرفتار کولیا اور اُس پرانت کو اپنے قابو میں کر لیا ، هوزیف کے ماتحت ایک سینیہ دل نے عومان برانت میں پھر سے سوشاس قابم کیا ،

تحاما میں کچھ بدو ڈائوؤں نے موقع پاکر اپنی پرانی عادت کے مطابق ڈائوں کو ارقبا شروع کر دیا اور تھوڑے دنوں کے لئے اُس پرانت میں راہ چلنا ناممکن کر دیا ۔ اُن کے ایک سردار فوجاع نے خلیفہ کے پاس اَ کر یہ کہہ کر کہ میں اُس پاس کے باعورں کو شانت ارنا چاھتا ہوں کچھ استر شستر یاس کے باعور پھر اُنھیں ھتھیاروں کی صدد سے اُس سنکت کے سمے میں تجارتی تھا درسمے اُنھی فادلوں کی لوگ مار جاری کو دھی ۔ ابوبکو نے فوجاع کو پکڑوا منگایا اور اِس دغابازی کی سزا میں مدینے کے قبرستان کے باس زندہ جلوا

عام طور پر آبو بکر اپنے فیصلوں میں نوم دل تھا اور شرن میں آئے شترو کے ساتھ ادارتا کا برتاؤ کرتا نھا ۔ † نوجاع کے سؤا کی اور اِشارہ کرتے ہوئے ابوبکر اپنے انت کے دنوں میں اکثر کہا کرتا تھا۔ "نیه کام میری زندگی کے اُن تین کاموں میں سے کے جن کی بابت میں سوچتا ہوں که اگر میں نے یہ نے کئے ہوتے تو اچھا تھا ۔" لیکن نوجاع کی یہ سزا دوسووں کے لئے ایک نصیحت ہو گئی ۔ عرب کی اُس سے کی حالت پر اِس کا دراونا اگر پڑا ۔

یمن میں ابوبکر نے ایک ایرانی سردار فیروز کو ہاسک مقرر کر کے بینجا ، وہاں کے کھچے عربوں نے فیروز کے خلاف بغارت کی لیکن بغارت شافت کو دی گئی ، اِس پرکار محاجر اور اکرما نے حضرموت کےصوبہ میں

[†] Sir William Muir.

and the second of the second section and sections

इनकार कर दिया. सजाह अपनी सेना सहित यमामा स्वे की खोर बढ़ी.

यमामा का सूबा अरब के ठीक बीच में थोड़ा सा पूरव की धोर है. यहाँ पर बनी हनीका नाम का एक बड़ा ईसाई कचीला धाबाद था. इन लोगों ने मोहम्मद साहब के समय में मदीने की सरकार को अपनी सरकार मान लिया था. लेकिन धाब वे चालीस हजार की तादाद में अपने एक सर-दार मुसेलमा के अधीन बराबत पर आमादा थे. मुसेलमा इ. इ. पहले से पैराम्बरी का दावा कर रहा था धौर बनी हनीका के ज्यादातर लोग उसे अपना शासक मानते थे. मुमिकन है अनेक विश्वासी ईसाइयों के दिलों में इस समय यह ख्याल पैदा हो रहा हो कि अगर अरब के कदीम बुत परस्तों में एक महान पैराम्बर पैदा हा सकता है तो ईसाइयों में क्यों नहीं ?

सजाह अपनी सेना के साथ मुसैलमा से जाकर मिल गई. दोनों में बात चीत हुई श्रीर उनके दिल इस क़दर मिल गए कि यमामा के पैग्नम्बर ने इराक़ की पैग्नम्बरा के साथ शादी करली. यमामा सूबे की श्राधी मालगुजारी सजाह का सदा के लिए दहेज (मेहर) में देदी गई. चन्द राज के बाद ही श्रपनी ज्यादातर कीज मुसैलमा के सुपुद करके सजाह उत्तर की श्रोर श्ररब की सरहद का फिर से पार कर इराक़ लौट गई. इसके बाद उसकी काई खबर नहीं मिली. श्रलबत्ता इस बेइन्तजामी के वक्त में कुछ दिनों तक थाड़े से इराक़ी घुड़सवार उसके नाम पर यमामा श्रीर उसके श्रास पास थाड़ी बहुत मालगुजारी बसूल करते रहे.

अबुबक ने इकरीमा और शोरह बिल के मातहत एक फीजी दुकड़ी मुसैलमा का परास्त करने के लिये पहले ही से यमामा भेज दी थी. इस फीज ने मुसैलमा का विशाल सेना से बुरी तरह हार खाई. रामी साजिशों का सबसे ज्यादह असर इसी सेना पर था. इसी पर उन्होंने सबसे ज्यादृह धन हरबे-हथियार और अपनी क्राबालयत सर्क की थी. खालिद अब यमामा की आर बढ़ा. अकरवा नामक मुक्ताम पर दोनों श्रोर की सेनाओं में बड़ी घमासान लड़ाई हुई. दोनों श्रोर के सेनानियों ने खुब वीरता के जीहर दिखाए. आखीर में वाशियों को पीछे हटेना पड़ा. मुसैलमा अपने वचे हुए आदिमियों के साथ पीछे इटकर एक बाग्र में दाखिल हुआ और उसका दरवाजा भीतर से बन्द कर लिया. बारा के बाहर एक ऊंनी चहार दीवारी थी. खालिद की अरब सेना ने बारा को घेर लिया. दरवाजा खुला. मुसैलमा और उसके सब साथी मैदान में काम आए. यह बारा मुस लम इतिहास में "मौत के वारा" के नाम से मशहूर है. विजय खालिए की ओर रही, लेकिन अनेक जिल्ममों के अजावा 360 मुहाजिर, क्ररीब 300 अनसार और क्ररीब 500 दूसरे

انکار کر دیا . سعهاد آینی سینا سیت بماما صوبه کی آور بوهی .

یماما صوبة عرب کے ٹھھک بیچے میں ٹھوڑا سا پورب کی اور ہے ۔ یہاں پر بنی حنیفا نام کا ایک بڑا عیسائی قبیله آباد تھا ۔ ان لوگوں نے منحمد صاحب کے سمے میں مدیلے کی سرکار کو اپنی سرکار مان لیا تھا ۔ لیکن آب وے چالیس فزار کی تعداد میں اپنے ایک سردار وسیلما کے ادعین بغارت پر آمادہ تھے ۔ موسیلما کچھ پہلے سے پینمبری کا دعری کر رما تھا اور بای حلیفا کے زیادہ تر لوگ آسے اپنا شاسک مانتے تھے ۔ ممکن ہے اندیک وشواسی عیسائیوں کے دارں میں اس سمے یہ خیال پیدا ہو رہا ہو کہ اگر عرب کے قدیم پت پرستوں میں ایک مہان پینمبر پیدا ہوسکتا ہے تو عیسائھوں میں کھیں ایک مہان پینمبر پیدا ہوسکتا ہے تو عیسائھوں میں کھیں نہیں ہو

سجاۃ اپنی سینا کے سانہ مہسیلما سے جاکر -ل گئی . درنوں میں بات چیت ہوئی اور آن کے دل اِس قدر مل گئے که یماما کے دہنمبر نے اعراق کی دینمبرا کے سانہ شادی کرلی ، یماما صوبت کی آدھی مال گذاری سجاہ کو سدا کے لئے دھیز (مہر) میں دے دی گئی ، چند روز کے بعد هی اپنی زیادہ تر فوج موسیلما کے سپرد کو کے سجاۃ آتر کی اور عرب کی سرحد کو پھر سے ہار کر اعراق لوت گئی ، اِس کے بعد اُس کی کوئی خدر نہیں ملی ، البته باندناہ ہی کے وقت میں کچھ دنوں تک تھوڑے سے اعراقی گھوڑ سوار اُس کے نام پر یماما اور اُس دے اُس پاس تھوڑی بہت مال گذاری وصول کرتے رہے ،

ابوبکر نے اکویما اور شورہ بل کے ماتحت ایک فوجی گاتی موسالهما و پولست کرنے کے لئے بہلے دی سے بھدیم دی تھی . اس فہے نے مهسلیما کی وشال سینا سے بری طوح ہار کھائی ۔ رومی سارشین کا سب سے زیادہ اثر زسی سینا پر تھا . اِسی پر انہیں نے سب سے زیادہ دھر حربہ ہتیا اور اپنی فابلیت صرف کی تھی. خالد أب يماما تى أور بؤها . الربا نا-ك امقام در دونول ارر ای سیناؤں میں بڑی کیماسان لزائی هونی ، دونوں اور کے سینانیوں نے خرب ویرتا کے جوہر دایاتے ، آخور میں باغوں کو پیده هننا پرا، مرسیاما اینے بجے هوئے آدموں ساتھ بيجه هت كر ايك باغ مين داخل هوا اور أسركا دروازة بهيتر سے بند کرایا ، باغ کے باعر ایک اُرنچی چہاردیواری تھی ، خالد کی عرب سیلانے باغ کو گھیر لیا . دروازہ کھالہ موسیلا . اور أس كے سب ساتھى ميدان ميں كام أنه ، يه باغ مسلم انہاس میں "موت کے یاغ" کے نام سے مشہور ھے ، وجے خال کی اور رھی' لیکن آنیک زخمیوں کے علوہ 360 معاجر، قريب 300 انصار ارر تريب 500 دوسرم

الوائی میں قریش کی طرف سے لوکو ایک بار محمد صاحب کو پراست کیا تھا اور جس نے محمد صاحب کی موت سے تیہوں سے میں دفوں بہنے متاع کی لوائی میں روس سینا کے هاتیوں سے کیوئی هوئی جوت چیائی تھی ، خالد کو اِس سید سب سے بہلے مدینے سے آتر کی آور پنذسیوی کے ایک نئد دعویدار طولیہا کو زیر کرنے کے ایک نئد دعویدار طولیہا کو زیر کرنے کے ایک نئد دعویدار طولیہا

طولیہا بنی أسد نام کے باغی قبولے کا سردار تھا ، شام کی سرحد پر بلی گتمان نام کا ایک دوسرا برانا عیسائے قبیله تھا ۔ بغی گتفان کا ایک مردار آئینہ سات سو سیاهیوں کے ساتھ طواهها سے جا ملا ، بوزاخاں کی اوائی میں خالد نے دوتیں دفی قبیارں کی مشتر که ذہب نو شکست دسی ، طولیها نے اپنی بھوی سیدت ہواگ در شام میں روسی حکوست کی سرحد کے ندر یناہ لی اُئینہ گرفتار کر کے جنگ کے دوسرے تیدیوں کے ساتھ خلیفہ کے پاس سریٹے بھیج دیا گیا . خلیفہ نے آئینہ اور اس کے سب سانھیں کو معاف کردیا اور اُنھیں آزاد کورا دیا . طولیها کو بنی معاف کردیا کیا . أسم اطاع بهیم دی گئی ، اس کے دل پر اِس لا اثر عوا ، اُس نے فوراً شام سے عرب لوق کر اِسلام سو کار کر لیا اور اُس کے بعد آوران کے ساتھ عربوں کی الرائیوں میں اُس نے خوب ویرانا کے عالم داھائے ، بنی اس اور بنی گافان دونوں قبیلیں کے لوگوں نے ابوبکر کو محمد صاحب کا وارث اور ایلا حائم مان لیا . خاند نے اِس کے بعد ایک مهینم برزا خاں میں رہ کر آس یاس کے صوبین میں بھر سے امن او أمان تابم كيا . خااد له إنني جلدي فتم حامل كرني كي ایک خاص وجهه یه نهی که جب که طولیها اثینه اور آن کی تھرڑے سے ساتھی روسی شاسکوں کے ھانھوں میں کھیل رائے تھے زیادہ تر عرب مدینے کی نئی قرمی سرکار کو اُپنی سرکار سمجھتے تھے ، باغوں کی آور ابوبکر کی مہربانی نے بھی اِس سمه بوت بوا كم ديا .

خالد آب پوردب کی اور مترا ۔ اُسی اُور آیران کی کیاتی کے پاس بنی نسیم نام کا ایک بہت بترا عیسائی قبیلہ تھا جسکی انیک شاخص آنر فرات ندی نک پہلی ہوئی تھیں ۔ اِس فبیلے نی ایک شاخ کا نام بنی یودوا تھا ۔ بنی یوبوا کی ایک عیسائی بھری سجالا نے جو بہت دوں سے اوراق میں رعمتی تھی اِس سے خون پھمبری کا دعویائیا اور کئی عیسائی قبیلوں سے ایک بہت بتی سفیا لے کو مدینے اور کئی عیسائی قبیلوں سے ایک بہت بتی سفیا لے کو مدینے کو زیر فرلے کے لئے عرب کی سرحد میں داخل ہوئی ، سرحد کے لیے بربوا کے لوگوں نے سجالا کا ساتھ دیا ، لیکن لیکی قمیم کے زیادہ تر لوگوں نے سجالا کا ساتھ دیا ، لیکن بیٹی قمیم کے زیادہ تر لوگوں نے سجالا کا ساتھ دینے سے

खड़ाई में क़ुरैश की तरफ से लड़कर एक बार मोहम्मद् साहब को परास्त किया था और जिसने मोहम्मद् साहब की मौत से थोड़े ही दिनों पहले मुता की लड़ाई में रोमन सेना के हाथों से खोई हुई जीत छीनी थी, खालिद की इस समय सबसे पहले मदीने से उत्तर की ओर पैराम्बरी के एक नए दावेदार तोलैहा को जेर करने के लिये भे जा

तोलहा बनी असद नाम के बारी कबीले का सरदार था. शाम की सरहद पर बनी ग़तफान नाम का एक दसरा पुराना ईसाई क्बोला था. बनी ग़त.फान का एक सरदार खयेना सात सौ सिपाहियों के साथ तोलैहा से जा मिला. बोजाखाँ की लड़ाई में खालिद ने दोनों वारी कबीलों की मस्तरका .फीज को शिकस्त दी. तोलैंहा ने अपनी बीबी समेत भाग कर शाम में रोमी हुकूमत की सरहद के अन्दर पनाह ली, खयेना शिरक्तार करके जंग के दूसरे केंदियों . के साथ .खलीफा के पास मदीने भेज दिया गया-खलीका ने उपेना और उसके सब साथियों का माफ कर दिया और उन्हें आजाद करवा दिया. तोलैहा को भी माफ कर दिया गया. उसे इराला भे ज दी गई. उसके दिल पर इसका श्रसर हुआ. उसने .फौरन शाम से श्ररव लौटकर इसलाम कुबूल कर लिया और इसके बाद ईरान के साथ अरबों की लड़ाइयों में उसने खूब बीरता के हाथ दिखाए. बनी असद और बनी रातफान दोनों कबीलों के लोगों ने अबुबक को मोहम्मद साहब का वारिस और अपना हाकिम मान ितया. खालिद ने इसके बाद एक महीना बोजाखाँ में रहकर आस पास के सूबों में फिर से अमन और आमान .कायम किया. सालिद के इतनी जल्दी .फतह हासिल करने की एक स्तास वजह यह थी कि जबकि तालैहा, उयेना और उनके थोड़े से साथी रोमी शासकों के हाथों में खेल रहे थे. ज्या-दातर अरब मदीने की नई कौमी सरकार को अपनी सरकार सममते थे. बारियों की और अबुबक की मेहरबानी ने भी इस समय बहुत बड़ा काम दिया.

खालिव अब पूरव की ओर मुड़ा. इस ओर ईरान की खाड़ी के पास बनी तमीम नाम का एक बहुत बड़ा ईसाई कि बाद की पास बनी तमीम नाम का एक बहुत बड़ा ईसाई कि बात नदी तक फैली हुई थीं. इस कि की एक शाख का नाम बनी यरबाआ था. बनी यरबोआ की एक ईसाई औरत सजाह ने, जो बहुत दिनों से इराफ़ में रहती थी, इस समय ख़ुद पैराम्बरी का दावा किया, कई ईसाई कबीलों से एक बहुत बड़ी सेना लेकर, मदीने को जेर करने के लिये, बहु बरब की सरहद में दाख़िल हुई. सरहद के इस पार बनी यरबोआ के लोगों ने सजाह का साथ दिया. लेकिन बनी तमीम के दयादातर लोगों ने सजाह का साथ देने से

[5]

बोसामा की फीज शाम तक बढ़ी चली गई. रोमी सेना पीछे हट चुकी थी. बोसामा शाम की सरहद पर के कुछ सरकश ईसाई क़बीलों को सजायें देकर जुरमाने के धन और बारियों के जब्त ग्रुदा माल के साथ दो महीने के बाद मदीने लीट बाया. शहर की हिफाजत की फिक अब जाती रही. बाबुवक ने फिर थाड़ी सी सेना लेकर मदीने पर हमला करने वाले बारियों को, जो ख्दजा के मैदान में फिर से इकट्ठा हो रहे थे, बाख़री शिकस्त दी. इसके बाद बाबु-वक्र फिर कभी मदीने से बाहर जंग के लिये नहीं निकला.

अब सिफ मदीने से बाहर की बगावतों को ख्त्म करने का मसला बाकी था. अबुषक ने कुल बकादार अरब सरदारों को जमा किया और जितनी कौज जमा की जा सकी उसकी अलग अलग दुकड़ियाँ बनाकर उन्हें अलग अलग दिशाओं में रवाना कर दिया. इन सब बगावतों को शान्त करके अरब को फिर से एक राष्ट्रीय शासन के अधीन लाने में अबु-क को पूरा एक साल लग गया.इन कौजी दलों में ओ खालिद इन्न बलीद के मातहत मेजा गया उसने बगावत का दबाने में बहुत तारीफ के काविल काम किया. खालिद के चित्रत्र को बयान करते हुए इतिहास लेखक सर विलियम न्योर लिखता है —

"इसमें कोई शुबहा नहीं कि इसलाम के शुरू के दिनों में अबुषक और उमर के बाद सबसे अधिक महान व्यक्ति बलीद का बेटा खालिद था. इस बात का सेहरा सबसे अधिक उसी के सर बाँधना चाहिये कि इसलाम ने इतनी जल्दी अपनी हालत को फिर से मजबूत कर लिया और इसके बाद वह इतना अधिक तेजी के साथ फैलता चला गया. खालिद एक जाँबाज सिपाही था. उसकी बहादुरी जल्दबाजी की हद को पहुँची हुई थी, लेकिन बहादुरी के साथ साथ उसमें ठएडे दिल से और तुरन्त फैसले तक पहुँचने की भी काबलियत थी.

'जिन जंग के मैदानों में ईरान की बादशाहत और शाम की रोमी शहनशाहियत दोनों की किसमत का फ्रेसला हो गया उनमें खालिद ने जो अमली होशियारी दिखलाई उसके सबब उसे दुनिया के बढ़े से बढ़े सिपहसालारों में गिना जाता है, बार बार लेकिन हमेशा अजीबो रारीब होशियारी और जाँबाजी के साथ उसने ऐसी मुसीबतों के बक्त पांसा फेंक दिया जिनमें अगर वह हार जाता तो उसकी हार का मतलब इसलाम का खारमा हाता."

स्नालिद की रौर मामूली बहादुरी केसवब इसलाम के इति-हास में उसे 'सैफ-अल्लाह यानी 'अल्लाह की तलवार' के नाम से पुकारा जाता है. यह वही ,स्नालिद था जिसने सोहद की أوساما كى فوج شام تك بوهى چلى گئى . رومى سيئا يهدي همك چكى تهى ، أوساما شام كى سرحد پر كے كچه سركس عيسائى قبياوں كو سؤائيں ديم كر جرمانے كے دهن أور بافيوں كے ضبط شدة مال كے ساته دومهينے كے بعد مدينے لوگ أيا . شهر كى حفاظت كى فكر أب جانى رهى . أبوبكر نے يهر تهورى سى سيئا لے كر مدينے پر حمله كرنے والے بافيوں كو جوخدوا كے ميدان ميں پهر سے انتها هورهے تهے؛ آخرى شكست دى . إس كے بعد أبوبكر پهر كبهى مدينے سے باهر جنگ كے ايائے نہيں نكالا .

اب صرف مدینے سے یاھر کی بغاوتوں کو ختم کرنے کا مسئلہ باقی تھا ، ابوبکر نے کل وفادار عرب سرداروں کو جمع کیا اور جتنی فرج جمع کی جاسکی اُس نی الگ انگ ٹکڑیاں بنا کر اُنہیں الگ انگ دشاؤں میں روانہ کردیا ، اِن سب بغاوتوں کو شافت کو کے عرب کو پھر سے ایک رائٹریہ شاسی کے ادھیں لانے منوں اُبوبکر کو پورا ایک سال لگ گیا ، اِن فوجی داہی میں جو خالد ابن ولید کے ماتحت بھیجا گیا اُس نے بغاوت کو بھان کر دیائے میں بہت تعریف کے قابل کام نیا ، خالد کے چرتر کو بھان ٹرتے ھوئے آنہاس ایکھک سروام میور لعبتا ھے۔

' اِس میں کوئی شبہ نہیں کہ اِسلام کے شروع کے دنوں میں ابوبگر اور عمر کے بعد سب سے ادھک مہاں ویکئی ولید کا بیٹا خالد تھا اِس بات کا سہرا سب سے ادھک اُسی کے سر بائد منا چاھئے کہ اِسلام نے اِنٹی جلدی اُرنی حالت کو پہر سے مضبوط کولیا اور اِس کے بعد وہ اِنٹی ادھک تیزی کے ساتھ پھیلنا چلا گیا ۔ خالد ایک جانبلز سہاھی تھا اُس کی بہادری جادبازی کی حد کو پہنچی ھوئی تھی' لیکن بہادری کے ساتھ ساتھ اُس میں تُبندے دل سے اور تونت نہیں کیسے تک پہچنے کی بھی تابیت تھی ،

ورجی جنگ کے میدانوں میں ایران کی بادشاہت اور شام کی رومی شہلشاہیت دونوں کی دسب کا فیصلہ ہوگیا انہیں خالد نے جو عملی ہوشیاری دکھانی اس کے سبب آے دنیا کے بڑے سے بڑے سہ سالروں میں گنا جاتا ہے ، بار بار لیکن ہمیشہ عجیب و خریب ہوشیاری اور جانبازی کے ساتے اسی مصیبتوں کے وقت پانسہ پھینک دیا جی میں اگر وہ ہار جانا تو لیس کی ہار کا مطلب اسلم کا خاتمہ ہوتا ۔ "

خالف کی غیر معمولی بیادری کے سبب اِسلام کے اِتہاس میں آسے؛ اُسیف اللہ یعنی الله کی دلوار کے نام سے پکارا جاتا ہے وہ وہی خالد تھا جس نے اُحد کی

भरव की कल्बर, सञ्जता और इसलाम

चाबुवक ने धीरज के साथ उसर की जवाब दिया-

"यदि शहर के चारों तरफ .खूंख्वार भेकियों के मुग्ड के मुग्ड फिर रहे हों और मैं शहर के अन्दर अकेला रह गया हूँ तब भी सेना जायगी. मेरे मालिक (माहम्मद साहब) के मुँह से निकला हुआ एक लक्ष्य भी खाली नहीं जा सकता."

सुमिकन है दूरन्देश अबुबक की निगाहें इस समय इस बात की खार भी रही हों कि इन तमाम बगावतों का असती सरवश्मा कहाँ है. सेना गई. खबुबक कुछ दूर तक पैदल खोसामा के साथ साथ गया. बिदाई के वक्षत अबुबक ने खोसामा को इन लफ्जों में झादेश दिया—

"देखना बेबफाई से खबरदार रहना, खदल और इन्साफ़ (न्याय) के रास्ते से खर्रा भर भी इधर उधर न होना. किसी को खंग-भंग की सजा न देना. निकसी बालक, या बूढ़े या धौरत को क़ल करना. खजूर के दरखतों का आग न लगाना न उन्हें किसी तरह का नुक़सान पहुँ वाना, न किसी ऐसे दरख़ त को काटना जिससे आदिमयों या जानवरों को खाना मिलता हा. सिवाय जोवन निर्वाह की जहरत के किसी पशु-पश्ची या ऊँट को न मारना. उस मुल्क के लोग जो खाना तुम्हारे खाने के लिये अपने बतनों में लाएँ उसे अल्लाह का नाम लेकर खा लेना. सिर मुँ डाए साधू अगर तुम्हारी मुखालफ़त न करें तो उन्हें किसी तरह की तक़लीफ न पहुँ बाना अब अल्लाह के नाम पर आगे बढ़ो. अल्लाह तलवारों और बबाओं से तुम्हारी हिक़ाजत करें!"

श्रोसामा के जाने के बाद श्ररव की जो हालत हुई उसे एक लेखक ने इन लक्ष्यों में बयान किया है—

"श्रदब में चारों श्रोर बग्नावत होने लगी. लोग इसलाम झांड़ने लगे. नई क्रीमी सरकार के खिलाफ ईसाई श्रीर यहूदी गरदन दभारने लगे. विश्वासी मुसलमानों की हालत ऐसी हा गई जैसे बिना गड़िएये की भेड़ें! उनका रसूल जा चुका था, उनकी तादाद घट रही थी श्रीर उनके दुश्मन बढ़ रहे थे."

मौका पाकर कुछ बागियों ने फ़ौरन मदीने पर चढ़ाई कर दी. मुख्य सेना श्रांसामा के साथ रवाना हो चुकी थी, अबुशक ने हर बालिग्र आदमी को हथियारबन्द हाने और शहर की हिफ़ाजत करने के लिये सबको जमा हाने का हुक्म दिया. खुद फ़ौज की कमान्दारी की. लड़ाई हुई. बागी परास्त होकर तितर-बितर हो गए. इस छोटी सी जीत का आम अरबों के दिलों पर बहुत अच्छा असर पड़ा. नतीजा यह हुआ कि आस पास के कबीलों से खिराज मदीने आने खगा.

مرب کی کیور سیعا اور اعد

TO THE TANK OF THE PARTY OF THE

ابوبکر لے دھیرے کے ساتھ عمر کو جواب دیا۔

الاس شہر کے جاری طرف خونخوار بھنویوں کے جہات اس بھی سیٹا جائیگی ، میرے مالک (محمد صاحب) کے منہ سے نکا ہوا ایک اخط بھی خالی نہیں جاسکتا ۔''

منکن ہے دور اندیش ابوبکر کی نگامین اِس سنگ اِس بات اِس کی اُور بھی رھی بھوں کہ اِن تمام بناوتوں کا اصلی سرچشمہ کہاں ہے ۔ سیفا کئی ابوبکر کچھ دورتک پیدل اُوساما کے ساتھ ساتھ گیا ، بدائی کے وقت ابوبکر نے اُوساما کو اِن اخطوں میں اُدیش دیا۔۔

الدیکهال پرونائی سے خبردار رهنا عدل اور اِنصاف (نیائم) کے راستہ سے زرہ یور بھی ادھر اُدھر نہ دونا ، کسی کو انگ بھنگ کی سزا نہ دیفا ، نہ کسی بالک یابورہ یاءروت کو قتل کرنا ، کسی سزا نہ دیفا ، نہ کسی بالک نہ لگانا نہ اُنہیں کسی طرح کا فقصان پہنچانا ، نہ کسی یسے درخت کو کائنا جس سے آدمیوں نے جانوروں فولهالا ملکا ھو، سوائے جھوں نرواہ کی ضرورت کے کسی یہو پہنی یا اُونٹ کو نہ مارنا ، اُس ملک کے لوگ جو کھانا تمهارے کیائے کے لئیے اپنے بوتنوں میں لانیں اُسے اللہ کا نام الم کو کھالینا ، سر ماتیائے سادھو اگر تمهاری متعالفت نہ کویں تو اُنہیں کسی طرح کی تعایف نہ پہنچانا ، اب ااء کے نام پر آگے بوجو ، اللہ ناواروں اور وہاؤں سے تمهاری حفاظت کو کے اُنہیں گو کہاری حفاظت کو کہا

. اوسلما کے جالے کے بعد عرب کی جو حالت ہوئی آسے ایک ایکھک نے اِن اعظوں میں بیان کیا ہے۔

عرب میں چاروں أور بغارت هوئے آکی، لوگ أسالم چھوڑنے لکے،
نئی قوسی سرکار کے خالف عیسائی اور یہودی گردین ابھارئے لکے،
وشواسی مسلمانوں کی حالت ایسی هوگئی جیسے بنا گذریے
کی بھھڑیں 1 اُن کا رسول جاچکا تھا' اُن کی تعداد گھٹ

موقع پاکر کچھ باغیوں نے نوراً مدینے پر چوھائی کردی۔ منہید سینا اوساما کے ساتھ روائد ھو چکی تھی ۔ ابوبکر نے عر بالغ آدمی کو ھتھار بند ھولے اور شہر کی حفاظت کے کرنے لئے سب کو جمع ھولے کا حکم دیا ۔ خود نیے کی کمانداری نی ، نوائی ھوئی ، بافی پراست ھوکو تتر باتر ہوگئے، اِس چھوٹی سی جیمت کا عام عربوں کے داہر پر بہت اچھا اثر پرا ، دتیجہ یہ ھوا کہ آس ، عربوں کے قبیلوں سے خراج مدینے آنے لگا ،

The Caliphate, its Rise, Decline and Fall, by William Muir, pp. 10-11.

अरब की कल्चर, सभ्यता और इसलाम

विश्वन्भरताथ पांडे

[4]

बर्गाबत की पहली खबर उत्तर में शाम की सरहद पर के उन सूबों से आई जो मोहन्मद साहब के समय में भी रोमी साजिशों का मरक्रज (केन्द्र) रह चुके थे. धीरे धीरे दूसरे अनेक सूबों से भी इसी तरह की खबरें मदीने पहुँचने लगीं. लेकिन ये सब बतावतें उत्तर, पृव और दक्खिन के सिर्फ उन प्रान्तों में हुई जो रोम या ईरान दोनों में से किसी के मातहत रह चुके थैं. इन बग़ावतों में हिस्सा लेने बाले सिर्फ या तो कुछ ईसाई अरब क़बीले थे और या वह क्रबीके थे जो हाल में ईसाई से मुसलमान हुये थे क़दरती तौर पर इन्हीं में रोमी लोगों की साजिशे सबसे र्पयादह कामयाब ही सकती थीं. रोम और ईरान की सरहद से ही यह सब बसाबत शुरू हुई'. इन बगावतों का सबसे बड़ा केन्द्र घरब की सरहद से भी दूर इराक के उत्तर में था जहाँ से सजाह नाम की एक ईसाई स्त्री ने निकलकर अरब पर धावा किया और मोहन्मद साहब के बाद खुद पैग्रम्बर होने का दावा किया.

एक बार मालूम होता था कि 23 बरस की सारी कोशिशे बेकार गई.

षोसामा के कूच से पहले ही उस जमाने के दूसरे सब से बड़े धरव नी।तज्ञ उमर ने आकर अबुबक को इन बगा-बतों की अफुबाहों की खबर दी. उसने इत्तला दी कि कई छार से मदीने पर इमले की तच्यारियाँ हो रही हैं और यह सलाइ दी कि सेना को शाम जाने से रोककर मदीने की हिफाजत के लिये रखा जाए.

अबुषक के नाजुक और अनभ्यस्त कन्थों पर इस समय बड़ी गहरी जिम्मेवारी थी. केवल उसकी सच्चाई, उसके बीरज, उसके साहस, उसकी व्यावहारिक बुद्धि और इन सब से बढ़कर एक अस्लाह और उसके रसूल मोहम्मद पर उस की गहरी अद्धा ने इस संकट के समय उसका साथ दिया. इसलाम और अबुषक की .खुशिकिस्मती से मदीना, मक्का आर तायक जैसे खास-खास अरव शहरों और बीच के बह सब अरब क्षवीले जा सियासी नुक्तते नजर से क्रमी दूसरों के मातहत न हुवे थे अपने ईमान और नई क्रीमी सरकार की ओर अपनी वकादारी में पक्के रहे.

عرب کی کلچر 'سبهیتا اور اِسلام

وشرميهر ثاته بالتس

[4]

بغاوت کی چہلی خور اتر میں شام کی سرحد پر ان صوبوں سے آئی جو محصد صاحب کے سے میں بھی روسی ساز شوں کا موکز (ئیلنر) رہ چگے تھے . دھیرے دھیرے دوسرے آئیک صوبوں سے بھی اِسی طرح کی خبریں مدینے پہنچھلےلگیں . لیکن یہ سب بغاوتیں آئو ' پورو اور دکھی کے صرف اُن پرائٹوں میں ھوئیں جو روم یا ایران دونوں میں سے کسی کے ماتحت رہ چکے تھے . اِن بغاوتیں میں حصہ لیلے والے صرف یا تو کچھ عیسائی عرب قبیلے تھے یا وہ قبیلے تھے جو حال میں عیسائی سے مسلما ، ھوئے تھے . قدرتی طور پر انہیں میں رومی لوگوں کی سازشیں سب سے زیادہ کامیاب انہیں میں رومی لوگوں کی سازشیں سب سے زیادہ کامیاب بغاوتیں شروع ھوئیں . اِن بغاوتیں کا سب سے بڑا کیندر عرب بغاوتیں شروع ھوئیں . اِن بغاوتیں کا سب سے بڑا کیندر عرب نام کی ایک عیسائی استوں نے نکل کر عرب پر دھاوا کیا اور نام کی ایک عیسائی استوں نے نکل کر عرب پر دھاوا کیا اور نام کی ایک عیسائی استوں نے نکل کر عرب پر دھاوا کیا اور

ایک بار معلوم ہوتا تھا ہے 23 برس کی ساری کوششیں ہے گار گئیں ۔

اوساما کے کوچ سے پہلے ھی اُس زمانے کے دوسرے سب سے بڑے عرب فیکلیہ عمر نے آکر آبوبکر کو اِن بغاوتوں کی آفواھوں کی خبردی ۔ اُس نے اطلاع دی که کئی آور سے مدینے پر حملے کی تیاریاں ھورھی ھیں آور یہ صلاح دی که سینا کو شام جانے سے روگ کر مدینے کی حفاظت کے لئے رکھاجائے ۔

ابوبکر کے نازک اور ان ابھیست کندھوں پر اِس سمیہ بڑی کہری زمعواری تھی ۔ کھول اُس کی سچائی ' اُس کے دھورج ' اُس کے ساھس' اُس کی ویاوھارک بدھی اور اُن سب سے بڑی کے ایک الله اور اُس کے رسول محصد پر اُس کی گہری شردھا نے اِس سنکٹ کے سپیے اُس کا ساتھ دیا ۔ اِسلم اور ابوبکر نیخوس قسمی سے مدینت ' مکاور طایف جیسے خاصحاص عرب شہووں اور بیچ کے وہ سب عرب نبیلے جو سیاسی شطه نظو سے کیھی دوسروں کے ماتحت نہ ھونے تھے اپنے ایمان بر نئی قومی سرکار کی اُور ایکی وفاتاری میں یکے رہے ۔

श्री समादत 'नजीर' एम.ए.

कई इन्क्रलाब1 देखे. सने कितने ही फसाने2! मुमे क्या फरेब 3 देंगे तेरे बादे या बहाने! मेरे तजरबां ने आखिर किया राज आशकारा4. कि हैं जालसाजियों 5 के यह तमाम कारखाने. न वह बलबजे6 हैं बाक्री, न बुलन्द हीसले7 हैं, उन्हें आखें ढूँदती हैं, जो गुजर गये जमाने, मेरी कमनसीवियों ने मेरी आस8 को न तोड़ा. मेरी जिन्दगी ने दुकरा दिये मर्ग9 के बहाने. कहीं अन्न10 बन के बरसे, कहीं मिस्त राव्11गरजे, बने इन्क्लाब आवर12 मेरे इश्क्13 के तराने. में मिटा के चैन लूँगा तेरे नाद्री चलन को, में लुटा ही के रहुँगा तरे जौर14 के खजाने. मुके ! वर्क 15 देखना है !तू जलाएगी कहाँ तक? में नये-नये बनाता ही रहुँगा धाशियाने16. मेरी कोशिशें यही हैं कि बहार ऐशी आये. कि जबाँ से बुलबुलों की सुने गुल17 नये तराने. मेरा इरक एक मोश्रम्मा.18 मेरीजीस्त19 एक बाकदा20. जो है जीशकर 21 सममे, जो है दर्दमन्द, जाने तेरी बल्म22 में पलट कर मैं अब आऊँ या न आऊँ, न भुला सकेगी दुनिया मेरे वर्द के फसाने यह 'नजीर' ! रंज23 कैसा १ वही फिर बना ले माला ! कि फ़क़त समेटना हैं, जो बिखर गये हैं दाने.

1. क्रान्ति 2. कहानी 3. घोखा 4. भेद का खुल जाना 5. घोखेबाजियाँ 6. जोशा 7. इरादे 8. जम्-मोद 9. मृत्यु 10. बादल 11. बिजली 12. क्रान्ति लानेबाले 13. प्रेम 14. घत्याचार 15. बिजली 16. घोंसले, घर 17. फूल 18. समस्या 19. जीवन 20. भेद 21. बुढिमान 22. सभा 23. दुख.

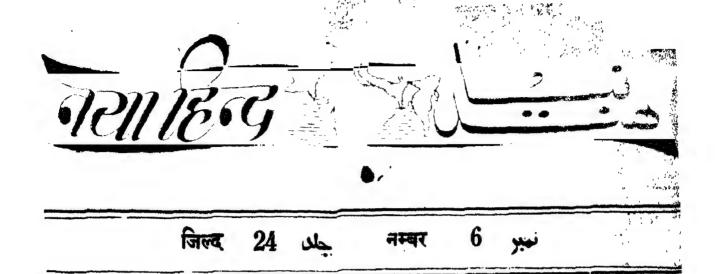
شرى سعادت انظيرا أيم. أ. .

كثي أنقلاب 1 ريمي سن كتن هي نساني 12 مجهے کیا فریب 3 دیلاء ترے وعدے یا بہالے! میرے تجربیں نے آخر کیا راز آشکارا4' که هیں جعل سازیوں 5 کے یہ تمام کارخانے. نه وه ولهلے 6 عين باقي نه بلند حوصلے7 عين أنهين أنهين دَّءوندَهتي هين جو گزر گئے زمالے . مهری کم نصیبهوں نے میری اُس 8 کو نہ توراً مهری زندگی نے ٹھارا دیٹے سرک 9 کے بھانے ، کہیں ابر 10 بن کےبر سے 'نہیں مثل رعد 11 گرچے' بنے انقلاب آرر 12 میرے عشق 13 کے ارائے. میں مل کے چین لونگا ترے شادری چلن کو میں لٹا ھی کے رھرنگا ترے جور 14 کے خزالے . معهد برق إ 15 ديمينا هـ إ تو جالانكيكهان تك. ٩ مين نئے نئے بنانا هي رهون کا آشيائے 16. مهری کوششیں یہی هیں که بہار ایسی آئے' که زبان سے بلبلوں کی سنین گل 17 نئے ترائے . مراعشق اك معمد 18 ميرى زيست 19 ايك عقد 20 ا جو ف ذي شعرر 21 سعجه ، جوه درد مند جالي . تهرمي بزم22 ميں يلتكر ميں اب أوں يا نت أوں " نت بیلا سکے کی دنیا میرے درد کے قسالے ، يه انظيرا إرنبج 23 كيسا ؟ رهي پهر بنالے مالا إ كه نقط سيتنا عين جو يمهر كله هين داله .

1. كرانتى: 2. كهانى؛ 3. دهوكا؛ 4. بهدكا كهل جانا؛ 5 دهرك بازيان؛ 6. جوش؛ 7. إرادت، 8. أميد؛ 9. مرتبو؛ 10. بادل؛ 11. بحلى؛ 12. كرانتى وني رائي؛ 13. يريم؛ 14. انهاجار؛ 15. بحلى؛ 16. كهرنسك، كهر 17. يهرل؛ 18. سمسيا؛ 15. بمهيدان؛ 22. سبها؛ 23. همها؛

विसम्बर 1957 भू

42	क्ष के		सका	este.	كيا ك <i>س تع</i>
1	ग्र जल —श्री संचादत 'नजीर' एम॰ ए॰	•••	251	•••	1. غزل ـــشری معادت انظیرا ایم اسم.
2.	अरव की कल्चर, सम्यता और इसलाम विश्वम्भरनाथ पांडे	•••	252	•••	2. عرب سبهیتا اور اِسلام
3.	हिन्दुस्तान और इंसलाम - डाक्टर सैयद महमूद—श्रंभेजी से श्रतु वि. ना. पांडे	वाद् क 	260		3. ہندستان اور اِسلام ــــــــــــــــــــــــــــــــــــ
4	सन 1905 का स्वदेशी आन्दोखन और में राजनैतिक जीवन — पंडित सुन्दरलाल		265		4. سن 1905 کا سودیشی آندولی اور میرا راجنیتک جه ن
5.	मुहम्मद साहब की कुछ हदीसें —डाबटर मिरजा अबुल फजल	•••		····	پنت سندر قل 5. محمد صاحب کی کچھ حدیثیں تاکٹر مرزاابرلشل
6.	—श्रनुवादक श्री मुजीव रिजवी रुवाइयात मुहिव —श्री 'मुहिव'	•••	272	***	سانوادک شاری مجهب رضوی 6. رباعیات محب سشری ^و محب ⁴
7.	अनेकता में एकता यानी कसरत में बहदा —डाक्टर मध्यानदास		282	***	ر انهای ایما ایما یعنی کثرت میں رحدت قاکلر بهکران داس
8.	टोपियाँ और संडियाँ —श्री अब्दुल हसीम अंसारी	•••	290	•••	8. توپیاں اور جهندیاں نےشری عبدال اہم انصاری
	इच कितारें हमारी राय—	•••	295 297	•••	9. رچ کالیں
					10. حماری رائے۔ ۔۔ دیمی کی حالت پر ایک خط-پلات سلار ال



दिसम्बर 1957 >***

NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

Editorial Board

Dr. Tara Chand M.A., D. Phil. (Oxon)

Mahatma Bhagwan Din

Dr. Syed Mahmud, M.A., Ph.D., Bar-at-Law

Pandit Sundarlal

Bishambhar Nath Pande

Editor-in-Charge

Bishambhar Nath Pande

Asst. Editor

Suresh Ramabhai

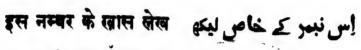
Annual Subscription

Inland Rs. 6/Foreign Rs. 10/Single Copy As. /10/- only or 62 N. P.

Can be had from -

Manager, NAYA HIND

145, MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3;



अरब की कल्बर, सम्यता और इसलाय की हो रिक्स कि कुछ ुर

—विश्वनभरनाथ पांडे

हिन्दुस्तान और इसलाम

-डाक्टर सैयद महमूद

अंग्रेजी से अनुवादक —वि॰ ना॰ पांडे॰

सन् 1905 का स्वदेशी आंन्द्रोलन और मेरा राजनैतिक जीवन

—पंडित सुन्दरताल चनेकता में एकता यानी कसरत में वहदत

—डाक्टर भगवानदास

हमारी राय देश की हालत एक पर खत -पंडित सुन्दर लाल. عندستان أور إسلام

ــانکریزی سے اتھاکیت ، بى قار بالذهر.

سن 1905 کا سودیشی آندولن اور میرا راجنیتک جمون

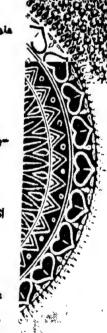
ــيندت سلار ال

الهكنا مين أيكنا يعلى كثرت مين وهدت

ــــةاكتو يهكولي دأس

عماري رأثه دیدر کے حالت پر ایک خط

سينتت سندر ال



स्मानी कलचर ग्रायाइटी, इलाडाबाद 🤲



कवचा पर हर तरह भी कितावें मिलने गडा केन्त्र-पाठक हिन्दी, उर्

हमाराज्य कितावें

महारमा गाँन्धी की वसीयत

(हिन्दी और उद्दें में) लेखक-गान्धीवाद के माने जाने विद्वान : स्४० भी मंत्रर अली सास्ता सके 225, क्रीमत दो रुपया

गोन्धी बाबा

(बच्चों के लिये बहुत दिलचस्प किताब) लेखिका-कृद्सिया जैदी भूमिका-पन्डित जवाहरलाल नेहरू मांडा काराज, मांटा टाइप, बहुत-सी रंगीन तसवीरें दास दा रुपया

> पंडित मुन्दरलाल जी की लिखी कितावें गीता और क़रान 275 सके, दाम ढाई रुपया

हिन्दू मुसलिम एकता 🗝 । 🗪 के. वाम बारह जाने

महारमा गाँन्धी के बलिदान से सबक क्रीमत बारह आने

पंजाब इमें बना सिखाता है क्रीमत चार आने वंगाच चौर उसके समक श्रीमत से जाने

هر طرے کی تناہیں मन-पसन्द किताबी किताबी किताबी किताबी الله المعلى المع

مهانها کاندهی کی وصب

(عندی اور اردو میں) لیکھنے۔ گائدھی واد کے مانے جانے وقبوان: سوركية شرى منظر على سوخة منحم 225 تيبت دو رويه

كاندهي بابا

(بحدن کے لئے بہت دلصسب کتاب) . ليكهكا تدسيه زيدي ج بهو كاسيندت جوابير ال نهرو مها كافل مها النب بهت سي رنكين نصويريس دام دو روديه

> پندت سندرال جي کي لکھي نتابيس عيتا اور قران 7.7% منحه دام دمانی رویه هغدو مسام ایکها 100 منحه دام باره آنے

مهاتما کاندھی کے بلیدان سے سبع قهست بارد آلے بنجاب هي كيا سكهانا ه بنگال اور ایس سے س

क्षारत मोहम्मद और इसकाम

कारक परिस्त सुन्दरलाल, मूस्य तीन रूपसा कार्यान के बेग्न्बर के सम्बन्ध में भारत ने भाषाओं में इस से सन्दर कोई दूसरी पुस्तक नहीं

हजरत ईसा और ईसाई धर्म लेसक-पन्डित सुन्दरलाल, मृद्य-वेद रुप्या महात्मा जरशुत्र और ईरानी संस्कृति लेसक-विश्वन्मरनाथ पांडे, कीमत-दो हपया यहूदी धर्म और सामी संकृति लेसक-विश्वन्मरनाथ पांडे, कीमत-दो रुप्या आचीन मिस्र की सभ्यता और संकृति लेसक-विश्वन्मरनाथ पांडे, कीमत-दो रुप्या सुमेर बाबुल और असुरिया की प्राचीन संकृति

केसक विस्वाभरनाथ पांडे, कीमत—दो हतया प्रचीन यूननी सभ्यत और संकृति

लेखक-विश्वन्मरनाथ पांडे, क्रीमत-दो रुपया

ं गंगा से गोमती तक

(प्रगतिशील कहानी संग्रह) लेखक-श्री मुजीब रिजवी, कीमत-दो रुपया

माग भीर भाँस

(भावपूने सामाजिक कहानियाँ)

लेक ६ - डाक्टर अस्तर हुसेन रायपुरी, क्रीमत-डेद रुपया

कुरान भीर धर्मिक मतभेद

तेबाड भीताना चबुलकलाम चाजाद, क्रीमत —डेद रुपया

मंकर

(प्रमितशील कविताओं का संघह) तेलक रचुपति सदाब किराक, क्रीमंत – तीन रुपया

کے معمد کے مستقدہ میں بھارتیہ بھاندائی میں اس سے مستقدہ میں اس سے مستقدہ کیا میں اس سے مستقدہ المحدد اللہ الم

مشرب عيسي اور عيسائي دهرم لينك بانت عام ال

مروفهی فاهوم اور سامی سنسکوتی الهیک رهرمهر ناته بانده نیت-دو رویه

راچین مصر کی سپهیتا اور سنسکرتی این این مصر رویه

معیر باول اور اسوریا عی بر اچین سنسکرتی ایمیک سرشرمبیر ناته بانده است در ردیه

و المحمد المحمد الله بالذم المحمد الم

گنگا سے گومتی نک

(پرگتی شیل قهالی سنتوه)

ليمكي - شرى معيب رضوي . قيمت - د رويه

اک اور انسو

(بهاوپورن سمآجک کهانیان)

والمستالة اختر حسين رائه پورى قيس - ديره رويه

قران اور دهارمک مع بهید نیمک سیانا ابرام آزاد نیست تیرت دریه

جهنكار

(پرگتیشیل کویتاؤں کا سنکوہ)

ليتهك بسركهوبتي سائل فرأق ويستستين رويهه

मिलने का पता क हुन

वारणांकी कलचर सेंदाध्य जैमान त्रकार अंदान्य

145 सदीगंज, इसहबद अंगे ट अ 141

कानों से सुना है कि बनके सामने असती प्राच मार्च का महीं चासली प्रश्न एं० जनाहर लाल नेहरू कीर उनकी सरकार को गिराने का है, देश की इस समय की स्थिति में बह जानकर कि इस तरह के नासमम और खतरनाक लोग भी अभी तक देश में मीजूद हैं हमारा दिल कॉप पठता है. इक सिख् माइयों, सिख अंकसरों, बगैग के पश्चवात पूर्ण स्यह-द्दार और कुचरित्र तक की शिकायतें सुनने में आई हैं, यदि पेंचा है तो जिन्हें पेंची शिकायतें हैं बनका फूर्य है कि बन्हें त्रेम के साथ मास्टर वारासिंह और शिरोमणि गुकदारा अवन्यक कमेटी के नोटिस में लावें. और मास्टर तारासिंह भीर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी का धर्म हैं कि इस तरह की शिकायतों भी पूरी जाँच करके पंजाब के बन्दर सिखों के चरित्र को ऊँचा, निलक्ष और सबके लिये प्रेम भरा बनाने की पूरी कोशिश करें. कम से कम इस तरह के रोग का यह इज़ाज नहीं है कि देश भर में था प्रान्त भर में वैमन-स्य ही साग सरकारी जावे.

मापाएँ और लिपियाँ सदा बदलती रही हैं, धीर बदलती रहेंगी. हिन्दी भाषा के प्रेमियों से इमारी बिनम्र प्रार्थना है कि वे देश की सब दूसरी भाषाओं से प्रेम दर्शाकर और उनकी उन्नति चाह कर ही राष्ट्रभाषा हिन्दी का सच्या भला कर सकते हैं. दूसरों भाषमों है हे श पैदा करके कदापि नहीं कर सकते. पंजाब की जनता और पंजाब के सक देश सेवकों से हमारी प्रार्थना है कि वे जिल तरह यी और जितनी जल्दी हो सके इस मगदे को खतम करें और सिसों, हिन्दुओं और सब पंजाब निवासियों में में म और मेल मिलाप को बढ़ाने, मज़बूत करने और बनाए रखने का हर तरह प्रयत्न करें. इसी में उनका भला है, इसी में देश का भला है, इसके विपरीत रास्ता बरवादी का रास्ता है.

12-10-57

ان د عاد کال کر بیکار شان پرلی جاند ۲ کیس اوے کے نامید کر کھا گھا لیگ سی اس تک دیمی ين موجود هون جيال المهد الينا ه . كي ما يواثين سن السروس وفيزم ك المقياف يورين ويوهار أور كو جرك تك كي المالتين سائل مين التي اليس اليسا ف تو جايس ايسي المارتين عيس أن ف فرفن الله كه أنهين يريم كے ساتھ ماسار تارا الله الر شروسلي الروفوارا يوالعدك كينلي كي نواس سي لدين الور مسار فالأه مطاهة أور شوومغي كرودوارا به بلدهك كديلي ا معرم ف که ایس طرح کی شکا بس کی بوری جانب در کے عجاب کے الدر سیوں کے چرتر کو آرنجا ، تھیمس آرر سب لے اللہ پریم بھڑا بناتے کی پوری کوشش کریں . کم سے کم اِس ارح کے روگ کا یہ علیے نہیں فے که دیش بھر میں یا پرانت ہر میں ویندسید کی آئے ببرکا دی جارہ .

بهاهائين أور لههان سدأ بدلتي رهي هين اور بدلتي میں گی . هلدی بهاها کے پریسوں سے هماری وثمر پزارتها ہ که رے دیش کی سب درسری بهاشاؤں سے پریم رشا کر اور اُن کی اُنٹی چاہ کر ھی راھٹر بھاھا ھندی کا حیا بہلا کر سکتے میں . دوسری بھاشاؤں سے دو بھی بعدا کر کے دایی نہیں کر سکتے . پتجاب کی جنتا اور پنجاب کے سب یفی سیرکوں سے هماری پراتینا ہے که رہے جس طرح بھی اور علنے جادی دو سکے اِس جہالاے کو ختم کرنے اور سکھیں ا خدی اور سب پنجاب تواسیوں میں پریم اور میل ملاپ کو وهالي مضبوط كرني أور ينائم ركهنم كا هر طرح هريتن كرين .. سی میں اِن کا بھا ہے ۔ اِس کے وہریت راستہ بریادی

12, 10, 57

وائن میں ال جد کرن ان جو الموان اس اور میں ا

رَبِينَ وَمِن فَم الْعَلَيْمِي فَي عُمَمًا ﴾ في يات سلام هين تو هين اور سی اجرے مونا ہے ، پنجاب کے اندر مادی کیاں خطرے میں ہے ؟ کین ھادی پر حمله کر رہا ہے ؟ کرن گس-کو هلی پرملی پرفالے سے روک رما ہے 9 حال کے پانجاب کے دوره میں مم سیکویں سکو بھائیوں سے باتیں اور چکے ھیں، کوئی بھی سکم هندی پوهنے سے انکار نہیں کر رها هے . انکار کیول کس مدوں کو پلسانی یا گرمنی پرملے سے فے ، تب پور اِس أَلْتُولِي كَا نَامِ هَلَدِي رَكُمًا أَلْدُولِنِ كَيْ حِكْمُ يِلْجَانِي وَدُورِهِي أَنْ وَأَنْ عَلَيْهِ وَيَادَة لَهِيكَ هِرَنا . عليهِ وَالْكُلُ صَافَ ف . دو هي ایائی هو سعال هیں . یا تو یه که جن عقوں کی یول عمال کی وہاں مندی ہے ان کا ایک مندی صوبت در الگ الگ صوبے ایماتداری کے ساتھ بنا دئے جاریں ، اور یا اگر سارے پنجاب كا الك أمويه يا ايك راج ركونا في تو ضروري في كه ينجابي علاله میں ادهکتر کام پلکجایی میں دو اور دندی علالم میں هلاني مين اور سكم اور هادو اور سب اوك يلجاني بولله والے اور هندي بولنے والے سب يريم سے ساتھ دونوں بهاشائيں اور عرقوں لهاں اچھی طرح سیکھیں جس سے سارے یلجاب کے سنب كلمون مين سب كو أسالي هو . فوورت إس بات كي ه الله دلوں میں بجائے نفرتوں ورس اور دشمنیوں کے بریم وشواس اور بھائی جارے کے بہاؤ موں .

کہیں کہیں یہ بھی سننے میں آیا ہے کہ ہدی پرہمی چاہتے ہیں کہ پلتجابی پرهنا أن کے له الزمی نہیں ، ان کی بات کو چھرز کو ہم اِسے بھی بالکل نہیں سبج سکتے ، اِستواں میں کون کون کون کون وہ الزمی ہوں اور کون کون احتماری یہ بات بہت چھوائی اور شکشا وبھائ کے طے کرلے کی ہے ، ہمیں بھوگراً کے اوس هوئے میں کرئی اعتراض نہیں شاید انگریزئی کے الزمی ہوئے میں کوئی اعتراض نہیں ، ہمیں اعتراض عدران پنجابی کے ازمی ہوئے میں اور وہ بھی پنجاب میں وہ کر وہ نہی پنجاب میں نہ کور کہ اُنہ پنجابی کے اوس کو پرانت بھر کی نوکریاں کام نہ جانے سے ہدی وانوں کو پرانت بھر کی نوکریاں کام نے جانے سے ہدی وانوں کو پرانت بھر کی نوکریاں کام

هم لے اپنے پنجاب کے دورہ میں اور بھی کئی طرح کی پائیں سابی ھیں ، کھ جاتا ہے کہ یہ سارا جہاوا کچھ لوگوں کی مشیقینوں اور ممبریوں کا جہاوا ہے ، اگر یہ سے ہے تو جلتا اور آئی آئی سے اپنے سے اپنے کی مشیقیاں میں جاتی جلدی ہو گئی اپنے کیا ہے کہتے ہیں اپنے میں اپنے سے اپنے ہیں اپنے میں اپن

न्या पर्वा विकास कर रहा है ? कीन किसका हिन्दि चाने पहाले होने रहा है ? हाल के पंजाब के दौरे में इसकी कार्य से जात कर जुड़े हैं, कोई मी. बिस दिन्दी व्यक्ति से अन्यक्ति नहीं कर रहा है . इन्कार द्वत इस दिन्दु के पहाड़ी ये गुवनुत्ती पहने से है . तक विद्वाहत पालीको का नाम दिन्दी रक्षा सान्दोलन की जम्म प्रश्निक कार्यालन कायद ज्यादा ठीक होत्र इक्ट किस्ता सक है, दो ही उपाय हो सकते हैं. मा मा भी कि कि कार्य की योत बात की जान पंजाबी है कर्ना पर प्रकार स्वा और जिन में बोल बाह की अक्टर देन्द्री है बनका एक हिन्दी स्वा, दो जलग क्रवा सके के संबद्धारी के साथ बना दिये जावे और या अगर अदि प्रकार का एक 'सूबा' वा एक 'राज' रखना है तो करेरी हैं कि पंजाबी खोके में अधिकतर काम पंजाबी में हो और दिन्दी इलाके में दिन्दी में, और सिख और हिन्द भीर भीर सब लोग, पंजाबी बोलने बाले भीर हिन्दी बोलने बाले' सब प्रेम के साथ दोनों भाषाएँ और दोनों लिपियां अच्छी तरह सीसें जिस से सारे पंजाब के सब कामो में सबको आसानी हो जरूरत इस बात की है कि दिलों में बजाय नकरतों, डरीं और हुरामनियों के प्रेम, विश्वास और मार्ड चारे के भाव हों .

कहीं, कहीं यह भी मुनने में बाया है कि हिन्दी के प्रेमी आहते हैं कि पंजानी पदना इनके लिये लाखभी म हो. आन की बात को छोड़कर हम इसे भी बिल्कुत नहीं समक सकते. स्कूलों में कीन कीन बिषव लाखभी हों और खीन कीन अस्तृतियारी यह बात बहुत छोटी और शिक्षा विभाग के तथ करने की है. हमें भूगोल के लाखभी होने में कोई एतराज नहीं, शायद अंगरेखी के लाखभी होने में भी कोई एतराज नहीं, शायद अंगरेखी के लाखभी होने में भी कोई एतराज नहीं, शायद अंगरेखी के लाखभी होने में भी कोई एतराज नहीं, हमें पतराज है केवल पंजानी के लाखभी होने में भीर वह भी पंजाब में रहकर ! आसिर पंजानी बेचारी से इतनी नाराजगी-क्यों ? पंजाबी न जानने से हिन्दी बालों को प्रान्त भर की नौकरियों, काम काज और व्यापार में जो सुकसान रहेगा वह खहर ही है.

इसमें अपने पंजाब के दौरे में और भी कई तरह की बॉर्स सुनी हैं. कहा जाता है कि यह सारा मनदा कुछ बोगा की मिनिस्टिरियों और मेंन्बरियों का मनदा है. अगर यह सब है तो जनता और उसके सर्व सेवकों को इस पहर हुने सामक से जितनी जस्त्री हैं निकल आना पाहिसे. इसके सामक से जितनी जस्त्री हैं निकल आना पाहिसे.

157 XY

کر میں دنے کو منتوا پر حمله کرتے کے لئے اکسایا گیا! رس في أمولال كو الله كر ديا أذهر مد يهي معاملد رك كيا پھر توکی کو مدہ دیے کر سیریا پر حمله کرنے کے لئے تیار کیا گیا" توکی میں ودروهی امویکی پروپیکلدا اِس سه زور پر هے، روس نے پور فرکی کو بھی چٹاوئی دیی ۔ معاملے اِس سبے یہیں پر الكا موا هـ دليا بهرك لله جس طرح كي خطره كا مقام آبے سیریا بنا ہوا ہے آسی طرح کے خطرے کے مقام ایک درجوں ارر چاروں طرف کا خاص کر 'بھارت کے چاروں طرف املے ہوئے هیں ، انہیں میں سے ایک مقام همارے تبیک اتر پچیمی سرحد پر بھی ف این حالتیں میں آجکل کی کرئی اوائی ساري دنها كو أين مجوره مين ليها بنا نهين ره سكاي . كسي کی بھی بھول کا فلطی یا ہے پرواھی سے کل کہاں کیا ہو جارے کرنے نہوں کہ سکا، هدیں اپنے دیعی کی حالت اور سبندهنس کا بھی بته هے . أيسى برستهتى ميں بنجاب جهسى سرحد کے اُویر دیش واسروں کے ایک گروہ کو دوسرے گروہ کے ررده بیزکا دیلے سے بوہ کر دیش کی نٹی آزادی کو خطرے میں قال دینها دوسوا کام نهیں دو سکتا اور وہ اِس کلی که دیک کی در بیاری بهاشاون باعجابی اور هندی میں سے سرکاری کافذ ایک میں لامے جاریں یا دوسری میں یا دونوں میں' یا اِس لئے که باره کوری کے اکشهر ایک طرح اکمے جاریں یا دوسری طرح .

ہم اپنے ہادی رکشا ساتی کے بھائیرں سے یہ کہے بنا بھی نہیں رہ سکتے که اپنے اِس غلط اور سے کے آندولن سے اُنہوں لے سب سے ادمک نقصان راشتر بهاشا هندی کو بهنجوایا هے . هم نے پنچاس برس مادی کی سیواکی کے همیں یہ دیکم کر دکھ موتاہے که الکال کے اور خاص کر داہن نے وہ بھائی جو پہلے بھی همارے اِس اندھ پن اور هماری کوتا کے کارن هندی سے کچھ بدکے بدكر رهيتے تھے اور انكريوى دو أس كى أجال كى جكه سے مثانا نہوں چاھتے تھے اُن کی شتکائیں پنجاب کے اِس ھندی شکشا اُندولن نے بےچد بڑھ گئی ھیں ، پورپ اور دکھن کے ھندی ورودهی آندوان کو بےحد بل مل گیا ہے . مندی شکشا سیلی کے نیتاؤں کے بیان بھی خوب چھاہے جا رہے میں . أن لا كہنا ہے کہ اگر ینجاب کے پنجابی بولنے والے مندی پریمی پنجابی کو نہیں سید سکتے تو اِس طرح کے هندی پریمیوں سے تامل اور تیلکو کے بولے کی کیا آشا ہو سکتی ہے! اِن کے کہنے میں بہت کچے سچائی میں دکائی دیائی ہے . اِس میں ڈرا نیے ساریعہ نہیں کہ یدی یہ مندی عقما آندواری اسی طرح نجو دنوں اور چلکا رہ، تو بھارت کی پارلیمات کے أندر راعلو بهاها هدي كو الكريزي كا استهان ديا جاسكنا پیومیں دون خلا جارے گا، دیش کے نئی کی گیری

की सदब देकर सीरिया पर हसला करने के लिए क्षक्रसावा गया, रूस ने इजरेल को आगाह कर दिया, उधर से भी मामला दक गया फिर टरकी को मदद देकर सीरिया पर इसला करने के निये तैयार किया गया. टरकी में कम विरोधी अमरीकी प्रोपैगैन्डा इस समय पूरे जोर पर है, रूस ने फिर टरकी को भी चैताबनी दी. मामला इस समय यहीं पर भटका हुआ है, दुनिया भर के लिये जिस तरह के खनरे का मुकाम आज सीरिया बना हुआ है उसी तरह के खतरे के मुकाम एक दरजन और चारों तरक, खास कर भारत के चारों तरफ, फैले हए हैं. इन्हीं में से एक मुकाम हमारी ठीक उत्तर-पच्छमी सरहद पर भी है. इन हालतों में बाजकल की कोई लड़ाई सारी दुनिया को अपने घेरे में लपेटे बिना नहीं रह सकती. किसी की भी मल, ग़लती या बेपरवाही से कल कहां क्या होजावे कोई नहीं कह सकता. हमें अपने देश की हालत और अपने सम्बन्धों का भी पता है. ऐसी परिस्थित में पजाब जैसी सरहद के ऊपर देशवासियों के एक गिरोह को दूसरे गिरोह के विदद्ध भड़का देने से बढ़कर देश की नई आजादी को खतरे में डाल देने का दूसरा काम नहीं हा सकता, और वह इसलिये कि देश की दोप्यारी भाषाओं. पंजाबी श्रीर हिन्दी में से सरकारी काराज एक में लिखे जावे' या दूसरी में या दांनो में, या इसिलये कि बारह-खड़ी के अक्षर एक तरह लिखे जावें या दूसरी तरह.

हम अपने हिन्दी रक्षा समिति के भाइयों से यह कहे बिना भी नहीं रह सकते कि अपने इस ग़लत और क्रममय के बान्दोलन से उन्होंने सबसे बधिक नुक्रसान राष्ट्र भाषा हिन्दी को पहुँ चाया है . हमने पचास बरस हिन्दी की सेश की है. हमें यह देखकर दुख होता है कि बंगाल के और सासकर दक्षिण के वह भाई जो पहले भी हमारे इसी श्रंधे-पन और हमारी कट्टरता के कारण हिन्दी से कुछ बिद्के बिदके रहते थे और अंगरेजी को उसकी आजकल की जगह से हटाना नहीं चाहते थे उनकी बारांकाएं पं गव के इस हिन्दी रक्षा धान्दोलन से बेहद बढ़ गई हैं. पूरव श्रीर दक्तिन के हिन्दी विरोधी आन्दोलन को बेहद बन मिल गया है . हिन्दी रक्षा समिति के नेताओं के बयान दक्षिण में ख़ब छापे जा रहे हैं . उनका कहना है कि अगर पंजाब के पंजाबी बोलने वाले हिन्दी-प्रेमी पंजाबी को नहीं सह सकते तो इस तरह हिन्दी प्रेमियों से तमिल और तेलग् के मले की क्या आशा हो सकती है! उनके कहने में बहत कुछ सच्चाई भी दिखाई देवी है . इसमें जरा भी सन्देह नहीं कि याद यह हिन्दी रक्षा आन्दालन उसी तरह कह दिनों और चलता रहा तो भारत की पार्तिमेन्ड के श्रम्बर राष्ट्र माना हिन्दी का श्रगरेत्री का स्थान दिया जा सकना पीढ़ियों दूर चला जानेगा . देश के कई कई दुकड़ों

और क्रीमती उपदेश दिये. साथ ही पंजाबी में गंदे-से-गंदे गाने भी सैकड़ों बरस से लाहीर और असूतसर की गतियों में गाए जाते रहे हैं. भीर धाज तक गाए जाते हैं. सच यह है कि दुनिया की कोई भाषा न पाक है और न नापाक. न संस्कृत अरबी से जियादह पाक और न अरबी संस्कृत से जियादह पाक, और न इन दोनों में से कोई चीनी, जापा-नी, रूसी, लातीनी फांसीसी या दुनिया की किसी और भाषा से जियादह पाक है. या यूँ कहिये कि दुनिया की सब भाषाएँ एक बराबर पाक श्रीर पक बराबर नापाक हैं. न कोई भाषा द्वताओं की भाषा है और न कोई बोली फरिश-तों की बोली है, अव एँ और बोलियाँ सब आद्मियों की बोलियों हैं. कम या अधिक सब में अच्छी चीजे भी मिलें-गी श्रीर बुरी चीजों भी. भाषा केवल एक साधन है विचारों के आदान प्रदान का. भाषा काई देवी या दवता नहीं. जो भाषा जिस समय जहाँ जिन हालान में हमें सब से अच्छा काम दे वही उस समय के लिये सब से श्रधिक उचित है. इस तरह के अधिक्यास, या मृद्याह किसी भी देश या क्रीम का मिटा सकते हैं, उनमें फूट डाल सकते हैं, उन्हें बरबाद कर सकते हैं, पर उनकी उकति या विकास में सहायक नहीं हो सकते. यह अलग बात है कि किसी को किसी भाषा में अपने धर्म प्रंथ होने के कारण या उसके अपनी मात् भाषा होने के कारण उससे विशेष प्रेम या दिल्चस्पी हो. पर यह दिनचर्या किसा दूसरी भाषा से द्वेष क करण नहीं होनी चाहिये. हमें इस तरह की सब बातों में यह श्रपने दिलपर जमा लेना चाहिये कि सब की उन्नति में ही हर एक की उन्नःत श्रीर सब के भले में ही हर एक का भला है.

दुनिया की अन्तर राष्ट्रीय स्थिति स जो आद्मी कुछ भी परिचित है वह देख सकता है कि दुनिया इस वक्त एक बहुत बढ़ सकट में से निकल रहा ह, जगह जगह वह खतरनाक मसाले जमा हा रहे हैं श्रीर भ्यंकर स्थितयाँ पैदा हो रही हैं जा किसा समय भी कहां भी भड़क कर सारी दुनिया की श्राजादी, खुशहाली श्रीर उसके बजुद तक का खतरे में डाल सकता हैं. कवल एक मिसांल काकी होगी. हाल में सीरिया यानी शाम की सरकार को हथियारों की जहरत पढ़ी, उन्होंने अमरीका से हथियार खरीदना चाहा, अमरीका ने बेतुकी शरते पेश करदीं. सीरिया ने रूस से बात की, रूस ने विना शर्त सीरिया के हाथ हथियार बेचना मंजूर कर लिया, हथियार खरीद लिये गए, अमरीका ने सीरिया को घमकी दी, अमरीकी जहाजी बेड़ा सीरिया के किनरे पर आ धमका, सीरिया चबराया. कि इतने में रूसी जहाजी वेड़ा भी वहीं आ पहुँ चा, अमरीकी नंसवे कह देर के लिये ठंडे होगए. अब इचरेल को हथियारों

الور الشعى البديش دار . سان هي بلتهابي مين كلدسه الله كادر الله يهي سيكون الله الموسر عِي گليس مين گله جاره هيں اور أبج نک گله جاتے جيس ، سيم يه يه الله دانيا كي كرأي بهاشا باك ها ته ناياك . الع سلسكرت عربي سه زياده پاک أور أنه عربي سلسكرت سه زياده باك أور نه إن دونوں ميں سے كوئي چيني جاياني ، روس ، الطيلي والسيسي يا دنياكي كسي أور بهاشا سے باك هـ . یا بوں کھے کہ دنیا کی سب بھاشائیں ایک برابر یاک اور ایک برابر ناباک هیں . نه نوئی بهاشا دیوناؤں کی بهاشا هے اور قم كوئي بولي فرشتون كي بولي هي بهاشائين أور بوايان سب آدمهن کی بولیان هیں . کم یا ادمک سب میں اچھی چیزین بھی مایں گی اور برمی چیزیں بھی ، بھاشا کیول ایک سادعی ہے وچاروں کے آدان پردان کا، بھاشا کوئی دیری یا دروتا نہیں . چو بهاشا جس سم جهان جس حالت میں همیں سب سے اچها كام درم وهي أس سمر كے لئے سب سے آدمك أجت هـ . اِس طرح کے اندھ وشواس یا مر گراہ نسی بھی دبھی یا قوم کو منا سكتم هين أن عن بيرة ذال سعتم هين أنهيل برباد كر سکته دون او کی انتای یا رکس میں سہایک نہیں او سعتے ، به الگ بات ف که کسی دو کسی بہاتا میں اُپنے دھرم گرنتھ عونے کے کارن یا اُس کے 'پنی ماتر بھاشا عونے کے کارن اًس سے وشیعی وریم یا ، لچسوی کسی دوسری بهاتنا سے دوش کا کارر نبیب مونی جادئے ، اِس طرح کی سب باتیں میں یہ النے دل یر جما اینا چاہئے تع سب کی انعتی اور سب کے بالے میں ھی ہر ایک کا بھلا ہے۔

बार दुइराना पदता था और सुनने वालों के आनन्द प्रद्-रान से हाल बार बार गूँज उठता था, इसी तरह का सजरबा हमें और भी अनेक बार हुआ है और हमें विश्वास है कि पंजाब के अन्दर और भी हजार और लाखों को हुआ होगा, पंजाबी एक जीवित भाषा है और बढ़ी सुन्दर, प्यारी और घनाइय भाषा है.

पंजाब में आजकल एक "हिन्दी रक्षा समिति" है. सुना
है इसकी आर से कहा जाता है और प्रचार किया जाता
है कि हिन्दुकों की भाषा हिन्दी है. यह कहना भी बहुत
ही सलत और खतरनाक है. अगर हिन्दुओं की भाषा हिन्दी
है तो यह तय करना पड़ेगा कि श्री राजगांपालाचारी हिन्दू
कहे जा सकते हैं या नहीं. और स्वयं हिन्दू सभा के पिछले
सदर श्री एन० सी० चैटरजी हिन्दू हैं या नहीं. कोई बड़े
से बड़ा हिन्दुत्त-प्रेमी मदरासी या बंगाजी या गुजराती या
महाराष्ट्रीय हिन्दी को अपनी मातृ भाषा मानने का तैयार
नहीं होगा. वह हिन्दी को भारत की राजभाषा या राष्ट्र
भाषा मानने को तैयार हो सकता है पर अपनी मातृ भाषा
पूरे गवं के साथ चसी भाषा को कहेगा जो वः अपनी मां
बहनों के साथ घर में बोजता है. भाषाएँ धर्मों की नहीं
हआ करतीं. भाषाएँ इलाक़ों और देशों की होती हैं.

इस तरह की गलत फहमियों की जड़ में एक खास विचार यह काम करता हुआ मालूम होता है कि काई भाषा पाक है और बोई नापाक. यह विवार भी बहुत ही रालत विचार है. हमारे एक मित्र जिन्हें उद् से कुछ नाराजगी है और जो संस्कृत के बढ़े भक्त हैं एक बार इससे कहने लगे कि उर्दे साहित्य श्रीर खास कर उरद् शायरी में अशलीलता बहुत होती है. पर जब हमने इस विषय में संस्कृत साहित्य का उन्हें हाल बताया तो वह कुछ साचने लगे. बाज से चन्द्रन बरस पहले हम बी॰ ए० में संकृत पढ़ते थे. महाकवि कालिदास रचित कुमार-सम्भव पढ़ाते पढ़ाते जगह जगह वह प्रसंग आ जाते थे. जहाँ हमारे महाराष्ट्र प्राप्तेसर श्री रामचन्द्र हरि हरलिकर कुछ के पते हुए और कुछ मुसकराते हुए विद्य थियां से कह देते थे:- 'इसे आप अपने मन ही मन में पढ़ लीजिये.' शायद कांई (पता अपनी पुत्री के सामने उन श्लो को का पढकर व्नका अर्थ नहीं कर सकता. हम नाम लेना नहीं चाहते, पर इससे भी कहीं अधिक अशलील साहित्य भी संस्कृत में भरा पड़ा है, इसी के साथ-साथ स स्कृत में वह साहित्य भी है जो दुनिया के ऊँचे-से-ऊँचे साहित्य में स्थान पा सकता है और पाता है, अरबी क़रान की भाषा है साथ हा अरबी के अंदर मुहम्मद साहब से पहले की और इनके बाद की अशलील से अशलील कविताएँ भी मिलेंगी. पंजाबी वह भाषा है जिसमें गुरू नानक ने अपने प्रेम भरे

بار دوهرالا پرتا تھا اور سلنے والوں کے آئند پردرشن سے هال بار بار کرنے آئیا تھا ۔ اِسی طرح کا تجربه همیں اور بھی انیک بار هوا ہے اور بھی هواروں اور لاکھوں کو هوا هو کا ۔ پنجابی ایک جدرت بھاشا ہے اور برجی سندر' بھاری اور دهدادیه بھاشا ہے ۔

پنج ب سیں آجکل ایک "هکدی هکشا سیتی فی مناها فی اور پرچار کها جانا فی نه الملائل کی اور سے دیا جانا فی اور پرچار کها جانا فی نه الملائل کی بهاشا هندی فی یه کهذا بهی بهت غلط اور خطرناک فی بهاشا فی تو یه طیم کرتا پڑے گا که شری راج گربالا آچاریه مندو کیے جا سکتے هیں یا نہیں اور سویم هندو سبها کے پنچیلے صدر شری این سی. چار جی هندو هیں یا گجرانی یا مهاراشاری فیدی نو اپنی مادرا بهاشا ماننے کو نیار گجرانی یا مهاراشاری هندی نو اپنی مادرا بهاشا ماننے کو نیار مانی کو تیار هو سکتا فی پر اپنی مادر بهاشا پورے گرو کے ساتھ مانی بهاشا کو کہا گرد میں بهاشائیں دھرموں کی تهیں موا کرتیں ، بهاشائیں دھرموں کی تهیں موا کرتیں ، بهاشائیں عقوں اور دیشوں کی هوتی هیں ،

س طرح کی غلط فہدوں کی جو میں ایک خاص ،جار لله كرتا هوا معلوم هوتا شد كه كوثى بهاشا ياك في أور كوثى اپاک . یه وچار بهی بهت غلط وچار هے . همارے ایک متر جنهیں اردو سے دچھ نارافکی ہے اور جو سنسکرت کے بڑے بہات هیں ایک بار هم سے کہتے اکے نہ اردو ساهت اور خاص در اردو شعبى ميں اشلطيلاتا بہت هوتي هے . پر جب هم نے اِس وشه مين سنسكرت ساستيم كا أنهين حال بتايا تو وه كني سوچنے اکے . أج س چوں برس پہلے هم بی ا میں سلسكرت يوعاء لهے مهانوی کالیداس رجت کمار سمبھو بوء تے بوء تے جکیء جاید وہ پرسنگ آ جاتے تھے جہاں ممارے مهاراشقر يروفيسر شرق رام چندر هري هراها كحجه چبها هواتم أور كحه مسعواتے هوئے ردايرتهدوں سے كهة ديتے تھے:-- "اِسے أَبِ اَيْنِ مَن هی میں میں بڑھ ایجند * شاید نوٹی بنا اپنی بتری کے سامنے أن شلوكون كو يوه كو أن كا أرته قهين در سكتا . هم مان لينا نہیں چاہتے کر اِس سے بھی کہیں ادمک اشلیل ساھتھ سنسکرت میں بھرا پڑا ہے . اِسی کے ساتھ ساتھ سنسکرت میں وة ساهدتيه بهر هے جو دنيا كے ارتجے سے أولجے ساهايه من استهان يا سكنا هي عرابي قرأن كي بهاشا هي ساته هي عربی کے اندر محمد صاحب سے بہلے کی اور اُن کے بعد كي أهليل أسم أهليل كويتائين بهي ملين كو . ينجابي رلا بهاها ه جس میں گروناتک لے اپنے پریم بھرے

(246)

757 yes

ر ال

हम्दू के सरकारी इक्तरों का काक हो. पर हम इस हिन्दू को नहीं समम सकते जो अस्तसर या जातलन्धर में जन्म लेकर अपनी मां बहनों के साथ पंजाबी बोलता है और अपनी मातृभाषा हिन्दी बताता है. मातृभाषा उस और केवल इस भाषा को कहते हैं जिसमें हमारी मां सब से पहले प्यार के साथ हमें तुतलाना सिखाती है. हम यह कहे बिना नहीं रह सकते कि जो अपनी मातृ भाषा से प्रेम नहीं रखता इसका किसी भी दूसरी भाषा के साथ प्रेम टिकाक या विश्वास की चीज़ नहीं हो सकता. हरियाना जैसे इलाके के लोग जो सचमुच हिन्दी बोलते हैं अगर हिन्दी में ही अपनी तालीम और अपना दफ्तरी कारवर चाहते हैं तो इनकी बात समम में आ सकतीहै.

यह कहना भी कि पंजाबी कोई भाषा नहीं, बल्कि केवल खड़ी बोली हिन्दी की ही एक डाइलेक्ट यानी 'उप भाषा, है, बिलकुल ग्रज़त और वेमानी है. डाइलेक्ट वा उपभाषा की परिभाषा हम किसी भी कोष या भाषा विज्ञान की किसी भी प्रमाणिक पुस्तक में देख सकते हैं. भारत के विधान में देश की चौदह गुड़यें भाषाएँ गिनाई गई हैं जिनमें से एक पंजाबी है. उप माषाएँ भारत भर में डाई सी के लगभग हैं. जो आदमी पंजाब से कुछ भी परिचित हो वह जानता है कि पंजाबी की अपनी अनेक उपभाषाएँ हैं जो सब साफ साफ एक ही भाषा की अलग अलग होलियाँ दिखाई देती हैं.

यह दलील कि पंजाबी का अपना कोई साहित्य नहीं और भी अधिक लचर दलील है, मंथ साहब से बढ़कर ऊँचा और उपयोगी साहित्य और क्या हो सकता है ? और अगर अगार रस की चीजें ही साहित्य मानी जाती हों तो ''हीर रांमा" दुनिया के साहित्य में कम कीमत की चीज नहीं है. हमें मालूम है कि जरमनी के कई विश्व विद्यालयों में ''हीर रांमा" ऊँची से ऊँची डिगरी के कोसों में पढ़ाया जाता था, और दुनिया के विश्वविद्यालयों में उसे आदर का स्थान मिला हमा है.

आजादी से कुछ बरस पहले की बात है कि लाहीर के बेहला हाल में एक बहुत वड़ा कि सम्मेलन और मुशायरा हो रहा था. हम भी मौजूर थे. अनेक कियों ने हिन्दी में अपनी रचनाएँ पढ़कर सुनाई और अनेक शायरों ने वहूँ में अपनी नजमें सुनाई. बेहला हाल ब्रांताओं से ठसाठस भरा हुआ था. वहूँ और हिन्दी दोनों तरह की कविवाएँ कीकी पढ़ रहीं थी. उनमें से काइ भी सुनने वालों के दिलों को खुभतीं हुई माजूम नहीं होती थीं. इतने में अधेड़ उसर के एक मुसलभान कि ने, जिनका तस्तरलुसहमें आज तक बाद है 'इश्के इलाही' था, पंजाबी में अपनी किता बढ़ी और सारा हाल कड़क बठा. एक एक होर को उन्हें बार یه کهنا بهی که پنجابی کوئی بهاشا نهیں' بلکه کیول کهتری بولی هندی کی هی ایک ذائی لیکمت یعنی 'آپ بهاشا' هـ' بالکل غلط اور پرایمانی هـ . ذائی لیکت یا آپ بهاشا کی کسی بهی پرامانک پستد میں دیکھ سکتے هیں . بهارت کے ردهان میں دیکھ کی چودہ مکھید بهاشا گنانی گئیں هیں' جن میں سے ایک پنجابی هـ . آپ بهاشا یی بهارت بهر میں دهائی سو کے لگ بهگ هیں . جو آدمی پنجاب سے نچھ ، بهی پرچت هو بگ بهگ هیں . جو آدمی پنجاب سے نچھ ، بهی پرچت هو به جانا هـ که پنجابی کی آبنی آدیک آپ بهاشائیں هیں جو سب صاف ماف ایک هی بهاشا کی الگ الگ شهلیاں دکھائی دیتی هیں .

یه دلیل که پنجابی کا کوئی اینا ساهتهه نهیں اور بھی ادھک نچر دلیل ہے ۔ گرنته صاحب سے بوده کر اونچا اور آپھوکی ساهته اور کیا ہو سکتا ہے ؟ اور اگر شرنگار رس کی چیزیں ہی ساهته مائی جاتی ہوں تو ''هیر رانجہا'' دنیا کے ساهتیه میں کم قیمت کی چیز نہیں ہے ۔ همیں معلوم ہے که جرمنی کے کئی وشودیالیں میں ''مهرزانجہا'' اونچی سے اونچی تگری کے کوسوں میں پڑھایا جانا تھا' اور آج بھی دنیا نے وشودیالوں میں آسے ادر کا استہاں مظاہوا ہے ۔

آزادی سے نتھے ہرس پہلے کی بات شے کہ العور کے بولا عال میں ایک بہت ہوا کہی سیاس اور مشاعرہ عو رہا تھا ، هم بھی موجود تھے، اسیک کوئیوں نے علائی میں اپنی رچائیں پڑھ کو سائیں اور امیک شاعروں نے اردو میں اپنی نظمیں سائیں ، ہولا عال شروناؤں سے ٹیسائیس بھرا ہوا تھا ، اردو اور هندی دونیں طرح کی کویتائیں پینکی پڑ رهی تھیں ، اُن میں سے کوئی بھی سائے والوں کے دارس کو چیھٹی ھبئی معلوم نہیں دیگی تھی ہ اُنکی میں ادعیز عمر کے ایک مسلمان کوی نے جن کا تخلص عمیں آج نک یاد ہے نوی لے جن کا تخلص عمیں آج نک یاد ہے مشتی الہول نہا ہوگی اور مشتی ایک شار حال بھڑھی اور مسلمان میں اپنی درینائیں پڑھی اور مسلمان عور حال بھڑھی اور مسلمان عور حال بھڑھی اور مسلمان میں کو کویتائیں بھر کو اُنہیں بار

نومبر 57°

मीत अनिवार्ष हैं. महाई और बुराई भी अब में होती है. पर कोई इन्कार नहीं कर सकता कि आवें समाज का इस देश के ऊपर बहुत बड़ा एहसान है. अनेक क्षेत्रों में उसके प्रचार और काम की देश को अब भी बड़ी जरूरत है. माई अनश्याम सिंह गुप्त, जो आर्य सार्वदेशिक सभा के अध्यक्ष की हैं स्थित से पंजाब के इस हिन्दी आन्दोलन को चला रहे हैं, हमारे पचास बरस से ऊपर के धनिष्ट मिश्रों में से हैं. उनकी नेकी और सचाई का हमारे दिल में बहुत बड़ा मान है.

हिन्दू सभा के नेता भाई परमानन्द के साथ बरसों हमारा गहरा सन्दन्ध रहा है. भाई सावर कर के साथ हमारा पत्र व्यवहार लोकमान्यतिलक की माफृत सन् 1907 में उस समय हुआ था जब वह इंगलैन्ड में पढ़ रहे थे और वही बैठे बैठे देश की आजादी के सपने देख रहे थे. राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक, गुरू गोलवलकर के गुड, हक्टर हिडगेवार के साथ नागपुर में हमने बरसों गांधी जी के आन्दोलन में मिलकर काम किया है. उन दिनों के असहयोग आन्दोलन में हाक्टर हिडगेवार के शरीर का पुलिस की लाठियों से चुर चूर किया जाना हमें आज तक प्रेम और दह के साथ याद है.

जहाँ तक सिख धर्म का सन्बन्ध है हमने प्रनथ साहब को ध्यान और अद्धा के साथ पढ़ा है. हम धनेक बार कह खुके हैं और हमारे दिल में यह विश्वास जमा हुआ है कि यदि पंजाब ने गुढ नानक ही की शिक्षा पर अमल किया होता तो पंजाब में हिन्दू. गुसितम, हिन्दू-सिख या किसी तरह के भी साम्प्रदायिक मगड़ों का हो सकना असम्भव होता और पंजाब आज साम्प्रदायिक मेल मिलाप की निगाह से सारे भारत का सरताज दिखाई देता.

हमारा दिल हरगिज यह मानने को तथार नहीं है कि किसी भी धर्म, दल या सम्प्रदाय का कोई भी भारतवासी आन बूककर देश में फूट डालना चाहता है या देश के टुकड़े करना चाहता है. दांच दिलों का नहीं है. दोच के इल समम. का या देश की समस्याओं पर सोचने और उन्हें सममने के उन तरीक़ों का है जो आज़ादी से पहले के दां सी बरस तक विदेशी शासक अपने तुच्छ स्वार्थ के लिये हमें सिस्सा ते पढ़ाते रहे.

इस तरह के कगड़ों में आम तीर पर कुछ न कुछ जिम्मेदारी दोनों तरफ की होती है. कुछ न कुछ सत्व भी दोनों तरफ होता ही है फिर भी माटे सीर पर इस एस सिंख को समक सकते हैं जो अमृतसर या जालन्थर में रहकर अपनी मां बहनों के साथ पंजाबी बालता है, पंजाबी को अपनी मातृभाषा, कहता है और चाहता है कि पंजाबी में ही दक्के बच्चों की तालीम हो और पंजाबी में مجعد النبوار ہے ، بھائی اور پرائی نبی سب میں خوتی ہے پر انگار کوئی نہیں کر سکتا کہ آریہ سماج کا اِس دیش کے آوپر بہت ہوا احسان ہے ، انیک چیندرں میں اِس کے پرچار آور کام کی دیش کو آب بھی ہوی خرورت ہے ، بہائی گہشام ستھ گہشہ جو آریہ سرودیشک سبھا کے ادعیش کی حیثیت سے پنجاب کے اِس هندی آندولی کو چالا رہے هیں' همارے پچلس برس سے آرپر کے گہنشتم متروں میں سے هیں ، آن کی تیکی اور سجائی کا همارے دل میں بہت ہوا مان ہے ،

معدور سبها کے قینا بھائی پرمانند کے ساتھ برسوں ھارا گہرا سمندھ رہا ہے۔ بھائی ساور کر کے ساتھ ھارا یکر ویوھار لوکاندہ تاکے کی معرفت سن 1907 میں آسسے ھوا تھا جب وہ انگلفتہ میں پڑھ رہے تھے اور وہیں بیٹھے بیٹھے دیھی کی آزادی کے مہنے دیکھ رہے تھے ، راشڈریہ سویم سیرک سنگ کے ساسلهایک گرو گول والم کے آندولن میں مل کر کم کیا ہے ، اُن دنوں کے آسهیوگ آندولن میں قائل ھذگول کے شریر کا پولیس کی آلیوں سے چور چور کیا جاتا ھمیں آج تک پریم اور درد کے ساتھ یاد ہے ۔

جہاں تک سکھ دھرم کا سمبندہ ہے ھم نے گرفتہ صاحب کو دھیاں اور شردھا کے ساتھ پڑھا ہے ۔ ھم انیک بار آبع چکے ھیں ارر ھمارے دل میں یہ وشواس جما ہوا ہے کہ یدی پنجاب نے گرونانک ھی کی شکشا پر عمل کیا ھوتا تو پنجاب میں ھندو مسلم عندو سکھ یا کسی طرح کے بھی سامپردائک جھکڑوں کا ھو سکنا اسمبھو ھوتا اور پنجاب آج مامہردائک میل ملاپ کی فرادے سارے بھارت کا سرتاہے دکھائی دیتا ،

ھماراً دا مرگز یہ ماننے کو تیار نہیں ہے کہ کسی بھی دعرم دل یا سامہردائے کا کوئی بھی بھارتواسی جان بوجھ کر دیھی میں پھوٹ ڈاننا چاھٹا ہے یا دیھی کے ٹائوے کرنا چاھٹا ہے ، درھی دلورکا نہیں ہے درھی کول سنچھ کا یا دیھی کی سنسیاؤں پر سوچنے اور آنہیں سمجنے، کے اُن طریقوں کا ہے جو آزادی سے پہلے کے دو سو برس تک ودیھی شاسک آپنے تجھ صوارت کے لئے ھمیں ساماتے پوھاتے رہے ،

اِس طرح کے جھاڑوں میں عام طور پر کنچھ کنچھ فہمداری دونوں طرف کی ہوتی ہے۔ کنچھ نہ کنچھ ساتھ بھی دونوں طرف ہوتا ہی ہے۔ پھر بھی موٹے طرز پر عم اس ساتھ کو سنچھ ساتھ ہیں جو امرتس یا جاللدمر میں رہ کر اپلی ماں بہلوں کے ساتھ پنجابی بولتا ہے۔ پنجابی کو اپلی ماتر بھاتا کہتا ہے اور چاہتا ہے کا پنجابی میں۔

हिन्दी और पंजाबीका सन्हा

पंजाब में हिन्दी और पंजाबी का मगड़ा काफी खोरों के साथ चल रहा है. धाम तौर पर वहाँ के हिन्दू दिन्दी के तरकदार हैं और सिख पंजाबी के. इस तरह इस मगड़े ने दिन्दू मिल वैभनस्य का रूप ले लिया है. मामला यहाँ तक बढ़ चुका है कि कहीं, कही शहरों में दोनों दलों के जुलून निकलने हैं जिनमें सिखों के तरक से "टोरी घोती जमना पार." श्रीर हिन्दु श्रों की तरफ से "क्रैंबी उस्तरा है तै गर." के नारं तक बुजन्द किये जाते हैं. कहीं कहीं इससे भी अधिक शर्मनाक और दर्दनाक घटनाएँ हो चु भी हैं. जिन्हें इतिहास जितनी जल्दी जल्दी भूल जावे उतना ही अच्छा है. यद हालत इसी तरह जारी रहा श्रीर वैमनस्य बढ़ना गया ता हर है कि देश के श्रीर श्रविक दुकड़ करने पड़ जावें श्रीर श्रावादी के तक्षवजे. .खून खरावा श्रीर तरह तरह के पापों के वही दृश्य फिर देखेंन पड़े जा सन् 47 में देखने पड़े थे. आजकत की अन्तर राष्ट्राय स्थिति मंदेश इप्जत की, स्वाधीनता श्रीर सुरक्षा रर इनका कितना बुरा भ्रसर पड़ सकता है यह साचन की चीज है. कुछ नक लोंगों की तरफ से मेल और सममीते की कांशिशे' भी जारी है.

इन सारे घरेलू माड़े में कुत्र संस्थाओं और दलों के नाम खास तौर पर सामने आ रहे हैं, जैसे आये समाज, हिन्दू महासभा और जनसंघ, राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ, भकाली दल, कुछ असन्तुष्ट अथवा साम्प्रदायक टाष्ट्र-कोण बात कामसी इन्नाद. खावर है कि कुछ बिदेशी साम्राज्य प्रेमी भी कुछ देशों पूँजी पतियों की मारकत, इमारे इस घरेलू माड़े में दिल बस्पी ले रहे हैं.

विवारों या आदरशों का मतमे द एक अलग चीज है.
गलत विवारों या गलत आदशों पर चलने की कोशिश कर
के क्रीमें मिट भी मकती हैं और मिट चुकी हैं पर हम यह
नहीं मानते कि देश का कोई भी दत्त या कोई भी व्यक्ति
जान बुक्तकर देश में कूट डाजने और दे वासियों को एक
दूसरे से लड़ाने की काशिश करेगा. आर्थ समाज के साथ
हमारा साठ बरस का गहरा सम्बन्ध है. बरसों हमने
लाहौर के द्यानन्द ऐ गलों वै दक कालिज में शिक्षा पाई
है. वहीं से हमने सन् 19:5 में बी० ए० किया था. महातना
हैंसराज के बरगों में बैठकर हम पढ़े हैं. लाला लाजपत
राय के साथ हमारा घनिष्ट सम्बन्ध रहा है स्वामी अद्भा
नन्द का भी हमें प्रम प्राप्त रहा है. देश भक्ति और देशसेवा के सबसे पहले पाठ हमन आर्य समाज हो की गाद में
पढ़े हैं. व्यक्तियों की तरह संस्थाओं और सोसाइटियों की
भिरत्मरें हाती हैं, उनका भी जन्म, जवानी, बुढ़ापा और

هندی اور پنجابی کا جهکرا

پلجاب میں هادی آبر پلجانهی کا جائزا کافی زبروں سے نچل رھا ہے ، عام طور پر وہاں کے عادر عدری کے طرفدار ھیں ارر سکو پنجابی کے ، اِس طرب اِس جبکتے کے هادو سکو ولمنسية كا روب لے ليا هے، معاملة بهال لك بوھ چكا هے كه كهيں کھٹ شہری میں دوئیں داہی کے جلیس تکلتے میں جی میں سکھیں کی طرف سے "دریی دعوتی جمنا پار" اور هندوں كى طرف مع الهنجى أسترا في نيار !" كي نارى تك بللد کھ جاتے میں ، کیدں کہدں اِس سے بھی ادعک شرمناک اور لرداناك كهنائين هو چكى هين؛ جنهين أبهاس جنني جلد اللول جارم اننا هي اچها هے ، بدي يه حالت اِسي طرح جاري رھی اور ویاسیہ بوما گیا نور رہے کہ دیھی کے اور ادھک تکوم کرلے ہو جاریں اور آبادی کے تبادلے یہ حراب اور طرح طرح کے پاپس کے وہی درهی بور دیکھنے پڑیں جو سن 47 میں دیکھنے پڑے تھے۔ آج ال کی انترراشقریہ استھی میں دیھی کی عزت سرادہوننا اور سررکھا اس کا کتنا برا اثر پر سکتا ہے یہ سوچاہ کی چیز ہے . کحی نیک لوگیں ٹی طرف سے میل أور سمجهوتے كى كوشھى بھى جارى ھيں .

اِس سارے گورباو جرکڑے موں کچھ ساستھاؤں اور دانوں کے فلم خاص طور پر سامنے آ رہے ھیں' جیسے آرید سماج' ھندو مہاستھا اور جن سلکھ' راشڈرید سیوک سلکھ' اکالی دل' کچھ استھٹ انہوا سامھردائک درشتی کوروں والے کانکریسی' آنھادی ، خبر ہے کہ کچھ ودیشی سامواج پریمی بھی' کچھ دیشی پولنجی پتیوں کے معرفت' ممارے اِس گھریاو جھکوے میں داجیسی آئے رہے ھیں ،

وچاروں یا ادرشوں کا ست بھید ایک انگ چیز ہے . غلط وچاروں یا فلط آدرشاوں پر چلنے کی کوشش کر کے تو میں معل بھی سکتیں ھیں اور مت چکی ھیں . پر ھم یہ نہیں مائٹے کے دیش کا کوئی بھی ویکئی جان بوجھ کو دیش میں پہوٹ ڈالنے اور دیش واسیوں کو ایک دسرے سے لوالے کی کوشش کرے گا . آریہ سماج کے ساتھ ھمارا ساتھ ہوس کا کہرا سمبندہ ہے ، برسوں ھم لی الاعور کے دیائند اینگلو ویدک کابج میں شکھا پائی ہے ، وھیں سے عم لے سن 1907 میں کیاج میں شکھا پائی ہے ، وھیں سے عم لے سن 1907 میں پوچے ھیں ۔ اول الجہت رائے کے ساتھ ھمارا گیلشت سمبندہ رما پوچے ھیں ۔ اول الجہت رائے کے ساتھ ھمارا گیلشت سمبندہ رما ہے . دیش بوچے ھیں ، اور دیش ساوا کے سبسے بہلے پائے ھم نے آریہ سماج ھی کی بھکتی اور دیش ساوا کے سبسے بہلے پائے ھم نے آریہ سماج ھی کی بھکتی اور دیش ساوا کے سبسے بہلے پائے ھم نے آریہ سماج ھی کی بھکتی اور دیش ساوا کے سبسے بہلے پائے ھم نے آریہ سماج ھی کی گی تھی عمریں ھونی ھیں ، ویکتور کی طرح سنستہاؤں اور سوسائٹیوں گی تھی عمریں ھونی ھیں ، ویکتور کی طرح سنستہاؤں اور سوسائٹیوں گی تھی عمریں ھونی ھیں ، ویکتور کی طرح سنستہاؤں اور سوسائٹیوں گی تھی عمریں ھونی ھیں ، ویکتور کی طرح سنستہاؤں اور سوسائٹیوں گی تھی عمریں ھونی ھیں ، ویکتور کی طرح سنستہاؤں اور سوسائٹیوں گی تھی عمریں ھونی ھیں ، ویکتور کی طرح سنستہاؤں اور دیش عمریں ھونی ھیں ، ویکتور کی طرح سنستہاؤں اور دیش عمریں ھونی ھیں ، ویکتور کی طرح سنستہاؤں اور کی طرح سنستہاؤں اور دیش عمریں ھونی ھیں ، ویکتور کی طرح سنستہاؤں اور کی عمریں ھونی ھیں ، ویکتور کی کور کی دیش ہون کی کور کی دی کور کی دیش کی کور کی دی کور کی کور کی کور کی دی کور کی دی کور کی دی کور کی کور کور کی کور کور کی کور کی کور کی کور کی کور کی کور کور کی کور کور کی کور کی کور کور کی کور کی کور کی کور کور کور کی کور کور کور کور کی کور کور کی کور کور کی کور کور کی کور کور کور کور کور کور کور کور کور کی کور کور کی کور کور کور کور کور کور کور

روس سنریا کے عالم بنا شرط عامار بینچاہ کے الله تهار هوگها ، علهار ووس سه خوید الله گله ، اِس پو . اسریکه نے طرح طرح سے اعتراض کیا ، سیریا ایک آزاد ديع ه . أسى نے جو كجه كيا أسى كا أسنے يورا ادهيكار تها . کسی باعر کی طاقت کر اُس میں دخل دینے کا حق لییں يهنچنا . پهر يهي امريعه کا چه تمبر نوجي جهاني بيرا سيريا ك گذاری بر آدهمکار . سیریا کو خطره هوا . بیجا شرطین سریا کی سرلار کے سلمنے پیش کی جانے اگیں جنہیں ماننے سے سهریا نے پهر انکار کردیا ، روس کو خبر لکی ، سهریا کی آجازے سے ایک روسنی بھڑا بھی اُسی جگاہ پہنیم گیا ، اِن بلکتھوں کو لهتم سمم معامله شايد يههن ير أنكا هواهم ، يور أيور. أو مين بھی سھریا کے معامله پر بحث دو رهی هے . سيريا إس سم دنیا کے نازک اسفانوں میں سے ہے ، پور سیریا کے لوگ بہادر هیں دیس بہت میں اور سچائی اور انصاف أن كي طرب ھے مسارے عرب د یشوں اور عرب دوم کی اُن کے ساتھ همدردی هے . انت میں اِس مما لم میں سیریا کا سر اونچا رق کا . اِس ميں هميں دوئي دک نهيں هوسكتا .

همارا انوبھو یہ ہے کہ دنیا کے سب دیش انت میں سحجہداری سے کام لیں کے اور دنیا کے سب دیش انت میں یہ محجہداری سے کام لیں کے اور دنیا کی هاردک اچھا بھی ہے ۔ دداو سمارے ادومانوں نے وردہ دب بہاں ایا ہو جانے یہ شاید کوئی نہیں کہتا سکنا ، اچھ سے اچھی آشا فرتے وئے بھی اور دل سے سب کا بھلا چاہتے عوثے بھی اعدان م ازمادی نے لئے نیار رها چاہئے ۔

سسندر لال .

8, .10 57

उस सीरिया के हाथ बिना शर्त हथियार बेचने को तैसार हो गया. हथियार उस से खरीद लिये गए. इस पर अम-रीका ने तरह तरह से एतराज किया. सीरिया एक आजाद देश है. उसने जो कुछ किया उसका उसे पूरा अधिकार था. किसी बाहर की ताक़त को उसमें दख्ल देने का हक नहीं पहुँचता. फिर भी अमरीका का है नम्बर फौजी जहाजी बेड़ा सीरिया के किनारे पर आ धमका. सीरिया को खुतरा हुआ. बेजा शरतें सीरिया की सरकार के सामने पेश की जाने लगी' जिन्हें मानने से सीरिया ने फिर इन-कार कर दिया. रस को खबर लगी. सीरिया की इजाजत से एक इसी बेड़ा भी उसी जगह पहुँच गया. इन पंक्तियों को लिखते समय मामला शायद यहीं पर श्रदका हुआ है. यू पन. थां. में भी सीरिया के मामले पर बहस हो रही है. सीरिया इस समय दुनिया के नाजुक से नाजुक स्थानों में से है. पर स्नीरिया के लोग बहादुर हैं , देश-मक्त हैं और सचाई और इनसाफ उनकी तरफ है. सार अरब देशों बीर अरब कीम की उनके साथ हमदुर्दी है. अन्त में इस मामले में सीरिया का सर ऊँचा रहेगा इसमें हम कोई शक नहीं हो सकता.

हमारा अनुभव यह है कि दु नया के सब देश अन्त में सममदारी से काम लेगे और दुन्या बरबादी से बची रहेगी. यह हमारी और दुनिया की जनता की हार्दिक इच्छा भी है. किन्तु हमारे अनुमानों के विरुद्ध कब कहाँ क्या हो जावे यह शायद काई नहों कह सकता अच्छो से-अच्छी आशा करते हुए भी और दिस से सब का मला चाहते हुए भी हमें हर आजमायश के लिये तै गर रहना चाहिये.

हमें पूरा विश्व स है कि यदि कम के बाई न करोड़ लोग, चीच का माठ कमड़ जनता, मारत की चालीन करोड़ तनसं या और एकाया हो है अप का का के अप र तर देश. उनके सब का जाद पृथ्वी के कुल अवच्छे के कार्य में कही के घन देश है. एकता, प्रमानी स्वाह व साथ मिलकर खड़ है और मिलकर खड़ रहें ता सम्माजन बाद, युद्धबाद और पूँजीवाद के यह काले काल बादल है दे बरौर नहीं रह सकते. हमारे इस एके के सामन पेटम श्रीर हम्होजिन बमों के अन्वार पानी होते हुए दिखाई देंगे. दुनिया का भविष्य हमारे इसी एके पर निभेर है. यही आज समय की सब से बड़ी माँग है.

3-10-57

—सुन्दरलाज

इंसारा ज्यान इस तरफ जी जाए बिना नहीं रह सकता कि एशिया के सब से ऊपर इस, उसके नीचे और उससे मिला हुआ चीन, उसके नीचे और उससे मिला हुआ भारत, और इनके इघर-उधर और सब छोटे बढ़े देश हैं. यह सब ख़तरनाक अन्वार अधिकतर कहा जाता है कि इस के ख़िलाफ जमा किये जा रहे हैं. पर यदि कभी यह आग भड़की, या कभी यह फन्दा कसा, तो भारत इसका सहज शिकार हो सकता है. यह भी मानी हुई बात है कि इन पातक हथियारों का असर बहुत दूर-दूर तक जाता है और भायः कोई भी देश इनके ख़तरे से नहीं बच सकता. जो तजरबे आजकल किये जा रहे हैं उनकी बाबत भी कहा जाता है कि उनका अहरीला माद्दा वो घंटे के अंदर सारी घरती का चक्कर लगा जाता है.

भारत न रूसी गुट में है और न अमरीकी में. वह इमानदारी के साथ इस गुटबन्दी से अलग, तटस्थ और ग्रेर जानिबदार है और ग्रेर जानिबदार ही रहना चाहता है. वह अमरीका, इंगलैंड, फ्रांस, रूस, चीन, जॉपान और दुनिया के सब देशों के साथ दोस्ती निवाहना चाहता है. पर ऊपर का चित्र यह साफ, दरशा देता है कि रूस, चीन, भारत और पशिया के लगभग सब देश, यहाँ तक कि पूरव और उत्तर अफ़रीका के देश भी एक कशती के अन्दर हैं. मालूम होता है कि ये सब तरंग तो साथ और डूबेंगे वो साथ.

इम यह भी नहीं भूल सकते कि स्वेज नहर के जगर से इंगलैंड और फ़ांस की कीजें उस समय हटीं जब रूसी सरकार ने हमला करने वालों को यह साफ़-साफ़ आगाह कर दिया कि यदि और अधिक देर तक हमला करने वाले पीछे न हटे तो रूस मिस्न की रक्षा के लिये कदम बढ़ाने पर मजबूर हो जायगा. बहादुर प्रेजीडेन्ट नासिर को एन संकट के समय सबसे बड़ा सहारा रूस ही का मिला. कशमीर के जगर अगर अभी तक आग भड़कने से ठको हुई है तो इसका कम-से-कम एक कारण यह भी जरूर है कि रूसी नेता खुकराचेव जब कशमीर गये थे तो उन्हों ने कशयीरियों से कहा था कि यदि कोई अचानक आगत्ति आ जावे तो पास की पहाड़ी पर से खड़े होकर हमें आवाज दे देना हम आ डाएँगे. रूस के लिये यह कु दरती और लाजमी भी है. रूस के कुछ बड़े-से-बड़े कारखाने कशमीर की सरहद से थोड़ी ही दूर पर हैं.

हाल में घरव देश सीरिया ने जिसे 'शाम' भी कहते हैं, कुछ हिंग्यार खंशदना चाहा. सीरिया की सरकार ने घमरीका से बात की. घमरीकी सरकार ने हिंग्यार वेचने के लिये बेजा और शरारत भरी शरतें लगाई. सीरिया की सरकार ने मानने से इंकार किया. उन्होंने रूस से बात की. فعاراً وهیان اس طرف می جائد بنا البین و سافا که ایشیا کے سب سے آوپر روس اس کے نیچے اور اس سے ما ایشیا کے سب معارت اور اس سے الا هوا بهارت اور ان کے الدھر ادھر اور سب چہرتے بڑے دیش هیں . یہ سب مطرت کا امیار ادھکتر کیا جانا نے کہ روس کے خلف جمع کلے جا رقے هیں ، پر بدی کمی اگ بهرکی یا کبھی یہ بهدا کسا تو بهارت اس کا سہج شکار هو سکتا ہے . یہ بھی ماتی هوئی بات بهارت اس کا سہج شکار هو سکتا ہے . یہ بھی ماتی هوئی بات کے کہ ان گهاتک هتهیاروں کا اثر بہت دور دور تک جاتا ہے اور پرانو کوئی بھی دیش ان کے خطرے سے نہیں بچ سکتا ، جو پرانو کوئی بھی دیش ان کے خطرے سے نہیں بچ سکتا ، جو کہ آن کا زهریا مادہ دو گہائے کے اندر ساری دھرتی کا چکر نگا حانا ہے

بھارت نہ روسی گٹ میں ہے اور نہ امریکی میں ، وہ المانداری کے ساتھ اِس گٹ بندی سے انگ تقیست اور فیو جانب دار ہے اور فیر جانبدار میں رهنا چامتا ہے ، وہ امریکہ اتکلینڈ فرانس، روس، چین جاپان آور دنیا کے سب دیشوں کے ساتھ دوستی نبھانا چامتا ہے ، پر اوپرکا چتر یہ صاف درشا دیکا ہے کہ روس، چین، بھارت آور ایشیا کے نگ بھگ سب دیش، یہاں تک که پورپ اور اتر افریقہ کے دیش بھی ایک کشتی کے اندر میں ، معلوم موتا ہے کہ سب تھرینگی تو ساتھ ،

هم یه یهی نهیں بهول سکتے که سویز نهر کے آوپر سے
اانکلیات اور فرانس کی نوجیں اُس سے هتیں جب روسی
سرگار نے حملہ کرنے والی کو یہ صاف آگاہ کر دیا که یدی
ور ادهک دورتک حملہ کرنے والی پہچھے نہ هتے توروس محر
کی رکھا کے لیئے قدم برھانے پر محبور هو جائیگا ، بهادر
بریزیڈنٹ ناصر کو عین سنمت کے سے سب سے بوا سهارا
رکی هوئی ہے تو اِس کا کم سے کم ایک کارن یہ بھی ضاور ہے
کہ وسی نیما خرشجیو جب کشمیر گئے تھے تو آنہوں نے
کہ وسی نیما خرشجیو جب کشمیر گئے تھے تو آنہوں نے
کم دوسی نیما خرشجیو جب کشمیر گئے تھے تو آنہوں نے
کم دوسی نیما نیما تھا کہ بدی کوئی اچانک آپئی آجارے
تو پاس کی بہاتی پر کہتے ہوکر همیں آواز دے لیا هم آجائیں
گہ ، روس کے لیئے یہ تدرتی اور قوسی بھی ہے ، روس کے کلچھ
بوے سے بڑے کارخائے کشمیر کی موحد سے تهوڑی هی دور پر

حال میں عرب دیش سیریا نے جیسے اشام ہی کہتے ۔
عیرہ کچی متھار خریدنا چاھا ، سیریا کی سرکار نے امریکہ سے ۔
بات کی ، امریکی سرکار نے هتیار بینچنے کے لئیے بینچا اور شرارت بیری شرطیں لگائیں ، سیایا کی سرکار نے ۔
مافانے سے انکار کیا ، انہیں نے روس سے بات کی ،

इस मीके पर हम अमरीका के उन पहादुर सत्याप्रहियों की आर अपनी श्रद्धा और अपना प्रेम फिर से प्रगट किये बिना नहीं रह सकते जो अपनी ही सरकार के इस तरह के तजरबों के विरुद्ध सत्याप्रह करके आप दिन गिरफ्तार किये जा रहे हैं और अपनी जाने तक जासम में डाल रहे हैं. इंगलैन्ड के अन्दर भी बहुत से लोग अपनी सरकार क इस तरह के तजरबों के खिजाफ तरह तरह से आन्दोलन कर के सच्ची बहादुरी, सत्य निष्ठा और मानव प्रेम का सबूत दे रहे हैं.

पशिया महाद्वीप के उत्तर में अनन्त और अगन्य बरफ के पहाद हैं. बाक्नी तीन तरक समन्दर है या योरप की सर-हद. इन तानों तरफ अमरीका की तरफ से जगह जगह पेटम और हाइड्रोजिन बमों के अम्बार लगाए जा रहे हैं. आंकी नावा जापीन का एक बड़ा टापू है जिसके आस पास उसी सिल्सिले के कुछ और छाटे छाटे टापू हैं. श्रोकीनावा पर शुद्ध समरोकी क्रवजा और श्रमरीकी हकूमत है. श्रोकी-नावा में अमरीका की तरफ से ऐटम और हाइडोजिन बमों. का अम्बार जमा है और बढ़ाया जारहा है. आकीनाता सं ज्या हटकर दक्खिन कारिया में अमरीका की तरफ से इसी तरह के दिसक हथियारों का दूसरा अम्बार जमा है. कुछ और नीचे उतर कर ताइवान यानी फारमांसा के टापू मं भी - जहाँ देश घातक च्याँग-कई-शेक अमरीकी संगानों के बल अभी तक नए जनवादी चान की छाती पर तीर की तरह डटा हुआ है - अमरीका की तरफ से पेटम और हाइडोजिन बमों का एक बहुत बड़ा अम्बार जमा है. श्रीर नाचे उतर कर इमी तरह का एक अमरीकी अम्बार दिक्खन बीतनाम में जमा है. श्रीर श्राधक दक्खिन के उन अम्बारों को छोड़ कर जो उन देशों में हैं जो अमरीका और इंगलैंन्ड के साथियों में गिने जाते हैं, पाकिस्तान में भी, भारत की ठीक उत्तर-पच्छमी सरहद् पर श्रमरीका के टैकनिकत न्य्क्ली-यर हाथयारों का अम्बार जमा है. श्रीर अधिक पाच्छम भीर फिर उत्तर की तरफ चलते हुए इसी तरह के अम्बार इसराइल, पिछम-जरमनी बरीरह में जमा किये जा रहे हैं,

यदि हम दुनिया के नक़रों की तरफ निगाह दालें तो यह सब अम्बार एशिया के तीनों तरफ एशिया के गले में एक जबरद्स्त और धातक फ दे की तरह हैं. हा सकता है और आशा की जाती है कि दुनिया के साम्राज्य प्रेमी देशों की सरकारों को अब भी हाश आ जाने और वे दुनिया का सर्वनाश करने से बचे रहें. पर हद दरजे ख़तरनाक मसाला सब तरफ जमा है, कीन कह सकता है कि कब कहाँ किसी एक की खाटी सी भूल या शरारत से इस मसाले में किसी तरह विगारों न पड़ जाने जो सारों दुनिया को और ससकर सारे एशिया को अपने लपेटे में ले ले ?

اُس موقع ہو ہم آمریکھ کے آن ہوادر سٹیاہ گرھیوں کی آور اپنی شردھا اور آینا پریم پھر سے پرگت کئے بنا نہیں رہ سکتے جو آپنی ھی سرکار کے اِس طرح کے تجربوں کے وردھ سٹیاگرہ کر کے آئے دن گرفتار کئے جا رہے ھیں اور آپنی جانیں تک جورکم میں ڈال رہے ھیں ، انکلینڈ کے اندر بھی بہت سے لوگ آپنی سرکار کے اِس طرح کے تجربوں کے خلاف طرح طرح سے آندولن کر کے سجھی بہادری' سٹیمنشٹ اور مانو پریم کا تورت دے رہے ھیں ،

ایشیا مهادیپ کے آدر میں اثنت اور اکبیع برف کے پہار هيں ۽ باقي تين طرف سمادر هے يا يورپ کي سرحد . اِن نياس طرف امریکه دی طرف سے جگہہ جگہہ ایٹم اور ھائڈروجن بموں کے امبار لگائے جارہے میں اُوکی ناوا جایان کا ایک بڑا ٹاپو ھے جس کے اُس پاس اُسی سلسلے کے کچھ اور چھوٹے جھوٹے تاہو ھیں . اوکی قاوا پر شدی امریمی قبضه اور امریکی حکومت هے . اُوکی ناوا میں امریک کی طرف سے ایٹم اور ھائتروجی ہموں کا امہار جمع في اور يوهايا جا رها في . أوكى ناوا سه ذرا عث كر دكون کرریا میں امریکہ کی طرف سے اِمی طرح کے منسک متهیار کا درسوا إمبار جمع هه . حجم اور نريتي ادر كر تانيوان يعنى فارموسا کے ثابو میں بھی سجہاں درھس گیانگ چوانگ کائی شیک امریکی سینکنوں کے بل ابھی تک نئے جن وادی چین کی چهاتی پر تهر کی طرح أنّها هوا هــامریکه کی طرف سے ایتم اور ھائڈروجن بموں کا ایک بہت ہوا امبار جمع فے . اور نیجے اتر کر اِسی طرح کا ایک امریکی امبار دکھن ویتنام میں جمع ہے . اور ادھک داہیں کے اُن امیارون کو چھڑ کر' جو آن دیشوں میں میں جو امریکہ اور انگلینڈ کے سابھوں میں گا جاتے هیں' پاکستان میں بھی' بھارت کی تبیک انر پچھم سرحد پر امریکه کے تیمپیکل نهونلیر هتهیاروں کا امبار جمع هے . اور آدهک پنجهم اور پهر أتر كي طرف چلته عبائه اِسی طرح کے امیار اسرائل پیچیدی جرمنی وغیرہ میں جمع نئے جا رہے میں ،

یدی مم دنیا کے نقشہ کی طرف نگاہ ڈائیں تو یہ سب امیار ایشیا کے تیفری طرف ایشیا کے گلے مرس ایک وہردست اور گھاتک پہندے کی طرح ہے ، عو سکتا ہے اور آشا کی جانی ہے کہ دنیا کے سامراج پریمی دیشرں کی سرکاررں کو آب بھی موشی آجارے اور وے دنیا کا سرونلش کرلے سے بچے رهیں ، پر حد درجے خطرناک مصالحہ سب طرف جمع ہے کرن کہ سکتا ہے کہ کہ کہاں کسی ایک کی چھوٹی سی بھول یا شرارس سے ایس مصالحہ میں کسی طرح چنگاری نے پر جارے جو ساری نے اور خاص کر سارے ایشها کو انہر خاص کر سارے ایشها کو انہر خاص کو الے گھ



ایشیا کے گلے میں بھندا

لگ بیگ سارم سنسار کی جنتا کس میں بانچوں مهادیہوں اور سب دیشوں کے اوک شامل میں' ایک آواز سے یہ مائگ کو چکی ہے، کوتی رسی ہے اور کو رسی ہے کہ ٹیوکلور اور تھا مونیو کلیو ھتیار یعنی ایٹم اور ھائڈروچن ممس کے تجزیے بند کئے جاریں. دنباکے سیکروں بڑے سے بڑے سائنسدانوں' جن میں امریع کے بچے سے بچے سائنسداں شامل هیں' صاف صاف کہتے رہے میں که اِن تجربوں سے مانو جاتی کی تلدرساتی کو سطعت نقصان بهلیم رها ها انظرنزا اور دوسری اِسی طرح کی مهاماریاں جو اجمل جمع جمع بهیل رهی هدی اِن تجربوں عي كا نتيجه هـ؛ اور اكر يه تجريه الجه دنون أور جارى ره كله تو ان کا حب سے خطرناک پربھاؤ ساری مانو جانی کی جلیندریں پر بڑے گا جس کے نتیجےکی شکل میں ہو سکتا ہے که میکورں برس تک بہت سے اِنسانی بدیے عجیب عجیب شکلوں کے عجیب عجیب اور طرح طرح کی انگوں والے یہاں نک که آدیے انسان اور آدھے جانبرا بیدا هوں ۔ پور بھی امریکک روس اور انگلینک تینوں کی طرف سے هانگروچن بموں کے نت نئے تجربے آئے دی دوتے رہتے میں .

روس کے شاسک بار بار بعکیه چیرهیں که اگر امریکه اورانکلیند اس طرح کے تجربے بند کر دیں تو روس بیبی اِنہیں فوراً بند کرنے کو تیار ہے ، روسی سرکار نی طرف سے یہ پرستاؤ بھی ہو، ایبی، او کے ساملے پیش ہے ، پر امریکه کسی طرح حاسی کرنے دو تیار تبید یو ، ایبی، او یا اس کی کمیٹیوں کے سامنے جب کبھی ایس طرح کے پرستاؤ آئے هیں امریکه اور انکلینڈ هزار طرح سے اونکے لگا کر اُنہیں گالتے ہیں ، اِسی طرح کے پرستاؤ اِس سے اونکے لگا کر اُنہیں گالتے ہیں ، اِسی طرح کے پرستاؤ اِس سے بھی بھی ایبی، اور کے سامنے پیش ہیں ،

पशिया के गक्षे में फंदा

लगभग सारे संसार की जनता, जिसमें पाँचों महा द्वीपों और सब देशों के लोग शामिल हैं, एक श्रावाज से यद मांग कर चुकी है, करनी रही है और कर रही हैं कि न्युक्लीयर श्रीर थर्मी न्युक्लीयर इथियारों यानी ऐटम श्रीर हाइडोजिन बमों के तजरबे बन्द किये जावें. दुनिया के सैकड़ों बड़े से बड़े साइन्सर्ग, जिनमें अमरीका के बड़े से बढ़े साइन्सदाँ शामिल हैं, साफ साफ कह रहे हैं कि इन वजरबां से मानव जाति की तन्दु इस्ती का बहुत सखत नुक्रसान पहुँच रहा है, इनम्लुएंचा श्रीर दूसरी इसी तरह की महामारियां जा आजकल जगह जगह फैल रही हैं इन तजरवों ही का नतीजा हैं, श्रीर श्रगर यह तजरवे इन्द्र दिनों श्रीर जारी रह गए ता इनका सबसे खतरनाक प्रभाव सारी मानवजाति की जनने न्द्रयों पर पहेगा. जिसके नतीजे की शकल में हो सकता है कि सैकड़ों बरस तक बहुत से इनसानी बच्चे अजीव अजीव शकतों के अजीव-अजीव और तरह-तरह के श्रंगों वाले, यहाँ तक कि श्राधे इनसान और आधे जानवर पैदा हा. फिर भी अमरीका, रूस और इंग्लैन्ड वीनों की तरक से हाइड्रोजिन बमों के नित नए तजरबे आए दिन हाते रहते हैं, जिनकी खबरें दुनिया भर के अल्बारों में खपती रहती हैं.

हस के शासक बार बार यह कह चुके हैं कि झगर अमरीका और इंगलैंड इस तरह के तजरबे बन्द करदें तो हस भी इन्हें फीरन बन्द करने को तैयार है. रूस. सरकार कीतरफ से यह प्रस्ताव भी यू० एन० को० के सामने पेश है, पर अमरीका किसी तरह हामो भरने को तैयार नहीं. यू० एन॰ बां० या इसकी कमेटियों के सामने जब कमो इस तरह के प्रस्ताव आते हैं अमरीका और इंगलेंग्ड हजार तरह से अबगे लगाकर उन्हें टालत रहते हैं, इस तरह के प्रस्ताव इस सक्य भी यू० एन० आं के सामने पेश हैं.

नाक और ददेनाक इचहार नोब्राह्माली और विहार के क्स्ले आम में दिखाई दिये . गान्धी जी ने अदेले पैदल नोबाखाली की जात्रा शरू की , दरं और सहमे हये हिन्दकों को दिवासा और तसस्ता थी. राजनीत में जिससे 'करा या मरी' के उसूल का उन्होंने चालू किया या उस का फिरके-बाराना जंग का सत्म करने में भी अमल ग्रुह किया. उन्होंने मुसलमानां के दिल को जीवा और नफरत का बुमाने में कामयाब हुए. फिर वह बिहार आये वहाँ मजलूम ससलमानों के थांस पोछे और हिन्दुओं के दिलों में अपनी बहशायना हरकतों के लिये शम पैदा की . सारी किताब में सैकड़ों घटनायें दर्ज हैं जिनसे गान्धी जी की एस बक्त की दिमारी कैंफियत का पता चलता है . किताव क्या है एक अनमाल प्रनथ है. मुल्क की राजनीति, इतिहास. समाज शास्त्र और जन आन्दोल न के वद्यार्थियों को न ।सफ इस किताब का पढ़ना जरूरी है बल्क इसका अध्ययन करना जहरी है. आज भी इमारे दिलों से वह फिरके-बाराना जहर खत्म नहीं हुआ है बल्क तरह-तरह की शक्लों में वह मुल्क की आबो हवा को जहरीला बना रहा है. यह किताब हमें उस जहर को अपने दिलों से निकाल फ कने में महद देगी.

- व० ना० पांडे

सरदार बस्तम भाई पटेल (जिल्द दूसरी अंगरंजी)— मूल गुजराती के लेखक नरहरि डी • परीख; प्रकाशक ऊपर के; सके 492; क्रीमत 5 दपया.

इस किताब के हिन्दी पढीशन की आली चना हम अक्तु-बर' 57 के नया हिन्द में कर चुके हैं. किताब की छपाई सफ़ाई बहुत उम्दा है. हिन्दी और मुजराती न जानने वालों के लिए सरदार पटेल की । जन्दगी और उनके महान् कामों के सममने में यह अंगरेशी ऐडीशन मदद देगा.

वि० ना० पांडे.

शाहकार ; माहाना रिसाला; क्रीमत १); निकालने वाले मक्तवा-शाहकार-इलाहाबाद.

इलाहाबाद की अदबी फिजा में कितने ही रिसालों ने जन्म लिया और मीठी नींद सो गये. इस वक्त कोई राज-नामा यहाँ से नहीं निकल रहा है. रिसालों में किसी को मयारी नहीं कहा जा सकता.

शाहकार का पहला नम्बर मेज पर है, पढ़ने के बाद यक गूना आस्वर्गी हुई. हुनर साहब की मेहनत और तज-स्मुस की दाद देनी ही पड़ेगी. बाक़ई इसके देखने के बाद साबित होता है कि इस रिसाले में अदब बराये अदब से लेकर अदब बराये जिन्दगी सभी कुछ, बिला तख़सीस मौजूद है. यानी मुमताज शीरी के 'नया जहन्तुम' से लेकर

[बाकी सफा 236 पर]

ارر دردناک اظهار نوانهائی ،اور بهار کے قتل عام دکھائی دیئے ، گاندھی جی نے اکیلے بعدل تواکیائی کی ماترا شروع کی . قرم اور سهم دوق هندوں کو دلاشا اور کسلی دی ۔ راہے ٹیٹی میں جس 'درو یا مرو' کے اصول کو أنهور له چال كيا تها أس ير فرقه وأرائع جنگ دو ختم درا میں بھی عمل شروع کیا ۔ اُنھوں نے مسلمانیں نے کو جیتا اور تغرت کو بعجهائے میں کامیاب ہوئے . پھر وہ بہار آئے وہاں سالوم مسلمانیں کے آنسو یونجھے اور مندوں کے داہر میں اپنی مدهدات حرکترں کے لئے شرم پیدا کی ۔ سارمی کتاب میں سيعور کيتنائين درج هين جن سے کاسهي جي کي اُس وتت کی دماغی کیفیت کا یته چلتا ہے . کتاب کیا ہے انمول گرنته ہے ملکم کی راب نیتی انہاں سماج شاستر اور جن آندوان کے ودیارتھیوں کو نہ صرف اِس کتاب کو پڑھنا ضروری ہے . آج يرى همارم دلول سے وہ فرقے وارانه زهر خام نبوس هوا هے بلكه طرے طرح کی شکاوں میں وہ ملک کی اب وہوا کو زھریا بنا رها هے يا يه كتاب همين أس زهر كو اين داس سے نكال پيكنے میں مدد دیکی .

ـــرى. نار پاندے .

سردار رابع بھائی پتیل (جاد دوسری انکریزی) موال گجرانی ایکیک نرهیر آی . پاردی ایرکشک اویر والی مفحم 492 : قیمت کا رویه .

اِس کاب کے علمی ایڈیشن کی الوچنا هم اکتوبر 57 کے ایاملد میں کو چکے هیں۔ کتاب کی چپھائی صفائی بہت عمدہ ہے۔ مندی اور گجراتی نا جاناء والوں کے لئے سردار پائیل کی زندگی ارر اُن کے مہان کاموں کے سمجھنے میں یہ انکریزی ایدیشن مدد

--ری نا پانده و

شنه کار؛ ماهانه رساله؛ قدمت ایک رویه ؛ نکالغه واله قدمت ایک رویه مکته شاه کار الدآباد .

التآباد کی فا میں کننے هی رسالے اور اخبارات نے جنم ایا اور میڈیی نید سو گئے ۔ اِس وقت کوئی روزنامت یہاں سے نہیں نکل رہا ہے ۔ رسالوں میں نسی کو معیاری نہیں کیا جا سکتا ۔

شاهکار کا بھا تمہر میز پر ہے ، پڑھنے کے بعد ایک گوئہ اُسودگی ہوئی ، ہنر صاحب کی محمنت اور تجس کی داد دینی پڑےگی ، وانعی اس کےدیکھانے کے بعد ثابت ہوتا ہے کہ اِس رسالے میں اور پرانے ادب سے لیکر ادب برائے زندگی سبھی دچھ یا تحصیص مرجود ہیں ، یعنی ممتاز شدریں کے نیا جہام کے لیکو

[باتی محمد 368 پر]



MAHATMA GANDHI, The Last Phase; लेखक प्यारेलाल; जिल्द पहली; प्रकाशक-नवजीवन प्रेस, श्रह-मदाबाद-14; सके 750, कीमत 20 रुपया; चवालीस सकों में सी से प्यादा तसवीर, काराज मोटा और उग्दा, छपाई सुन्दर और साक; खादी की जिल्द और जूबसूरत इस्ट कदर.

किताब, जैसा कि बहुत मुनासिष था, श्री महादेव देसाई को समर्पित है. शुरू की योजना यही थी कि गान्धी जी की आटोबायोमाफी के सिलसिले को महादेव भाई पूरा करेंगे. इसके लिये उनके पास बेहद सामगी थी लेकिन मौत ने उन्हें झीन लिया और वह जिम्मेवारी प्यारे-लालजी के कन्धों पर पड़ी. पुस्तक की भूमिका 10 सफ़ों में डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद ने लिखी है.

जैसा कि पुस्तक के नाम से साफ है इसमें गान्धी जी की जिन्दगी के आखरी पहलू को दर्ज किया गया है. पुस्तक उस दिन के बयान से शुरू होती है जब भारत छोड़ों आन्दोलन के बाद आगा खाँ के महल से गान्धी जी की नजरबन्दी की क़ैद से रिहाई होती है. और खत्म होती है उस बक्त जब गान्धी जी फ़रवरी 1947 में नांआखाली से लौटकर बिहार आते हैं. पुस्तक को पाँच हिस्सों में बाँटा गया है। पहले हिसे में छै, दूसरे में छै, तीसरे में छै, चौथे में पाँच और पाँचवें में पाँच अध्याय हैं. आखरी हिस्से में गान्धी जी के खास लेखों का संमह है. पुस्तक के आखीर में नोट, ग्लासरी और इन्डेक्स जोड़कर पुस्तक को बहुत ही काम की चीज बना दिया गया है.

किताब की इस पहली जिल्द में गान्धी जी की उन अजी अश्रात को शिशों का जिक है जिस में उन्होंने फिरके-बाराना तहरीक के खिलाफ जबर्दस्त लिंदाई लड़ी. यह वह जमाना था जब ब्रिटिश कूटनीति ने हिन्दुस्तान के हिन्दू और असलमानों के दिखों का कामयाबी के साथ फाड़ दिया था और अस्क के बटबारे की दाग्बेल डाल दी थी. जारों उदफ हिन्दू असलमानों के खूनी देंगे हो रहे थे जिनके खीफ MAHATMA GANDHI, The Last Phase;

جاد پہلی ؛ پرکافک نوجیوں پرلیس احددآباد 14 اصفحہ 750 ؛ قیمت ویادہ تصویریں کا فیصلہ کا رویٹے؛ چوالیس صفحوں میں سوسے ویادہ تصویریں کافل موٹ اور عددہ چھپاٹی سلدر آور صاف کادی کی جلد آور خوبصورت ڈسٹ کور .

کتاب جهسا که بہت مناسب تها' شری مهادیو دیسائی کو سمریت ہے ۔ شروع کی یوجنا یہی تهی که گاندهی جی کی آئو بایو گرانی کے سلسلے کو مهادیو بھائی پورا کریں گے ۔ اِس کے لئے اُن کے پاس بےحد ساسکری تھی لکیں موت نے اُنھیں چھیں لیا اور زمعداری پارے الل جی کے کندهوں پر پڑی ۔ پستک کی بھومیکا 10 صفحوں میں ذائقر راجیادر پرساد نے لکھی ہے ۔

جیسیا که پستک کے نام سے صاف ہے که اِس میں گاندھی جی کی زندگی کے آخری پہلو کو درج کیا گیا ہے ۔ پستک اُس دن کے بیان سے شہرع ہرتی ہے جب بھارت چھوڑو آندوان کے بعد آغا خان کے متحل سے گاندھی جی کو نظربلای کے قید سے رھائی ہوئی ہے ، اور ختم ہوتی ہے اُس وتت جب گاندھی جی ذروری 1917 میں نواکھائی سے لوت کو بہار آتے ہیں ۔ پہلے حصے میں چھا دوسرے میں چھا تیسرے میں چھا چوتھ میں پانچ اور بانچوں میں پانچ اور بانچوں میں پانچ ادھیائے ہیں . آخری حصے میں گاندھی جی کے خاص لیکھوں کا سنکرہ ہے . پستک کے آخیر میں نوسائی کی ہوت ھی کام کی جھی چھا دیا گیا ہے ،

کتاب کی اِس پہلی جلد میں کاندھی جی کی عظیم الشان اُن کوششوں کا ذار کر ہے جس میں اُنھوں نے فرقہ وارائت تعدریک کے خلاف زبردست الوائی لڑو ۔ یہ وہ زمانہ تیا جب برٹھی کوٹ نیٹی نے ھندستان ہے ھدو اور مسلمانوں نے داہی کو کامیابی کے سابھ پہاڑ دیا بیا اور منک کے باوارے کی دائے ۔ بیل قال دی تھی ۔ چاروں طرف ھندو میں ایک خوقالک میں بیابالوں کے کوئی دائے ھو رہے تھے جس کے خوقالک

"आदमी को न्नाहिए कि अपने मन पर सक्ती करें और उसे संयम से रखे. अपने दिल की आँख खोलना जरूरी है. अगर नाहरी भाँखों में ईश्वर को देखने की ताकत होती तो जानवर भी ईश्वर को देख लेते."

[16]

चौंकें तो 'मुहिव' ख्वाबे परीशाँ से कभी, बाज आएँ तो खूरेजी-ए-इन्साँ से कभी, सूफी की मए साफ जो चक्के यारोप, हो बादा-परस्ती भी न शैताँ से कभी!

स्त्राचे परीशाँ—दुःस्वप्न, खूरेजी—खून बहाना, सूफी—वेदांती, मए साफ़—साफ़ शराब (यहाँ तात्पर्य प्रेम से है), बादा परस्ती—शराब पीना (जो इस्लाम में पाप है), शैतान—इंश्वर का विरोधी फरिश्ता,

"ऐ 'मुहिब,' काश दुनिया के लोग इस (लड़ाई के) दुःस्वप्न से चौंकते और आद्भी का खून न बहाते. अगर योरोप वाले सूफी के प्रेम का अनुभव करें तो उनकी कौन कहे शैतान तक से पाप न हो सके." اور آدمی کو چاهائے که اپنے میں پر سطعتی کرے اور آسے سلیم سے رکھے ، اگر باہری آنکھوں ان رکھے ، اگر باہری آنکھوں میں ایشور کی دیکھنے کی طاقت ہوتی تو جانور بھی ایشور کو بیتے گئی۔

(.16)

چوکیں تو صحب خراب پریشاں سے کہی۔ ا باز آئیں۔ تو خرنریوئی اِنساں سے کبھی ا صونی کی ملے صاف جو چھے دررپ ہو بادہ پرستی بھی نہ شیطان سے کبھی آ

خوأب پریشاں سدایی سوپی خوں ریزی سخون بہانا ا بونی سویدانتی مئے صاف شراب (یہاں تاپ پر ایم ریم سے ہے) بادہ پرستی سشراب پینا (جو اِسلم میں پاپ ہے) شیطان ساایشور کا وردوعی فرشته .

''الے 'محب' کاهی دنیا کے لوگ اِس (لوائی کے) دکھی موپی سے چونکنے اور آدمی کا خون نه بہاتے ، اگر ہورپ والے موفی کے پریم کا انوبھو کریں تو اُن کی کرن کھے شیطان تک سے اپ نه هو سکے ۔''

[सक्। 238 से आगे]

खुरैजा मस्तूर के 'डोली' तक इस रिसाले में शिक्षकु रह-मान और कशमीरी लाल जाकिर भी दोश-बदोश हैं लेकिन मंजिलें सलग-सलग.

यह रिसाला उन लोगों के लिये तो एक नेमत साबित होगा जिनके पास न इसने पैसे हैं कि सारे रिसालों को ख़रीद कर पढ़ सकें और न इतना बक्त जो इनके तलाश करने में सभी हो.

राजलों का इन्तकाव अब्दा और नजमों का यनीमत है, बेहतर होता कि शाहकार में इतमी और तकीदी मजा-मीन भी शामिल किये जायें. फिराक साहब का चार्टिकिल सलबत्ता कुछ इस किस्म का है. रिसाले की खपाई और साइज का हमारे एडिटर साहब ने, खास क्याल रखा है. और क्रीमत के लिहाज से 144 सकहों का रिसाला सस्ता ही कहा जायेगा,

[منحه 238 = أكم]

خدہوء مستور کے قولی تک ، اِس رسالے میں شفیق الرحمان اور کشمیری الدال ذاکر بھی دوش بدرہ میں ، لیکن منزلیں الگ الگ ،

یہ رسالہ اُن لوگوں کے لئے تو ایک نعمت ثابت ہوگا جن کے پاس نے اِتِلے پیسے ہیں کہ سارے رسالوں کو خوید کر پڑھ سکیں اور نے اتلا وقت جو اِن کے تقص کرنے میں صرف ہو ۔

فزلس کا انتخاب اچها اور قطموں کا غلیمت فی بہتر هوتا که شاهکار میں علمی اور تلقیدی مفامین بھی شامل کئے جاتے ، اور تقیدی مفامین بھی شامل کئے جاتے ، رساله کی جیائی اور رسائز کا همارے انتہار صاحب نے خاص خیال رکیا فی اور قیمت کی لحاظ ہے 144 صنحوں کا رساله سستاهی کیا جائیگا ،

—मुन्ने माई. . द्वांध औ

(236)

157 year

वनाइयाद सहिय

"कोई देश सिर्फ इसलिए हानि नहीं घठाता कि इसमें कई घर्म हैं. न धार्मिक भेदभाव की चाग किसी को जला सकती है. काई चाहे (हन्दू हो जाए चाहे मुसलमान, धर्म के दक्तने से देश नहीं बदलता."

[13]

हिन्दु भो-मुसलमाँ में तश्रस्पुत जो नहीं, तो कसरते मजहत्व से नहीं हर्ज कहीं, है नाम मुसलमाँ का 'मुहिन' स्वय्यलाल भीर नाम है हिन्दू का यहाँ गंगादीन!

तत्रस्मुव-धार्मिक भेदमाव, कसरत-अधिक होना,

"अगर हिन्दुओं और मुसलमानों में भेदभाव न हो तो धर्मों की संख्या में अधिकता होने से कोई हर्ज नहीं है.हमारे यहाँ तो मुसलमान का नाम सैयय्दलाल होता है और हिन्दू का गंगादीन

[14]

इनसान में कमाल है दुई से बचना, हैवां को नहीं दानिशे तौहीदे खुदा, हैवाँ से भी अरजल है 'मुहिब' वह इनसान, जो खुल्क को और इक को सममता है जुदा!

कमाल —पूर्णता, दुई—दो होने की भावना, हैवाँ (हैवान)—पशु, दानिश—समक, तोहीद—एक होना, अरजल—पतित,गिरा हुआ, ख़ल्क—दुनियाँ, हक्र—ईश्वर,

"आदमी की पूर्णता इसी बात में है कि बह ईश्वर और उसकी सुष्ट का अलग-श्रलग न सममे. जानवर का भग-वान के एक हाने की समम्म नही है. लेकिन ऐ 'मुह्ब' वह आदमी तो जानवरों से भी बुरा है जो ईश्वर और उसकी दुनिया को एक दूसरे से अलग समम्मता है.

[15]

कुछ नमस पे अपने तो जका की होती, कुछ चरमे बसीरत भी तो वा की होती, इन आँखों में गर नूरे खुदा-वीं होता ! दैवाँ का भी मारिकृत खुदा की होती!

नम्स--मन, जफ़ा-सब्ती घरमे बसीरत-दिल की घाँख, बा-खुली, र्र-रोशनी, ख़ुदाबी-खुदा का देखन बाला दैवाँ-जानबर, मारिफ्त-ईश्वर के पास होना,

جھٹی دیش مرف اِس اللہ جانی نہیں آٹیا داکھائی میں کی دور جلا کی آگ کسی کو جلا مکلی ہے۔ کار کی آگ کسی کو جلا مکلی ہے ۔ کرٹی چاہے جانہ چاہے مسلمان ، دھرم کے بدلنے سے دیش نہیں بدلے کا گ

(13)

هدوو مسلبان مین تصب جو نیین؛ او کثرت مذہب سے نہدن ھرے کہیں؛ اللہ اللہ مسلم کا 'محب' سید الل ار تام ہے هدو کا یہاں گٹا دین!!

تصب سجمارمک بهرد بهاؤا کثرت ادهک دونا .

دواگر هندو أو مسلمان ميں بييد بهاؤ نه تو دهرموں كى سنكهما ميں أدعك هونے سے كوئى عوج نهيں هے ، همارے يہاں تو مسلمان كا نام سيد لال هوتا هے أور هندو كا كنكا إدين .''

(14)

اِنسان میں کال ہے دوئی سے بچنا' حیواں کو نہیں دانس توحید خدا' حیواںسے بھی ارزل ہے'محب'وہ انساں جو خلق کو اور حق کو سنجینا ہے جدا اِ

والمحركي بورنتا أسى بات مين شاكه ولا أيشور أور أس كي سرشتي كو أبك الك له سنجهد ، جانور كو بهكوان كے أيك هوئے كي سنجه نبين ش ، أيكن أحد المحدث ولا أدمى تو جانوروں مد بھى برا شاجو أيشور أور أس كى دنيا كو أيك هوسور مدانك سنجهتا ش ."

(15)

المساسين جفا سطای چشم بصهره حل کی آنکی واسطهای المرسروه ای خداید سخدا کو دیکهای والا حیوال سیالرو معرفت ایشور کے پاس درتا .

सन्ते हैं यह फिस बार्च पे हिन्दू मुस्सिम क्या इनका ज़ुदा और है और क्षका और !

रक्रजीव्-अंधानुकरण, मेडिया बसान

"दुनिया में भेदिया धसान का बोलवाला है, ऐ युद्धिय हम्दुनोग मजह्य पर कुछ भी गौर नहीं करते. अखिर यह हिन्दू मुसलमान किस बात पर लड़ते हैं ? क्या दोनों के देखर अलग अलग हैं,"

(10)

हिन्दू भो- मुसंतमाँ के नहीं दो हैं .खुदा, दोनों में हैं इक शान खुदाबन्दे उला, जब इनका बतन एक है और शक्तें एक क्यों त.फरिका-ए-दीं से हैं दोनों यह जुदा।

.खुदाबदे उला—महान रंश्वर, वतन—देशत फरिका— भेद माब, दीं (दीन)—धर्म

'हिन्दू और मुसलमान के खुदा अलग-अलग नहीं हैं दोनों में एक ही भगवान की महानता के दश न होते हैं. जब हिन्दू मुसलमान दोनों का देश और उनकी शक्ते' एक ही हैं तो केवल वर्ष अलग होने से यह होनों अलग-अलग क्यों हैं ?"

(11)

कहने से रक्ती को 'मुहिव' हैं भड़के, मिल जायेंगे फिर इस्मी हुनर में पड़के, हिन्दू-झो-मुसलमां में तनाफर, क्यों है, हैं मादरे हिंद के यह दोनों लड़के!

रकीय-दुश्मन, इल्मो हुनर-विद्या वनाफर-नकरव, मादरे हिंद-भारत माता

"दे 'मुहिब' यह (हिन्दू और मुसलमान) दुश्मनों के कहने पर अबके हुए हैं (और आपस में लड़ते हैं) विद्या और समक आने पर यह एक हो जायेंगे. इन दोनों का एक कुसरे से नफ़रत क्यों है ? दोनों ही भारत माता के पुत्र हैं."

(12)

कसरद से मचाहिक के पिषताता नहीं मुस्क, आतिश से वधस्तुव के भी अलता नहीं मुस्क, हिन्दू हो जाय या मुसलमान हों जाए यक्षहक के बद्दाने से क्दलता नहीं मुस्क.

क्सरत—अधिक होला, मजाहिक्यर्म (मजहब का बहुवचन), हिंदा—ब्याग, तजस्युव—धार्मिक मेदमाब, الرئے میں یہ کس بات سے مدور مسلم کیا اور ا

بقليد-اندها نوكرن بهيريا دهسان .

وادنیا میں بھیوہا دھسان کا بول بالا ہے۔ آہے محصب م لوگ مختب ہے بھی خور تبھیں کرتے ، آخر یہ ہندو مسلمان کس بات پر لوتے ہیں ؟ کہا درنہیں کے ایشور الگ الگ ہیں ؟ کہا۔

(10)

هندو و مسلمان کے نہیں هیں دو خدا کا درنوں میں ہے ایک شان خداوند عالا جب ان کا وطن ایک ہے اور شکلیں ایک کیوں نفریقہ دیں سے هیں دونوں یہ جدا ا

خداولد علامهان ایشور وطن ده م تغریقه بهید بهید بهاو دیس) دهرم .

ورهندو اور مسلمانوں کے خدا الگ الگ نہیں ھیں ، دونوں میں ایک ھی بھاران کی مہانا کے درشن ھوتے ھیں ، جب ھندو مسلمان دونوں کا دیھی اور اُن کی شکلیں ایک علی ھیں تو نیول دھرم الک ھونے سے یہ دونوں انگ الگ کیں ھیں ہے 36

(11)

کہنے سے رقیبرں کے 'محصب' میں بھڑک' مل جائیں گے بھر علم و ھنر میں پڑ کے' ھلدوؤ مسلماں میں تنافر کیوں ہے' ھیں مادر ھند کے یہ دونوں لڑکے ا

رقیب-دشمن علم و هلز-ودیا تنافر-تفوت مادر هند-بهارت ماتا .

"لم المتحب" يه (هذو أور مسلمان) دشملوں كے كہلم پو بهركے هوئے هيں (اور أيس ميں لرتے هيں) رديا أور سمجه پانے پر يه أيک هو جائيں گه . إن دونوں كو أيک دوسوم سے نفرت كيوں هے ؟ دونوں هي بيارت مانا كے پتر هيں ."

(12)

کثرت سے مذاهب کے پاکھلتا نہیں ملک آھی سے تصب کے یعی جلتا نہیں ملک مادو ھوجائے یا مسلمان ھو جائے مذہب کے بدلتے سے بدلتا نہیں ملک إ

کثرت ادهک هونا مناهب دهرم (مذهب کا بهو (بعون أنفرساك تصب سدهارمک ست بهدر.

यह तेरी समक भीर है. भाँकों का कस्र बुत भी है वही और खुदा भी है वही !

गुल-फूल, बुत-मृति

"बह (ईश्वर) मुक्तने मिला भी है और जलग भी. वही बुलबुल है, वही फूल और हवा भी वही है । मृति और खुदा एक ही हैं. अगर तू इसे न समक पाए तो यह तेरी समक और भाँखों का क्रस्र है।"

(7)

दिल बालता हर दम है 'मुहिब' अल्लाह. दो देखने की एक को मुतलक नहीं .खू, वह सबको सममता है वही जाते घहद सकी को बराबर है ससलमाँ हिन्द!

अस्लाहु--ईरवर का नाम, मुतलक--विल्कुल ख्—चादत, जाते बहद-एक ईश्वर. सूर्फा-मुखलमानों में बेदांत जैसा एक मार्ग.

पे 'महिब' हमारा दिल तो हर समय ईश्वर का नाम लिया करता है. इम जिसे ईश्वर और शृष्टि को) एक सनमते हैं उसे दी समफने की हमें बिलकुल आदत नहीं है, सू.फी के लिए हिन्दू मुसलमान बराबर हैं क्योंकि उसे तो सभी लोग उसी ईश्वर के रूप दिखाई देते हैं."

(8)

है तफारिका-ए जातो सि.फत बहरात में. अशिया-ए-जहाँ एक है सब वहदत में, जार में है, न तोपों में, न वह लश्कर में, जो जोरे खुदाई है 'मुहिब' उलफत में !

तिकरका-भेद, लड़ाई, जातो सिफ्त -व्यक्तित्व और गुण बहरात - जंगलीपन अशिया-ची में (शै का बहुबचन) बहदत-ईश्वर का बर—धन, एक जोरे खुदाई - ईश्वरीय उलफ त-प्रम ताकत.

५(ईरवर के) व्यक्तित्व और गुणो पर मागका जंगलीपन के कारण उठता है. सारी चीम्बें उसी एक भगवान का रूप हैं इसलिए एक हैं. ऐ 'मुहिन' जो ईश्वरीय ताकत प्रेम में पाई जाती है वह धन दौलत, ताप, लश्कर किसी में नहीं,"

(9)

तकतीद का दुनिया में मचा है क्या शोर, करडे नहीं मधहब पे 'मुहिब' हम इब सीर,

. सबस्पर '57

رر به الزمر سيع أور هر المون كا فمر 🚐 احد بھی 🛳 رهی اور شرا بھی جد وهی ا

جداسالک تل سيبري بت سمررتي .

الالونة (ايشرز) معين في أملا يهي هي اور الك يهي . وهي الله الراد أله نه سمعه يائه تو يه تيري سمعه أور أنجون كا

> (7) دل يولكا هو دم هے "محب" الله هو" دو دیکھاری ایک کو مطابق لیوں خوا

> ولا سنب كو سمعهما في وهي ذات احد صوفی کو پرایر هے مسلمان هادر!

ألله هو-ايشور كا نام مطلق -بالكل خو-عادت ذأت أجدِ- المعور مرنى - مسلمانين مين ويدانت جيسا ايك

"اليه امحيب عمارا دل تو هر سده ايشهر كا ثام لها كرتا هے . هم جسم (ایشور اور سوشتی کو) ایک سمجهتم هیں آسے دو ممجهل أي هدين بالكل عادت فهدن هي موفي كي الي هندو مسلمان درنوں برابر هيں کيونک اُے تو سبھي لوگ اُسی ایشور کے روپ دکھائی دیتے عیں "

(8)

هے تذریقه ذات منت میں ا الثياء جهان ايك هين سب رحدت مين زرمیں هے تم توبیل میں نم ولا لشکر میں جُوْ زور خدائي هـ امحب اللت مهن!

المريغة المراثي أن أت -ره صفت -ريكلتون أور كن ا وحنقمت - جنكلي ين أه ياد- چهرين (شه كا بهو يحين) زر-دهن وحدت -ايشوركا ايك هونا وور خدائي -ايهوري طافت ا القنصىسىيويم ، ز

"(ایشور کے) ویکنتو اور گنوں در جهکڑا جنکلی ین کے کرن اتها هے . ساری چدریں اُسی ایک بهکوان کا روپ میں . اے 'محب' جو ایشوری طانت پریم میں پانی جاتی ہے وہ دهن دولت ، توپ اهام کسی میں نہیں ، ا

(9)

🧓 🧢 بنتليدي كاردتها مين منها هاكها شوراً و الله الله الله الله الله المنتسبة المكتبية عراقة

'संसार की प्रत्येक विद्या देश्वर को हमसे जिपाती है, हम किताबों को पढ़ कर के (देश्वर के बारे में) शंकाएँ करने लगते हैं. यह (किताबी) योग्यता तो दर अस्त अंधापन है, ऐ 'मुहिब' दुनिया के लिए जो गेशियारी है वह सबसे बड़ी नींद है।"

(4)

है कुंफ 'मुहिब' शैर गर उसको माना, हमने तो बुतों को भी खुदा ही जाना, तश्बीह से ग्रफलत का नतीजा यह हुआ, मूसा ने जो देखा भी तो क्या पहचाना!

कुफ्-अधार्मिकता, तश्वीह—उपमा, राष्कृतत्वेपरवाही, सुत्त-मूर्ति.

"म्सा—एक नबी, हजरत मूसा ने ईश्वर से प्रार्थना कीयों कि तू मुक्ते अपना मुख दिखा. ईश्वर ने उनके बहुत कहने सुनने पर अपना चेहरा तो नहीं सिर्फ जस्वा (दीप्त) दिखाया. लेकिन हजरत मूसा इसे भी देखने की ताब न ला सके. वे बेहाश हो गए और जिस तूर पहाड़ पर वे खड़े थे वह जल गया)."

"ऐ 'मुह्ब' ईश्वर से किसी को अलग सममना अधार्मिकता है. हम ता मूर्तियों में भी ईश्वर को देखते हैं. ईश्वर के उपनामों पर ध्यान न देने का फल यह हुआ कि मूखा ईश्वर को देखकर भी नपहचान सके "

(5)

पद में हैं मखसूक के वह जाते खुदा, बेपदां नजर आए यह इमकान हैं क्या, तरबीड का होता जो 'मुहिब' कुछ भी मजाक सुनते न शजर से लनतरानी मूसा!

मखलूक—दुनिया, इमकान—संमावना, तश्बीह—उपमा, मजाक—रुचि,

शजर—पेद, जनतरानी:—ईश्वर का रहस्य (इजरत मुखा को एक पेद ने ईहवर का रहस्य बताया था).

"ईरवर संसार के ही पर्व में छिपा है, वह बेपर्वा (बानी दुनिया से अलग) नहीं दिखाई दे सकता. ऐ 'सुहिब' मूसा में अगर ईरवर को उपनामों के लिए कुछ इचि होती तो (हर एक चीज में ईरवर को न देखकर) वे पेड़ से क्यों उपदेश लेते।"

(6)

बह मुमसे मिला और जुदा भी है वही, बुलबुल भी है गुल भी है, हवा भी है वही,

والسنسار کی پرانک دو یا آبھور کو همے جبھائی گھ ، ام کتابیں کتابیں پڑھ کر کے (آبشور کے بارے میں) شکائیں رئے لکتے هیں ، یه (کتابی) یوگٹا تو درامل اندهایی ہے ، استحب'' دنیا کے لئے جو هوشیاری ہے رہ سب سے بڑی ہند ہے ،''

(4)

ھے کفر ''محب' غیر گر اُس کو مانا' هم نے تر پتیں کو بھی خدا هی جانا' تشبیع سے غفلت کا نتیجہ یہ ہوا موسول نے جو دیکھا بھی توکیا پہچانا!

کنردادهارممتهٔ تشبیتایان فظمت بروانی متسمرتی

موسی ایک نبی (خضرت ، وسی نے ایشور سے پرارتهناکی تھی کہ دو معجم اپنا مع دیا ۔ ایشور نے اُن کے بہت کہا سننے پر اپنا چہرہ تو نہیں جلوہ (دیپتی) دنھایا ، ایکن حضرت موحی اُسے بھی دیکھنے کی تاب نے لاسکے ، وسے بےھوش ہو گئے اور اُس طور پہار پر وسے کرتے تھے وہ جل گیا) ، "

''اے 'محب' ایشور سے کسی کو الگ سمجھنا ادھارسکتا ہے ۔ ھم تو مورتھوں میں بھی ایشور کو دیکھتے ھیں ، ایشور کے اپ ناموں پر دھیاں نہ دینے کا پیل یہ ھوا که موسیل ایشور کو دیکھ کو بھی نہ پہچاں سکے ۔''

(5)

پردیم میں هے مطلق کے وہ ذات خدا' پرددہ نظر آنے یہ امکان هے کیا' تشبیعکا مرتا جو'محب'کچھ بھی مذاق سنتے نم شجو سے لنترانی موسیل!

مغلوق دنها امكان سمبهاؤنا تشييم إيما مذاق دوجي شجر سيهر

لنترائی-ایشور کا رهسیه (حضرت کو ایک پیتر نے آیشور کا رهسیه بنایا تها).

''ایشور سنسار کے ہی پردسے میں چھھا ہے ، وہ پہروہ (یعنی دنیا سے اگ) نہیں دکھائی دسے سکتا . اسے مصحب مرسیل میں اگر ایشور کی آپ ناموں کے لئے کچھ روچی ہوتی تو (ہر ایک چیؤ میں ایشور کو تع دیکھ کر) وسے پھڑ کیوں ایدیش لیتے ۔''

(6)

وہ معجم سے ملا اور جدا بھی ہے وہی' پلیل پہنے ہے، کل بھی ہے، ہوا بھی ہے وہی'

रुवाइयात मुहिब

श्री 'मुहिब'

(1)

श्रास्ताह कहो, राम कहो, गांड कि रब, 2 : हर नाम उसी का है "धुहिब" कर न श्राजव" हिन्दू-श्रा-मुसलमाँ-श्रा-नसारा-श्रो-यहूद सबका है वही एक उसूते मजहब!

गाड—ईश्वर (े, रब-भगवान, चजब—चाश्चर्य), नसारा—ईसाई, उसूल—सिद्धांत,

"चाहे उसे घाल्लाह कहां, चाहे राम कहां, चाहे गाड कहां चाहे रब— यह सब उसी एक ईश्वर के नाम हैं। ऐ 'मुहिब' तू इस बात पर आश्चर्य न करें. हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, यहुदी सब के धर्मी के सिद्धांत एक ही हैं।"

(2)

भ्रात्ता पे लड़ते हैं, श्राजब है इदबार, मानी को जो सममें तो नहीं कुछ तकरार, जो देखते हैं हक को "मुहिब" भाँखों से सुम उनको पयम्बर कहो चाहे श्रावतार.

श्रन्काज-शब्द (लक्ष्म का बहुवचन), इदबार-दुर्भोग्य हक्क-परमात्मा. पयम्बर-ईश्वरीय संदेश लाने वाला,

"यह इमारा दुर्भाग्य है कि हम राब्दों पर ही मगड़ने लगते हैं. यदि शब्दों के अर्थ पर ग़ौर करें तो मगड़ा ही न रहे. 'ऐ' 'मुहिब' जो लोग ईश्वर को अपनी आंखों से देखते हैं चाहे उन्हें पयम्बर कह लो चाहे अवतार कहो।"

(3)

पर्वा है करते जात पे हर इस्मे जहाँ, पद पद के किताबों को बढ़ा बहमो गुमाँ, यह दानिशो बीनश भी ता है कोरिचश्म, बेदारीए दुनिया है 'मुंहब' ख्वाबेगराँ.

दक्षेपात—देश्वर का चेहरा, वहमो गुमाँ—शंकारं रानिश—योग्यता, विद्वता, बीनश—देखने की ताकृत कार—अंधापन, चरम—आँख, बेहारी—जागना, होशियारी स्त्राचे गराँ—गहरी नांद رباعياسمصب

شری (محص)

(1)

گذاشدر (God)، رب-بهکران عجباشجریه، نصارا-عیسانی، امول-سدهانت.

"چاہے آسے اللہ کہو' چاہے رام کہو' چاہے گان کہو چاہے رب۔ یہ سب اُسی ایک ایشور کے نام ھیں ۔ اے "مجب' نو اِس بات میں آشچریہ نہ کر ۔ ھندو' مسلمان' عیسائی' یہودی مب کے دھرموں کے سدھانت ایک ھی ھیں ۔"

(2)

ألفاظ به الرق هيں عجب هے إدبارا معنی کو جو سمجھیں تونیهیں فاکچھ تکرارا جو دیکھتے هیں حق والمنحب''آنکھوں سے تم أن کو يهمبر کھو چاھے اوتبر ا

الفاظات شبد (لفظ کا بہر بحون) ادبار -دربهاگهه عق برمانما ، پهمبر - ایشوری سادیش لانے والا

ا یہ همارا دریهاگیہ ہے کہ شیدرس پر هی جھکڑنے اگتے هیں .

یدی شیدرس کے ارتبا پر غیر کریں تو جھکڑا هی نه رہے ۔ اے

المحب جو ارگ ایشور کو اپلی آنکھوں سے دیکھتے هیں چاہے

انھیں یفمیر کھ او چاہے آوتار کہو ۔"

(3)

یدی ہے رخ ذات پہ هر علم جہاں' پڑھ پڑھ کے کتابوں کو بڑھا وهم وگماں' یہ دانھی بینھی بھی تو ہےکوری چشم بیداری دنیا ہے ''محصب' خواب گراں'

رم ذات—ایشور کا جهره وهم کمال سشکالی دانش—
یوگنا و دنا بینش دیکهنی کی طاقت ،کوری—اندهارین چیم—انکه بیداری—جاگنا هوشیاری خواب گرال—گهری نیند

جهاکئی ، هار کو میں آنتے آیک رشتے دار شربی گروند پرسال کے پاس بہنچا، وے ہائی نورت کے ایک اچے ایدوکیٹ ام ارر أب جهال انيكار بنكالي اندرسيديت كالبع هـ، وهيل أن كا بنکله تها . هم نے ان سے پرارتهنا کی کہه رے اپنے بنکلے کے تینس الل پر لوکمانیه کی سبها کرنے کی اجازت دے ویں ، گوند پرساد جى ترنت راضى هوكئي أب همارك أنساه كالهكانه نعرها . هم نے جاسے کا نوٹس نکالا جس پر مورے ' ایم این دھرا کے اور کے دیں مشرا کے دستشما تھے . سارا انتظام تین چار گھنڈیں کے اندر کرنا پڑا۔ شام کو چھ یجے لوکمانیہ تلک کا آسی لان کے اوپر ویاکھان ہوا . وشے تھا وزنامان راج نیتک استتھی . سوال تها سبها کا سبهایتی کیسے بنایا چائے لا بڑے بڑے لرگوں میں سب الکار کرچکے تھے۔ تب عم نے انیکلوبنگائی ھائی اسکول کے هید ماسٹر باہو نیوال چندر رام کو پکڑا ، نیوال باہو ہرے ھی نیک طبیعت اور پرکٹی شیل وچاروں کے آدمی نهے . سبها میں قریب دو هوار آدسی اکتها هوئے ، لوکمانیه جوشیئے ونتا نہیں تھے . لیکن أن كا ایك ایك شبد دل كى گهرائی سے تعلقا معلوم عوتا تھا۔ جلشے میں ایک سمان سا بندها هوا نها . الدأباد ميس لونمانية كا وه پهلا راج نيتك ويافهان تھا ۔ اُس نے نہ صرف الدآباد کے شہر میں عی نہیں بنکه سارے صوبے میں ایک نئے راج نیتک جیرن کی بنیادیں قال دیں . اگلے دن پورے پیج کا هیڈنگ دے دو اخباروں لے چھاپا۔'' "العاباد میں نئے وچاروں کا پہندو" ، "اندین پیوپل' نے جو ليدر ع يهلے أس وقت الدأبااد ع نكلتا نها النها - وو براهي أنساة يورن وياكهيان ."

اِس کے بعد تو ویاکھیانوں کا سلسله هی شروع هوگیا ، مارچ 1907 میں باہو وین چندر پال الدآباد آنے ، الدآباد میں اُن کے تین ویاکھیان هوئے ، اُن کے ویاکھیانوں کے لئے اسٹینلی رزد پرستیاچرن باہو وٹیل کے بنکلے کا احلاء ٹھیک کیا ، هر ویائییان میں قریب تین چار هؤاز لوگوں کی بھیر هوتی تهی ، اپریل سن 1907 میں لاله لاجیت رائے الدآباد آئے ، کولمانیم تلک کی میڈنگ وام آیڈ گراؤنڈ میں ند هو سکی تهی اس کے لئے رام لیلا کمیٹی کے ممبر بہت شرمندہ تھے ، سمریتری سے آنھوں نے استعفی لے لیا تھا اور لالد جی کی میڈنگ رام لیلا گراؤنڈ میں کرنے کا وعدہ کر لیا تھا ، وهیں لاند جی کی ویائیهان گراؤنڈ میں کرنے کا وعدہ کر لیا تھا ، وهیں لاند جی کا ویائیهان هوا ، دس هزار سے زیادہ آدمی آنھیں سننے کے لئے اکتہاءوئے ، جنتا کے ادیش اور انساہ کا کوئی ٹیکائد ند تھا ،

[بائن اگلم نمبر میں]

का गई. हारकर में अपने एक रिश्तेदार श्री गोबिन्द मसाब के पास पहुँचा। वे हाइकोर्ट के एक अच्छे पडवोकेट थे और आज जहां एंग्लोंबंगाली इंटरमिजिएट कालेज है, वहीं उनका बंगला था. हमने उनसे प्रार्थना की कि वे अपने बंगले के टेनिस लान पर लोकमान्य की सभा करने की इजाजत दे दें. गोबिन्द प्रसाद जी तरंत राजी हो गए। अब हमारे इत्साह का ठिकाना न रहा. हमने जलसे का नोटिस निकाला जिस पर मेरे. एन० एम॰ धरमा के और के॰ पी० निश्र के दुस्तखुत थे, सारा इंतजाम हमें तीन चार घंटे के शंदर करना पड़ा, शाम को है बजे लोक मान्य तिलक का उसी लान के ऊपर ब्याख्यान हुआ। विषय था वर्तमान राजनैनिक स्थित . सवाल था, सभा का सभापति किसे बनाया जाय ? बड़े बड़े लोगों में सब इन्कार कर चुके थें. तब हमने एंग्लो बंगाली हाई स्कूल के हेडमास्टर बाबू नैयाल चन्द्र राय को पकड़ा. नैपाल बाबू बड़ी ही नेक तबियत और प्रगतिशील विचारों के छ।दमी थे. सभा में क़रीब दो हजार आदमी इकट्टा हुए, लाकमान्य जोशीलें बक्ता नहीं थे लेकिन बनका एक एक शब्द दिल का गहराई से निकलता मालुम होता था। जलसे में एक समासा बँधा हुआ थी. इलाहाबाद में लोकमान्य का वह पहला राजनैतिक व्याख्यान था। उसने सिर्फ इलाहाबाद के शहर में ही नहीं बल्क सारे सुबे में एक नए राजनैतिक जीवन की दुनियादें डाल हीं. अगले दिन पूरे पेज का हैडिंग देकर अखवारों ने क्रापा-"इलाहाबाद में नए विचारों का पैराम्बर।" ।इंडियन पीपुल ने जो 'लीडर' से पहले उस वक्त इलाहाबाद ते निकलता था, लिखा-"बड़ा ही उत्साइ पूर्ण द्वयाख्यान"

इसके बाद तो व्याख्यानों का सिलसिला ही शुरू हो
तया. मार्च 1907 में बायू विधिन चन्द्र पाल इलाहाबाद
माए. इलाह।बाद में चनके तीन व्याख्यान हुए. उनके
त्याख्यानों के लिये स्टेनली रोड पर सत्याचरण बायू
इकील के बंगले का खाहाता ठीक किया. हर व्याख्यान में
करीब तीन-चार हजार लोगों की भीड़ होती थी. खप्रैल सन्
1907 में लाला लाजपत राय इलाहाबाद खाए. लोकमान्य
तलक की मीटिंग रामलीला प्राउ ह में न हो सकी यी
सके लिए रामलीला कमेटी के मेन्बर बहुत शरमिन्दा
थे. सेक्रेटरी से उन्होंने स्तीफा ले लिया था और लाला
भी की मीटिंग रामलीला प्राउ ह में करने का बादा कर
केया था. वहीं लाला जी का व्याख्यान हुआ. इस हजार
ने ज्यादा खादमी उन्हें सुनने के लिए इकटा हुए। जनता
हे जोश खीर उत्थाह का कोई ठिकाना न था.

(बाक़ी धगले नम्बर में)

कलकता कांत्रेस के समय पहली बार हमें तिलक महा-राज से देर तक कर बरू बैठकर बातें करने का सीभाग्य प्राप्त हुआ. वे इस समय श्री पद्मराज जैन के यहाँ ठहरे हुये थे. हमने तिलक महराज से कहा कि यू० पी० और खासकर इलाहाबाद में धनके ज्याख्यान होने चाहिएँ. उन्होंने हमारी बात का समर्थन किया. वे चाहते थे कि यू० पी० के कोई नेता उन्हें बुलावें. बंगाल, पंजाब और महाराष्ट्र में उन दिनों गरम दल का जोर था. यू० पी०, बम्बई और मद्रास नरम दल के गढ़ थे. तिलक महराज ने इमसे बादा किया कि कांग्रेस के दो तीन दिन बाद वें कलकत्ते से इलाहाबाद होते हुए पूना जायेंगे और अगर इलाहाबाद में उनके ज्याख्यान का प्रबन्ध हो सका तो वे उसके लिये भी तैयार रहेंगे. उन्होंने यह भी बादा किया कि अपने इलाहाबाद पहुँचने की वें हमें पहले से सचना दे देंगे.

जहाँ तक मुक्ते याद है जनवरी सन् 1907 की 6 तारीख़ सी. सुबह की किसी गाड़ी से तिलक महाराज इलाहाबाद पहुँचे. बहुत से विद्यार्थी और शहर के लोग उनके स्वागत के लिए स्टेशन पहुँचे. वे दारागंज में अपने दामाद श्री साने के यहाँ ठहरे. स्टेशन पर ही हमने उनसे उनके व्याख्यान की बातें छेड़ीं. उन्होंने कहा कि वे दो एक घंटे के बाद पंडित मदन मोहन मालवीय से मिलने के लिये उनके मकान पर पहुँचेंगे और वहाँ अगर तय हुआ तो व्याख्यान देंगे.

हम भी भारती भवन मालवीय जी के मकान पर पहुँच गए. वहाँ उस समय पंडित मदन मोहन मालवीय के जालावा कांग्रेस के कई बढ़े बढ़े नेता तिलक महराज से मिलने के लिए जमा थे. हमने तिलक महराज से उनके व्याख्यान की वर्षा की. वे .खुशी से राजी थे. पर वहाँ बैठे हुए अधिकतर नेता उनके व्याख्यान के खिलाफ थे और चाहते थे कि अगर तिलक महाराज इलाहाबाद में बोलें ही तो "वैदिक साहत्य" पर बोलें, "राजनीति" पर नहीं. मैंने तिलक महराज से पूछा कि अगर मैं और मेरे साथी विद्यार्थी उनके व्याख्यान का प्रबन्ध कर सकें तो वे व्याख्यान देंगे या नहीं. वे राजी हो गए. मैंने यह भी कहा कि इलाहाबाद की जनता आपको वैदिक साहित्य पर सुनना नहीं चहती, 'राजनीतिक स्थिति' पर सुनना चाहती है. तिलक महराज ने स्वीकार कर लिया.

व्याख्यान कराने की जिम्मेदारी तो हमने अपने ऊपर तो ती, लेकिन सबसे बड़ी दिक्कत हमें जगह की पड़ी. जहाँ जाते नरम दल के नेताओं के दूत हमसे पहले पहुंच जाते और वहीं से हमें इन्कार, हो जाता. हमने साचा या कि रामजीला माउंड में समा कर तो मगर उसके मंत्री को ऐसा सबक पढ़ा दिया गया कि उसने साफ इन्कार कर दिया। हम सब की तबियतों में बेहद मायूसी س 1005 لمبيعي العربي.....

جہاں تک مجھے یاد ہے جنوری سن 1907 کی 6 تاریخ تھی ، صبح کی کسی گاڑی سے تلک مہراے العالباد پہنچے ، بہمٹ سے ودپارتھی اور شہر کے لوگ اُن کے سواگت کے لیئے استیشن پہنچے ، وے داراکنج میں اپنے داساد شری سالے نے پہل تہرے ، استیشن پر ھی ھم نے اُن سے اُن نے وکھیان کی ہاتیں چھوڑیں ، اُنھوں نے کہا کھیے وے دو ایک گھنٹے کے بعد ہنتیں میں سوھن مااویہ سے ملنے کے ایئے وہ اُن کے مکان پر بہنچیں گے اور وہاں اگر طے ہوا تو وکھان دیں گے ،

ھم بھی بھارتی بھوں مالویہ جی کے مکان پر پہلی گئے
وھاں اسی سنٹے پانت میں موھن مالویہ کے علاوہ کانکریس کے
نئی بڑے بڑے نیٹا تلک مہراج سے ملنے کے لئے جمع تھے ،
ھم نے تلک مہراج سے اُن کے وکھان کی چرچا کی وے خوشی
سے رافی تھے ، پروھاں بیٹیھے ھوئے اُدھک تر نیٹا اُن کے
وکھیاں کے خلاف تھے اور چاہئے تھے کہ اگر تلک مہراج الدآبان
میں بولیں ھی تو" ویدک سامتھہ "پر بولھں" راج نیٹی"
پو نہیں ، میں نے تلک مہراج سے پوچا کہ اگر میں اور مہرے
ساتھی ودپارتھی آن نے وکھان کا پر بلد یا کر کیں تو وکھیاں
دیں کے یا نہیں ، وے رافی ھوگئے ، میں نے یہ بھی کیا الدآباد
کی جاتا آپ کو ویدک ساتھیہ پر سانا نہیں چاھٹی "راج نیٹک

یا وکھیاں کرائے کی زسیداری تو مم نے اپنے اوپر لیائی لیکن سب سے بڑی وقت عمیں جگھ کی پڑی ، جہاں جاتے نوم دل کے نبیتاری کے دوت عم سے پہلے بہلیج جاتے اور رھاں سے عمیں انکار ھوجاتا ۔ ھم نے سوچا نیا کہہ رام لیلا گراونڈ میں سبها کرلیں مکر اُس کے منتوی کو ایسا سبق پڑھا دیاگیا کہہ اُس نے صاف انکار کر دیا ۔ ھم سب کی مترس سیں سحد مایوسی

تیا ، جس میں 60 گروو روپہ سالانے کا صرف کہوا تھا ،
دیھی کے کاریگر بھوکے مر رہے تھے دیھی ریب ھوتا جا رہا
تھا شودیھی کا مطلب تھا کہ ھر لینے دیھی کے اُدیوگ دھلدوں کو پھر سے چمکائیں اور اپنے روزمرہ کے استعمال میں جہاں تک ھو سکے دیھی کی بلی ھوئی چیدیں کلم میں لائیں ، دوسرا تھا بائیکات ایملی یہ کہ ھم انگریووں کے انیائے کے جواب میں انگلیلات کے بنے ھوئی ھر طرح کے مال کا انیائے کے جواب میں انگلیلات کی بنے ھوئی ھر طرح کے مال کا فرکریاں اور خطابات بھی شامل تھے ، تیسرا تھا 'راشتری شکھا' انگیریووں کے بلائے اسکولوں اور کانجوں کو چھوڑ کو شکھا' انگیریووں کے بلائے اسکولوں اور کانجوں کو چھوڑ کو راشتری تھاگ کی شکھھا حاصل کویں ، اِس سلسلے میں ملک بھر میں جکہہ دیشنل کالیے اور اسکول قایم کئے گا۔ ،
ملک بھر میں جکہہ جکہہ نیشنل کالیے اور اسکول قایم کئے گا۔ ،
ملک بھر میں جکہہ جکہہ نیشنل کالیے اور اسکول قایم کئے گا۔ ،
راشٹر کوی پندت مادھو شکل نے اُس چو کھی کاریہ کوم پر

الی چے چے شوی تلک دیو ! بھارت ہت کاری !

سودیشی اور بھشار اشقری شکشها پر سار

ھند میں سورا چاری پنتھ کے پتجاری !"

نرم دل کے نیتا اوکمانیہ تلک کے نئے چترسکھی کاریہ کرم

کے خلاف تھے ۔ کانکریس کے زیادہ تر پرائے نینا اِسی نرم دل
میں تھے ۔ لیکن دیش بھر میں جنتا کے اندر گرم دل کا اثر

انگریزی شاسکوں نے نئے دال کو دبائے اور بنگ بھنگ کے مقصد کو پورا کرنے کے لئے زوردار کوشش کی . تھاکا کے نواب سلیم الله خال کو چودہ لائم رشوت درے کو مسلم لیگ فایم کرائی گئی اور آسی سال الدور میں ہدو سبھا کی استھاپنا ہوئی . الاہور کے جس جلسے میں ہندو سبھا قایم ہوئی آس میں میں میں بھی انداق سے موجود تھا . میں پنجاب یونیورسٹی کے کانووکیشن میں یہ ڈگری لینے گیا تھا .

تیزی کے ساتھ برھتا جا رھا تھا ۔

دسمبر سن 1906 میں کلکتے میں کانکریس کا بائیسواں اجائیس ہوا ۔ میں' دھرما اور درسرے ساتھی کلکتہ کی کانکریس میں بھی والنتیوں کی حیثیت سے شامل ہوئے ، جلک کا جوش حد کو پہنچ چکا تھا ۔ سرکار کی چالی ڈالٹا اثر ہو رہا تھا ۔ سلیم اللہ خاں اور اُن کی مسلم لیگ کے جواب میں اُن کے بیاری قلیم قلیم قلیم کوب کیل کو حصہ بھالی قلیم دل کے سوبھاگیہ سے دادا بھائی فورو چی' جو تیس سال انگارت سے بیارت اُن کے راجائیس کے سیمارت کے بعد اُس سال انگارت سے بیارت آئے تھے' کاسکریس کے سیمارتی تھے۔ دادا بھائی نوروچی آئے تھے' کاسی سے کوم دل والوں کا مل کو ساتھ دیا اور کا تھوڑے بیات ادل بدل کے اُنہوں میں جوشی بیات ادل بدل کے اُنہوں میں جوشی بوھتا گیا ۔

वा जिसमें 60 करोड़ रुपया सालाना का सिर्क कपड़ा था.देश के कारीगर भूखे मर रहे थे, देश गरीब होता जा रहा था, 'स्व-देशी' का मतलब था कि हम अपने देश के उद्योग-धंघों को किर से चमकाएँ और अपने रोजमर्श के इस्तेमाल में जहाँ तक हो सके, देश की बनी हुई ची जें ही काम में लाएँ. दूसरा था 'बायकाट' यानी यह कि हम अमे जों के अन्याय के जवाब में इंगलैंगड के बने हुये हर तरह के माल का खाख तौर से बहिण्कार करें. इस 'बायकाट'में सरकारी नौकरियाँ और खिताब भी शामिल थे. तीसरा था 'राष्टीय शिक्षा' यानी अमे जों के बनाये स्कूलों और काले जों को छोड़ कर राष्ट्रीय ढंग की शिक्षा हासिल करें. इस सिलसिले में मुल्क भर में जगह-जगह नेशनल काले ज और स्कूल कायम किये गये. चौथा था 'स्वराज' यानी देश को आजाद करना. हमारी टोली के प्रसिद्ध राष्ट्र किव पंडित माधव शुक्ल ने उस चौमुखी कार्यक्रम पर नीचे लिखी किवता लिखी:—

''जय-जय श्री तिलक देव! मारत द्वितकारी! स्वदेशी अद बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा प्रसार, दिन्द में स्वराज—चारि पन्थ के पुजारी!" नरम दल के नेता लोकमान्य तिलक के नये चतुर्मु स्वी य-क्रम के खिलाफ थे. कांमेस के ज्यादातर पुराने नेता

कार्य-क्रम के खिलाफ थे. कांग्रेस के ज्यादातर पुराने नेता इसी नरम दल में थे. लेकिन देश भर में जनता के अन्दर गरम दल का श्रसर तेजी के साथ बढता जा रहा था.

खंप्रेज शासकों ने नये दल को दबाने और बंग भंग के मक्तसद को पूरा करने के लिये जोंरदार कोशिश की. ढाका के नवाब सलीमुल्ला खाँ को चौदह लाख रिश्वत देकर मुसलिम लीग कायम कराई गई और उसी साल लाहौर में हिन्दू सभा की स्थापना हुई. लाहौर के जिस जल्से में हिंदू सभा कायम हुई उसमें में भी इत्तफाक से मौजूद था. मैं पंजाब यूनिवर्सिटी के कानवोकेशन में अपनी डिगरी लेने गया था.

दिसम्बर सन् 1906 में कलकत्ते में बांप्रेस का बाईसवाँ इजलास हुआ. में, धर्मा और दूसरे साथी कलकत्ते की कांप्रेस में भी वालंटियरों की हैसियत से शामिल हुए. जनता का जोश हद को पहुँच चुका था. सरकार की चालों का उल्टा असर हो रहा था. सलीगुल्ला खाँ और उनकी गुमलिम लीग के जवाब में उनके भाई अतीक उल्ला खाँ ने कांप्रेस में खूब खुलकर हिस्सा लिया. गरम दल के सीभाग्य से दादा भाई नीरोजी, जो तीस साल के राजनीतिक उजदबे के बाद दसी साल इंगलेंड से भारत आये थे, कांप्रेस के सभापित थे. दादा भाई नीरोजी ने सभापित के आसन से गरम दल वालों का खुलकर साथ दिया और कांप्रेस के मंत्र संतहास में पहली वार 'स्वराज' शब्द का उपयोग किया. गरम दल वे सब प्रस्ताव थोड़े बहुत अदल बदल के साथ पास हो गये. देश में जोश बदता चला गया.

हम चाहते हैं कि इलाहाबाद की टोली भी हमारे साथ मिलकर काम करे. मैं सबसे नहीं कि लूँगा. गुप्त रहकर ही अरिकर बाबू और तुम्हारे बीच में सन्देश वाहक (क्रापित) का काम करूँगा." उसके बाद से ज्यातिन बास हमारे और अरिकर बाबू के बीच में कई बरस तक गास्ट आफिस का काम करते रहे.

इस हालत में दिसम्बर सन् 1905 में बनारस में कांग्रेस का इक्की सवाँ अधिवेशन हुआ. श्री गापाल कृष्ण गांखले सभापित थे. देश में काफी जांश था. इलाहाबाद से साथियों को लेकर में बनारस पहुँचा. हम लांग स्त्रय सेवक की हैसियत से कांग्रेस में शामिल हुए थे. उस समय कांग्रेस की अजब कैंकियत थी. उसके हर इजलास में सबसे पहला प्रस्ताव इंगलैंड के बादशाह की तरफ वफादारी का हाता था. उस साल भी सबसे पहले यही प्रस्ताव आया. पहली बार देश के कुछ नेताओं ने उसका विराध किया. उनके अगुआ थे लोकमान्य तिलक और लाला लाजपत राय. मुक्ते लाकमान्य केयह लक्ष्य आज तक याद हैं:—

"We have been over loyal up to this time let us decrease our loyalty."

लांकमान्य का समर्थन करते हुए लाला लाजपत राय ने कहाः—

"Let the prince go and tell his father that there is no welcome for him in the Indian heart."

मैं नाम भूल गया लेकिन एक वक्ता के मुक्ते ये शब्द श्रव तक याद हैं:---

"कांग्रेस खभी तक नाबालिए थी. उसे शासकों की देख-रेख की खरूरत थी, अब वह 21 साल की यानी बालिए हो, चुकी. अब उसे अपना काम खुद सँभालना चाहिए."

सगर फिर भी कांग्रेस में पुराने नेताओं का जोर था और वकावारी का प्रस्ताव किसी तरह पास हो ही गया.

उस समय देश में दो राजनीतिक दल साफ दिखाई देने तो. एक जिस एक्स्ट्रीभिस्ट, राष्ट्रीय, या गरम दल कहा जाता था, जिसके खास नेता तिलक महाराज, लाला लाज-पत राय, श्री विपिन चन्द्र पाल और श्री अरविन्द घोष थे. और दूसरा जो माडरेट, लिबरल या नरम दल कहलाता था, जिसके मुख्य नेता सर कीरोजशाह मेहता, श्री दिनशा ईंदुलजी वाचा, पंडित मदन मोहन मालवीय और श्री गोपाल कृष्णा गोखले थे.बनारस कांमेस के बाद भी बंग भंग के जवाब में तिलक महराज ने चौमुखी प्रोग्राम देश के सामने रखा. इनमें पहला स्वदेशी है. देश के ख्यांग घन्धे उस समय बेहद दबे हुवे थे. सरबों हुपयो का माल योराप से आता

س 1805 ا سحم اسران....

جامعے عین العاباتی قولی ہی هدارے سان مل کر کام کرد ، ان سب عدلیدی ملونگا، گیت رہ کر عی اروندو بابو اور تمهارے بی میں سندیعی واضعک (قامد) کا کام کرونگا ،'' اُس کے بعد ، جهوتی دوس هدارے اور اروند بابو کے بیچ میں نئی برس سا بوسک آنس کا کام کرتے رہے ،

اس حانت میں دسمبو سن 1905 میں بنارس میں فکوبس کا انیسواں ادعیویشن ہوا ۔ شری گربال کرشن گربالے سے انہیوں سیا پتی تھے ، دیش میں کادی جوش تھا ، الماباد سے ساتھیوں بارس بہنچا، ہم لوگ سریم سیوک کی حیثیت سے انکریس میں شامل ہوئے تھے ، اس سے کاسکریس کی عجیب لیفیت تھی اس کے ہراجالس میں سب سے پہالے برستاؤ انکلیلڈ کے بادشاہ کی طرف رفاداری کا ہوتا تھا، اُس سال بھی سب سے بہلے بہلے بہلے برستاؤ آیا۔ پہلی بار دیش کے کچے نیتاؤں نے اس کا ورودھ کیا ۔ اُن کے اگوا تھے لوکھانھے کالک اور لال الجہت رائے مجھے لوکھانیہ کے یہ لفظ آبے تک یاد ہیں :۔۔

"We have been over loyal up to this time, let us decrease our loyalty."

لوكمانية كا سمرتهن كرتے هوئے الله الجهت رأئے لے كها :---

"Let the prince go and tell his father that there is no welcome for him in the Indian heart."

میں نام بھول گیا لیکن ایک وقت کے یہ شید آب تک یاد ...

و کانکریس آبھی تک نابالغ تھی ۔ آسے شاسکوں کی دیکھ رہے کی فرورت تھی' آب وہ 21 سال کی یعنی بالغ ہو چکی ۔ اب آسے آینا کام خود سنبھالنا چاھئے ۔''

مگر پھر بھی کانکریس میں پرآئے تھااوں کا زور تھا اور وفاداری کا پرستاؤ کسی طرح یاس ہو ھی گیا۔

أس مع دیش میں دو راج نیتک دل صاف دکھائی دینہ لگے . ایک جسے اکسٹریسٹ راشتری گرم دل کہا جاتا تھا کہ جسکے خاص نیتا ناک مہاراج بیت راج کا اللہ الجہت رائے شری وہن چندر پال اور شری آروندگھرش تھے اور دوسرے جو ماتورت البسرل یا نوم دل کہاتا تھا جس کے مکھتے نیتا سرفیروز شاہ مہتا شہی دنشا ایدولجی اچا پندت مدن موھن مالویے اور شری گوپال کوشن گونیلے تھے ، بنارس کانکریس کے بعد بھی بنگ بهنگ کے جواب میں تلک مہراج نے چومتھی پروگرام دیش کے سامنے رئیا آن میں پہلا سودیشی ہے ، دیش کے آدیوگ دھانے آس سے بہت میں پہلا سودیشی ہے ، دیس کے آدیوگ دھانے آس سے بہت دیے ہوئے کا مال یورپ سے آتا

सवारत में यह जबसा हुआ. जलसे में गिने चुने करीब दों सी आदमी थे, जिसमें खुफ़िया पुलिस के आदमियों का भी एक जल्या था. आज तो जलसों में लाखों की भीड़ होती है मगर उस समय जलसे में जाना भी बड़ी हिम्मत का काम सममा जाता था. बहुत घु धली सी याद रह गई है उस जलसे की, क्योंकि उसे बीते ठीक ५१ बरस हो चुके हैं. लेकिन इतना सुमे साफ साफ याद है कि जब पंडित बालकृष्ण भट्ट बहुत गरमा गरम तकरीर कर रहे थे तो किसी ने पिन्ने से उनके आँगरखे का पल्ला खाँचा. भट्ट जी इस पर बिगड़ पड़े. कहने लगे—

"हमारे अंगरखे का पल्ला खींचत है, चाहत है हम बोली न. हिए में तो लागी है आग, कही काहे न."

हम नौजवान शहर में घूमते और लोगों से स्वदेशी व्रत की प्रतिक्रा लेने को कहते. बंगाल का उस समय का नारा था—

'माई भाई एक ठाँई' भेद नाईं भेद नाईं !

लोगों से बादा लेते कि जब तक हमारा मुलक आजाद न हो जाए हम आपस के सब भेद भाव मुला हैंगे.

रोज रोज तो आम जलसे हो नहीं सकते थे लिहाजा हम नीजवान बोहिंग हाउस से एक स्टूल लेकर शाम को घंटाघर पहुँचते थे और बारी बारी से स्टूल पर खड़े हाकर व्याख्यान देते थे. हममें से जो किन या शायर थे, वह किन ताएँ या नजमें पढ़ते. रोज रोज की मीटिंगों का यह अखंड सिलिसिला उसी बक्त टूटता जबकि काई दूमरी बड़ी आम समा होती या हम सब के सब शहर के बाहर होते. एक मुसलमान नौजवान दोस्त की तक़रीर का एक एफ़करा अब तक मुक्ते याद रह गया है, हालांकि खुद उनका नाम मुक्ते याद नहा रहा, वह कहा करते—"हन्दू और मुसलमाना! तुम दोनों चने की दाल की तरह हो १ जब तक इत्तफ़ाक़ यानी एकता का खिलका तुम दोनों के कपर रहेगा तब सक तुम सलामत रहोंगे, बरना मिट जाओंगे."

मैंने कहा--"हाँ"

"मेरा नाम क्योतिन बोस है, यहाँ मैं कीडगंज में डहरा हूँ. अरिक्द बाबू ने मुक्ते तुमसे मिलने भेजा है. مدارت میں یہ جاست ہوا ، جاست میں گئے چاتے قریب دو سو آدمی تھے' جس میں خذا پرلیس کے دمیوں کا بھی ایک جتھا تھا ، آج تو جاسوں میں لائھوں کی بھیت بھیت ہوتی ہیں جاتا بھی بڑی ہمت کا کام سمجھا جاتا تھا ، بہت دھندلی سی یاد رہ گئی ہے اُس جاست کی کورلکت آسے بیتے ٹیمک 15 برس ہو چتے ھیں ، لمکن مجھے صاف ماف یاد ہے کہ جب پندت بال کرشن بہت بہت سو گرم تقربر کو رہے تھے تو کسی نے پہنچھے سے اُن کے اُن کے اُن کے بہت سو گرم تقربر کو رہے تھے تو کسی نے پہنچھے سے اُن کے اُن کے بہت سو گرم تقربر کو رہے تھے تو کسی نے پہنچھے سے اُن کے اُن کے اُن کے بہت سو گرم تقربر کو رہے تھے تو کسی نے پہنچھے سے اُن کے اُن کے اُن کے اُن کے اُن کے اُن کے بہت سو گرم تقربر کو رہے تھے تو کسی نے پہنچھے سے اُن کے کہتے کی اُن کے کہتے کی اُن کورل

''همارے انگرکے کا پلتہ کھیجت هیں، چاهت هیں هم برلی نا ۔'' نا ۔ ها میں تو لاکی ہے آگ' کہی کافے نا ۔''

هم نوجوان شهر میں گهرمتے اور لوگوں سے سودیشی ورت کی پرتگیاں لینے کو کہتے، بنگال کا اُس سبے کا نعرہ تھا۔۔۔

"بہائی بہائی ایک ٹبائیں بہید نائیں بہید نائیں!"

کوگوں سے وعدہ لیتے که جب تک همارا ملک آزاد نه هو جاتیکا هم آپس کے سب بهید بهاؤ بھلا دیں گے.

ررز ررز تو عام جلسے هو نهیں سکتے تھے لهذا هم نوجوان بوردنگ هاؤس سے ایک اسٹول لے کو شام کو تھنٹہ گھر پہنچتے تھے اور باری باری سے اسٹول پر کھڑے هو کو ریانههاں دیتےتھے۔ هم میں سے جو کوی یا شاعر نہے' وہ کویٹا یا نظم پڑھتے ، روز روؤ کی میٹنگوں کا یہ اکھنڈ سلسله اُسی وقت ٹوٹٹا جب که کوئی دوسری بڑی عام سبھا هوتی یا هم سب کے سب شہر باهر هوتے ، ایک مسلمان نوجوان دوست کی تقریر کا ایک ٹکوا اب نک مجھے یاد رہ گیا ہے' حالا کہ خود مجھے اُن کا نام یاد نهیں رها ، وہ کہا خوت ہو اور مسلمانو! تم دونوں چلے ئی دائل کی طرح ہو ، جب تک اتعاق کی یکٹا کا چھلکا تم دونوں کے اوپر رہے گا تب تک تم دونوں سلامت رهو گے ، ورنہ مت کے اوپر رہے گا تب تک تم دونوں سلامت رهو گے ، ورنہ مت جاؤ گے ."

دسمبر 1905 کی بات ہے، ایک دن میں برردنگ هاؤس میں اپنے کمرے میں بیٹھا ہرا تھا کہ ایک نوجران دستک دے کر بیبتر آگیا ۔ 27-26 برس کی عمر ہوگی، گئینڈ بدن چہرے سے کونت اور ہیت ہرگت ہوئی تھی ، اخر پوچھا۔ اتم ہی سندر الل ہو ہے،

میں نے کیا ۔ "ھاں ،"

7

والميرا نام جيوتن بوس ها يهال ميں كيد گئيم ميں تيرا عوں ، لرون بايو نے مجھے تم سے مللے بهيجا هـ .

यह नहीं कि इस गरम मंडली में खाली नौजवान ही थे, बरिक कुछ बुचुर्ग भी अंदर हो अंदर हमारी मदद करते और इसारे साथ पूरी इमदर्री रखते थे. इन बुजुर्गों में (मार्डन रिव्यू' और 'प्रवासी' के मशहूर संपादक बाबू शमानन्द चटर्जी, हिन्दी के मशहूर लेखक पंडित बालकृष्ण भट्ट डिप्टी कलक्टर और मशहूर विद्वान पंडित श्रीकृष्ण बांशी और इनके अलावा गवर्नमेंट कालेंज के साइन्स के अध्यापक बाब् शशि मूषण चटर्जी थे. रामानन्द बाब् कायस्थ पाठशाला कालेज के त्रिसिपल थे. पंडित बाल-कृष्ण मट्ट एसी कालेज में संस्कृत और हिन्दी के प्राफेसर बे. पैंडित श्री कुल्या जोशी थे तो हिप्टी कलक्टर और सरकारी अफसर लेकिन उनके दिल में अपने मुल्क की आखादी के तिए एक तड़प थी. शशि बाबू उन बुजाों में थे जिनकी काबलियत और चरित्र ने उन्हें लोगों की नजरों में बहुत ऊँचा डठा दिया था. शशि बाबू को संगीत भार कान चरचा का बेहद शीक भा. यह बुजर्ग मंडली अवस्यर उनके यहाँ इकट्ठा होती थी. कभी कभी इस मंडली में ऊर्द के मशहूर शायर अकबर हुसेन और पंडित मदन मोहन मालवीय भी शामिल हो जाते थे.

नौजवान दोस्तों में पंडित बाल कृष्ण भट्ट के पुत्र महादेव भट्ट, और शशि बाबू के सबसे बड़े बेटे नित्यानन्द चटरजी थे. रास बिहारी शुक्ल को हम सब लोग प्रेम से 'राशी' कहकर पुकारते थे. बाद में जमाने ने पलटा खाया, राशी को मजबूर होकर सरकारी नौकरी करनी पड़ी. अपनी काबलियत के लिए वह रायसाहब भी बने और सेकेटेरियट में हेल्थ डिपार्टमेंट के सुपरिन्टेन्डेन्ट के पद से रिटायर हुए. टीकाराम त्रिपाठी डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के स्कूल के अध्यापक थे लेकिन बाद में उन्हें अपनी अध्यापकी से स्तीफा देना पड़ा. टीकाराम को खोड़कर और सभी साथियों को मौत ने अपनी गोद में समेट लिया है, और जब में यह लाइने लिख रहा हूँ, मेरी आँखों के सामने इन देश प्रेमी साथियों के चेहरे घूम रहे हैं.

इलाहाबाद में अभी हमारी टोली को संगठित हुए दो महीने भी न बीत पाए थे कि बंगाल में एक ऐसी घटना घटी जिसने सारे मुल्क की निगाहें अपनी तरफ कर लीं. 16 अक्टूबर सन् 1905 को बंगाल के दो दुकड़े कर दिए गयें. बंग-भंग ने एक आन्दोलन की शक्त ले ली. बंगाल के दो दुकड़े दो हुए मगर बंग-भंग के आन्दोलन ने विछड़े इए दिलों को मिला दिया.

इलाहाबाद में हम नीजवानों की टोली अगला क़दम कुटाने की तजवीचें करने लगी. हम लोगों ने कैसला किया दश सक्तूबर को जमना के किनारे बलुआधाट पर पहला आम अलसा किया जाए. पंडित बालकुष्ण मह की الله الله الله الله على الله الله الموجولي على الدرهي الدرهي الدرهي الدرهي الماري مدد كرت ار هارت سانه پوری همدودی رکهته ته . ان بورکس میں مارنگ معدية أور يروأسي كي مشهور سمهادك بابو رامالند چتر جيء ھلدی کے مشہور لیکھک یئتت بال کرشن بہت کہتی کلکٹر الر مشہور ودوان بنت شری کرشن جرشی اور اُن کے علوہ گورامانی کالم کے سائلس کے ادیا یک باہر ششی بھوشائر چاتر جور آھے . رأماللد باہو كائستو يالو شالا كالم كے يرنسهل تھے . یاتیت بل کرشن بهت اسی کالیم میں سنسکرے اور هندی کے پرونهسر تھے ، بلات شری کرشن جرشی تھے تو ڈیٹی کلکٹر اور سرکاری انسر لیکن أن كے دل میں اپنے ماک كى أزادى كے للنے ایک توپ نہی ۔ ششی بابو أن بزرگوں میں سے تھے جن کی قابلیت اور چرتو نے آنہیں اوگوں کی نظروں میں بہت اونیا أتها دیا تها . ششی بابو کو سنگیت أور گیان چرچا کا بےحد شوق تھا . ید بورگ مندلی اکثر أن كے يہاں انتها هرتي تھي . کیبی کیبی اُس مندلی میں اردو کے مشہور شاعر اکبر حسید، أور يلقت مدن موهن مالوية بهي شامل هوجاتے تھے .

لوجوان دوستوں میں پندت ہال کرشی بہت کے پتر مہادیو بہت اور ششی ہابو کے سب سے بڑے بیٹے نیٹا لند چڑ جی تھے ۔ رانس بہاری شل کو هم سب پریم سے 'راشی' کہٰہ کر پکارتے تھے ، بیٹی میں زمانہ نے بلقا کھایا' راشی کو مجبور ہو کر سرکاری نوکری کرنی پڑی ، اپنی قابلیت کے ا'ے وہ رائے صاحب بھی بلے اور سکریٹزیٹ میں ہیلتھ قابلیت کے ا'ے وہ رائے صاحب بھی بلے اور حوث ہ توکا رام ترپائھی قسٹرکت بورة کے اسکوا کے انھیاپک تھوئے ، ٹوکا رام ترپائھی قسٹرکت بورة کے اسکوا کے انھیاپک تھے لیکن بعد میں انہیں اپنی ادباپکی سے اسٹیفی دینا پڑا ، ٹیکا رام کو جوڑ کر اور سبھی ساتھوں کو موت نے اپنی گود میں سیدت لیا تھوں کے سامنے ان دیش پریمی ساتھوں کے جہرے گوم میں آنکھوں کے سامنے ان دیش پریمی ساتھوں کے جہرے گوم

اله آباد میں ابھی هداری تولی کو سنکتبت هوئے دو مهینے بھی تھ بدت پائے تھے که باگال میں ایک، ایسی گیٹنا گیٹی جس نے سارے ملک کی نگامیں اپنی طرف کر لیں . 17 اکتوبر سن 1905 کو بنگال کے در تعزے کر دیئے گئے ، بنگ بهنگ نے ایک آندوان کی شکل لے لی ، بنگال کے دو تعزے تو هوئے متر بنگ بهنگ کے آندولن نے بیجیزے هوئے دارس کو مقدیا ،

اِنَهَابَات میں ہم نوجوانوں کی ٹولی اکلا قدم لھائے کی تجویؤیں کرنے لکی ، ہم لوگوں نے فیصله کیا که 131 آگارہ کو چھا عام کارے بلوا کھائے پر پہلا عام جلسے کی بہت کی

बह प्रमाना ही ऐसा था जब सियासत और बकालत एक ही तसबीर के दो पहलू थे. उन्हों की सज्ञाह से मैंने इज्ञाहाबाद पहुँचकर ला काले ज में नाम लिखाने का फैसजा किया. इज्ञाह से मेरे पित जी को भी यही मशबिरा पसंद आया. मगर एक दूसरे नुक्रतेनजर से. वह चाहते थे कि मैं मुंसिफ बनूँ क्योंकि उस जमाने में मुंसिफों से हाई कोर्ट का जजी तक एक खुला सीधा राम्ता था और मुंसिफी के लिये बकालत पदना जकरी था. नतीजा यह हुआ कि सन् 1905 में यूनि-वर्सिटी खुलने पर में इलाहाबाद पहुंच गया और हिन्दू बार्डिंग हाउस में दाखिल हो गया.

सर सुन्दरलाल और उनके भाई पंडित कन्हैयालाल, जो बाद में हाईकार्ट के जज बने, मेरे पिता जी के दोस्तों में से थैं. पिता जी के दुक्म के मुताबिक इलाहाबाद पहुँचते ही मैं उनसे भी मिलने गया. उन्होंने मुफे सलाइ दो कि मैं एम॰ ए॰ और लॉ दोनों में ही अपना नाम लिखा खूँ. चुनांचे एम॰ ए॰ में फिलासफी और एल-एल० बी॰ में मैंने अपना नाम लिखा लिया.

पंजाब में उस जमाने में काले जों और सूनिवर्सिटी के विद्यार्थी आम तौर पर पगड़ी बाँधा करते थे. बाद में पगड़ी की जगह टोपी ने ले ली और अब तो टोपी की जगह नंगा सर ही लोग पसंद करने लगे. मगर उस जमाने में सर खुला रखना तहजीब के खिजाफ, बात समभी जाती थी. मालवीय जी एक निराली किस्म की पगड़ी बाँधते थे. बहु तरीका मुमे इतना पसंद आया कि लाहौर ही से मैंने मालवीय जी की तरह पगड़ी बाँधनी शुरू कर दी. इतनी अच्छी पगड़ी में बाँध लेता था कि मेरे साथी, मालवीय जी के बड़े पुत्र पंडित रमाकान्त माजवीय को भी मुमसे ईवा होती थी. किन्तु इस पगड़ी का यह असर पड़ा कि लोग मुमे निहायत नरम बिचारों का सममने लगे, लेकिन धीरे-धीरे लोगों की यह रालतफ़्द्मी दूर हो गई, और लोग यह जान गये कि माल-बीय छाप पगड़ी के नीचे एक गरम सिर है.

यूनीवर्सिटी के विद्यार्थियों में गरम ख्रयाल के दो विद्यार्थियों की तरफ मेरी नजर गई, एक बुग्हानपुर के के 0 पी० भिन्न थे और दूसरे नागपुर निवासी एन • एम० घरमा. दोनों ही मेरे साथ एल • एल० बी० में पढ़ते थे. कुछ महीनों के बाद ही गरम विचार के नीजवानों की मंडली काफी ताक़त पकड़ने लगी और धीरे धीरे इलाहाबाद गरम दल का एक खास अड्डा बन गया. नए साथियों में बाबू नित्यानन्द चटर्जी, महादेव भट्ट. रास विदारी शुक्ल, टीका-राम । अपाठी और माथा शुक्त थे. माथा शुक्ल बड़ी लय के साथ अपनी देश-प्रेम से भरो कि निगए पढ़ते और नीज गनों के दिलों को अपनी छार कर लेते थे.

وہ زماتہ می آیساتھا جب سیاست اور رکانت ایک می تصویر کے در پہلو تھے ۔ آئییں کی صفح سے میں نے انعآباد پہنچ لا کالج میں نام لکھائےکا نیصلہ کیا۔ انفاق سے میرے پا جی کو بھی مہی مشورہ پسلد آیا ۔ مگر ایک دوسرے نقطہ نظر سے . وہ چاعتے تھے کہ میں ملصف بنوں کیونکہ اُس زمانہ میں ماصفی سے مائی کورے کی جبجی تک ایک کہا سیدھا راستہ تھا اور منطقی کے ائم وکانت پیمنا ضروری تھا ۔ نتیجہ یہ ہوا کہ سی منصفی کے ائم وکانت پیمنا ضروری تھا ۔ نتیجہ یہ ہوا کہ سی منصفی کے ائم وکانت پیمنا ضروری تھا ۔ نتیجہ یہ ہوا کہ سی منصفی کے ائم وکانہ پر میں الدآباد پہنچ کیا اور هندو بہرتنگ ھاؤس میں داخل ہوگیا ۔

سر سندر الل اور أن كے بهائى پنتت كهيها الل ، چو بعد هى هائى كورت كے جبع بنى ميرے بتا جى كے دوستوں ميں سے تهى كورت كے حكم كے مطابق العآباد پهنچكيے هى ميں أن سے ملئے گيا . انهوں نے مجهے صلاح دى كه ايمهاے اور لا دونوں هى ميں اپنا نام لهالوں ، چانچة ايم أے ميں فلسفى اور ايل ايل ايل الله .

پنجاب میں اُس زمانے میں کالجوں اور یونیورسٹی کی ودپارتھی عام طور پر پکری بائدھا کرتے تھے ، بعد میں پکڑی کی جکه تبکا سر ھی اور اب تو توپی کی جکه نبکا سر ھی اول پسند کرنے لکے ، مکر اُس زمانے میں سر کھا رکھنا تہذیب کے خلاف بات سبجھی جاتی تھی ، مالویۃ جی ایک نوالی تسم کی پکڑی بائدھتے تھے ، اور وہ طریقۃ سجھے اتنا پسند آگیا کہ لامور ھی سے میں لے مالویہ جی کی طرح پکڑی بائدھنی شروع کردھی ، اتنی اچھی پکڑی میں بائدۃ یتا تھا کہ میرے ساتھی مالویہ جی کے بڑے پتر پندت راماکات مالویہ کو بھی مجھے ایرشا ھوتی تھی ، منٹو اِس پکڑی کا یہ اثر پڑا کہ لوگ مجھے نواروں کی سے خاص مجھے لیے ، ایکن دھھرے دھیرے لوگوں کی یہ غلط نہی دور ہو گی اور لرگ یہ جان دھیرے لوگوں کی یہ غلط نہی دور ہو گی اور لرگ یہ جان

یونیورسٹی کے ودیارتھیں میں گرم خیال کے 'ربو وریارتھیں کی طرف سیری فظرنٹی ایک برھان یور کے نے ہیں۔ مشر تھے اور دوسرے ناگہور نواسی ایل ایم دھرما ، دونوں هی مشر تھے اور دوسرے ناگہور نواسی یونفٹے تھے ، کچھ مهیئیں کے بعد ھی گوم وچار کے فوجوانس کی مندلی کانی طاقت پہرنے لئی اور دھیرے دھیرے الدآباد کرم دل کا ایک خاص ادآباد کرم دل کا ایک خاص ادآباد کی مدل کا ایک خاص ادآباد کی مدل کا ایک خاص ادآباد کی دل کا ایک خاص ادآباد کی شکل اور دھیوں میں بابو نیدانند چار جی' مہادیو بھٹ' راس بہاری شکل اور ٹیکا رام تر دائیی اور مادھو شکل تھے مادھو شکل بوی لیے کے ساتھ اپنی دیش پریم سے بہری اپنی کویتائیں پرمتم اور فوجوانوں کے دلوں کو اپنی اور کرایتے تھے ،

- 157 years

2.32

सन् 1905 का स्वदेशी आन्दोलन और मेरा राजनैतिक जीवन

परिडत सुन्दरलाल

सन् 1905 की बात है!

डी० ए० बी० कालेज लाहौर से बी० ए० पास करने के बाद मेरे सामने आगे की पंदाई का सवाल था.

लाहीर में लाला लाजपतराय के साथ बहुत नजदीकी वाल्लुकात देदा हो चुके थे. उनके क़दमों के पास बैठकर मैंने राजनीति के पहल पाठ पढ़े थे. मैं उन्हें अपने पिता की तरह पूज्य मानता था धीर उन्हें मुक्तसे सगे बेटे से भी ज्यादा मुर्ब्बत थी. उन्हीं की हिदाबत के मुताबिक सन् 1904 में कू पी० के पूर्वी जिलों में अकाल पीड़ितों की सेवा सार्व-जनिक जीवन में मेरा पहला क़दम था.

मेरे सामने सवाल था कि मैं एम॰ ए० पास करके शिक्षक बन्दें वा वकात पास करके राजनीति में गइराई से दिस्सा खूँ. लाला जी से मैंने मशविरा किया. उनकी राय थी कि स्थियासी जिन्दगी के लिए बकालत पढ़ना ही ठीक है.

[पिछले सके से आगे]

यफलातून ने ईश्वर को एक बड़े गिएतझ के रूप में ही देखा था. यही बात वेदान्त और वेदांगों में कही गई है. उक्लैदम के सूत्रों की पहली शकल बिलकुल भारत के 'श्री यन्त्र' से मिलती है जिसमें एक अनन्त अनादि ब्रह्म चक्र के रूप में दिखाया जाता है और उसके अन्दर जद और चेतन सृष्टि दो एक दूसरे को काटते हुये त्रिकायों के रूप में. यह चक्र कभी-कभी एक साँप की शकल में भी दिखाया जाता है जिसका मुँह खुद अपनी दुम को खाने की कोशिश कर हा है.

यही संसार यानी जगत है. यही माया यानी श्रम है. इस तरह यूनानी गियातज्ञ उक्लैदल त्रिश्वात्मा, प्रकृति भीर धन दोनों के मेल से पैदा होने वाली सारी सृष्टि की नमस्कार करता हुआ अपनी पुस्तक की प्रारम्भ करता है. दुणियां की सारी साइम्सें इन्हीं दोनों के स्थारे कृत्यम हैं.

سن 1905 کا سودیشی اُندولی اور میرا راج نیتک جیون

بنتت سندر ال

سي 1905 کي بات ھے!

قو، لمه ، وي ، كالج الأمور سے بى ، لمه ، باس كرلم كے بعد مهدم سامنے آكے كى برامائى كا سوال تها .

العور میں الله الجهت رأئے کے ساتھ بہت هی نزدیکی تعلقات پیدا هوچکے نهے أن کے قدموں کے داس بیٹھ کو میں نے راج ثبیت کے پہلے پائھ پڑھے نهے میں آنهیں اپنے پتائی طرح پوجیه مانئا نها اور آنهیں مجھ سکے سے بیٹے سے بھی زیادہ محبت تھی ۔ آنهیں کی هدایت کے مطابق سن 1934 میں یوپیی کے پرروی ضلعوں میں اکال پهوتوں کی سیوا ساروجنک جهوں میں میوا یہ قدم تھا ،

مفرس سامنے سوال تھا کہ میں ایم، اس، پاس کو کے شکسک، بنوں یا وکالت پاس کو کے راج نیٹی میں گہ آئی سے حصہ لوں ، لاله حی سے میں لے مشورہ کیا، اُن کی رائے تھی کہہ سیاسی زندگی کے لئے وکالت پڑھنا ھی ٹیپک ھے،

[بجلے مذھے سے آگے]

افلاطوں نے ایشور کو ایک، برے گنونگیت کے روپ میں جی دیمیا تھا ، یہی بات ویدانت اور وبدانگیں میں کہی گئی میں ، اقلیدس کے سوتروں کی پہلی شکل بالکل بیارت کے تشری بنترا سے ملتی ہے جس میں ایک اندت انادی برهم چار کے روپ میں دایایا جاتا ہے اور اس کے اندر جو اور چیان شرشت دو ایک دوسرے کو کائتے ہوئے نریکوں کے روپ میں ، یہ چار کیمی کیمی ایک سائپ کی شکل میں بھی دایایا جاتا ہے جس کا منه خود آپنی دم کو کی شکل میں بھی دایایا جاتا ہے جس کا منه خود آپنی دم کو کیائے کی گہشی کر رہا ہے ،

یہی سنسار یمنی جکت ہے ۔ یہی مایا یعنی یوم ہے ۔ اس طح یہنائی گنزنکیه انلیدس دشو آنما وکرتی لور آن دونوں کے حال سے پیدا ہونے والی ساری سرشتی کو نسسکار کرتا ہوا اپنی پستک کو پرارمیھ کرتا ہے ۔

جنهائی سازی سائلس انہیں تیاس کے سیارے قایم هیں •

देश, काल और हरकत इन्हीं ठीन से सारी दुनिया समग्री जा सकते हैं. इस लिये गांधत सब साइन्सों की जड़ है. इसीलिये असल ज्ञान को संस्कृत में 'सम्यक-ख्यानम्' कहा गया है. इसी से 'संख्या' बना है जिसका अर्थ गिनती है. इसी से मांख्य शास्त्र का नाम 'सांख्य' पड़ा. जब गीता ि सी गई थी उस समय वेदान्त सांख्य में शामिल था.

सर जे॰ जीन्स अपनी पुस्तक 'दि बिस्टिरियस यूनीवसे' के बाखीर में ।लखता है:--

"चेतन और जड़ यानी रुड् और मादा के बीच की पुरानी दुई (देत श्रव मिटती दुई मालूम होती है..... क्यों कि जिसे इम ठांस मादा कहते हैं वह श्रव चेतन की हो रचना और उसका ही एक जहूर मालूम होने लगा है. यह चेतन एक ऐसी कल्पना शिक श्रीर नियन्त्रण शिक है जो उसी तरोक से सोचने की श्रादी है जिस तरीक को हम गणित का तरीका कहते हैं."

जोड श्रवनी पुस्तक 'गाइड दु मार्डन थाट' में खिखता

"यदि हम यह प्रश्न करें कि इस सारे वजूद की असल हक्षीकृत क्या हो सकती है तो इसके जवाब में सर जे० जीन्स को राय है, कि वह असल हक्षीकृत एक बहुत बड़े गांग्रतक (ईश्वर, का मस्तिष्क है, प्राकेसर एडि गंटन के अनुसार असल हक्षीकृत एक सवेंच्यापक मस्तिष्क है, प्राकेसर बाइटहेड के अनुसार अस्ल हक्षीकृत एक तरह की शारी/रक इकाई है जो एक व्यक्ति या मनुष्य सी है, और बर्गसन के अनुसार अस्ल हक्षीकृत जीवन की धारा या शक्ति है."

वेदान्त के खद्दैतवाद यानी 'संडिहम्' में यह सब सिद्धान्त समा जाते हैं. योरप का वैद्यानिक विचार तरह-तरह से घूम फिर कर वेदान्त के ठीक दरवाजे, तक पहुँच जाता है,लेकिन वहां जाकर रक जाता है, खन्दर जाने की उसे खभी हिम्मत नहां हो रही है जहाँ जाकर वह यह देख सके कि एक ही खात्मा विश्वातमा यानी रहेकुल सबमें रमी हुई है और वही सब है.

मराहूर यूनानी गिंग्यतहा उकतेदस ने अपनी रेखा
गिंग्यत के सूत्रों में पहली शकल त्रिकांग्य को हो क्यों रखा
इसकी कोई खास बजह नहीं बताई जाती, इतिहासकारों
का कहना है कि रेखागिंग्यत की विद्या मिस्र से यूनान गई थी
जहाँ उकलैदस ने अपनी किताब ईसा से तीन सौ बरस पहले
लिखी. इतिहासकारों की यह भी राय है कि यह रेखागिंग्यत मिस्त्र में भारत से गया था. कुछ की यह भी राय है
कि भिस्न के पहले राजकुल का कायम करने वाला 'मैनी'
आये जाति के आदि-मनुआं में से था. इससे मालूम होता है
कि उकलैदस के विमान में गिंग्यत और दश न शास्त्र (फजसके) में गहरा सम्बन्ध था.पाइथागोरस और प्लेटो (अकलातन) भी गिंग्यत और दश न शास्त्र को एक ही मानते थे.

دیمی کال اور حوکت اِنهیں تین سے ساری دلیا سنجی جا سکتی ہے اِسی اللہ گلوت سب سائلسوں کی جو ہے اِسی لا اُسی کی اُسی کو سلسکرت میں 'سمبک—کهیائم' کیا گیا ہے ۔ اِس سے سائکویہ اِسی سے 'سنکھیا' بنا ہے جس کا اُرد ۔ گنتی ہے ۔ اِس سے سائکویہ شاستر کا نام 'سانکھیہ' بڑا ، جب کینا لکھی گئی تھی اُسی سمیہ ویدائت سائکویہ میں شاسل 'یا ،

سر جے جنس ابنی بستک اسی مسیتریس یونیورس کے آخیر میں لاہنا ہے: -

ور چیتن اور جر یعنی روح اور مادہ کے ریپے کی بوانی دوئی (دویت) اب متنی ہوئی معاوم ہوتی ہے...کوئت جسے ہم تہرس مادہ کہتے ہوں وہ اب چیتن کی ہی رچنا اور اس کا هی ایک ظهور معلوم ہوئے لگا ہے ، یہ چیتن ایک ایسی کلینا شکتی اور نینترن شکتی ہے جو اُسی طریقے سے سوچنے کی عادی ہے جس طریقے کو ہم گنرت کا طریقہ کہتے ہیں ،"

جرة يعنى بستك اللقر أو مارن تهاك مين لكهمًا في :-

''یدی هم یه پرشن کریں که اِس سارے وجود کی اَصا حقیقت کیا هوسکتی هے تو اِس کے جراب میں سرچے ، جینس کی راثے هے که ره اصل حقیقت ایک بہت بڑے گنونگیه (ایشور) کا مستشک هے' پرونیسر ایدنگش نے انوسار اصل حقیقت ایک سرر ویاپک مستشک هے' پرونیسر وائٹ هید کے انوسار اصل حقیقت ایک طرح کی شاریرک اکائی هے جو ایک ریکتی امنشیت سی هے' اور برگسن کے انوسار اصل حقیقت جیوں کی دعارا یا شکتی هے ''

ویدانت کے ادریت واد یعنی سوؤم میں یہ سب سدهانت سا جاتے ہے۔ یورپ کا وگیانک وچار طرح طرح سے گوم پور کر ویدانت کے ٹھیک دروازم تک بہنچ جاتا ہے ۔ لیکن وہاں جا کر رک جانا ہے اندر جانے کی اُسے ابھی ہمت نہیں ہو زہی ہے جہاں جاکر وہ یہ دیکھ سکے تہ ایک ہی آتیا وشو آتیا یعنی روح تل سب میں رسی ہوئی ہے اور رہی سب ہے ۔

مشہور یونائی گنز کیہ اقلیدس نے اپنی ریکھا گرت کے سوتروں میں پہلی شکل تریکوں کو علی کیوں رکبا اِس کی کرئی خص وجہ نہیں بھائی جانی . اِنہاسکاروں کا کہنا ہے کہ ریکھا گلرت فی ودیا مصر سے بونان گئی تھی جہاں اقلیدس نے اپنی کتاب اِسی سے تین سو برس پہلے ایکی . انہاسکاروں کی یہ بھی رائے ہے دہ یہ ریکھا گلوت مصر میں بھارت سے گیا تھا . کچھ کی یہ بھی رائے ہی رائے ہی کا قایم کوئے والا 'مینی' اُریک جاتی کے آدی منوں میں سے تھا۔ اِس سے معلوم ہوتا ہے کہ الملیدس کے دمانے میں گنوت اور درشن شامتر (فلسفے) الملیدس کے دمانے میں گنوت اور درشن شامتر (فلسفے) میں گہرا سمبندھ تھا ، پائیتھاگورش اور پلیٹو (انالطون) میں گہرت گھو درشن شامتر (انالطون)

امل طبقت کیاں آیک کے اور وہ تررکار کے انورشیش کے اندر کے وہی اندا کے وہی اندر کے اندر کو یہی انستانی کا سدھانت کے اور یہی ویداست کا اصرال یہی انستانی کا سدھانت کے اور یہی ویداست کا انوسار یہی وحدۃ اوجود کے انوسار یہی وحدۃ اوجود کے ا

آجکل کے بڑے ہڑے سائنسدانوں کا بیان ویدائت کے افراوں سے بہت جاتا ہے۔ مثال کے لئے سرچے، جینس کی درس اور تائٹر الیکسس کیول کی اس میں دبی ان نون بڑھنے یوگ تابیں ھیں۔ سرچے، جیاس لامی نو نون بڑھنے یوگ تابیں ھیں۔ سرچے، جیاس لامی اور نیک ان نون اور انفت لامی که :—" اجکل کی سائنس اِسی نتیجے پر پہنچ رھی ہے کہ دنیاکی سب چیزوں کا وجود ایک آنادی اور انفت انا کے میں کے اندر ھے'' (دنیا کی گیتنائیں گیتت نہیں اُنا کے میں کے اندر ھے'' (دنیا کی گیتنائیں گیتت نہیں اور افلاموں) کہتا ہے کہ:—ھم وکیه ھیں ۔ اور 'ھوگا' کہتے ھیں کیا اور افلاموں) کہتا ہے کہ ھمیں کیول' ھیں ھی کہنا چاھئے۔"اوپر کے سب وائیه سر جے ، جیننس کی کتب سے چاھئے۔"اوپر کے سب وائیه سر جے ، جیننس کی کتب سے لئے گئے ھیں ۔

قافتر الیسکس کیول نے لکھا ہےکہ: -- ''ٹھم ابھی تک ایک ایسے سلسار میں دویے ہوئے میں جسے بےجان مادے کی سائنسوں نے پیدا تھا ہے ۔ یہ سلسار ہماری سمتی دی غلطی سے پیدا ہوا ہے ۔ ہم اپنی اصلی آنما کو نہیں جان پائے اِس سئے یہ دنیا بیدا ہوئی ۔ اُجکل کے شہروں کے شور و شر کے اندر بھی جو اپنی انتر آنما کی شانتی کو فایم رنیتے میں' وہ طرح طرح کی ایشور کے اندر دوسری بیماریس سے بچے رہتے میں ۔ جو آنما ایشور کے اندر دوب جانی ہے اسی دی روشنی کے سامنے موت ایشور کے اندر دوب جانی ہے اسی دی روشنی کے سامنے موت بھی مسکرا کو رہ جانی ہے اسی دی روشنی کے سامنے موت

لیکن آجکل کی سائنس ابھی یہ کہنے کو تیار نہیں گے که وہ اندی اور انفت آما وہ هماری سچی آت هماری انتر اندن هماری انتر آما انشرا ایسی آما اندن ایسی سپائیاں ابھی کے اندر گے ، اور وہی سب کے اندر گے ، اور وہی سب کے توسی سپائیاں ابھی تک سائنس کے سمجھ کے دائرے سے دور عیں ، اِسی لاے ابھی سائنس کو اصلیت مک پہچنے میں دقت پر رہی گے ،

می کا گنوت انک گنوت هے جس میں جوز' باقی اور شونیه (صغر) سب هداری کلینائیں هیں ۔ دیش کا گنوت ریکھا گنوت هے جس میں بائنٹ یعلی نقطه' لائن سطع' کونقر توبیمو' دائرہ' سمانانفر سب دارشنگ کلینائیں هیں ۔ اِن میں سے کوئی کہیں اصلی شکل میں دیکھی نہیں جا سکتی .

श्रमल इक्नीक्रत केवल एक है और वह 'निर्विकार' है 'निर्विशेष' है, 'प्रशान्त' है, 'पृणी' है वही 'आत्मा' है, वही 'स्वयं-सिद्ध' यानी खुद अपना प्रमाण है, सारी दुनिया उसके अन्दर है, वही 'निरपेश्व' वानी ऐवसोलूट है, और सब 'सापेश्व' यानी 'रैलेटिव' है. हिर फिर कर यही आइन्स्टाइन का सिद्धान्त है और यही वेशन्त का उसूल. यही असली 'विक्नान' है, यही प्राचीन 'प्रक्षान' है, मुसलिम सूफियों के अनुसार यही बहदतलबजद है.

आजकल के बद्दे-बद्दे साइन्सदानों का बयान वेदान्त के अस्लों से बेहद मिल जाता है. मिसाल के लिये सर जे. जीन्स की 'दि मिस्टीरियस यूनीवर्स', श्रीर डाक्टर एलेकिसिस कैरल की 'मैन दि अन्नोन' पढ़ने योग्य कितावें हैं. सर जे०जीन्स लिखता है कि:—"आजकल की साइन्स इसी नतीजे पर पहुँच रही है कि दुनिया की सब चीजों का वजूद एक अनादि और अनन्त आत्मा के मन के अन्दर है." "दुनिया की घटनाएँ घटित नहीं होतीं, केवल हम उन्हें प्रटित होते हुए देखते हैं. प्लैंटा (श्रक्तातून) कहता था कि:—"हम 'था' 'हैं', और 'हांगा' कहते हैं लिकन सचाई यह है कि हमें केवल 'है' ही कहना चाहिये." उपर के सब वाक्य सर जे० जीन्स की किताब से लिये गये हैं.

डाक्टर एलैक्सिस करेल ने लिखा है कि:—'हम अभी तक ऐसे संसार मं डूबे हुये हैं जिसे बेजान माइ की साइन्सों ने पैदा किया है. यह संसार हमारी समझ की ग्रलती से पैदा हुआ है. हम अपनी असली आत्मा को नहीं जान पाये इसीलिये यह दुनिया पैदा हुई. आनकल के शहरों के शोर शर के अन्दर भी जो अपनी अन्तरातमा की शान्ति को कायम रखते हैं वह तरह-तरह की दिमाग्री और दूसरी बीमारियों से बचे रहते हैं. जा आत्मा ईश्वर के अन्दर हु जाती है उसकी राशनी के सामने मौत भी मुसकराकर रह जाती है."

लेकिन आजकल की साइन्स अभी यह कहने कार्त यार नहीं है कि वह अनादि और अनन्त आत्मा, वह हमारी सच्ची आत्मा, हमारी अन्तरात्मा, ईश्वर, वही एक आत्मा सब के अन्दर है. और वही सब है. तत्त्वमिस, अहम ब्रह्मा-स्मि, अनलःक जेसी सच्चाइयाँ अभी तक साइन्स की समम के दायरे से दूर हैं. इसंलिये अभी साइन्स को अस-लियत तक पहुँ चने में दिक्कत पड़ रही है.

समय का गणित अंकर्गणत है जिसमें जोड़, बाकी और शून्य (सिक्र) सब हमारी करपनाएँ हैं. देश का गणित रेखान जित है, जिसमें पांपट यानी नुकृता, लाइन, सतह, कांण, त्रिकांण, दायरा, समानान्तर सब दाश निक करप-माँ हैं. इनमें से काई कहीं असली शकत में देखी नहीं जा सकती.

اپنی عمر هے . هر ایک کا جانے ها هر ایک کی موت هے أور هر ایک کا بیچ کا زماند هے اور یہ سب بھی دکھاوا هی داھاوا هے داوات هے کیونکد ایک دوسرے سے علیتحدگی اور پریورس کی کارنا هی انت میں دھوکا هے سنیا هے مایا هے .

پرکوتی یعنی قدرت کے دو پہلو هیں . مول پرکوتی اور اور دیوی پر کرتی . مول پرکوتی مادہ هے اور دیوی پرکوتی شکنی هے . یہ شکتی برابر جنم مرن عمل ردعمل کے روپ میں کام کرتی رهتی هے . اِس کا چلانے والا برهما کیا جاتا هے . وهی وشو کی اُنما هے . جب ایک رچنا (خنقت) ختم هو جاتی هے تو اُس کی جگه درسری جنم لے لیتی هے . تهیک جس طرح کیچ آدمی مرتے هیں نو درسرے پیدا هوتے رهتے هیں . جو خالت چہوئے کی هے وهی حالت بڑے سے بڑے کی مالت چہوئے سے چہوئے کی هے وهی حالت بڑے سے بڑے کی بھماتت میں بھی هے . یہ سب سدا بدلتی هوئی صورتیں بہماتت میں بھی هے . یہ سب سدا بدلتی هوئی صورتیں آنا یعنی امل وجود کا کیول ایک سینا هے .

اشا ہے کہ اُنستائی کی تھیوری آف ربلیٹیوئی اور ویدانت انت میں ایک دوسرے کے بہت ٹمٹ دکھائی دیں گے . آسائسٹائی کے سدھانت کے اوپر نئے نئے وچار کوں کی جوکتابیں نکل رھی ھیں اُن سے بعات اور بھی صاف دکھائی دے جانی ہے ،

وأستر مين كوئى دو سمانانتر ريتهائين هو هي نهيب سکتیں امیں هی نہیں . سپ چهزیں چکر لاق رهی هیں یا پیچ کی چرزیوں کی طرح حرکت کر رھی ھیں ۔ دیھی كال أور سنسار سب قائدهاني هيل . سوشويتي يا پرالله ميں جادر إن سب كا انت هوجاتا في ، باشجات كرت جو سب سے یعی سائنس گنی جاتی ہے، سب سے ادھک لمپناؤں کے ادھار یر چل رھی ہے ، بڑے سے بڑے سائنسدانوں میں مت بھید ھیں بحثیں عیں ، ایدنکٹن کہت ہے که أده بيه سے بيت سائنسدانين کا کہا هے که ايشرا فام کی چین کا وجود ہے اور باقی آدھے ہڑے سے بڑے سائلسدانین کا کهنا فع که ایشور کا دو ئی وجود عی نهین . اِس پر ایک اور ردوان جرق نهایا هے که اِن دونوں کا مطلب ایک هی هے کیول شبدوں کا جهکوا هے . سرولیم بریگ کہتا هے کنے۔'' هم هر سوموارا بده وار اور شکروار کو ایک سدهانت سے کام لیکے هیں اور هر منکل وار وپر وار اور شنیوار کو دوسرے سدسانت سے کلم لیٹے میں " ا

آنستائن کے سدھانت کے ویکیالک تاریخے کچہ بھی نکیں' وہ سدھانٹ ویدانت کے بااکل تاک اور اُسی کے اندر شامل ہے یہ سب جو کچہ عم دیکہتے عیں ساپکش ہے یعنی کیول ایک دوسرے کی مناسبت سے وجود رکہتا ہے۔

अपनी उम्र है. हर एक का जन्म है, हर एक की मौत है और हर एक का बीच का जमाना है, और यह सब भी दिखावा ही दिखावा है क्यों कि एक दूसरे से अलहदिगी और परिवर्तन की कल्पना ही अन्त में धोखा है, सपना है, माया है.

प्रकृति यानी कुद्रत के दो पहलू हैं. मूल प्रकृति और देवी प्रकृति. मूल प्रकृति मादा है और देवी प्रकृति शक्ति है, यह शक्ति बराबर जन्म, मरण, अमल, रहें अमल के रूप में काम करती रहती है. इसका चलाने वाला ब्रह्मा कहा जाता है. वही विश्व की आत्मा है. जब एक रचना खिलकत खत्म हो जाती है तो उसकी जगह दूसरी जन्म ले लेती है. ठीक जिस तरह कुछ आदमी मरते हैं तो दूसरे पैदा हाते रहते हैं. जो हालत छोटे से छोटे की है वही हालत बड़े से बड़े की भी है. जो छोटे से छोटे पिन्ड में है वही बड़े से बड़े बड़ान्ड में भी है. यह सब सदा बदलती हुई सूरतें आत्मा यानी असल बजूद का केवल एक सपना है.

आशा है कि आइन्स्टाइन की थ्योरी आफ़ रैलेटिविटि और वेदान्त अन्त में एक दूसरे के बहुत निकट दिखाई देंगे. आइन्स्टाइन के सिद्धान्त के ऊपर नए-नए विचारकों की जो किताबें निकल रही हैं उनसे यह बात और भी साफ़ दिखाई दे जाती है.

वास्तव में कोई दो समानान्तर रेखाए हो ही नहीं सकती, हैं ही नहीं, सब चीनें चकर काट रही हैं या पेच की चूड़ियों की तरह इरकत कर रही हैं. देश, काल और संसार सब नाशमान हैं, सुषुप्ति या प्रलय में जाकर इन सब का अन्त हो जाता है, पाश्चात्य गणित जो सब से पकी साइन्स गिनी जाती है, सब से करजी अधिक कल्पनाओं के आधार पर चल रहा है. बढ़े से बड़े साइन्सवानों में मतभेद हैं, बहसें हैं. एडिंगटन कहता है कि आधे बड़े से बड़े साइन्सदानों का कहना है कि ईश्वर' नाम की चीज का वजूद है, और बाक्री आधे बड़े से बड़े साइन्सदानों का कहना है कि 'ईश्बर' का कोई वजूद ही नहीं. इसपर एक और विद्वान जोड लिखता है कि इन दोनों का मतजब एक ही है केवल शब्दां का मगदा है. सर विलियम बेग कहता है कि:-"हम इर सामवार; बुधवार श्रीर शुक्रवार को एक सिद्धान्त से काम लेते हैं श्रीर हर मंगलवार, बीरवार श्रीर शनिवार को दूसरे निद्धान्त से काम जीते हैं."

आइन्स्टाइन के सिद्धान्त के वैज्ञानिक नतीजे कुछ भी निकलें वह सिद्धान्त वेदान्त के बिलकुल निकट और उसके धन्दर शामिल हैं. यह सब जो कुछ हम देखते हैं सापेक्ष है बानी कवल एक दूसरे की मुनासबत से बजूद रखता है.

आजकल योरप में आइंस्टाइन की 'ध्योरी आफ़ रैते-टिबिटी' की बहुत चरचा है. मोटे तीर पर इसका अर्थ यह लिया जाता है कि दुनिया की सब बीजों का वजूद जिनमें दश, काल और किया भी शामिल हैं, केवल सापेक्ष यानी इसरी वांचों की मुनासियत से ही है इनका अपना असल वज्रद कुछ नहीं. आइन्स्टाइन के इस सिद्धान्त का लेकर शारप से तरह-तरह की चरचाएँ हो रही हैं और वहत सी कितावें लिखी जा चुकी हैं. कुछ का कहना है कि समय कोई कीज नहीं, केवल चीकृहि, लम्बाई और गहराई की तरह समय भी एक फरजी दिशा है. कुछ का कहना है कि देश यानी जगह बन्त में जाकर मुद्द जाती है यानी गोल हो जाती है. कब का कहना है कि समानान्तर यानी मुतवाजी लकीरें अगर काफी दूर तक बढ़ाई जावें तो आखीर में मिल जावेंगी. कुछ कहते हैं कि देश, काल और विश्व सब सान्तक यानी फानी और महरूद हैं. कुछ यह भी कहते हैं कि यह विश्व कहीं बढ रहा है, कहीं सिकुड़ रहा है और हर स्रत में इसकी शक्ति के श्रीण होने के साथ साथ यह एक दिन नष्ट हो जावेगा, इत्यादि इत्यादि. कुछ का यह भी कहना है कि विश्व की असलीयत की सिवाय बढ़े गहरे साइन्सदानों के और कोई समक ही नहीं सकता .

इस देश का पुराना दश न शास्त्र हमेशा से मानता चला आया है कि देश, काल और क्रिया तीनों तीन हैं, फिर भी इनमें से किसी को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता और तीनों एक बराबर माया यानी फरेब हैं. इनका बजुद आदमी के सपने से जियादह है।सयत नहीं रखता , जो दुनियाएँ, चाँद, सूरत वरौरा हमें दिखाई देते हैं इनके बीच बीच में और इनमें को निकलती हुई और भी दुनियाप हैं जो बिलकुल दूसरी ही तरह के माहे से बनी हैं. उन दुनियाओं में देश, काल और इरकत के भी और ही अर्थ होते हैं. यह दुनिय एं हमारे जागते समय की दुनियाएँ भी हैं खार सपने के समय की दुनियाएँ भी हैं. हमारे नी व भी हैं और ऊपर भी हैं. यूरांपियन विद्वान फूरनियर ही. एलाई ने इस विषय पर एक बहुत श्राच्छी किताब दू न्यु वर इस' यानी दो नई दुनियाएं लिखी है. उसके अनुमार इनमें से एक दुनिया वह है जा बिना खुर्देशीन के नहीं रेखो जा सकती. वह भी कराइहा कराइ संखदा संख जन्तुओं का बुनिया है, चौर दूसरी वह दुनिया है जो बिना दूरबीनों के नहीं देखी जा सकती जिस में अरबों छाटे, बड़े सितारे, सैयारे, चाँद, सूरज श्रीर सूरजों के सूरज शामिल हैं.

योरव का विद्यान आइन्सट इन के बाद वेदान्त की इस कल्पना की तरकसाक बढ़ रहा है कि अन्त में जाकर सब किया यू हरकत गालाकार चका में रह जाती है, इस संसार चक्र का न काई आदि है और न काई अन्त, यूँ हर चीज की المجال يبرحها ميس النسكائين كي الهيوري أن رياياليولي كي المناف جرجا في مريد عاور ور أس كا ارته يد لها جاتا في كد دليا كى سب چهزوں كا وجود عنى ميں ديش كال أور كويا يهى هادال هین کیرل ساپیکس یعلی دوسری چیزرںکی مناسبت سے خی ہے ان کا اینا امل وجرد کچھ نہیں ۔ آئنسٹائن کے اِس حیمالت کو لے کو یورپ میں طرح طرح کی چرچائیں هو رهی عهل أور بهت سي كتابين لكهي جا چكي هين . كچه كا كهنا هي که سم کوئی چفز قهدن کیول چوزائی، لمبائی اور گهرائی کی طرح سمم يهي أيك فرفي دفا هي ، كجم كا كهنا هي كه ديم يعلى جكهة أنت ميں جاكر وجائي هے يعنى كول هو جاتي ه ، کچ کا کہنا ہے کا سما انتر یعلی متوازی العربی اگر کانی دور تک بوهائی جارین تو اخر مین مل جارین کی . نجه كهي هون كه ديهن كال أور وشو سب سانتك يعلى فالم أور معطول هيل . كجه يه يهي كهاتم هيل كه يه وشو كهين بوء رها هـ؛ كيدن سكو رها هـ أور هر صورت مون إس کی شکلی کے چھوں دونے کے ساتھ ساتھ یہ ایک دور نشت مو جارے گا انبيادي انبادي . كنچم كا يه يهي كهذا هے كه وشو كي اصلیب کو سوائے بوے گہرے سائنسدانیں کے اور کوئی سمجھ هي انهين سکتا .

اِس ديس كا يرأنا دردر شاستر هميشه سے مانتا چلا آيا ف که دیش کل اور کرواتینوں تین میں پہر بھی اِن میں سے د ایک درسرے سے الگ نہیں کیا جا سنتا اور تینوں آیک برابر مایا یعلی فریب دوں . ان کا وجود آدمی کے سیلے سے رمادة حيثيت نهيس رايتا ، جو دنيائيس چاند سورج وغيرة ھمیں دکیائی دیتے میں اِن کے بیچ بیچ میں اور اِن میں و تعلقی ہوئی اور بھی دنیائیں میں جو بالکل دوسرے می طرح کے ماديم سه باي هيل . أن دنياول ميل ديمن كال اور حركت، کے بھی اُور ھی اُرتو ھوتے ھوں ، یع دنیائیں ھمارے جاگئے مده ای دنیانوں اوی دوں اور سیلم کے سمم کی دنیائوں بھی هون . قمارسه لينج يهي هدن اور اوير يهي هين . يوريدن ودولی فورنیز دو . املیرے نے اس رشہ پرایک بہت اچھی اتاب الو نیر ورادس عنی در نئی دلیانین لکھی ہے. اُس کے انوسار ای میں سے ایک دنوا وہ ہے جو بنا حوردیوں کے نہیں دیکھی ها سکتی . ولا بری کررز ۱۱ کروز سنته جنتوں کی دنیا هـ . لرر دوسری وہ دنیا ہے جو بنا دور بینوں کے نہیں دیکھی جا ساني جس دون اربون چهول برت ساره ا ساره ا چالدا سررے ارر سررجوں کے سررے شامل میں .

یورپ کا وکیان آندستانی کے بعد ویدانت کی اِس ناپلا نی طرف صاف بوته رها هے که اُنتت میں جا کر سب کویا یا حرفت کولا کار چکورں میں رہ جاتی میں ، اِس سفسار چکو کا مح کوئی اُدھے اُور نه کوئی اُنت ، یوں هو چھو کی

आईस्टाइन का सिद्धान्त और वेदान्त

डाक्टर भगवानदास

यह दुनिया क्या है ?

भारमा, रूह यानी 'मैं' क्या हूँ और भनारमा यानी मादा यानी यह सब जो दिखाई देता है यह क्या है, और इन दोनों में क्या सम्बन्ध है ? यही सवात दर्शन शास्त्र (फ्लस्के) का मुख्य सवात है और यही सवात. तेबी के साथ साइन्स का मुख्य सवात होता जा रहा है.

आस्मा भीर अनात्मा के मेल के दो पहलू हैं. एक पहलू है जिसे इम देश, काल, और क्रिया, यानी मकान, जमान और इरकत कहकर बयान करते हैं, और दूसरा पहलू शक्ति के रूप में दिखाई देता है, जिसे इम क्रिया, प्रतिक्रिया और कार्यकारमा सम्बन्ध यानी अमल, रहे अमल और इस्तत और मासूल का रिश्ता कह सकते हैं. दुनिया में हमारे सारे अनुश्वन इन्हीं में आ जाते हैं.

जब हमें चीजें एक दूसरे के बाद होती मालूम होती हैं तो काल (समय) की कल्पना पैदा होती है. बहुत सी चीजों के एक साथ बजूद से देश (जगह) की कल्पना पैदा होती है. चीजों के अदलने बहुतने से क्रिया (हरकत) की कल्पना पैदा होती है. इन तीनों काल, देश और क्रिया का एक समरे के साथ अट्ट सम्बन्ध है.

काल (समय) के तीन कम हैं भूत, भविष्य और दोनों को भिलाने बाला वर्षमान. देश (जगह) के तीन पाद (क्रद्म) हैं. ऊपर, नीचे और दोनों को मिलाने वाला बीच. 'बहाँ' भी कह सकते हैं. इन्हीं के रूप लम्बाई, चीड़ाई और गहराई हैं.

क्रिया (हरकत) की तीन दिशाएँ (तीन सिन्त) हैं. इन्हीं को तीन 'प्रकार' मी कह सकते हैं,—जागे, पिछे जीर गोल पक्षर, दूसरे शब्दों में बदना, सिकुदना जीर सुरीलापन. या वह शक्ति जो सब बीकों को मरकज की तरफ सींचती है, बह जो सबको मरकज से दूर फे कती है, और वह जा बीजों को गोलाकार चुमाती है.

यह सब केवल कल्पनाएँ हैं, तसन्तुर हैं, सब खामं स्वयाती हैं, इनका रूप जब बनता है जब इनके आध किसी इच्या, किसी रह्म, किसी तरह के ठोस माहे का सम्बन्ध होता है, तब यह सब कल्पनाएँ हमारी जिन्दगी के तजरने बन जाती हैं.

أئنستائن كاسدهانت اور ويدانت

داكلر بهكولي داس

يه دنيا کيا ہے ؟

أتما وح يعلى فمين كيا هول أور أن أتما يعلى مانة يعلى على يعلى يع سب جو دنهائي ديا هي يع كيا هـ أور إن دونول مهل كيا سمبنده هـ أ يهى سوال درشن شاستر (فلسني) كا مكهية سوال هـ أور يهى سوال تيزى كيمانه سائنس كا مكهيد سوال هوتا جا رها هـ .

آنا اور آن آنا کے میل کے دو پہلو ہیں ۔ ایک پہلو ہے جسم ہم دیھں کال اور کریا یعلی مکان زمان اور حرکت کہے کر ہم بیان کرتے ہیں اور دوسرا پالم شکتی کے روپ میں داہائی دیتا ہے جسے ہم کریا پرتی کریا اور کاریکارن سمنبدہ یعنی عمل رد عمل ارر عامت اور معاول کا رشتہ کہتے ہیں ۔ دنیا میں ہمارے سارے انویور انہیں میں آجاتے ہیں ۔

جب همیں چیؤیں ایک دوسرے کے بعد ہوتی معاوم ہوتی
ھیں تو کال (سمه) کی کابانا پیدا ہوتی ہے ، بہت سی چیؤیں
کے ایک ساتھ وجود سے دیش (جکه) کی کلینا پیدا ہوتی ہے ،
چیؤوں کے اُدلئے بدلنے سے کریا (حرکت) کی کلینا پیدا ہوتی
ہے اِن تینوں کال دیھی اور کریا کا ایک دوسرے کے ساتھ اقرت
سیلدھ ہے .

کال (سمه) کے تین کرم هیں بهوت بهوشیه اور دونوں کو ملانے والا ورتمان ، دیھی (جکه) کے نین یاد (قدم) هیں ، اوپور نینچے اور دونوں کو ملانے والا بیچ ، اِنهیں کو پینچے اور دونوں کو ملانے والا بیچ ، اِنهیں کے روپ امبائی اور ملانے والا ایباں بھی کہه سنتے هیں ، اِنهیں کے روپ امبائی ، چورائی اور گھرائی هیں ،

کریا ر حرکت) کی نین دشائیں (تین سمت هیں .
اِنهیں کو تین 'پرلار' بھی کہ سکتے هیں'۔۔آگے' پیچھے اور گول
چکر درسرے شہدوں میں بوعفا' سکوٹا اور سریلا ہیں یا وہ شکتی
جو سب چیؤوں کو مرکز کی طرف کھلیچتی ہے' وہ جو سب
کو موکو سے دور پھیلکئی ہے' اور وہ جو چیزوں کو گولا کار
گھانے ہے ،

یہ سب لیول الهنائیں هیں' تصور هیں' سب خام خیالی هیں ۔ اِن کا روپ جب بنتا ہے جب اِن کے سانع کسی دوریہ' کسی تتوا کسی تتوا کسی خورے کے انہوں مادے کا سیندھ هوتا ہے ۔ تب یہ سب کامنائین هیاری وندگی کے تجورے بن جاتی هیں ۔

چکر کا اورایوائی اور رسط ایشیا کی چترکا کو ما کر ایک بیت عی خوبصورت چتر کا کے نئے تھنگ کو جنم دیا گیا ۔ ایرانی أور محمیه أیشیا کے چتیروں نے بھارنیه چتیر کاروں کے باس بیٹو کر بھارتیہ چدرکا کے سادر ادرشوں کو اپنی کلینا کی اوان سے الرر زيادة مانتجها ارر سادر بنايا . درنون د هندو اور مسلمان کاروں نے اِس نئی شیانی کو یعمال اینایا . اُس سے کے کسی چار کر دیکھ کر یہ کہہ سکنا ناسمین هے که امک چار کا بنائے والا عادر چترکار ہے یا مسلمان چترکار . جگه جگه اِس مُنْ لَا كِي كَيْدُورِ يَا مَرَكِ بَايِم كَيْتُ كُنُ . راجه رَانَهُ كِي راجهوت راجاؤں 'کانگوا کی ریاستیں اور مدھیہ بھارت کے شاستوں نے اِس نئے چدرکا کو بتھارا دیا ۔ اِس کے علاوہ منختلف صوبوں میں خواں میل صوبیدار رہتے تھے یا آزاد مسلمان راجاؤں نے الله اینے درباروں میں اِس اللہ کو برحد بوھارا دیا ۔ الگ اک موروں میں اور الک الگ درباروں میں مقامی حالت كن وجه سے تهروا تهروا فرق إن چتركاروں كى ظ ميں دكھائى دیتا ہے لیکن املی روح ایک هی هے. رهی سادرتا رهی چفک دمک و وهی رومانی انداز ، وهی رهسواد اس فئی کلکے ووجھ رویوں میں دکھائی دیتا ہے اور اس کلا نے أيكنا كو قايم ركينا هـ.

المنابع الأ

الله میں سنکیت دی ایک خاص جگه فد . یہ هر شخص جانگا ہے که مسامان سنکیت کار اور گربئے جس سلکیت کا اینیاس کرتے هیں وہ بالکل هندی کا هی سنگیت ہے . یہ اتر اور بہارت کی سنکیت میں شیلی اور یہ ایک شیلی اور یہارت کی سنکیت میں تبرق ایمت انتر فے لیکن یہ انتر مذهب کی وجه سے نہیں ہے . اُسکی وجه صوف مقامی ہے . اُسکی وجه صوف مقامی ہے . شیلیان کی مہارت حاصل کی اور نئے نئے باجوں' نئے نئے راگوں' نئی شیلیوں سے سلکیت کے دایرے کو بوها اور نئی راگ بوها اور مسلم استادوں کے مسلم شاگود ایک تام بات تھی . استاد اور مسلم استادوں کے مسلم شاگود ایک تام بات تھی . استاد اور مسلم استادوں کے مسلم شاگود ایک تام بات تھی . استاد اور مسلم نیا ہو کی میں نظ بوجی کامیابی کے نام میں نظ بوجی کامیابی کے ساتھ دونوں نظری کا میل جول بیٹھ گیا ۔

لیکن کلچوی میل جول کا کوئی بیان اُس سمیہ تک پیرا نہیں هوسکتا جب بک هم اِس بات کو نه جان این نه مذهبی دائرہ میں هندو مذهب نے اِسلام پر کیا دیا اثرات قاله ، هم آگے کیهی اِس مذهبی میل جول کو اور اِسلام پر هندو دعوم کے اثر کو بیان کریں گھ ،

[أفكريزى سے ترجمه-رشومهر فاته بالقد]

चित्रकता और ईरानी और बस्त पशिया की चित्रकता की मिलाकर एक बहुत ही .खूबस्रत चित्रकला के नये ढंग को जनम दिया गया. ईरानी और मध्य पशिया के चितेरों ने भारतीय चित्रकारों के पास बैठकर भारतीय कला के सुन्दर आदशीं को अपनी कल्पना की उड़ान से और दयादा माँमा और सुन्दर बनाया. दोनों, हिन्दू और मुसलमान, कला-कारों ने इस नई रौती को यकसाँ अपनाया, उस समय के किसी चित्र को देखकर यह कह सकना नामुमिकन है कि अमुक चित्र का बनाने वाला हिन्दू चित्र कार है या मुसल-मान विश्वकार, जगह जगह इस नई कला के केन्द्र या मरकज क्रायम किये गये. राजपुताना के राजपूत राजाओं, कांगड़ा की रियासतों और मध्य भारत के शासकों ने इस नई वित्रकता को बढ़ावा दिया. इस के अलावा मुख्नलिफ सूबों में जहाँ मुरान सुबेदार रहते थे या श्राजाद मुसलमान राज। श्रों ने अपने अपने दरबारों में इस कला को बेहद बढ़ाबा दिया. अलग अलग स्वा' में और अलग अलग दरवारों में मुकामी हालत की बजह से थोड़ा थोड़ा फर्क इन चित्र-कारों की कता में दिखाई देता है लेकिन असलो भूद एक ही है. वही सुन्दरता, वहा चमक दमक, वही ह्रमाना अन्दाज, बही रहस्यवाद-इस नई कला के विविध रूपों में दिखाई दता है और इस कला की एकता को कायम रखता है.

संगीत कला

कता में संगीत की एक खास जगह है. यह हर शख्स जानता है कि मुसलमान संगीतकार और गनइये जिस संगीत का अभ्यास करते हैं वह बिलकुल हिन्दुओं का ही संगीत है. यूँ उत्तर और भारत की संगीत शैती म ऊपी फकें है; या एक शैली और दूसरी शैली और थोड़ा वहुत अन्तर हे लेकिन यह अन्तर मजहब की वजह से नहीं है. इसकी वजह सिर्फ मुकामी है. मुसलमानां ने हिन्दू संगीत की महारत हासिल की और नये नये बाजों, नये नये रागां और नई शैलियों से संगीत के दायरे का बढ़ाया. हिन्दुओं ने भी इन नये बाजों और नई राग-रागितयों को खुल दिल से सीखा. हिन्दू उत्तादों के मुसलिम शागिई और मुसलिम हसादों के हिन्दू शागिद एक आम बात थी. उत्ताद और शागिदों में अगर हम कोई .फर्क ढ दूना चाहें तो ढूँदना नामुमिकन है. संगीत और नाच की कला में बड़ी कामयाया के साथ दोनों कलाओं का मेल जोल बैठाया गया.

लेकिन क स्वरी मेल जोल का कोई बयान उस समय तक पूरा नहीं हो सकता जक तब हम इस बात का न जान लें कि मजहबी दायरे में हिन्दू मजहब ने इसलाम पर क्या क्या असरात डाले. हम आगे कभी इस मजहबी मेल जोल को और इसलाम पर हिन्दू धर्म के असर को बयान करेंगे. [ंडांगरेजी से तजुं मा—विश्वन्मरनाथ पांडे] हुये थे, यहीं पले थे और यहीं बड़े हुये थे. उनकी रग रग में हिंदुस्तानियत पे बस्त थी फिर उनकी कला पर हिंदुस्तान का असर क्या न पड़ता. हालाँ कि उनके रास्ते में द कावटों थी और वे चांटी के कारीगर भी न थे फिर भी उनकी छेनी और हथोड़ी ने उन इमारतों पर हिन्दुस्तान की कला की साफ छाप छोड़ी है. इस तरह उस जमाने की मुसलिम इमारतों पर हिन्दुस्तानी करवर का गहरा असर दिखाई देता है. हर डिजाइन में हिन्दू तज ढूँढ लोजिये. यह जारदार लफ्जों में कहा जा सकता है कि मुसलमानों को हिन्दुस्तान में रहते रहते उथों-उथों प्यादा दिन बतीते गये, स्यों त्यों उनकी कला पर हिन्दुस्तानियत का गहरा पुट चढ़ता गया."

मुगलों की तामीरी कला

मुरालों की तामीरी कला के मुनास्तिक यहाँ कुछ कहने की जरूरत नहीं. मुराज कला का निखार अकवर के जमाने में हुआ। अकवर ने ऊँचे दरजे के एक खास हिन्दुस्तानी आर्ट का जनम दिया. शाहजहाँ का मुकाव ईराना आर्ट की तरक था. लेकिन शाहजहाँ भी अकवर के आर्ट की रूह को न बदल सका. तामारी कला के जानन आलों का बयान है कि शाहजहाँ की इमारतों का बाहरो हिस्सा ईरानी तर्ज का है लेकिन इमारना के भावर खालिस हिन्दुस्तानी कला के ठोस नमून नजर आते हैं.

अगर हम इस उसूत्र को मान लें कि कला के ही जरिये किसी मुल्क या कौम की आत्मा का पता चलता है ता यह एक बेकाट सच ई है कि मँमले जमाने के भारत की तामीरी फला में एक हो अल्मा और एक ही कल्चर के दश्रन मिलते हैं, पन्द्रहवीं सदी के बाद से हिन्दू या मुमलमानों की बनवाई हुई एक भी इमारत ऐसी न मिलेगी, चाहे वह किला हा या महल, मन्दिर हो या मसजिद जिस पर मिली जुली हिन्दुस्तानी कला की छाप न पड़ी हो-ऐसी कला जिसे मुसलमान हुक्मरानों के साथे में हिन्दू शिल्पी श्रीर संगतराशों ने तरकक्षी दी. पन्द्रहवीं सदी में ग्वालियर में राजा मानसिंह के बनवाये हुये महल इस भारतीय मुक्तिम कला के सबसे पहले नमूने हैं. जिस तरह मुसलमान शासकों के बनवाये हुये मक्कबरां, महलां श्रीर मसजिदां पर भार-सीय हिन्दू कला की छाप है उसी तरह वृन्द।वन के वैद्याव मन्दिरों, हिन्दू राजाओं श्रीर साधुश्रां की समाधियों श्रीर ह्यतरियां पर और भारत में फैता हुई बेशुपार हिन्दू इमारतों पर भारताय मुस्तिम कला की यानी निला-जुता भारतीय कला का छाप है.

चित्रकता

वित्र कला यानी तसवीर साजी के दायरे में भी इसी पिसी दुसी कला के इमें दश न भिनते हैं, कदाम भारतीय هرئے تھے پہل پئے تھے او یہیں بروقے ہوئی تھے۔

اُن کی رگ رگ میں مندستانیت پہرست تھی

پہر اُن کی کا پر مندستان کا اثر کیوں نہ پرتا ' حالانکہ اُن کے

راستے میں روگوئیں تھیں اُور وے چوٹی کے نایکر بھی نہ

تھے پھر بھی اُن کی چھپٹی اور متھرتیوں نے اُن عمارتوں پر

مندستان کی کا کی صاف چھاپ چھرتی ہے اُس طرح اُس

زمائے کی مسلم عمارتوں پر مندستنی کلچر کا گہرا اثر دنیائی

دیٹا ہے ۔ ہو تزائی میں مندو طرز تھوندہ لیجئے ۔ یہ

زوردار لنظوں میں دیا جا سکتا ہے مسلمانوں کو مندستان میں

رمتیرمتے جیوں جیوں دن بینتے گئے تیوں تیوں اُن کی کا پر

مندستانیمت کا گہزا ہت چوھتا گیا ۔''

مناوں کی تعمیری کلا

میلوں کی تعمیری کا کے متعلق یہاں کچے کہتے کی ضوورت نہیں ، میل کا تاہار اکبر نے زمانے میں ہوا ، اکبر نے اوندچے درچے کے ایک خاص ہنی ہتنی آرت دو جنم دیا ، شاہنجہاں کا جہلاؤ ایرانی آرت کی طرف تھا ، لیکن شاہنجہاں بھی البر کے آرت دی ورج کو نہ بدل سکا ، تعمیری اللا کے جانبے والوں کا بیان ہے کہ شاہنجہاں کی عمارتوں کا باہری حصہ ایرانی طرز کا ہے لیکن ممارتوں کے بھیتر جامل سفرستانی دلا کے تھوس نمونے نظر آتے ہیں ،

اگو هم اِس أصول دُو جان ادر ٥٥ اللا كے على فريعة كسى ملک یا قوم کی آنما کا پتہ چلت شے تو یہ اید، بے کات سچانی ہے که منجولے ومانے کے بھارت کی نعموری کا میں ایک عی أتما اور ایک می کلیچر کے درشن ماتے میں ، پادرهویں مدی کے بعد سے هندو یا مستمانوں کی بلوائی هرئی ایک یہی عمارت ايسى نه مايكي چاه وه تلعه هو يامتحل، مندر هو يامستجد جس یر ملی جلی هلاسانی کلا کی چهاپ نه پری هو-ایسے نے جسے مسلمان حکمراثوں کے سابع میں ہندو شاہی اور ستکتراشو لی نرقی دی . یندرهرین صدی موس گوااهر کے راجه مان سنکه کے ینوائے دوئے محدل اِس بھارنیه مسلم کلا ح سب سے بہلے نمولے میں . جس طرح مسلمان شاسکوں کے بنوائه هوئه مقبرون محدلون اور مسجدون در بهارتیه هندو کا کی چہاپ کے اُسی طرح ورابداوں کے ویشاو مادروں' هلدو راجای اور ساده ی کی سمادسدر اور چهتریون پر اور بهارت میں پیدلی هوئی بے شمار هندو عدرتوں پو بهارنیة مسلم کلا کی یعنی ملی جلی بهارنیه کلا کی چهاپ هے .

چتر کا

چٹر کلا یعلی تصویر سازی کے دائرے میں بھی اِسی طبی جلی کلا کے همیں درشن ملتے هیں ، قدیم بھارتیم

हिंग्दुस्तान के पुरातस्य यानी आकियालाजी डिपार मेंट

के साविक छ।इरेक्टर जनरल सर जान मार्शल ने काम्ब्रज

علمان و طبراز زعر

हिस्ट्री आफ इाएडया' के भाग तीन के 'मुंसलिम जमाने की इमारतें' नामक अध्याय में लिखा है:--

"जब हिन्दू और मुसलिम ताभारी कला यानी इमारत साची का समन्वय (मेत्र) हुआ ता मुसलिम तामारी कला ने हिन्दू तामारो कला स बहुत कुत्र साखा. हिन्दू फलसफे को चाहिर करन वाला हिन्दू शक्तें,वेज बूटे बार नक्काशी किसी न किसी शक्ल में मुसालम इमारता में शामिल कर ली गई. इस तरह जो हिन्दू चीज़े मुसलिम इमारतों में ली गई उनकी तादाद बेशुमार है. मुसालम आर्ट के ऊपर हिन्दू शैजा का यह कर वा ता ठांस आर ऊपर दिखाई देता है काकन हिन्दुस्तानी मुसलिम आर्ट पर हिन्दू कला की दा वातों ने सबम ज्यादा असर डाला और व दा बातें है—इमारतों का मजबूती श्रीर मजबूती के साथ साथ उनका आंताशान हाना. दूसरे मुल्का म मुसलिम तुमारा कला की कुछ दूसरी खुसु।सयत है. यहसलम म हरे और सुनहले पत्थरों के स्लैन (चाक) फश पर या कमरा का दात्रारों पर लगाये जाते हैं. इरान म मकानां के टाइल बांद्या स ब द्या रंगा म रंग जाते हैं. स्पंत की मुस लम तामीरा कला न अजं।वा रारं।व तजे पेदा ।कयं लाकन किसा भी मुहरु में मुसालम ताभारा कला म इमारता का मजबूना आर खूब-सूरती का उससे बद्दर मेत नहीं बैठाया गया जितना हिन्दुस्तान म. ये दाना ख्रासयते िन्दुस्तान की अपना है श्रीर य ऐसी खासियत है जिनकी तामारी कला म और दसरी खासयता स ज्यादा अहामयत ह."

हिन्दुस्तान मं पहला मुसलिन इमारत सन 1911 में तामीर हुइ. यह 'कुठ्यतुल इसलाम' नाम का एक मस्रोतंद है जिसे कुतुबुद्दान ऐवक न तामीर कराया. इस मस्रोतंद के मुताल्लिक सर जान भाशल लिखते हैं:—

"इस मस्राजद का चाहे भीतर सं देखिये चाहे बाहर से, यही मालूम हाता है कि यह काई हिन्दू इमारत है. सिर्फ पीछ दावार के पाँच मेहराबों को छांड़कर इस इमारत में एक भी चिह्न ऐसा नहीं है जिससे इसका मुसलमानी होना जाहिर होता हो."

. कुतुबुद्दीन के दो सी बरस बाद फीरोजशाह तुरालक को भी इमारतें बनाने का बेहद शीक हुन्ना. इतिहास लेखक इसके बनवाये हुये शहरां, किलां, न लों, मसजिदां और मक्बरां आदि की एक लम्बा फेडिरिस्त पेरा करते हैं. तुरालक खमाने के फ़ने तामीर के मुतारिजक कहा जाता है कि इस पर से हिन्दू असर कम हो गया था. ताहम—

• "श्विन संगतराशों और मेमारों ने इन तुरालकी श्विमारतों को तामीर किया वे सब के सब हिन्दुस्तान में पैदा

والهب عدو أور مسلم تعديري كلا يعلى عدارت سازي كا منعلامے (میل) عوا تو مسلم نعمیری ط لے علدو تعمیری کا سے بهات كجه سيكها . هادو فلسفه كوظاهر كرلي وألى هادو شكلين بھل ہوئے اور نقاشی کسی نه کسی شکل میں مسلم عمارتوں میں مثامل کر ای گئیں . اِس طرح جو هندو چیزیں مسلم عمارتوں مَهُنَ لِي نَيْسِ أَن كَي تعدأد بِشَمَار في مسلم أَرْكَ كِي أُوبِر هلای شیلی کا یه فرقه تو تهرس ارد اربر دایاتی دیتا ہے لکھی هندستانی مسلم آرے پر هندو کلا کی دو باتوں نے سب میں ویادہ اثر ذالا اور وے دو یاتیں میں عمارتوں کی مضبوطی أور مقبهوطی کے ساتھ ساتھ أن كا عاليشان هونا . دوسرے ملكوں میں امسلم تعمیری ظ کی نجه درسری حصوصیتیں هیں . يرو شلم میں ہوے اور سنہلے یتہ وں کے سلیب (چونے) فرش یو یا کمروں کی دیواروں پر لگا۔ جاتے میں، ایران میں مکانوں کے ڈنل برهها سے برعما رنگی میں رنگے جاتے هیں ، اِسهن کی مسلم تعمدرتی الله نے عجیب و غریب طرز بددا نئے لیکن کسی بھی ملک میں مسلم تعمیری کلا میں عمارتوں کی مضبوطی اور خوبصوطی کا اِس سے بہار میل نہیں بیٹھایا گیا جتنا هندستان میں . یہ دونوں خاصیتیں عندستان کی اپنی هیں اور یه ایسی خاصیتیں هیں جن کی تعدوری کا سیں اور دوسوی خاصیتوں ان عادة اعموت هے "

هندستان میں پہلی مسلم عمارت سن 1191 میں تعمیر هرئی ، یه 'دوڈا شام' نام کی ایک مسجد ہے جسے تطب الدین ایبک لے تعمیر کرایا ، اِس مسجد کے متعلق سر جان مارشل لعبتے هیں:—

وراس مستجد کو چافے بھیتر سے دیکھیئے چافے باعر سے یہی معلوم ہوتا ہے کہ یہ کرئی ہندو عبارت ہے صرف پیچھے دیوار کے پانچ متعرابیں کو چھوڑ کر اِس عبارت میں ایک بھی چنھ ایسا فہیں ہے جس سے اِس کا مسلمانی ہونا طاحر ہوتا ہوں۔

قطب الدین کے دو سو ہرس بعد قیروڑ شاہ تفلق کو بھی عنارتیں بنانے کا بہدی عنارتیں بنانے کا بہدی عنارتیں بنانے کا بہدی ہوئے شہروں دلمیں متعلی مستجدوں اور مقبروں ادبی نی ایک لنبی دیوست بدھی درتے ہیں ، تفلق زمانے کے دن بعمیر کے متعلق نیا جاتا ہے دہ اس پر سے ہندو اتر کم ہو گیا تھا ، تاہم ہست

وتہوں سٹکٹراگوں اُور معاروں <u>نےان</u> تباقی عمارتوں۔ کو۔ تعلیم کیا وے سب کے سب علامائن میں، پیدا

يهال أس كا ذكر كو دينا ضروري هے كه مسلمالوں لے هندستان کی دوسرم صوبائی زبانوں کو توقی دینے میں کوئی کسر باقی نہیں اٹھا رکبی ، پنجابی عدی اور بنکلا کی درقی کا لیک بہت ہوا سبب یہ ہے کد مسلمان نواہوں اسراؤں اور مسلمان مصنفوں اور شاعروں نے اِن زبانوں کو ترفی دینے اور مالا مال کرنے میں بہت ہزا حصہ لیا . آب اگر اِن زبانوں کو اینی توفی پر ناز مے تو اُس کے لئے هدوں اور مسلمانوں دونوں کو بدهائی دینی چاهئے، یہ بھی اپنے کی ضرورت نہیں که هلدو اور مسلمان دونیر کا طرز ادب ارد طاز سخن یکسان تها، لوگوں کے لگے ية بنا سكفا فاحمكن هے كه أمك نظم دسى مسلمان بي لكھي هے يا عندو کی ، پنجابی اور بانکا کے عندو اور مسلمان لیکھ وں کا لكهنم كا طرز بالكل ايكسا ه . أس سين كسى طرح كا فرق نهين يايا جال ، دروس مين كلحير كي ايك هي دهارا دكوائي ديتي ھے ، بلکھ اگر ھندستان کے مسلمان لیکھکوں اور شاعروں کی رچناؤں اور ایران مرکی اور مصر کے شاعروں اور الیکھکوں کی رجناؤل كا مقابله كرا جائه تو صاف فرق قطر أنيكا . هندستان کے مسلمانیں اور باہر کے مسلمانیں کی ناچور سوچلے کے طریقوں اور المهند کے طرز میں بہت فرق ہے . انکریزوں کے آلے سے پہلے مغنلف صوبوں کے رہنے ,الے حسلمانوں نے اپنے اپنے صوبوں کی وباليس اينا أي نهين . ولا أنهين من برنت الم الهين مون لکھا۔ تھے اور اُنھیں میں سوچتے تھے ۔

مسلم تعمهري كالأ

کلیچری یا سانسکونک میل جرل کی یه دهارا صرف زبان اور ادب تک هی محدود نهدی رهی اس کا اثر فاسفه سائاس اور آرت ير بهي يوا ، كنوت جهونش بهوكول عكمت دهرم شاستر وغيرة سبهي يترن مين ايک دوسرے کی اچهي باتران کو ایک دوسرے سے سیکھا گیا . لیکن دونس طحوروں کا عظیم الشان سنام أرت ع دائرے میں عرا .

مسلمانیں لے هلاستان میں آلے سے زیلے کا کے دائرے میں ایک نئی طرح کی کا یعنی آرف نو جام دیا تیا ، ایکن جب وے اس ملک میں آ کر ہسے انہوں نے هندستان کی الا کی خاص حاص بانوں او أيلي كا مهن شامل كرنا شروع در ديا . تورھویں مدی سے لے کر اُنیسویں مدی تک مسلمانوں لے جو عمارتهن فلعم أور مقبوم بغائد أن مين إسى أيكنا أور مهل جول کی تصریر دکیائی دیاتی هے ، درنوں کلوں کا سنکم ماف چمکنا مرا نظر آتا هے .

मसलमान और खबाई जानाने

यहाँ इसका फ़िक्र कर देना जरूरी है कि मुसलमानों ने हिन्दुस्तान को दूसरी सुवाई ज्वानों को तरका देने में कों कसर बाकी नहीं उठा रखी पंजाबी, हिन्दी श्रीर बंगला की तरको का एक बहुत बड़ा सबब यह है कि मसलमान नवाबों, उमराश्रों, और मसलमान मुसन्निफ़ों और शायरों ने इन जुवानों को तरकी देने और माला-माल करने में बहुत बड़ा हिस्सा लिया. आज अगर इन .जुबानों को अपनी तरकी पर नाज है तो उसके तिये हिन्द और मुसलमान दानों को बधाई देनी चाहिये। यह भी कहने की ज़रूरत नहीं कि हिन्दू और मुसलमान बानों का तर्जे अदब और तर्जे सखुन यक्साँ था. लागों के लिये यह बता सकना नामुमिकन है कि अमुक नज्म किसी मुसलमान की लिखी है या हिन्दू की। पंजाबी श्रीर बगला के हिन्दू और मुसलमान लेखकों का लिखने का तज विस्कुल एक सा है. उसमें किसी तरह का फूक नहीं पाया जाता. दोनों में करवर की एक ही धारा दिखाई देती है. बल्क अगर हिन्दुस्तान के मुसलमान लेखकों भीर शायरों की रचनाओं और ईरान, तुर्नी श्रीर मिस्र के शायरों और लेखकों की रचनाओं का मुकाबला किया जाय तो साफ फक्के नजर श्रायेगा. हिन्द्रस्तान के मुसल-मानों और बाहर के मुनलमानों की करवर, साचने के तरीक्रों और लिखने के तर्ज में बर्त फ्के है. अंगरेजों के बाने से पहले मुख्तिलक सूर्वां के रहने वाले मुसलमानों ने अपने अपने सूबों की जुबानें अपना ली थीं. वे उन्हीं में बालते थे, उन्हा में लिखते थे श्रीर उन्हीं में सोवते थे.

ग्रसिलम तामीरी कला

कल्चरी या सांस्कृतिक मेत-जोज की यह धारा सिर्फ खबान और अद्व तक हो महतूद नहीं रही. उसका असर फ़्तसका , साइ स, खोर आट पर भी पड़ा. गणित, ज्यो-तिष, भूगोल, हिकमत, धर्म शास्त्र वरौरह सभी बातों में एक दूसरी की श्रच्छी बातों का एक दूसरे से सीखा गया. लेकिन दानों करवरों का अजीपरशान संगम आटे के दायरे

मुसलमानों ने हिन्दुस्तान में चाने से पहले कला के दाथरे में एक नई तरह की कला यानी आद को जनम दिया था. लेकिन जब वे इस मुल्क में आकर बसे, उन्होंने हिन्दुस्तान की कता का खास खास बातों का अपनी कला में शामिल करना गुरू कर दिया. तेरहवीं सदी से लेकर वशीसवीं सदी तक मुसलमानों ने जो इमारतें, किले और मक्र इसे बनाये बनमं इसा एहता और मेत-जाल की वसदार दिखाई देती है. दोनों कलाओं का संगम साफ् पमकता हुआ नजर आता है.

فسلكاني أبر علاستان كي زيالين

म्रसखमान और हिन्दुस्तान की जवाने

धगर हम बाहरी बातों को छोड़कर तहजीप, तमइन भीर करवर (संस्कृत) पर ग़ीर करें, तो इस देखें ग कि यहाँ भी उसी तरह का मेल-मिलाप का संगम हुआ है. जरा इस बात पर ग़ीर किया जाय कि सभी हिन्दुस्तानी करूचर की तामीर में मुसलमानों ने कितनी क्रबोनी की है. जबान (भाषा) की ही मिसाल को लीजिये. किसी कीम के जजवातों श्रीर उसके खयालों को जाहिर करने का सबसे अहम जरिया ज्यान ही है. इसलाम की पाक जबान अरवी है। जो हमलावर मसल-मान सबसे पहले सिन्ध में आये अरबी उनकी मादरी और क्तनी जवान थी । हालाँ कि पढ़े लिखे लोग ही ऋरबो की तालीम लेते थे ताहम अरबी दिन्द्रस्तान के हर हिस्से में रायज हो गई. मध्य ऐशिया से जा हमलावर यहाँ आये उनकी माद्री जवान तुर्की थी. हिन्दुस्तान में मुसलमानों की हुकूमत के अगाज और खाने के वक्त तक सरकारी जबान फारसी थी। आज हिन्दुस्तानी मुसलमान इन तीनों ,जुबानों में से एक भो .जुबान नहीं बालते और न इमलावरों ने ही हारे हुओं पर इन जुरानों को लादा.

इसके बरधक्स मुसलमानों ने हिन्दुस्तान की सूर्वाई जुबानों को अपना लिया और अपनी भाषाओं के शब्दों श्रीर महाविरों से उन्हें सजाया श्रीर सँवारा. पँजाम के मुसलमान पंजाबी बालते हैं, बंगाल के मुसलमान बंगला बालते हैं, गुजरात के मुसलमान गुजराती श्रीर महाराष्ट्र के मुसलमान मराठी बालते हैं, ग़रज यह कि मुसलमान जिस सूबे में रहते हैं उसी सूबे की जुबान बालते हैं. इस सूबे के हिन्दू श्रीर मुसलमान एक ही जुवान में अपने खयालातों का इजहार करते हैं. सिर्फ एक ही जुबान रह जाती है और वह है उद्. लंकिन उद मुखलमानों की ज़ुबान है ही नहीं. वह हिन्दुस्तान से बाहर किसी भी मुसलिम मुलक में नहीं बोली जाती. उसे कोई मुस्रिम विजेता बाहर से यहाँ नहीं लाया. जब हिन्दी भाषा की ही एक रूप है. उसके ज्यादातर अलुकाज, उसका ब्याकरण सब यहीं से लिया गया. द्र अस्त उर्द का मूल रूप वह भाषा है जो दिल्ली के आस-पास बाली जाती है और जिसे खड़ी बाली कहते हैं. जब मुसलमान दिल्ली और उसके आस पाम के इलाके में बस गये तां वे भी खड़ी बोती ही बालने लगे. वही बाद में अदबी जवान बन गई. हिन्दू अार मुसलमान दानों ने इसके अदब का बदाया और सजाया. सव पूत्रा जाय - की अंग्रेजी के प्रचार के पहले उर्द हिन्द्रस्तान की बोल बाल की जवान थी

الله هم باهري باتون كو چهرز كر "بذيب" تمدن اور كلعور (سلسکرتی) پر غور کویں کو هم دیکھیں گے که یہاں بھی آسی طوح کا میل ملاپ کا ساکم دوا ہے۔ ذرا اِس بات در غور کیا جائے که سجه مدستانی الحج کی تعدیر میں مسلمانوں نے كتلى قربائي كي هے و زبان (بهاشا) كي هي مثل كو ليجاء. کس قوم کے جذباتیں اور اُس کے خیالیں کو ظاہر کرنے کا سب سے اُھم ڈریعہ زبان ھی ہے ۔ اِسلام کی پاک زبان عربی ہے . جو حمله أور مسلمان سب سديلي سنده ميس آله عربي أن كي مادرمی اور وطنی زبان تهی . حالانکه پڑھے اکھے اوگ هی عربی کی تعلیم لیتے تھے ناہم عربی هدستان کے هر حصم میں رائم هو گئی . مدهیه ایشیا سے جو حملدآور بہاں آئے اُن کی مادروی زیان اوکی تھی ، مقدستان میں مسلمانوں کی حکوست کے آغز اور خاتمہ کے وقت تک سرکاری زبان فارسی تھی . آیے ھند مانی مسلمان اِن تینوں زبانوں میں سے ایک بھی زبان فہرور بولتے ارر نم حملمآورں نے می هارے هوؤں پر اِن زبانوں ک تدا .

اً س کے پرعیس مسلمانوں نے هندسان کی صوبائی زبانوں کو اینا لیا اور اینی بہاشاوں کے شبدوں اور معاوروں سے انہیں سجایا اور سنولوا و بلجاب کے مسلمان بنجابی بولتے ہیں ا بنگال کے مسلمان بنگا براتم هیں گنجرات کے مسلمان گنجراتی اور مہارات تر کے مسلمان مراقبی برقم ھیں ، غرض یہ که مسلمان جس صوبے میں رہتے ہیں اُس صوبے کی زبان ہولتے ہیں ، أس صريع كيهندو أور مسلمان أيك هي زبان ميس أيني حيالانون کا اظهار کرتے میں ، صرف ایک هی زبان رہ جاتی هے اور ولا فے اُردو ، لیکن اردو مسلمانوں کی زبان ہے ھی نہیں ، ولا مندستان کے باہر کسی ملک میں الهیں بولی جاتی ، أسے كرئي مسلم وجيمًا باهر سے يهاں نهيں لايا . أورد هندي بهاشا كا می ایک روپ هے . اُس کے زیادہ در آلفاظ اُس کا ویادوں سب يهي سے لها گيا . د اصل اردو کا مول روپ وه بهاتا هے جو دلي ي أس ياس براني جاني هے اور جسم بوتي بوالي کهتم ميں . جب سلمان دلی اور اُس کے اُس دس کے علاقے میں بس گئے تو رہے بھی اوری اولی هی باللہ لئے . وهی بعد دن أدبى وہاں بن تقی معدو اور مسامان دونوں نے اس کے ادب کو ہومایا اور معیایا . سے ہوچھا جانے نو انگریری کے پرچار کے پہلے اردو هندستان کی بول چال کی زبان تھی .

वेद मंत्रों की धुन के साथ सात भॉवरे डालते हैं, मुसल-मानों में काची .कुरान की आयत पढ़कर निकाह करा देता है. खोटी कम में लड़कियों की शादी, विधवा विवाह की रोक, औरतों के अपर मदों का कतई हक और परदा ये सब बाते हिन्दू और मुसलमानों दोनों में एक सी हैं.

यह सही है कि मजहबी त्योहार, व्रव, उपवास और रो.जे दोनों के अलग-अलग हैं लेकिन उनके मनाने का ढंग बहुत कुछ एक सा है. मोहर्रम श्रीर दशहरा एक दरह से मनाया जाने लगा. शबे बरात श्रीर शिवरात्रि, रमजान भीर नवरात्रि, दिवाली और ईद के सस्मव एक ही तरह से होने लगे. इसके अलावा और बहुत से मेले, तीज और स्यौद्दार पढ़ते थे जिनमें हिन्दू और मुसलमान दोनों मिल जुलकर हिस्सा लेते थे. इजारों मुसलमान होली खेलते थे भीर लासों हिन्दू मुहरम मनाते थे. मुसलमानों ने मरने के बाद के क्रिया-करम में बहुत से हिन्दू रिवाज अपना लिये, जैसे तीजा, दसवाँ वरा रह. इसके अलावा हामला भौरत का पचमाँसा, सतमासा, श्रीर बच्चे की पैदायश की छठ, बच्चे की स्तीर चटाई, सालगिरह, मुगडन, कनछेदन, हिन्दू-मुसल-मान दानों एक ही तरह से मनाने लगे. ऐसे रस्म-रिवाज, जो खालिस हिन्दू थे, जैसे सती और जौहर का रिवाज, ये भी मुसलमान औरते' अपने खाबिन्द के मरने पर करने लगीं. इब्न बतूता मोहम्मद विन तुरालक श्रीर ऐनुलमुल्क की लड़ाई का हाल लिखता है, जिसमें ऐनुलमुल्क के हारने पर इसकी बेगम ने जौहर बत करके अपने की जिन्दा जला दिया था. 'जाफर नामा' में लिखा है कि भटनैर के स्वेदार कमालुद्दीन की बेगम ने अपने शौहर तैमूर के खिलाफ लड़ाई में जाते समय जौहर बत करके अपने को जला डाला था. बमीर खुसरो ने इस पर लिखा था:-

"चूँ ज़ने हिन्दी कसे दर आशिकी दीवाना अस्त, सोख्तन वर शमा शौहर कारे को परवाना अस्त!"

विवास और पहनावा

किसी भी समाज के अन्दरूनी जजबात की सबसे
नुमायाँ मिसाल उस समाज के लोगों की पोशाक है, इस
नुक्रते नजर से अगर इस देखें तो हमें पता चलेगा कि किस
तरह हिन्दुस्तान के मुसलमानों ने अरब, इंगन और मध्य
पशियाई मुल्कों के लिबास और पाशाकों को छाड़कर
दिन्दुस्तान के लिबास और पहनावे का कुतून किया. अरबो
अमामा, मब्बा, रजा, तहमद; तस्मा, मध्य पेशिया का छुता,
निमा, मोजा सब यहाँ आकर सायब हा गये और उनकी
अगह हिन्दू पगदी, चिरा, छुरता, अगरसा, पटका, दुपहु,।
पाजामा और जूते ने ले ली.

وید مقترس کی دھن کے ساتھ ساتھ بھائوریں کائٹے ھیں' مسلمائیں میں قاضی قرآن کی آیت پڑھ کو نکام کرا دیکا ھی چھوٹی عمر میں اولیس کی شادس' ودھوا ودالا کی روک' عبرتیں کے آوپر سردیوںکا تعلمی حق آور پرداد یا سب بائیں ھادو اور مسلمائیں دوئیں میں ایک سی ھیں ۔

يه محيم هاكه ملاهبي تيوهار وردا أبولس اور رويد دولس کے الگ الگ عیں لیکن ان کے سالے کا دھلک بہت کھے ایک سا فے محرم أور دشهرة أیک طرح سے منایا جانے لگا . شبيرات اور شموراتري، رمفان اور نورانري، ديوالي اور عيد کے آنسر ایک علی طرح سے عرفے لکے ، اِس کے علاوہ اور بہت سے مہلے کیم ارر تیبھار ہتتے تھے جن میں علدو اور مسلمان دودر مل جل كر حصه ليترنه هزارون مسلمان هولي كهبلته تھے اور لاکھوں ھانو محصوم مناتے تھے ، مسلمانیوں نے مولے کے بعد كے دريا كرم ميں بہت سے هندو روأج أبقا ليُّه جيسے تيجا' دسوال رغيرة . أس كے عقرة حامله عورت كا يچ ماسا ست ماساً اور بحجے کی پیدانص کی چھٹابھے کی کھیر چٹائی سال گره موندن کن چهدن معدو مسلمان دونوں ایک عی طرح سے مقالے لکے . ایسے رسم رواج جو خالص عندو تھے جیسے ستی اور جوعر کا رواج ' یہ بھی مسلمان عورتیں اپنے خارند کے مرنے پرکرنے لکیں . آہی بطوطه محصد بن تعلق اور عین الملک کی لوانی کا حال لکھتا ہے، جس میں عین الملا کے هارنے پر أس كي بيكم نے جوهر برت كر كے اپنے كو زائدة جا ديا تها . اجمنر نامه میں لکھا ہے که بیٹنیر کے صوبیدار کیالدین کی بیکم نے اپنے شوھر تیمور کے خلف لوائی میں جاتے سمے جوعر برت کر کے لینے کو جلا ڈالا تھا ۔ امھر خسرو نے اِس بر لکھا تھا:-

"چوں زن هندی کسے در عاشقی دیوانه است، سوختی ہر شمع شوهر کار اُر پررانه است ا''

لبلس أور پهناوا

کسی بھی سماج کے اندرونی جذبات کی سب سے نمایاں مثال اُس سماج کے لوگوں کی ہوشاک ہے ۔ اِس نقطہ نظر سے اگر مر دیکھیں تو همیں پتہ چلیگا که کس طرح هندستان کے مسلم نہیں نے عرب ایران اور مدھیہ ایشیائی ماکوں کے لباس اور پہنارے کو قبول کیا ۔ پوشائوں کو چھپو کر هندستان کے لباس اور پہنارے کو قبول کیا ۔ عربی عمامہ جھپہ رضا تہدد تسمت مدھیم ایشیا کا طاق نیما موزہ سب یہلی آ کو فریب ہو گئے اور اُن کی جگہ هندو پکڑو چوا کرتا انکرکیا پاکھا قریات یا جاما اور جوتے نے لیا لیے ۔

पशिया की जिन भीर दूसरी मुसलमान कीमों ने हिन्द-स्तान पर हमला करके यहाँ राज क्रायम किया और जिनकी चीतादों ने करोब पाँच सी बरस यहाँ हुकूमत की उन सबका बाज पता तक नहीं चलता. गुनलमान हुक्मरानी ने न तो अपने कीमी गुरूर की परवाह की और न अपने खुन को पाक बनाये रखने की. उन्हांने दिन्दुस्तान के क्रीमी समुन्दर में अपने आप ा निला दिया. मुनलिम हुकूमत के ज्ञाने में जिन क्र'मां, फिएकां, क्रयालां अरेर खानदानों की धम थी आज न उनका चर्चा है और न कई उन्हें जानता है. वे सब रल मिलकर एक हा गये. यह काम कोई एक दा िना में नहीं हुआ, सैकड़ों बरसों तक माथ साथ रहन का यह नतीजा है. इसी मुल्क में हमेशा हमेशा के तिये बस जाने की खादिश, आपसा शादं -ज्याह, म बहद म वब्दाली, अपने बतन से किसी तरह का काई ताल्लुक न रखना, वरीरह एंसी बातें थां, िनका वजह से मुसलमान क्रीमी निहाज से बिलकुत हिन्दुस्तानी बन गय. हिन्दू और मुसलमानों का मजहब बशक जुदा जुदा है मगर रङ्ग एक है, रूप एक है, शक्त एक है और क्रीम एक है.

हिन्दुस्तान के मुसलमानों ने अपने हिन्दू भाइयों ही की तरह अपना समाजी निजाम कायम किया. बाहर के मुसलमानों में जात पाँत नहीं मगर यहाँ के मुसलमानों ने हिन्दुओं ही की तरह अपनी अलग-अलग बिरादिरयाँ बना की हैं. सम्यदों का दतवा बिरहमनो की तरह, मुग्रज और पठानों का क्षत्रियों या राजपूना की तरह, शेख बनियों की तरह और बुनकर और दगर पेशे वाला का श्रूगं का तरह समझा जान लगा. ये फक़ न सिर्क काम धन्धा और दगये- ऐसे की बजह से हां गये बिलक हिन्दुओं की तरह मुसज- बानों की ये बिरादिरयाँ पैदाइशी हो गईं. ऊँची बिरादरी हे मुसलमानों में एक गुक्रर पैदा हो गया.

ब्लचरी मेल जोल का संगम

हर समाज के संगठन में औरत की एक खास जगह है. इस मामले में अरबां, तुकों और हिन्दुओं में बहुत फ़के है. लेकिन हिन्दुस्तान के मुसलमानों ने अरबों और तुकों के दरीके. को नहीं बरता. मुसलमान औरतों ने अपनी हिन्दू बहिनों का ही चलन अपनाया. साज-सिंगार. पहनावा. गहने और जेवर, मिलने-जुजने और राजमर्श के बरताव की बातों में उन्होंने हिन्दू बहिनों का तरीका बरतना शुरू क्या. मुसलमानों के शादी-क्याह बिस्कुल हिन्दुओं को तरह ही होने लगे. निसबत, हस्दी, मेंहदी, तेल, मंडवा, बरात, अलवा, कंगन वर्षो रह की रस्में मुसलमानों ने ज्यों की स्थों हिन्दुओं से ले लीं. शादी की रस्म में हिन्दुओं और मुसल-गानों में सिर्क एक फ के रह गया और वह यह कि हिन्दुओं में हवन कु'ड के चारों सर.फ दुल्हा और दुल्हन

المنظم خين أور دوسري سلمان ترموس فيعلدستان ير عمله كر ك حالوست كى أن سب كا أم ياء نك نهين چلتا. مسلمان معکم انوں فے له تو اپنے تومی غرور کی برواء کی اور ته اپنے خون کو پاک بلائے راہلے کی ۔ اُنہوں لے هندستان کے قومی سمندر میں اپنے آپ کو ملا دیا . مسلم حکومت کے زائے میں جن قوموں ، فرقبر ، قبیلوں اور خاندانوں کی دھوم تھی آج نے اُن کا چرچا ہے اور نه کوئی اُنھیں جانتا ہے وسے سب رل -ل کر ایک هو گئے ، به کام کوئی آیک دو دولوں میں تہیں ہوا کہ سکووں الإسور تک ساتم سانم بعد کا یه نتیجه هے . اِسی ملک میں میشه میشه کے لئے بس جانے کی خوامص آپسی شادی بياة منهب ميں تبديلي اينے رطن سے كسى طرح كا تعلق نه راهنا وغيره أيسي بانين تهين جن كي وجه سے مسامان قومي لحاظ سے بالکل هندستانی بن گئے . هندو اور مسلمانس کا منعب مشك، جدا جدا في مكر رنك ايك في روب ايك في هال ایک هے اور قرم ایک هے .

هندستان کے اسلمانیوں نے اپنے هندو بھائیوں عی کی طرح اپنا سماجی نظام قایم کیا۔ باہور کے مسلمانیوں میں جات پانت نہیں مکر پہلی کے مسلمانیوں نے هندوں هی کی طرح اپنی الگ الگ ہوائیوں بنا لی هیں ۔ سردرں کا رتبه برسمنیوں کی طرح منل اور پاہاروں کا چیئریرںیا راجہوروں کی طرح شیخ بنیوں کی طرح اور باکر اور دیکر پیشہ رائو کو شودروں کی طرح سمجھا جانے گا، یہ فرق نم صرف کام دهندوں اور وربعہ پیسے کی وجه سے مو گئے بلکت هندوں کی طرح مسلمانیوں کی یہ برادریاں پیدائشی هو گئیں ، اونچی برادری کے مسلمانیوں میں ایک غرور پیدا هو گیا .

المعجري مول جول كا سلكم

هر سماہ کے سنتھیں میں عورت کی ایک خاص جگہد اس معاہ لے میں عربی، ترکوں اور هندؤں میں بہت فرق هے الیمی هندستان کے مسلما نہیں نے عربوں اور ترکوں کے طریقے کو تہیں ہرتا ، مسلمان تورتوں نے اپنی هندو پہنوں کا هی چلی اپنایا ، ساے سنگار' پہناوا' گہنے اور زیور' ملتے جلنے اور روزمرہ کے برتاؤ دی ہاتوں میں انہوں نے هندوں بہنوں کا طریقت برتنا شروع نیا ، مسلمانوں کے شادی بیاہ بالکل هندوں کی هی طرح مول لکے ، تسبحت عادی مہندی بیاہ بالکل هندوں کی هی طرح کنائن رفیرہ کی رسموں مسلمانوں لے جموں کی تمیں هندوں میں سامنوں اور مسلمانوں میں صوف ایک فرق رہ گیا اور رہ یہ که هندوں میں میں صوف ایک فرق رہ گیا اور رہ یہ که هندوں میں میں میں کنت کے چاروں طرف دولها اور دولها

गाड़ी बनके सामने से तेजी के साथ निकल गई और

बरफ अब और ज्यादह तेजी के साथ गिर रहा था. उस बरफ में से ही बड़वों के सवात का जवाब आता हुआ मालूम पब्ता था. यह बरफ, यह हवा और यह जवाब पश्चिम की तरफ से लड़ाई के उस मैदान से आ रहा था जहाँ पिरट नाम के गाँव के क़रीब, अंगूर की टहियों में, यही बरफ स्लोयान की कृष्ठ के उपर जमा होता जा रहा था! الوں اُن کے ساملے سے تدوی کے ساتھ انکل کئی اور تھر سے کہ مو کئی۔

برف آب اور ایادہ تھڑی کے ساتھ گر رہا تیا ۔ اُس ہرف میں سے ھی بھچیں کے سوال کا جواب آتا ہوا معلیم پرتا تھا ، یہ برف کی عدوا اور یہ جواب بھچیم کی طرف سے لڑائی کے اُس میدان سے اُ رہا تھا جہاں پرت نام کے گاؤں کے توریب انگور کی تام کے گاؤں کے آوریب انگور کی تام کے گاؤں کے آوریب ہما انگور کی تام کے آوریہ جما ہوتا جا رہا تھا !

हिन्दुस्तान की कल्चर और इसलाम

डाक्टर सच्यद महमूद

मुसलमानों पर एक इलजाम यह लगाया जाता है कि
कुँ कि वे इमलावर विदेशियों की हैसियत से इस मुल्क में
आये इसलिये वे इस मुल्क के लोगों से बिलकुल अलगथलग रहे. यह भी इलजाम लगाया जाता है कि हिन्दू और
मुसजमानों के बीव कोई बात मेल की नहीं है इसलिये इस
मुल्क की भलाई बुगई के साथ मुसलमानों का कोई मरोकार नहीं है. यह भी कहा जाता है कि हिन्दुस्तान के
मुसलमानों और बाहर के मुमलमानों में मब बातें निलती
जुलती और मेन की हैं. इस लये बाहर के मुमलमानों के
साथ यहाँ के मुमलमानों का खूब निम सकती है, अब
इमें देखना चाहिये कि इस मामले में इतिहास क्या रोशनी
बालता है ?

क्रौमां की मिलावट

यह बात सभी कुबूल करेंगे कि थोड़े से लोगों को छोड़-कर कीम के लिहाज से हिन्दुओं और मुसलमानों में कोई, मेद या फर्क नहीं है. दोनों की जिस्मानी बनाबट, गठन, रंग, रूप, चेहरा-मोहरा बिलकुल यकसाँ है. पुरानेहमलावार अरबों तुनी, और ईशनियों का आज हिन्दुस्तान में कही पता तक नहीं चलता जिन अरब फीजियों ने मोहम्मद बिन कासिम की जनरैली में सिन्ध के सूबे पर हमला किया था या जिन अरब खानदानों ने सिन्ध पर सैकड़ों बरसों तक हुकूमत की भी, चनका आज नामोनिशान तक नहीं मिलता. राजनबी, ग्रारी, मुद्दाल, तुक और अन्यानों के खलावा बस्त (मध्य)

هندستان کی کلچر اور اِسلام

ذاكمر سود محمود

مسامائیں پر ایک الزام یہ لگایا جاتا ہے کہ چونکہ وہے حمله اور ودیشیوں کی حیثیت سے اِس ملک میں آنے اِس لئے وہ مملک کے لوگوں سے بالکل انگ تیلگ رھے ۔ یہ یہی الزام لگایا جاتا ہے کہ هندو اور مسلمانیں کے بیچ کوئی بات میل کی نیں ہے اِس لئے ملک: کی بھائی برائی کے ساتھ مسلمانیں کا کوئی سروکار نہیں ہے ، یہ یہی کہا جاتا ہے کہ هندستان کے مسلمانوں اور باعر کے مسلمانوں میں سب باتیں ملتی جلتی اور میل کی هیں اِس لئے باعر کے مسلمانوں کے ساتھ بہاں کے مسلمانوں کی خوب نہ سکتی ہے . اب همیں دیکھنا چاسئے که مسلمانوں کی خوب نہ سکتی ہے . اب همیں دیکھنا چاسئے که مسلمانوں کی خوب نہ سکتی ہے . اب همیں دیکھنا چاسئے که مسلمانوں کی خوب نہ سکتی ہے . اب همیں دیکھنا چاسئے که قس مصلمانے میں پانہاس کیا روشنی قالنا ہے ؟

اوموں کی ملاوت

یہ بات سبھی قبرل کریں گے کہ تبرزے سے لوگوں کو چھوڑ کو م کے لتحاظ سے ھلدوں اورمسلمانوں میں کوئی بھد یا فرق بیں تھے۔ درلوں کی جسمانی بنارت گٹیں' رنگ' روپ' چھوٹ ہو' بانکل یکساں ہے، پرانے حملہ آور عربوں'لرکوں' اور ایراندوں کا ج ھندستان میں یته تک نہیں چلٹا جی عرب فوجیوں لا سخت ہی قاسم کی جنریلی میں سندھ کے صوبے پر خملہ کیا تھا یا بی تھی' اُن کا آج نام و نشان تک نہیں ملتا ہ فونہوں' ورعہ منا ہ فونہوں' ورعہ منا ہ فونہوں' ورعہ منا ہ فونہوں' ورعہ منا ہ فونہوں' منا ہ مدید)

अफसर दक गये और हैरान होकर लड़की की तरफ़ देखने लगे.

चनमें से एक अफ़सर ने पूछा:--"तुम्हारा आई कीन है ?"

रादुलचा ने घंधराये हुये जबाब दिया — ',स्तोयान भैया ! हमारा भाई स्तोथान !" रादुलचो को इस बात पर अचरज मालूम होता था कि फीजी बरदी पहने हुये कप्तान यह न जानता हो कि स्तोयान चनका भाई है.

अफ़्सर ने फिर हैरान होकर पूछा:—"कौन स्तोयान १" कीना ने बड़ी हड़ता के साथ जबाब दिया:—"वेतरेन गाँव का रहने वाला स्तोयान !"

ध्यक्रसर ने श्रपने साथी से कुछ कहा चौर फिर बड़े ध्यार के साथ कीना से पूछाः—

"क्या तुम्हारा भाई घुड़सवार कीज में है ?"

बैचारी कीना ने बिना कुछ समके जवाब दे दिया:--

अफ़सर ने कहा: — "बेटी ! वह हमारे साथ नहीं है." दूसरे अफ़सर ने बच्चों से कहा: — "गाँव को लौट जाओ, नहीं ता तुम यहीं सरदी में जम जाओंगे."

यह कहकर दोनों भफ्सर भाने घोड़े को हरटर लगाते हुये बाक्री सवारों के पीछ-पीछे चल दिये.

कीना अब चिल्ला रही थी. रादुत्त था के टपाटप आंस् गिर रहे थे. दोनां के हाथ और पैर सरदी से ठिट्ठर रहे थे. उनके गाल नीले पड़ गये थे. सामने गाँव का रास्ता साफ़ दिखाई दे रहा था. पर उस पर अब कोई आदमी या आदम-जाद न था. सब अपने-अपने घर चले गये थे. शाम हो गई थी. अँघेरा बढ़ रहा था. ठन्डी हवा और ज्यादह काटती हुई मालूम होती थीं. केवल दूर फासले पर घुड़सवारों का बह गिराह एक काले बादल की तरह चला जाता हुआ और गुम होता हुआ नजर आता था. ठन्डी हवा के साथ सवारों के गाने की आवाज भी बच्चों के कानों में पड़ रही थी. कीना और रादुलचो ने अब अपने गाँव की तरफ लीटना शह किया.

रात होती जा रही थी. दोनों ने अपने-अपने हाथ अपने उपहों में छिपा रखे थे. दोनों धीरे-धीरे रोते हुये चले जा रहे थे, उन्हें बार-बार यह उवाल था रहा था कि माँ दरवाजे पर खड़ी हुई भैया की बाट जोह रही होगी.

पहाड़ी कें पीछे की तरक से एक और गाड़ी आती हुई विकाई की जिसमें तीन थाड़े जुते हुये थे.

्र कीना ने फिर चिल्लाकर पृद्धाः—"जनाव ! क्या फीज के कुछ और सिपाही सभी पीछे सा रहे हैं ?" السر رک کله اور حدران هو کر اوکی کی طرف دیکھا۔

آن میں سے ایک انسر نے پوچھا :-"تمهارا بھائی کون هے 1912

رادل چو نے گھیرائے ھوئے جواب دیا:—"استویان بھا اا همارا بھائی استویان اِ" رادل چو کو اِس بات پر اُچرے معاوم هوتا تها که فوجی وردی بہنے هوئے کپتان یه نه جانتا هو که استویان اُن کا بھائی ہے .

انسر نے پھر حیرانی ہو کر پرچھا۔۔"کرن آسٹویان ہے"

کسها نے بڑی درزها کے ساتھ جواب دیا۔"ویترین گؤں کا رہنے والا استویان !''

انسر نے اپنے ساتھی سے تحجم کیا اور پھر بڑے پیار کے ساتھ کینا سے برجہا:—

''دیا تبهارا بهائی گهرتسوار نبج میں فی ؟ '' بچاری کینا نے بنا کچھ سنجے جراب دے دیا:۔۔''هان'

انسر نے کہا:۔۔ "بیتی ! رہ همارے ساتھ نہیں ہے ."

دوسرے انسر لے بچوں سے کہا:۔۔۔"گؤں کو لوٹ جاؤ' نہیں تو تم یہاں سردی میں جم جاؤ گے ۔"

یہ کہہ کر دونوں انسر آپنے گہرورں کو ہفتار اگاتے ہوائے باقی سواروں کے پیچھے پدچھے چل دیئے ،

کیلا آپ چلا رھی تھی ، رادل چر کے تیائپ آئسو گر رھے تھے ، ان کے کل تھے ، دوئوں کے ھاتھ اور پیر سردی سے تھتھو رھے تھے ، ان کے کل نہلے پڑ گئے تھے ، ساملے کؤں کا راستہ صاف دکھائی دے رہا یہ پر آس پر آس پر اب کوئی آدمی یا ادم زاد تھا ، سب اپنے آپنے گیر چلے گئے تھے ، شام ھو گئی تھی ، الدھمرا بوتھ رھا تھا، ٹھنڈی موا اور زیادہ کتتی ھوئی معلوم ھوتی تھی ، کیرل دور ناملے پر گہرز سواروں کا وہ گروہ ایک کلے بادل کی طرح چلا جاتا ھوا اور گم ھوتا ہوا نہا رات تھا ، ٹینڈی ھوا کے ساتھ سواروں کے کائیں میں پر رھی تھی ، کینا اور گلے کی آواز بھی بحورں کے کائیں میں پر رھی تھی ، کینا اور رادل چو لے آپ اپنے گئوں کی طرف لوڈنا شروع کھا ،

رات مرتی جا رهی تهی ، درنہں نے اپنے اپنے ماتو اپنے کھروں میں چھیا رکھ تھے ، درنوں دھیرے دھیرے درتے هوئے چلے جا رقے تھے ، آنھیں بار بار یہ خیال آرما تھا کہ ماں دروازے پر کھری مرئی بھیا کی بات جوہ رهی هوگی ،

پہاری کے پیچھے کی طرف سے آیک اور گاری آئی ہوئی دکھائی دی جن میں تین گھرڑے جانے ہوئے تھے.

کینا نے پہر چاہ کر پوچھاہ۔"جناب ! کیا نوچ کے کچھ اور سیامی آیی پیمچے اور میں !"

हुई थी. दो सिपाही उन्हें मोड़ पर आते दिलाई दिये. दोनों के ऊपर काफी बरफ जमा हुआ था. बच्चों ने उन्हें देखा. स्तायान उनमें नहीं था.

कीना ने उन सिपाहियों से पूछा:—'क्यों जी ! क्या कीज इधर को ऋा रही है ?''

उनमें से एक ने जवाब दिया—"ऐ लड़की, हमें नहीं मालूम. तुम किसके इन्तजार में खड़ी हो ?"

रादुलचो ने जवाब दिया -- "अपने भाई के इन्तजार में !" सिपाही थके हुये थे. वे श्रागे बढ़ गये.

कीना ने फिर दूर तक देखने की कोशिश की. दोनों को सरदी लगने लगी. कीना लड़खड़ाने लगी. रादुलचो को कप-कभी लग गई. पर उनके स्तायान मैया आन वाले थे, इस-लिये वह दोनों भैया का इन्तजार करते रहे. उन्हें यह भी ख्याल था कि अगर वह भैया को अपने साथ घर न ले गये तो माँ उन्हें डाँटेगी और रोवेगी.

सामने से एक गाड़ी आई. उसमें दो मुसाकिर बैठे हुये थे. दोनां मेड की खाल के लम्बे गरम काट पहने हुये थे. उनके सरों पर ऊँवी गरम टापियाँ थीं. गाड़ी जब दोनों बच्चों के बराबर में आई तो कीना घोड़ों के सामने आकर खड़ी हो गई.

उसने गाड़ी में बैठे हुये मुसाकिरों से पूत्राः—"जनाव! क्या उधर से कोई कीज आ रही है ?"

मुमाकिरों में में एक ने जवाब दिया:—'प्यारी लड़की! हमें नहीं मालूम '' मुसाकिर ने ऋपनी दोषी को कुछ ऊँचा करके हैरानी के साथ लड़की को देखा. लड़की सरदी से लाल और नीली हो रही थी.

गाड़ी आगे बढ़ी चली गई.

दोनों बच्चे उसी जगह डटे खड़े रहे, घंटों बीत गये. ठंडी पहाड़ी हवा श्रीर जियादह तेज हो गयी श्रीर उनके चेहरों पर थपेड़े देने लगी. उनके काड़े हवा में उड़ने लगे. घरफ भी नेजी के साथ गिरता रहा. लेकिन दोनों घच्चे वहाँ से न हटे. उनकी श्राँखें मड़क के मोड़ पर लगी हुई थीं. वह इन्तजार में थे कि काई श्रीर श्रादमी उधर से श्राता हुशा दिखाई दे.

यकायक कीना का दिल श्वाशा से उझलने लगा. कुझ चुक्सवार मोड़पर दिखाई दिये जो उन्हीं की तरफ श्वा रहे थे. सवार बहुत से थे. कीना ने सोचा हो सकता है श्रेया भी इन्हीं में हा. वह टकटकी लगाये उनकी तरफ देखती रही. सवार श्वागे बढ़ते गए श्वीर दोनों बच्चों के सामने से जाने लगे. उनके पीछे-पीछे दो श्वकसर मालूस होते थे. कीना ने हाथ उठाकर उन श्वफसरों की तरफ इशारा करके गेते हुये कहा:—"कप्तान साहब ! क्या मेरा भैया श्वा रहा है ?"

ہوئی تھی دو سہاھی آنھیں مور پر آتے دکھائی دیئے ۔ دونوں کے آریر کانی برف جمع ہوا تھا ۔ بحوں نے آنہیں دیکھا ۔ استویان آن میں نہیں تھا ۔ آ

کینا نے آن سیاهیرس سے پرچھا: ۔۔۔کیوں جی ! کیا نہے اِدھر اُر آرھی ہے ہو ''

اُن میں سے ایک نے جواب دیا۔۔''اے لڑکی ہمیں نہیں معلوم تم کس کے انتظار میں کوتی ہو ؟''

رادلچو لے جواب دیا: - ''اپنے بھائی کے انتظار میں!'' سھاھی تھکے ھوٹے تھے ۔ وہ آگہ بڑھ گئے .

کیٹا نے پھر دور نک دیمھنے کی کوشش کی . دونوں کو سردی لگنے لگی . کینا لڑکھوانے لگی . رادلچو کو کھمی لگ گئی . یر اُن کے استویان بھیا گئی . یر اُن کے استویان بھیا گئی تھے والے تھے اِس لگے وہ دونوں بھیا کا انتظار کرتے رہے ، آنھیں یہ بھی خیال تھا کہ اگر وہ بھیا کو انتظار کرتے رہے ، آنھیں یہ بھی خیال تھا کہ اگر وہ رہے ، وہ اُنے ساتھ کھر نکے گئے نو ماں انھیں تاقنیکی اور رہنے گی .

سامنے سے ایک گاری آئی . اُس میں دو مسافر بیٹھے ہوئے تھے ، تھے ، دونوں پیدر کی کہال کے سبے گرم کوٹ پہنے ہوئے تھے ، اُن کے ، سروں پر اُونچی گرم تُوندان تھیں ، گاری جب دونوں بچیں کے برابر میں آئی تو کینا گھرروں کے سامنے آ کو کھری ہو گئی ،

أمعى قائلوى مين بيتهم ه أم مسافرون سيرچها إسد "جماب ا الما إدهر سه كرئي فوج أرهى هـ 8 "

مسافروں میں سے آیگ نے جواب دیا:—"پیاری لڑکی! میں نہیں معارم " مسافر نے آپنی ڈرپی کو کتھ ارتیجا کو کے حیرانی کے سابھ لڑکی دو دیکھا ۔ لڑکی سردی سے قال اور نبیلی مورشی تھی ۔

گازی آگے بڑھی چلی گئی .

دونس بھے اُسی جکد ذئے کہتے رہے گہنٹوں بیت گئے۔

اہنتی پہاتی ہوا اور زیادہ تیز ہو گئی اور اُن کے چہرس پر

انہوتے دیا۔ اکی ، اُن کے کپڑے ہوا میں اولے لکے ، برف بھی

انبوی کے سانہ گرنا رہا ، لیکن دونوں بھے وہاں سے ند عقہ ،

ان کی آنکہیں سرک کے مور پر لگی ہوئی تھیں ، وہ انتظار
میں تھے کہ کوئی اور اُدمی اُدھر سے آیا ہوا دکھائی دے ،

یکایک کیفا کا دل آشا سے اُچیانے لگا ، کچے گھورسوار مور پر دکھائی دیئے جو انھیں ٹی طرف آ رھے تھے ، سوار بہت سے اُھے ، کیما نے سوچا ھو سکتا ہے بینا بھی انھیں میں ھوں ، وہ نُمْنَی لگائے اُن کی طرف دیکھتی رھی ، سوار آئے پرھتے نُمُ اُرر دونوں یچوں کے سامنے سے جانے لئے ، اُن کے پیچھے پیچھے دو افسر ، معارم ھوتے تھے کیفا نے ھاتھ اُٹیا کو اُن انسروں نی طرف اشارہ کو کے روتے ھوئے کہا:—"نیتان صاحب ! کیا مهرا उससे उसने मोम बतियाँ खरीवीं और उन्हें गिरजे में सब मूर्तियों के साधने जला-अला कर रख दी.सुशी-सुशी वह घर लीटी.

रास्ते में वह अपने मन ही मन में बड़वड़ाती जाती थी;—''अच्छा, अच्छा, आज का दिन यह है, कल बड़ा दिन है.....अभी भी वक्त है. ऐ प्रभु ईसा की मां! मेरा फ़र्रिश्ते जैसा लाल सुफ तक पहुँचा दा.....ऐ प्रभु ईसा मसीह! मेरे सुरमाए हुए दिल का खुशी अता करा."

कीना दौड़ती हुई घर में आई और माँ से कहने लगी:— "माँ ! गाँव के कुछ और नौजवान लड़।ई के मैदान से लौट आप हैं."

बूढ़ीं तसेना को कुंछ गुस्सा सा आ गया. उसने अनमने दिल से जवाब दिया:—"मुक्ते दूसरों के संदेशे ही ला ला कर मत दो, बल्कि जिस तरह और दूसरी लड़ांकयाँ अपने भाइयों से मिलन जा रही हैं तुम'मी जाकर अपने भैया का स्वागत करा."

बालक रादुलचा ने बीच में दख्य दंकर कहा.—',माँ ! मैं भी कीना बहन के साथ जाऊँगा.''

दोनों बच्चे दौड़ते हुए बरफ से ढ़ की हुई गली को पार कर गये, वह गाँव के वाहर की बड़ी सड़क तक पहुँच गये और सड़क के उस पार खेतों में जाकर खड़े हो गए.

बूदी तसेना श्रपने दरवाजे के बाहर खड़ी हुई बेटे का इन्तजार करने लगी.

पहाड़ की तरफ़ से ठन्डी सनसनाती हुई हवा चली आ रही थी. पहाड़ों की चोटियाँ,, घाटियाँ और मैदान सब बरफं सं सफेद हो रहे थे. बादल घिर चले आ रहे थे. काले कीवे सड्क के ऊपर पर फडफड़ा रहेथे या दरक्तों की नंगी शाखों पर बैठे हुए थे. वह सड़क इख़तिमान घाटी तक जाती थी. सङ्क पर जगह-जगह नौजवान लड्कियों, बच्चों चौर बढ़ी श्रीरतों के मुन्ड जमा थे. हर मुन्ड किसी न किसी के इन्तजार में था.....सिपाही अभी तक घर लौट रहे थे. कंई अकेले-अकेले आ रहे थे और कोई कई-कई के निरोह में. कीना और रादुलचा पहले एक गिराह की तरक गए, फिर दूसरे की तरफ, और फिर तीसरे की तरफ और फिर श्रीर भागे बढ़ गये, वे चांहते थे कि वे ही स्तोयान को सबसे पहले देखें श्रीर उससे मिलें उन्हें विश्वास था कि वे उसे हुरन्त ही पहचान लेंगे. बरक पड़ना इत्रुक्त है। गया था श्रीर भक्त के गिरते हुए गाले उनकी आँखों के सामने ार-वार पदा सा डाल देते थे.

सड़क पहले ऊपर को जाती थी और फिर पहाड़ी के पीछे एम ही जाती थी. कीना और रादुलची उस पहाड़ा चाटी के अपर पहुंच गए. हवा वहाँ औरभी जियादहतेज और काटती 906,1346

اس سے آس کے موم بتیاں خوبدیں اور انہیں گرچے میں سب مرتبوں کے ساملے جلا جلا اور راہ دیں ، خوشی خوشی وہ گھڑ لوگی ،

کیفا دورتی ہوئی کور میں آئی اور ماں سے کہنے کی:۔۔ ''ملی! گوں کے کچھ اور نوجوان اوائی کے میدان سے لوے آئے ہیں۔''

بروقی تسینا کو کچھ غصہ سا آگیا ۔ اُس نے ان منے دل سے جواب دیا: ۔ ''صبعه دوسروں نے سدیش می لا لا کر ست دو' باکہ جس طرح اور دوسری لودباں اپنے بہائیوں سے ملئے جا بھی ھیں تم بھی جد کر اپنے بھا کا سواگت کرد ۔''

بالک رادارچو نے بینے میں دخل دے کر کھا:۔۔۔مال اِ میں بھی کینا بہن کے مابع باؤنگا ،''

دونوں بھے دروتے ہوئے برف سے قھمی ہوئی کلی دو بار کو گئے ۔ وہ گاؤں کے باعرنی بڑی سوک تک پہنچ کئے اور سرک کے اس یار بہتوں میں جا در کھتے ہو گئے ۔

ہوڑھی تسیم اپنے دروازے کے باہر کوڑی ہوئی بیٹے کا انتظار کرنے لکی .

پہاڑ کی طرف سے ٹہندی سند خاتی ہوا چلی آ رعی آپی ، پہاڑوں کی چوٹیاں' گہاٹیاں اور میدان سب برف سے سفید ہو رہے تھے ، بادل گھرے چلے آ رہے تھے ، کالے کوئے سڑک کے اوپر پر پھڑ بہڑا رہے تھے یا درخاون کی نفکی شاخوں پر بیٹھ ہوئے تھے ، وہ سڑک اختیمان گہاٹی تک جاتی تھی ، سڑک پر جگہا نواجوان اوکیوں' بجیوں اور بوڑھی عورتوں کے جہند جمع تھے ، ہو جھند کسی ند کسی کے انتظار میں تھا...سیاھی ابھی تک گھر اوت رہے تھے ، کوئی اکیلے اکیلے آرھانے اور کوئی نئی کئی گھر دوسر کی طرف اور رادل چو پہلے ایک گروہ کی طرف کئے' پھر دوسر کی طرف اور رادل چو پہلے ایک گورہ کی طرف کئے' پھر دوسر کی طرف اور اور پھر اور آکے بڑھ پھر دوسر سے کی طرف اور پھر اور آکے بڑھ گئے ، وہ چاند تھی دیکھیں اور اس سے میلی دانھیں وشواس تھا کہ وہ اسے قرنت می پہجان اور اس سے دیلے دیکھیں اور اس سے میلی دوسر پرتا شروع ہو گیا تھا اور برف کے گرتے ہوئے گالے ایس کی آنکوں کے سامنے بار بار پردہ سا قال دیتے نہے ۔

سوک پہلے اوور او جاتی تھی اور پھر پہاری کے ھیجھے کم مو جانی تھی ۔ ادما اور رادل چو اس پھاری کی چولی پھر پہلچ کئے ، هوا وهاں اور بھی زیادہ تیو اور کائٹی

258

पर दिनितर को भी स्तोयान की कोई ख़बर नहीं थी. हसने जवाब दिया:—"शायद हसे बिदिन की तरफ़ में जा गया है." माँ की विन्ता देख कर दिमितर को भी दुख हुआ. हसने फिर कहा:—"शायद वह कहीं से किसी दूसरे रास्ते से आता होगा." यह कहकर दिनितर कुछ सोचने सा लगा.

तसेना ने ठन्ही साँस भरकर कहाः—''हे ईश्वर ! हे प्रभू ! मेरा लाल इस समय कहाँ होगा !''

वहाँ से वह स्तायानका के घर गई. दरवाजी पर पहुँ-घते ही उसका दिल काँपने लगा. वह साचने लगी कि शायंद स्तायानका से उसे अपने बेटे का कुछ समाचार मिल सके और यह मालूम हो जाय कि स्तायानका बड़े दिन के त्योदार तक घर आ जायगा या नहीं. वह स्तायानका से कुछ खुशख्या सुनना चाहती थी. पर स्तायानका चुप रही. कबल उसकी आँखें लाल दिखाई दीं.

[4]

आज सारे गाँव में चहल-पहल है. लड़ है के मैदान से पहली पलटन वापिस आ रही है. गाँव वाले उसके स्वागत की तैयारियाँ कर रहे हैं. गली के बीच में तसेना के घर के पास एक दूसरे के आमने सामने दो बिल्लया गाड़ी गई. उन दोंनों के ऊपर मेहराब के तौर पर एक हरी शाख मोड़ कर बाँध दी गई. इस तरह पलटन के स्वागत के लिए एक फाटक बना दिया गया. लागों ने चीड़ के दरख़ तों की .खुराबूदार टहनियाँ पहाड़ों पर से लाकर दोनों बिल्लयों और मेहराब के ऊपर लपेट दीं. पास के शहर पाइ।रिजक से एक तखता लाकर उस महराब पर लटका दिया गया. तखते पर लिखा हुआ था:— बहादुर सिगाहियों! स्व।गत! चारों तरफ़ तिरंगे राष्ट्रीय मन्डे लगा दिए गए.

विजया पलटन आई और चली गई.

बेचारी माँ संचिन लगी:-

"हो सकता है कि मेरा बेटा पीछे आ रहा हो. शायद बह त्यौहार से ठीक एक दिन पहले पहुँचना चाहता है. उसे परदेस में बड़ा दिन बिताने की क्या जरूरत! अभी तो सिपाही आ ही रहे हैं. ए%-एक कर चले आ रहे हैं. शाम कक उसके आने के लिए काफी समय है. उसे मालूम है कि यहाँ घर पर इतने आदनी बेचैनी के साथ उसकी तरफ आँख लगाए बैठे हैं."

[5]

सुबह के बक्त बूड़ी तसेना बहुत जल्ड़ी गिरजा गई. स्ती-बात ने जो जेव उसके पास भेजा था उसे उसने सुना डाला. پر دیمدار کو بھی استریان کی کوئی خبر نہیں تھی ۔ اُس نے جواب دہا:۔۔۔'شاید آسے ودن کی طرف بھیجا گیا ہے ،'' ماں کی چلکا دیکھ کر دیمدار کو بھی دکھ ہوا ۔ اُس نے بھر کیا ۔۔''شاید وہ کہوں سے کسی درسرے راستے سے آدا ہوا ۔'' یہ نہہ کر دیمیار تجھ سوچنے سالگا ۔

تسينا لے تهندی سانس بهرکو کها: — ''هے ایشور ! هے پوبهو! میرا لال اِس سمے کہاں هوگا!''

رهاں سے وہ استوبانکا کے کور گئی ، دروازے در پہنچتے هی اس کا دل کانہنے لگا ، وہ سوچنے کی شاید استوبانکا سے آسے اپنے بیتے کا کنچھ سماچار مل سکے آرر یہ معلوم هو جائے کہ استوبانکا ہو۔ دن کے تعودار نک گھر آ جائے گا یا نہیں ، وہ استوبانکا سے کنچھ خرص خبری سننا جامئی نھی ، پر استوبانکا چپ رھی ، کھول اس کی آنجوں الل دکھائی دیں ۔

[4]

آج سارے گاؤں میں چہل چہل ہے، لڑائی کے مدان سے پہلی ہاتی واپس آرھی ہے ۔ گاؤں والے اُس کے سواکت کی تھاریاں کو رہے عوں ۔ گای کے بیچے میں تسیفا کے گھر کے پاس ایک دوسرے کے آمنے سامنے دو المیاں گاڑی گئیں ۔ اُن درفس کے اوپر محراب کے طور پر ایک ھبی شاخ مرز کر باندھ دی گئی ۔ اِس طرح بلتی کے سواگت کے لئے ایک بہاتک بنا دیا گیا ۔ لوگوں نے چوڑ کے درختیں کی حرشبودار نہنیاں بہاری پر سے لاکر دونیں بایوں اور محراب کے آبر الهبت دیں ، پاس کے شہر بازارجک سے ایک نات، لاکر اُس صدراب پر لٹکا دیا گیا ، تختے پر لنها ہوا نہ جہتے بہادر سہادی اِ سواگت اِ چاروں طرف ٹرنگے رائٹریہ جہتے ہاکہ دیئے گئے ،

وجئی پاتن آئی اور جلی گئی . بینچاری ماں سوچنہ ای:-

"هر سكتا هے كه حيرا برقا بينچه آرها هو. شايد وه تهوار سے اللہ ايك. دن پہلے بهنچنا چاستا هے أسے پرديس ميں برا دن بتائے كى كيا ضرورت الله الهى تو ساهى آهى رهے هيں . ايك ايك كر چلے آرهے هيں . شام تك اس كے آلے كے لأه كلى سم هے اس معلوم هے كه بهاں كهر پر اتنے آدمى و چيلى كے ساته أس كى طرف آنكه لكانے بيقے هيں ."

[.5]

صمع کے رقت بروھی تسینا بہت جلدی گرجا گئی۔ استریان نے جو لیو اس کے پاس بہیجا تیا اس نے بہنا ڈلا۔ फिर उसने उन केदियों को मुखातिब करके कहा :— "बेटो । एक मिनट ठहरो."

यह कहकर वह अपने घर दौड़ी हुई गई और एक मिनट के अन्दर एक पीपा शांक्या दाय में लिए हुए लीट आई. उसने सर्विया के उन क़ैदी सिपाहियों से कहा:—''जरा ठहरा, थोड़ा थोड़ा राकिया पी लो." उसने उन्हें राकिया पीने को दी. बुलग़ारिया का जो सिपाही उन क़ैदियों को लिये जा रहा था उसने मुसकरा कर सबको रकने की इजाजत दे दी. यके हुये क़ैदी निपाहियों ने राकिया पी और नसेना का बहुत-बहुन शुक्रिया अदा किया. शिक्या पीकर उनकी सरदी कुछ कम हुई.

बुलगारिया के सिपाही ने यह देग्वकर कि पीपे में कुब राकिया बच गई है बड़ी ख़ुशी के साथ उसे अपने मुँह में डाल लिया और बूढ़ी माँ को बहुत-बहुत सलाम किय!.

तसेना ने फिर हैरान होकरकदाः—''यह सब ईसाई हैं. सब एक ही ईश्वर के बन्दे हैं.....यह एक दूसरे से लड़ते क्यों हैं ?....."

उसके देखते-देखते वह लोग चले गए.

[3]

जंग रुक गई. सुलह की बात चीत शुरू हो गई.

बड़े दिन का त्याहार नजदीक आने लगा. सिपाही लोग छुट्टी ले लेकर घर आने लगे. वेतरेन से गए हुये बहुत से सिपाही भी लौट आये. पर स्तायान अभी नहीं आया. न उसका कोई सन्देश आया. बृढ़ी तसेना को चिन्ता होने लगी. वह घबराने लगी. उसके दिल में दुरे-बुरे ख्याल आने लगे......दिन गुजरते चले गए. तसेना की आँख वराबर दरवाजे की तरफ लगी रहती. न जाने कब स्तायान आवे और दरवाजा खोले.

रंगल स्तोयानांव लड़ाई से लौटकर उससे मिलने आया. दिनकां का बेटा पीटर भी उससे मिलने आया. दोनों भाई स्तामेतली उससे मिलने आये. वह उठकर वाहर जाकर लोगों से पूछती. पर स्तोयान की किसी से कोई ख़बर न मिलती. उन सब ने कुछ दिन पहले स्तायान को देखा था. लेकिन उसके बाद की उन्हें खबर न थी.

बृदी माँ का दिल घराने लगा. उसकी आँखों के सामने बार-बार अँधेरा आ जाता. वह घर के आस-गस चक्कर काटती और बार-बार स्तःयान का याद करती.

उसकी बेटी कीना द्रावाचे से दौड़नी हुई आई और बिस्ता कर कहने लगाः—''मां ! दिमितर वाचा लड़ ई से आ गए।''

माँ तुरन्त उठी श्रीर दिमितर के यहाँ गई. दिमितर के यहाँ पहुँचकर उसने कहा:— "दिमितर ! स्वागत ! स्तोयान को तुमने कहाँ छोड़ा ?"

پھر اس نے اُن قیدیوں کو مخاطب کر کے کہا:۔۔۔ "میاتو اا

یه کهدکر وه اینے گهر دروی هوئی گئی اور ایک منت کے اثدیر الیک پیها راکیا هائی میں لئے هوئے لوت آبی ، اُس نے سرویا گیاں قیدی سهانموں سے نهائی۔ در انهوزو' نهروا نهروا راکیا ہی لو،'' اُس نے مناظمی اُن اُس نے مناظمی اُن قیدیوں کوئئے جا رہا تھا اُس نے مسکراکر سب کو رکنے کی اجازت دے دی ، تهکے هوئے قیدی سهانموں نے راکیا پی اُور تسینا کا بہت شکریم ادا نها ، رائیا پی کر اُن کی سردی کچھ بہت شکریم ادا نها ، رائیا پی کر اُن کی سردی کچھ

باخاریہ کے سہاھی نے یہ دیکھ کر ته پنھے مھی کنچھ راکیا بھے گئی ہے بچی خرشی کے سانھ اُس نے آپنے منھ میں ڈال لیا اور پروھی ماں کو بہت بھ سام نیا ،

قسینا نے پور حیران هم در کہا:۔۔۔'تید سب عیسائی هیں' سب ایک هی ایشور کے بند سهیں۔۔۔۔یته ایک دوسرے سے لوتے کورں هیں ؟''

اُس کے دیکھتے دیکھتے وہ لوگ چلے گے .

[3]

جلگ رک گئی . صلح کی بات چیت شروع عو گئی .

ہرے دن کا نهرهار نزدیک آلے لگا . سهاعی لوگ چهتی لے

لے کو گهر آلے یکے . بیترین سے گئے عوئے بہت سے سپاهی بهی

لوت آئے . پر ستریان آبھی نہیں آیا، نه اسکائوئی سندیش آیا ،

ہوتھی تسینا کو چہتا ہونے یکی . وہ گهبرائے یکی ، اُس کے دل
میں برے برے حیال آنے لکےدی گزرتے چلے گئے ، تسینا کی

آنکھیں برابر دروازہ کہوئے ،

استریان آرے اور دروازہ کہوئے ،

رنگل استوبانووو لزائی سے اوت کر اس سے ملنے آیا . دنکو کا بیٹا پیٹر بھی اُسن سے ملنے آیا . دنکو کا بیٹا پیٹر بھی اُسن سے ملنے آیا . دونوں بھائی اُسنتا مینلی اُس سے ملنے آنے کو باعو جا کو لوگوں سے پوچھتی ، پر اُستوبان کی دسی سے کوئی خبر نبه ملتی ، ان سب نے دھھ دن ہے اُستوبان کو دیکھا تھا ، لیکن اُس کے بعد کی اُنھیں خبر نبه تعد ۔

ہورہی ماں کا دل گھرانے گا ۔ اُس کی آنکھوں کے سامنے مار بار اندھھرا آجاتا ۔ وہ گھر کے اُس پاس چکر کائٹی اُور بار فرار اُدو یاد کرفی ۔ فرار اُدو یاد کرفی ۔

ماں درنت اٹھی اور دہمیٹر کے یہاں گئی ، دیمیٹر کے یہاں پہلیج کر اس نے کہا: —''دیمیٹر! سواگت! اسٹویاں کو تم نے کہاں جھرڑا 1'' त जा रहा था. तसेना उस सत को पदवाने के लिये दीइकर इसे अपने पुरोहित के पास ले गई.

चिट्ठी यह थी:-

"माँ! में यह चिट्ठी तुन्हें यह बताने के लिये लिख रहा हैं कि मैं जिन्दा और ख़ें रियत से हैं. हमने सरिवा के लोगों को हरा दिया है. बुलगारिया जिन्दाबाद! मैं अच्छी तरह हूँ. रंगल स्तोयानाव भी अच्छी तरह से हैं. चना दिमितर भी अच्छी तरह से हैं और अपनी माँ को सलाम भेजते हैं. सरिवया के लोग हमेशा एक साथ अपनी बन्द्कें छोड़ते हैं. पर जब हम जवाब में 'हुर्ग!' कहकर बढ़ते हैं तो वे डर जाते हैं. में अपना नया विस्तरबन्द त्सवेताम के यहाँ मूल धाया था, वह वहाँ से मंगा लेना. बच्चे उसे कहीं ख़्राब न कर दें. कल हम डागामान की घाटियों में से तेशी के साथ निकल जाएँगे. मैं जब घर लीटूँगा तो कीना के लिये निश शहर से कोई अच्छी सी चीज लेता आऊँगा. तुम्हारे ख़र्च के लिये मैं एक लेव (बुलगारिया का एक सिक्का) भेज रहा हूँ. जब घर आऊँगा तो रादुलचो को बताऊँगा कि तोप के गोले किस तरह आवाज करते हैं.

स्तोयान दोन्ने व

"बूढ़े पीटर को मेरा बहुत बहुत सलाम कहना. मैं उन्हें सरिवया की एक वन्दूक मेजना चाहता था पर इन्तजाम नहीं कर सका. वह लोग बन्दूक तो बहुत दूर से चलाते हैं पर उनका निशाना ठीक नहीं बैटता. माँ! स्तीयानका को भी मेरा सलाम कहना."

तसेना का दुखी हृदय खिल उठा. अपने बूदे हाथों में चिट्ठी लिये वह स्तायानका के घर गई. सब को बड़ी ख़ुशी हुई. पर सबसे जियादह ख़ुशी रादुलचो को हुई. वह ख़ुश होकर यह सोचने लगा कि मेरा बड़ा भैया जब घर लौटेगा को मुक्ते एक नया गाना सिखाएगा.

गली में पहुँचते ही तसेना को लड़ाई के क्रैदियों का एक नया गिरोह मिल गया. बुलगारिया का एक सिपाही उनके पीछे-पीछ था. उस सिपाही की शकल स्तायान से इतनी मिलती हुई थी कि बार-वार तसेना को शक हुआ कि वह स्तायान ही है. पर वह कोई और निकला. तसेना ने मट से बढ़कर उससे पूछना चाहा कि उसे स्तायान की भी कुछ ख़थर है या नहीं. पर मुँह खोलने से पहले उसका ध्यान सरविया के कैंदियों की तरफ गया. जैन के क्रीदी उसने जीवन में पहली बार देखे थे.

तसेना न उन के द्यों की तरफ देखकर कहा:—'ऐ ईश्वर ! क्या यही सर्शवया के लोग हैं ? खासे अब्छे आदमी हैं......इन बेचारों की माएँ कहाँ होंगी, क्या कहती होंगी ? ... उन्हें क्या पता उनके बेटे कहाँ हैं ?" لے جا رہا تیا ۔ نسینا اُس خط کو پوھوائے کے لئے دور کر اسے اپنے پروھت کے باس لے گئی ۔

چلبي به تهر:-

المال ا میں یہ چھٹی تمہیں یہ بتانے کے لئے لتھ رہا ہوں کہ میں زندہ اور خدریت سے ہوں ۔ ہم نے سرویا کے لوگوں کو ہرا دیا ہے، بلغاریہ زندہ باد! میں اچھی طرح ہوں ، رنگل استویائوو بھی اچھی طرح ہے ہے ہیں اچھی طرح سے ہیں اچھی طرح سے ہیں اور اپنی ماں کو سلم بھینجتہ ہیں ، مرویا کے لوگ ممیشہ ایک ساتھ اپنی بندوقیں چھڑتے ہیں ، پر جب ہم جواب میں اپنا ہمرا ا کہہ کو بڑھتے ہیں تو وے در جاتے ہیں ، میں اپنا بستر بند تسویتان کے یہاں بھول آیا تھا وہ وہاں سے منگا لینا ، بچے اسے کہیں خواب نه کو دیں ، نل ہم دواگوماں کی بچے اسے کہیں خواب نه کو دیں ، نل ہم دواگوماں کی لوئونگا تو لینا کے لئے نہی شہر سے کوئی اچھی سی چیز لینا اونگا ، لوئونگا تو لینا کے لئے نہیں ایک لیو (بلغاریہ کا ایک سکہ) تمہارہ خرچ کے اٹم میں ایک لیو (بلغاریہ کا ایک سکہ) بھیجے رہا ہوں ، جب گھر آؤنگا تو رادل چو کو بتاؤنگا کہ ترپ کے بھیجے رہا ہوں ، جب گھر آؤنگا تو رادل چو کو بتاؤنگا کہ ترپ کے بھیجے رہا ہوں ۔ وارا کرتے ہیں .

أستويان دوبريو .

"برزه پیتر کو میرا بهت بهت ملام کهنا میں انهیں سرویا کی ایک بلدرق بهیجنا چاهتا تها پر انتظام نهیں کو سکا ، وہ لوگ بلدرق تو بهت دور سے چلاتے میں پر اُن کا نشائم تهیک نهیں میرا سلام کہنا ۔"

تسینا کا داوی هردئے کیل آئیا ۔ آپنے بورھے عانوں میں چٹھی لئے وہ استریانکا کے گور گئی ، سب کو بڑی خبشی عرثی ، پر سب سے زیادہ خرشی راداں چو کر هرئی ، وہ خوش هو کو یہ سرچنے لگا که میرا بڑا بہیا جب گهر لوئے کا تو مجھے آیک نیا گانا سکھارگا ،

گلی میں پہونچتے ہی تسینا کو اوائی کے قیدبوں کا ایک نیا گروہ مل گیا ، باغاریہ کا ایک سیاھی اُن کے پیچھے پیچھے تیا ۔ اُس سیاھی کی شکل استوبان سے اتنی ملتی ہوئی تھی کا بار بار تسینا کو شک ہوا کہ وہ استوبان ہی ہے ، پر وہ کوئی اُر نالا ، تسینا نے جہت سے بڑھ کو اُس سے پوچھنا چاھا کہ اُس استوبان کی بھی کچھ خبر ہے یا نہیں ، پر ملھ کیوانے سے بہلے اُس کا دھوان سروا کے دیدرس کی طرف گیا ، جنگ کے بہلے اُس کا دھوان سروا کے دیدرس کی طرف گیا ، جنگ کے دیدرس کی طرف گیا ، جنگ کے دیدرس اس فیدی اُس کا دھوان میں بہلے بار دیکھے تھے ،

تسینا نے ان قیدیوں کی طرف دیکھکر کہا:—''اے ایشور ا کیا بھی صوریا کے لوگ ہیں ? خاصہ اجھے ادمی ہیں..... اُن بچاروں کی مائیں کہاں ہوتکی' کیا کہتی ہوتکی ؟ آنہیں کیا پتد اُن کے بیٹے کہاں ہیں ؟'' कपदे कठाए. उनके नीचे से उसने एक मामवसी निकाली और घर के छोटे से उपासनाघर के सामने उस बत्ती को जलाकर दुआ मौँगनी शुरू की.

ठीक उस समय ड्रागःमान के मैदान में तावें गोले उगल रही थीं. नवन्वर 1885 की चौथी तारीख थी.

[2]

बुढ़िया तसेना ने उस रात को एक सपना देखा:— प्रवहत बढ़ा बादल है, और एक फीज उस बादल के अन्दर घुसी चली जा रही है. स्तायान भी उसी कौज में है. तसेना ने सपने ही के अन्दर डरकर कहा:—"ऐ माता मेरी ! ऐ प्रमु ईसा की माँ ! मेरा जी डरता है !"

बादल गरजा, आसमान में विजली कड़की, धरती हिल गई—जंग की सी हालत मालून हुई. उसी बादल में स्तोयान गुम हो गया. कहां चला गया ! अब क्या होगा !

माँ काँपकर जाग बठी. काठरी में घुर अँधेरा था. बाहर ठन्ढी हवा सन-सन कर रही थी. लड़ाई का नक्शा माँ की आँखों के सामने से फिर रहा था.

माँ ने कहाः—"ऐ ईश्वर ! ऐ प्रभु ! ऐ ईसा मसीह ! उसकी रक्षा करता.....प्रभु इसा की मां मेरी ! स्तायान पर दया करना!"

उसके बाद सुबह तक बुढ़िया तसेना को मींद न आई. सुबह होते ही बह गाँग के सयाने बूढ़े पीटर के पास गई. उसने पीटर से पूजा — 'चचा पीटर ! सपन में बादल दिखाई देने का क्या मतलब होता है ?"

पीटर ने जवाब दिया:—"बादन दा तरह के हाते हैं. कुछ बादन वह हाते हैं जो बरसते है और कुछ बादन वह हाते हैं जो बारिश को इधर-उत्तर छिटका देते हैं. तसेना! तुमने सपने में किस तरह का बादन देखा था ?"

तसेना ने अपना सपना वयान कर दिया. बूढ़ा पीटर कुछ देर सांचता रहा. उसे याद नहीं आ रहा था कि उसकी पायों में उस तरह के बादन का जिक है या नहीं. पर जब उतन तसेना के चेट्ट पर डर आर घवराहट देखी और यह देखा को तसेना टिकटिका जगाए उसका आर देख रही है, तो उसने तसेना पर दया करके कहा:—'रसेना ! फिक मत करा, तुन्हारा साना अच्छा साना है. बादल का मतलब यहाँ सन्देश स है. तुन्हें स्तोयान की विद्वां मिनेगी."

बुदिया का चेर्रा चमक उठा.

हैं दिन के बाद एक वालिटियर ने जो स्तीय न का दोस्त या, स्तायान की माँ की स्तायान की एक चिही लाकर दी-स्तीयान उस समय सरावया के कुछ युद्ध के कैदियों की گورے اُٹھائے ، اُن کے توجیے سے اُس نے ایک مہریتی تکالی اور گار کے چھوٹے سے آیاساگور کے سامنے اس بتی کو جلا کر دعا -انگلی شروع کی -

ٹھنگ اس سے 3راگومان کے میدان میں توپیں گولے اگل ہے۔ پھی تھیں ، نومبر 1885 کی چرتین تاریخ تھی ،

[2]

بروهیا تسینا نے اُس رات کو ایک سهنا دیکھا:۔۔

ایک بہت ہوا بادل ہے، اور ایک فوج اس بادل کے اندر گوسی چلی جا رہی ہے استویان بھی اسی فوج میں ہے ۔

قسینا نے سہانے می کے اندر در کر کہا:--اے مانا میری ! لے پربھو عیسی کی ماں ! میرا جی درنا ہے!"

بادل گرجا' آسمان میں بجلی کر کی' دھرتی عل گئی۔۔۔ جاگ کی سی حالت معلوم عوثی ، آسی بادل میں استویان کم ھو گیا ، کیوں چلا گیا ا آپ کیا ھو گا ا

ماں گانپ کر جاگ انہی، کوئوری میں گیپ اندھیراتھا ، باہر ٹینڈھی ھوا سن من کر رھی تھی ، لڑائی کا نقشہ ماں کی آئےہوں کے سامانے سے بھر رھا تھا ،

ماں نے کہ: --(اے ایشور! اے پربھر! اے عیسی مسیم! اُس کی رکھا در ا پربھو عیسی دی ماں مھ می اِ استویان یو دیا کونا!''

أس كے بعد صبح الك روعيا تسينا كو تياد ته أئى .

صمع هرتے می وہ گؤں کے سدائے بورھے پیڈر کے پاس گئی . ' اُس لے پیڈر سے بوچھا:۔۔''چھیا بھٹر اِ سہنے میں بادل دنھائی دینے کا کیا حطلب هوتا ہے 8''

پرتمر نے جراب دیا:۔ ''بادل دو طرح کے دوتے سیں ۔ کچھ ادار را درتے ہوں جو برستے ہدی اور دیچھ بادل وہ ہوتے میں جو ہارہے دو ادھر ادھر چھٹکا دیتے ہیں ! تسدیا ! تم نے سہنے میں کس طبح کا بادل دیکھا تھا آتا''

تسنیانے اپنا مہنا بیان کر دیا۔ بوڑھا پیٹرکچھ دیرتک سوچتا رہا آھے یاد نہیں آ رہا تھا کہ اس کی پونھی میں اُس طرح کے بدل کا ذکر ہے یا نہیں ، پر جب آس نے نسینا کے چہرے پر قر اور گھبراہت دیکھی اور یہ دیکھا کد تسیدا تکتئر لگائے اس کی اُور دیکھ رھی ہے' نو اس نے تسینا پر دیا کر کے کیا:۔۔۔

''نسرنا فکر مت کرو' تمهارا سهنا اچها سهنا هے بادل کا کا مطاب بہاں سندیش سے هے تمهیں استریان کی چتھی ملے گی ۔''

برزهیا کا چهرا چمک آته .

چھ دن کے بعد ایک والمقیقر نے جو ستویان کا فوسمت تیا استریان کی مال دو استویان کی ایک چھٹی الا کو دیں ، استویان اس سے سرویا کے کچھ یدھ کے قیدیوں کو

इनके साथ एक पलटन थी जो हरमानली से आ रही थी. हरमानली में वह तुरकों से लड़ने गई थी. अब वह सो। क्या के मैदान पर जा रही थी जहाँ उसे सर विया वालों से लड़ना था.

रँगरूटों को देखकर गाँव वालों की भीड़ में से एक ने कहा:—"वह देखा, जारजी का बेटा स्वेतको जा रहा है! स्वेतको! ख़ुदा दाफ़िज!"

दूसरे ने कहा:—''वह देखों, रंगल जा रहा है!' तीसरे ने कहा:—''और वह नदलका का बेटा आइवन जा रहा है. आइवन! देखों तम्हारी माँ खड़ी है!'

जल्दी जल्दी में भीड़ में से कुछ ने कुछ रंगहटों को फूल दिये. गालों के ऊपर से आँस् टपकते जाते थे. शब्द आधे मूं ह से निकलते थे और आधे अन्दर ही अन्दर घुटकर रह जाते थे. रंगहट फीज के साथ आगे बदते जाते थे.

इतने में एक लड़की ने चिल्लाकर कहा:—"माँ! यह देखा, भाई जा रहा है!"

श्वाठ बरस के एक लड़के ने जो उसी लड़की के पास खड़ा था ऋपने हाथ रंगरूटों की तरफ़ बढ़ा कर चिल्लाकर कहा:—"स्तोयान भैया!"

माँ ने रोते रोते कहा :-"मेरे बेटे ! मेरे लाल !"

काली आँखों वाला एक सुन्दर तन्दुक्स्त नौ जवान क्रतार में से बाहर निकल पड़ा. उसने अपनी माँ का हाथ चूमा, अपनी बहन और अपने भाई का माथा चूमा, उनसे लेकर कुछ फूल उसने अपनी छाती में लगा लिये एक और नौजवान लड़की ने भी उसे कुछ फूल दिये. उन्हें उसने अपने कानी पर रख लिया. फिर जस्दी से दौड़कर वह क्रतार में जा मिला और सब के साथ गाता हुआ चला गया.

माँ ने दूर से विल्लाकर कहा:—'मेरे लाल ! ख़ुदा डाफिज !"

बहन ने क़रीव-क़रीब बेहोश होते हुये चीख़कर कहा:—''स्तायान !'

उन सब की आवाजें गूँज कर रह गई, स्तोयान बाक्से सिपाहियों के अंदर नजर से ओक्सल हो गया., रँगरूट गहरे कुहरे में दिखाई देने बन्द हो गर.

माँ कुछ देर तक आँखें फाड़ फाड़कर उसी तरफ देखती रही पर अब देखनें की कुछ न था.

नौजवान लड़की ने अपनी चुंदरी का धारीदार पस्ता अपने सर पर डाल लिया.

घर लौटकर स्तायान की माँ बैठी रोती रही. उसने एक पुराना दृटा हुआ सन्दूक साला. उसमें से कुब क्रमीचें और ای کے ساتھ ایک بلائن تھی جو هرمائلی سے آرهی تھی ۔ عرمائلی میں وہ تردوں سے لولے گئی تھی ، آب وہ صوفیا کے میدان پر جا رهی تھی جہاں اسہ سردیا والوں سے لولہ تھا ،

رنگروٹس کو دیکھ کو گاؤٹ والوں کی بھھو میں سے ایک نے کہا:

کہا:

**رہ دیکھو' جارجی کا برگا سوئیتکو جا رہا ہے 1 سوئیتکو اِ خوالہ کے اِ سوئیتکو اِ

دوسرے نے کہا:-"رہ دیکھو" راکل جا رہا ہے !"

تیسرے نے کہا: —''اور وہ ندلکا کا بیٹا آئیوں جا رہا ہے۔ آئیوں ! دیکھو تمھاری ماں کھڑی ہے !''

جلدی جلدی میں بھیۃ میں سے اچھ نے دچھ رنگروٹوں کو پھول دیئے ۔ گاہں کے اوپر سے آنسو قبعتے جاتے تھی ، شید آدھ منه سے نعلام سے اور آدھ اندر بھی اندر تھٹ در رہ جاتے تھے ، رنگروت فوج کے سانھ آگے بڑھتے جاتے تھے ،

اِتلے میں ایک لوکی فے چلاکو کہا: ۔۔ "ماں ا یہ دیکھو" بھائی جا رہا ہے!"

آئھ ہرس کے ایک لوکے نے جو اُسی لڑکی کے پاس کیڑا تھا اپنے ھانہ رنگروڈوں کی طرف ہڑھا کر چلا کر ٹھا: —"استویاں بییا !"

ماں نے روتے روتے کہاہ۔۔''مدرے بیٹے ! مدرے لال !''
کالی آنکھوں والا ایک سندر تدورت نوجوان قطار میں سے
پاہر نکل پڑا، آس نے اپنی ماں کا ہانھ چوما' اپنی بھی اور اپنے
بہائی کا مانھا چوما' ان سے لیے کر کمچھ پھول اس نے اپنی
چھائی میں لگائے ، ایک اور نوجوان اڑکی نے بھی اسے کمچھ بھول
دیئے ، انھیں اُس نے اپئے کانوں پر راہ لیا ، پھر جلدی سے دور
کو وہ قطار میں جا الا اور سب کے سانھ گانا ہوا چلا گیا ،

ماں نے دور سے چلا کو کہا۔۔۔''میرے لال 1 خدا حافظ ا''
بہن نے فریب قریب انہرش ہرتے ہوئے چینے کر کہا:۔۔۔
''استویاں 1''

اُن سب کی آوازیں کونیج کر رہ کئیں ۔ استویاں بادی سیامیوں کے اندر نظر سے اوجہل ہو گیا ، رنگررت کہرے کہرے میں دکیائی دینے بند ہو گئے ،

ماں کچھ دیر تک آنکھیں پھاڑ پھاڑ کو اُسی طرف دیکھتی رھی پر آب دیکھلے کو کچھ نے تھا ۔

قوجوان توکی نے اپنی چندری کا دھاریداریلہ اپنے سر پر ال لیا .

گھر لوت در استریان کی ماں بیٹھی روتی رھی۔ اُس نے ایک پرانا ٹوٹا ہوا صدرق کھوڈ ۔ اس میں سے کچھ قمیضیں اور

क्या वह घर आ रहा है ?

श्री आइवन वाजीव

[1]

सन् 1885 की बात है. नवम्बर की चौथी तारीख़ थी. जैग जारी थी. डागोमान के मैदान में तोपें गोले उगल रही थीं.

बस्सारिया के बेतरेन गाँव में कुहरा छाया हुआ था. चारों तरफ नमी थी, हल्की-हल्की बारिश हो रही थी. गाँव के कोपड़े, मालूम होताथा, दबे जा रहे हैं. गिलयों में कीचड़ थी. फिर भी लाग जगह-जगह जमा थे और कुछ चिन्ता के साथ बातें कर रहे थे.

गाँव के अन्दर दो छोटी छोटी सराएँ एक दूसरे के आमने सामने थीं. दोनों के बीच की सड़क पर से बैलों के इकड़े और देहाती घोड़ेगाड़ियाँ फीजी रसद के सामान से जदी हुई चूँ चूँ करती चली जा रही थीं.

उन्हीं छकड़ों श्रीर गाड़ियों के बीच बीच से नए .फीजी रंगस्ट जा रहे थे. उनमें से कुछ लम्बे-सम्बे फीजी श्रोवरकाट पहने हुए थे. कुछ मंड़ की खाल के काट पहने हुए थे. बहुत से अपने मोटे मोटे कम्बलों की पिछीरियाँ बनाकर उनसे अपनी सरदी दूर कर रहे थे. पैरों मे ऊँचे ऊँचे जूते थे. कन्धों पर बन्द्कें रखी थीं, जिनके नीचे कारत्से लटक रही थीं. बन्द्कों के पीछे बाले सिरे से थैले लटक रहे थे. थैलों में काफी सामान था. सड़क पर घुटनों घुटनों कीचड़ थी. सरदी काफी थी. बीच थीच मे श्राले भी पड़ रहे थे. किर मी यह सब रंगस्ट हँ सते गाते चले जा रहे थे.

एक सराय के दरवाजे पर कुछ किसान, कुछ मुमाफिर और कुछ फीजी अफसर खड़े हुए इन नी नवान रंगहरों को ज्यान से देख रहे थे.

एक तरफ गाँव की कुछ औरतें, कुछ लड़िक्यां भीर इछ बच्चे भी खड़े थे. इनमें से अधिकतर चीथड़े छपेटे एए सरदी, से ठिद्धर रहे थे. उनके चेहरों पर खून की लाली कलक रही थी.

यह लोग इसितये खड़े थे कि जो नौजवान रंगरूट उनके गाँव से भरती होकर जा रहे थे उन्हें आख़री बिदाई दें.

यह सब रॅंगरूट सोकिया जा रहे थे.

کیا رہ گھر آ رہا ھے ?

شرى أنهون وأزور

[1]

سن 1885 کی بات ہے . نومیر کی چوتھی تاریخ تھی ، جنگ جاری تھی . تراگومان کے میدان میں توپیس گوا۔ اگل رہی تھیں ،

بلغاریہ کے ریٹریری گؤں میں کہرا چھایا ہوا تھا ، چاروں طوف ٹمی بھی ، گؤں کے حجورف ٹمی بھی ، گؤں کے جھوٹیوں کا معلوم ہوتا تھا دیے جا رہے ہیں ، گلموں میں کیجو تھی ، پھر بھی لوگ جگہہ جگہہ جمع تھے آور کچھ چنکا کے ساتھ باتیں کو رہے تھے .

گڑوں کے اندر دو چھوٹی چھوٹی سرائوں ایک دوسرے کے آمنے سامنے تھیں ، دونوں کے بیچ کی سڑک پر سے بھارں کے جھکڑے اور دیہاتی گھوڑے گڑیاں فوجی رسد کے سامان سے ادی ھوٹی چوں چوں کوتی جلی جا رھی تھیں ،

أنهاں چهكراں اور گريس كے بوج بوج سے نئے نوجى اوركوك جارف آنى اس سے كنچه لمبه لمبه نوجى اوركوك بهنے هوئے ته . أن ميں سے كنچه لمبه لمبه نوجى اوركوك بهنے هوئے ته . يہد موق كياس كى بنجه ورياں، بنا كو ان سے أينى سردى دور كو رقے ته . يہروں ميں اونجے اولنچے جوتے ته . كندهيں يہ بندوقيں ركبى تهيں جن نے نيچے كرقوسهں لكك رقم تهيں . بادوقيں ركبى تهيں جن نے نيچے كرقوسهں لكك ته . تهياس دي كئى سامان تها . سرك يو گهتارى كهتارى كيدچ تهى . سردى كانى سامان تها . سرك يو گهتارى كهتارى كيدچ تهى . سردى كانى تهى ، يبچ بيچ ميں اوا ميى يہ سب رنكورت هاستے گاتے چلے جا

ایک سرائد کے دروازے ہر تھے کسان کچے مسافر اور کھے فوجی اسر فیزے ہوئے اِن نوجوان رنکروٹوں کو دھان سے دیکھ رہے تھے .

ایک طرف قان کی کنچہ عررتیں' کنچہ لڑکیاں اور کنچ، بنچے
بھی کوڑے تھے ۔ اِن میں سے ادھک تر چینھڑے اپیٹے ہوئے
سردی سے ٹیٹھر رہے تھے ۔ اُن کے چھروں پر خون کی قالی جھاک
دھے تھے ۔

ی ای ایل اس الله کوره آنه که جو لوجوان رفکروگ آن کے گؤں سے بهرانی دیں و گؤں سے بهرانی دیں و گؤں سے بهرانی دیں و کہ به بهرانی دیں و کہ بهرانی دیں و کہ بهرانی دیا ہے کہ بهرانی دیا ہے کہ بہرانی ک

कौमी एकता को कायम किया था उसकी बुनियादें अभी काफी मजबूत न हो पाई थीं. सिंद्यों की कमजोरिया एक पीढ़ी के अन्दर इतनी आसानी से नहीं मिट सकतीं. सिंद्यों की पुरानी दुशमिनयाँ भी अभी कहीं कहीं दिलों में पड़ी सुलग रही थीं. जिन बद्दू क़त्रीलों को सिंद्यों से एक तरह की मनमानी करने का आदत पड़ गई थी, जो किसी मरकजी ताकत (केन्द्रीय शक्ति) के अधीन हो कर रहना, या किसी को टैक्स देना जानते ही न थे, इन सब के दिलों में फायदेमन्द सामाजिक और राष्ट्रीय बन्धनों की कद्र अभी पूरी तरह न जमी थी. इसके अलावा इस तरह के खुदरारज और मौकापरस्त लोगों की भी किसी देश या किसी जमाने में पूरी तरह कमी नहीं होती जो अपने चन्दरों जा फायदों के लिए अपने देश के हितों के खिलाफ गैरों की साजिशों में मददगार हो सकें।

विक्री अगले नम्बर में]

[باني اگلے نمبر ١٩٠٠] .

700 PAGES, 82 ILLUSTRATIONS 2 COLOURED MAPS

"CHINA TODAY"

PRICE

BY PANDIT SUNDARLAL

Rs. 7. 50.

A vivid narration of the glorious and wounderful achievements of New China... A ricture of China which is both convincing and authentic, the best book that has come out so far on New China is the English language ... the most objective in approach and comprehensive in treatment.

—National Herald, Lucknow.

Highly informative...throws vivid light on conditions obtaining in that country...a book which deserve to be wide'y known.

-Leader, Allahabad.

Encyclopaedic...characterized by acute observation of detail as well as by, instinctive grasp of thes fundamental perspective...To read it is veritably like accompanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New China.

—Blitz, Bombay

A mine of information which gives a picture of China as nothing else dose...the best guide to New. China...Those who would like to understand what is happeing in New China can do not better than to study it

—Bharat Jyoti, Bombay

The wealth of information it gives on China rew and old...makes fascinating reading...js comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs.

—Indian Express, Madras

China Today is an eloquent tribute to his (Pandit Sundarlal's) shrewd understanding of men and matter... brings to the lighty mighty endeavour of the Chinese People to rebuild their great nation on firm new foundations or a tomorrow which is theirs.

—Vigil, Delhi

व्यय की कल्बर, सभ्यता और इसलाम

[3]

उत्तर के बहुत से अरब सूबे अभी तक रोभी सल्तनत के हिस्से बने हुये थे. इन सूत्रों के भरवों में इसलाम का प्रचार करने के लिये मोहम्मद साहब सैकड़ों प्रचारक भेज चुके थे. रोम के ईसाई बादशाहों की नीति में उस समय मजहबी आजादी की गुंजाइश न थी. राम के उस समय के अत्याचारों और वहाँ की प्रजा की हालत का जिक्र हम एक दूसरी जगह करेंगे. वहाँ के जिन अरबों ने नया धर्म कृबुल किया उन्हें रामी शासकों ने मौत का सजा देनी ग्रह की. मोहन्मद साहब के भेजे हुये पचासी प्रचारकी को उन्होंने फ़ल्ल करवा दिया. वहाँ के ज्यादातर अरबों में इससे नए राष्ट्रीय धर्म के साथ प्रेम और ज्यादा बढा. बहुत से अरब क्रवीलों ने, जो पहले ईसाई इत्यादि थे, बखुशी इसलाम कुबूल कर लिया श्रीर रोमी साम्राज्य की श्रधी-नता छाड़कर मदीने की नई राष्ट्रीय सरकार के साथ श्रपना सम्बन्ध जोड़ लिया. इसी प्रकार अनेक इंसाई यरब क्रवीलों ने भी रोम सं अपना ताल्लुक ताइकर मदीने की श्ररब सरकार के साथ जाड़ना चाहा, मदीने की क्रीमी सरकार और रोमी शहन्शाहियत के बाच युद्ध अनिवार्य (लाजमी) था. मुहम्मद साहबही के समय में युद्ध छिड़ चुका था. वास्तव में यह युद्ध अर्घां की ध र्मिक और राजनैतिक स्वाधीनता का युद्ध था और उसे जीवित रखने के लिए अरबों में राष्ट्रीय एकता की भावना भी काकी पैदा हो चुकी थी.

मीत से कुछ दिन पहले भोहम्मद साहब न रामी साम्राज्य के मुकाबले के लिये शाम की सरहद पर नई कीन भेजने का फैसला कर जिया था. फीन मदीने से बाहर मैदान में पहुँच चुकी थी. माहम्मद साहब श्रापने हाथों से फीन की कमाएडरी का मएडा नीजवान श्रासामा के हाथों में सीं र चुके थे. किन्तु माहम्मद साहब की मौत के कारण इस फीन का जाना क ह गया था.

खलीफा होने के दूसरे ही दिन अबुबक ने फिर से फ़ौज की कमानदारी का फरडा आसामा के हाथों में देकर उसे फौरन उत्तर की ओर बढ़ने का हक्म दिया.

वधर राम के चालाक हाकिमों ने भी माहम्मद साहव की मौत से पूरा फायदा उठाने की काशिश की. पूरे अरव में, और खासकर उन सूबों में जो इससे पहले राम या हरान के मातहत रह चुके थे, मदीने की नई सरकार के खिलांक साजिशों का एक जाल विका दिया गया. चारी मार से बसाबतों की खूबरें आने लगा, यहाँ तक कि पैसन-वर्श के कई नए दावेदार खड़े हो गए।

- 32 बरस की कठिन तपस्या और कुर्वानियों के जरिये भोहस्मद साहब ने खलग अलग क्रवीलों की जगह जिस [3]

الو کے بہت سے عرب صوبے ابھی نک رومی سلطانت کے حصب بنے ہوئے تھے ، اُن صوروں کے عربوں میں اِسلم کا درجار کرلے کے ائے محصد عاهب سیکزوں زرچارک بھیے چکے تھے ، ووم کے عیسائی بادشاعوں کی نیتی میں اس سے سدھی آزادی کی گنجائش نه آهی . روم نے اس سے کے انیاچاروں اور وہاں کی، پرچا کی حالت کا ذار هم ایک دوسری جگه ترین کی . وهاں ہے جن عربوں نے نیا دعوم قبول کیا اُنہیں رومی شاسموں نے موت کی سؤا دینی شروع کی ، محمد صاحب کے بھیجے ہوئے یتجاسوں پرچارکوں کو انہوں نے فکل کروا دیا ، وهاں کے زیادہ تر عریوں میں اِس سے نئے رشاری دورم کے ساتھ پریم اور وہادہ بڑھا۔ بہت سے عرب دبران نے جو عیسائی ادیادی تیم بخوشی اسلم قبول فر ایها اور رومی سامراج دی ادمینتا چهرو کر مدینه دی نگی راشاریم سرکار کے سابھ اپنا سمیدند جور لیا ۔ اِس درکار انیک عیسائی عرب فبیلیں نے بھی روم سے اپنا تعاق تہر کو مدینے کی عرب سرکار کے ساتھ جوزنا چاھا ۔ مدینے کی فرسی سرکار رومی شهنشاههت کے نهیم یده انهواریه (الزمی) نها محمد صاحب ھی کے سم میں یدھ چھڑ چکا تھا ۔ واسٹو میں یہ یدھ عربوں کی دھارمک اور راجعهتک سوادھینتا کا یدھ نھا اور اسے جھوت ردینے کے لئے عربوں میں راشتریہ ایکت دی بھاؤنا بھی کافی یہدا

موت سے کنچھ دن پہلے محمد صاحب نے رومی سامراجھ کے مقابلے نے لئے شام کی سدحد پر نٹی فوج بھیجنے کا دیصلہ کو لیا بھا ، فوج حدیثے سے باعر حیدان میں پہنچ چکی تھی ، محمد صاحب اپنے ہانھوں سے فوج کی کمانڈوری کا جھنڈا فوجوان عوثامہ کے ہاتھوں میں سونپ چکے تھے ، دنئو محمد صاحب کی موت کے کارن اِس فوج کا جانا رک گیا تھا ،

حلیفت مونے کے دوسوے عود دان ابوبکر لے پھر سے فرج کی کمانداری کا جہندا عوثامہ کے مانھوں میں دے کر اسے فرأ اتر کی اور بڑھنے کا حکم دیا .

ادھر روم کے چالات حاکموں نے بھی محمد صاحب کی موت سے پورا فائدہ آئیانے کی کوشف کی ، پورے عرب میں' اور خاص کو آن صوبیں میں' جو اس سے پہلے روم یا ایران کے ماتحت رہ چکے تھے' مدیاء کی نئی سوار کے خلاف سازشوں کا ایک جال بچھا دیا گیا ، چاروں اور سے بغاوتوں کی خبریں آنے لکوں' بہاں تک که یقفوی کے کئی نئی دعویدار کیو۔ هو گئے ،

23 برس کی کٹھن ٹیسھا اور قربانھیں کے ذریعہ سحمد صاحب نے الگ الگ قبیلیں کی چکھ جس चार्यक मोहम्मद साह्य के सबसे शुक्त के अनुयाईयाँ और बहुत बढ़े भक्तों में से थे. मोहम्मद साह्य की ध्यारी बीबीआयशा के वह पिता थे. इसलाम कुबूल करने के पहले वह अरथ के एक बहुत बढ़े धनी सीदागर थे. इसलाम कुबूल करने के बाद उन्होंने अपनी सारी जायदाद इसलाम के प्रचार, मुसलमानों की ख्विस्मत और उन मुसलमान गुलामों को खरीद खरीद कर आजाद कर देने में खर्च कर दी थी जिन्हें उनके, पुराना मजहब मानने वाले आका उनके मुसलमान हो जाने के सबब तकलीफें पहुँचाया करते थे.15 अपने त्याग, अपनी इंश्वर भक्ति, अपनी दूरन्देशी, अपनी कृवलीयत और अपने चलन की पाकीजगी के सबब अबूबक अपने सब साथियों के आदर के पात्र थे. कुछ इतिहासकारों के मुताबिक मोहम्मद साहत के बाद अरब और इसलाम के इक में इससे बेहतर चुनाव न हो सकता था.

जिस दिन मोहम्मद् साहब का शरीर धरती को सौंपा
गया उसी दिन मदीने की आलीशान ममजिद में जो
मुसलमान जमा हुए उन्हें न । ज पढ़ाने के लिये धाबूबक
मिम्बर पर पहुंचे. मुमलमानों की जमाधात को नमाज
पढ़ाना इसलाम के इतिहास में हमेशा रहनुमाई की निशानी
सममी गई है. नमाज से पहले मौजूद लोगों ने एक धाबाज
से धाबूबक को 'खलीका' मानना मंजूर किया. धाबूबक ने
खाई होकर यह सीधी सादी तक्करीर की—

"ऐ लोगो ! मैं तुम सबसे बेहतर आदमी नहीं हूँ, फिर भी अब मैं तुम्हारे ऊपर हाकिम हूँ. अगर मैं मनाई करू तो मेरी मदद करना और अगर बुराई करूँ तो मेरी बुराई बता देना. हमेरा सच के पीछं चलना. यही वकादारी है. मूठ से बचना क्योंक उसमें दगा है. तुममें से जो कम-जोर और दुखी है वह उस वक्त तक मेरे जिये ताक्रतवर होगा जब तक कि मैं उसके दुखों को दूर न कर सकूँ; श्रीर तुममें जो बलवान श्रीर जालिम है वह उस बक्त तक मेरे लिए कमजोर होगा जब तक कि, यदि अल्लाह ने चाहा तो, मैं उससे वह मब न ले लूँ जो उसने अत्याचार द्वारा दूसरे से जिया है. अल्जाह की राह में कोशिश करना न छोदना. जो जुल्म करेगा उसे बेराक अल्लाह नीचा दिखायेगा. जब तक मैं श्रल्लाइ श्रीर उसके रसूल की हिदायतों के मुताबिक चलूँ तुम भी मेरा हुक्म मानना श्रीर जहाँ कहीं में उनकी हिदायतों पर श्रामल न करू तम मेरा हक्म न मानना, श्रव नमाज के लिये उठ खड़े हो, भरताह तुम्हारे साथ है."

अबूबक की इस्र इस क्ल साठ बरस की थे.

ابوبکو محمد ضاحب کے سب سے شہوم انہوں کے انہوبائیوں اور بہت بڑے بهکتوں میں سے تھ ، محمد صاحب کی بیاری بھوی عائشتہ کے ولا پتا تھ ، اسلم قبول کرنے کے بہلے ولا عرب کے ایک بہت بڑے دھلی سوداگر تھ ، اِسلام قبول کرنے نے بعد انہوں نے اپنی ساری جانداد اِسلام کے پرچار مسلمانوں کی خدمت اور اُن مسلمان غلاموں کو خرید خریدکر آزاد کر دیتے میں خرچ کر دی تھی جلهیں اُن کے پران منہ سافتے والے آفا ان کے مسلمان ہو جانے کے سبب سے نکایفیں پہنچایا کرتے تھ 15 اپنے نیاگ اپنی ایشور بهتی اُن کی درراندیشی اپنی داہدت اور اپنے چلی کی باکیوگی بهتی اُن کی سبب ابوبکر اپنے سب ساتھیوں کے آدر کے پاتر تھ ، کچھ کے سبب ابوبکر اپنے سب ساتھیوں کے آدر کے پاتر تھ ، کچھ ختی میں اُس سے بہتر چناو تہ ہو سکتا تھا ،

جس دن محده صاحب کا شریر دهرتی کو سوپلا گیا آسی دن مدینے کی عالیشان مستجد، میں بجو مسلمان جمع هوئے انہیں نماز پڑھائے کے لئے ابوبکر ممبر پر پہنچے ، مسلمانوں کی جماعت کو نماز پڑھانا اسلام کے انہاس میں همیشہ رمنمائی کی نشانی سمجھی گئی ہے ، نماز سے پہلے موجود لوگوں نے ایک آواز سے ابریکر کو تخلیفه ماننا منظور کیا ، ابوبکر نے کھڑے ہو کر یہ سیدھی سادی تقریر کی —

''الے لوگو ا میں تم سب سے بہتر آدمی نہیں ہوں' پھر بہی آب میں تمھارے اور حام ہوں اگر میں بھلائی کروں تو مہری مدن کونا اور اگر برائی کروں تو مہری برائی بتا دینا ، ممیشہ سیج کے پیچھے چلنا یہی وفاداری ہے ۔ جھوت سے بچنا کیونکہ اُس میں دفا ہے۔ تم میں سے جو کمزور اور دکھی ہے وہ اس وقت تک مھرے لئے طاقتور ہوگا جب تگ کہ میں اُس کے داہر کو دور ثمہ کو سکوں؛ اور تم ویل جو بلوان اور ظالم ہے وہ اُس وقت تک مہرے لئے کہزور ہوگا جب تک که میں اُس کے نے جاما تو' میں اُس نے انواچار مورازا دوسرے سالھ ہے، الله کی راہ میں کوشش کرتا نم چھوڑ نا جو ظلم اور کا اُس نے الله جو ظلم اور جہاں کی ہدایتیں کے مطابق چلوں تم بھی میں اُس کے حکم مائلا اور جہاں کہیں میں اُن کی ہدائتیں پر عمل نہ کروں تم مھرا حکم نہ مائلا اور جہاں کہیں میں اُن کی ہدائتیں پر عمل نہ تمارے ساتھ ہے۔

ابوبکر کی صر اُس وقت سائهه برس کی تھی۔

^{15,} Preaching of Islam, T. W. Arnold, p. 10.

के पास हम सब को लीटकर जाता है.' जगर वे सब लोग इसलाम कुबूल कर लें तब चनसे वे तीनों छड़ियां मांगना जिनकी वे पूजा करते हैं. इनमें एक तमरिश्क की है जिस पर सफ़ेड और पीली चित्तियां हैं. दूसरी बेत की तरह गिरहवार है और तीसरी आवनूम की तरह काली है. इन तीनों छिदयों को बाहर मैदान में लाकर जला डालना,"

अयाश लिखता है कि उसने पैग्रम्बर की आजा का ठीक ठीक पालन किया. शान्ति और विनय के साथ अपने धर्म का प्रचार किया और कुछ दिनों में ही यमन के सब ज्ञागों ने नया मजहब क्ष्युल कर लिया.

शह के दिनों में अनेक प्रचारकों के नाकामगाव रहने. प्रसीवतें मेलने और मारे जाने का भी जिक आता है, नेकिन जिस अधिक पाक और अधिक सरल धार्मिक वेश्वास को और जिस ऊँचे सामाजिक संगठन को इसलाम । अरबों में पैदा किया उसकी क़द्र लोगों के दिलों में ादती चली गई, भीरे भीरे मोहम्मद् साहब की जिन्दगी, में ी करीब करीब सब अरब क्षत्रीलों ने नए मजदब को कुबून हर लिया. मदीने की बढ़ती हुई क़ौमी ताक़त और उमा के ताथ साथ अलग अलग कवीलों की धरे धीरे इस्ती हुई ंहति ने भी इसलाम के प्रचार में बहुत बड़ी मदद दी.

मोहम्मद साहब एक मामूली रारीब घर में पैदा हुए ा. अपनी मौत से पहले वे समूचे अरब के बादशाह थे. नकी बादशाहत संसार में एक अनोखी और नए ढङ्क की ादशाहत थी. श्ररव में नए मजहब की उन्होंने बुनियाद ली और अल्लाह के रसूल की उन्हें पदवी मिली, इस दशाइत को न उन्होंने अपने पूर्व तो या बुजुर्गी से हासिल ज्या था और न इसे अपने खानवान में जारी रम्बने का जनका विचार था. उनका देहानत होते ही लोगों को इस त की किक हुई कि मुसलमानों की रहनुवाई और अरव । नई क़ौमी सरकार को चलाने के लिये अब क्या तजाम किया जाय ? दूसरा रसूले खदा ता कांई हा न इता था लेकिन मदीने की गई। के लिये भाहम्मद साहब वारिस चना जाना भी जरूरी थां. कुछ सलाइ-शबिरे के बाद, जिसकी तफ़ मील में जाना हमारे लिये ह्यी नहीं है. मदीने के खास खाम लोगों ने जमा हो कर. नमें अनसार और मुहाजिर दोनो शामिल थे, एक राय श्राबुचक को माहरमद साहब का बारिस चुना और 'लीफतुर रसूल' यानी रसूल के खत्रीका (प्रतिनिधि) की तयत से अबुक्क ने अरवों की इस नई क़ौनी ताक़त बाग डोर अपने हाथों में ली.

ك يليين هم سميكو الوقائل جالا هـ؛ اكر وحسب لوك أسام قنول كورلين الله الله وم تيلوں چهرياں مانكنا جن كى وم يوجا أرق الله مين سے ايک نموشک کي هے جس ير سفيد اور

یعلی چلیاں هیں . دوسری بیت کی طرح گرددار فے اور تهسری أهنوس مكى طرح كالى ه. إن تينون جهزيين كو باعر ميدان مين

لائر جلا تالنا ."

عياهم الميتا هد كد اس ذر بيدمر كي الياس كا لهيك، دالي کھا ، شائلی اور وتیٹے کے ساتھ اپنے دھرم کا پرچار کیا اور کنچھ دنوں میں هی يس كے سب اوكوں نے نيا مذهب قبول کو لیا .

شروع کے دنوں میں انیک پرچاردوں کے قاکامین رهنے مصهبتیں جهدلله اور مارے جانے کا بھی ذار آنا فے لیکن جس المعک یاک اور ادمک سرل درار ک وهواس دو اور جس اوسعے ساماجک سنکتین دو اسلام نے عربوں میں یون کوا اس کی قدر لوگوں کے داوں میں بوعلی چلی گئی ، دهیوے دهيره بحدد صاحباني زندكي مين هي قريب قريب سبعرب قبیلوں نے نئے مذہب کو قبول کر لیا ، سرینے کی بچھتی ہوگی قرمی مااقت اور اسی کے ساتھ ساتھ انگ اگ فیدارں ای دھورے دعورے ڈرائٹی دوئی سنگھٹی نے بھی اِسلام کے پرچار میں بهت بری مده دی .

[2]

معدد ماهب ایک معمولی غریب گهر میں پیدا هواء تھ . اپنی موت سے بہلے رے سموجے عرب کے ہادشاہ تھ . أن كى بانشاهت منسار وراك انواهي اور فله نعلك كي دانساهت تهيء عرب میں تئے مذہب کی انہوں نے بندان رکھی اور الله کے رسول کی انهیں پدری ملی . اِس بادشادت کو تم انهوں نے ایم پرروجوں یا بزرگوں سے حاصل کیا نها اور نه ایے اپنے خاندان سیں جانی ركها على هي أن كا وچار اوا . أن كا ديهانت عرق هي لوكون كو ايس یات کی فکر هوئی که مسلمانوں کی رهامائی اور عرب نی نگی قومی سرکار کو چلانے کے لئے اب کیا استظام کھا جائے ؟ دوسرا رسول حدا دو کرئی نه دو سکتا تها لهکن سدیلم کی گدی کے الم محمد صاحب کا وارث چنا جانا بھی ضروری تھا ، کچھ ملاے مشورے کے بعد جس کی تعصیل میں جایا عمارے لئے ضروری نہیں ہے ، دینے نے حاص داص اوکوں نے جمع عوار ، جن میں انصار اور متعاجر دونوں شامل نے ایک رانے تھ ابوبکر كو سعمت صنحب كا وارث چنا اور الحديثة الرسول في يعنى رسول کے خلیقہ (پرتیندھی) کی حیثیت سے ابوبکر نے عربوں کی إس نئى قومى طافت كى باك دور أين ماتهون مين لى .

ė.,

कर लिया. मोहम्मद साहब ने उसे अपने कवींले में आंकर प्रचार करने की हिदायत दी. तुफैल को शुरू में कुछ नाउम्भीदी हुई, उसने मदीने वापस आकर मोहम्मद साहब से कहा- "बन्दास हठी हैं, आप उन्हें बददुका दीजिये." मोहम्मद साहब ने ईश्वर से दुआ की-' ऐ अल्लाह ! बनूदास को सच्चा रास्ता दिखा." उन्हों ने तुफैल को दिलासा श्रीर हिम्मत दिलाकर धीरज श्रीर शान्ति से श्रपना काम जारी रखने की सलाह दी। इस बार एक और मित्र तफैल के साथ था। इन लोगों ने एक एक घर जाकर शान्ति के साथ नए मजहब का प्रचार किया, सन छै हिजरी तक बनुदास क्रबीले के ज्यादातर लोगों ने नए मत को मान लिया. इसके श्रीर दो बरस बाद परे कबीले ने अपने प्राने बुतों की पूजा को छोड़कर इसलाम कुबूल कर लिया. तुफैल ने श्रव लकड़ी के उस लहे की, जिसकी उस क्रवीले के लोग देवता सममकर पूजा करते थे, सबकी रजामन्दी से आग लगा दी." 14

यमन सूबे के इसलाम कुबूल करने की कहानी श्रीर भी दिलचस्प है. इटन साद लिखता है कि मोहम्मद साहब ने श्रयाश इटन श्रबी खी श्रितिल मखजूमी नाम के एक शख्स के हाथ वहां के हिमयार क्रवीले के कुछ लोगों के पास एक खत भेजा जिसमें इसलाम के खास खास उसूलों की तरफ उनकी तवज्जह दिलाई श्रीर उन्हें नया मजहब कुबूल करने की दावत दी. चलते समय माहम्मद साहब ने श्रयाश से कहा—

"जब तुम पहुंचो तो रात को उनके शहर में दाखिल न होना । सुबह होने तक शहर के बाहर ही ठहरना. सुबह श्रद्धी तरह नहा धाकर दो रकश्रत नमाज पढ़ना श्रीर अल्लाह से दुआ माँगना कि वह तुम्हें अपने मिशन में कामयाथी दे और तुम्हारी दिकाजत करे। फिर अपने दाहिने हाथ से मेग खत उनके दाहिने हाथ में देना. वे उसे ले लेंगे. फर कुरान की श्रद्धानवीं सूरत की श्रायतें उन्हें पदकर सनाना. जब खत्म कर चुका तो कहना-"मोहम्मद ने इसपर विश्वास किया है श्रीर मैंने भी विश्वास किया है.' अल्लाह चाहेगा हो तुम उनकी हरशङ्का का समाधान कर सकांगे. अगर वे कोई बात किसी गैर जबान में पूछें तो उनसे तरजुमा करा लेना और उनसे कहना 'मेरे लिये एकं श्रल्लाह बस है. मैं उमा की भेजी हुई किताव में विश्वास करता हूँ. मुझे इन्साफ करने का हुक्म दिया गया है. ऋहाड ही हमारा श्रीर तुम्हारा रव्य है. हमारे कर्मों का फज़ हमें मिलेगा और तुम्हारे कमीं की तुम्हें. हममें और तुम में काई भगवा नहीं है. अल्लाह हम सबका मिला देगा और उसी برچار کولے کی هدایت دی ، طعیل کو شروع میں کچے برچار کولے کی هدایت دی ، طعیل کو شروع میں کچے ناامیدی هوئی ، اُس نے مدیلے واپس اَ کر محمد صاحب سے کہا۔ "بنوداس مقبی هیں' آپ انهیں بدعا د بجئے ۔ " محمد ملحب نے ایشور سے دعا کی۔" اے الله! بنوداس کو سچا استه دکیا ۔ " اُنهوں نے طفصیل کو دالسا اور همت دالا کر دهیوج ور شائقی سے اپلا کام جاری رکھئے کی صالح دی ، اِس بار ایک ورمتر طفیل کے ساتھ تھا، اُن اوگوں نے ایک ایک ایک گور جاکر شانتی کے ساتھ نئے مذھب کا پرچار کیا ، سی چھ هجری تک بنو ور دو برس بعد پورے قبیلے نے اپنے برائے بتوں کی بوجا کو ور دو برس بعد پورے قبیلے نے اپنے پرائے بتوں کی بوجا کو جس کو اُس تھے کو جس کو اُس تھے کو بیس تھے کو بیس کی رفامندی سے آگ کا دی دوتا سمجھ کر پوجا کرتے تھے کہ اِس کے رفامندی سے آگ کا دی دوتا سمجھ کر پوجا کرتے تھے کہ سب کی رفامندی سے آگ کا دی دا

یمن صوبے کے اسلام قبول کوئے کی کہائی اور بھی داچسپ لے ، ابن سعد اعبتا ہے که محمد صاحب نے عباش ابن ابی مائل مخطوسی نام کے ایک شخص کے ہاتھ وہاں کے ہمیار فبیلے کے کچھ لوگوں کے پاس ایک خط بھیجا جس میں اِسلام کے خاص خاص اصوبال کی طرف اُن کی توجه دالائی اور نہیں نیا مذہب قبول کرنے کی دعوت دی ، چلتے سمے محمد ماحب نے عباش سے کہا۔

"جب تم پرونجو تو رات میں اُن کے شہر میں داخل نے مون ، اخل نے مون ، تک شہر کے باہر ہی تمہرنا ، صبح اچی طح نہا دھو کر دو رکعت ثماز بتھنا اور اللہ سے دعا مائکنا که تمہیں اپنے مشن میں کامیابی دے اور تمهاری حفاظت کرے ، اپنے مشن میں کامیابی دے اور تمهاری حفاظت کرے ، اینکہ به قرآن کی اثبائویں صورت کی آئیس آنهیں بڑے کر سفائا۔ اینکہ به قرآن کی اثبائویں صورت کی آئیس آنهیں بڑے کر سفائا۔ عب ختم کر چکو تو کہنا ۔ استعمد نے اِس پر وشواس کیا ہے اللہ چاہے کا تو تم اُن مور شنکا کا سماندان کرسکو گے ، اگر دے کوئی بات کسی غهر بان میں پرچھیں تو ان سے ترجمہ کرا لینا اور اُن سے کہا میں میں وشواس کونا موں ، مجھے اِنصاف کرنے کا حکم دیا گیا ہے ، اللہ می شمارا 'ور نمهارا دب ہے ، همارے کوموں کا بھل گیا ہے ، اللہ می شمارا 'ور نمهارا دب ہے ، همارے کوموں کا بھل گیا ہے ، اللہ می شمارا 'ور نمهارا دب ہے ، همارے کوموں کا بھل ہیں جھیں ملیگا اور نمهارا ور نمهارا دب ہے ، همارے کوموں کا بھل ہیں جھیں ملیگا اور نمهارا ور نمهارا دب ہے ، همارے کوموں کا بھل ہیں جھیں ملیگا اور نمهارے حموں کا تمهیں ممیں اور تم میں اور تمهارا کور تمهارا کو مقد دیگا اور نمهارا کور تم میں اور تم اس کو مقد دیگا اور آئیں جھکوا تم تو کہ اللہ میں میں اور تم میں اور تم میں اور تم میں اور تم میں اور آئی اس

^{14.} Sprenger, vol. iii, pp. 255-56.

र्जुरन की करूबाद **सम्बद्धा औ**र इसलाम

उसी तरह की कोशिशें की जाती रहीं जिस तरह कि उससे पहले में इन्मद साहब की राजनैतिक निवलता के दिनों में की जाती थीं.11 टी. डब्लू. चारनल्ड ने अपने इस दावे के सबूत में अनेक घटनाओं का जिक किया है जिनमें से एक हम नीचे नक्कल करते हैं:—

जिस तरह मक हे में इजरत उमर इब्न खलाय ने इसलाम धर्म का कुबूल किया था उसी तरह की कहानी मदीने में उमेर इब्न वहब की है. कुरैश ने माहम्मद साहब की गुप्त हत्या क इरादे से उमेर का बहु की लड़ाई क बाद मक के सं मदीने भंजा. इसलाम धर्म के उसूजों के बारे में उमेर की माहम्मद साहब से देर तक तफ़सल में बातचीत हुई. पड़्यन्त्रकारी उमेंग, जो कुरैशों की साजिश से मोहम्मद साहब का कृत्ल करने गया था इस बातचीत के बाद इसलाम का कृत्यल हो गया और उनका भक्त बनकर मदीने से लीटा.

अरब के मुख्तिलिक क्वीलों के जो नुमाइन्दे दूमरे कामों के लिये माहम्मद साहब से मिलने मदान ऑत थे उनके साथ मोहम्मद साहब का बताव इतना अच्छा होता था, उनकी शिकायतों का वह इतन गीर से सुनते थे और इस तरह इन्साक और खूबसूरती के साथ उनके आपसी काओं का निपटारा कर देते थे कि मोहम्मद साहब का गाम जर्दा ही सारे अरब में मशहूर और सर्विषय हा गया और एक महान और उदार शामक की हैसियत से उनका यहा नारों और फैन गया. 12

कृत्रीलों के जो नुमाइन्दे मोहम्मद साहत से मिलने आते थ उनक हाथ के लिखे हुए या जो लोग मौके पर मीजूद हाते थे उनके लिखे अनेक ऐसे वयान अरच के इतिहास में मौजूद है जिनसे पता चलता है कि जो लोग किसी दूसरे काम के लिये आते थे उनपर मोहम्मद साहत की बात जीत का इतना श्रान्छ असर पड़ता था कि वे मुसलमान हो कर लीटते और फिर ख़ुद अपने कृत्रीलों में जाकर इसलाम का प्रचार करते थे. 13

हुदै विया की जंग के बाद जब अरब के दिक्खनी सूबों के लाग मदीने आने जाने लगे यमन के उत्तर से बन्दास कृ बीले के कुछ लोग मोहम्मद साहब से मिलने के लिये आए. मोहम्मद साहब से पहले भो इस कृ बीले के कुछ लोगों में अपनी पुरानी बुनपरस्तो के ख़िज़ाक असलोष और किसी अधिक सच्चे धर्म की खाज पैदा हो चुकी थी. इनमें से अब एक तुफैल नाम के आदमी ने उसलाम कुशून

جس طرح مم میں حضرت عبر ابن خطاب نے اسلام دھرم کو قبول کیا تھا آسی طرح کی کہائی مدیلے میں امر ابن وجب کی قبول کیا تھا کے ارادے سے عمر کو بدر کی لوائی کے بعد مم سے مدیلے بہیمیا ، اِسلام دھرم کے اصوابی کے بارے میں عمر کی محصد صاحب سے دیر تک تعصیل میں بات چیت ہوئی ، شرید کاری عمور جو قریشوں کی ھارہی سے محمد صاحب کو قائل میں بات چیت کے بعد اِسلام کا قائل ہو گیا اور اُن کا بھکت بین کر مدینے سے اوقا .

عرب کے مختلف فیلوں کے جو نمائلدے دوسرے کاموں کے لئے محصد صاحب سے مہنے مدینے آتے تھے اُن کے سات محصد صاحب کا برناؤ اِنفا اُچھا ھوتا تھا اُن کی شکایئوں کو وہ اننے فورسے سناتے تھے اُرر اِس طرح اِنحاف اور خربصورتی کے ساتھ ان کے اُرسی جھکڑوں کا نہارا کر دیتے تھے که محصد صاحب کا نام جلدی ھی سارے عرب میں مشہور اور سرر پریے ھو گیا اور ایک جلدی ھی سارے عرب میں حشہور اور سرر پریے ھو گیا اور ایک مہاں اور ادار شاسک کی حدثیت سے اُن کا بھی چاروں اور مہل گیا ، 12

قبدلوں کے جو ندائلدے محمد صاحب سے ملئے آتے تھے ان کے ھاتھ کے نکھے ہوئے یہ جو اوگ موقع پر موجود ہوتے تھے ان کے نکھے اندیک ایسے بیان عرب کے تابلس میں موجود ہیں جن سے بتہ چلتا ہے کہ جو اوگ کسی دوسرے کام کے لئے آتے تھے ان پر محمد صاحب کی بات چیمت کا اتنا اچھا اثر ہوتا تھا کہ وے مسلمان ہو کر لوٹتے اور پھر خود اپنے قبیلوں میں جا کر اسلام کا پرچار کرتے تھے۔ 13

حدبیها کی جنگ کے بعد جب عرب کے دکھنی ضوبوں کے اوگ مدیلے آلے جائے لئے یمن کے آثر سے بنوداس قبیلے کے کچھ لوگ متحمد صاحب سے بہلے ہی آئے . محمد صاحب سے بہلے بھی اِس قبیلے کے کچھ لوگوں میں اپنی پرانی بت پرستی کے بخلف استوہی اور کسی ادمک سجیے دھرم کی کھرج پیدا ھوچکی بخلف استوہی نام کے آدمی نے اِسلام قبیل ہی ۔ اُرمیں سے اب ایک طفیل نام کے آدمی نے اِسلام قبیل

^{11.} The Preaching of Islam by T. W. Arnold, P. 33.

^{12.} Life of Mohammet by sir William Muir, vol iv, pp. 107-8.

^{. 13.} Sprenger, vol iii and Ibn Sad Section 118.

कोगों दोनों से कहदो कि क्या तुम भी इस इसलाम को . कुबूल करते हो ? अगर वे . कुबूल कर लें तो वे सच्चे रास्ते पर हैं और अगर वे न माने तो उनकी मर्जी ! तुम्हारा काम सिर्फ समका देना है और बस. अल्लाह अपने सब बन्दों के हाल को देखता है. "5

"हमने हर क़ौम के लिये खपासना की खलग अलग बिधियां नियत कर दी हैं जिनपर उस कौम के लोग चलते हैं. इसलिये लोगों को चाहिये कि इस बारे में मगड़ा न करें. तुम बेवल उन्हें खपने रब्ब की ओर बुलाखों, निस्सन्देह तुम्हारा रास्ता सीधा है किन्तु फिर भी खगर वे तुम से मगड़ा करें ता कह दां—'जा कुछ तुम करते हो उसे खस्लाह अच्छी तरह जानता है.'"6

'धर्म के मामले में किसी के साथ किसी तरह की भी जबरदस्ती नहीं होनी चाहिये."7

"निस्सन्देह इमने तुम्हें गवाह के तौर पर भेजा है ताकि तुम लोगों को ख़ुशख़ बरी दो 'और आगाह करदां, ताकि लांग अल्लाह में और उसके रसूल में विश्वास करें, अल्लाह के काम में सहायता दें, अल्लाह की इज्जत करें और सुबह शाम उसकी उपासना करें."8

जो लोग एक बार इसलाम , कुबूल करके उससे फिर जाबे वनके लिये कुरान का साफ हुक्स है—

"पे मोहम्मद् थोड़े सों को छोड़कर बाकी लोगों में तुम्हें सदा विश्वासघातक भी मिलेंगे. उन्हें क्षमा करके उनसे हट जाओं. निस्सन्देह अल्लाह दूसरो पर अहसान करने वालों को प्यार करता है."9

,कुरान की जो सूरत सबसे आर्जार में आई उसमें कहा गया है-

"यदि मुशरिकों में से कोई तुन्हारी शरण में आना चाहे तो उसे अपनी शरण में ले लो ताकि वह अल्लाह के कलाम को सुन सके. इसक बाद भी यदि वह इसलाम कुबूल करना मुनासिब न सममें तो उसे उसके स्थान तक सुराझत पहुँचा दा क्योंकि ये लोग बचारे अज्ञानी ह." 10

इसी तरह की और बहुत-सी आयते नक्ल की जा सकती हैं. "इसलाम का प्रचार करन और आवश्वासी अरबों को अपने धर्म में लाने के लिये हिजरत के बाद ठीक لوگوں دونوں سے کہہ دو که کیا تم بھی اِس اِسلام کو تبول کرتے ہو ؟ اگر وسے قبول کو لیں تو وسے سچے استے استے ہاستے ہو ھیں اور اگر وسے نہ مانیں تو اُن کی موضی! تمهاراً کام صرف سمجها دینا ہے اور بس ، الله اپنے سب بندوں کے حال کو دیکھتا ہے ۔ * 5

دی میں جن فوم کے لئے آباسنا کی الگ الگ ودھیاں ٹیت کو دی میں جن پر اس قوم کے لوگ چلتے میں . اِس لئے لوگرں کو چانئے که اِس بارے میں جھکوا نم کریں . تم کیول اُنھیں اپنے رب کی اور بالؤ' نیسندیہ، تمهارا راستہ سیدھا ہے کنتو پھر بھی اگر رہ تم سے جھکوا کریں تو دیم در—"جو کمچے تم دوتے مو اُسے الله اچھی طرح جائتا ہے' ۔'' 6

''دھرم کے معاملے میں کسی کے ماتھ کسی طرح کی بھی زبردستی نہیں ھونی چاھئے ،' 7

''نسندبهہ هم لے تمهیں گواہ کی طور پر بهیعجا هے نابه دم لوگوں کو خوشخبری دو اور آگاہ کرو' تاکه اوگ الله میں اور اس کے رسول میں وشواس کریں' الله کے کام میں سہائیتا دیں' الله کی عزت کریں اور صبح شام اُس کی آیاسانا دیں ۔'' 8

جو لوگ ایک ہار اِسلام قبول کر کے اُس سے پہرجاویں اُن نے اللہ درآن کا صاف حکم ہے۔۔

''اے منحمن تھوڑے سوں کو چھوڑ کر ہاقی لوگوں میں تمہیں سدا رشواس گہانک بھی ملیں گے ۔ اُنھیں چھما کر نے اُن سے دھٹ جاؤ ، نیسلدیہ اُنلہ دوسروں پر احسان درنے والوں دو ییار کرتا ہے ۔'' 6

قرآن کی جو صورت سب سے آھیر میں آئی اُس میں کہا اُ

"یدی مشرکوں میں سے کوئی تمہاری شون مرس آنا چاھے نو اسے اپنی شون میں لے لو تادہ وہ اللہ کے نام کو سن سکے ، اس کے بعد یہی یدی وہ سالم نبول درنا نامناسب نه سمجھے تر اسے اس نے استہاں سک سورنشت پہنچا دو دیونکہ یہ نرگ ہے چارے اکیائی عیں ۔" 10

اِسی طرح کی اور بہت سی آنتیں مقل کی جا سکتی ھیں۔ ''اِسلام کا پرچار کرنے اور وشواسی عربیں کو اپنے دھرت کے بعد ٹیدٹ

⁵ कुरान 3-19.

⁶ इसन 22-66,67.

⁷ इरान 2-256.

⁸ करान 48-8, 9.

^{9 .}इरान 5-13

^{10 .}इरान 8-6.

² قران .19. 6 فرأن .67 .22.66 7 فران .256-2 8 فران .8.9.48 قران .13-5

अरब की कल्चर, सभ्यता और इसलाम

विश्वस्भरताथ पांडे

[1]

इसलाम के पैराम्बर मोहम्मद साहब ने इसलाम के म्वार में कीन से तरीक़ इस्तेमाल किये और दूसरों को सिके मुताल्लिक क्या दिदायतें दी इस सिलसिले में कुरान की कुछ आयतें गीर करने के क़ाबिल हैं—

"ऐ पैग्नम्बर लोगों को अपने रब्ब की राह में बुलाओं वो अक्सलमन्दी की बातों और अच्छी अच्छी नसीहतों से बुलाओं और जब उनके साथ बहस करो तो इस तरह करों के उनके जी को भाए."

"अगर ने कुछ बेजा बात तुमसे कहें तो उसे सन्न के साथ खोशत करो और सीजन्य के साथ अलग हट जाओ."2

'फिर अगर लोग तुम्हारे समभाने पर भी तुमसे मुँह बोद लें तो उनको तुम्हारा काम केवल साफ साफ समभा रेना है इससे ज्यादा ऋख नहीं."3

"लेकिन अगर तुम्हारे समकाने पर भी लोग न माने ो इमने तुम्हें उनका संरक्षक बनाकर नहीं मे जा है, तुम्हारा हाम तो केवल इतना ही है कि तुम उन तक हमारा सन्देश ।हैंचा हो और बस." 4

उत्पर की आयतें उस समय की हैं जबकि मोहम्मद् ताह्व मक्के में थे और उन्हें और उनके अनुयाइयों का प्रपने धार्मिक विचारों के सबब बेहद यातनाएँ मांगनी पड़ी थीं. जिस समय मदीने में पूरे अरब के अनन्य शासक की देखियत से मोहम्मद साहब की ताक़तं अपनी चाटी पर थी उस समय भी .कुरान की इस नीति में कोई तंब्दीलों नहीं हई.

"आगर वे तुमसे कान्डा करे तो उनसे कहदो कि
मैने और जो भी मेरा अनुयायी है उसने एक घटनाह के
सामने मस्तक मुका दिया है. यही इसलाम शब्द का अथ
है. जिन लोगों के पास इससे पहले के देश्वरीय प्रंथ या
स्लहामी किताबे मीजूर हैं उनसे और खरब के अनपद

* عرب عي كليور سبهيتا اور إسلام

وشوميهر ناته بانتها

[1]

اُسلام کے پیغمبر محمد صاحب نے اسلام کے پرچار میں کون سے طریقے اِستعمال کئے اور دوسروں کو اُس کے متعلق کیا عدانیں دیں اِس ساسلے میں قرآن کی کچھ آئٹیں غور کرنے کے قابل ھیں۔۔۔

''اے پیغمبر لوگوں کو اپنے رب کی راہ میں بالؤ تو عقلمندی کی باتوں اور اچھی اچھی نصیحتوں سے بالؤ اور جب اُن کے کے ساتھ بحدث کور عو اِس طارح کور که اُن کے جی کو بھائے ۔'' 1

و بهر اگر لوگ تمهارے سمجهانے پر بھی تم سے منه مهر ليس تو أن كو تمهارا كام كيول صاف صاف سمجها دينا هے . إس سے زيادة كنچه نهيں . " 3

ا ایکن اگر تمهارے سمجھانے پر بھی لوگ نم مانیں تو هم نے تمهارا کام نے تمهارا کام کی ان کا سفراشک بنا کر نہدں بھنجا ہے تمهارا کام کیال اتنا ہی ہے کہ نم اُن نک همارا سندیھر پہنچا دو اور بس . 4 ن

آوپر کی آئتیں اُس سمہ کی عیں جب که محمد صاحب مکہ میں نہیں اور انہیں اور ان کے انویائیس کو اپنے دعارمک وچاروں کے سبب بےحد باتنائیں بھوگئی پڑیں تھیں مجس سمہ مدیلہ میں پورے عرب کے اننیہ شاشک کی حدثیت سے محمد صاحب کی طاقت اپنی چوتی پر تھی اُس سمہ بھی قرآن کی اِس نہتی میں کوئی تبدیلی نہیں ھوئی م

اکر رہے نم سے جبکرا کریں تو اُن سے نہت دو که میں فی اس فے ایک الله میں فی اور جو بھی میرا انویائی ہے اُس فے ایک الله کے سامنے مستک جهکا دیا ہے ۔ یہی اِسلم شبد کا ارتب ہے ۔ جن نوگوں کے پاس اِس سے پہلے کے ایشوری گرنته یا انہامی کتابیں موجود ہیں اُن سے اُرر عرب کے انہرہ

¹ करान 16-125.

² इसन 10-73

³ इसन 16-28.

⁴ जरान 42-48.

¹ فرأن .125-16

² قرآن .73-10

³ فرأن .28-16

^{42.48،} قرأن

नवस्थर 1957 अ

क्या किस से		संको ।	tenka 	کہا کس سے
शस्त्र की करचर, सम्पता और इसलाम —विश्वनभरनाथ पांडे		193		اً عرب کی کلچرا سبیتا اور اِسلم — سرشومبیر ثاته پائڈے
2 क्या वह घर आ रहा है ? —श्री भाइबन वाजीव	***	201	•••	2. کیا وہ گھر آ رھا ھے 9. -شرف آنیوں داورو
 हिन्दुस्तान की कल्चर और इसलाम —डाक्टर सैयद महमृद 	•••	210	•••	3. هندستان کی کنچر اور اِسلم —قاکلر سید محصود
4. आइंस्टाइन का सिद्धान्त और वेदान्त —डाक्टर भगवानदास		218	•••	4. آننستائن کا سدهانت اور ریدانت - سخاکلر بهکران داس
 सन 1905 का स्वदेशी आन्दोलन – वंडित सुन्दरलाल 		223	•••	5. سن 1905 كا سوديهى آندولن—پلتت سندر ال
6. स्वाइयात मुहिब —श्री 'मुहिब'	1**	231	•••	6. رباعیات محب شری ^ا محب ^ا
7. इस कितावें	•••	237	•••	7. عجه كتابين
8. इमारी राय- -पशिया के गले में .फंदा; हिन्दी और पंजा		239 मत्यद्		8. مناری رائی۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔
—पंडित सुन्दरकालः				سيلتك سندر ال .

t .

popil .

PHES.

17

Carr	24	مله	31317 · 1".	. 5	11	17.	# \$ 14
ाजावद	44	CHE	aleas.	J	يهبو		•

नवम्बर 1957 %

And po

All Sheets

विकारी किल्डिन निमान निर्मान निर्मान

Editorial Board

Dr. Tara Chand M.A., D. Phil. (Oxon)

Mahatma Bhagwan Din

Dr. Syed Mahmud, M.A., Ph.D., Bar-at-Law

Pandit Sundarlal

Bishambhar Nath Pande

to the same will for

Editor-in-Charge

Bishambhar Nath Pande

Asst. Editor

Suresh Ramabhai

Annual Subscription

Inland Rs. 6/Foreign Rs. 10/Single Copy As. /10/- only or 62 N. P.

Can be had from -

Manager, NAYA HIND

LES. MUTTHICANLIZALLAHABAD-S

٥- - - ال

इस नम्बर के खास बेल इस्म जिंद र भूगं जा

न्दिरवस्भरनाथ पांडे ار اسلم الله بانذه الله بانذه بانذه بانذه الله بانذه الله بانذه بانذه بانذه بانذه بانذه بانذه بانذه بانده الله بانذه بانده بانده

24 500 550

हिन्दे घर

कलचर पर हर तरह की किताबें मिलने का एक बड़ा केन्द्र-पाठक हिन्दी, उद् अंग्रेजी की अपनी मन-पसन्द कितानी के लिये हमें जिलें।

> हमारी नई किताबें महात्मा गान्धी की वसीयत

(हिन्दी श्रीर उदू में) लेखक-गान्धीवाद के माने जाने बिद्वान : स्वर्थ श्री मंत्रद श्रली संस्ता सके 225, क्रीमत दो रूपया

गान्धी बाबा

(बच्चों के लिये बहुत दिल वंस्प किताब) लेखिका-कृदसिया जैदी भूमिका-पन्डित जवाहरलाल नेहरू मोटा काराज, मोटा टाइप, बहुत-सी रंगीन तसवीरें 🔧 धाम दा रुपया

पंडित सुन्दरलाल जी की लिखी किताबें गीता और क्रुरान 275 सके. दाम ढाई रुपया

हिन्दू मुसलिम एकता 100 सके, दाम बारह आने

महात्मा गान्धी के बलिदान से सबक्र

क्रीमत बारह आने

पंजाब हमें क्या सिखाता है क्रीमत चार आने

वंगाल और उसके सबक क्रीमत दो चाने

हेन्द्रस्तानी कलचर सोसाबद

145 मुद्रोगंज इसाहाबाद

هندی کور

انعر پر هو طرح کی کتابیں ملنے ل ایک برا کیندر باتیک هندی اُردر' انگریزی کی می بسند کتا بوں کے لئے وہ بن لکھیں

هاری نثی کتابیں آیا کاندھی کی وصیت (هندي اور آردو مين) الْمِهُ الْمُعَمِّدُ الْمُعْمِدُ اللهِ عَالَمُ جَالَمُ عَالَمُ عَالَمُ عَالَمُ عَالَمُ عَالَمُ عَالَمُ وهوان: سوركية شرئ منظر على سوخته ومنجع 225 تيمت دو رويه

ا (بنچرں کے لئے بہت داھیسب کتاب) مر : _ يهره كابسيندت جواهر لال نهرو مُوتًا كَانَدُ مُوتًا ثَانُبُ بَهِت سَى رَنْكَيْنِ نَصُويُونِينَ دام دو روييه

> پندت سندرلال جي کي لکهي کتابيس مر المينا اور قوان وريه منحد بدام قعاني رويه هذا و مسلم أيكما منحد دام عادة آل

مهاتما کاندھی کے بلیدان سے سبق المرودي من قهيد بارة ألف بنصاب هيد کيا سکهانا هے

مولا ملى كنت اعالات

दक्षत मध्यम् अर इसवाम

वेकड प्रीका द्वापरकाल, मृत्य वीन रुपया कामन के पेक्ट के प्राप्त की आरतीय भाषाओं में इस ते सुन्दर कोई दूकरी पुस्तक नहीं

इजरत ईसा और ईसाई धर्म क्रिक सन्दरकाल, पूल्य-डेद रुपया बहायना पर त्र और ईरानी संस्कृति लेखक विश्वन्यरनाथ पांडे, क्रीमत-दो रुपया यहूदी धर्म और सामी संकृति केलक किल्क्सरनाथ पांडे, कीमत-दो रुपया प्राचीन मिस्र की सभ्यता और संकृति लेखक विशवनभरनाथ पांडे, क्रीमत दो रुपया सुमेर बाबुल भौर असुरिया की प्राचीन संस्कृति लेखक विश्वन्भरनाथ पांडे, क्रीमत-दो रुपया प्राचीन यूनानी सभ्यता और संकृति तेता विस्वन्मरनाय पांडे, क्रीमत-दो रुपया

गंगा से गोमती तक

प्रगतिशील कहानी संप्रह) नेसक-यी मुजीय रिजवी, क्रीमत-दो रुपया

आग और आँस

(माबपूर्न सामाजिक कहानियाँ)

कि बावटर अस्तर हुसेन रायपुरी, क्रीसत—डेढ़ रुपया

क्रुसन और धार्मिक मतभेद

क भीताना चतुसकताम चाचाद, क्रीमत-डेद रुपया

(अमरिसीस कविताची का संबद्) रमुप्रति सद्भव किराकः, धीमत – स्नेन रुपया المراور معال الراالم

المال المال المال المال المال المال وينسوك سيود مين بهارتيه بهاعاون مين إس س

سنير كائي دوسري يستك نهين

معرب میسی اور میسائی بهرم معرب بنت مادر ال مراب تبود روبه

الما زر تهستر اور ایرانی سنسکرتی المناف المناه المام المناه الم

مروی دهرم اور سامی سنسکرتی ایک رشونهر نان بانده استسدر رویه

الحین مصر کی سبهیتا اور سنسکوتی

بير بابل اور اسوريا كى پراچينى سنسكرتى ليكهك سرشرمهور ناته باندء ويدم

الجمين يوناني سبهيتا اور سنسكرتي ليمك سيمير رويه

گنگا سے گومتی تک (پرکتی شیل کہانی سائوہ)

أک اور انسو

(بهاوپورن ساچک کهانیان) کستانقر اختر حسین رائه پوری قیمت - دیره ربیه

قرأن اور دهارمک معابهید میکسموانا اوظم آواد نست تدوه وریده

सियाने का पता अध्या

ा करुवर सोसायटी द^{ाप}न न्या उपन

कि शहीपंत्र, इप्यास्त्राहरू अ^{क्षा}र्स क्रमक

"आज इतना तो सभी .कुबूल करते हैं कि इन पार्लिं-मेंटों के मेन्बर खद्गरण और दोंगी होते हैं. जिस दक्ष का जो मेन्बर होता है वह आंख बन्द करके वसी दल को वोट देता है क्योंकि डिसिप्लिन के खयाल से वह ऐसा करने के लिये मजबूर है."

पार्लिमेंटी हुकूमत के तरीके के लिये मरते दम सक गांधी जी की यह राय रही और उन्होंने पेशीनगोई की कि अगर हिन्दुस्तान में पार्लिमेंटी राज क्रायम है। गया तो इस मुक्क को बरबादी से कोई नहीं बचा सकता.

गाँधी जी का दिल और दिमारा दोनों रौर मामूली थे. उनके सोचने और महसूस करने के तरीक़े बेग्रमार और बेद्यन्त थे। दर अस्त वे एक शायर या कवि थे लेकिन ऐसे कवि जिनकी कल्पना शक्ति की उड़ान छपे हुये हरकों में नहीं विस्ताई देती बल्कि लाखों और करोड़ों मेहनत करने बाले इनसानों की जिन्दगी में मलकती है। गाँधी जी एक सच्चे फिलासफर ये लेकिन उनका दिमाग खयाली दुनिया की फर्जी तसवीरें नहीं गढ़ता था, उनका दिमाग्र इनसानों के आदशों और उनकी खाहिशों का एक साँचे में ढालता था. वे एक बहुत बड़े कलाकार थे लेकिन रंग या स्वर के कला-कार नहीं, वे नारम्मीदी से भरे चेहरों को आशा और डमंगों के रंग से चमका देते ये बीर उनके सीनों और दिलों में मीठे और सुरीले गीत भर देते थे. यही वजह है कि सारा हिन्दुस्तान फल के साथ कहता था कि गाँधी जी का बढ़ापन सारे मुल्क का बढ़ापन है और उनका यश सारे हिन्दुस्तान का यश है.

आयें आज इस मौके पर हम अपने-अपने गिरेशानों में मुँह डालकर यह छान-शिन करें कि कहाँ तक गाँधी जी की तालीम पर इमने अमल किया है या कर रहे हैं या करने वाले हैं. इस जवाब पर ही हिन्दुस्तान की क़िस्मत का

दारो मदार है. गान्धी जयन्ती, 2-10-57

---विश्वमभरनाथ पांडे

الله النا تو سُبھی قبول کرتے ھیں که اِن پارلینٹلوں کے مبیر خود فرض اُور قادرتکی ھرتے ھیں ، جس دل کا جو مبیر ھوتا گئے وہ اُنہ کر کے اُنہی دل کو وقت دیتا گئے کیونک تسلی کے خیال سے وہ ایسا کرنے کے لئے معجبور ہے ۔''

بارلیمیازی جبوست کے طریقے کے لئے مرتے دم تک گائیھی جی کی یہ رائے رھی اور آنھرسٹے پیشیس گوئی کی کہ اگر ھلاستان میں پارایمیازی رائے قائم ہوگیا تو اس ملک کو بربادی سے کرئی نہیں بچا سکتا ۔

گاندہی جی کا دل اور دماغ دونوں غیر معمولی تیہ ، اُن کے سوچنے اور محسوس کرنے کے طریقے پشمار اور پے انت تیے . دراصل و۔ لیک شاعر یا کہی تھے لیکن ایسے کوی جن کی نابیا شکتی کی آزان چیوء طوئے حرنوں میں نیس دیائی دیئی بلکہ لاکیوں اور کورں محملت کرنے والے انسانوں کی زندگی میں جہلکتی ہے ۔ گاندھی جی ایک سچے فقسفر تیے لیکن اِن کا جماغ خیائی دنیا کی فرضی تصویریں نہیں گوھتا ، اُن کا دماغ اِنسانوں آدرشوں اور اُن کی خواھشوں کو ایک سائجے میں کانمان اُنہ نہیں ، و۔ ایک بہت بوے کلاکار تیے لیکن رنگ یا -بور کے تمالتا ہے ، و۔ ایک بہت بوے کلاکار تیے لیکن رنگ یا -بور کے اُنہ نہیں ، و۔ ناأمیدرس کے چیورس کو آشا اور امنکوں کے اُر اُن کے سینوں اور دلوں میں میٹھے اور سریئے گیت بیور دیتے تیے لور اُن کے سینوں اور دلوں میں میٹھے نیخر کے ساتھ کہتا تیا کہ گاندھی جی کا براپی سارے ملک کا بخاری ہے اور اُن کا یکس سارے هندستان کا یکس سارے ملک کا براپی ہے اور اُن کا یکس سارے هندستان کا یکس ہے ۔

آنف آج اِس موقع پر هماننے اپنےگریبانوں میں منہ ڈال کر یہ چان بین کویں که کہاں تک گاندھی جی کی تعلیم پر هم لے عمل کیا ہے یا کر رہے میں یا کرے والے هیں ، اِس جواب پر هی هندستان کی قسمت کا داروسدار ہے ،

السعى جينتي.

--وشمبهر نانه پاندے .

2. 10. 57

कारबार .खुद करे. इसके लिये यह चाहते थे कि हुकूमत की वाक्रम एक जगह जमा न होकर चारों तरफ दूर दूर हैतक बँट जावे. देश को इतने छोटे-छोटे इस्कों में बांटा दिया जावे कि खनता अपने जाने बूमे आदमी को प्रतिनिधि खुन सके.

पालिमेंटी हुकूमत में नुमाइन्दगी का ढोंग तो है ही इससे भी बदकर चुनाव का ढोंग है. चुनाव का आजकल का ढंग जनना को बरबाद करने बाला है. इसमें हर तरह की बेईमानी, घोखा, करेब, ज्यादती, अन्याय, फिअूल खर्ची और दुशमनी का एक सोता खुल जाता है, इन चुनावों ने देश के देश बरवाद' कर दिये. इनकी बुराइयाँ दिनों दिन बदती जा रही हैं. गाँधी जी इसके सुधार का नीचे लिखा ढङ्क बताते थे:—

- (1) बोटरों की जानकारी को श्रीर उनके चलन को, उनमें नेकी-यदी और भले-जुरे के विचार को इतना ऊँचा कर दिया जाय कि वह हमेशा ऐसे लोगों को ही बोट दें जो नेक हों, त्यागी हों, दूसरों की सेवा श्रीर भलाई करने बाले हों श्रीर जिनमें ईमानदारी, सादगी श्रीर नम्नता हो.
- (2) जनता में इतनी ताक़त हो कि वह अपने इन तुमाइन्दों से सच्ची सेवा ले सके और.
- (3) जब चाहे इन्हें बदल सकने का भी जनता को इक्क हो.

पार्लिमेंटी तरीके में चुनाव से भी बुरी इसकी दलवन्दी है जिसे पार्टी सिस्टम कहा जाता है. दा पार्टियों का हाना यह तरीका चल नहीं सकता. इन पार्टियों का यह बुनियादी हक होता है कि वे एक दूसरे को गिराती मिटाती रहें. इस पार्टी बाजी से देश को जा धकका पहुँचता है खसका काई धन्दाज नहीं किया जा सकता। पार्टीबाजी देश भर में फज़-फूलकर गांव-गांव और कोने-कोने में फैन जाती है. हर शख्स का यह फूर्ज हा जाता है कि वह इन्साफ गेर इन्साफ, सच-मूठ. ईमानदारी-वेई।नी का ख्याल न करते हुये अपनी पार्टी बाले को जिताये. इसीलिये गांधी जी का पश्चिमी तरीके की इस पार्लिमेंटी हुकूमत से सख्त नफ़रत थी. 'हिन्द स्वराज' में वह लिखते हैं :—

"इंगतिएड की इस समय जो हालत है उसे देखकर तो सचमुच दया चाती है और मैं ता इंश्वर से मनाता हूँ कि मारत की ऐसी हालत कभी न हो. जिसे चाप पालि-बेंग्डों की मां कहते हैं वह इंगलैंड की पालिमेंट तो एक बांक और वेश्या है. ये दोनों लक्ष्य कहे हैं पर उस पर पृथि तरह लागू होते हैं. آس کے لئے رہ چاھا۔ تھے کہ حدومت کی طاقت ایک جاتھے۔ جمع نہ دو کر چاری طرف دور دور تک بے جارہ دیش کو اِتلے چہوٹے چہوٹے حلقیں میں بات دیا جارہ کہ چلتا اپنے جالے بہجے آدشی کو برتیادھی چن سکے ،

یا رایداری حکومت میں نمائندگی کا قمونگ تو قد هی اس سے یہی ہوء کو چناو کا قمونگ فی جناو کا آجال کا قداگ جنتا کو ہرباد کرنے والا فی اِس میں هر طرح کی پرایدائی دھوکا نویب جرم زادتی انبائے دھول خرچی اور دشیئی کا ایک سوتا کیل جاتا ہے اِن چناؤ نے دیھی کے دیھی ہرباد کر دئے ، اُن کی ہرائیاں دنوں دن ہرھائی جا رهی هیں ، گاندهی جی اس کے سدمار کا نیچے کھا قمنگ باتا تے

(1) وٹروں کی جانکاری کو اور اُن کے چان کو اُن سیں نیکی بدی اور بیلے برے کے وچار کو اِتنا اُرنچا کر دیا جائے که وہ همیشته ایسے لوگوں کو وٹ دیں جو نیک هیں' تیاگی هوں' درسروں کی سیوا اور بھائی کرنے والے هوں اور جن میں ایمانداری مانگی اور نمرتا هو ،

(2) جند ميں إنفى طاقت هوكه وة اپنے إن نمائندوں سے سجى ميوا له سكه اور .

(3) جب چاھ آنہیں بدال سکنے کا بھی جلتا کو ق هو .

پارلیمناتری طریقے میں چناوسے بھی بری اِس کی دال پلاس کے جاتا ہے ، دو پارٹیں کا هونا پلاس کے جاتا ہے ، دو پارٹیں کا هونا پلاس کے جاتا ہے ، دو پارٹیں کا هونا طریقہ چل نہیں سکتا ، اِن پارٹیوں کا یہ بنیادی حق هوتا ہے کہ وہ ایک دوسرے کو گر آئی مقانی رهیں ، اِس پارٹی بازی سے دیھی کو چو دھکا پہونچتا ہے اُس کا درئی اندازہ نہیں کیا جا سکتا ، پارٹی بازی دیش بھر میں بھل پھول کو گاؤں گاؤں اور دوئے کوئے پھول جاتی ہے ، هر شخص کا یہ درض هو رجاتا اور دوئے کوئے بھول انصاف سیے جہوت ایماندرای بے ایمانی کا خیال نہ کرتے هوئے اپنی دارٹی والے کو جاتائے ، اِس اللہ کا خیال نہ کرتے هوئے اپنی دارٹی والے کو جاتائے ، اِس اللہ سیخت نفرت تھی ، معنو سوراج ، میں وہ لکھتے هیں اِس کا سیخت نفرت تھی ، معنو سوراج ، میں وہ لکھتے هیں اِس

د انکلیلت نی اِس سہے جو حالت کے آسے دیکھ کو تو سپے میے دیا آنی کے اور میں تو ایشورسے مناتا ھوں کہ بھارت اِکی ایسی حالت کیمی نہ ھو ۔ جسے آپ پارتیدیٹ کی ماں کہتے ھیں وہ اِنکلیلت کی پارلیمینٹ تو ایک بانشہ اور ویشیا گے ۔ یہ دونوں لفظ کرتے ھیں ور اِس پر پوری طرح لاگو ھرتے ھیں ۔

निह मशीनें हैं. मशीनें एक बहुत बढ़े पाप का निह हैं.

मिलों में काम करने वाली औरतों की हालत और भी
द्देनाक है. अगर मशीनों का खप्त हमारे देश में बढ़ता
गया तो यह देश बड़ा दुखी देश हो जायगा. मुमिकन है

मेरे इस कहने को लाग कुफ सममें लेकिन मैं यह
कहने पर मजबूर हूँ कि हमारे लिये हिन्दुस्तान
के अन्दर मिलों की तादाद बढ़ाने के बजाय यह
ज्यादा अच्छा है कि हम मैनचेस्टर का निकम्मा कपड़ा
इस्तेमाल,करें और अपना रूपया मैनचेस्टर भेजें. मैनचेस्टर
का कपड़ा इस्तेमाल करने से हम अपना धन नष्ट करते
हैं लेकिन हिन्दुस्तान का मैनचेस्टर बनाने से हमारा ईमान
और इन्सानियत नष्ट हो जायगी।"

यूगेप के इख्तसादी या आर्थिक संगठन का ढाँचा बड़े शहरों की बुनियाद पर कायम हुआ है इसके ख़िलाक हिन्दुस्तानां सभ्यता का केन्द्र (मरकज) गाँव है। गाँधी जी कहते थे कि हमें अपनी आर्थिक और तामीरी योजना आमों के उद्योग-धनधों पर ही कायम करनी होती बरना गाँव शहरों के चंगुल में फँसकर बरबाद होते रहेंगे और हिन्दुस्तान माली नुक्षते नजर से कभी पनप न सकेगा.

गांधी जी और पार्लिमेएटी राज

दुनिया के आम लोगों में पार्तिमेंटी राज की इतनी चाह क्यों है इसका सबब यह है कि यह राज आम जनता का राज सममा जाता है. इसमें जनता इस तरह राजा बनाई जाती है कि लाखों आदमी अपना एक नुमाइन्दा चुनते हैं. सी पीछे पच्चानवे न उसे जानते हैं और न पहचानते हैं किर भी वह उनका नुमाइन्दा माना जाता है. चुने जाने के बाद यह तुमाइन्दा उनकी बात भी नहीं पूछता। वह उन्हें श्रमली फायदा भी नहीं पहुंचा सकता क्योंकि वह ता सैकड़ों जुमाइन्दों में से एक होता है. इस तरह एक राजा हटाकर सैकड़ों राजा बन जाते हैं और भिनिस्टरों की शक्ल में दस-बीस बादशाह बन जाते हैं। जनता बेचारी वही लींडी और दासी बनी रहती है. राजकाज चलाने का खर्ची पहले से संकड़ों गुना बढ़ जाता है. सरकारी नौकरों की गिनती, तनखाहें और भन्ते अनाप शनाप बढ़ जाते हैं, अफसरों मिनिस्टरों और राष्ट्रपति की शान शौकत के आहम्बर पराने बादशाहों को भी शरमाते हैं और यह कहलाता है जनता का राज'।

गाँधी जी भोली जनता को ठगने वाले इस पार्लिमेंटी हुक्सत के मायाजाल को जड़ से बदल देना चाहते थे. वे अपने का सच्चा डेमाकेट यानी सच्चा लोकतंत्री कहते थे. वह चाहते थे कि जनता सचमुच राजा वने और अपना

چتھ مشیلی ھیں۔ مشیلیں ایک بہت ہو۔

ہاپ کا چٹھ ھیں ، ہمبٹی کی ملرں کے مودور دوسوں

کے ظلم ھیں ، ملوں میں کام کولے والی عورتوں کی

حالت آور بھی درداناک ہے ، اگر مشیلوں کا خبط ھارے

دیھی میں بومکا گیا تر یہ دیکی ہوا دکھی دیکی ھو جائیگا ،

ممکن ہے مورے اِس کہنے کو لوگ کفر سنجھیں لیکن میں یہ

کہنے پر متجبور ھوں کہ ھمارے لئے ھائستان کے اثدر ملوں کی

تداد بوھائے کے بجائے یہ ویادہ اُچھا ہے کہ ھم ماندچستر کا

نکما کہوا استعمال کویں اور اپنا روپھے ماندچستر بھیجیں ۔

مندچستر کا کہوا استعمال کوئے سے ھم اپنا دھی نشم کوتے ھیں ۔

لیکن ھائستان کو ماندچستر بنائے سے ھمارا نیمان آور انسانیت لیکن ھائستان کو ماندچستر بنائے سے ھمارا نیمان آور انسانیت

یورپ کے انتصادی یا ارتهک سلکتھیکا تعانچہ بڑے شہورں
کی بنیاں پر قایم ہرا ہے اِس کے خلاف علیستانی سبھتا کا کیندر
(مرکز) گاری ہے ۔ گاندھی جی کہتے ھیں که ھمیں اپنی
ارتهک اور تعمیری یو جنا کراموں کے اُپھوگ دھندوں پر ھی قایم
کرنی ھو گی ورنع گاری شہوری کے چلکل میں پہنس کر برباد
ھرتے رھیں گے اور علیستان مالی نقطے نظر سے کبھی پنپ
نه سکیگا ،

کاندهی جی اور پارایمنتری راج

دنیا کے عام لوگوں میں پارلیمنٹوی راج کی اِننی چاہ کوں

ھے اِس کا سبب یہ ہے کہ یہ راج عام جنتا کا راج سمتیا جانا

ھے اُس میں جنتا اِس طرح راجا بنائی جاتی ہے کہ لائوں
آسی اپنا ایک نمائندہ چنتے ہیں ، سو پنچھے پنچائرے نه اُس کا نمائندہ
اس جانتے ہیں اور نہ بہنچانتے ہیں پہر نہی وہ اُس کا نمائندہ
ماما جانا ہے . چاہ جائے کے ہمد یہ نمائندہ اُس نی بات بھی
نیس پوچھٹا ، وہ اُنھیں اصلی فائدہ بھی نہیں پہنچا سکا کوئنکہ
وہ او سیکڑوں نمائندوں میں سے ایک ہونا ہے . اِس طرح
ایک راجا ہتا کو سیکڑوں راجا بی جاتے ہیں اور منسٹروں
کی شکل میں دس بیس یادشاہ بی جاتے ہیں، جنتا بینچاری
بہلے سے سیکڑوں گنا بڑھ جاتا ہے ، سرکاری نوکروں کی گنتی،
ناخوامیں اور بہتے آناپ سانپ بڑھ جاتے ہیں، انسروں منسٹروں
ار راشٹریٹی کی شان شوکت کے اتمیر پرانے بادشاہوں کو بھی
شرماتے میں اور یہ کہانا ہے 'چینا کا راجا !

گادھی جی یہولی جلتا کو ٹیکنے رائے اِس پارلیمئٹری حکومت کے مایا جال کو جو سے بدل دینا چاھٹے کیے۔ وے اُنہا کو جوسے یعنی سمچا لوک تنتری کیتے کے وابد کے اوراپنا سے میے راجا بنے اوراپنا

0.5

करने के बजाय ज़बर्वस्ती की धीर बनावटी एकवा कायम करना है."

गाँधी जी कहा करते थे धाईसा कमजोर से कमजोर इनसान को भी फीलाद की सी ताक़त दे देती है. उनकी धाई श के धाचरज भरे नतीजे हमने हिन्दुस्तान में सत्यापह की लड़ाइयों में देखे. भ रत की स्त्रियाँ बहुत कमजोर और पिछड़ी हुई सममी जाती थीं. गाँधी जी ने उन्हें भी सत्या-प्रह में शामिल होने की दावत दी. लोगों ने साचा गाँधी जी दिकक़तों को नहीं समम रहे. मगर उन्हें क्या पता था कि गाँधी जी के सामने आने वाले हिन्दुस्तान की सही तसवीर है.

था है ही दिनों के बाद नमक सत्याप्रत की लड़ाई में लागों ने अचरज भरा नजारा देखा। हजारीं खियाँ घरों की ममता छोड़कर आजादी की लड़ाई में कूद पड़ीं। जो बियाँ कभी चौके-चुल्हें से बाहर नहीं निकली थीं. जिन औरतीं ने जनानखाने की बन्द रोशनी के बाहर कभी क़दम नहीं रखा था, जो शायद ही कभी स्नाम रास्तों पर चली हों, पुराने दक्षियानुसी रीत-रिवाजों में फैसा हुई श्रीरतें, शर्मीती श्रीर लजीली श्रीरतें, जो घूँ घट हटाने की बात न सोच सकती थीं, पुरानी तहजीब पर एतकाद रखने वाली बुजुर्ग औरतें-सब की सब ताक़त और हिम्मत बटार कर जनता के समुन्दर में कूद पड़ीं। वेपढ़ी होते हुये भी जगह जगह उन्होंने सत्याप्रह कमेटियों की सदारत की. कमजोर होते हये भी उन्होंने सत्याप्रदियां के जत्यों की कप्तानी की. उन्होंने पुलिस और उनकी लाठियों का सामना किया, भूप और बारिश में बैठकर पिकटिंग की, जेल के सीखचों के भीतर सजायें काटीं, धौर बाज मीक्रों पर मशीनगन की गोलियों का भी सामना किया. गाँव की बीरते हँसते हुये अपने खाविन्दों, बेटे और बेंटियों की टीका लगाकर जेलखाने भजतीं, सदियों की दबी और सताई हुई हिन्द्रस्तानी नारी ने अपनी क्ष्मीनी और हिन्मत से सारी दुनिया को अचरज में डाल दिया. यह करिश्मा महज गांधी जी की अहिंसा की वतह से हा पाया.

गाँधी जी सादी और गाँव के धनधों के इसलिये हक में थे कि वे सममते थे कि कल कारखाने और मशीनें शोषन की जड़ हैं, गाँधी जी ने 'हिन्दु स्वराज' में तिसा है :—

"मशीनों ने हो हिन्दुस्तान को कंगाल कर दिया. मैनचेस्टर की ही बनह से हिन्दुस्तान की कारीगरी करीव-करीब कोप हो चुकी है. मशीनों ने यूरोप को भी बरबाद करना शुरू कर दिया है. बरबादी इस समय खंगेजों के रखाने साटकाटा रही है। आजकल की सम्यता का सास کرتے کے بنجائے زہردستی کی اُور بلاوٹی یکٹا قائم کشاتھے''

کاندھی جی کہا درنے تھے اہنسا کرور سے کورر اِنسان تو بھی فوالد کی سی طاقت دے دیتی ہے ، اُن کی اُمنسا کے اچرے بھرے نتیجے مم نے ہندستان میں ستیاگرہ کی اوائھوں میں دیکھے ، بھارت کی استوبال بہت کورر اور بچھڑی ہوئی سنجھی جاتی تھیں ، کاندہی جی نے اُنہیں بھی ستھاگرہ میں شا ل ہوئے کی دعرت دی ، لوگوں نے سوچا کاندھی جی دیتوں کو نہیں سمجھ رہے ، مگر اُنھیں کیا بلک که کاندھی جی دیتوں کو نہیں سمجھ رہے ، مگر اُنھیں کیا بلک که کاندھی جی

تھوڑے می دنوں کے بعد نیک ستیاگرہ کی لوائی میں لوگوں نے اچرے بھرا نظارہ دیکھا ، عزاروں اِستریاں گھروں کی ممتا چهرو کر ازادی کی نوائی میں کود پویں ، جو استریاں كبهي چركے چواهے سے باهر نہيں نكلي تبين' جن عرقوں نے زنان خالے کی بند روشنی سے باعر کیھی قدم نہیں رکھا نہا ، جو شاید هی دیمی عام راستوں پر چوهی هوں' پرالے دقیانوسی ریت رولجین میں پہنسی ہرئی عورتین' شر میلی اور لنجیلی عورتین چو گهونگهت مقالے کی بات نه سوچ سکتی تهیں پرانی تهذیب یر اعتقاد رئهنی والی بورگ عورتیں ۔۔سب کی سب طافت ار هیت بدر کر جنتا کے سدادر میں نود بویں ، پروهی هدتے عول بھی جگہ جگہ انہوں نے ستیاگرہ کمیٹیوں کی صدرت کی . کنزور ہوتے ہوئے بھی اُنھوں نے ستیاگرھیوں کے جانوں کی کیتائی کی . اُقهوں نے پولیس اور اُن کی لائھیوں کا سامنا کیا . دعوب اور ہارھی میں برتم کر پیمیٹنک کی، جیل کے سیخنچوں کے بھائر م المراثيين كاللين اور بعض موقون در مشهن كن كي كرلهرن ا بھی سامنا کیا ، گلوں کی عررایس هلستے هوئے اپنے خاوندوں اپنے بہالیں کو ٹیکا لگا کر جیل خالے بہنجایں ، صدیوں کے دی اور ستائی هوئی هندستانی تاری نے اپنی قربانی اور همت سے ساري دليا كو اجرم مين دال ديا . يه كرشمه محض كاندهى جي کي وجه سه هو پايا .

کاندھی جی کہادی اور گؤں نے دھلدوں کے اِس لئے حق میں تھے که رہے سمجھتے تھے که کل کارخانے اور مشینی شوشن کی جو ھین ، کاندھی جی نے 'ھلد سوراج' اکھا ہے۔۔۔

"سفینوں نے می مدستان کو کلگال کو دیا ، مانچسٹر کی می وجه سے مدستان کی کاریکری قریب قریب لوپ عو جکی ہے ۔ مشیئوں نے یورپ کو بھی بدیان کرنا شورع کو دیا ہے ، بربادی اِس سم الگریؤوں کے دروازے کو دیا ہے ، بربادی اِس سم الگریؤوں کے دروازے کی میں

जड़ एक ही है और ये सब एक दूसरे के मददगार हैं.

और जब कभी आपसे मैं यह कहता हूँ कि आप अपने
दिलों से छुआ छूत को निकाल बाहर करें तो मैं आपसे
यही चाहता हूँ, इससे कम कुछ नहीं कि आप समूची
इनसानी क्रीम की बराबरी और बुनियादी एकता में
बिश्वास करें. ईश्वर एक है. वही सबका ईश्वर है और मैं
आप सबसे कहता हूँ कि आप इसे भूल जाइये कि एक
ईश्वर के बच्चों में ऊँच, नीच का कोई फ़रक हो सकता
है." (हरिजन 16 फ़रवरी, 1904).

आगे चलकर गान्धी जी ने कहा—''जब ऐसा पाक और ग्रुम दिन आयेगा तब स्टेशनों के ऊपर हिन्दू पानी और मुसलिम पानी या हिन्दू काय और मुसलिम चाय की शर्मनाक आवर्षे मुनाई न देंगी. तब स्कूलों और कालिजों में हिन्दुओं और रीर हिन्दुओं के खलग-अलग पढ़ने का इन्तज्ञाम न होगा, न अलग-अलग बरतन होंगे, तब न जात पाँत या फ़िक़ों के नाम पर स्कूल या कालिजों के नाम होंगे और न मुसलिम, हिन्दू, जैन सम्प्रदायों के नाम के अस्पताल होंगे." (कन्स्ट्रक्टिव प्रोप्राम, सफ़ा 4, दिसम्बर 13, 1911).

गुजरात विद्यापीठ में तक्रीर करते हुये एकबार गाँधी जी ने कहा था---

'भैं यह नहीं चाहता कि मेरे मकान के चारों तरफ ऊँची दीवारें खड़ी हों और सब तरफ की खिड़कियाँ ठ्राँस-ठ्रंस कर बन्द कर दी गई हों. मैं चाहता हूँ कि मेरे मकाने के चारों तरफ सब मुल्कों की कल्चर खुली हवा की तरह पूरी आजादी के साथ बहती रहें लेकिन मैं यह नहीं चाहता कि कोई हवा मेरे पाँव उखाड़ दे. मैं यह नहीं चाहता कि पुरानी करवर पर ही हम गुजारा करते रहें विरुद्ध हम एक ऐसी नई करचर की तामीर करना चाहते हैं कि जिसकी जहें मुल्क की तहजीब की पुरानी गहराइयों में हों श्रीर जो इमारे अब तक के तजहबों से मालामाल हो. इम उन सब करूचरों के समन्वय और मेल के तरकदार हैं कि जो हिन्दु-स्तान में बाहर से आकर बस गई, जिन्होंने यहाँ की जिन्दगी पर असर डाला और जिन पर खुद यहाँ की घरती का असर पड़ा, हृद्रती तौर पर हमारा यह करूनरी मेल जोल धीर समन्वय स्वदेशी ढंग का होगा। जिसमें हर फरवर को मुनासिय जगह मिलेगी. यह अमरीकी ढंग का न हांगा जिसमें ज्यादा तादाद वाले लोगों का या जिनका जोर है इनकी कल्बर और सब कल्चरों की अपने अन्दर हुदम किये हुये है भीर जहाँ समन्वय या मेल का मक्कसद सब राग रागनियों को मिलाकर एक मधुर सुरीला राग पैदा

چو ایک هی هے اور یه سب ایک دوسرے کے مددائر هیں ، اور جب کنهی آپ سے میں یه کها هیں که آپ اپنے داہی سے چہوت چہات کو نکال باعر کریں تو میں آپ سے یہی چاہتا هیں ، اِس سے کم کچھ نہیں که ، آپ سموچی انسانی قیم کی برابری اور بنیادی یکتا میں وشراس کیں ، ایشور ایک هے ، وهی سب کا ایشور هے اور میں سب کیا هیں که آپ اِسے بهول جائے که ایک ایشور کے بچوں میں اُونیے ' نبیج کا کوئی نبی هو سکتا هے ، '' (هربجی 16 نبروی 4 کوئی نبی هو سکتا هے ، '' (هربجی 1934) ،

آگے چل کو گاندھی جی نے کہا۔ ''جب ایسا پاک اور شبعہ دن آئیگا تب اسٹیشاں کے آوپر هندو پائی اور مسلم پائی یا هندو چائے اور مسلم چائے کی شرمناک آرازیں سنائی نه دینگی ، تب اسکولوں اور کالتجوں میں هندؤی اور غیر هندؤی کے الگ آلگ الگ برتنی هونگے تب نه ذات پات کا یا فرقوں کے نام پر اسکول یا کالیے کے نام هونگے اور نه مسلم' هندو' جین سمهردائیس کے نام کی گار نه مسلم' هندو' جین سمهردائیس کے نام کے اسپتال هوں گے ۔'' (ننسٹرکٹو پروگرام' صنحه 14 دسمبر نام کے اسپتال هوں گے ۔'' (ننسٹرکٹو پروگرام' صنحه 14 دسمبر 1341) .

گعجرات ودیا پیٹھ میں تقویر کرتے ہوئے ایکبار کاندھی جی نے کہا تھا۔۔۔

المیں یہ نہیں چاھٹا کہ مہرے مکان کے چاروں طرف اُونچی دیو ریں کھڑی ھوں اور سب طرف کی کھڑکیاں ٹھرنس تبونس کر بند کر دی گئیں هوں . میں چاهنا هوں که میرے مکان کے چاروں طرف سب ملکوں کی کلچر کھلی ہوا که طرح پری آزادی کے ساتھ بہتی رمیں لیکن میں یہ نہیں چاھٹا که کرئی هوا میرے پاؤں اکھار دے . میں یہ نہیں چاعتا کہ پرائی نلحور ير هي هم گذارا درت رهيس بلکه هم أيک ايسي نئي الحجر کے تعدیر کرنا جاملے میں که جس کی جویں ملک کی تہذیب کی پرائی گہرایوں میں ہوں اور جو ممارے اب نک کے تجوریوں سے مالا مال هو ، هم أن سب كلمجروں كے سماو اور مهل کے طوفدار هیں که جو هندستان میں یامر سے اً کر بس کئیں ؛ جہنیں نے بہاں کی زندگی پر اثر قالا اور جن پر خود یہاں کی دھرتی کا اثر ہوا ، قدرتی طور پر ھمارا یہ کلچری میل جول اور سمنو شودیشی تعنگ کا هوکا جس میں هر تلجو کو مناسب جکه ملیکی . یه امریکی دهنگ کا ته هو جس میں زیادہ تعداد والے لوگیں کا یا جن کا زور ہے أن كى كليور اور سب كليوروں كو اپنے أندر عقم كيے هزی هیں اور جہاں سماو یا میل کا مقصد سب راک راکیس کو مق کو ایک مدھر سریة راک هددا

كؤلمي سوال فيهن . [عمين سب كي ساته ايك سا محصب كا برداؤ كرنا چاهئے ، اپنے سب كاميں ميں سب كى بياتي كو . مِدَفَظُر رَكِهَا چاعلُه . هريجي أَنْدِولِي كَا ذَكَر كُرِيِّ هُولُه كَانْدِهِي جی لے س 1934 میں کیا تھا۔ ''اپنی دھلتی ھوئی ولدگی کے دور مین میں کرئی ایسا سامهردائک کام هاتھ میں انهیں۔ لے مكتا جس سے عام جنتا كو كوئى نقصان يہنچے ، هريجنس كى سهوا میں بھی مهرب دل کی گہرائی میں یہ خواعف مہجود ه که آس سے ساری ا جنتا اور سب لوگوں کا بھلا ھو ، کیونکھ میں نہیں مانٹا که انسان کی زندگی کوئی ایسی الگ الگ كوتهريون مين بنده جن مين ايك كي دوسر ، كو هوا نه لك سکے یا انسانی زندگی کے ڈیڑے نئے جا سکتے ھیں . اُس کے خلف اِنسانی سماج کا جهرن ایک ایسی سموچی چیز ہے جس کے نہ انگ انگ تعرب میں اور نہ تعرب کئے جا سعتے ھیں . اِس لئے جو چیز ایک کے سجے بھلے کی ہے یا هر سکتی ہے وہ ضرور سب کے بہلے کی موگی ، یہ کسوئی کبھی دھوکا نهیں دے سکلی ،

میں نے اپنی زندگی بھر سب کی بھائٹی کے اِس اصال میں وشواس کیا ہے ۔ اِس لئے میں لے کبھی بھی کوئی ایسا کلم فرقے وارائه یا راشتری هانه میں نهبن لیا جو پورس انسانی فرم کے مت کو نقصان بہنچانے والا ہو ، جب میں نے به اچھی طرح ديم ليا كه أجمل هندؤل ميل جس طرح كي چهوا چہرت برتے جاتی ہے وہ صرف ھندؤں کی آگے کی ترقی کے راستے موں ھی روکارت نہیں ھے بلکه عام طور پر سب لوگوں کے ترقی کے راستے میں روکارے ہے ، سرسری نظر سے دیکھنے والا بيي به اچهي طرح ديكه سكتا في كه إس چهرا جهرت لي نع صرف اونحجی جدای کے هدورس کو بلکه هدستان مهل رها والم سب لوگوں کو مسامانوں عیسائیوں اور حوسروں کو بھی أنم طرح جكة ركها هے جس طرح سائن كسى كو كلدلورن میر جکر اینا ہے . جورا چورت کے اس بھاچ سے یدھ کرنے میں میرے دل کے اندر یہ خواہش نہیں کے بعد صرف مندوں هادور و يو مي بهائي چارا قايم هو جائها مهري دلي خواهم یہ ہے نه إنسان إنسان كے به به بهائي چارا قايم هو جائے جس مين هندو' مسلمان عيسائي' يارسي اور يهودي سب ايک سمان شاءل هوں کوونکه معجمے دنیا کے سب بوے بوے مذهبوں كى بليادى سحيائي مين وشواس ها . مجه وشواس ها ته يه سب ، ذهب ايشور كے دائم هوالم هفال ، اور معجم وشواس هے که یه سب، مذهب أن لركوں كے لئه ضروبی تهے جاپيس يه أيشور سے ملے مجھے اس بات کا بھی ودواس فے که اگر هم سب انگ انگ دھرم مذھبوں کی نتایوں کو اُن دھرموں کے مانیا والی كن لكاء ته يوهين تو هدين ياته چلي كا كه أن سب دهومون كي

र्रंग, जाति, या मजहंत्र का कोई सवाल नहीं, हमें सबके साथ एकसा मोहब्बत का बर्ताव करता चाडिये. अपने सब कामों में सब की भलाई का महे नजर रखना चाहिये. हरिजन आन्दोलन का जिक्र करते हुये गान्धी जी ने सन 1984 में कहा था :- "अपनी दलती हुई जिन्दगी के दौर में मैं कोई ऐसा साम्प्रदायिक काम हाथ में नहीं ले सकता जिससे आम जनता को कोई नुकसान पहुँचे. हरिजनों की सेवा में भी मेरे दिल की गहराई में यह खाहिश मीजद है कि इससे सारी अनता और सब लोगों का भला हो. क्यों कि मैं यह नहीं मानता कि इनसान की जिन्दगी कोई ऐसी खलग-अलग काठिरयों में घन्द है जिनमें एक की दूसरे को हवा न लग सके या इनसानी जिन्दगी के दुकड़े किये जा सकते हैं. इसके खिलाक इनसानी समाज का जीवन एक ऐसी समूची चीज है जिसके न अलग-अलग दुकड़े हैं और न दुकड़े किये जा सकते हैं. इसिलये जो चीज एक के सबे भले की है या हो सकती है वह जरूर सब के भले की होगी. यह कसौटी कभी घाखा नहीं दे सकती.

"मैंने अपनी जिन्दगी भर सबकी भलाई के इस उसल में विश्वास किया है. इसी लिये मैंने कभी भी काई ऐसा काए, फिरके बाराना या राष्ट्रीय, हाथ में नहीं लिया जो पूरी इनसानी कौम के हित का नुक्रसान पहुंचाने वाला हो. जब मैंने यह अच्छी तरह देख लिया कि आजकल हिन्दुओं में जिस तरह की छुत्रा झूत बरती जाती है वह सिर्फ हिन्दुं औं की आगे की ताकी के रास्ते में ही उकावट नहीं है बल्क श्राम तौर पर सब लोगों की तरक्की के रास्ते में रुकावट है. सरसरी नजर से देखने वाला भी यह अच्छी तरह देख सकतां है कि इस छुआ छूत ने न सिर्फ ऊँची जाति के हिन्दुश्रों को बल्कि हिन्दुस्तान में रहने वाले सब मजहबाँ के लोगों को मुसलमानों, ईसाइयों और दूसरों को भी उसी तरह जकड़ रखा है जिस तरह साँप किसी को अपनी छन्डलियों में जकड़ लेता है. छुआ छूत के इस पिशाच से युद्ध करने में मेरे दिल के अन्दर यह खाहिश नहीं है कि सिर्फ हिन्दुओं हिन्दुओं में ही भाई चारा कायम हो जाय, मेरी दिली खाहिश यह है कि इनसान इनसान के बीच भाई चारा कायम हो जाय जिसमें हिन्दू, मुसल्मान, ईसाई, पारसी, और यहदी सब एक समान शामिल हों क्योंकि मुफे दुनिया के सब बढ़े-बड़े मजहबों की बुनियादी सबाई में विश्वास है. सुके विश्वास है । क ये सब मज्हब ईरबर के दिये हुये हैं, श्रीर मुक्ते विश्वास है कि ये सब मज़हब उन लोगों के लिये जरूरी थे जिन्हें ये ईश्वर से मिले. मुक्ते इस बात का भी विश्वास है कि अगर हम सब अलग-अलग धर्म-सजहबों की किताबों को उन धर्मी के मानने वालों की निगाइ से पड़ें तो इमें पता चलेगा कि इन सब धर्मों की

का . खून बहाकर अगर आजादी मिलती है तो ऐसी आ-जादी नहीं चाहिये. इसी लिये चन्होंने चौरीचौरा के कले-आम के बाद सत्यामद की लड़ाई बन्द कर दी. दरजनों बार उन्होंने हुलम्बे-लम्बे चपवास और फाके किये और रो-रोकर ईश्वर से दुआएँ माँगीं.

इनसानी तारीख में शायद पहली बार जमात की हैसियत से हमें यह बताया गया कि हमारा काम दू सरों को
करत करना नहीं है बिल्क ख़ुद अपने आपका बिलदान
कर देना है और फिर भी आखीर में हम फतहयाब होंगे.
गांधीजी का यह कितना शानदार पैगाम था किसी सियासी
मक्सद को हासिल करने का यह पैगाम नहीं था बिलिक इनसानी क्रीम की भलाई का धुनियादी पैगाम था. जिस जग
में सचाई की कोई जगह न हो उसमें मरना माना अपनी
हस्ती को मिटा देना है. पर सत्य और अहिंसा के युद्ध में
कुछ बात बाक्षी रह जाती है. उसमें हार जाने पर भी जीत
होती है और मर जाने पर भी अमर जीवन मिलता है.
गांधीजी की सबसे बड़ी खासियत यह थी कि वे एक बहुत
बड़े सियासतदां थे, बहुत बड़े नेता थे, बहुत बड़े समाज
सुधारक थे लेकिन सब से ज्यादा वे एक बहुत बड़े इन-

बड़े सियासतदां थे, बहुत बड़े नेता थे, बहुत बड़े समाज सुधारक थे लेकिन सब से ज्यादा वे एक बहुत बड़े इन-सान थे. यदि समाज के फायदे के लिये वे किसी कुर्वानी का बिधान करते तो सब से पहले अपने आप पर उसका अमल करके देख लेते. अगर'कोई नया प्रयोग करना चाहते सो सब से पहले उसकी तकलीकों खद बदीरत करके देख लेते. अपना सब कुछ त्यागकर तब वे दूसरों को त्याग करने का उपदेश देते.

गाँधी जी हर क़दम पर अपने आपनो कसीटी पर कसते थे. खाने में, पीने में, किसी से बात करने में, बहस करने में, कोई भी छाटा बड़ा क़दम डठाने में, हर बात और हर फिकरें में वह बराबर अन्दर ही अन्दर देखते रहते थे कि कहीं वह बेसल तो नहीं हो रहे हैं ? माफी के उस्ल को तोड़ तो नहीं रहे हैं ? कोई बात खुदी या घमराड के असर में तो नहीं कर रहे हैं ? दूसरे का हक तो नहीं झान रहे हैं ? जायक के लिये तो नहीं खा रहे हैं ? सचाई से बाल बराबर भी तो नहीं हट रहे हैं ? दिल के अन्दर कहीं शुक्से की रमक तो नहीं है ? अहिंसा के उस्त से तो नहीं हिंग रहे हैं ? वरीरह बरीरह.

गान्धा जी जो भी काम करते उसे तोल कर देख लेते कि अया वह सारी इनसानी क्रीम के कायदे का है या नहीं! हिन्दुस्तान की जनता के जरिये ही वह सारी इनसानी क्रीम की खिदमत करने की बात सोचते। उन्होंने एक उस्त बना लिया था कि सारी इनसानी क्रीमों का एक ही खान-दान है. दुनिया के सब इन्सान माई-भाई है. इसमें देश,

کا خون بہانو اگر آوادی ملتی ہے تو ایسی کی معجمے نہیں چاہی۔
اِسی لئے انہوں نے چوری چورا کے قتل عام کے بعد ستھاگرہ کی
نوائی بلد کو دیں ، درجنوں بار انہوں نے لمبے لیے اپولس اور
فاقہ کئے اور رو رو کو ایشور سے دعائیں مانکی ،

انسائی تاریخ میں شارد پہلی بار جداءت کی حیثیت سے
همیں یہ بتایا گیا کہ همارا کام دوسروں کو قتل کرنا نہیں ہے
بلکہ خود اپنے آپ کو بلدان کو دینا ہے اور پھر بھی آخیر میں
هم فاتحیاب دوئکے ، گادعی جی کا یہ کانا شاندار پہنام تھا ،
کسی سیاسی مقصد کو حامل درنے کا یہ بینام نہیں تھا بلکہ
انسانی قوم کی بھائی کا بنیادی پہنام تھا ، جس جنگ میں
سنچائی کی کوئی جگہ نہ ہو اُس میں مرنا مانو اپنی هستی
کو مانا دینا ہے ، بر ست اور اهنسا کی یدھ میں کنچھ بات
باتی رہ جاتی ہے ، اُس میں ھار جانے پر بھی جیت ہوتی
ہاتے ور مر جانے پر بھی امر جیوں ملتا ہے ،

گاندہ ی جی کی سب سے ہڑی خاصیت یہ تھی کہ وے ایک بہت ہڑے سیاست داں تھے' بہت ہڑے نیتا تھے' بہت ہڑے سماج سدہ ارک تھے ایکن اِن سب نے زیادہ وے ایک ہڑے السان تھے ، یدی، سماج کے فائدے کے لئے کسی قربائی کا ودھان کرتے تو سب سے پہلے اپنے آپ پر عمل کر کے دیکھ لیتے ۔ اگر کوئی نیا ہوگ چاھتے تو سب سے پہلے آس کی تکلیف خود ہرداشت کر کے دیکھ لیتے ۔ اپنا سب کچھ تیاگ کر تب رے درسروں کو تیاگ کرنے کا اُردیش دیتے ۔

گاسدھی جی ہو قدم پر اپنے آپ کو کسوئی پر کستے تھے .

کہانے میں' پیلے میں' کسی سے بات کرنے میں' بحث کرنے میں' کہی بھی چہوٹا بڑا قدم اُٹھائے ہمیں' ہر بات اُور فقر۔ میں وہ برابر اندر ہی اندر دیکھتے رہتے تھے تک کہیں وہ بےصبر تو نہیں ہو رہے میں ہ معانی کے اُصول کو تور تو نہیں رہے ہیں ہو کہا کے اُس کو تور تو نہیں کو میں ہو کہا کہ ہوں ہو نہیں کو دوسرے کا حق تو نہیں چھیں رہے ہیں ہو فائقے کے لئے تو نہیں کیا رہے میں ہو سچائی سے بال برابر تو نہیں کے لئے تو نہیں کیا رہے میں ہو سخوائی سے بال برابر تو نہیں ہمت رہے ہیں ہو کہ دوسرے کے اُس کے اُند، کہیں نصے کی رسی تو نہیں ہو وہیں ہو ہیں ہو وہیں۔

گائدھی جی جو بھی کام کرتے آسے تول کو دیکھ لیتے که وہ ساری انسانی قوم کے فائدے کے لئے ہے کہ نہیں إ هادستان کی جلکا کے ذریعہ هی وہ ساری انسانی فوم کی خومت کرنے کی بات سوچتے ، انہوں نے ایک اصہل بانا لیا تھا که ساری انسانی قوموں کا ایک هی خاندان ہے ، دنھا کے ساری انسانی قوموں کا ایک هی خاندان ہے ، دنھا کے ساری انسانی بھائی بھائی ہیں اس میں ہیھی ا

हर शोधन को जन्म देती है इसितये इनसान 'अपरिप्रही' बने यानी नायदाद के ऊपर से मालिकाना हक छोड़ है. सब की कमाई सब के लिये हो. उनकी सातवीं हिदायत थी कि 'आपसी' मुलकी और अन्तर्राष्ट्रीय—सब मगडे हम-द्दीं, प्रेम, भाईवारे की भावना, और बिना खन बहाये अहिंसा के उसल पर हल किये जाँय. हर इनसान इश्वर की बौलाद है और इरदर कभी यह पसन्द न करेगा कि इम अपनी खद्रारिजयों के लिये उसकी सन्तानों को ईजा पहुँ चार्चे या उनका खून बहायें उनकी आठवीं हिदायत थी कि इनसान इनसान के बीच न कोई छोटा है और न बड़ा, ईश्वर कभी यह पसन्द न करेगा कि हम अपने राहर या चनन्ड में किसी को छोटा या हकीर समर्भे. एक ही ईश्वर की सन्तान होने के नाते हर इनसान बरा-बरी का दावेदार है. दर अस्त हीन और पतित सममे जाने वाले इनसानों के बीच में ही ईश्वर निवास करता है. जो राहर करता है उसका सिर नीचा होता है. जो तलवार उठाता है वह उसी तलवार से मिट जाता है. छोटे-बड़े और श्रमीर-गरीब के सब भेद नक़ली हैं. अपने धमन्ड में इन-सान ने इन भेदों की बुनियाद डाली है. उनकी नवीं हिदा-यत थी कि इनसान हर तरह को चोरी से बचे. इसे वह 'श्रस्तेय' कहते थे. चार रोटी की भूख है श्रीर झगर हम है रोटी खाते हैं तो हमने दो रोटी की चोरी की, ग़रीबों के मुँह से उतने कौर हमने छीन लिये. अगर हमारा काम तीन कुरतों से चल जाता है और हम है कुरते अपने लिये जमा करते हैं तो हम चोरी करते हैं. हम एक भाई को नंगा रखने में मदद देते हैं. सब इनसानों के बराबर ही इमारा इक है, अगर इम ज्यादा लेते हैं तो हम चारी करते हैं, गुनाह करते हैं, अमानत में ख्यानत करते हैं. उनकी दसवीं हिदायत थी कि सब बड़े-बड़े मजहबों में एक सी सचाइयाँ हैं. इसिलये सब मजहवों का आदर करो. ईश्वर और घल्लाह एक हैं. इनसात ने ऋपनी बेवक्रफी में ईश्वर में भी फर्क करने की बदतमीजी की. उनकी ग्यारह-वीं हिदायत थी कि कोई कामऊँ चा-नीचा नहीं है. सच्चा माझाए वहीं है जो सच्चा मेहतर है. हरिजनों को छोटा समम्बर, उनके साथ नफरत करके हम इनसानों की बराबरी के दावेदार नहीं बन सकते. हर तरह का अम बराबर है चाहे वह राष्ट्रपति काकाम हो श्रीर चाहे भंगी का. अपने हर क़दम को गान्धीजी ने इन्हीं उसूलों की रोशनी में जाँचा और परस्वा. गांधीजी की सबसे बड़ी खासियत यह थी कि फौरन काम बनाने के लिये अपनी जिन्दगी के इन मुनियादी उसलों के साथ उन्होंने कभी सममौता नहीं किया, इन्होंने बार-बार कहा कि सचाई को त्याग कर अगर खराजवात है तो ऐसा खराज मुने नहीं चाहिये. दूसरों

هر هوشن كو جام ديتي ها. إس إله إنسان أب كرهي بل يعلى جائداد کے اوپر سے مالکانہ حق چھرودے ۔ سبکی کمائی سب کے لئے هو . أن كى ساتويں هدايت تهى كه أيسى ملتى أور اثار رائیری سسب جهکزے همدردی ، بریم بهائی چارے کی بهاؤن اور بنا خون بہائے آهنسا کے اُمول بر حل کئے جائیں۔ هر انسان ایشور کی اولاد ہاور ایشور کیھی یہ بسند نه کریکاکه هم اینی خودغرضیوں كِللهِ أس كي سفتافس كو النفا يهوچائين يا أن كا خرن بهايئن. أن كى آئهويس هدايت تهى كه إنسان انسان كے بينے نه كوئى خِهونًا هَ أور لَهَ بِرَأِ . أيشور كبهي يه يسن نه كريكًا كه هم أيني غرور یا گهماند مهل کسی کو چهواتا یا حقیر سمجههل ، آیک هی أيشرر كي سنتان هرئے كے ناتے هر انسان برابري كا دعريدار هے . دراصل هیں اور یات سمنجھے جانے والے اِنسانوں کے بیچے میں هي أيشور فواس كرتا هي . جو غرور كرتا هي أس كا سو فيعجا عولا هـ ، جو تلوار البانا هـ وه أسى تلوار سه مح جاتا هـ . چھوالہ بڑے اور امیر غریب کے سب بھید لقلی ہیں ، اپنے گھمند میں اِنسان لے اِن بھدرں ،کی بنیاد ڈالی ہے ، اُن کی قویں مدایت نهی که اِنسان مر طرح کی چرری سے بجے . أسے وہ 'آسیته' کہتے تھے . چار روتی کی بھرک ہے اور اگر ہم چھ روٹی کہاتے میں تو هم نے دو روٹی کی چوری کی ، غریبوں کے مله سے اُللے کور عام نے چھین لئے . اگر عمارا کام تین کرتوں سے چلتا ہے اور هم چھ کرتے اپنے لئے جسم کرتے هیں تو هم چوری کرتے هیں . هم ایک بهائی کو ننگا رکھنے میں مدد دیتے هیں . سب اِنسانیں کے برابر هی همارا حق هے؛ اگر هم زیادہ لیتے هين تو هم چوري كرتے هيں امانت مين خيانت كرتے هيں . أن كى دسويل هدايت تهي كه سب بريم بريم منهين مين ایک سی سنچا یاں دیں اس لئے سب مذهبوں کا آدر کوو . ایشور اور الله ایک هیں ۔ اِنسان فے اپنی بیوفونی میں ایشور میں بھی فرق کرلے کی بدتمیوں کی ۔ اُن کی گیارھوں ھدایت چي که کوئي کام اُرنيچا نيچا نهيں هے . سچا برهس راج وهي ہے جو سعیا مہتر ہے . هريجنوں كو چهوٹا سمجھ كو ان كے ساتھ تغرت کر کے مم اِنسانیں کی برابری کے دعوردار نہیں ہی سکتے ، هر طارح کا شرم برابر فے چاھے وہ راشقریتی کا کام هو اور چاہے بہلکی کا ۔ اپنے مر قدم کو کاندھی جی لے اُنہیں امولیں کی روشلی میں جاچا اور پرکھا ، گاندھی جی کی سب سے ہوی خاصیت یہ تھی که فوراً کام بنانے کے لئے اپنی وندگی کے أن بایادی امولوں کے ساتھ انہوں نے کبھی سمجھورتم نہیں کیا . الهوں کے بار دار کیا۔ که سجانی کو تباک کر اگر سوراج أنا ه تر ايسا سوراج مجهد نهين چاهاد ، دوسرون

الوائزوري



गान्धी जी के जनम दिन पर

दो अक्तूबर सन् 1957 को सारे हिन्दुस्तान ने राष्ट्र पिता महात्मा गांधी के जनम दिन को मनाया। उन्हें इम से बिछुड़े क़रीब-क़रीब दस बरस हो रहे हैं. इन दस बरसों में मुल्क ने कितने ही उतार चड़ाव देखे. हमारे इम्तहान के कितने ही मौके आये. क़द्रती था कि ऐसे मौकों पर हम गान्धी जी की पाक हस्ती को याद करते. ये भी याद करते कि ऐसी पेचीदिगयों को सुलमाने के लिये गान्धी जी नया करते. सन् 1917 से 1947 तकं मुल्क की सियासत पर गान्धी जी की जबरदस्त छ।प थी. वह जिधर हग उठाते थे उधर सारा हिन्दुस्तान चलता था. वे हमें अधेरे से रोशनी में लाये. हमें कोई रास्ता नहीं सुभ रहा था उन्होंने हमें रास्ता बताया. आजादी हासिल करने के लिये हमारं पास कोई हथियार नहीं थे उन्होंने हमें ऋहिंसा और सत्यामह का हथियार दिया. वे बालते थे श्रीर मुल्क महसूस करता था कि वह मुल्क की भावनाओं को ही पेश कर रहे हैं. मिट्टी से चन्होंने योधा पैश किये. वह जहाँ बैठते थे वह जगह मन्दिर बन जाती थी. वह जो कुछ कहते थे मुल्क झाँख बन्द करके उसपर अमल करता था. उन्होंने सबसे पहली हिदायत हमें दी कि इम अपने दिल से डर के जजबे का कराई निकाल दे उनकी दूसरी हिदायत थी कि अन्याय के सामने सर मुकाना इस बन्द कर दें उनकी तीसरी हिदायत थी कि जो कुछ सच है उसी का हम आप्रह करें यानी उसी पर हम जोर दें उनकी चौथी हिदायत थी कि अहिंसा को हम अपनी जिन्दगी में ढाले और अपने हर काम को अहिंसा की द्रवीन से देखें. उनकी पाँचवीं हिदायत थी कि हम बुगई से तो नफरत करें लेकिन बुराई करने बाले से प्रेम करें बनकी क्रुठीं दिदायत थी कि इनसान के जारिये इनसान के शोषन के हम सब दरवाशे बन्द कर दें स्वामित्व की भावना

کاندھی جی کے جنم دن پر

در اکتوبر من 1977 کو سارے هادستان نے راشریتا مهاتما گاندھی کے جلم دن کو منایا ، اُنھیں ھم سے بچھڑے تریب تربب دس برس هو رهے هيں . أن دس برساں ميں ملك نے کتنے هی ادار چوناؤ دیکھے، هدارے استحان کے کتنے هی موقع أنه ، قدرتي تها كه أيسم موقعوں يو هم كاندهي جي كي پاك هستي كوياد كرتي . يه يهى ياد كرتي كه ايسى بحيدگيس كو سلحهاني كے لئے كاندھى جى كيا كرتے ہے۔ 1917 سے 1947 تک ملک کی سیاست یر گاندهی جی کی زیردست چهاپ تهی ، وه جدهر دک اثباتر تھے ادعر سارا ھندستان چلنا نھا ، وے هميں اندهیرے سے روشنی میں لائے . اهمیں کوئی زاسته سوجه نهیں رہا تھا ۔ اُنہبر نے مدیس استه بتایا ، آزادی حاصل کرنے کے لئے عمارے پاس کوئی ہتھیار نہیں تھے۔ اُنہوں لے عمیں اہنسا اور ستیاگرہ کا عقههار دیا . وعد بواتم تھے اور ملک محصوس کرتا تھا کہ وہ ملک کی بھاؤناوں کو ھی پدھی کر رہے ھیں ، متی سے اُنہوں نے یوں ا دیدا کئے . وہ جہاں بیٹھتے تھے وہ جگہ مندر بن جاتی تھی ، وہ جو کنچھ کہتے تھے ملک آنکھ بند کر کے أس ير عمل كرتا تها . انهوں لے سب سے يهلى هدايت همين دى كه هم ايني دل سے در كے جذبے كو قطعى فكال ديں . أن کی دوسری هدایت تهی که انیانی کے سامنی سر جهکانا هم باد كر دين . أن كى تيسرى هدايت تهى كه جو كنچه سے ف اسی کا هم آگرہ کویں یعنی اسی پر هم زور دیں۔ اُن کی چوتھی هدایت تهی که اهنسا کو هم اینی زندگی میں دالیں . اینے هو لم كو اهلسا كى دوريون سا ديكون . أن كى بانجوين هدايت نبی که هم برائی سے تو تخوت کریں لیکن برائی کرنے والے سے پریم کریں ، اُن کی چھتی مدایت تھی که اِنسان کے دریعے اِنسان کے هوشوں کے هم سب دورازے بلد کریں . سیامتوں کی بھاؤنا

पूरी पुलक है खंडों और उत्तवास अध्यायों में बांटी गई है, पहले खंड में भारतीय अर्थशास की एक भूमि यानी पसे मंत्रर दिया गया है, दूसरे खंड में अर्थशास के विषय को समकाया गया है, तीसरे खंड में इस्तेमाल को त्रावार के उसूल को समकाया गया है, चीथे खंड में वैदावार की मुख्यलिक शक्तों को दिखाया गया है, पांचवें खंड में अदल-बदल के सिद्धान्त पर राशनी डाली गई है और झठे खएड में पैदावार के बटवार को समकाया गया है, इसी खंड में समाजवादी ढांवा और आर्थिक बराबरी के उसूलों पर बहस को गई है, पुस्तक को ईसावास्य मिदम् सर्वम्'—उपनिषद के श्लोक से शुरू किया गया है और सम्यत्तिदान से खत्म किया गया है, कीमती आंकड़ों के सहारे पुस्तक में दिये हुये उसूल समकाये गये हैं

नये तुक्त नजर से लिखी गई केला जी की यह पुस्तक हिन्दी अर्थशास्त्र की दिशा में एक तारीफ के लायक क़दम है. हमें उम्मीद है और दूसरी जनानों में भी इसका तज्मा होगा.

- —वि. ना पांडे

لئے نقطہ لطر سے اکھی گئی کیلا جی کی یہ پستک مندی ارتہ شاستر کی دشا میں ایک، تعریف کے الیق تدم ہے۔ همیں آمید ہے اور درسری زبائوں میں بھی آسکا ترجمہ ہو ا

--رى . نا . بالتب

विशार हों सो सदी. अकेले रहा जा सके तो सबसे अच्छा.
जैसे अकेले रहने में दुख है वैसे बच्चों के लिये सीतेली
माँ के लाने में भी दुख है. अब तुम थोड़े समय भाई के
साथ रह सकोगी. बार बार ऐसा मीक्षा न मिलेगा! दिलों
की सफाई कर लेना. कोई चिन्ता न करना. सुझ-दुख तो
धूप-खांव की तरह चाते ही रहते हैं. संसार माया से मरा
है. थाड़ी माया बाले को थोड़ा दुख. इसलिये माया और
जंजाल बढ़ाने में कोई लाभ नहीं.

"कोनां ब्रोरू, कोनां वाखरू, कोना माने बाप जी, अन्त काले जबुं एकला, साथे पुरुषने पाप जी."

यानी — "किसके बेटे-बेटी, किसकी जायदाद और किसके माँ-बाप, आखीर में तो अकेले ही जाना पड़ेगा. साथ में सिफ नेकी और बदी ही जायगी."

जवाहर लाल जी के बारे में सरदार की राय देखें (सका 255)—"जवाहर लाल जी की सचाई परस्ती और अहिंसा प्रेम ऐसा था कि वे नापाक साधनों को बद्दित नहीं करते थे."

व्यक्तिगत सत्याप्रह के सिलसिले में सरदार जब फिर यरबदा जेल पहुंचे तो गांबी जी के बजाय दूसरी ही मंडली बहां थी. सरदार ने इसपर लिखा:—

"इस बार की मंडली दूसरी ही तरह की है इसलिये बापू के साथ का रस जिसने चखा हो वही जान सकता है. फिर भी यह सममकर दिन काट रहा हूँ:—

> "तुलसी या संसार में भांति भांति के लोग, सबसे हिल मिलकर चलो नदी नांव संयोग."

इसी तरह के सैकड़ों प्रसंगों से पुस्तक भरी पड़ी है. आजाद हिन्दुस्तान के इतिहास को समक्तने के लिये इस पुस्तक से काकी मदद मिलेगी.

भारतीय अर्थशास्त्र

लेखक श्री भगवान दास केला, प्रकाशक भारतीय प्रथ-माला दारागंज, इलाहाबाद; सके 651, माल पांच दपया।

भारतीय अर्थशास्त्र के ऊपर केला जी ने भारतीय सुक्षते नजर से हिन्दी भाषा में जितना और जो कुछ लिखा है इतना और किसी ने नहीं. अर्थशास्त्र में इनका नजिरया गान्धी जी का नजिर्या है. इस बड़ा किताब को भी उन्होंने सर्वोद्य की निगाइ से लिखा है. उनका दावा है कि यही अर्थशास्त्र भारतीय जनता के हित और कल्यान का अर्थ-शास्त्र है. وچار هیں سو صحیعے ، اکیلے رہا جا سکے تو سب سے آچھا ،

جیسے اکیلے رہنے میں دکھ ہے ویسے بچوں کے لئے سوتیلی مال کے

لانے میں آپیی دکھ ہے ،آب تم تو درے سمئے بھائی کے ساتھ رہ سکو،

کی بار بار ایسا موقع نے ملیکا، داس کی صفائی کر نینا، کوئی چنتا

نے کرنیا ، سکم دکھ تو دعوب چھاؤں کی طرح آتے عی رہتے

میں ، سنساو مایا سے بھرا ہے ، تھوتی مایا والے کو تھوتا دکھ ۔

اِس لئے مایا اور چنجال بڑھانے میں کوئی لابھ نہیں ،

کونا چھورو' کرنا واچھور' کرنا مائے باپ جی' انت کالے جوروں اکیلا' ساتھے پلیم نے پاپ جی ۔''

یعلی کس کے بیٹے بیٹی کس کی جانداد اور کس کے مان باپ ! آخیر میں تو آئیلے ھی جانا پڑیکا ، ساتھ میں مرف نیکی اور بدی ھی جائیکی ،''

جواهر لال جی کے بارے میں سردار کی رائے دیکھیں (صنحہ 2.55) جواهر لال جی کی سچائی پرسٹی اور امنسا پریم ایسا تھا کہ وے ناپاک سادہنوں کو برداشت نہیں کرتے تھے گ

ریکای گت سالیاگرہ کے ساسلے میں سردار جب پھر یرردا جیل پہونچے تو گاندھی جی کے بنجائے دوسری ھی ماڈلی رہاں تھی ۔ سردار نے اِس پر لکھا :—

''اِس یار کی منڌلي دوسری ھی طرح کی ھے اِسلیٹے باپو کے ساتھ کا رس جس نے چکھا ھو وعی جان سکتا ھے ۔ پھر بھی یہ سجھکر دن کات رہا ھوں :—

> وانلسی یا سلسار میں بھائٹی بھائٹی کے لوگ ا سب سے حل مل کر چلو ندی فاؤ سنھوگ ۔''

اسی طرح کے سینکروں پرسنگوں سے لیسٹک بھری پڑی فے ، آزاد ھندستان کے انہاس کو سمجھنے کے لئے اِس لیسٹک سے کانی مدد ملیگی ۔

يهازانه أرته شاستر

لیکھک شرق بھگوان دائس کیلا' پرکشک بھارتید گرفتھ مالا داراگئے' اِلمآباد؛ صفحے 1651' مول پانچ ررپید بھارتید اُرت شاستر کے آرپر کیلا جی نے بھارتید نقطہ نظر سے هندی بھاشا میں جننا اور کسی نے نہیں۔ اُرت شاستر میں آنکا نظرید گاندھی جی کا نظرید ہے۔ اِس بڑی کتاب کو بھی آنھوں نے سررودید کی نکاہ سے لکیا ہے۔ آنکا دعوی ہے کہ یہی آرتو شاستر بھارتید جانا کے جس اور کلیان کا اُرتو شاستر بھارتید جانا کے جس اور کلیان کا اُرتو

बरबदा जेल में एक बार गान्धी जी ने कहा—'रक्सा हुआ साँप भी काम का'—पूछने पर कि यह कहावत कैसे चली ? बापू ने कहा—''एक बुदिया के यहाँ साँप निकला. उसे मार दिया गया. बुदिया ने उसे फेंकने के बजाय हुप्पर पर रख दिया. एक उन्ती हुई चील ने, जो कहां से मोतियों का हार ले आई थी, उसे देखा. हार से साँप उसे ज्यादा कीमती लगा। इसिलये हार तो उसने छप्पर पर हाल दिया और साँप उठा ले गई. इस तरह बुदिया को साँप संग्रह करने से हार मिला.,'

सरदार ने कहा—"बापू! इसका मूल दूसरा है!" बापू ने पूछा—"क्या ?"

सरदार बोले: — "एक बनिये के यहाँ साँप निकला. वसे मारने वाला कोई मिलता न था और बनिये की हिम्मत नहीं होती थी. इसलिये वसने साँप को पतीली के नीचे ढाँक दिया. रात को चोर आये. वे कुत्हल से पतीली बघाड़ने लगे तो साँप ने काट लिया और चोरी करने के बजाय स्वर्ग सिघार गये." (सफा 117).

14 जून 32. गरमी में नीबू महँगे हो गये. बापू बोले— "हम नीबू के बजाय इमली लें."

बस्तम भाई बोले-- "इमलो के पानी से वायु बढ़ेगी और हहिबयों में दर्द होगा."

बापू ''लेकिन जमनालाल तो पीते हैं १"

बस्तभ भाई-- "जमना लाल की हिंडुयों तक इमली को घुसने का रास्ता नहीं.."

बापू - "मगर एक बार मैंने इमली बहुत खाई है ."

बस्तम भाई—''उस समय आप पत्थर भी हज्म कर सकते थे. आज तो बृदे हैं.''

पक बार बापू ने यरवदा जेल में नारियल की रस्सी की खाट अपने सोने के लिये मँगवाई. बल्लम भाई निवाइ की खाट के पक्षा में थे. बापू ने कहा—''सुमे याद है कि हमारे यहाँ बचपन में इस तरह की नारियल की रस्सी की खाटें काम में आती थीं. मेरो माँ उन पर अद्रख बीलती थीं.'

बल्लम भाई—"इसी लिये तो कहता हूँ कि इस पर निवाद जगवा लीजिये. बरना मुठ्ठी भर हिंदूयों की चमड़ी खिता जायगी."

गान्धी जी ने जब हरिजन अवार्ड के खिलाफ उपवास किया तो बल्लम भाई को नासिक जेल में हटा दिया गया. इस पर बापू ने कहा —''पिंजड़ा तो है पर पंछी उड़ गया."

सरदार के पारिवारिक जीवन की मां की अपनी लड़की मिन बहिन के नाम जिसे इस खत में देखें - "फिर से नवबाह के बारे में डाझा माई (सरदार के बेटे) के जो ایرودا جهل میں ایکارالادھی جی قراب الراحوا سالی ایک بودا جهل میں ایکارالادھی جی قراب الراحوا سالی ایک بودی ایک بودی آلی بودیا نے ایک بودیا کیا ، بودیا نے آلی بهتا کے بجالہ جہر یو راہ دیا ، ایک آرتی دوئی جهل آلی بهتا اس موتیوں کا دار نے آئی بهت اس کے دیکھا ، دار سائٹ آسے زیادہ قیمتی اگا ، اِس لئے دار تو اُس نے جهور یو دال دیا اور سائٹ آٹیا لے گئے ، اِس طرح بودیا کو سائٹ سلکوہ کرتے سے دار ملا ، '

سردار لے کہا۔ ''باہو! اِس کا مول دوسوا ہے '' باہو لے ہوجہا۔ ''کیا ؟ ''

سردار بولی۔"ایک بلئے کے یہاں سائپ نکلا، آسے مارئے والا کوئی ملکا نه تها اور بلئے کی همت نہیں هوتی تهی ، اس لئے اُس نے سائپ کو یکیلی کے نبیجے قفائک دیا ، رات کو چور آئے ، و سائپ نے خور آئے ، و سائپ نے کات اور چوری کرنے کے بجائے سورگ سدھار گئے ،" کات اور چوری کرنے کے بجائے سورگ سدھار گئے ." (مفتحہ 117) ،

14 جرن 32 گرمی میں نیبو مہنگے ہو گئے، باپو بولے— اللہ فیبو کے بجانے املی ایس ."

واجھ بھائی بولے۔۔''اِملی کے پانی سے وابو بوعیکی اور هذیوں میوں درد هوگا اِ"

بايو بولي--"ليكن جمنا لال تو پيتم هيل ؟"

ولبه بهائی۔۔۔ وقیمنا قال کی هذیوں تک اِملی کو گهسلی کا راسته نهیں ۔''

پاپو--- امکر أيکبار مينے إماى بهت کهائي هے ...

راجه بھائی.۔۔''آس سمئے'آپ پتور بھی دغم کر سکتے تھے ، آج تو برزھے دیں ،''

ایکہار باہو نے یوردا جہل میں ناریل کی رسی کی کھات اپنے سوئے کے لئے ماکوائی ، وابع بھائی نواز کی کھات کے پکش میں تھے ، باہو نے کہا۔"مجھے یاد ہے کہ ھمارے بہاں بحجین میں ایس طرح کی ناریل کی رسی کی کھائیں کیم میں آتی تھیں ، میری ماں ان پر ادرک چھیلتی تھی ،"

ولبه بهائی۔۔''اسی اللہ تو کہتا عرب که اِس پر نواز لکوالیجگہ، ورند متھی بهر هذیوں کی چمزی چهل جائیگی،'' گالدهی جی نے جب هریجی اوارت کے خلاف آپولس کیا تو وابع بهائی کو ناسک جیل میں هتا دیا گیا، اِس پر باپو نے کہا۔''ینجو آ تو فعے یو ینجھی آو گیا،''

سردار کے پربوارک جهرن کی جہانکی اپلی اوکی ملی بہن کے؛ نام اکھے اِس خط میں دیگیں۔۔"پہر سے وواد کے بارے میں ڈاھیا بھائی (سردار کے بیٹے) کے جو

क्रान-विक्रान के खोजियों के लिये पुस्तक काफी दिल-चस्प है

म्दान गंगोत्री

जैखक भी दामोद्रदास मूँदड़ा, प्रकाशक सर्व सेथा संघ, राजघाट, काशी; सफे 312, मोल दो रुपया आठ ष्टाने.

लेखक आचार्य विनोश के पटुशिष्य और सेक्रेटरी थे श्रीर इस नाते भूदान श्रान्दोलन के श्राग्राज के चश्मदीद गवाइ थे . तेलंगाना के पहले भूदान से लेकर सेवागाँव पहुँचने तक विनावा के राज-बराजा के काम, बातचीत और उपदेशों की दिलचस्प माँकी इमें इस डायरी में देखने को मिलती है. पढ़ने बाले के दिल पर भूदान की ऋइमियत साफ नक्श हो जाती है. विनोबाजी के बेशकीमत उपदेशों का अमृत इसमें मिलता है. भूदान आन्दोलन को सममने बाले हर शख्स के लिये यह किताब बढ़े काम की है.

सवी दय पदयात्रा

लेखक, प्रकाशक वही. स के 225; मोल एक रूपया.

विनोबा जी ने अपनी पद यात्रा के सिल्धिले में जो अनमोल उपदेश दिये वह इस किताव में इकट्टा करके छापे गये हैं. आजकल की दुनिया और हिन्दुस्तान की सियासत की रोशनी में विनोबा जी के इस पुस्तक में जाहिर किये हुए विचार सही रास्ता दिखाने का काम करेंगे. पुस्तक सबके पढ़ने लायक है. खपाई, सफाई को देखते हुये पुस्तक

सरदार बल्लभ भाई (दूसरा भाग)

सम्पादक नरहरि डा० परीख, प्रकाशक-नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, स्फे 651, जिल्दबाली पुस्तक के दाम पाँच रुपये.

सरदार वल्लभ भाई पटेल की सवाने डमरी यानी जीवन चरित्र की यह दूसरी जिल्द है. इस जिल्द में सन 30 के नमक सत्यात्रह से लेकर सन 42 के भारत छाड़ो मान्दोलन तक के 12 बरसों के उन बाक्रयात का जिक है जिनका तास्त्रक सरदार पटेल की जिन्दगी से था. इसमें कीई शक नहीं कि ये बारह बरस मुल्क की सियांसी जिन्द-गी के लिहाज से बहुत ही ऋहम थे. लेखक ने छोटी-छोटी घटनाओं को भी शामिल कर लिया है, ऐसी घटनाएँ जिन-से सरदार के चरित्र पर रोशनी पढ़ सकती थी. ये घटनाएँ काफी दिलचस्प, शिक्षा देने वाली और उसूलों से ताल्लुक रखने वाली हैं. इनसे गान्धीजी. औरजवाहर लाल जी के साथ सरदार के मीठे वाल्लुकात की माँकी मिलवी है.

بهودان گنگوترو

لهمک شرق دامودر داس جوندوا درکشک سرو سهوا سنع، راجعهات كاشى؛ منحم 2و3، مول دو رويه أنه ألى .

ایمک آجاریہ ونویا کے ہدو ششیہ اور سکریوی تھے اور اِس ناتے بردان اُندولن کے آغاز کے چشم دید گواہ تھے . تیلنگانا کے دیلے بھردان سے لیعر سیوا گاؤں یہونچینے تک ونوبا کے روز بروز کے کامابات جیمت اور ایدیشوں کی دلچسپ جہانکی همیں اِس تایری میں دیکھنے کو ملتی ہے . پڑھنے والے کے دل پر بھودان کی اھمیت ماف نقش ھو جاتی ہے. ونوبا جی کے بیش قيمت أيديشون كا أمرت إس مين ملة هـ ، يهودان آندولن کو سمجھنے والے ہو شخص کے اللہ یہ کتاب بڑی کام کی ہے .

سروديم يد ياترا

ايكيك بركاشك وهي صنحے 225؛ مول أيك رويه، . رنوبا جی نے اپتی پد یا وا کے سلسلے میں جو انمول أيديهن ديئه وه إس كتب سين إنتها كر كے چهايے گئه هين . آجال کے دلیا اور مندستان کی سیاست کی روشنی میں ونوبا جی کے اس بستک میں طاعر اللہ ہوئے وچار صحوم راسته دنهانے کا کام کرینکے . بستک سب کے بردانہ کے الیق ہے . چهپائی ٔ صفائی کو دیکھتے هوئے یستک سستی کے . سردار ولبه بهائي (دوسرا بهاک)

سمهادک ترهری ذا . پریکه پرکشک نوجهری پرکشن ملدر اخمدا باد طنعه 651 جاد- والي يستك كے دام بانيم

سودار ولیه بهانی یدل کی سوانسم عمری یعلی جهون چراتر کی یه درسری جلد فی ایس جلد میں سی 30 کے نیک ستهاکرہ سے سے لیمر سن 42 کے بھارت چھروں أندولن تک کے 12 ہرسیں کے اُن رافات کا ذکر ہے جن کا تعاق سردار چاہل کی زلدگی سے تھے ، اِس میں کوئی شک نہیں کے یہ بارہ برس ملک کی سیاسی زندگی کے لحاظ سے بہت ھی اھم ھان ، لینهک لے چبوٹی چبوٹی گیٹناؤ کو بھی شامل کر لیا ہے، ایسی گئنائیں جی سردار کے چرتر پر روشنی پر سکتی تھی ، یہ كيتنائين كاني دليسب عكشا دياء والي أور أمولس س تعلق رعل والي هين. إن م الندي جي جواهر ال جي اور مردار. کے میلیے تعلقات کی جہائکی ملتی ہے .

सैक्डो ऊँचाइयों से कामयाव त्कान ,

जनता के अधिकारों की गरजती हुई लहर बनकर बह रहा है!

सिपाहीं भीर सैनिकों की कम्पनियाँ यके बाद दीगरे

आखिर में उन्हें याद आता है कि उनकी भी मातृ-

यह क्या कम है कि अपने बस भर वे लड़े जनता की आजादी के लिये और अपने फीजी नाम के लिये।

ईश्वर, उम्मीद और इतिहास तीनों हिन्दुस्तानियों की तरफ थे !

पुस्तक की झपाई वरीरह अच्छी है. अंगरेजीवाँ हर देशभक्त स इमारी यह प्रार्थना है कि वह इस पुस्तक को जरूद पढ़े,

न जाने राम श्रीर उसके साथियों का श्रमियान

मूल रूसी जवान के लेखक एन० नसीव; मूलरूसी से अनुवादक श्री अर्द्धेन्दु गोस्वामी; अनुवाद की भाषा के सम्पादक-डाक्टर महादेव साहा; प्रकाशक ईस्टर्न ट्रैडिंग कम्पनी, 64 ए धरमतल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता-13, मोल तीन रूपया. छपाई, सफाई, जिल्ह सब अच्छी.

बन्नों के साहित्य की यह रूसी पुस्तक रूस में बहुत नाम कमा चुकी है. सरता कहानी के रूप में लेखक ने बिज्ञान के चमत्कारों को बड़ी दिलचस्पी से बच्चों को सम-माने की कोशिश की है. एक बार हाथ में उठा लेने से बच्चे इसे पूरा पढ़कर ही छोड़ते हैं. प्रकाशक बधाई के हक़दार हैं कि बच्चों के लिये ऐसी सरल वैज्ञानिक ईजादों की पुस्तक उन्होंने शाया की. रंगीन चित्रों से पुस्तक की उपयोगिता बेहद बढ़ गई है.

मानव जाति का उत्भव

मूल हसी लेखक गगुरेब, अनुवादक और प्रकाशक बही ऊपर की पुस्तक के; क्रोमत एक रुपया बासठ नए पैसे. सफे 133; सचित्र; अपाई, सफाई अच्छी.

१३३ सफों की इस किनाब में बिद्वान लेखक ने इस बात की छान-बीन की है कि इनसानी नस्त का आगाज क्या था १ पाँच करोड़ बरस पहले उसकी क्या शक्त थी १ फिर दरजेवार उसने कैसे तरक्षकी की और आखीर में किस तरह बन्दर की योनि और जिस्म में तब्दील हाते-हाते कैसे वह इनसान बना. लेखक ने पुस्तक के सफों में जो दावे पेश किये हैं उनका समझाने के लिये तस्वीरें भी दी हैं. दूसरे वैद्वानिक मतों को पेश करके उनकी ताईद या मुखा- बिफत की है. डारबित और एंगस्स की राय को लेखक ने अराहा है और नई खो जों के आधार पर उन्हीं रायों पर अवनी दलीलों को कायम किया है.

سیکروں آونسیائیوں کے کامیاب طوفان اور مختلف اور مختلف اور شینکروں کی گرجتی ھوئی ابوری کردیاء رھائے اسپیاھی اور شینکروں کی کمینیاں یکےبعد دیکر ہجاگ رھی ھیں المجھن میں انہیں یاد آنا ہےکہ آنکی بھی ماتر یھومی ھیں المجھن کیا کم ہے کہ اپنے بس بھر رسالتھ کے لئے اور دینے نوجی ٹام کے لئے ا

پستک کی چیپائی وغیرہ اچھی ہے ا هر انکریوی دان دیش بہکت سے مباری یہ پرارتینا ہے که وہ اس پستک کو غرور پڑھے

نجائے رام اور اس کے ساتھوں کا ابھیاں

مهل روسی زبان کے لیکھک آیں۔ نسور؛ مول روسی معہ انوادک شری اردھیندو گرسواسی؛ انواد کی بھشا کے سمھادک گاکٹر مہادیو ساھا؛ پرکاشک آیسٹرن ڈریڈنگ کمپنی' 4-64 دھرمتاء اسٹریٹ' کلکته -13؛ مول تین روپیه' چھپائی' صفائی' جلد سب اچھی ۔

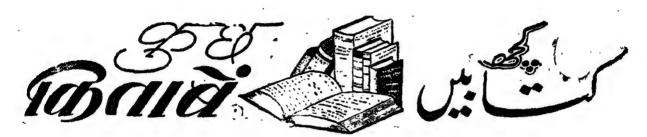
بچوں کے ساھتیم کی یہ روسی پستک روس میں بہت نام کا چکی ہے۔ سرل کہائی کے روپ میں لیکھک لے وگیاں کے چمتکاررں کو بڑے دلچسپ طریقے سے بچوں کو سنجہائے کی کوشش کی ہے۔ ایک بار ھاتھ میں آٹھا لیلے سے بچے اِسے پوا پوھکر ھی چھورتے ھیں ۔ پرکاشک بدھائی کے حقدار ھیں که بچوں کے لئے ایسی سرل ویکیانک ایجادوں کی پستک آنھوں نے شائم کی ، رنگین چتروں سے پستک کی آپیوگٹا ہے حد بوھ گئی ہے ۔

ماتو جائی کا اُدنھر

مول روسی لیعهک ک ، گررریو؛ انوادک اور پرکاشک وهی آویر کی پستک کے؛ قیمت ایک رویه، باسلم لئے پهسے ، مفحے 133؛ چهوائی صفائی اجهی .

اس کتاب میں ودوان لیکھک نے اِس کتاب میں ودوان لیکھک نے اِس یات کی چھان بھن کی ہے کہ انسانی نسل کا آغاز کیا تھا کوروز برس پہلے اُس کی کیا شکل تھی پھر درجھوار اُس نے کسی ترقی کی اور آخیر میں کس طرح بلدر کی یونی اور جسم سے تبدیل ہوتے ہوتے کیسے وہ انسان بنا ، لیکھک نے پیشک کے مفتصوں میں جو دعوے پیش کئے ہیں اُن کو سمجھانے کے لئے تصریریں بھی دی ہیں ، دوموے ویکھانگ متوں کو پیش کر کے اُن کی نائید یا متعالفت کی ہے ، تارون اور لیکلس کی رائے کو ایکھک نے سراھا ہے اور نگی گھوجوں کے اور لیکھی نے سراھا ہے اور نگی گھوجوں کے اور لیکھی کے سراھا ہے اور نگی گھوجوں کے

آممار پر آنہوں رائھوں پر اپنی دلیاس کو قایم کیا تھ . گھان رکیان کے اورجوس کے لئے یستک کانی دلجیسیا تھے.



The Revolt of Hindostan—लेखक धर्नेस्ट जोन्स. सम्पादक श्री स्नेद्दांशु कान्त आचार्य और श्री महा-देव प्रसाद साहा, प्रकाशक ईस्टर्न ट्रेडिङ्ग कम्पनी, 64,A धर्मतल्ला स्ट्रीट, कलकता-13, क्रीमत तीन रूपया, पृष्ठ संख्था 55.

चार्टिस्टनेता अर्नेन्ट चार्ल्स जोन्स का मशहूर काव्य प्रमथ 'रिबोल्ट आफ हिन्दुस्तान' का यह हिन्दुस्तानी पडी-शन बड़े मौके से छाप कर प्रकाशित किया, गया जबिक मुल्क सन 1853 की शताब्दी मना रहा था. कविता के साथ साथ जोन्स के सन 1807 के मुताह्लिक लेख भी पुस्तक के आखीर में दिये गये हैं. सम्यादक अपनी भूमिका में लिखते हैं:- "जबिक हिन्दुस्तान में देश भर में सन 1857 की शताब्दी मनाई जा रही हैं यह याद करके ख़शी होती है कि कम से कम एक अक्सरेज तो था जो 1857 के बिद्रोह को न देवल मुनासिय और ठीक सममता या बल्कि इसे होके रहने वाली घटना मानता था." जोनस 26 जनवरी 1859 को पैदा हुआ और 2 ं जनवरी 1869 को मरा. जोन्स ने बिटिश शायग्र नीति की जबरदस्त मुखाल-फत की. इसके बिडोही बिचारों के सबब इसे 6 जून सन 1848 को गिरफ्तार कर लिया गया और 9 जुलाई सन् 1850 तक उसे जेल में रहना पड़ा. जिस काल कोठरी में उसे तनहाई में रखा गया वह 13 फुट लम्बी और सिफ् 6 फुट चौड़ी थी. इतनी खुली हुई थी कि बारिश का पानी श्रीर बस्फीले तूफानों के थपेड़े इधर में उधर निकल जाते थे. जोन्स की सेहत बेहद खराब हो गई. वहीं उस काल कोठरी में जोन्स ने 'दि न्यू वरुडे' नाम की कविता लिखी जो बाद में सन 1557 में 'दि रिवोल्ट आफ हिन्दुस्तान चार न्यू वर्ल्ड, नाम से खपकर शाया हुई. जेल में लिखने का सामान नहीं था. जोन्स ने एक पुरानी किताब के हाशि-यों पर अपने खून से वह कविता लिखी. पूरी की पूरी न क्म बेहद सुन्दर है. एक नमूना देखें :--

The Revolt of Hindostan لیکهک آرتست جونس سیهادک شدی استیانشو کا نت آچاریه اور شری مها دیو برسان سامه اور برکشک آیسترن تریدنگ کنینی ۴۵ م 46 مرمناه استریت کلکته 13 قیمت تین روپیم پرشتم سنهها 55 .

چارتست نویما ارنیست چاراس جونس نا مهشور کاریه گرنته 'ربولت آف مدستان' کا یه هدستانی ایداشن بود. مرقع سے چواپ کر پرکاشت کیا گیا جب که ماک سی 1857 کے شتابدی مداررہا تھا۔ کریتاکے ساتھ ساتھ جولس کے سن 1857 كي معلق ليم بهي يستك كي أخير مين ديئه گئے هين . سهادک اپنی بهرمیکا میں لکھتے ھیں:--"جب که هندستان میں دیھی بھر میں سن 1857 کی شکاہدی مبائی جا رهی ہے یہ یاد کر کے خوشی ہوتی ک که کم سے کم ایک انگریز تو تھا جو 1857 کے ورودھ کو نے کہال مذاسب اور ٹھیک سمیجا نها بلكة أسه هو كي رهنه والي كهتنا مانكا نها ." جونس 26 جنبرى 1819 كو يددا هوا اور 26 جنورى 1869 كو مرا. جونس نے برٹھ شوشن نیتی کی زبردست متعالفت کی . اس کے ودروهی وچاروں کے سبب آسے 6 جون سن 1848 کو گرنتار کر لیا گیا اور و جوائی سن 1856 تک أسم جيل ميں رهنا ہوا ۔ جس کال کوئھری میں اسے تنہائی میں رکھا گیا وہ 31 زمك لىي أور صرف 6 زمت چارى تهى . إننى كهلى هوئى تھی کہ بارہی کا پائی اور بوفیلے طوفانوں نے ''تھھیزے ادھر سے ادهر نعل جاتے ہے . جرنس کی صحت بےحد خراب هو کئی ۔ وہیں اُس کال کوٹھوی میں جونس نے 'دی قیوورلڈ' للم كي كوينا لهي جو بعد ميں سن 1857 ميں ادى ريوات أف هدينان أر نيو وراد؛ نام سه چيپ كر شائع هوئي . جيل میں لکھلے کا ساملی نہیں تھا ، جونس کے ایک پرائی کتاب کے حاشیرں پر اپنے خون سے وہ کویکا لکھی ، پوری کی پوری نظم برحد سلور في ايك تموله ديكيس --

में नर्संखना. हिन्दू और मुस्तमान भाइयो. अपने छोटे-छोटे तफरकों को भूत जाओ और मैदाने जंग में एक मंद्रे के नीचे साढ़े हो जाओ. जो भी शक्स इस क़ौमी जंग की मुखातफ़त करेंगा वह ख़ुद अपने सर पर कुल्हाड़ी मारेगा और ख़ुदकुशी का गुनाह करेगा."

इस नोट से यह साफ़ होजाता है कि देश की सियासी तसबीर उस समय भी लागों के सामने उतनी हो साफ़ थी कि जितनी आज है.

दिल्ली के घेर के दिनों में इनक़लाबी नेताओं में आपस में सख्त तफ़रके पैदा हो गये थे. इसका इशारा 'पयामे अजादी' में अपी सम्राट पहादुरशाह 'ज़फर' की एक नदम के इस शेर से मिलता है:—

> "क्रफस में है क्या फायदा शोरो गुल से' असीरो करो कुछ रिहाई की बातें."

श्रखनार के ग्राहक फाँसी के तख़ते पर

उत्तर के बयान से यह साफ है कि 'प्यामे 'आजादी' बिलाशक भारत का सब से पहला राष्ट्रीय पत्र था. सर वि'लयम हावड ने लिखा है कि "दिल्ली पर कवजा करने के बाद 'प्यामे आजादी' के सम्पादक मिरजा बेदारबख्त के बदन पर सुझर की चरबी मलकर उन्हें फाँसी दे दी गयी. सर हेनरी काटन अपनी पुस्तक 'इंडियन ऐन्ड होम मेमायर्स' में लिखते हैं कि "श्रंप्रेजों के दिल्ली पर क़ब्जा करने के बाद वे सभी लोग फाँसी पर लटका दिये जाते थे जिनके घरों में 'प्यामे आजादी' का कोई नम्बर मिलता था. दुनिया के अखशारी इतिहास में शायद किसी भी अख़्बार के पाठकों को पाठक होने के अपराध की ऐसी जालिमाना सजा न मिली होंगी.

میں قد پہنسنا ، هندو اور مسلمان بھائیو گینے جہرات چہرات تحوق تاریخی کو بھول جاء اور میدان جنگ میں ایک جہنات کے تبدیجے گیڑے ہو جائے ، جو بھی شخص اِس قومی جنگ کی بہنچالفت کریگا وہ خود اپنے سر پر کلہاڑی ماریکا اور خودنشی کا گناہ کریگا ،"

اِس نوب سے یہ ماف ہو جاتا ہے کہ دیش کی سیاسی تصویر اُس سُمے بھی لوگوں کے سامنے اُتنی ماف تھی کی جتنی آئے ہے ،

دلی کے گھورے کے دنہیں میں انقلابی انتازی میں آپس میں سخت نفرقے پیدا ہو گئے نہے ، اِس کا اِشارہ 'پیام آزادی' میں چھپی سمرات بہادر شاہ 'ظفر' نی ایک نظم کے اِس شعر سے ملتا ہے ۔

''تنھی میں ہے کیا فائدہ شور و غل ہے؛ اسیرو کرو کچھ رھائی کی ہاتیں ۔'' آخیار کے گامک پیالسی کے تختے پر

آوپر کے بیان سے یہ صاف ظاہر ہے کہ 'پیام آزادی' بلاشک بھارت کا سب سے پہلا راشتری پتر تھا ۔ سر والم ھاررۃ نے اکھا ہے کہ ''دلی پر قبقت کرنے کے بعد 'پیام آزادی' نے سپادک مرزا بیدار بخت کے بدن پر سرر کی چبی مل تر آنھیں پہانسی ہے دی گئی ،'' سر ھھلڑی کائن اپلی پستک 'انتین ایلڈ ھوم مرمایرس' میں لکھتے ھیں گه ''امگریزوں کے دلی پر قبقت کرنے' کے بعد وے سبھی اوگ پہانسی پر لٹکا دیئے جاتے قبقت کرنے' کے بعد وے سبھی اوگ پہانسی پر لٹکا دیئے جاتے تھے جن کے گوروں میں 'پھام آزادی' کا کوئی نمبر ملتا تھا ۔'' دنیا کے اخباری انہاس میں شاید کسی بھی اخبار کے ہاتھکوں کو پاٹھکوں خو پاٹھک ھونے کے اپرادھ کی ایسی ظالمانہ سزا نہ ملی

बहादुरशाह का ऐतान

'लन्दन टाइम्स'ने सर विलियम रसल को ही सन 1956 क जंगे आजादी की रिपोर्ट देने के लिए अपना खास संवाददाता बनाकर यहाँ भेजा था. उन्होंने 'लन्दन टाइम्स' के सम्पादक जान डिलेन के नाम लखनऊ से अपने एक पत्र के सम्पादक जान डिलेन के नाम लखनऊ से अपने एक पत्र के साथ 'पयामे आजादी' में प्रकाशित सम्राट बहादुरशाह का एक ऐलान भी भेजा था जिसे पढ़कर इसमें जरा भी शुबहा नहीं रह जाता कि सन 57 का युद्ध मारत की स्वाधीनता का संग्राम था और 'प्रयामे आजादी' उस युद्ध का सुख पत्र था. वह ऐलान इस प्रकार है:—

'हिन्दुस्तान के हिन्दुक्रों और मुसलमानों' उठा ! भाइयों, उठो ! खुदा ने इनसान को जितनी बरकते' अता की हैं उनमें सब से कीमती बरकत आजादी की है. वह जालिम नाकस जिसने धोका दे दे कर हम से यह बरदत छीन ली है क्या हमेशा के लिए हमें उससे महरूम रख सकेगा ? क्या खुदा की मरजी के खिलाफ इस तरह का काम हमेशा जारी रह सकता है ? नहीं, कभी नहीं, फर्रांगयों ने इतने ज़ुल्म किये हैं कि उनके गुनाहों का प्याला लवरेज हो चुका है...खुदा श्रव नहीं चाहता कि तुम खामाश रहा क्योंकि उसने हिन्दुश्रों श्रीर मुसलमानों के दिलों में अप्रेजो को अपने बतन से बाहर निकालने की स्वाहिश पैदा कर दी है श्रीर ख़ुदा के फल्ल से श्रीर तुम लोगों की वहादुरी से जल्द ही अंभेजों को इतनी कामिल शिकस्त मिलेगी कि हमारे इस मुलक हिन्दुस्तान में उनका जरा भी निशान न रह जायगा. हमारी इस फीज में छोटे बढ़े की कोई तमीज न होगी. सब के साथ बराबरी का बर्ताव किया जायगा. इस पाक जंग में शरीक होने" वाले सब आपस में भार्र-भाई हैं. उनमें छोटे-बड़े का कोई फर्क नहीं. मैं अपने तमाम हिन्दी भाइयों से दरखास्त करता हूँ कि वह .खुदा के बताये हुए इस पाक फर्ज को पूरा करने के लिए मैदाने जंग में कूद पड़े."

जी० बी० मालेसन ने अपमी पुस्तक 'दि रेड पैम्फ्लेट' में 'पयामे आजादी' के एक सम्पादकीय नोट का जिक किया है जिसमें ,लिखा है कि "हिन्द के बाशिन्दों. अरसे से जिसका इन्तजार या आजादी की वह पाक घड़ी आन पहुँची है.....हिन्दुस्तान के बाशिन्दे अब तक धोंके में आते रहे और अपनी ही तलवारों से अपने ही गले काटते रहे, अब हमें मुल्क फरोशी के इस गुनाह का कुफ्ज़ारा (प्रायश्चित) करना चाहिये. अंग्रेज अब भी अपनी पुरानी द्शावाजी से काम लेंगे. वे हिन्दुओं को मुसलमानों के खिलाफ और मुसलमानों के खिलाफ और मुसलमानों के कि कोशिश करेंगे. लेकिन भाइयों, उनके जाल और फरेबों

اللدن قائمس فی سر ولیم رسل کو هی سن 1958 کی لگ آزادی کی رپورت دیلے کے لئے اپنا خاص سنواددتا بنا کر اس بیعجا تھا۔ آنہوں نے لندن 'آئمس' کےسپادک جان ڈیلین نام لکیلؤ سے ایک پتر کے ساتھ پیام آزادی' میں پرکاشت رات بہادر شاہ کا ایک اعلن بھی بھیجا تھا ۔ جسے پڑھ کر میں ذرا بھی شبت نہیں رہ جاتا تھا کہ سن 57 کا بدھ اوت کی سوادھینتا کا سنکرلم تھا اور 'بہام آزادی' اُس بدھ کا پہر تھا، وہ اعلی اِس برکار ہے .

"هندستان کے هندی اور مسلمانو اتهو ! بهائيو اتهو إ خدا انسان کو جننی برکتیں عطا کی هیں اِن میں سب سے بنی برکت ازادی کی ہے . وہ ظالم ناکس جس لے دھوکا ے کر هم سے يه آرأدى جهين لي هے کيا هميشة کے الله همين ے محروم رکھ سکیگا 9 کیا خدا کی مرضی کے خالف اِس ح كا كام هديشه جارى ره سكتا هـ 9 نهين كبهى نهين، عیس نے آناے ظلم کئے میں که ان کے گناموں کا بیالہ لیریز مو ا هي.. خدا اب نهين چاهٽا که تم خامرش رهو کيونکه اس ھندؤں اور مسلمانوں کے دلوں میں انگریزوں کو اپنے وطن ہامر نکا لمے کی خوامص بیدا کر دی ہے اور خدا کے نفل اور لوگول کی بہادری سے جلد ھی انگریزوں کو انتی کالل ست مليكي كه همارد إس ملك هندستان مين ان كا ذرا ے نشان نه ره چائيگا ، هماري اِس فرج ميں چهرائے بڑے کي ی تمید قد هو گی . سب کے ساتھ ہرابری کا برتاؤ دیا جائیگا . ں ھاک جنگ میں شریک ھونے والے سب آپس میں بھائی ائي ههن . أن مهن چهرته برع كا كوئي فرق نهين . مهن ھندی بھائیوں سے درخواست کرنا ھوں کہ وہ خدا کے بتائے لے اِس یاک فرض کو پورا کرلے کے لئے میدان جنگ میں ، پڑیں ،"

جی جی ملیس نے اپنی ہستک 'دی ریت بمقلیت' میں ارائی ہے جس میں ارائی کے ایک ممپادئی نوت کا ذکر کیا ہے جس میں اھے کہ ''ھلادے کے باشلات ، عرصے سے جس کا انتظار تھا آرائی ، ولا پاک گہری آن پہنچی ہے ۔۔ هلاستان کے باشلات اب معوکے میں آتے رہے اور اپنی تلواروں سے آنے ھی گلے کائٹے ، اب همیں ملک فروشی کے اِس گلاہ کا کفارہ 'پراشچت' یا چاھئے ، انگریز اب یعی ایلی پرانی دفایازی سے کام لیلکے ، هلائوں کو مسلمائوں کے خلاف اور ملسمائوں کو هلائوں کے خالف اور ملسمائوں کو هلائوں کے خالف اور ملسمائوں کو حال فریدوں کے خالف اور ملسمائوں کو حال فریدوں کے خالف اور ملسمائوں کو حال فریدوں

मैदान में हुई थी. उन्होंने अपनी पुस्तक 'दि बार इन क्रीमिया' में अजीमुल्ला की बाबसर शक्सीयत का रोचक हैंग से जिक किया है, उन्होंने लिखा है कि 'भारत में राज-नीतिक अख़वारों के न हाने से अजीमुल्ला बिन्तित थे. उनके कुछ अख़बारी क्यानों की चर्चा करते हुए सर विलियम ने लिखा है कि 'अनेक यूरोपीय और एशियाई भाषाओं से बाकिक भारतीय आज़ादी के इस सन्देशबाहक में पत्रकार की वे सभी ख़ासियतें मीजूद थीं जो उन्हें यूराप की किसी प्रमुख भाषा का मशहूर और बाअसर अख़बार नवीस बना सकती थीं.

ऐतिहासिक सिलसिले की वे कि इयाँ दूट गई हैं जो यह बतातीं कि भारत वापस आकर अज़ी मुल्ला ने कीन सा सास कार्यक्रम अपने हाथों में बिया, पर 'पयामे आज़ादी' के जो नम्बर ब्रिटिश संमहालय में सन् १९३६ तक सुराक्षत थे उनसे पता चलता है कि 'पयामे आज़ादी' के तीसरे नम्बर में भारतीय नरेशों की एकता के मुताल्लिक अज़-मुल्ला का एक बयान छवा था. इन्हीं अकों से यह पता चलता है कि भारत के इस सब से पहले और सच्चे राष्ट्रीय पत्र का प्रकाशन फरवरी सन १८५० के क़रीब शुरू हुआ था और मिरज़ा बेदारबख्त के दस्तख़ती परवाने से यह छपा करता था. यानी अज़कल के माइनों में बादशाह के हुन्म से मिरज़ा बेदारबख्त इस पत्र के 'सम्पादक, मुद्रक और प्रकाशक' थे.

'पयामे आजादी' के नम्बरों से सन 1757 के स्वाधीनता संप्राम पर खासी अच्छी राशनी पड़ती है. सन 1858 में लन्दन से छपी हुइ 'दि नैरेटिव आफ दि इंडियन रिवोस्ट' नामक पुस्तक में 'पयामे आजादी' का एक उद्धरण दिया हुआ है जिसमें रहेलसंड की पस्टनों से आजादी की जंग में शामिल होने की अपील की गई थी. उसमें लिखा है:—

"आइयो, दिस्ली में फिरंगियों के साथ आजादी की जंग हो रही है. अस्लाह की दुआ से हमने उन्हें जो पहली शिकस्त दी है उससे वह इतना घबरा गये हैं जिसना किसी दूसरे वक्त वह दस शिकश्तों से भी न घबराते. बेग्रुमार हिन्दुस्तानी बहादुर दिस्ली में आन-आन कर जमा हो रहे हैं. ऐस मौके पर अगर आप वहाँ खाना खा रहे हैं तो हाथ यहाँ आ कर धाइये. हमारे कान इस तरह आप की आर लगे हुए हैं जिस तरह राजेदारों के कान मुअव्जिन की अजान की तरक लगे रहते हैं. हम आप की तोपों की आ बाज सुनने के लिए बेचैन हैं. हमारी आँखें आपके पीदार की प्यासी सदक पर लगी हुई हैं. आपका फजे है कि फौरन बाइये. हमारा घर आपका घर है. बिना आपकी میدان میں هوئی قبی، أنهوں فے اپنی پستک الحیوار اِن کربیا' میں غطیمالله کی بااثر شخصیمت کا روچک تعنگ سے ذکر کیا هے ، انهوں نے انها هے که المهارت میں راہے نیتک اخباروں کے نه هوئے سے خطیم آلله چانت تها ،'' اُن کے کچھ اخباری بیانوں ئی چرچا کرتے هوئے سریام نے لکھا هے نه ''انیک یوروپی اور استهائی کرتے هوئے سریام نے لکھا هے نه ''انیک یوروپی اور استهائی میں میشاؤں سے وانف بهارتیه آزادی کے اِس سندیش واهک میں پر کی رہے سبھی خاصیتوں موجود تهیں جو آنهیں پورپ کی کسی پر منه بهاشا کا مشہور اور بااثر اخبار نویس بنا سکتی تهیں ،

امهاسک سلسلے کی وے کوہاں قریق گئیں ھیں جو یعے بتاتیں که بیارت واپس آ تو عظیماللہ نے کوں سا خاص کاریہ کوم اپنے ھاتیوں میں لیا' پر 'پیام آزادی کے جو نمبر برٹش سلکھرالیہ میں سن 1936 تک' سورکشت تھے آن سے پتہ چلتا ہے کہ 'پیام آزادی' کے تیسرے نمبر میں بھارتی نویشرں کی ایکنا کے متملق عظیماللہ کا ایک بیان چہوا تھا ۔ اِنھیں انکوں سے یہ پتہ چلتا ہے کہ بھارت کے اِس سب سے پہلے اور سچے راشتری پتر کا پرکاش فروری سن 1857 کے قراب شورع ھوا تھا اور مرزا بیدار بخت کے دستخطی ہورائے سے یہ چہوا کرتا تھا ۔ بیعلی آج کل کے مماری میں بادشاہ کے حکم سے مرزا بھدار بیعت اِس پتر کے 'سمیادک مدرک' اور ہرکاشک تھے ۔

'پہام ازادی' کے نمبررں سے سن 1837 کے سوادھینتا سلکرام پر خاصی اچھی روشنی پرتی ہے ۔ سن 1838 میں للدن سے چھپی ہوئی 'دی اِنڈین ریوائٹ' نامک پسک میں 'پیام آزادی' کا ایک اداھرن دیا دوا ہے جن میں روھیلکھنڈ کی پلڈنوں سے آزادی کی جنگ میں شامل ہوئے کی اپیل کی گئی تھی ، آس میں لکھا ہے۔۔

البهائه، الله كى دعا سے هم نے جو أنهيں يهلى شكشت هو رهى هے الله كى دعا سے هم نے جو أنهيں يهلى شكشت دى ها إذا كهبرا كئے هيں جتنا كسى دوسرے وقت وقد دس شكسكيں سے يهى نه كهبرائے . پشمار هندستانى يهادر دالى ميں أن أن كر جمع هو رهے ههى ، أيسے موقع پر اگر آپ كهانا كها رهے هيں نه هارے كان اِس طرح آپ كى أور لاء هواء هيں جس طرح ورزے داروں كے كان موزن كى آذان كى طرف لكے رهتے هيں ، هم آپ كى توبيں موزن كى آزاز سلنے كے لئے بےجين هيں ، همارى آنهيں آپ كى ديدار كى الله الله عرف هي الله كى اُلله عرف هي الله كا اُلله كا اُلله على هوائى هيں ، آپ كا فرض هے كه فرا أنهى ، همارا كهر آپ كا قورا أنهى ، همارا كهر آپ كا كو هوائى هيں ، آپ كى آمد كے بهار كے فرا أنهى ، همارا كهر آپ كا كي آمد كے بهار كے الله هورا أنهى ، همارا كهر آپ كا كي آمد كے بهار كے الله هورا أنهى ، همارا كهر آپ كا كي آمد كے بهار كے الله هورا أنهى ، همارا كهر آپ كا كي آمد كے بهار كے الله هورا أنهى ، همارا كهر آپ كا كي آمد كے بهار كے الله هورا أنهى ، همارا كهر آپ كا كي آمد كے بهار كے الله هورا نهي هيں ، همارا كهر آپ كا كي آمد كے بهار كے الله هورا كهمى هورا كي هيں ، همارى آمدر كے بهار كے الله هورا نهيں هيورا نهيں آسكتے ، "

सन् १८५७ से लेकर सन् १९३० तक भारत के बतन परस्त असवारों की तरक्षकी का इतिहास कमोबेश भारतीय राष्ट्रीयता की तरक्षकी का इतिहास समका जा सकता है. इस लम्बे दौर में एक और भारतीय पत्रकारों को अगर रुपये पैसों की जबरदस्त दिसकृत का सामना करना पड़ा तो दूसरी कोर भर्यंकर सरकारी दमन का भी, फिर भी जिस निहरता के साथ त्यागमय सेवाभाव लेकर भारतीय पत्र-कारों ने नागरिक स्वाधीनता, विचारों की आजादी और राजनीतिक श्राजादी के भावों का प्रचार किया वह संसार की पत्रकार कला के इतिहास का एक शानदार अध्याय है देशव्यापी कोशिशों से घाजादी का जो चमकदार भवन आज हम अपने देश में तामीर कर रहे हैं उसकी नींव में शहीदों के साथ-साथ पत्रकारों के भी अस्थिवंजर पड़े हुए है. सन् १९०५ से लेकर सन् १९३० ई० तक भारतीय अखबार नवीसी श्रीर बतन परस्ती दोनों का एक ही मतलब रहा है.

'पयामे आज़ादी'

सच्चे अर्थ में जो सब से पहला राष्ट्रीय पत्र हमारे देश में प्रकाशित हुआ वह 'प्यामे आजादी' था. यह करवरी १८५७ से दिल्ली में अपना और शाये होना शुरू हुआ. यह नागरी और उर्दू दोनो लिपियों में लीथों पर छपा करता था. पर इसके प्रकाशन की कोई ते शुदा तारीखें न थीं. कभी सबेरे छपता था ता कभी शाम का, कभी राज छपता था ता कभी एक दिन के अंतर पर. इस पत्र के प्रकाशन की योजना नाना साहब धुन्धपन्त के मंत्री और सलाहकार तथा सन् १८५७ की महान् क्रांति के संयाजक अजी अल्ला ने बनाई थी. सितहबर सन् १८५७ में माँसी से 'प्यामे आजादी' का एक मराठी एडीशन भी प्रकाशित हाने लगा था. उसकी केवल एक ही कापी ब्रिटिश म्यू जियम में मिलती है.

सन् १८५४ में अजीमुल्ता पेशवा नानासाहब के बकील की हैसियत से बिलायत गये थे, पर उनका असली मक्तसद यूरोप के जनमत को भारतीय स्वाधीनता का समर्थक बनाना था और रूस तथा इटली से खास तौर पर जंगे इनक्रलाब के लिये हथियारों और सैनिकों की सहायता हासिल करना था. अपने इसी सफर में अजीमुल्ला ने यूरोपीय भाषाओं के कई अख़बारों के जरवे भारतीय आज़ादी के सवाल को यूरोपीय जनता के सामने रखा था. गालिबन इसी सफर में उन्होंने 'पयामे आज़ादी' के लिए प्रेस आदि का इन्तज़ाम भी किया था.

'लम्दन टाइम्स' के विशेष प्रतिनिधि सर विलियम हावड रसलं से अजीमुल्ला की मेंट कीमिया के लड़ाई के سی 1857 سے لے لوگر سی 1950 تک بھارت کے والی پرست اخباروں کی ترقی کا انہاس کم و بیش بھارتیم راشتریا کی ترقی کا انہاس کم و بیش بھارتیم دور میں ایک اور بھارتیم پترکاروں کو اگر رویئے پیسوں کی زبردست دقت کا سامنا کونا پڑا تو دوسری اور بھیلکر سرکاری دمی کا بھی؛ بھر بھی جس تحرنا کے ساتھ ٹھاگ مے سیوا بھاؤ لے کر بھارتیم پترکاروں نے ناگرگ سوا دھلتا وچاروں کی آزدی اور راج نیتک آزادی کے بھاؤں کا پرچار کیا وہ سنسار کی پترکار کلا کے انہاس کا ایک شاندار ادھیائے ہے۔ دیش ویاپی کوششوں سے آزادی کا جو چمکدار بھوں آج ہم اپنے دیش میں تعمیر کر رہے ھیں اُس کی نیو میں شہیدوں کے سانھ ساتھ پترکاروں کے بھی اِستھی پلجو پرے ہوئے ھیں ، سی 1935 سے لے کر سی 1930 عیسوی تک بہتریم اخر رہا کیا ایک ھی سالے ہے۔

ويام آزادى

سیچے ارتبا میں جو سب سے پہلا راشاریہ پار عمارے دیش میں پرکاشت ہوا وہ 'پیام آزادی' تھا . یہ فروری 1857 سے دلی میں چھنا اور شائع ہونا ہوا . یہ داگری اور اردو دونوں اور میں لیابو پر چھا کرتا تھا . پر اِس کے پرکاشن کی کوئی طے شدہ تاریخیں نہ تھیں . کبھی سویرے چھنا تھا تو کبھی شام کو' کبھی ررز چھنا تو کبھی ایک دین کے اناز پر . اِس پار کو برکاشن کی یہچنا نانا صاحب دھند بنت کے ملاری اور کے برکاشن کی یہچنا نانا صاحب دھند بنت کے ملاری اور ملکار تھا سن 1857 کی مہاں کرائتی کے سنیوجک عظیم الله نے بنائی تھی . سامبر سن 1857 میں جھانسی سے 'پیام آزادی' کا ایک مراقبی ایڈیشن بھی پرکاشت ہوئے الکا ایک مراقبی ایڈیشن بھی پرکاشت ہوئے الکا میں ایکن آس کی کھول ایک ھی کاپی ہوٹھی میوزیم میں ملتے ھے .

سن 1854 میں عظیم آلتہ پیشوا نانا صاحب کے رکیل کی حدثیت سے ولایت گئے تھے ۔ پر آن کا اصلی و تصد یورپ کے جن مت کو بھارتیت سوادھینتا کا سمرتھک، بنانا تھا اور روس تنها اللہ سے خاص طور پر جنگ انقلاب کے لئے متعاروں اور سینکوں کی سہائیتا حاصل کرنا تھا ۔ اپنے اِسی سفر میں عظیم اللہ نے یورپی بھائوں کے کئی اخباروں کے خریعہ بھارتیہ آزادی کے دوال کو یورپی جنتا کے سامنے رکھا تھا ۔ فالھا اُسی سفر میں آنھوں نے لیوام آزادی کے دائے پریس آدی کا انتظام بھی کیا تھا ،

النوں تائیس کے رشیعی ہرتیندھی سرولیم عادرت رمل سے خطیماللہ کی بھیامی کریمیا کے لوائی کے

राहीय बापम ब्हाहरसाई की याप में

पक दिन पक फिर्गी रॅंगून की संदर्भ पर जा रहा था. इसे मालूम न था कि बादशाह का मजार वहीं पर है. इसे इसने पक मिट्टी का टीला समककर "वृट" की एक ठोकर जमा दी. इस बेचारे को क्या मालूम था कि एक आजादी का पुजारी इसमें हमेशा की नींद सो रहा है.

इमारे इर दिल अजीज नेताजी सुमाय जब रंगून गये तब उस मजार की मिट्टी को उन्होंने अपने माथे पर लगाया और गहीद बहादुरशाह की कृत्र पर विपटकर अक्षीद्त (भिक्त) के आँत् चढ़ाये. बहुत देर तक वे आंत् बहाते रहे, हां, बहादुर हमेशा बहादुर की इ.ज्जत करता है! भारत के हिन्दू मुसजमान भाइयों को बहादुरशाह की बहादुरी पर नाज (गर्ब) होना चाहिये.

हिन्दू मुसलिम एकता जिन्दाबाद! शहीदे आजम बहादुरशाह जिन्दाबाद!

شهید اعظم بهادر شاه کی باد حیل

ایک دن ایک فرنکی رنگون کی سوک پر جا رہا تھا ، اُسے مملیم نه تها که باشاہ کا مزار وہیں پر بھی اُسے اُس لے ایک مئی کا ٹیلھ سمجھ کر ''لبرت'' کی ایک نیوکر جما دی ، اُس بینچارے کو کیا معلیم تها که ایک آزادی کا پنجاری اس میں ہمیشہ کی نیاد سو رہا ہے ،

همارے هر دلعزبز نها جی سوبهاش جب رنگری گئے تب آس مزار کی متی دو انه س نے ماتھے پر لگایا اور شهید بہادرشاہ کی قبر بر، ایت کر عقیدت (بهکتی) کے آنسو چڑھائے ، بہت دیر نکب رہے آنسو بہاتے رہے ، هاں' بہادر همیشته بہادر کی عوت کرتا ہے ! بہارت کے عادر مسلمان بہائیوں تو بہادر شاہ کی بہادری بر ثاؤ (گرو) هرنا چاھئے ،

هندو سمام ایمتا زندهبات ! شهود آعظم بهادرشاه زنده باد!

१८५७ का देशभक्त श्रखबार 'पयामे श्राजादी'

विश्वम्भरनाथ पांडे

भारत की आजादी की लड़ाई के लम्बे दौर में भारतीय समाचार पत्रों, खासकर देशी भाषाओं के समाचार पत्रों का सहयोग उतना ही शानदार है जितना कि उसके लिये भारमबिल देने वाले शहीदों का। आजादी के इतिहास के फों में उनके सहयोग का जिक अकसर किया नहीं जाता. सच तो यह है कि आजादी की शानदार इमारत की नीव में शहीदों के साथ अनेक शहीद पत्रकारों की भी हड़ियाँ पढ़ी हुई हैं. १८४७ के ऐसे एक बहादुर अख़बार के बिलदान की अमर कहानी यहाँ दी जा रही है, जबिक अनेक शहीदों की यादगारें जहाँ तहाँ खड़ी की जा रही हैं वि क्या इस साथी पत्रकार की कोई यादगार खड़ी नहीं की जा सकती ?

1857 كا ديش بهكت اخبار 'پيام أزادي'

وشميهر نانه پاندے

بھارت کی آزادی کی نوائی کے لمدے دور میں بھارتیہ سماچار پتروں 'خاص کر دیشی بھاشاؤں کے سماچار پتروں کا سمھوگ اتفا ھی شائدار ہے جتنا کہ اُس کے لئے آتم بلی دینے والے سمودوں کا آزادی کے اتبالس کے پنوں میں اُن کے سمھوگ کیا ذکر ادثر کیا نہیں جانا ، سبے تو یہ ہے کہ آزادی کی شائدار عمارت کی ندو موں شہودوں کے ساتھ انبیک شہود پترکاروں کی عمارت کی ندو موں شہودوں کے ساتھ انبیک شہود پترکاروں کی بھی مذیاں پڑو ، ھوئی ھیں ، 73 18 کے ایسے ایک بهادر اخبار کے بلیدان کی امر کہائی یہاں دی جا رھی ہے ، جب کہ انبیک شہودوں کی یادگاریں جہاں تہاں کھڑی کی جا رھی ھیں تب کیا اِس سانھی پترکار کی کوئی یادگار کھڑی نہیں کی ھیں تبھی کی جا میں تب کیا اِس سانھی پترکار کی کوئی یادگار کھڑی نہیں کی

राह के ख्यालों से खूब वाकिक थे. बहादुर राह ने चारों तरफ करमान भेजे. वे लोग अपने वतन की इक्जत ब आवरू बचाने के लिये तलवार की घार पर चलने को भी तैयार थें. "चाहे जान ही चली जाय मगर आन नहीं" यही उनका उसूल था. उन लोगों की जहाजहद से ही सिपाहियों की आजादी की लड़ाई ग्रुरू हो गयी! फिर्रागों की नजर में यह "सदर" था "म्यूटिनी" थी! मगर अजादी के मतवालों के लिये यह "जंगे आजादी" का पहला क़दम था. इसने हिन्दुस्तान की तबारी ख को और भी रौशन कर दिया था! फिर्रागों के साथ लड़ाई होने लगी. लेकिन हुआ क्या? "घर का भेदी लंका डावे" बाली मसल सच निकली! बादशाह का समधी इलाही बखश फिर्राग्यों से मिल गया. इसकी चालों से बादशाह तंग आ चुके ये और आजिर हुमायूँ के मक़बरे में गिरफतार कर लिये गये.

चनकी गिरक्तारी के बाद इंडसन ने बादशाह के बेटों को गोली मार दी.

बादशाह के बेटों के सिर एक तश्त में रख कर हहसन उन्हें बादशाह के सामने ले गया और कहा—'बादशाह सलामत की खिदमत में कम्पनी की आर से यह नजर पेश है!" उस जालिम ने ढंके सिरों पर से कपड़ा हटा दिया! बादशाह ने मुँह फेर कर कहा-—''अलहम्दोलिल्लाह! (ईश्वर महान हैं) तैमूर की जीलाद इसी तरह सुर्बक्ष (प्रतिष्ठित) होकर अपने बाप के सामने आया करती थी!"

देश के दुश्मनों ने कहा--

''दमदमों में दम नहीं अन ख़िर माँगो जान की! ऐ ज़फ़र ठंडी हुई शमगीर हिन्दुस्तान की! बादशाह ने जवाब दिया—

"गृाज़ियों में बू रहेगी जब तलक ईमान की, तखते जन्दन तक बलेगी, तेग हिन्दुस्तान की !" बादशाह गिरफ्तार हुए और रंगून भेजे गये. वहाँ उन पर जो कुछ बीती वह बयान से बाहर है. उनकी हालत पर पत्थर भी रो देगा. उनको दाने-दाने के लिये तरसना पढ़ा ! रंगून में बादशाह में एक बड़ा तराय्युर (परिवर्तन) हुआ, तब का एक शेर सुनिये—

"पर्च मर्ग मेरे मज़ार पर जो दिया किस् ने जला दिया, उसे आह दामन बाद ने सरे शाम से ही तुम्मा दिया. मेरी आंख म्मपकी थी एक पल, तभी दिख ने कहा कहीं उठके चल. दिले बेकरार ने आनकर मुक्ते खुटकी लेके जगा दिया, पसे मर्ग क्रम पे ऐ 'ज़फ़र' पदे फातिहा कोई आनकर को को दटी क्रम का या निशाँ उसे ठोकरों से मिटा दिया ھالا کے شھالیں سے خوب واقف دھے . بہادر شاہ کے چاروں طوف فرمان بھیجے ، وے لوگ آپنے وطن کی عرب وآپرو بحالے کو بھی تھار کی گھات پر چلانے کو بھی تھار تھے ، چاھے جان ھی چلی جائے مکر آن نہیں'' بھی آن کا اصول تھا ۔ اُن لوگوں کی جدر جہد سے ھی سہاھیوں کی آزادی کی لوائی شروع ھو گئی اِ فرنگیوں کی نظر میں یہ 'غدر'' تھا' انہیں'' بھی اِ مکر آزادی کے مکوالوں کے اُلم یہ ''خدر'' تھا' آزادی کا' پہلا قدم تھا . اِس نے هندستان کی تواریخ کو اور بھی روشن کو دیا تھا ! فرنگیوں کے ساتھ لوائی ھوئے لگی ۔ لیکن ھوا کیا آپ ''کھر کا بھیدی لنکا تھا ہے'' والی مثل سے نکلی! بہادر شاہ کا سمدھی الهی بخش فرنگیوں سے مبادر شاہ تنگ آچے تھے اور آخر ھمایوں کے مقبرہ میں گونتار کو لئے گئے .

أن كى گرفكارى كے بعد هتسن نے بادشاہ كے بيلوں كو گولى ماردى . بادشاہ كے بيلوں كے سر أيك طشت ميں ركم كو متسن انهيں بادشاہ كے سامنے لے گيا أور كها۔"بادشاء سلاست كى خدمت ميں كمينى كى أور سے يه نذر يبيش هے !" أس ظاام لے تعكم سروں ير سے ابرآ همّا ديا إ يادشاہ نے منه بهند در كها۔"الحمدالله إ"

(درایشور مهان هے ،) تهدور کی اولاد اسی طرح سرخرو (برتشتیت) هو کر اپنے باپ کے ساملے آیا کرنی تھی !

"دمدموں میں دم نہیں آپ خیر مانکو جان کی ! لو ظفر ٹھلتی ہوئی شمشیر هندستان کی !" بادشاہ نے جواب دیا —

دیش کے دشنیں نے کہا۔

"عازبوں میں ہو رہیکی جب نلک ایدان کی ! " تخت لندن تک چلیکی تیخ هلاستان کی ! "

بادشاہ گرذالر ہوئے اور رنگوں بھدھے گئے ، وہاں اُن پر ہو اُنچہ بھتی وہ بھاں سے باہر ہے ، اُن کی حالت پر بھو بھی رد دیگا ، اُن کو دائے دائے کے لئے ترسنا ہوا ارنگوں میں بدشاہ میں ایک بڑا تنفز (پریورٹن) ہوا ، تب کا ایک شعر سنٹ۔

پس مرک میرے مزار پر جو دیا کسو لے جا دیا' اسے آن دامن باں لے سر شام سے ھی بجہا دیا۔ میری آنکھ چھکی تھی ایک پل' تبھی دل لے کہا کیوں آئو کے چل'

دل بیترار نے آن کر مجھے چٹکی لے کے جگا دیا . پس مرک قبر ہا اے 'ظفر' پڑھ فاتحہ کئی آن کر' . وہ جو ٹیٹی قبرکا تیا نہاں آس ٹھرکروں سے مثا دیا . बहाबुरशाह बरायें नाम बादशाह के. अपनी जिन्दगी की शुरूआत में ही वे रंजीराम के शिकार हो चुके थे. उनके बालिद (पिता) भी उनसे नाराज थें. वे अपने दूसरे फरजन्द (पुत्र) का 'राजगदी' देना चाहते थे. इसलिये बहाबुरशाह को घर से अलग रहना पढ़ा. वे ''फन व हिकमत" (कला-कारी) के कद्रवाँ थे. वे उस्ताद जीक के शागिर्द थे. बहाबुरशाह की शायरी में निजी मजबूरियों की मलक, दीख पड़ती है—

> ''मेरी खाँब बंद थी जब तलक, बंद नज़र में नूरे-जमाल था, खुली खाँब तो न ख़बर रही, कि बंद ख़बाब था कि ख़्याल था. मेरे दिल में था कि कहुँगा मैं, जो यह दिल पै रंकी-मलाल है, बंद जब का गया मेरे सामने, न तो रंज था न मलाल था.

बहादुरशाह की बेबसी के दिनों में उनकी बेगम जीनत-महल ही मदद देती थीं. वेगम सियासत की गृत्थी ठीक-ठीक सुलमाती थी. इसीलिये अप्रेज उनसे खबरदार थे.

बेगम जीनतमहल ने अपने प्यारे बादशाह के लिये अपने ऐश-व-आराम का छोड़ दिया था. वे बहादुरशाह के साथ इन्क्रलाब में कूद पड़ीं और जेल में क़ैद रहकर आख़िरी दम तक बहादुरशाह के साथ मुसीबतें भेलीं.

बहादुरशाह का बैटा जबाँबख्त था, जो अंग्रेजों की वालबाजी और मक्कारी से खूब बाक्तिफ था. इसिलये अमेज उससे जलते थे. इसिलये उसे बली अहद मानने से उन्होंने इन्कार कर दिवा. बादशाह के अधेरे के दो चिरारा थे. एक जबाँ बख्त था और दूसरा जीनत-महल ! जीनत-बेगम बादशाह की जिन्दगी में जगमगाता नूर बनकर चमकीं. जबाँबख्त इनकी जिन्दगी का अरमान था. वे थे बराये गम के बादशाह ! उनको कोई आजादी न दी गयी. अंग्रेजों की यह करत्त बहदुरशाह की खुदारी के लिये एक चैलेंज थी. लाई एलनबरों गवर्नर जनरल हुआ। उसने बादशाह को ईद और उनके जनम दिन में नजर देने की जो रस्म थी, उसे बंद कर दिया. बादशाह की हालत बड़ी दुरंगाक थी—

उदाकर आशियाँ सर पर ने सेरा, किया साफ़ इस क़दर तिनका न पाया !"

अब तक फ़िर्रिंग्यों का पैर ख़्य जम चुका था. लसनक के नवाय वाजिद अली शाह का तस्त छीन क्रिया गया ! माँसी, का इक ठुकराया गया ! अब भारत फिर से जाग की ! नाना साहब की पेन्शन बंद हो चुकी थी. वे बहादुर مهادر شاه برائد قام بادشاه ته . ایلی وقدگی کی شروفالیا میں می وحد راج و فر کے شار وقالیا میں میں می وحد راج و فر کے شاد (یما) بھی اُن سے قاران (یما) در ایک دوسوے فرزاد (یما) در ایک در کیو سے الگ راجکوی دینا چاہئے تھے . اِس لئے بہادر شاہ کو گھر سے الگ رہنا ہے ،

وسے استان ذوق کے شاکرہ تھے ، بہادر شاہ کی شاعری میں تعجی مجبوریوں کی جہاک دیام پرتی ہے۔۔

· "ميري أنه باد الهي جب تلك

ولا نظر میں نور جمال تھا . کیای آنکو تو ند خبر رھی ا کدولا خواب تھا کہ خطال تھا .

ميرے دل ميں تها كه كهونكا ميں'

جويد دل په رنبج و مثل هـ. تما

وہ جب آگیا میرے سامنے' نم تا نم تا نم مالا تا

نه تو رئیج تها نه مال تها.

بہادر شاہ کی بہسی کے داوں میں اُن کی بیکم زیاست محل مدد دیتی تھیں ۔ بیکم سیاست کی گئی تھیک تھیک سلتجہاتی بھی ، اِس لئے ادکریز اُن سے خبردار تھے ، بیکم زینت محکل بھی نے اپنے پیارے بادشاہ کے لئے اپنے دیش و آرام کو چھرز دیا تھا ، وے بہادر شاہ کے ساتھ انفلاب میں کود پڑی اور جیل میں تید رہ کر آخری دم تک بہادر شاہ کے ساتھ مصیبتیں جیدادی ،

بہادر شاہ کا بیتا جواں بخت تھا جو انگریؤوں کی چال بازی اور مکاری سے خوب وانف تھا ۔ اِس لئے انگریؤ اُس سے جلتے تھے ۔ اِس لئے اسے والی عہد مافلے سے آنہوں نے انکار کو دیا۔ بادشاہ کے اندھیرے کے دو چرانے تھے۔ ایک جواں بخت نها اور دوسرا زیامت محل اِ زیامت بیکم بادشاہ کی زندگی میں جگلگانا فور بین کو چمکیں ۔ جواں بخت اُن کی زندگی م ارسان تھا ، وہ تھے برائے نام کے بادشاہ ۔ اُن کو کوئی آزادی نه دی گئی ۔ انگریؤوں کی یه کوتوت بہادر شاہ کی خود داری کے لئے ایک چیلئج تھی ۔ الرق ایلی برواگرونر جلرل ہوا اِس نے بادشاہ کو عہد اور اُن کے جام دن میں نام دیاہے کی جو رسم تھی اُسے عہد اور اُن کے جام دن میں نام دیاہے کی جو رسم تھی اُسے علی کر دیا ، بادشاہ کی حالت بڑی دردناک تھی ،

"ارا کر آشهانه صرصر نے مهرا." کیا صاف اِس قدر تلکا نه پایا.

اب تک فرنکوں کا پیر خوب جم چکا تھا ، لکھاؤ کے نواب واجد علی شاہ کا تضع چھیں لیا گیا ! جھانسی کا حق ٹیکولیا گیا ! اب بھارت پیر سے جاگ آٹیا ! آتانا ماحب کی پھاشی باد ہو چکیٹیی ، وہ بہادر मैं कुमी को पीठ का कोम हूँ,
मैं फुबाक के दिला का गुवार हूँ,
को हुँसी के दिल को खुशी के दिल,
गये 'इसरते' बाकी रह गयी,
कभी बादये जामे-नाज बा,
मगर अब मैं उसका उतार हूँ,"

अगर कीई सच्चा शायर शायराना-दिल लेके बहादुर शाह के मजार के पास टहलता हो तो वहाँ की सदें हवा में यही आवाज सुनायी पड़ेगी! मामूली शायर को अपनी हैसियत लूब मालूम है पर बहादुरशाह बादशाह थे, बाबर, अकबर और औरंगजेब के तस्त-त्र-ताज को रीशन करने बाले थे. उन जैसे बादशाह को मामूली इनसान से ज्यादा तकलीफ़देह जिन्दगी वसर करनी पड़ी हो तो उसका अंदाजा आसानी से लगा सकते हैं—

> चारागर भर न चके मेरे जिगर के नास्र, एक गर बंदें किया द्खरा रीज़न निकला.

बहादुरशाह को 72 साल की उम्र में "राजगही" मिली. वह भी कैसी ? अकवरशाह के जमाने में ही कम्पनी ने उनके हुको-हुकू (अधिकार) को जीन लिया, जिन का "सममौता" कम्पनी के हार्किमों ने बादशाह शाहे आलम से किया था. अकवरशाह ने पैरवी के वास्ते राजा राम माहन राय को बकील बनाकर इंगलिस्तान भेजा. वहीं राजा साहब का इन्त-काल हो गया, तो मामला उयों का त्यों रह गया. अकवर शाह की शिकस्त (हार) हो चुकी थी. अब अंग्रेजों ने और भी जुल्म शुरू किये.

जब बहादुरशाह तस्त पर बैठे, तब भी फिर्शियों का बही रवैया जारी रहा. बास मीकों पर जो तोहफे (भेंट) नजर के तौर पर बादशाह को दिये जाते थे, भौकूफ (बन्द) हो चुके थे. जब चाल्सं मेटकाफ रेजिडेन्ट हुआ, तो उसने सलाम, कोरनिश व मुत्तरा सब क्लाम कर दिया. मुरात-सल्तन के जवाल (अवनित) के दिन नजदीक आ गये थे.

किरंगियों ने जो बरबरता की था उसे बहादुरशाह जैसे आजादी के मतवाले कैसे वर्दाश्त कर सकते थे ? उनकी कम्म ज्यादा हो चुकी थी. बुढ़ापे के हाल में भी उन्होंने हिम्मत न हारी.

सुनिये तो सही-

यूँ हो तबीयत अपनी हिनस वर लगी हुई, मक्दी को जैसे ताक सगस पर लगी हुई, खाज़ाद कर करे हमें सैंगाद देखिये. रहती है जाँच बादे-कफस पर सगी हुई. میں ومیں کی پیٹم کا بوجہ ہوں ا میں فلک کے دل کا غبار ہیں ۔ وہ ہلسی کے دن وہ خوشی کے دن ا کلیہ حسرتیں باتی رہ کئی ، کیمی بادۂ جام ناز تیا ا مکر آب میں اُس کا آثار ہوں ،

اگر توئی سچا شاعر شاعرانه دیل له کے بهادر شاہ کے موار کے داس قہانا ہو تو وہاں کی سرد ہوا میں یہی آواز سائی پویکی ! معمولی شاعر کو اپنی حیثیت خوب معلوم ہے پر بهادر شاہ بادشاہ تھے، بابر' اکبر اور اورنگزیب کے تخت و تاج کو روشن کرنے والے تھے، اس جیسے بادشا، کو معمولی انسان سے بھی زیادہ تکلیف د زندگی بسر کرنا پڑی ہو' تو اُس کا اندازہ آسانی سے لگا سکتے ہیں۔۔۔

چاره گر بهر ته سکے میرے جگر کا تاسرر' ۔ ایک گر بند کیا دوسرا روزن تکلا۔

بہادر شاہ کو 72 سال کی عمر سیں "راجگدیی" ملی . وہ بھی کسی ؟ اکبر کے زمانے میں ھی کمپنی نے اُن حق و حقبق (ادھیکا) کو چھوں لیا جوں کا "سمجھوته" کمپای کے حاکموں نے بادشاہ شاہ عالم سے کیا تھا ، اکبرشاہ نے پیروی کے واسطے راجا رام موھی رائے کو وکیل بنا کر انگلستان بھیجا ، وھیں راجہ صاحب کا انتقال ھو گیا تو معامله جھوں کا تھوں رہ گیا ، انبو شاہ کی شکست (ھار) ھو چکی تھی اُب انکربزوں نے اور بھی ظام شورع کئے ،

جب بہادرشاہ تخت پر بیٹیے' تب بھی فرنگیرں کا وہی رریء جاری رہا ۔ خاص مرقع پر جو تحفی (بھینٹ) نفر کی طور پر بادشاہ کو دیئے جاتے تھے' موقرف (بنن) ہو چکے تھے ۔ جب چارلس میٹکاف ریزیڈتیٹ ہوا تو اس نے سام' کرنش و مجرا سب ختم کر دیا ، میل ملطنت کے زوال (لونٹی) کے در، نزدیک اگئے تھے ،

فرنگیوں لے جو ہربرہ کی تھی آسے بہادر شاہ جیسے آزادی کے متوالے کیسے برداشت کر سکتے تھے 9 اُن کی عمر زیادہ ہو چکی تھی ۔ برعابے کے حال میں بھی اُنہوں نے ہمت نے عاری ۔

سلیٹے تو سہی۔۔۔۔

یو نہی طبیعت اپنی حوس پر لکی ہوئی' مکڑی کی جیسے تاک مکس پر لکی ہوئی ۔ آؤاں کب کرے ہیں صیاں دیکھئے' رہتی ہے آٹکو بان قلس پر لکی ہوئی ، शुमाल दिन्द में भी माँसी की रानी से लेकर भगत सिंह, राजगुर, मुखदेष, आदि शहीदों ने जंगे आजादी का पेलान किया. इमारे सामने शहीदों में कोई फर्क नहीं है. सबों का मकसद आजादी था!

बहादुरशाह भी आजादी के लिये काम आए. वे सल्तनते मुग्नित्या के आख़िरी चिराग थे. वे बादशाह होते हुए भी बतन-परसी (देश-भिक्त) के शायर थे. डनकी शायरी में जोश था. जदबाती तहरें (भावना की तरंगें) उमइ उठती थीं. बहादुरशाह के बारे में जानना हरेक का कजें है.

बहादुरशाह 'उद्' के एक ऊँचे शायर थे. उन्होंने "जफ़र" के तखल्लुख (अनाम) से शेरो शायरी की. सब से क्यादा भारत की आजादी को क्रायम रखने के लिये उन्होंने जो . कुरबानी की थी वह हमेशा जिन्दा-जावेद (सदैव के लिये) रहेगी.

बहादुरशाह की शायरी में गहरे जजबात थे और जिन्दादिली थी, असल में उनके जमाने तक उद्दूं अदब (साहित्य) का रवैया इरक - इक्तीकी" या "मजाजी" के नाम पर ही बहुत कुछ गुलो बलबुल तक महदूर (सीमित) था. दीगर (अन्य) शायरों की तरह उन्हें भी "उदू शायरी" में रदीफ काफिये की तंगी में ज्यादा मजा आता था. उन्होंने 'जब र' के नाम से बहुत कुछ लिखा है. आजादी के लिये उन्हें जो तकलीफ उठानी पड़ों उन्हें सुनकर पत्थर का कलेजा भी दो बुँद आँसू गिरा देगा.

अब उनका कलाम सुनिये-

''न पूख मुम्मसे 'अफ़र' त् मेरा इक्कीकते हाल, अगर कहूँगा अभी तुमको मैं ठला दूँगा."

जफर ने अपनी हक्तीकत (वास्तविकता) को साफ तौर से बयान किया है. फिर भी तवारीख़ (इतिहास) ने भी उनकी जिन्दगी की द्देनाक-हालत पर श्राँसू की बूँदें बहायी हैं—

"ओ ख़िज़ाँ हुई वो बहार हूँ.

जो उतर गया वो खुमार हूँ,

जो विगद गया वह नवीब हूँ,

जो अबद गया वो खिगार हूँ.

मेरा हाल काबिले-शेद है,

कि न आस है न उमीद है,

मेरी घुट के हसरते रह गयी,

गैं उन इसरतों का मज़ार हूँ.

मैं कहाँ रहूँ, मैं कहाँ वस्ँ,

नये मुमसे खुरा न वो मुमसे दूर,

البعد ألعلم ببلد ها على العربين

شمال هاد میں بھی جہائسی کی والی سے لیکو بھات ساکھ راج گرو' سکھ قدو' آدی شہددوں نے جنگ آوادی کا اعلان کیا ۔ همارے سامنے شہددوں میں کوئی درق نہیں ہے ۔ مبوں کا کیا ۔ ہمارے نہا !

بہادر شاہ بھی آزادی کے لئے کام آئے ، وے سلطنت مغلیہ کے آخری چراغ تھ ، وے بادشاہ ہوتے ہوئے بھی وطن پرستی (دیش بھکتی) کے شاءر تھے ، اُن کی شاءری میں جوش تھا ، جذباتی لورس (بھاؤنا کی ترنکیں) اُمر ائیتی تھیں ، اُبھادر شاہ کے ،ارے میں جانا ہر ایک کا فرض ہے .

بہائن شاہ 'ردو' کے رنجے شاعر تھے ۔ اُنھوں نے ''طفو'' کے تخطص (اُپ نام) سے شعر و شاعری کی ۔ سب سے زبادہ بھارت کی آزادی کو قایم رکھانے کے لئے اُنھوں نے جو قربائی کی نھی وہ شمیشہ زندہ جارید (سدءو کے لئے) رہیکی ۔

بهادر شادکی شاعری میں گہرے جذبات اور زندہ دلی تھی ۔
اصل میں ان کے زم نےنک اردوادب (سلعتیه) کا رویہ "عشق حقیقی"
یا "مجازی" کے نام پر ھی سہی بہت کچھ گل و بلبل تک ھی
محدود (سیمت) تھا ، دیگر (انبه) شاعروں کی طرح انہیں
بھی "اُردر شاعری" میں ردیف قانیه کی تلکی میں زیادہ مزا
آنا تھا ، اُنہوں نے 'ظفر' کے نام سے بہت کیچھ لکیا ہے ، آزادی
کے لئے انہیں جو تکلیفیں اُنھانی پڑیں سی کر پتھر کا کلیجه
بھی دو ہوند آنسو گرا دیگا ،

اب أن كا كلم سنيئيـــ

دنه پرچه مجهسهٔ طغراتو میرا حقیقت حال . اگر کهونگا ایهی تجهمو میں رولا دوں کا ."

ظفر نے اپنی حقیقت (واسترکتا) کو صاب طور سے بیان کیا فد کی وادیات (اتہاس) نے بھی اُن کی وندگی کی دوناک حالت پر آنسو نی ہوندیں بھانیں ھیں۔۔۔

جو خزال هوئی وه بهار هوں،
جو آدر گیا وه خمار هوں .
جو بکر کیا وه نصیب هوں،
جو اُجر گیا وه سنگار هوں .
میرا حال قابل دیر هے،
که نه آس هے نه آمید هے .
مهری گهت کے حسرتیں وہ گئیں،
مهری گهت کے حسرتیں وہ گئیں،
مهری کہاں وهری، میں کہاں بسوں،
مهری کہاں وهری، میں کہاں بسوں،
نه یه مجهسے خوش نه وة مجهسے خوش .

1 1 2 A W

हम तो अपनी अजन्ताओं में मग्न हैं, तुम तिलिस्मी गुबारे उड़ाते रहो। फिर न कहना जो यह "ऐटमी शोबिदा, न" .खुद तुम्हारा नशेमन अलाने लगे.

हम तो इक पुषह हैं, सुबहे अमनो अमां। अपना पैगाम है "रोशनी-रोशनी," पे अंधेरो, उजाले में आजाओ अब, हिन्द के बामोदर१० जगमगाने लगे.

[नोट:—1857 के स्वतन्त्रता संप्राम के शताब्दी महोत्सव पर ल'ल किले में हुए मुशायर में यह नज्म 16 श्रमस्त 1957 को पढ़ी गई.] هم تو آپلی اجلتاؤں میں مکن هیں' تم طاستی نبارے آرائے رمو' پھر نہ کہنا جو یہ ''ایٹنی شمیدا'' 8 خود تمارا نشیمن 9 جلانے لئے!

> هم تو اک صبح هیں صبح اس و امال؛ اینا یفغام هے "روشنی موشنی یائ الم اندهیر و اجلالم میں اجاء اب، هدد کے بام و در 10 جکمالے لاے ان

[ٹوٹ :--1857 کے سوتلتوا سلکولم کے شتابدی مہتو پو قل قلعے میں ہوئے مشاعرے میں یہ نظم 16 اگست 1957 کو پڑھی گئی .]

शहीदे आजम बहादुरशाह की याद में

श्री डी० राजन

जो बतन की आजादी या मजहब के लिये मर मिटता है वह शहीद है. आजादी के लिये कुरवानी की जहरत है. ऐसे ही 'देश भक्त' हिन्दुस्तान की आजादी के लिये हजारों लाखों की तादाद में कुर्यान हो चुके हैं. दरअसल हमारी आजादी की 'अमर कहानी'' शहीदों के खून से लिखी गयी है. कन्या कुमारी से हिमालय तक कई बतन-परस्त देश-भक्त भारत की आजादी की लड़ाई में कूद पड़े. कन्या कुमारी दिकखन में है इसीलिये पहले उसका नाम लिया है कि दिक्खन में ही पहले पहल संतों के प्रेम-धर्म ने जन्म लिया और उत्तर तक फैला. शंकर, रामानुज, मध्याचार्य वैष्णुव और शैव-धर्म के संतों ने अपनी अमृत-थानी सुनाई. उत्तर में भी कई संत लोग पैदा हुए.

आजादी की लड़ाई में भी दिक्खन कभी पीछे नहीं रहा. कट्टबास्मन, राजा देसिंह, बीर चिद्रस्वरम, व० वे॰ सु० अन्यर, हैदर, टिप्पु, निरुप्ट कुमरन जैसे शहीदों ने हमेशा के लिये आजादी की अमर क्योति जलाई.

नूर = प्रकाश, २. निकहत = सुगन्ध, ३. बज्म = सभा ४. शमए = दीए-मोमबत्ती, ४. गुलिकशाँ = फूल का खिलना, ६. मुस्तिकल = स्थाई, ७. मशराले = काम-काज, व. शोबिदा = जादू का खेल , ६. नशेमन = घोंसला, १०. बामोदर = कांठे और दरवाजें.

شهید آعظم بهادر شاه کی یاد میں

شری تی، راجن

جو وطن کی آزادی یا مذهب کے لئے مر متنا ہے وہ شہد ہے . آزادی کے قررات ہے . ایسے هی ادیش بهکت" هندستان کی آزادی کے لئے هزاروں الاموں کی اداد میں قربان هو چکے هیں . دراصل هماری آزدی کی ادار کہائی" شهدوں کے خرن سے لئھی گئی ہے . کنیا کماری سے همالیہ تگ کئی وطن پرست دیش بهکت بھارت کی آزادی کی ازادی بہائی میں کود پڑے . کنیا کماری دائین میں ہے اِس لئے پہلے اُس کا نام لیا ہرکہ دائوں میں هی پہلے پہل سنتوں کے پریم دھرم نے جنم لیا اور آنر تک شنکو" رامانیم مدھوا چاریم ریشار اور شیو دھرم کے سنتوں نے اپنی اموت بانی سنائی .

آزادی کی لوائی میں بھی دائیں کبھی پدھچھے نہیں رہا ۔ نقرمن راجا دے مفاع وہر چیدمبرم وہ وے، ایر حیدر ' ٹیھڑ' ترویٹ کروں جیسے شہیدوں نے ہمیشہ کے لئے آزادی کی امر جھوتی جالتی تھی .

1. نبر = پرکاش 2. نگهت = سوگانده 3. بزم = سبها 4. شمهی دریپ موربتی 5. گل نشان = پیول کا کیلنا 6. مستقل = لنتهائی 7. مشغل = کام کلم 8. شمیدا = حامو کا کیفل 9. نشهمی = گهرنسا 10. بام و دو = کراید درازمه

विरागों के सिलसिलें (अंग्रेजों से खिताक)

چراغوں کے سلسلے (انگریزوں سے خطاب)

श्री सलाम मछलीशहरी

न्रा-मो-नकहतर की खातिर जो करवाँ हुए, जिनको तुमने यह समका ठिकाने लगे. कूल बनकर वही मुस्कराने लगे, चाँद , बनकर वही जगमगाने लगे.

> बात उलकी सी है, मैं दिवाना जो हूँ, लैर, अब दुम जरा यह बताओं मुके क्या कहांगे उसे जो बुक्ते दीप से, बदम ३ की ताजा शमपे र जलाने लगे ?

तुमने भारत से ताजे जफर ले लिया, हमको भारत ने गान्धी जवाहर दिया. तुमने इस लाल किले में शोले भरे, परवमे गुलिकशाँ प्र हम उड़ाने लगे.

> तुमने माँसी की रानी का सर ले लिया. देश की गोद में नायडू आ गई। तुमने इस शहर दिल्ली की वीरां किया, जन्नतें हर तरफ हम सजाने लगे.

बूँ बुक्ते बीप से दीप जलते रहे, भीर हम मुस्तक्रिल रंशिनी बन गए. फिर भी पिछले अंधेरे सदी बाद भी-भाज क्या जाने क्यों याद आने लगे ?

> बात यह है कि हम अहते हिन्दास्ताँ, एक आदर्श रखते हैं तहजीब का. हम तो उस दम भी तुम से गले ही मिले, जब यहाँ से, हुजूर ! आप जाने लगे.

भर, इतना तो बतलाओं ये दोस्ती! माजक्त क्या मराराते ० हैं, क्या हाल है ? मं कडूबा या दुम जिए के परदे में फिर, भवरं दिन्द पर गुल किसाने सगे. شرى عالم معجبلي شهرني

نور و نهمت 2 کی خاطر جر قربان هوئه جن كو تم له يه سنجها تبكالے الله . پھول بن کو وہی مسکرانے لکے۔ ، چاند بن کر وهی جامگانے کے !

بات ألجهي سي هامهن ديوانه جو هون خیر' اب تم ذرا به یتاؤ مجه . کیا کہوگے اُسے جو بجھ دیپ سے بزم 3 کی نازہ شمعیں 4 جلانے لگے!

> تم نے بہارت سے تابے ظفر لیے۔لیا' هم کو بهارت لے گاندھی جواهر دیا . تم نے اِس لعل قامے میں شعلے بھرے . يرچم كلفشل 5 هم أوالي لك إ

تم لے جہانسی کی رانی کا سر لے لیا ديش كى كود ميں فايدو أكثين ! تم لے اِس شہر دای کو ویراں لیا . جنتين هر طرف هم سجائے لك !

> یں بجے دیپ سے دیپ جلتے رہے' اور هم مساقل 9 روشنی بن گئه! يهر يهي پچهل اندهير مدي بعد يهي . أَجٍ كَيَا جَالِم كِيسِ يَادَ أَلَمِ الْمِ أَ

بات يه هه كد هم أهل هندستان، ایک آدرش رکهتم میں تهذیب کا هم او اِس دم بھی تم سے گلے ھی ملے ا جب یہاں سے حضور ا آپ جانے لکے ا

> خهرا إننا تو بنال أه دوستو إ آجكل كيا مشغل 7 هين كيا حال هه 9 کوئی ا کہتا تھا تم چھپ کے پردسے میں بورے سرهدما پر کل کیالے اکے !

اكتربر 67'

इनसान की जिन्दगी नपी तुसी है. क्रयामत तक तो किसी का जीना नहीं—फिर बचन की मुद्दत क्रयामत तक क्यों हो ?

जीवन में उसको वह सब मिलना चाहिये जो उसका इक और हिस्सा है—फिर उसमें देरी क्यों—और संकोच क्यों ?

.साली वादों ही वादों पर तो इनसान जी नहीं सकता और न परिवार ही पाल सकता है.

यह कौन सा इन्साफ़ और इनसानियत है कि एक परिवार के आधार पर केवल एक सियासी त्यागी अपना जीवन बनाये—क्या एक अक्सा परिवार को एक अकेला सा जाने बाला "त्यागी'होता है आज के राज के अर्थ में ?

आखार यह हवाई बायदे कब तक उड़ान भरते रहेंगे और कब तक मुठे बचन सब्ज बारा दिखाते रहेंगे ?

जिनमें न घोशाओं की कलियाँ, न आआदी के फल फले.'

केवल काँटे ही काँटे.

लेकिन इसने वह काँटे ही टाँके हैं अपने दामन में आजादी के लिशस की शोभा बदाने के लिये—भीर इसिजिये '.खारे बतन' हैं और बतन के .खार से प्यार होता है हर सच्चे देश भगत को.

वचन के चमन के फूल भी इसके सामने अधिक से अधिक हैं और रंग रंग के.

देखने में बड़े सुन्दर, बड़े दिलकश, बड़े नजरफ़रेब,

मगर न बून महक.

श्राज्ञवत्ता तेषारंगत. लेकिन वह रंगत कव तक ?

काराज के फूलों की शोख़ी और उनकी जिन्द्गी ही कितनी ?

पानी के ऊरर कराज की नाव की उमर ही क्या ? नई नई तरकी बों से अवाम को लुभाये रखना और जीवन के मीठे सपनों में मुलाये रखना. अजीव अनुभव है राजनीति का—यह बात कितनी विचित्र है कि आजाद होते हुऐ बचनों के रंगीन फन्दों में अवाम गिरफ्तार हैं—यानी आखादी में क़ैद हैं—किर भी बचन आये दिन नित नये जतन करते ही रहते हैं और जनता के साथ शातिराना चालें चलने में कोई कसर बाक़ी नहीं रख रहे. इस प्रकार अब तक जितने भी जतन हुए और हो रहे हैं उन पर जितना भी मातम किया जाय कम है और जितना शोक मनाये ठीक है. انسان کی زادگی نبی نلی فی قیامت تک تو کسی کو جینا نبیں سپھر وچن کی مدت قیامت تک کیس ؟

جهرن هی سین آسی کو را سب ملنا چاملے جو آس کا حق اور حصه هـــــپهر آس میں دیری کیرســـاور سنتوج کیوں ہوں 9

مالی وعبوں هی وعدوں پر تو اِنسان جی نہیں سکتا اور نه بریوار هی پال سکتا هے ،

یه کونی سا آنصاف اور اِنسانیت هے که ایک پربوار کے آنھار پر کیول ایک سیاسی کھاگی اینا جیون بنائے ۔ کیا ، ایک ایا پربوار کو ایک اکیلا کیا جانے والا ''تیاگی'' هرتا هے آج کے راج کے ارتبا میں 8

آخر یہ ہوائی وعدے کب تک اُران بھرتے رهیں گے اور کب تک جھوٹے وچن سبز باغ دکھاتے رهین کے 8

جن میں نه آشاوں کی کلیاں' نه ازادی کے پهل اولے.

کیبل کانٹے ھی کانٹے .

ایکن اُس نے وہ کانٹے می ٹانکہ میں اپنے دامن میں اُزادی کے لباس کی شورہا بڑمانے کے لئے۔۔۔۔(ور اِسی لئے وہ 'خار وطن' میں اور وطن کے خار سے پیار ہوتا ہے مو سجے دیش بھات کو ،

وچن کے چمن کے پھول بھی اِس کے سامنے آدھک سے : ادھک میں اور رنگ رنگ کے ،

دیکھلے هیں بڑے سلدر کو بڑے دال کھی کورے دنار فریب ، مکر نہ موک ،

ألبته تيز رنكت .

ليكن وة رقامت كب نك ؟

کافف کے پہولوں کی شوخی اور اُن کی زندگی ھی کتنی آ پانی کے اُوپر کافف کی ناؤ کی عمر ھی کیا آ

نگی نگی ترکیبوں اور باتوں سے عوام کو لبھائے رکینا اور وچنوں کے میٹھے سپنوں میں جیلائے رکینا ، عجیب انوبیو ہے راجنیتی کا یہ بات کتنی وچتر ہے کہ آزاد حرتے ہوئے وچنوں کے رنگیں بھلدوں میں عوام گرفتار ھیں۔ یعنی آزادی میں قید هیں۔ یعنی آزادی میں قید اور جنٹا کے ساتھ شاطرانہ جالیں جلنے میں کوئی کور کسر باقی نہیں رکو رہے اس پرکار آب تک جتنے بھی جتن ہوئے اور هو رہے ہیں آن پر جتنا بھی ماتم کیا جائے کم ہے اور جتنا شوک منایا جائے کم ہے اور جتنا شوک منایا

कासिर जनता का भी कुछ हिस्सा है आआवी में कीर कुछ इक है जन्दू रियस में पर उनकी अनता के दुःस दर्द से क्या वास्ता, और क्यों वास्ता हो ?

फिर दावा भी करते हैं अहिंखा का. बचन भी देते हैं सेवा का.

कितना चजीव तमाशा है यह चौर कितना हसीन करेंब !

चनका दावा धोखा और बचन गलत साबित हो गया . उस की मियाद भी ख़तम हो गई . आस की भी मियाद होती है. ख़लकते पैमाने को कब तक रोका जा सकता है—और कब तक विश्वासी जनता सियासी मूठ और करेब का पालन कर सकती है—जब किसी भी इन्सान का बचन बेवजन हो जाता है तो फिर उसका ख़ुद का कोई ब जन नहीं रहता उसकी जिन्दगी में और समाज में—इन्सान सक्वाई और विश्वास के बल पर इज्जत और स्वागत पाता है—इन्सान की इज्जत और कीमत उसके ठोस विश्वास में होती है. विश्वास ख़तम होते ही वह भी ख़तम हो जाता है जैसे सूरज खूबते ही दिन ख़तम हो जाता है और अन्धेरा छा जाता है.

बक्षत किसी की परवाह नहीं करता. न किसीकी तरफदारी करता है. मतलब यह कि वक्षत फिरकापरस्त नहीं होता. वह इन्साफ गरस्त होता है और न्याय करता है. वह अपने अख़-त्यार से अपना फैसला ख़द सादिर करता है. इसका फैसला इसका निजाम घड़ी की सुई की नोक पर रहता है. जो भी उसकी ज़द में आ जाता है "कसेबाशद" छिन के छिन में पीस डालता है. कस देता है इंसफ के शिकंजे में. वह किसी की करियायत नहीं रखता. न किसी की सिफारिश स्वीकार करता है—कितने घमन्छियों को उसने आन की आन में खाक में मिला दिया है. कितने तानाशाह और नेताशाह मुके पड़े हैं उनके चरणों में.

बचन इनसान को गिराता भी है, उठाता भी है, बनाता भी है बिगाइता भी है—अपनी इज्जत, अपना विकार, अपनी बात, अपनी साख कायम रखने के लिये इसका फैसला खुद इनसान के अखत्यार में है कि वह अपने लिए क्या निश्चय करता है ?

किसी भी इनसान का बड़प्पन बड़े से बड़े श्रांहरे में नहीं होता. और न उसका बड़प्पन बड़े से बड़े बंगले में रहता है. इनसान का बड़प्पन केवल बात की सच्चाई, सदाचार की सुन्दरता और किरदार की मजबूती और पाकीजगी में होता है. जिस में यह गुण नहीं वह बड़ा होते हुए भी छोटा है और मारी होते हुये भी हलका है. اخر جنتاکا سی احج حصد ف آزادی میں اور احج حق ف جمہوریت میں سیر آن کو جنتا کے داہ درد سے کیا واسطه ا لور کیوں واسطه هو ؟

پور دعوں بھی کرتے میں امنسا کا ۔

بچن بھی دیتے ہیں سیوا کا ۔

کتنا عجیب تماشه هے یہ اور کتنا حسین فریب!

ان کا دعویل جب دھو کا اور بحین غلط ثابت ھو گیا،
اُس کی میماد بھی ختم ھو گئی، اُس کی بھی میماد ھوتی هے ، چپلکتے پیمائے کو کب تک روکا جا سکتا هے۔ اور کب تک وشواسی کی جنتا سیاسی جھوت اور فریب کا پالن کو سکتی هے ، جب کسی بھی انسان کا وچن پےرون ھو جاتا هے تو بھو اُس کا خود کا کوئی رون نبھی رھتا اُس کی زندگی میں اور سماے میں۔ انسان صرف سحیائی اور وشواهی کے بل پو سماے میں۔ انسان صرف سحیائی اور وشواهی کے بل پو عوت اور قیمت اُس کے عوت اور قیمت اُس کے میں میں ھوتی ہے . اِنسان کی عوت اور قیمت اُس کے میں ختم ھو جاتا ہے ، جیسے سونے قربتے ھی دن ختم ھو جاتا ہے ، جیسے سونے قربتے ھی دن ختم ھو جاتا ہے .

وقت کسی کی برواہ نہیں کرتا ، نہ کسی کی طرفداری کرتا ، مطلب یہ که وتت فرقه پرست نہیں ہوتا ، وہ اِنصاف پرست ہوتا ہے اور نہائے کرتا ہے ، وہ اپنے اختیار سے اپنا فیصاء خود صادر کرتا ہے ، اُس کا نیصله اور اُسکا نظام گپڑی کی سوئی کی نوک پر رہتا ہے ، جو بھی اُس کی زد میں آجاتا ہے ' اُسے باشد'' چھن چھن میں پیس دالتا ہے ' سی دینا ہے اِنصاف کے شکاحیے میں ، وہ کسی کی رو رعایت نہیں رکھتا ، اُن کی کی سفارہ سوئیکار کونا سکتاء گھمندیوں کو اُس نے اُن کی آن میں خاک میں ملا دیا ہے ، کتاے تاناشاہ اور نینا شاہ جھکے پڑے ہوں اُس کے چرنوں میں ،

وچن اِنسان کو گواتا بھی ہے اُنہاتا بھی ہے باتا بھی ہے۔ باتا بھی ہے گاڑنا بھی ہے۔ بات اُپنی سائ ہے گاڑنا بھی ہے گاڑنا بھی ہے تاہم رکہانے کے ایکے رس کا فرصله خود اِنسان کے اُختیار میں ہے کہ وہ اُنٹے لئے کہا نشچے کونا ہے ہے۔

कितने अनमोल मोती और नायाय जौहर नाकदरी और सम्प्रदाय के धार में वह गये और कितने गुणी मुनि फ्ना के दामन में सिमटकर नष्ट हो गये. राज्य ने वह धन सोया जो कीम की माया था और माया से हाथ धोया जो जाकर कभी बापस नहीं आती —

देखते के देखते और आन ही आन में कितने क्रवीले खतम हो गये. कितने परिवार अन्याय की ऊँची दीवार फाँद गये. कितनी वेचैन आत्माएँ जम्हूरियत के लुभावने और रंगीन जाल के फंदों से निकलकर आजाद किया में घुत मिल गई.

यह दिल-शिकन नजारा देखकर लाजमी तौर पर आस दूरी. श्रास के दूरते ही श्राशाओं के तार भी दूर गये और उन तारों से धाराएं फूट निकलीं तेज-तेज जजबात और लाल गुस्से की.

कहाँ गये वह त्यागी श्रीर सेवक जिन हे अन्दर से हम-द्वीं का एक भाव भी न उभरा—श्रीर दुखी इन्सानियत पर जिनकी श्राँखों से एक मूठा श्राँसू भी न टपका. जिनकी श्रात्था नकसानियत के कीचड़ में लुथड़ी पड़ी है — श्रवतक.

कहाँ हैं वह जन सेवक जिन की जबानों पर आत्मा और महात्मा की रट घोखा देती रही है इन्सानियत को और इन्सान की अच्छी अकीदत को,—यानी मानवता को और मानव की सुन्दर श्रद्धा को.

आधावी के दस वर्ष कम नहीं होते. दस वर्ष के काल में दस नई पीढ़ियों जनम ले सकती हैं. दस नए आकाश बुलन्द हो सकते हैं— समय की लम्बाई, चौड़ाई और पस्ती या बुलन्दों का नाम केवल .खुशहाली और परेशानी के पैमाने से होती है. सुसीवत और तक़लीक का एक वर्ष तो बहुत होता है. एक दिन भी अधिक और बहुत अधिक होता है—उसका एक-एक मिनट श्ताब्दियों की विशालता और गहराई अपने अन्दर रखता है लेकिन उसका वही जानते और सममते हैं जिन पर मुसंबत के पहाड़ दूटते हैं या दुख के दिन बीनते हैं.

सवाल यह है कि इन तमाम ची, जों की जिम्मेदारी किस पर है ?

इनकी जिम्मेदारी मूठे बचन देने वालों पर.

असली अपराधी कौन हैं ?

जिन्होंने आशावावियों के दिलों को खाक करके और उनकी आशाओं की दीवारें गिराकर उन पर अपने भवन खबे किये.

जिन्होंने रारीवों का इक मारकर अपने जीवन को बहार ही और अपने जवाई को मोटरकार ही. کتف انبول موتی اور نایاب جوهر ناقدری اور سامهردالی کے دھار میں بد گئے ، اور کتنے گئی ملی فا کے دامن میں سبت کا نشک هو گئے ، راجید نے وہ دهن کهریا جو قوم کی ماید تیا اور اُس ماید سات دھویا جو جاکو کبھی واپس نہیں آتی۔۔۔

دیکھتے دیکھتے اور آن هی آن میںکٹنے کتیب قبلے ختم هو گئے۔ کٹنے پریوار انبائے کی اُولچی دیوار بھاند گئے۔ کتنی پہنوں آنبائیں جمہوریت کے ابباؤنے اور رنکین جاا کے بہنوں سے قائل کو آزاد فقا میں گیل مل گئیں۔

یه دل شعن نظاره دیکه از الزمی طبر پر اُس ترتی . آس کے توقع می آشاؤں کے تار بھی نوت گئے . اور اُن تاروں سے دھاریں پھوٹ نالیس نیز تیز جذبات اور لال لال غصے کی .

کہاں گئے آپ وہ تھاگی اور سیوک جن کے اندر سے همدردی کا ایک بھاؤ بھی نہ آبھرا۔۔۔اور دیمی انسانیت پر جن کی آنکھوں سے ایگ جھوٹھا آنسو بھی نہ آپکا ، جن کی آنما انسانیت کے کیچو موں لاہوی بڑی ہے اب تک ،

کهاں هیں وہ جن مهوک جن کی زبانیں ہو آتما أور مهاتمًا کی رت دعو کا دیتی رهی هے انسانیت کو أور انسانوں کی اچھی تقیدت کو'۔۔یعلی مائو'ا کو أور مائو کی سلدر شردها کو .

آزادی کے دس ورش کم نہیں ہوتے، دس ورش کے کال میں دس نئی پیڑھیاں جنم لیے سکتی ھیں ، دس نئے آکاش بلاد ھو سکتے ھیں ، دس نئے آکاش بلاد ھو سکتے ھیں ، سے کی لمبائی یا چرزائی اور پستی بلادی کی ناپ کیول خوشتدائی اور پریشائی کے پیمانے سے ھوتی ہے ، مصیبت اور تعلیف کا ایک ورش تو بہت ہوتا ہے ، ایک دن بهی ادھک اور بہت ادھک ھرت ہے۔ اُس کا ایک ایک منت شتابدیوں کی وشالتا اور گہرائی اپنے اندر رکھتا ہے لیکن اِس کو رہی جانتے اور سمجھتے ھیں جن پر مصیبت کے پہار ٹوئتے ھیں وا دکھ کے دن بینتے ھیں ،

سوال یه هه این تمام چهزین کی ذمیداری کس پر هم او این کی ذمهداری جهرتم بخون دینم را نین پر .

امانی اپرادھی کون ھیں ؟

جنہوں نے آشا رادیوں کے داری کو خاص کر کے اور آن کی آشاؤیں کی دیواریں گرا کو ان پر گئے بھوں کورے گئے یہ جنہوں نے فریدین کا حق مار کر اپنے جموں کو بہار دی اور اپنے جنٹوں کو میٹرکار دی ہ बह शान्ति पूर्व जीवन पाकर युकामी और आजादी का अन्तर समक सकती. आजादी की क़दर क्रीमत जान सकती और अपना कर्तव्य पहचान सकती.

पर नया जोड़ा नया जीवन तो हूर की बात, आजादी के मतवालों को फ़ाकों की नौबत तक पहुँचा दिया गया. कितनी पुरानी गुजामी और कितनी पुशतों की ग़रीब जनता की फटी पुरानी लंगोटी तक बिक गई.

क्या यही आजादी का बरदान इन रारीब और बेजुबान

इन्सानों के लिए है ?

क्या यही है जमहूरियत का न्याय दलित बहुमत

के लिये १

यह गरीब दुखी वह लोग हैं जो अपनों के बचनों पर भरोसा किये और "सन्तोष की सिल" छाती पर रखे वर्षों से खामोश बैठे रहे हैं और ताकते रहे हैं आने वाले अच्छे दिनों की ओर.

लेकिन इन क्रिसमत के मारों का दुर्भाग्य तो देखों कि इनके अच्छे दिनों का भी रास्ते से चुरा ले गये कोई चोर.

अगर उनसे कुछ कहा जाय तो कहने वाला भी हैरान होकर रहे जाय जब "उलटा डॉटे कोतवाल को चोर"

यही वह नामुराद और निराश जनता है कि आजादी के नाम पर जुश्हाली के सपने देखते देखते जिसकी आँखें पथरा गईं. दिल बैठ गये. आशायें मर गईं, इसरतों का .खून हो गया— गादियाँ .खाली हो गईं. मोलियाँ सड्-गल गईं. कितनों ने अपने अजीज प्यारों तक की हिड्डियाँ दफन करदीं या .खाक बनाकर उड़ा दीं.

आशा ही आशा में बेकार रहते-रहते कितने काम के हाथ शल पढ़ गये. कितने जौलानी दिमारा ठस पढ़ गये. कितने जौलानी दिमारा ठस पढ़ गये. कितने योग्यतायें कना हो गई और अन्दर ही अन्दर चुल-घुल कर अपने जौहर खो बैठीं—योग्यतायें मूल्य में बरदान होती हैं कुदरत की ओर से किसी क्रीमी राज्य के लिये यह वह भारी नुक्रसान है जिसका बदल कठिन—लेकिन इस महान नुक्रसान को केवल जिन्दा, क्राबिल, इक्र पसन्द और इन्साफ परवर हकूमतें ही सममती हैं—जौहर की क्रीमत केवल जौहरी ही जानता है और उनकी नाक्रदरी पर बसी का मातम और सदमा भी बजा!

नाक्षद्री, बेसीरी और बेपरवाही का कारण सभ्यता और इतिहास के क्षानियों की हिम्मत और साहस को भी ठेस पहुँचाती है और उनकी कार्य शक्ति का उस पर प्रभाव पड़ता है. तहजीब और कल्चर के अनमोल भन्डार और प्राचीन संस्कृति के अनेक अनेक चित्र और खुजाने दुनिया के सामने आते-आते रह जाते हैं और दुनिया उनके लाभ से महरूम हो जाती है. अच्छी, तरक्की-पसन्द और छुपालु हुक्सतों का कर्त व्य होता है कि वे ऐसी योग्यताओं को क्षदर करें और क्षीमी गुग्र गान को सम्मान है ه شائتی پورن جیبن باتر ظامی اور آزادی کا آنظر مسجه معتبی اور اینا کرتویه پیوهان معتبی اور اینا کرتویه پیوهان معتبی در اینا کرتویه پیرون در اینا کرتویه کرد در اینا کرتویه کرد در اینا کرتویه کرد در اینا کرد

پرنیا جُوْلُ اُور نیا جیری تو دور کی بات آزادی کے متوانی دو دور کی بات آزادی کے متوانی دو دور کی بات آزادی پرانی اللہ اور کتابی پشتی پرانی للکوئی کے بک کئی ۔ کی بک گئی ۔

کیا یہی ہے آزادی کا وردان ان غریب اور پرزبان انسانیں

کیا بھی فے جموریت کا نیائے دات بہوست کے لئے ؟

یہ غزیب دکھی وہ اوک میں جو آپلس کے بیجلس پر بھروسہ کئے اور دسترش کی سل" چھاتی پر رکھے ورشوں سے خاسوش بیٹھے رہے میں اور تکتے رہے میں آلے والے اچھ دنوں کی آور ،

لیکن اِن قسمت کے ماروں کا فربھاگھے تو دیکھو کہ اِن کے اُن کے اُن کے دنوں کو بھی راستے سے چرا لے گئے کوئی چور ،

اگر أن سے كنچھ كها جائے تو نهنے والا بھى حيرانى هو كر رة جائے جب ألك قانتے كوتوال كو چور .**

یہی وہ نامراد اور نراش جنتا ہے که آزادی کے نام پر خوشحالی کے سپنے دیکھتے دیکھتے جس کی آنکھیں یتورا گئیں' دل بیٹھ گئے ۔ آشائیں سر گئیں' حسرتیں کا خوی ہو گیا۔۔۔گردیاں خالی ہو گئیں' جھولیاں سر کل گئیں ۔ کتنیں نے اپنے عزید پیاروں تک کی ہتیاں دنی کر دیں یا خاک بنا کر آزادیں ۔

آشا هی آشا میں پرکار رہتے رہتے کتنے کام کے جاتے شل پڑ گئے۔ کتنے جولانی دماغ ٹیس پڑ گئے، کتنی پرکتائیں فا هو گئیں اور اندر هی اندر گیل گیل کر اپنے جوهر کھو بھٹھیں۔ پرکتائی مول میں وردان هوتی هیں قدرت کی اور سے کسی قومی راجیت کے لئے یہ وہ بھاری فقصان ہے جس کا بدل کہتی۔۔۔ایکن اِس مہان نقصان کو کیواں زندہ قابل' حق پسفد اور انصاف پرور حکومتیں هی سمجہتی هیں۔۔جوهر کی قیمت کیول جوهری هی جانتا ہے ۔ اور اُن کی فاقدری پر اُسی کا ماتم اور مدمت بھی بجا!

نافدری پخوری اور یہ پروائی کے کارن سبھنا اور اتہاس کے گیائیوں کی همت اور ساهس کو بھی تھیس پہونجاتی ہے اور آن کی کاریہ شکتی پر آس کا پرھباؤ پڑنا ہے، تہذیب کلچور کے آندول بھندار اور پراچھن سنسکرتی کے آنھک ایک چتر اور خزائے دنیا کے سامنے آتے آتے رہ جاتے میں اور دنیا اُن کے لابھ سے محروم ہو جاتی ہے ، اچھی ترتی پسند اور کربالین حکومتوں کا کر توبے ہوتا ہے کہ وے آیسی یوگیتاؤں کی قدر کریں اُن قومی گن گئی کو سممان دیں ،

एक आदमी रस्ल के पास आया और पूछने लगा:— 'क्या मैं सपने ऊँट की टाँगों को बाँध दूँ और अल्लाह पर जिस्कल करूँ (छोड़ दूँ) या मैं ऊँट की खुला रहने दूँ भीर अल्लाह पर छाड़ हूँ ?" पैरान्बर ने जवाब दिया— 'ऊँट की टाँगों को बाँध दो और फिर अल्लाह पर छोड़ हो."

—अंस, तिरमिजी.

मुहम्मद साहब ने कहाः—'सच्ची श्रागाही यानी विताबनी ही दीन है."

—श्रयू हुरैरा, (तग्मिजी, शमीवलदारी' मुसलिम, श्रयूदाऊद, निसाई.

मुह्न्भद साहब ने मुक्तसे कहा:—"ऐ अबूजर खबरदार रहो, तुन्हारे अन्दर कमजारी आने न पाने. मैं जो अपने लिये बाहता हूँ वही तुन्हारे लिये. कभी दो आदमी के बीच में यह फैसला न करा कि कीन अच्छा है और कीन बुरा. और कभी यत्तीमों के माल पर क़बजा न करा."

—अयूचर, अयूदाऊद, निसाई.

[डावटर मिरजा अञ्चलक्जल की अंग्रेजी किताब से तरजुमा. अनुवादक-श्री मुजीब रिजवी.]

वचन भौर जतन

श्री अबदुल हलीम अन्सारी

आजादी हासिल करते वक्त बचन देने वालों का कर्तव्य था और राज की कुर्सी पर ठाठ से बैठने वालों पर लाजिम था कि गुलामी से रिहाई और आजादी की प्राप्ति पर वियों की गुलाम जनता को आजादी का नया जोड़ा पहिनाया जाता और आजादी के दीपक से उनके अंधेरे घरों में उजा-ला किया जाता. गुलाम और तरसी जनता को पुख शान्ति का प्याम दिया जाता, नया जीवन नया शास दिया जाता. देशक ایک آدمی رسول کے پاس آیا اور پوچھلے گا ہس۔ ایک میں اپنے اُرنٹ کی ٹانگوں کو بائدہ دوں اور پھر اللہ پر ٹوکل کورل (چھوڑ دوں) یا میں آولت کو کھا رہنے دوں اور اللہ پر چھوڑ دوں ؟'' پنسور لے جواب دیا :۔۔"آونت کی ٹانگوں کو بائدہ دو اور پھر اللہ یہ چھوڑ دو ۔''

سانس ترمزی .

محمد صاحب نے کہا کہ :۔۔''مچی آگلعی یعلی چیکاوئی هی دین هے ،''

سابو هريرة ترمزي شمهم الداري مسلم أبو داعود تساعي .

محمد صاحب نے مجہدے کہا: ۔۔ 'اے امرفرا خبردار رھو تمہارے اندر کمؤوری آنے نہ پارے میں جو اپنے لئے چاھٹا ھوں وھی تمہارے لئے چاھٹا ھوں ۔ کبھی دو آدمیوں کے بیچ میں یہ فیصلہ نہ کرو که کون اچھا ہے اور کون برا ۔ اور کبھی یکھموں کے مال مر قبضہ نہ کرو ۔ ''

-ايونز ايو داعود نساعي .

قائلر مرزا ابوالففل کی انکریزی کتاب سے قرجمہ .] ---انوادک شری معجیب رضوی .]

وچي اور جتي

شرى عبدالعليم أنصارى

آزادی حامل کرتے وقت بھی دیتے والوں کا کرتریہ تھا اور راج کی کوسی پر ٹھاٹھ سے برتھتے والوں پر لازم تیا کہ ظامی سے رہائی اور آزادی کی فلم جنتا کو آزادی کا نیا جوڑا پہنایا جاتا اور آزادی کے دبیک سے اُن نے اندعیرے گھروں میں اُجالا نیا جاتا، ظم اور ترستی جُنتا کو حکم شائتی کا بھام دیا جاتا ، نیا جھوں نیا پران دیا جاتا ، بھک

معدد للعب ع اجه ابيدو

कर दूसरे कान से निकाल दिया. उस आदमी ने दोबारा अबुवकर का अपमान किया अबुवकर ने फिर भी कोई परवाह न की. उस आदमी ने तीसरी बार अबुवकर का उसी तरह अपमान किया. इस पर अबुवकर ने उसका उसी तरह के राज्यों में जवाब दिया. यह देख मुहम्मद साहब फोरन खड़े हो गये और वहाँ से चलने लगे. इस पर अबुवकर ने पूझा:—''ऐ अस्लाह के रस्ल ! क्या आप मुम्मसे नाराख हा गये ?'' पैराम्बर ने जवाब दिया:— 'नहीं! लेकिन जब उस आदमी ने पहले तुम्हारा अपमान किया'या तो एक .फरिश्ता इसे मुठलाने के लिये आसमान से उत्तरा था लेकिन जब तुमने उसका उसी तरह जवाब दे दिया तो वह .फरिश्ता चला गया और उसकी जगह शैतान तुम्हारे पास आ बैठा. इसलिये जब तक शैतान यहाँ बैठा है मैं नहीं बैठ सकता.

-- इब्न मुसैयब, अबू दाऊद.

मुह्म्मद साहब ने कहा:—''क़ुरान पढ़ों श्रीर लोगों को पढ़ाश्रो. क्योंकि सचमुच मैं केवल एक आदमी हूँ श्रीर एक दिन तुन्हारे बीच से उठा लिया जाऊँगा.''

-इबने मसऊद, दारयमी, दारकृतनी.

सुदम्मद साहब ने कहा:—"क़ुरान में पाँच तरह की चीजें कतरी हैं: एक मारूफ जिनका करना जायज है, दूसरे सुनिकर यानी वह चीजें जिनका करना नाजायज है, तीसरे वह चीजें जो साफ और सरीह हैं, चौथे वह चीजें जो सुतराषेद्दात यानी तराबीह (अलंकार) के रूप में की गई हैं और पाँचवें वह चीजें जो कहानियों की शकत में हैं. इसलिये जिन चीजों को जायज बताया गया है उनसे बचो जो सीधी साफ हिदायतें हैं उनपर अमल करो, जो तराबीह यानी अलंकार के तौर पर कही गई हैं उनसे सबक सीखों."

—श्रबू हुरैरा' बेहक़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा:—''सचमुच अल्लाह अपने जोगों के लिये हर सी साल के ग्रुक में एक ऐसा आदमी पैदा कर देगा जो लोगों के दीन को ताजा कर देगा.

→अबू हुरैरा, अबूदाऊद.

بوسرے کان جہ تکالی دیا۔ آس آدمی نے دوبارہ ابوبکر کا ایسلی
ابو بکر نے پھر بھی کوئی پرواہ نہ کی۔ اُس آدمی نے نیسری
ابوبنو کا اُسی طوح ایسان کیا ، اِس پر ابوبکر نے اُس کا اُسی کا اُسی طوح کے شہدوں میں جواب دیا ، یہ دیکھ محصد صلحب اُس کا گھڑے ہوگئے اور وہاں سے چانے اگھ، اِس پر ابوبکر نے پوچھا سے اللہ کے رسول ! کیا آپ محج سے ناراض ہو گئے ؟ " پینسبر جواب دیا اُس آدمی نے پیلے جواب دیا اُس آدمی نے پیلے اُسان کیا تھا تو ایک فرشتہ اِسے جبرتانے کے لئے اُسان سے اِ تھا لیکن جب تم نے اُس کا اُسی طوح جواب دے دیا وہ فرشتہ چلا گیا اور اُس کی جتہ شیطان تمہارے پاس بیٹھا ۔ اُس لئے جب نک شیطان یہاں بیٹھا ہے میں نہیں بیٹھا ۔ اُس لئے جب نک شیطان یہاں بیٹھا ہے میں نہیں بیٹھا ۔ اُس لئے جب نک شیطان یہاں بیٹھا ہے میں نہیں بیٹھا ۔ اُس کی جتہ شیطان بیاں بیٹھا ہے میں نہیں بیٹھا ۔ اُس کا شیطان یہاں بیٹھا ہے میں نہیں بیٹھا ۔ اُس کا شیطان یہاں بیٹھا ہے میں نہیں بیٹھا ۔ اُس کا شیطان یہاں بیٹھا ہے میں نہیں بیٹھا ۔ اُس کا شیطان یہاں بیٹھا ہے میں نہیں بیٹھا ۔ اُس کا شیطان یہاں بیٹھا ہے میں نہیں بیٹھا ۔ اُس کا شیطان یہاں بیٹھا ہے میں نہیں نہیں بیٹھا ۔ اُس کا سیکا ۔ ''

--ابن مصهب ابوداعود .

ممصد صاحب نے کہا :—قرآن پڑھو اور لوگوں کو پڑھاؤ . پوئنت سچ میچ میں کھول لیک آدمی ھوں اور ایک دن تمهارے پچ سے آٹھا لیا جاؤنگا ۔"

ــاین مسعود داریمی: دارقطنی .

محصد صاحب لے کہا : -- 'تورآن میں پانچ طرح کی چیزیں آتری میں: ایک معررف یعنی وہ چیزیں جن کا کرنا داجائز ہے، درسرے ملکر یعنی وہ چیزیں جن کا کرنا داجائز ہے، درسرے وہ چیزیں جو صاف اور صربے میں، چوتے وہ چیزیں جو مشا بہات یعنی تشبه (النکار) کے روپ میں کہی گئی میں ور پانچویں وہ چیزیں جو کہائیوں کی شکل میں میں اس ایس خیزوں کو جائز بتایا گیا ہے آنہیں جائز مائو، جینی ناچائز بتایا گیا ہے آن سے بچو، جو سیدھی صاف مدائتیں میں آن پر عمل کرو، جو تشبہت یعنی النکار کے طور پر کہی گئی میں آنہیں ویسا می مائو، اور جو کہائیاں کہی گئی میں آن سے سبتی سبکھو ۔''

--أبو هريرة بهيقى .

محمد صاحب نے کہا :۔۔۔''سے سے الله اپنے لوگوں کے لائد هو سو سال کے شورع میں ایک ایسا آدمی پیدا کر دیکا جو لوگوں کے دین کو تازہ کر دیکا '''

. -- أبو هريره ابو داعون .

भी छोड़ देगा तो वह बरबाद हो जायगा. इसके बाद एक ऐसा जमाना छायेगा जबकि इस जमाने के लोगों में से अगर कोई इसमें से दसवें हिस्से पर भी अमल करेगा तो निजात पायेगा,"

-अब हुरैरा, तिरमिजी.

मुहम्मद साहब से पूछा गया कि :— "आदिमयों में सबसे बढ़कर आदमी कीन है ?" मुहम्मद साहब ने जवाब - दिया :— "हर वह आदमी जो दिल का साफ है और जबान का सबा." फिर पुछा गया : "जबान का सच्चा कीन है, यह हम समक सकते हैं लेकिन दिल का साफ कीन है यह हम कैसे जानें ?" पैराम्बर ने जवाब दिया :— "दिल का साफ वह है जो पाक हो, नेक हो, पाप न करता हो, कोई बुराई न करता हो और किमी के साथ न बुरज (देव) रखता हो और न किसी से हसद (ईपी) करता हो."

—श्रवदुल्ला बिन उम्र, इबने माजह, बेहक्री.

मुहस्मद साहब ,ने कहा: —'श्रादमी के लिये दूसरे से मगड़ते रहना श्रीर मगड़ा बन्द न करना काफी बड़ा गुनाह है."

-इब्न अब्बास, दिरमिजी

मुश्मद साहब ने कहा:—''श्वल्लाह की नजरों में सर् से .ज्यादा नफरत श्रंगेज श्वादमी वह है जो सब से .ज्याद मगदता श्रीर तकरार करता है.''

-- आयशा, बुखारी, मुस्लिम, तिरमिजी, नसाई.

मुहम्मद साहब ने कहा: -- "कोई क्षीम जिसे एक बाई हिदायत मिल गई थी उस वक्त तक गुमंराह नहीं हुई जब तक उस क्षीम के लोगों ने आपस में मागड़ना गुरू नहीं कर दिया."

-अबु अमामा, तिर्मिजी. इब्ने माजा, अहमद.

एक दिन मुहम्मद साहब अपने सहाबियों (साथियों) के साथ बैठे थे. उनमें से एक आदमी ने उठकर अबुक्कर का सुद्ध अपमान क्रिया. लेकिन अबुक्कर ने एक कान से सुन-

ہی چھوڑ دے گا تو وہ برماد ہر جاتھا ۔ اِس کے بعد ایک ایسا زمانہ آٹھکا جب که آس زمانے کے لوگوں میں سے اگر کوئی اِس میں سے دسویں حصے پر یعی عمل کریکا تو وہ تحجات یائیکا ،"

-ايو هريري^ء ترموي .

محمد ملحب سے پوچھا گیا کہ :—"آدمیوں میں سب سے بوعمر آدمی کون ہے ؟" محمد صلحب نے جواب دیا:—"هر وہ آدمی جو دل کا صاف ہے اور زبان کا سچا ۔" پھر پوچھا گیا ہے۔ بربان کا سپا کون ہے یہ ہم سمجھ سکتے بھیں' لیکن دل کا ماف کون ہے یہ ہم سمجھ سکتے بھیں' لیکن دل کا ماف کون ہے یہ ہم کیسے جانیں ؟" پیغمبر نے جواب دیا :— ادراکا ماف وہ ہے جو پاک ہو' نیک ہو'پاپ نے کرتا ہو' کوئی برائی تے کرتا ہو اور کسی کے سانھ نے بیض (دوئیش) رکھتا ہو اور نے کسی سے حسد (ایرشا) کوا ہو ۔"

-عبداله بن عمرو، ابن ماجه، بهيقي.

محمد ماحب نے کہا اسس آدمی کے لئے درسرے سے جہگرتے برهنا اور جہگڑا بلد نے کرنا کانی ہوا گناہ ہے .

-ابن عباس ا ترمزي .

محمد صاحب نے کہا:۔۔۔'الله کی نظروں میں سب سے زیادہ نفرت انکیر آدمی وہ فے جو سب سے زیادہ جھکوتا اور تعرار کرتا ہے ،''

--عائشه بخارى مسلم ترمزى لساعى .

محدد صاحب نے کہا :۔۔۔''کوئی توم جسے ایک بار مدایت مل گئی تھی آس وقت تک گدراہ نہیں موئی جب نک اُس قوم کے لوگوں نے آپس میں جھکونا شروع نہیں کر دیا ۔''

سابو امامه، ترمزی، ابن ماجه: احمد .

ایک دی محمد صاحب اپنے صحابیوں (ساتھوں) کے ماتو بھتھ موٹی تھے ۔ آن میں سے ایک آدمی لے آئو کو بوبتو کا کھیے آپیاں کیا ۔ لیکن ابوبتو لے ایک کان سے س

मुहम्मद साहब के कुछ उपदेश

क्षक्टर मिरजा अबुल फल्ल

मुहम्मदं साहब ने कहा:—"अपनी श्रसल या खानदान के घमन्ड में कोई किसी को खुरा न कहे. तुम सब आदम की बौलाद हो और इस दरह एक दूसरे के बराबर हो जिस तरह एक माप दूसरे माप के बराबर होता है और तुम में से कोई भी माप में पूरा नहीं है. कोई किसी बात में दूसरे से बड़ा नहीं है. सिवाय उनके कि जो नेकी और धार्मिकता में बढ़े हुए हों. आदमी के लिये घमन्डी होना, बेशमें होना या कंजूस होना बहुत बुरी बात है."

- - आंक्रवा विन आमिर, अहमद, बेह्की.

मुद्दम्मद संहिय ने कहा:—"उन सब लोगों को जो अपनी नसल का घमन्द्र करते हैं, जो कहते हैं हमारे बाप दादा यह थे और वह थे, उन्हें चाहिये इस तरह का घमन्द्र करना बन्द कर दें. इस तरह का घमंद्र उन्हें दाजला की आग के कायले बना देगा. इस तरह का घमन्द्र करने से अल्लाह की नजरों में वह उस की हे से भी जयादा जलील होंगे जो मैले पर आपनी नाक रगड़ता है. सचमुच में इस तरह का घमन्द्र जहालत के दिनों की चीज थी. अल्लाह ने अब उसे तुन्हारे लिए नाजायज कर दिया है. आदमी या तो नेक और ईमान वाला होता है या वद और गुनहगार —सब आदमी आदम की औलाद हैं और आदम निट्टी से बना हुआ था."

—श्रव हुरैरा, तिरमिची, श्रव दाऊद.

मुह्म्मद साहब ने कहा:—"जो कोई अपने भाई का सत बिना उसकी इजाजत के पढ़ता है वह दोजख़ की आग में पढ़ता है (और उसी में फेंका जायगा)."

-इन्ते अन्त्रास, अबू दाऊद.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"सचमुच तुम आजकल ऐसे बामाने में रह रहे हो जिसमें जो कुछ करने को तुन्हें हुदम दिखा जा रहा है उसमें से अगर कोई दसवाँ दिस्सा

معدل صاحب کے کچھ أبديش

قاكتر مرزا ابوالضل

محمد صاحب نے کہا :—"اپنی اسل یا خاندان کے گھنڈ میں کوئی کسی کو ہوا نے کہے ، تم سب آدم کی اوالد ھو اور ایسی عارے ایک درسرے کے برابر ھو جس طرح ایک ماپ درسرے ماپ کے برابر ھوتا ہے اور تم میں سے کوئی بھی ماپ میں پورا نہیں ہے ۔ کوئی کسی بات میں درسرے سے بڑا نہیں ہے ، سوائد ان کے کہ جو نیکی اور دھارمکڈا میں بڑھے ھوئے ھوں اگھی کے لئے گھنڈی ھونا ہے ۔ گدمی کے لئے گھنڈی ھونا ہے شرم ھونا یا کنجوس ھونا بہت ہوں بات ہے ۔ "

-عقبه بن عامر احمد بهيقى .

محمد صاحب نے کہا :۔۔"أن سب نوگوں کو جو اپنی نسل کا گیمنڈ کرتے ہیں' جو کہتے ہیں که همارے باپ دادا یہ تھے اور وہ تھے'، اُنہیں چاہئے که اِس طرح کا گیمنڈ کرتا بلد کر دیس ۔ اِس طرح کا گیمنڈ اُنہیں دوزخ کی اُک کے کوئلے بنا دیگا ۔ اِس طرح کا گیمنڈ اُنہیں دوزخ کی اُک کے کوئلے بنا دیگا ۔ اِس طرح کا گیمنڈ کرنے سے الله کی نظروں میں وہ اُس کوڑے سے بھی زیادہ ذلیل ہونگہ جو میلے پر اپنی تاک رگوتا ہے ۔ کوڑے سے بھی اِس طرح کا گیمنڈ جہالت کے دنوں کے کی چھڑ تھی ۔ اُلله نے آپ اُسے تمہارے لئے ناجائز کر دیا ہے ۔ اُدمی یا تو نیک اور ایمان والا ہوتا ہے اور یا بد اور گنه گل ، سب اَدمی آدم کی اور ایمان والا ہوتا ہے اور یا بد اور گنه گل ، سب اَدمی آدم کی اور ایمان والا ہوتا ہے اور یا بد اور گنه گل ، سب اَدمی آدم کی

-ايو هريره ترمزي ابوداعود .

محمد صاحب نے کہا :۔۔۔"جو کوئی اپنے بہائی کا خط بنا اُس کی اُجازت کے پڑھتا ہے وہ دوزے کی آگ میں پڑتا ہے راور اُسی میں پہینکا جائیگا) ۔"

-- ابن عبلس^ا ابو داعود .

معدد صاحب نے کہا:۔۔۔'نسج می آجال تم ایک ایسے زمانے میں رہ رہے ہو جس میں جو کنچھ کرنے کو تمہیں حکم دیا جا رہا ہے۔ اُس میں ہے اگر کئی دسواں جمع यह सो हा बड़ी-बड़ी बाते. रोजमर्रा के जीवन में भी इस सरह की जम्मती भावना गो जूली के सिनारों की तरह किल- मिल करती रहती है. भारत में सिदयों से स्की पीरों के बे- धुमार हिन्दू मुरीद रहे और अब भी हैं. मुगलिया बादशाहों ने कई वेदान्ती गुरू बनाये हैं और दारा शिकोह खीर अक- बर बादशाह ने जो वेदान्त-इस्लाम का मीलिक और अत्यन्त महत्वपूर्ण समन्वय किया है, उसके असर शायद हम कुछ सिदयों के बाद समक सके गे जब उन जमानों और उन पुरुष श्रेष्टों का खरा इतिहास खुलेगा और जनता के सामने वेघड़क पेश किया जायगा.

कलाओं के दायरे में वेदान्त-इस्लाम के तत्व एकमेक में घुल-मिलकर कुछ अजब खूबसूरती पैदा कर गये! इनका असर हमारी जिन्दगी में ऐसा व्यापक हो गया है कि हिन्दू सङ्गीतकार सहज ही बंग्ल बैठता है, 'जी, मैं ता हिन्दुस्तानी तरीके से गाता हूँ.' और उसे दिन भर भी भान नहीं होता कि वह किस अद्भुत संगम और समन्वय का प्रतीक बना हुआ है.

धफ्सोस है कि आज के स्थापत्य में इस असल और सुन्दर संगम-समन्वय की कोई मलक तक नजर नहीं आती. हमने जो सदियों के पुरुषार्थ से कमाया है, सो हमें इस तरह फेक न देना चाहिये. इससे हमारा ही नहीं, तमान दुनिया का भारी नुक्रसान होगा. हम भारतियों को बड़ा नाज होना चाहिये कि सारी दुनिया के देशों में एक भारत ही है जो सच्चे मानों में संगम देश रहा है; और आज के लड़ते-मत्तवते, मारते-काटते, जलाते खुबाते संसार में संगम-राज्य बनने का श्राधकार रखता है.

'उस्मत' शब्द अरंबिस्तान से आया है मगर 'उम्मत' भारत में ही खगा और पनपा है. ये ही हमारा सच्चा, सना- तन और अमर विरसा (विरासत) है, हम भारतीयों को इसके लायक बनने की भरसक कोशिश करते रहना है, और इसे सुरक्षित रखकर इसके बढ़ाने और चढ़ाने में अपनी जान और जीवन लगा देना है.

श्वस्ताह करे ऐसा ही हो ! श्रस्ताह हमें सद्बुद्धि बख्शे ! श्वस्ताह हमें मदद करें!

भागीन !

[मङ्गल प्रभात से]

یه و هوشی بری بری باتوں ، دور مود کے جهوں میں بی اس طرح کی استی بهاوتا کودعولی کے ستاروں کی طرح جهل مل کوتی رهتی هے ، بهارت میں صدیوں سے صوتی یفروں کے بے شمار معلمو مرید رهے اور اب بھی هیں ، مغلبته بادشاهی کے بے شمار معلمو مرید رهے اور اب بھی هیں ، مغلبته بادشاهی کئی ویدائت گرو بغائے هدی اور دارا شکود اور اکبر بادشاه کے بحو ویدائت اسلام کا مولک اور اتینت مہتو پوری سمنو لے کیا هے اسکے اثر شاید هم کچے صدیوں کے بعد سمنچ سکیں گے ۔ جب ان زمانوں اور ان پروهشویشاهوں کا کھوا اِتهاس کیلے کا اور جنتا کے سامنے بے دھرک پیش کیا جائیگا ،

کاؤں کے دائرے میں ویدانت اِسلام کے نتو ایکم ایک میں گیل ملکر کچھ عجب خوبصورتی پیدا کر گئے 1 اِنکا اثر هداری وندگی میں ایسا ویاپک هو گیا هے که هندو سنگیتکار سپیج هی بول بیلیتا هے 'جی' میں تو هندستانی طریقے سے گانا هوں' اور اُسے دی بھر بھی بیاں نہیں هوتا که وہ کس ادبیت سنگم اور سمنوے کا درتیک بنا هوا هے .

افسوس ہے کہ آج کے استھابتیہ میں اِس اصل اور سندر
سندم سنوے کی کوئی جھلک نظر نہیں آتی ۔ هم نے جو
مدیوں کے پروشارف سے کمایا ہے، سو همیں اِس طرح پھیلک
نه دینا چاعیئے ۔ اِس سے همارا هی نهیں تمام دنیا کا بھاری
نقصان هوگا ، هم بھارتیوں کو بڑا نماز هونا چاعئے که ساری دنیا
کے دیشوں میں ایک بھارت هی ہے جو سنچے معلوں میں
سنکم دیش رہا ہے اور آج کے لڑتے جھکڑے، مارتے کائتے، جلاتے۔
نیاتے سنسار میں سنکم راجیه بننے کا اد یکار رکھت ہے .

'است' شبد عربستان سے آیا ہے مکر 'است' بھارت میں اللہ اور پنیا ہے ۔ یہ عی همارا سچا' سناتی اور امر ورثه (رائت) ہے' هم بھارتیوں کو اِس کے لاق بننے کی بھرسک وشش کرتے رهنا ہے' اور اِسے سورکشت رکھر اِسکے بڑھانے اور چھانے اور چھانے میں اپنے جانے اور جھوں لگا دینا ھے ۔

الله كرے آيسا عى هو! الله هميں سديدهى بخشه! الله هميں مدد كرے!

أمين !

[منكل بربهات سه]

दी, और जहाँ तक धुमे याद है कहा, 'अब्बास अली, तुम अन्दाक्षा लगा लो कि मिर्नद बनाने में कितना रुपया लगेगा. तुम जितना जमा कर सको, कर लो. अधूरा में पूरा कर दूँगा.' हमारे बाबाजान बरसों बढ़ोदा छौर बम्बई में ग्रिश मुसलमानों, ताँगेवालों, विक्टोरिया वालों, कारीगरों व हर तरह के पेरोकारों से पाई-पैसा जमा करते रहे. न गरमी देखी न सदी, न दिन देखा न रात. बम्बई की मूसलाधार बरसात में, टलनों तक के कीवड़ में फवाफव घूमते फिरे और आख़िर एक दिन बनका काम ख़तम हुआ. महाराज ने अपना बादा पूरा किया. मुके अच्छी तरह याद है (मैं कितनी छोटी थी) कि एक सुबह हमारे बाग के फाटक पर महत का सबार का खड़ा हुआ. मैंने दौड़कर फाटक खोला—महाराज की तरफ से लिकाका आया था. में चीखती-विस्लाती बाबाजान अम्माजान की तरफ दौड़ी: 'महाराज का चेक आया है.'

मस्जिद बनी. बड़ीदे की पुरानी मस्जिद में एक इ: फु.ट लंबा इ. रानेपाक था, जो बर सों कहीं महकून बन्द पड़ा था. बड़े जुलूस, बड़ी घूमधाम और शान के साथ बह कुराने पाक मस्जिद में लाया गया और एक बरादादी पीर के हाथों नए घर में उसकी स्थापना हुई. वह जुलूस, वह स्थापना, वह मस्जिद में पहली नमाज, वह पीर साहब की इमामत, वश्च (प्रवचन) मैं कभी नहीं मूलूँ गी. लेकिन सबसे ज्यादा चमकदार तस्त्रीर मेरी आँखों और दिल में यह समाई है कि जबरदस्त शानदार जुलूस के सामने महाराज के मुख्य हाथी पर जर्रीन हीदे पर जर्रीन कपड़े से ढका हुआ वह इरानेपाक मस्जिद की कोर जा रहा है और उसके पीछे हमारे महाराज, पीर साहब के साथ अपने मुनहरी अंबारों में अपने शानदार हाथी की पीठ पर जा रहे हैं.

बहार में एक बहा अजीव वातावरण्या. पुराने जमाने से वहाँ के एक बहे नवाबी सान्दान की राज दरबार में बड़ी प्रतिष्ठा थी. किस्सा मैंने यों सुना था कि पुराने जमाने में इस नवाबी सान्दान के पूर्वजों ने उस जमाने के गायकवाड़ का दुश्मनों के सामने मदद की थी, जिससे राजा अपनी गद्दी पर सलामत रहे. खुनांचे, इस नवाबी खान्दान को बहुत कुछ पुरस्कार के साथ यह अधिकार दासिल हुआ कि दरबारों में वह गायकवाड़ के साथ सिहासन पर विराज, और उनके सदर दरवाजे के सामने हाथी होलते रहें. एक गायकवाड़ के लिए तो यह भी सुना था कि वे मस्जिद में जुमा की नमाज में कई बार शरीक रहते थे. मैंने उमर भर इस उम्मती वाता-वरण का मजा खूटा है. हिन्दू ,इस्तामी, ईसाई, जरथ्रशी—सभी त्योहार मिल-जुलकर मनाये जाते थे. भारत संगम देश है, तो बड़ी हाल होगा और सदा रहेगा.

METAL '57

فی اور جہاں تک مجھے یاد ہے کہا تعلق علی اللہ میں الدارہ الحال رویدہ لکے اللہ تم جتنا جسم کو سکو کو او . ادھورا میں پررا کردوئگا ۔ مدارے بابا جان برسرں بزودہ اور بسٹی میں فریب مسامانوں نائکے رابوں وتقوریہ والیں کاریکروں و هر طرح کے پیشکاراں سے پائی پیسہ جمع کرتے رہے ۔ نہ گرمی دیکھی ته سردی نه دن دیکھا نه رات ، بمبئی کی موسلادھار برسات میں تخفیل تک کی کرچچ میں پہچاپیج گھومتے پھرے اور آخر ایک دن ان کا کام ختم هوا ، مہاراج لے اپنا رعدہ برزا کیا ، مجھے اچھی طرح یاد ہے (میں کنلی چھوٹی تھی) برزا کیا ، مجھے اچھی طرح یاد ہے (میں کنلی چھوٹی تھی) ہورا کہ ایک صبح همارے باغ کے پہاٹک پر محل کا سوار آ کھڑا ہوا ، میں جدختی چلانی بابا جان اما جان کی طرف جوری : تسہاراج کا چیک آیا ہے ، میں چرخی جانان کی طرف جوری : تسہاراج کا چیک آیا ہے ،

مسجد بای ، بردے کی پرانی مسجد میں ایک چھ نمی امک چھ نمی امی ایک ہے است امی امی ایک ہے است امی امی امی امی امی امی امی امی برح دور امی اور خان کے ساتھ وہ قرآن پاک مسجد میں لایا گیا اور ایک بغذادی پور کے هاتھوں نئے گور میں اسکی استھاینا ہوئی ، وہ جلوس' وہ استہاپنا' وہ مسجد میں پہلی نماز' وہ پھر صاحب کی امامت' وعظ (دورچی) میں کبھی نمین بھولوں گی . لیکن سب سے زیادہ چمکدار نصویر میری آنکھوں اور دال میں یا سمائی ہے کہ زبردست شاندار جلوس کے ساملے مہاراے کے مکھید هانهی پر زریں ہودہ پر زریں کورے سے قوکا ہوا وہ قرآن پاک مسجد کی آور جا رہا ہے اور اسکے پیچھے همارے مہاراے' پھر صاحب کے ساتھ اپنی ساہری انباری میں اپنے شاندار هاتھی کی پیٹھ پر جا رہے ہیں ۔

برودسے میں ایک برا عجیب واناورن تھا ، پرانے زمانے سے
وہاں کے ایک بڑے نوابی خاندان کی راج دربار میں بڑی
پرتشاہا تھی، قصہ میں نے یوں سفا تھا که پرائے زمانے میں اس
نوابی خاندان کے پروجوں نے اس زمانے کے ٹاہواز کو دشملوں
کے سامنے مدن کی تھی' جس سے راجہ اپنی گدی پر سلامت
رہے ، چاناتچہ' اس نوابی خاندان کو بہت کتچھ پرسکار کے
ساتھ یہ ادھیکار حاصل ہوا که درباروں میں وہ ٹایکواز کے ساتھ
سنگھاسی پر وراجیں' اور انکے صدر دروازہ کے سامنے ہاتھی
سنگھاسی پر وراجیں' اور انکے صدر دروازہ کے سامنے ہاتھی
مسجد میں جمعہ کی نماز میں کئی بار شریک رہتے تھے ۔
مسجد میں جمعہ کی نماز میں کئی بار شریک رہتے تھے ۔
میس نے عمر بھر اس استی واناوری کا مزہ لوٹا ہے ۔ ملدو'
میں نے عمر بھر اس استی واناوری کا مزہ لوٹا ہے ۔ ملدو'
میں خاتے تھے ، بھارت سنگھردی ہے' تو برودہ ضرور سنگھرانے تھا۔
موان دیا ہے کہ آپ بھی وہی جال ہوٹا اور سدار وہیگا ،

कुमारी रैहाना तैयवजी

ये लक्ज, 'उम्मत' कितना प्यारा लक्ज है! भरकी लक्ष्य 'अन्म' का मतलब है 'माँ' ; श्रुम्मत यानी 'एक माँ-बाप के बच्चे'। इसलिये अल्लाइ पाक को विश्व का परम विता मानकर, इस्लामी जमात को चम्मत कहा गया है. लेकिन कोई अकरी नहीं कि उम्मत महज इस्लामियों की हो. जहाँ आपसी प्रेम, इमदर्दी, सहकार और नेक खाहिश होती है, वहाँ 'उम्मत' होती ही है. देखा गया है कि निजी साधना में भी जैसे-जैसे दिल की सफाई और चरित्र-सुधार होने लगता है. वैसे-ही-वैसे प्रेम, खुशी और सभ्यता भी बदने लगती है -शिल्क सफल साधना की पहली निशानी में भ और प्रसन्तता की बढ़ती ही होती है. जिस तरह से हम किसी इनसान का बर्ताव देखकर उसकी साधना का खुबी कैसला सहज ही करते हैं, उसी तरह किसी सभ्यता की का फैसला भी उसके नैतिक और आध्यात्मिक प्रभाव से होता है, जब इस दुनिया भर से शिकायतें सुनते हैं कि मग़रिबी संस्कृति से स्वार्थ, इरफाई (स्वर्धा) और दुश्मनी, चालवाजी बढ़ती है, तो इमारे दिल में इस तहजीब के लिए एक नफरत पैदा होना , कुर्रती ही है. ऐसी संस्कृति बुराई फैज़ाने वाली होती है, इसका सबूत आजू सारी दुनिया के पीड़ित देश धीर दुखी प्रजायें दे रही हैं.

पेसे बासुरी बातावरण में उम्मत भावना के सितारे इक्ष बाजब नूर से चमक उठते हैं. तीन-चार रोज से बरेली के मंदिर की दिल फड़का देने वाली बात जब से सुनी है मेरा दिल बारा-बारा बना हुआ है. एक मन्दिर, और एक मुस्लिम के हाथ से उसकी नींव डाली जाय, और सुना कि मूर्ति-साथ भी मुस्लिम ही है जिसने तीन सो उपये मन्दिर को मेंट दिये हैं. रहमान साहब ने जो आर्थिक मदद दी, सो बेशक काबिले चारीफ है; मगर मन्दिरवालों और रहमान साहब ने जो दिली उम्मत की शानदार इवादतगाह खड़ी की है, उसमें हर भारतीय का ही क्या, हर इन्सान का दिल सिक्दे में मुक सकता है. जहाँ में म है वहाँ खुदा है, जहाँ एका है बहाँ खुदा है!

बरेली का मन्दिर मुक्ते बड़ीवे की महिजद की याद दिलाता है, मैं निलक्क बच्चा थी तब बाबाजान से रिकाय-तें सुनती रहती थी कि बड़ोदे मैं कोई जामा मस्जिद नहीं. एक दूढ़ी महिजद थी सही, पर वह किसी के काम न आशी थी. बाबाजान ने हमारे महाराज से जिक किया. महाराज ने बड़ी सहाजुमूति से बाबाजान की बात सुनी, अपनी सहमति

كداري ريحانه طيب جي

ية لفظ "أمنت" كتنا يباراً لفظ هـ إ عربي لفظ الم كا مطاب ه امان ؛ أمت يعني اليك مأل ياب كي بيعي ، اسليله الله پاک كو وهؤ كا يرم بنا مان كو اسلامي جماعت کو اُسف کہا گیا ہے ، لیکن کوئی ضروری نہیں کا أبت معض العامون كى هو ، جهال أيسى يُريم عدودى سبكار أور نيك خواهش هوتى ها وهال أمت هوتى هى هے . دیکھا گیا هے که نجی سادهنا میں بھی جیسے جیسے دل کی صفائی اور چوتر سدهار هونے اکتا هے ویسے هی ویسے پریم خرشی أور سبهیتا بهی بوهنے لکتی هــــبلکه سپهل سادهنا کی پہلی نشائی وریم اور پرسننتا کی برھتی ھی ھوتی ہے ۔ جس طرح سے هم کسی انسان کا درناؤ دیکھکر اسکی سادها کا فیصله سہبے کی کرتے میں' اسی طرح کسی سبیبتا کی خوبی کا فیصله يبي أسكم نيتك، اور ادهياتك پريهاؤ سه هوتا هم جب هم دنيا یور سے شکایٹیں سنتے میں که مغربی سنسکرتی سے سوارتہ ا حريفائي (أسهردها) أور دشمني چانبازي بوعتي هے تو همارے دل میں اس تہذیب کے لئے ایک نفرت پیدا مونا قدرتی می هے . ایسی سلسکرتی ہوائی پہلانے والی موتی هے . اسکا ثبوت آج ساری دنیا کے پیرت دیھی اور دکھی پرجائیں دے رھی

ایسے آسری واماوری میں است بهاونا کے ستارہ کچھ عجب نور سے چمک اقباع هیں ، تھی چار روز سے برہلی کے مندر کی دل بورکا دیاہ والی بات جب سے سنی ہے مہرا دل مندر کی دل بورکا دیاہ والی بات جب سے سنی ہے مہرا دل اسکی نیو قالی جائے' اور سفا که مورتی ساز بھی مسام هی ہے جسنہ لین سو رویئے مندر کو بھینٹ دیئہ هیں ، رحمان ماحب نے جو آرتیک مدد دھی' سو بیشک قابل تعریف ہے' مکر مندر والوں اور رحمان صاحب نے جو دلی اُست کی شاقدار عبادت کا کوری کی ہے' اس میں هر بهارتیه کا هی کیا' هر انسان کا دل سجدے میں جھک سکتا ہے، جہاں پریم ہے وہان خدا ہے' جہاں ایکا ہے وہاں خدا ہے' جہاں ایکا ہے وہاں خدا ہے' جہاں ایکا ہے وہاں خدا ہے' ا

بربلی کا مندر مجھے بزودے کی مسجد کی یاد دانا گے .
میں باکل بیچہ تھی تب بابا جان سے شکایتیں ساتی
رہای تھی که برودے میںکوئی جامع مسجد نہیں ایک
ثولی مسجد تھی سھی پر وہ کسی کے کام نے آتی تھی، بابا
جان نے ھمارے مہاراے سے ذکر کیا ، مہاراے نے بڑی
مہاتوبھوتی سے بابا جان کی بات سلی ایلی سیبلی

हुस्त में गेती१९ इस के रहेगी

फूल दुलहन के खिल के रहेगें
फक्कें मरातिबर० घठ जायेगा

जलवे वह महफिल के रहेंगे

फरले खिजां जाती है 'नजीर' ! जब चाके गरीबाँ२१ सिल के रहेंगे !

१. वक्कदे = समस्याएँ, १. हवादिस = दुर्घटनायें,
३. मंजिल के होकर रहना = संजिल पर पहुँच जाना,
४. अजमते आदम = आदमी का महत्व, १. मसिल के
आदम = आदमी के जीवन का लक्ष, ६. मुसतकविल =
मवित्य, ७. गुँचे = किलयों, न. अजम = संकर,
१. कोइ-शिकन = पहाड़ तोड़ने वाजा, १०. क्रक = महल,
११. जादह = काम का दक्ष, १२. खिजाँ = पतम्ब,
१३. जोया = कोजी, १४. सहिल = किनारा, १५. खन्दाँ =
हंसते हुए, १६. मरहले = कठनाइयाँ, १७. ऐवाँ = महल
१८. चारा = इलाज, १९. गेती = घरती, २०. फर्के
मरातिब = दतवे का कर्क यानी ऊँच-नीच, २१. चारे

حسن میں گیتی 19 تمل درہ گی

پھول داین کے کیل کے رهیں کے

فرق مرانب 20 اُنھ جائے کا

جلوے رہ معدل کے رهیں گے

فصل خواں جاتی ہے' انظیر' اِ اب

جاک گریباں 21 سل کے رهیں گے ا

1. علامے = سمسیائیں ' 2. حوادث = درگیانا ہیں' 3. میزل
کے عو کر رہنا = منزل پر بہنچ جانا' 4. عظمت ادم = آدم
کا مہتو' 5. مسلک آدم = آدمی کے جیوں کا اعشن' 6.
مستقبل = بہرشیء' 7. غنجے = کلیاں' 8. عوم = سنکلپ' 9. کوه
شکس = بہار تورنے والا' 10. قصر = محل' 11. جانہ = کلم کا
تھنگ' 12. خواں = بت جہز' 13. جویا = کهوجی' 14.
ساحل = کفارہ' 15. خاداں = هنستے عوئے' 16. موجلے =
ساحل = کفارہ' 15. خاداں = هنستے عوئے' 16. موجلے =
کلہنائیاں' 17. ایواں = محل' 18. چارہ = علے' 19. گیتی =
دعرتی' 20. نوق مراب = رنبے کا فرق یعنی اُرنے نیج'
دعرتی' 20. نوق مراب = رنبے کا فرق یعنی اُرنے نیج'
21. چاک گریباں = بہنا عوا گریباں .

700 PAGES, 32 ILLUSTRATIONS 3 COLOURED MAPS

"CHINA TODAY"

PRICE

BY PANDIT SUNDARLAL

Rs. 7. 8. 0

A vivid narration of the glorious and wounderful achievements of New China... A picture of China which is both convincing and authentic. .the best book that has come out so far on New China in the English language ... the most objective in approach and comprehensive in treatment.

—National Herald, Lucknow.

Highly informative...throws vivid light on conditions obtaining in that country...a book which deserve to be widely known.

—Leader, Allahabad.

Encyclopaedic...characterized by sonte observat.on of detail as well as by. .instinctive grasp of thes fundamental perspective...To read it is veritably like accompanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New China.

— Bitz Bombay

A mine of information which gives a picture of China as nothing else dose...the best guide to New. China...Those who would like to understand what is happeing in New China can do not better than to study it

—Bharat Jyoti, Bombay

The wealth of information it gives on China new and old...makes fascinating reading...is comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs.

—Indian Express, Medra.

China Today is an elequent tribute to his (Pandit Sundarial's) shrewd understanding of men and matter... brings to the lighty mighty endeavour of the Chinese People to rebaild their great nation on firm new foundations to the increase which is theirs:

—Vigit, Deihi

137 Juges

श्री सञ्चादत नजीर प्रभ0 ए०

कव तक दुश्मन दिल के रहेंगे ? हमसे वह आखिर मिलके रहेंगे

कब एकदेश मुश्किल के रहेंगे ? आखिर दिल हिल मिल के रहेंगे

लाख हवादिस २ राह में आयें हम हांके मंजिल ३ के रहेंगे

जितने भी तुम तंकरके डालो ! साथी साथी मिल के रहेंगे

भजमतथ बादमे ! मसलिके ५ बादम !! तौर यह मुसतक्रविल ३ के रहेंगे

गरम हवा के मोकों में भी
गु'चे दिल के खिल के रहेंगे

अब्मट इमारा कोइशिकन९ है क़स्त १० तुम्हारे हिल के रहेंगे

एक हो जादा११, एक हो मंजिल दिल भी फिर तो मिल के रहेंगे

लाख खिजाँ१२ घाँखे' दिखलाए जिही गुंचे खिल के रहेंगे

.जुस्म किये जा! जीर किये जा! हीसले कॅंचे दिल के रहेंगे

लाख घिरें त्फाने बला में इम जोया१३ साहिल के रहेंगे

तय करेंगे सन्दाँ-सन्दाँ१५ मरहले१६ जो मुश्किल के रहेंगे

पाल्याला वह है आनेवाला आपके ऐवाँ १७ हिल के रहेंगे

सापक प्या १७ हिल के रहेग रोर से १८ राम का न होगा प्रक्रम हरे सब दिल के रहेंगे تدرى سعادت قطهر أيم أهـ.

کب تک دشین دل کے رمیں کے ؟

م م سے وہ آخر مل کے رهیں گے

کب عقدے 1 مشکل کے رهیں کے 9

آخر دل دل مل کے رهیں گے

ور حوادث 2 راه میں آئیں

ھم ھو کے منزل 3 کے رھیں گ

جالم بهي تم تغرف آالو!

ساتھی ساتھی مل کے رہیں گے

عظمت 4 أدم السلك 5 أدم !!

طور ریم مستقبل 6 کے رهیں گے

گرم ہوا کے جہونعوں میں بھی

غنجے 7 دل کے کہل کے رهیں کے

عوم 8 هماراً كون شكن9 هـ

قصر 10 تمهارے عل کے رهیں گے

ایک هو جاده 11 ایک هو منزل

دل بھی پھر تو مل کے رھیں گے

لالم خوال 12 أنهيس دكالله

ضدی غندیے کیل کے رهیں کے

ظلم كلُّه جا إ جور كلُّه جا إ

حرملے أولنچے دل كے رهيں كہ

لائه گهریس طرفان بلا میس

هم چو يا 13 ساحل كے رهيں كي

طے کریں کے عضدال کا ا

سر حلے 16 جو مشکل کے رهیں گے

زلوله و» هـ أنه والا

آپ کے ایواں 17 مل کے رهیں گے

فهر سے چارہ 13 غم کا تم عوگا

و خم عرب سب دل کے رهيں ک

अक्तूबर '27

6)

5.7 June 1

गाँधी जी ने सुन लिया. एस समय कोई जवाद न दिया. वह अपने मित्रों के साथ किसी तरह की जबरदस्ती करना ठीक न सममते थे. अगले दिन सुबह को उन्होंने कुछ आश्रम वासियों से कहा-"बहमदाबाद के मंगी बादे में जाजी. बहाँ कोई मकान या जगह देखो. अपना आश्रम हम वहीं वठाकर से कार्येंगे और वहाँ के रहने वाले जो खाना हमें अपने हाथों से लाकर वेंगे वही हम ला लेंगे या मजदरी करके पेट भर लेंगे, जो मिलने आएगा वहीं आकर हमसे मिल लेगा." जगह ढँढी जाने लगी. उन धनवान भित्रों के कानों तक यह खबर पहुँची. हो सकता है उन्होंने आपस में कब सलाह की हो. बाकर गाँधी जी से मिले. उन्होंने अपने दा दिन पहले के सुमाव की माफी माँगी, आश्रम, आश्रम-वासियों, आश्रम प्रेमियों श्रीर आश्रम में श्राने-जाने वालों के लिये इत छात हमेशा के लिये मिट गई. यह था गाँधी जी श्रीर उनके आश्रम का दुजें बदुजें लेकिन काफी तेजी के साथ विकास.

اندهی جی تے سن لیا ، اس سے کرئی جواب نے دیا ، وہ اپنے ماروں کے ساتھ کسی طارح کی ابردسٹی کرنا تھیک تم سنجھتے تھے ، اگے دی صبح او آئیوں نے تعیم اگے دی صبح او آئیوں نے تعیم اگے دی صبح ایکی بازے میں جاو' وہاں کرئی مکان یا جگہت دیکھو ، اپنا آشرم هم وهیں آٹھا کر لے جانینکے اور وہاں کے رہنے والے کو کیانا اپنے ہاتھوں سے لا کر دینکے وہی هم کھا لینکے یا مزدوری کو کیانا اپنے ہاتھوں سے لا کر دینکے وہی هم کھا لینکے یا مزدوری کر کے پیمٹ بھر لینکے ، جو ملنے آئیگا وهیں آئو هم سے مل لیگا ،' کی خور پھرتھی جانے لگی ، آن دهلوان متروں کے کائوں تک یہ خور پھرتھی ، ہو سکتا ہے آئھوں نے آپس میں کچھ صلاح کی ہو۔ وہ آ کر گاندهی جی سے ملے ، آئھوں نے آپنے در دن پہلے کے سجھاؤ کی معانی مانکی ، آشرم واسفوں' آشرم ورسیوں اور آشرم میں آئے جانے وائوں کے لئے چھرت چھات پردیموں اور آشرم میں آئے جانے وائوں کے لئے چھرت چھات ہو۔ ہو۔ ہو۔ ایکن کئی ، یہ تھا گاندهی جی اور ان کے آشرم کا درجے بدرجے لیکن کئی ، یہ تھا گاندهی جی اور ان کے آشرم کا درجے بدرجے لیکن کئی تیزی کے ساتھ وکاس ،

यह राज्य में साद से ही लिख रहा हूँ पर शायद ही एक दो राज्य का फक्त हो. उससे असल मतलब में फर्क बिलकुल नहीं पक सकता.

मैं इसे पद्कर कुछ हैरान हुआ. गाँतीजी को पद्कर सुनाया और पूछा यह क्या ? उन्होंने तुरन्त जवाब दिया— "यह तुन्हारे लिये नहीं है. इसे रख दो. तुम आजमवासी बनो तो इसे न मानना. मैं कहाँ मानता हूँ ? तुम इसे रहने दो. तुम अपने काम की बात करो."

उनके यह फिक़रें भी मैं याद से लिख रहा हूँ. मैं समक गया कि गाँधोजी और उनका आश्रम दोनों श्रमां विकास की हालत में थे, श्रभी खित रहे थे और रूप ले रहे थे.

रौलट एकट के खिलाफ़ सत्यामह शुरु हो जाने के बाद से गाँधी जी सारे देश के सामने देश के सब से बड़े और अनन्य नेता के रूप में श्रागए. मैंने श्रीर मेरे जैसे विचारों के बहुत से पुराने काम करने वालों ने श्रव देख जिया कि अपने नये तरीक़े से गाँधी जी ने जो जान, जो बेदारी, जो जोश श्रीर जो त्याग की भावना देश भर में पैदा कर दी थी बह दम अपने पुराने तरीक़ों से न कर पाये थे और न कर सकते थे. मेरा उनसे बार-बार जगह-जगह मिलना, साथ रहना और साथ सफ़र करना तेजी के साथ बढ़ता चला गया.

साबरमती (श्रहमदाबाद) आश्रम में बम्बई में श्रीर जगह-जगह उनसे मिलना हुआ, कभी-कभी कुछ फुटकर बातें जो याद में जभी रह गई मैं यहाँ दे रहा हूँ.

यहाँ एक बात गाँधी जी से सुनी हुई लिख रहा हूँ.

साबरमती आश्रम क्रायम हो चुका था, पहले सत्याप्रह में उसकी बुनियाद पड़ी, वह सत्यामह आश्रम ही कहलाता या. कई हजार रुपये महीने का खर्च था. गाँधी जी के कछ धनवान मित्र में और प्रेमी जो सब या अधिकतर गुजराती थे आश्रम का खर्च चलाते थे. खाना बनाने वाले हिन्द थे. इन धनवान मित्रों में से भी काई-कोई और उनके घर वाले जब-तब आश्रम में आकर भाजन कर लेते थे. उन्हें ऐसा करने में बड़ी खशी होती थी. थोड़े ही दिनों में एक मेहतर परिवार बाश्रम में बाकर ठहर गया और गाँधी जी के हुकुम से और सब की तरह रसोई में आने-जाने और सब के साथ खाने पीने बगा. बहुत से रौर हिन्दू मेहमान भी धाश्रम में आने, रहने और बिना भेद भाव सब के साथ खाने-पीने लगे. आश्रम का खर्च चलाने वाले कुछ धनवान भाइयों के लिये यह नई बात थी. वह इसके आदी न थे, उन्हें और उनके घर वालों को आश्रम में खाने में संकोच होने लगा. चन्होंने गांघी जी के पास भाकर बढ़ी नम्रता से यह सुकाया कि कम से कम उनकी खातिर आश्रम की रसोई को परा होटी जात बालों और ग्रैर हिन्दुओं से अखग रखा जाये.

یه شبد میں یاد سے هی الله رها هوں هو شاید عی ایک دو شبد کا فرق هو . أس سے أصل مطلب ميں فرق بالكل تهين يو سكتا .

أن كے يه فقرم بھى ميں ياد سے لغ رها هوں ، ميں سجع گيا كه كاندهى جى أور أن كا أشرم دونوں أيهى وكاس كى حالت ميں تھ' أبهى كهل رهے تھ أور روپ له رهے تھ .

روات ایمت کے خلف ستیاگرہ شروع ہو جانے کے بعد سخاندھی جی سارے دیش کے سامنے دیش کے سب صبحہ اور انفیہ نیتا کے روپ میں آگئے، میلے اور میرے جیسے وچاروں کے بہت نے پرائے کام کرنے والوں نے آپ دیکھ لیا کہ اپنے نئے طریقے سے گاندھی جی نے جو جائ جو بعداری جو جوش اور جو تیاگ کی بھاونا دیش میں پیدا کو دی تھی وہ ہم اپنے پرائے طریقوں سے نہ کو پائے تھے اور نہ کر سکتے تھے ، میرا آن سے بار بار جکہہ چکہہ ملنا ساتہ رهنا اور ساتھ سفر کرنا تیزی کے ساتھ بڑھتا جگہا گیا ،

سابرستی (احسدایات) آشرم میں بمبئی میں اور جکہت جکہ اُن سے ملنا ہوا ، کبھی کبھی کبھی پہٹمر بانیں جو یاد میں جبی رہ گئیں میں یہاں دے رہا ہوں ،

بدان ایک بات کاندهی جی سے سنی هوئی لیم رها هوں . سابرمتی آشرم قایم هو چکا تها . پہلے ستیاگرہ میں أس كى بنیان یوی و ستیاگره آشرم هی کهانتا نها . کئی هزار رویئے مہینے کا خربے تھا ، کافدھی جی کے کچھ دھنوان متر اور پریمی جر سب یا آدهکتر گنجراتی تھے آشرم کا خرچ چلاتے تھے . کیانا بنانے والے علدو تھے ۔ اِن دھنوان متروں میں سے بھی کوئی کئی اور اُن کے گھر والے جب تب آشرم میں آکر بھرجن کر ليتے تھے ، اُنھيں ايسا كرلے موں بڑى خوشى هوتى نبى ، نہورے عی دنوں میں ایک مہتر پریوار آشرم میں آکر تھور کیا اور کاندھی جی کے حکم سے اور سب کی طرح رسوئی میں آنے جانے اور سب کے ساتھ کھانے پیلے گا . بہت سے غیر ھلدو مہمان بھی آشرم میں آئے" رہانے اور بنا بھید بھاؤ سب کے ساتھ كالے يولے لكے . أشرم كا خرب چالف والم كچه دهنوان بهاديوں ك للد يد ندى بات تهى . وه إس ك عادى نه ته . أنهين ارر اُن کے گھر والیں کو آشرم میں کیائے میں سامیے هوئے اللا ۔ آبوں نے کاندھی جی کے پاس اکر بڑی نمرتا سے یہ سبجھایا کہ کم سے کم آن کی خاطر آشرم کی رسوئی کو ذرا جولی فاس اویں اور غیر هدون سے الک رکا جائے۔ में ही बाट कर काफी दुस और पुस्से के साथ जवाब दिया—"में तुन्हारी सभा का सबर नहीं बन्गा. में अपनी मंजूरी वापिस लेता हूँ! तुम तो मेरे सत्याप्रह को विलक्कत ही नहीं सममे. अब जाओ, जो ठीक सममो करो, में सबर नहीं. यह मेरा सत्याप्रह नहीं है."

में सुनकर घवरा गया और इस्के से उनकी इस नारा-जागी का कारण पूछा. उन्होंने फिर कहा—"असे कोई दूसरा प्रतिक्का पत्र नहीं चाहिये. मुसे पंडित मोतीलाल जी नहीं चाहिये. मुसे कोई बड़ा चादमी नहीं चाहिये. इलाहा-बाद के जगर चार मेहतर मिलकर मेरे प्रतिक्का पत्र पर द्सख़त कर देंगे चौर अपनी सत्याग्रह सभा बनायेंगे ता में उनका सदर बन जाऊँगा. तुन्हारी सभा का सदर बनना मुसे नागंजूर है.' तुम तो सत्याग्रह को समसे ही नहीं."

अब मैंने उनसे कहा—"आप नाराज न होइये. मेरी अपनी निजी राय भी यही थी जो आपकी है. कुझ और साथियों की राय वह थी जिस पर आप को इतना दुख हुआ, औंने पहले से आप को अपना और दूसरों का यह फर्क बताना ठीक नहीं सममा. अब हम वही करेंगे जो आप चाहते हैं. आपके बिना सत्याग्रह कैसा ? आप ही रास्ता बतायें तो हम चल सकते हैं. दूसरा प्रतिका पत्र नहीं होगा. और कांई आए, चाहे न आए."

गांधीजी ने थांडा सोचा. मेरी तरफ को बार-बार देखा एक दो और छोटी-माटी बात हुई. उनका सस्सा ठडा हुआ फिर ख़ुश होकर कहा—"आओ काम करा, मैं तुन्हारा सदर खोर तुम सिकेटरी."

इसी दिन शाम को या अगले दिन मैं इलाहाबाद के लिये चल पड़ा, यू॰ पी॰ सत्याप्रह सभा का विधान छप गया. गाँधीजी सदर, मैं और मंजर अली सिकेटरी. मेम्बरों की फेहरिस्त शायद तीस के करीब रही होगी, जिसमें एक नाम जवाहरलाल जी का भी था.

[5]

मेरी चसी बाहमदाबाद यात्रा की एक और छोटी सी घटना मुक्ते बाद का रही है.

राायद तीसरे पहर का बक्कत था. मैं गाँधीजी के पास बैठा हुआ था. उनके सत्याग्रह आश्रम की नियमावली छप -चुकी थी, छाटे साइषा की पाँच सात सके की छाटी सब भीज थी. एक कापी वहीं कहीं आस-पास पड़ी हुई थी. मेरी निगाह उस पर गई. मैं उसे पढ़ गया. उसमें एक नियम यह इपा हुआ था—"वर्षा आश्रम धर्म की बाधा न पहुँचे इस-लिके आश्रमवासी जब कभी आश्रम से बाहर जायंगे तो केवल कहा या दूध साकर ही रहेंगे," میں بھی کاف کر کائی دیا اور فعید کے ساتھ جواب دواستائینی المقاوری واپس المقاوری میں المقی منظوری واپس المقا نعیں ا تم یو معرب سکیاگرہ کو بالکل بھی المیں سنجھ ، اب جاؤہ جو لینک سنجھ کروا میں صدر نہیں ، یہ میر سیاگرہ نہیں ہے ۔''

میں سی کر گیبرا گیا اور هائے سے اُن کی اِس قارافگی کا اُنین پوچا۔ اُنہوں نے پہر کہا۔ ''مجھے کوئی دوسرا پرتکیاں پتر نہیں چاھئی۔ اندایاں کے اگر چار مہتر ملکر میرے پراکیاں پار پر دستخط کر دینے اور اپنی ستیاگرہ سبھا یا اُنینی تو میں؛ اُن کا صدر بن جاؤنگا ، تمہاری سبھا کا صدر بنا مجھے نامنظور ہے ، تم تو ستیاگرہ کو سمجھے ھی اُنہیں ،

اب مریار آن سے کہا۔۔ ''آپ ناراض نه دوئید ، مدری اپنی نجی رائے ہی یہی تبی جو آپ کی ہے ، کچھ اور سانھیوں کی رائے وہ تبی جس پر آپ کو اپنا دکھ ہوا ، مینے پہلے سے آپ کو اپنا اور دوسروں کا یہ فرق بتانا ٹھیک نہیں سمجھا ، اب هم وهی کرینگہ جو آپ چاھتے ھیں آپ کے بنا ستیاگرہ کیسا آ آئے ، گپ ھی رادتم بتائیں تو ہم چل سکتے تعیں ، دوسرا پرتکیاں پتر نہیں ہوگا ، اور کرئی آئے' چاھ نه آئے ،''

گاندھی جی نے تہوڑا سوچا ، مھری طرف کو بار بار دیکھا ،
ایک دو اور چھوٹی موٹی بات ھوٹی ، اُن کا غصم ٹینڈا ھوا ،
پھر خوش دو کر کیا۔۔۔۔۔۔۔۔۔ کام کرو' میں تمہارا صدر اور 'م سکریڑی ،''

آسی دن شام کو یا اگلے دن میں الدآباد کے لئے چل پڑا ۔
یو، پی۔ ستیاگرہ میہا کا ردمان چہپ گیا ۔ کاندھی جی صدر'
میں آور منظر علی سکریڑی ، میمبروں کی فہرست شاید تیس
کے قریب رھی ھوگی' جس میں ایک نام جواعرال جی کا
بھی تھا ،

[5]

مهرى أسى احداباد ياتراكى ايك أور چهوالى سى گهانا معوم ياد أرهى هـ .

شاید تیسر۔ پہر کا وقت تھا ، میں گاندھی جی کے پاس پیٹھا ہوا تھا ، اُن کے ستیاگرہ آشرم کی نیماولی جہت جکی تھی ، جھوٹہ سائز کی پائیج سات صحصہ کی جھوٹی سی چھز تھی ، ایک کاپی وهیں کیدں آس پاس ہری ہوئی تھی ، میری نگاہ اُس پر گئی ، میں اسے پرت گیا ، اُس میں ایک نیم یہ جبہا ہوا تھا۔ 'ورزن آشرم دھوم کو بادھا لئے پہولتھے اِس لئے آشوم واسی جب دیمی آشوم سے باہر جائینگے تو کھول بھل یا دوجہ کہا کو ھی وهینگے ۔''

वृत्तकर खीचे जाकर वसी दालान में एक बारपाई पर चित तेट गए. किसी ने उनके इशारे पर तह किया हुआ एक मीगा कपड़ा उनके सर और माथे पर रख दिया. मैं जरा दूर बैठकर देखता रहा. चाइता था वह थोड़ा घाराम कर तो तो पास पहुंचूँ. एक पल के धन्दर उन्होंने मेरी तरफ, को घाँस फेरी और इशारा करके अपनी घारपाई के पास मुलाया. मैं पास जाकर बैठ गया. कहने लगे—"सब हाल सुनाधा." मैंने जवाब दिया—"अभी धाप बहुत थके हैं जरा घाराम कर लीजिये," जवाब मिला—"नहीं शुरू कर हो."

मैंने सारा हात कह सुनाया. केवल पन्डित मोतीलाल भौर दूसरे प्रतिका पत्र की बात अभी नहीं कही.

इसके बाद मैंने कहा—"आप इमारी यू॰ पी० सत्या-मह सभा के सदर बनना मंजूर कीजिये."

उन्होंने जवाब दिया—''मुंमे बड़ी ख़ुशी से मंजूर है. मैं तुन्हारी सभा का सदर बन गया तुम सिकंटरी हो न ?"

मैंने कहा— "हाँ, मैं भीर मंत्रार खली दो सिकेटरी हैं."

गांधीजी ने पसन्द किया और कहा—''काम शुरू कर दो. इससे कुछ पहले गांधीजी ने देश भर से उन लोगों के नाम माँगे थे जो अपने आप को कानून क्षेड़कर जेल जाने के लिये पेश करें. इस पर मैं और मंजूर अली दोनों अपने नाम भेज चुके थे. यह नाम बम्बई के अख्वारों में अपते जाते थे.

गांबीजी से उनके सदर होने और अपने और मंजर आही के सिकंटरी होने की बात तय करने के बाद मैंन अनसे दूसरे शितका पत्र की बात छेड़ी. मैंने उनसे कहा— "पन्तित माता लाल जी को आपका शितका पत्र मंजूर नहीं. उनके लिये और उन जैसे विचार वालों के लिये हमने एक दूसरा प्रतिका पत्र बना लिया है."

यहाँ मैंने उन्हें दूसरा प्रतिज्ञा पत्र पद सुनाया और कहा—'यह पन्छित मोतीलाल जी को मंजूर है. हम चाहते हैं बहु इमारी सभा के नायब सदर हो जाय इसिलये हमने सोचा है कि जो जादमी दोनों में से किसी एक भी प्रतिज्ञा पत्र पर दसखत कर दे वह इमारी सभा का मेन्बर बन सके. मोबीबाल जी के जाजाने से जवाहरलाल जी का जाना बाद्यान हो जायगा, और फिर शायद हम तीन सिकेटरी हो बार्ब के."

्रिने हेका कि मेरे यह सब बात कहते-कहते गांधीजी के जहरे का रंग बदल गया, एन्होंने तुरन्त मेरी बात बीच اسی کو سیدھ جاکو آسی فائن میں ایک چارہائی پر چت ایک کئے ۔ کسی نے آن کے اشارہ پر تہ کیا ہوا ایک بھیں ایک ان کے اشارہ پر تہ کیا ہوا ایک بھیں ایک آن کے سر آور مائے پر راہ دیا ۔ سیں فرا دور بیٹھ کر دیکھا رما ، چاہا تھا وہ تھوڑا آرام کو لیں او پاس پہونچیں ۔ ایک پل کے اندر انہوں نے میری طرف کو آنام پھیری اور اشارہ کو کے آپنی چارہائی کے پاس بالیا ، میں پاس جائر بیاتھ گیا ، کے آپنی چارہائی کے پاس بالیا ، میں پاس جائر بیاتھ گیا ، کہنے لیے ۔ انہی آپ کہنے لیے ۔ انہی آپ کہنے لیے ۔ انہی آب کر دو ، انہوں فرا آرام کو اینجئے ، "جواب ملا۔ "نہیں' شرع کو دو ، "

مینے سارا حال کہه سفایا ، کیول پندت موتی قال اور دوسرے پر تکیاں پٹر کی بات آبھی تہیں کہی .

اِس کے بعد میلےکہا۔ ''آپ ہماری ہو۔ پی۔ ستیاگرہ سبھا کے مدر بنیا منظور کیجئے ۔''

انہوں نے جوآب دیا۔ "مجھے بڑی خوشی سے منظور ہے . میں تمواری سبیا کا صدر ہوں گیا ۔ تم سکریتی ہو تہ ؟ "

مینے کہا۔۔۔ وہلی میں اور منظر علی دو سکریوی عیں ،'' گاندھی جی نے پسند کیا اور کہا۔۔۔ 'کام شروع کر دو ۔''

اِس سے کچھ پہلے کاندہی جی نے دیھی بھر سے اُن لوگوں کے نام مانکے تھے جو اپنے آپ کو قانون نور کر جیل جالے کے اللہ پیدس کویں ، اِس پر میں اور منظر علی دونوں اپنے نام بیٹے چکے تھے ، یک نام بیٹی کے احباروں میں چھٹے جاتے تھے ، یک نام بیٹی کے احباروں میں چھٹے جاتے تھے ،

گاندھی جی سے اُن کے صدر ھوئے اور اپنے اور منظرعلی کے سکر رہی ھوئے کی بات عام کرنے کے بعد مینے اُن سے دوسرے پرتکھاں پتر کی باتچھیڑی ، مھنے اُن سے کہا ۔۔"پنڈت مرتی الل جی کو آپ کا پرتکھاں پتر منظور نہیں ، اُن کے لئے اور اُن جیشے وچاروالوں کے لئے ھم نے ایک دوسرا پرتکھاں پتر بما لیا ھے ''

یهاں مینے آنہیں دوسرا پرتکھاں پتر پڑھ سنایا آور کہا۔
''یہ پندھی موتی قل جی کو منظور شے، هم چاھتے هیں وہ
هماری مبھا کے ناہی صدر هو جائیں اِس للہ هم نے سوچا
ہے که جو آدمی دونوں میں سے کسی ایک بھی پرتکیاں پتر
پر دستشط کر دیے وہ جماری سبھا کا مهمبر بن سکے مہتی
قل بھی کے آجائے سے جواهر قل جی کا آنا آسان هو جائیگاا
اور پھر شاہد هم تھی سکریتی هو جائیں ''

مهل دیا که مورد یه سب بات کید کید گاندهی چی

सरकार के कि जाफ संस्थामह शुरू करने से पहले जीग छप-बास और प्राय नाओं के जरिये अपनी आत्माओं की शह कर लें. बड़ों-अड़ों का अन्दाचा यह था कि मुनकिन है बढ़े-बढ़े राहरों में आधी पढ़ती हड़ताल हो जावे. पर यह एक इविहासी घटना है कि एस दिन हिमालय से लेकर रासकुमारी तक दूर से दूर किसी गाँव में भी हल नहीं चला.

अहमदाबाद से खबर आते ही इक्षाहाबाद होम रूल लीग के दूपतर में जिसका मैं एक मन्त्रो था, मैंने कुछ मित्रों को जमा किया. एक यू. पी. सत्याप्रह सभा कायम हुई. गांधीजी को उसका सद्द रखने की तजबीज हुई. मैं और मंजरअली सोख्ता उसके सिक्रेटरी वने. अहमदाबाद जाकर गांधीजी को इसकी इसला देने, उनसे हिदायतें लेने और सदर बनाने के लिये राजी करने का काम मुक्ते सौंपा

इस बींच एक और छोटी सी घटना हुई. गांधीजी ने हेश भर के सत्यामहियों के लिये एक प्रतिज्ञा पत्र निकाला था जो सब असारों में छप चुका था. यू० पी० सत्यापह सभा के मेम्बरों के लिये भी इस प्रतिशा पत्र पर दसख्त करना जरूरी थे. इम में से कुछ लांग चाहते थे कि पंडित मोतीलाल नेहरू यू० पी० सत्याप्रह सभा के नायब सदर हो'. पन्डित मोतीलाल जी को गाँधीजी का प्रतिहा पत्र पसन्द न था. वह कानून वोदने और हा सुन्यने का तैयार थे, पर अपनी नकेल दूसरे के हाथ में देन के अन्द न करते थे. कब्र साथियों की सलाह से एक दूछरा प्रतिज्ञा पत्र लिखा गया भिसे पन्डित मोतीलाल जी ने पसन्द कर लिया. बह इस पर दसख्त करने को राजी हो गये. तय हुआ कि यू० पी० सत्यामह सभा का जा मेन्बर चाहे गांधी-जी बाजे श्रीतक्का पत्र पर दसखत कर दे और जे। चाहे इस नये प्रतिक्का पत्र पर. दोनों बराबर के मेन्बर सममे जायँ. पर इस सबके लिये भी गांधीजी की सलाह और इजावात षहरी थी. यह इजाज्त हासिल करना भी मेरे सपुर्द

गांधी जी से मिलने के लिये मैं अहमदाबाद पहुँचा. हाल ही में अहमदाबाद और बीरमगाम में बलवे हो चुके थे. इन राखमों के बहुत से घायल महमदाबाद के किसी मस्पताल या अस्पतालों में पड़े हुए थे. जिस बक्त मैं आश्रम पहुँचा गांधीजी इत घायलों को देखने गये हुए थे. मैं बैठकर इन्त-पार करने लगा.

भोदी देर बाद गांधीजी आए, मालुम होता था बेहद मुके हुए हैं. पाँच लड़काबाते से पढ़ रहे में, मैंने नमस्कार क्या. मुके देखकर खुरा हुए, पूक्षा कर आए ? मेरा जनाव عَرَكُو كَ خَلَفَ سِيِّواكُوهُ عُروع كراء مع يبلد لوك أليولس الور پرارتبدیوں کے ذریعے اپنی آتاوں کو عدم کر لوں ، بورس بورس كا أندأزه يه تها كه سكن في بري بري شهرون مين أدهي يودى هو ال هو جاره. ير يه ايك إنهاس كهالما هه كه أس دن همالهه سے لیکو رأس کماری تک دور سے دور کسی گاؤں میں بھی هل نهيں چلا .

لحمدابان سے خبر آتے عی انمآباد عوم رول لیگ کے دفتر میں جس کا میں ایک منتری تھا مینے کچے متروں کو جمع کیا ، ایک یو. یی ستهاگره سبیا قایم هوئی ، کاندهی جی کو أس كا صدر ركهنه كي تجويز هراي . مين أور ماظر على سوخته أس کے سمریوں بنے ، احداباد جا کر کاندھی جی کو اِس کی اِطلاع دیدے اُن سے مدایتیں لیا۔ اور صدر بنانے کے للہ راضی کرنے کا کام مجھے سونیا گیا .

اِس بیچ ایک چهوئی سی گیٹنا هوئی . کاندهی جی نے دیش بہر کے ستیاگرمیس کے لئے ایک پرتکیاں یتر نکالا تھا جو سب اخباروں میں چہپ چکا نہا ، ہو. ہے ، ستیاکرہ سبھا کے مهمدروں کے لئے بھی اِس پرتکیاں یتر پر دستخط کرنا ضروری نهر . هم مين سے کچھ اوگ چاهتے تهے که بندت موتى الل فهرو يو. بي. ستياكرة سبها كے نايب صدر هوں . يندت موتى الل جی کو کاندھی جی کا پرنکیاں پار پسند نه تھا . وہ قانون تہولے اور جیل جانے کو تیار تھے یہ اپنے نکیل دوسرے کے عاتم میں دینا یساد نه کرتے ہے . کچھ ساتھیں کی ملام سے ایک دوسرا پرتھاں بدر لکھا گیا جسے بندت موتی لال جی لے پسند كو لها . وه أس ير دستخط كرنے كو راضي هو تُثُم . طم هوا كه يو. ہے. ستياكره سبها كا جو صيمبر چاهے كاندهى جى والے پرتكياں يترير دستخط كرده اورجو چاف إس نئه يرنكيان يترير. دونہن برایر کے میمبر سمجھے جاتیں . پر اِس سب کے اپنے بھی گاندھی جی کی صلاح اور اجازت ضروری تھی . یہ اجازت حافل کرتا بھی میرے سورد هوا .

کاندہی جی سے ملاء کے ائے میں احمدآباد پہونتھا ، حال هي مين آحداًياد اور رودم كلم مين باوت هو چكم ته . إن رخموں کے بہت سے کھایل احمداباد کے کسی استال یا استالوں ميں پڑے موالہ نھے . جس وقت میں آشوم پہولچا کاندھی جى أَن كَهَايِلُون كو ديكها كُمُّ هوئه ته . مين بيله كو إنتظار

الم المارك المارك المارك المارك المارك المارك الماركا المارك الماركا ا المُلوك دياء كو يهدد خرص دوله . بوجا كب أنه 9 مورا حواب बिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट था उसे उस किनाव के दर्शन नहीं कराए गये और अंगरेज ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेटों तक को पढ़ने को दी गई. मुक्ते इस किताब को देखने और इसमें अपना ताम और हाल पढ़ने का सीमाग्य मिता था. अब सवाल था कि इन सबको और इसी तरह के औरों को श्रंगरंजी राज की राह के रोड़ों को किस तरह हटाया जाये. खरीट और तजरबेकार अकसरों की एक कमेटी मुक्करेर हुई. उसने एक बहुत बड़ी रिपार्ट इस बात की तैयार की कि अंगरेजी राज के खिलाफ कब-कब, कहाँ-कहाँ और किस-किस तरह बगावत के खयाल पैदा हुए और फैले और कहाँ क्या-क्या कोशिशें हुई'. इस रिपोर्ट के आधार पर और इस कमेटी की सलाह के मुताबिक बड़े लाट की कौंसिल में दो नये क्वानून पेश किये गए. यह दानों क्वानून रोलट ऐक्ट कहलाते हैं और देश में उस समय 'काले क़ानूनों' के नाम से मशहूर थे. इन नए क़ानूनों में देश के छाटे से छाटे पुलिस अकसरों को वह जबरदस्त अधिकार दे दिये गए जिनके रहते देश के अन्दर नरम या गरम किसी तरह के राजकाजी श्रान्दोलन का चल सक्तना भी नामुमकिन था. नश्म दल के दें से बढ़े नेता भी इन्हें देखकर हैरानी, असन्तोश और गुस्से से भर गये. लाट साहब की कौंसिल के अन्दर इन क्रानुनों के खिलाक माननीय श्रीनिवास शास्त्री श्रीर मिस्टर एम. ए. जिल्लाहं की जो जोरदार तकरीरे हुई बह एक कार सारे देश में गूँज गई'. कानून पास हो गए. सारा देश रास्ते श्रीर बेचैनी से भर गया. गांधी जी कैसे च्य रह सकते थे ? उनके लिये यह भगवान का दिया हुआ मौका था.

इस गरमा गरमी के शुरू के दिनों में गांधीजी अहमदा-बाद में सदत बीमार पड़े हुए थे. कहा जाता है कि एक बार खनके बचने की भी आशा कम दिखाई देती थी. हो सकता है कि उनकी बीमारी शरीर की कम और मन की अधिक रही हो. हो सकता है उनकी आत्मा अन्दर से कर्त्तंव्य-पथ का दरवाजा खोजने के लिये बेचैन रही हो. जो हो, देश के रांग के सामने वह अपना रांग भूत गर. श्रहमदाबाद से ही उन्होंने नये काले कानूनों के जिलाफ सत्यापह करने यानी खुले तौर पर सरकार का कोई न कोई क़ानून तोइने और उसकी सजा में जेज जाने का प्राप्ताम देश के सामने रक्ता. देश भर के लिए एक सत्याप्रह सभा बनाई गई जिसके गाँधीजी सदर थे. गाँधीजी ने '.खुद बम्बई जाकर जन्त किताओं को खले आम बेव कर सत्यामह शुरू किया. देश पर इसका कितना गहरा असर हुआ इसका पहले से किसी को गुभान भी नहीं सकता था और अब भी अन्दाजा लगा सकना कठिन है. 6 अप्रैल 1919 के लिये हदताल पेलान हो चु ही थी, गाँधीजी का उससे मकसद यह था, कि

سترفف معسلوبي تها أسأس كتاب كے درهن نهيں كرائے كلي ار اعربو جوائلت معستریتان تک کو بوها، کو دی گئی ، مجهد أس كتاب كو ديكهند أور أس مين أبنا نام أور حال يوهند لا سربهاگیه ۱۰ قها . أب سرال تها كه إين سب كو اور اسى طوب کے ارزوں کو انگریوی راہے کی راہ کے روزون کو کس طرح مثایا جائه. خرانت اور اجربه کار افسروں کی ایک کمیتی مقرر ھئے . اُس نے ایک بہت ہوی ربوٹ اِس بات کی تیار کی که انعربوی راج کے خلاف کب کب کہاں کہاں اور کس کس طرح بنارت کے خیال بددا ہوئے بھالے کہاں اور کیا لیا کرششیں ھرنوں ۔ اِس رپورٹ کے آدھار پر اور اِس کمیٹی کی صلام کے مطابق بر عدد الت كي كونسال مدر دو نئه قانون پيش كئه كئه . یه دونوں قانوں روامت ایکٹ کہلاتے میں اور دیھی میں اس سم 'کالے قانونوں کے دام سے مشہور تھے ۔ اُن نئے قانونوں میں دیس کے چھوٹے سے چھوٹے یواس انسروں کو وہ زبردست ادھیکار دے دیٹے گئے جوں کے رہتے دیش کے اندر نرم یا گرم کسی طرے کے راجکاجی آندولن کا چل سکنا بھی ذاممکن تھا ، درم ال کے رہے سے بچے نیتا بھی اِنہیں دیکھ کر حیرانی استرس ارر فصه سے بہر گئے . لات صاحب نی تونسل کے اندر ان فالوئين كے خلف مالئية شرينوأس شاسترى اور مستر ايم. الم، جناے کی جو زوردار تقریب موثیں وہ ایک بار سارے دیھی مين كونج كئين . قانون ياس هو كئي . سارا ديش عصم اور پچینی سے بھر گیا . گاندھی جی کیسے چپ رہ ساتے تھے ؟ أن كے لئے يه بهكوان كا ديا هوأ موقع تها .

اِس گرما گرمے کے شروع کے دنوں میں کاندھیجی لحدابان ميں سخت بيمار يرے مواء تھے . كها جانا هے كه ابک بار اُن کے بحینے کی بھی آشا کم دکھائی دیتی تھی . ھو الملا هے که آن کی بیماری شریر کی کم اور سن کی ادھک رهی هو . هو سکتا هے أن كى أتما الدر سے كرتوبه پته كا دروازة المرجند نے لئے بے چون رھی ھو ، جو ھوا ديھ كے روك كے سامانے وہ اینا روگ بیول کئے . احمداباد سے هی انہوں نے نٹے کالے قانونوں کے خالف ساتھا گرہ کرتے یعلی کیلے طور پر سرکار کا کوئی نم کوئی قانین افزالے اور اُس کی سوا میں جیل جانے کا یہ وگرام دیھی کے سامنے رکھا . دیھی بھر کے لئے ایک ستباکرہ سبھا بدائی کئی جس کے کاندھی جی صدر تھے ۔ کاندھی جی لے خوں ہمینگی جاکر ضبط کتابوں کو اہلے عام بیچے دو متاکرہ شروع کیا . دیش یو اِس کا نتنا گہرا اثر ہوا اس کا الله مع کسی کو کمان بھی نے هود کتا تھا اور اب بھی اندازہ الا منا كلين هـ 6 ايربل 1919 ك الله موتال اعلن الرجي اللي والقدمي على كا أس سر مصد يه لها كه

दोपहर को मैं तुन्हें बुलाऊँगा, तब तुमसे बातें होंगी." मैंने बनकी काक्षा मान ली.

दोपहर बाद उन्होंने मुक्ते ऊपर के एक कमरे में बुलाया. वह और मैं ही थे. कर्श पर बैठकर लगभग दो घंटे तक फिर बात होती रहीं, वह सब बातें मुमे अब याद नहीं रहीं. इतना याद है कि गांधी जी को हिन्दुस्तान भर की एक-एक ह्यावनी के बारे में यह जानकारी थी कि किसमें कितनी फीज है. कितनी दंसी और कितनी अगरेजी, और कितने हथियार हैं, और कहाँ कोई बराधत या आन्दंशन खड़ा हो जाने पर सरकार कितना मुकाबला कर सकती है, उन्होंने इन चीजों को घच्छी तरह पढ़ रखा था. कीजों के इघर से उधर आने जाने को भी वह ध्यान से पढ़ते सुनते रहते थे. मुम्त पर यह भी श्रासर पड़ा कि किसी एक जगह को श्रापने श्रान्दोलन के लिये या सत्याप्रह के लिये चुनते समय यह सब ची जें उनकी निगाह में रहती हैं. उस दिन की दां घंटे की बात-बीत से दो बातें मेरे दिल पर जन गई. एक यह कि अंगरेज सरकार की हिंसा करने की शक्ति की जितनी अच्छी जानकारी गाँधी जी का थी उतनी हमारे पुराने क्रान्तिकारी दल में किसी को न थी. दूसरी यह कि विदंशी हुकूमत से नफ्रत और मुल्क की आजादी के लिये तड़प भी गाँधीजी में किसी दूसरे से कम न थी. इब ऐसा भी लगा कि उनकी धर्म, पाप श्रीर श्रिहिंसा की बातें केवल बन्नत की जरूरत थीं और वह बड़ी मेहनत के साथ फांई नया रास्ता ढुँढ़ रहे थे या बना रहे थे.

मेरा दिल बदला, मैं गहरें सांच में पड़ गया. किर भी श्रिधक न ठहरा. शाम की गाड़ी से मैं इलाहाबाद के लिये रवाना हो गया.

इस तरह मेरी गाँधी जी की दूसरी मुलाकात खतम

[4]

पहली जंग के खतम होने से पहले-पहले देश में नई जान और नई बमंगें पैदा हां रही थीं. गाँधी जी के छोटे-छोटे नये ततरबे भी बहुत सों का ध्यान अपनी तरक खींच रहे थे. सरकार इन सब बातों को देख और समम रही थीं बढ़ता हुई बेचैनी और आजादी की प्यास को छचलने की तरकींचें सोची जाने लगीं. देश भर के छुछ चुने हुए काम करने बालों या आज:दी के प्रेमियों की एक कोहरिस्त तैयार करके हर एक का थाड़ा-थोड़ा हाल देते हुए अंगरेजी में एक छोटी सी किताब तैयार की और गुप्त रीति से टसे दिन्दुस्तान भर के सब अंगरेज अफसरों के हाथों में पहुँचाया गया. मुक्त माजूम है कि बाज-बाज जिलों में जहाँ दिन्दुस्तानी

النع في إراب بدر بلاي

دوبهر کو میں تمہیں باؤنگا آب تم شے باتیں ہوتگی ، میلے اُن لی آگیاں ملی لی -

دوبیر بعد انہوں نے معجنے آور کے ایک کسے میں بلایا ۔ وہ اور میں می تھے ، فرض پر بیٹھ کر لگ بیگ دو گھنٹے تک بهر باتین هوتی رهین . وه سب باتین مجهد آب یاد نهین مين . إنا ياد هے كه كالدهي جي كو عندستان بهر كي ايك ایک چهارنی کے بارے میں یہ جانکاری تھی که کس میں کتنی فوج هے، کتنی دیسی اور کتنی انگریزی، اور کتنے هلیار هين أور فهال كوئي بغايت يا أفدولن كهرا هو جالے يو سزكار کتفا مقالمه کر سکتی ہے . انہوں نے اِن چیزوں کو اچھی طرح يوه ركها تها . فوجيل كر إدهر سے أدهر أنے جالے دو بهي وہ بھیاں سے برحمتے سنتے رهمے تھے . محجم پر یه بھی اثر برا که دسی ایک جگهه کو اپنے آندولن کے لئے یا ستیاگرہ کے لئے جتنے سے یه سب چوزیں ان کی نگاہ میں رهتی هوں . اُس دن کی دو گینٹے کی بات چیت سے دو باتیں میرے دل پر چم کئیں . ایک یہ کم انکریز سرکار کی هنسا کرنے کی شکتی کی جتنی المهر جادكاري كادده ي جي كو نهي ألني دعارم يرائع كرامتكاري دل میں اسی او نع تھی . دوسرے یہ که ودیشی بہوست سے نغرت اور ملک کی آرادی کے اللہ تزب بھی کاسدھی جی میں کسے دوسرے سر دم نہ تھی . دنچہ ایسا بھی نکا کہ ان کی دهرم ، پ اور اهنسا کی باتین کوبل وقت کی ضرورت مهدن اور وہ بڑی محضت کے ساتھ دوئی لیا راستم قعولد رمے نہے یا

مور دل بدلا' میں کورے سوچ میں یز کیا ، پور بھی ادھک نه تهورا ، شام ای گاری سے میں اندآباد کے لئے روانه مو گیا ،

آیس طرح مدری کاندهی چی کی دومری طابات ختم هوئی ه

[4]

بہای جاگ کے ختم ہوئے سے پہلے پہلے دیش میں تئی
جان اور تئی آجا کی پیدا ہو وہی نہیں ۔ گاندہی جی کے
چھوٹے چھوٹے نئے نجریے بھی بہت موں کا دھیاں آپنی طرف
کھیاچے رہے نہے ، سرکار اُن سب باتوں نو دیکھ اور سمجھ وہی
تھی ، برھتی ہوئی بدھیای اور آزادی کی پیاس تو نچلنے
کی ترکیبیں موچی جائے اکوں ، دیش بھر کے کچھ چئے ھوئے
کی ترکیبیں موچی جائے اکوں ، دیش بھر کے کچھ چئے ھوئے
کام کرنے و ور یا آزادی کے پریمھوں کی ایک فہرست تیار کو
کے ہو آباد، د تھرزا نیرزا حال دیتے ہوئے آنگریزی میں آپک
جھھوٹی می کتب نیار کی اور کہت ریتی سے اسے ھلاستان بھر
کے سب انکویز افسروں کے ھاتھوں میں چھواں ھلاستائی

मैं गुजरात पहुँचा. गाँधी जी वस समय निष्ठयाड के कानाथालय में ठ६रे हुए थे. मैं बनसे वहीं मिलने के लिये गया. मेरी वनकी यह दूसरी मुलाकात थी.

सुबह का बक्कत था. गाँधी जी अनाथालय के हाल के पक कोने में कर्श के जपर एक गद्दा बिद्धाए बैठे हुए थे. आठ दस काम करने वाले उनके दाएँ बाएँ और सामने थे. उनमें से दो की याद मेरे अन्दर अभी तक बाक़ी है. एक शंकर लाल बैंकर और दूसरे बल्लभ भाई पटेल, गांधी जी में और उनमें बातें हो रही थीं, कुछ गुजराती में और कुछ हिन्दस्तानी में मिली-जली. मैंने जाकर नमस्कार किया. गांधी जी ने मुक्ते पहचान लिया. पूछा कि मैं वही हूँ न जो उनसे अहमदाबाद में मिल चुका था. मेरे हाँ करने पर उन्होंने प्रेम के साथ मुझे अपने पास बैठने का इशारा किया. में बैठ गया. उनकी बातें सुनने लगा. लगभग दो घंटे बातें होती रहीं. मैं गुजराती और हिन्दुस्तानी दोनों समम रहा था. मुक्ते अब उन बातों की तकसील तो याद नहीं रही पर इतना अच्छी तरह याद है कि दो घंटे तक लगातार गाँधी जी उन सब काम करने वालों को तरह-तरह से यही समकाते रहे कि धर्म पर क़ायम रहना, पाप नहीं करता, किसी को मारना नहीं, किसी का दुख भी नहीं पहुँचाना. श्रम्यायियों के साथ भी दिल में प्रेम रखना और ं प्रेम ह साथ ही उनसे बरतना वरौरा-त्ररौरा. मैं ध्यान से सनता रहा. कभी-कभी मैंने बात को साफ करने के लिये कोई छोटा सा सवाल भी कर लिया. हर बात का वही खबाब. उन्हें इतनी इस बात की चिन्ता नहीं थी कि किसानों का अन्याय दूर हो जितनी इसकी कि किसी भी सरकारी बादमी या सरकारी नौकर को जरा सा भी दुख न पहुँचा हो. मेरे मन में गाँधी जी की तरफ से फिर वही भाव उभरे जो एक साल पहले पैदा हुए थे. दो-तीन घंटे की बातें सन कर और अच्छे से अच्छे काम करने वालों के साथ मुक्त में फिर उनकी तरफ से निराशा और एक तरह की नफरत ही जागी. खाने का वक्षत आ रहा था. सब खड़े हो गए. मैं भी खड़ा हो गया. मैंने गाँथी जी से कहा-"मैं पहले भी आप से भिलने आया था और इतने दिनों बाद फिर आया हैं, श्रव मैं इसी दोपहर की गाड़ी से लौट जाऊँगा. सिर्फ इतना अर्ज कर दूँ कि मैं इतना ही disappointed (निराश) और disgusted (बेजार) जा रहा हूँ जितना पहली बार."

गाँधी जी फिर मुस्कराए. कुछ खौर लोग भी देख रहे थे. मुक्तसे कहा—''अभी और ठहरो.'' मैंने जवाब दिया— "मुक्तेठ हरने से काई कायदा दिखाई नहीं देता." गाँधी जी ने कहा—"इतनी दूर से आए हो. मेरे कहने से कुछ देर और ठहर जाओ. तुम भी खाना खा लो, मैं भी खा लूँ. फिर میں گجرات بہرلنچا ، کاندھی جی اُس سے نتیاد کے اللہ انتہالید میں تہرے ہوئے تھے ، میں اُن سے رهیں سانے کے لگہ گیا ، میری اُن کی یہ دوسری مقالت تھی ،

مبع کا وقت تھا ، کالدھی جی انداتھالیہ کے مال کے ایک کرنے میں فرص کے آوپر ایک گدا بحیائے بیٹھے ہوئے تھے ، آئو دس کلم کولے والے أبي كے دائيں بائيس أور سامنے تھے . أن میں سے در کی یاد میرے اندر ابھی تک باتی ہے ایک شنكر الل ميذكر أور درسوم وايه بهائي يتيل. كاندهى جي میں اور اُن میں باتیں هو رهی تهیں کچھ گجراتی میں اور كچ هندستاني ميں ملي جلى . مينے جاكر نسكار كيا . كالدهي جی نے مجھے پہنچان ایا . پرچها که میں وهی هوں نه جو أن سے احمداباد میں مل چکا تھا ، مبرے عال کرنے پر انھوں لے ریم کے ساتھ مجھے اپنے پاس ہیٹھنے کا اِشارہ کیا ۔ میں بیٹھ گیا ۔ أن كي بانين سننے لكا . لك يهك دو كينتے باتين دوتي رهين، مين گجراني اور هندستاني دودون سمجه رها تها . مجه أب أن باتوں كى تفصيل لو ياد نہيں رهى پر اِتنا اچھى طرح ياد ھے که دو گھنٹے تک لگانار گاندھی جی آن سب کام کرنے والیں کو طرح طرح سے بھی سمجھاتے رہے که دعوم پر قایم رهنا ، پاپ نہیں کرنا کسی کو مارنا نہیں کسی کو دکھ بھی نہدں پہنچانا انیائیوں کے ساتھ بھی دال میں پریم رکھنا اور پریم کے ساتھ ھی إن سے برتنا وغيرہ وغيرہ . ميں دعيان سے سنتا رها . كبهى كبهى میانے بات کو صاف کرنے کے لئے کوئی چھوٹا سا سوال بھی کر ليا . هر بات كا رهى جواب . انهيس اِتنى اِس بات كى چنتا نہیں تھی کے کسانیں کا اسائے دور عو جتنی اِس کی که کسی بھی سرکاری ادمی یا سرکاری توکر کو فرا سا بھی دکھ نم پہنچا ھو۔ تو میرے میں میں کادرہ جی کی طرف سے پھر رسی بھاؤ آبھرے جو ایک، سال بہلے پیدا ہوئے نھے . دو تھن گھنٹے کی باتیں سن کو اور اچھے سے چھے کام کرلے والوں کے ساتھ سجھ میں پھر ان کی طرف سے دراشا اور ایک طرح کی تغرت هی جاگی . دیانے کا وقت آ رہا تھا . سب کھڑے ہو گئے ، میں اہی کھڑا هو گیا ، مینے کا دھی جی سے کہا۔"سیں پہلے بھی آپ سے ملنے آیا تھا اور اِننے دنوں بعد پھر آیا ھوں ، آپ میں اِسی دربیر کی گاری سے لوے جوئگا ، صرف اِننا عرض کر درں که مين ألا هي disappointed (نراهي) أور (برؤار) جا رها عين جننا پهلي بار ."

گاندهی چی پیر مسکرائے ، کچھ اور لوگ بھی دیکھ رہے تھے ، مجھسے کہا۔"ابھی اور ٹھیرو ۔" مینے جواب دیا۔ "مجھے ٹھیرئے سے کرئی ذیدہ دکھائی نہیں دیتا ۔" گاندهی چی لے کہا۔"آیتی دور سے آنے ہو ، میرے کہتے سے کچھ دیر اور ٹھیو چاؤ ، تم بھی کہانا کیا لو' میں بھی کیا لوں ، بھو

बलते मैंने धनसे यह भी कहा—"मेरी आप से एक ही प्रार्थना है, इंश्वर के लिये आप और जो चाहे कीजिये, हिन्दुस्तान की राजनीति में दख़ज़ न दीजिये, नहीं तो आप इस देश को और मिटा देंगे." वह सुनकर मुस्कराए और कहने लगे—"अच्छा, अभी तो और फिर भी आओगे."

मैंने-''देखिये-नमस्कार !'' कह कर विदा ली. स्टे-शन आया. सोलन के लिये वापिस चल दिया.

मैं रास्ते भर यही सोचता आया कि इतना लम्बा सकर श्रीर इतना खुच सब बेकार गया.

सोलन पहुँचकर मैंने इसी मजमून के ख़त ध्रपने होस्तों को लिख दिये.

इस दिनों के बाद मुमे मालूम हुया कि गाँधीजी जब पहले पहल दिन्दिन अफरीका से हिन्दुस्तान आए थे तब मस्टर गांखले ने, जिन्हें गाँधीजी अपने गुरु की तरह मानते थे, यह बायदा ले लिया था कि वह यहाँ आने के एक साल बाद तक इस देश की हालत का चुपचाप बैठकर देखेंगे और समक्षगे और किसी तरह को काई अमली क़दम कम से कम उस साल तक नहीं उठाएंगे. मैं जब गांधीजी से पहली मरतबा मिला तो यह उसी एक साल के अन्दर का दिन था.

[3]

पहली मुलाकात हुए लगभग दो साल बीत चुके थे.
पहला महायुद्ध कतम होने पर आ रहा था. जो हजारों हिन्दुस्तानी सिपाई। योरप के लड़ाई के मैदानों से लौट-लौट कर आ रहे थे और जो अवरें लड़ाई की देश भर में फैल रही थीं बनकी बदौकत एक नई उमंग और आजादी की नई लगन देश भर में फैलती जा रही थी. मैं पहाड़ छोड़ कर इलाह।बाद आ चुका था. अभी आगे के काम के लिये देखों से सलाह ही कर रहा था कि इतने में मुना कि उन्हीं मिस्टर गाँधों ने चम्पारन बिहार में वहाँ के ग्रांश किसानों पर निलहे गोरों के अत्याचारों के खिलाफ छुछ आन्दोलन शुरु किया है. गाँधो जी के अपने पहले तजरबे से मुमे इतना जोश भी न आ सका कि बिहार, जो इलाहाबाद से बहुत दूर न था, जाकर उनके आन्दोलन को देखें.

यां हे दिन और बीते. सुना कि गुजरात में खेड़ा जिला के किसानों की कसलें खराब हो गई थीं. सरकार उनसे जबरदस्ती लगान बसूल कर रही थीं. इस धन्याय के जिलाफ गाँधी जी ने गुजरात में एक नया आन्दालन खड़ा किया है.

AND SHAPE STORY

چلت سینے آلے یہ بھی گیا۔ ''سیری آپ سے ایک می پراڑھا ا ہے' آبھرر کے نار آپ اور جو چاہے 'مجائے' ہندستان کی راجتی میں دخل نه دیجائے' نہیں تو آپ اِس دیھی کو اور مٹا دیلکے'' وہ سی کو مساوائے اور کہنے لئے۔''اچھا ابھی تو اور پھڑ بھے آگئے۔

مینے۔۔۔ ویکھیٹے۔۔نسکار ا^{ور ک}م کر بدائی ا اسلیشن آیا ، سون کے لئے واپس چل دیا ،

. میں رأستہ بهر یهی سرچتا آیا که اِننا لمبا سفر اور اِننا خرج سب بیکار گیا .

سولی پہوٹرچکر میلے اِسی معمون کے خط آپنے درستوں کو لکھ دیگے ۔

کتچ، دنہیں کے بعد صحیحے صعابم ہوا که گاندھی جی جب بہلے پہل دکیں افریقہ سے هندستان آئے تھے تب مسائر گوکیلے فی جاپیس گاندھی جی اپنے گرو کی طرح مانتے تھے' یہ وعدہ لے لیا تھا کہ وہ یہاں آنے کے ایک سال بعد تک اِس دیش کی حالت دو چپ جاپ بیٹھ کو دیکھینگہ اور سمجہینگہ اور کسی طرح کا کوئی عملی فدم کم سے کم اِس سال تک نہیں اُٹھائھں گے۔ میں جبگاندھی جی سے پہلی مرنبہ ما تو یہ اُسی ایک میں جبگاندھی جی سے پہلی مرنبہ ما تو یہ اُسی ایک کے سال کے اندر کا دیں تھا ۔

[3]

یہلی ماقات عزئے لگ بھگ دو سال بیت چکے تھے . پہالا مہابدہ ختم ہوئے پر آ رہا تھا . جو ہزاروں ہندستانی سہاھی یورپ کے لوائی کے میدانوں سے اورت لوت کر آ رہے تھے اور جو خبریں لوائی کی دیھر بھر میں پھلل رہی تھیں اُن کی بدولت ایک نئی اُمنگ اور آزادی کی نئی لگن دیھر بھر میں پھللی جا رہی تھی ، میں پہاز چھرز کر اِلداباد آ چکا تھا . ابھی آگے کے کام کے لئے درستیں سے صالح عی در رہا تھا کہ اِنتے میں سنا که ان هی مستر کاندھی نے چمپاری بہار میں کھ اِنتے میں سادوں پر نلهے گوروں نے آنیا جاروں کے خاف کھچے آندوای شروع اُنها ہے ، کاندھی جی کے اُنتے پہلے تجربے سے مجھے آننا جرش بھی نہ آسکا کہ بھارا جو الداباد سے بہت دور مجھے آننا جرش بھی نہ آسکا کہ بھارا جو الداباد سے بہت دور

تهرور دن اور بیتے ، سنا که کجرات میں کهیوا ضلع کے کسانوں کی فصلیں خواب هوگئی تهیں ، سرکار آن سے زبودستی کان وصول کر رهی تهی ، اِس انبائے کے خانف کاندهی جی فی کجوات میں ایک نیا آندولی کھوا کیا ہے ،

الگا تھا۔ ایک چھیٹی سی لوکی شاید پائیے چھ ہوس کی رھی ھوگی آئی کے آگے بیٹھی تھی۔ مجھے جہاں تک یاد ہے گاندھی جی اس کے سرسے جوٹس بین بینی کر پاس رکھ ھوٹے باتی کے کئورے میں ڈاللے جاتے تھے۔ اُسی سے دھیے کے ایک دو اور آدمی دمرہ کے پاس سے آتے جاتے داوائی دیئے۔ میں کنوا میں گیسا۔ معلوم کو کے که یہی مستر گاندھی ھیں کچھ اچنبھا سا لگا۔ اُنہوں نے ثابت کا ایک ٹکڑا میری طرف کو کے مجھے بیٹھائے کو کہا ، صوب بیٹھ گیا۔ باتیں شورع کو کی مجھے بیٹھائے کو کہا ، صوب بیٹھ گیا۔ باتیں شورع ہوئیں ،

مھنے اپنا اور حال کی دیش کی آزادی کی کوششوں کا حال جو ميں جانتا تھا ۔ب انھيں تفصيل سے كهم سنايا . معاوم هوتا تها برت دهيان سے سن رهے هيں أور جو جو ميں كہنا هوں سب يهتم جاتے هيں ، بيچ بيچ ميں أنهوں نے كئى سوال يهي كله . إس بات چيت مان نتى كهناتم لكم دوبهر سے شام هولے آئی ۔ کبھی کبھی وہ آئھ کر دو درا کام بھی کرتے رهے . پر جب جب مینے أن م أن كى رائد بوجهى اور أن م أكر كے لئے صلاح اينا چاها تو لك بهك هر بات ير وه كنچه ایسا هی جواب دیتے نهے۔ دامیں تو راجایتی نہیں سمجھتا . میں تو دھرم جانعا ھوں ۔ سب کس اپنے دھرم پر رھنا چاھئے ۔ أيغا دهرم بالنا چ مثم ، ياپ تو نهين دونا جاماء ، كسي كون مارنا تو یاپ هے " وغدرہ وغدرہ . معلم بار بار اور طاح طرے سے ان سے پوچھنا چاھا که آخر هندستان کو آزادی کیسے مل سکتی هے . هر بار وه كوئى نه كوئى إسى طرح كا فقرة دوءوا ديتے تهے ، مجه ير يه ادر ضرور يرا كه ره مجه مهل اور مهرى باتوں میں رس لے رہے تھے . أن كى أنكهوں ميں مجھے دار دار ايك الوكها سنههم أور أينا ين دعهائي دينا تها . معلوم هوتا تها وه چاعتے هيں ميں اور قربروں اور ان سے باتيں کروں ، ہر بار ہار طوطے کی طرح رائے ہوئے آن کے وہی نقرے سن کر۔ امیں أو دهرم جانكا هوں . يائه ، تو نهيل كرنا چاهئے ، سب كول أينا دهرم باللا چاهئم" مهل أنتا كها . مهر عد إس يرجهنم ير يهي که آخر دهرم ف کیا چیو، وج مهری د لی کا جراب ته دے سکے . مع أن سه ايك طرح كي نفوت هو تُكي . مين موچله لكا که دهرم ادهرم کے جن دقانوسی خوالوں نے اِس ملک کو برباد کیا ہے اور اسے غلامی کے یہ دین دنھائے میں وعی خیال اِس آدمی کے اندر کوے کوے کر بھرے ہوئے میں . مینے مِن ميں طه كو ليا كه شلم كى كاري سے سولن لوت جايا جائه . أخر مين مين أن ع كها كم مين أبي هي سوان وابس جا رها موں میلے آن سے یہ بھی صاف کہت دیا که میں آپ * disappointed ارر disappointed يمنى نراهي هو کر اور مفؤار هو کر جا رها هوں ، محجے یاد ہے که مهار انگریزی کے علی یہی دونوں شبد ایبوک کیئے تھے ۔ چاتے

नद्वा था. एक छोटी सी लड़की, शायद पाँच छै बरस की रही होगी, उनके आगे बैठा थी. मुक्ते जहाँ तक बाद है गांधीजी उसके सर से जुए बीन-बीन कर पास रखे हुए एक पानी के कटोरे में डाजते जाते थे. उसी सन धन के एक दो और आदमी कमरे के पास से आते जाते दिखाई दिए. मैं कमरे में घुसा, मालूम करके कि यही मिस्टर गांधी हैं कुछ अवस्था सा लगा. उन्होंने टाट का एक दुकड़ा मेरी तरफ करके मुक्ते बैठने को कहा, मैं बैठ गया. बातें शुरु हुई:

मैंने अपना और हाल की देश की आजादी की कोशिशों का हाल जो मैं जानता था सब उन्हें तक सील से कह सुनाया, मालुम होता था बड़े ध्यान से सुन रहे हैं श्रीर जो-जो में कहता हूँ सब पीते जाते हैं. बीच-बीच में उन्होंने वई सवाल भी किये. इस बात-चीत में कई घन्टे लगे. दोपहर से शाम होने आई. कभी-कभी वह उठकर दसरा काम भी करते रहे. पर जब-जब मैंने उनसे उनकी राय पूछी श्रीर उनसे श्रागे के लिए सजाह लेना चाहा तो लग-भग हर बात पर वह कुछ ऐसा ही जवाब देते थे-"मैं तो राजनीति नहीं समभता, मैं तो धरम जानता हूँ, सबकूँ अपने धरम पर रहना चाहिये, श्रपना धरम पालना चाहिये, पाप ता नहीं करना चाहिये. किसी कूँ मारना पाप है, 'वरौरा-बरौरा. मैंने बार-बार धीर तरह-तरह से उनसे पूछना चाहा कि आखिर हिन्दुस्तान को आजादी कैसे मिल सकती है. हर बार वह कोई न कोई इसी तरह का फिक्ररा दोहरा देते थे. मुक्त पर यह श्रासर जरूर पड़ा कि वह मुक्तमे श्रीर मेरी बातों में रस ले रहे थे. उनकी आँखों में मुक्ते बार-बार एक श्रनोखा स्नेद और अपनापन दिखाई देता था. मालम होता था वह चाहते हैं मैं और ठहरूँ श्रीर उनसे बातें करू. पर बार-बार ताते की तरह रटे हुए उनके वही फिकरे सन-कर-"मैं तो धरम जानता हूँ, पाप तो नहीं करना चाहिये सब कूँ अपना धरम पालना चाहिये, " मैं उकता गया. मेरे इस पूछने पर भी कि आखिर धर्म है क्या चीज, वह मेरी तसल्जी का जबाव न दे सके. मुक्ते उनसे एक तरह की नफरत हो गई, मैं सोचने लगा कि धर्मे अधर्म के जिन दक्तियानू भी ख्यालों ने इस मुल्क को बरबाद किया है और इसे रालामी के यह दिन दिखाए हैं.वही .ख्याल इस आद-भी के अन्दर कूट कूट कर भरे हुए हैं. मैंने मन में तय कर लिया कि शाम की गाड़ी से सीलन लीट जाया जाय. आख़िर में मैंने उनसे कहा कि आज ही मैं सोलन वापिस जा रहा हूँ. मैंने उनसे यह भी साफ. कह दिया कि मैं आपसे disappointed और disgusted यानी नि-राश होकर और बेजार हाकर जा रहा हैं. मुक्ते याद है कि सैंने अंगरेजी के ही यही दोनों शब्द उपयोग किये थे. चलते

करके सैकड़ों बरस तक भी इस उपजाक देश को छोड़कर नहीं जा सकती थी. कुछ बरसों के तजरबे ने अच्छी तरह दिखा दिया कि यह रास्ता थोड़ा-बहुत अंगरेजों के दिजों में हिंदुस्तानियों का डर भले ही पैदा कर दे, न जनता में जान कूँक सकता था, न उन्हें आजादी की लड़ाई के लिये तैयार कर सकता था और न देश को आजाद करा सकता था, इस दल के आम लोगों में एक गहरी निराशा छाई हई थी.

सन् 1908 में लोकमान्य तिलक के जेल भेजे जाने ने इस दल को ख़ासा धक्का पहुँ चाया था. सन 1910 में अरिवन्द बाबू के कलकत्ता छोड़ के भागने से दल की हिन्मतें और पस्त हो गईं, अरिवन्द बाबू के उस आखारी दिन में कलकत्ते में ही था और ६ई घन्टे उनके साथ रहा. सन 1912 के बाद दल के बहुत से लोग इवर-उधर आसाम की सरहद पर या हिमालय की तराई में क्षिपे दंगे किसी तरह दिन काट रहे थे. जिस गली से बह चल रहे थे बह आगे बन्द दिखाई देती थी और दूसरा कोई गस्ता भी मुइकर आजादी की मंजिल तक पहुँ चने का दिखाई न देता था.

इसी सिलसिले में सन 1912 से 1916 तक के दिन मैंन सोलन में काटे. दिल के अन्दर गहरी निराशा थी. जापान, रूस आयरलैंड और फ़ान्स के इतिहासों के .खूब पन्ने लीटे पर अपने देश की आजादी का कोई रास्ता दिखाई न दिया.

[2]

सुनने में आया कि मिस्टर गांधी नाम के एक सज्जन इसी साल हिन्दुस्तान आए हैं. दिक्खन अफ़्रीक़ा में वह वहाँ के हिन्दुस्तानियों के अधिकारों के लिए लड़ते रहे हैं और कामयाबी के साथ लड़ते रहे हैं. वहाँ की हिन्दुस्तानी जनता ने भी इनका .खूब साथ दिया है. क़ुद्रती तौर पर उनसे मिलने की स्वाहिश दिल में पैरा हुई, इस उम्मीद में कि उनकी सलाह से शायद अपने देश की आजादी के लिये कोई आगे का रास्ता सुमें.

मैं अकेला सोलन से चला. सीधा धहमदाबाद पहुँचा. पता लगाया हो मालूम हुआ कि मिस्टर गांधी शहर के बाहर किसी छोटे से बँगले में रह रहे हैं. मैं बहाँ पहुँचा. मेरी गाँधीजी की यह पहली मुलाक़ात थी.

मुक्ते अब तक याद है वह एक छाटे से कमरे के अन्दर जिसका करी बीच-बीच में वखड़ा हुआ था, टाट का एक बाटा चा दुकड़ा निद्धाए वस पर बैठे थे. एक छाटी सी मैली सी घटनों तक की घाती बाँधे हुए थे. बाकी बदन کو کے سیعروں برمن تک بھی اپنی آپجاو دیھے کو چھر کو انھیں کے تغیریے کے تغیریے کے تغیریے کے تغیریے کے انھی طرح دکیا دیا که یه راسته تھروا بہت انگریورں کے دانوں میں هادستانموں کا در بیلے هی پیدا کو دسه نه چلتا میں جان پیونک سکتا تھا نہ آنیمی آزادی کی لوائی کے لئے تیار کر سکتا تھا اور نه دیھی کو آزاد کرا سکتا تھا اور در سکتا تھا اور در دیھی کو آزاد کرا سکتا تھا اور در دیھی در انہا جھائی ہوئی

سی 80ر1 میں لوکائیہ تلک کے جیل بھیتے جائے نے اِس دل کو خاصہ دمکا پہونتھایا تھا ۔ سی 1910 میں اروند باہو کے کلکته چھوڑ کے بیاگئے سے دل کی ہمتی اور پست ہو گئیں گہنٹے اُن کے ساتھ رہا ۔ سن 1912 کے بعد دل کے بہت سے لوگ اِدھر اُدھر اُسام کی سرحد بر یا ہمائیہ کی ترائی میں چھیے دیے کسی طرح دن کات رہے تھے جس گئی سے وہ چھلے دیے کسی طرح دن کات رہے تھے جس گئی سے وہ چل رہے تھے اور دوسرا کہئی راستہ بھی مر کر آوادی کی ملزل تک پہرنتھانے کا دکھائی نہ وہیتا تھا ،

اِس سلسلے میں سی 1912 سے 1916 تک کے دیں مینے سولی میں کاتے ، دل کے اندر گہری نراشا تھی ، جاپاں ، روس ، آٹرلھات اور فرانس کے اِتہاسیں کے خوب پنے لوٹے پر اپنے دیھی کی آزادی کا کوئی راستہ دکھائی نہ دیا ،

[2]

سللے میں آیا کہ مستر کاندھی نام کے ایک سجوں اِسی سال هلاستان آئے هیں ، دبس افریقہ میں وہ وہاں کے هندستانیوں کے ادھیکا وں کے لئے لڑتے رہے هیں اور کامیابی کے ساتھ لڑتے رہے هیں ، وہاں کی هندستانی جنتا نے بھی اِن کا خوب ساتھ دیا ہے . قدرتی طور پر اُن سے ملنے کی خواهش دل میں پیدا ہوئی' اِس اُمید میں کہ اُن کی صلاے سے شاید اپنے دیھی کی آزادی کے لئے کرئی آگے کا راستہ سوجھے ،

مهر اکیلا سوان سے چلا ، سیدها أحمدآباد پهونجها ، بته لگایا تو معلوم هوا که مسلار کاندهی شهر کے باهر کسی چهوالے سے بنکلے میں رہ رہے هیں ، میں رہاں پہونجا ، میری کاندهی جی کی یه پہلی ملقات تھی ،

معجهے آب تک یاد ہے کہ وہ ایک چھوٹے سے کسے کے اندر جس کا ترش بیچے بیچے میں اُکوڑا ہوا تیا ٹاٹ کا ایک چووٹا سا ٹوا بچھاٹے اس پر بیٹھے تھے ایک چھوٹی سی میلی سی گھٹوں تک کی دھوٹی باندھ ھوٹے تھے ۔ باتی بدن

میں انگریو هندستانیوں سے سنبھل کر بھٹھنے لگے ،
اس اندوان کا سب سے ہوا ادا کنت تھا ، کلکتے کے اس
ناخوشگرار ہوا سے باہر نکانے کے لئے انگریووں نے دالی کو
راجدهانی بنایا ۔ دای میں بڑے شاندار جابس کے ساتھ داخل
ہوتے ہوئے جب اُنہوں نے مغلوں کے نہیں سو برس کے رعب کو
اپنے اُرپر اُردهنا چاها تو سن 1912 کے لارت هاردنگ کے ہم نے
پور ایکدم انگریو قوم کی اُس ساری شان اور سارے موے کہ
کرکرا کر دیا ، سارے هندستان میں ایک لہر سی دور گئی که
دلی کو راجدهانی بنانا انگریو سرکار کو راس نہیں آئیگا ، ہم
اور پستول کی راہ نے کچے دیر کے لئے اپنا کچے نے کچے چمتکار

یر وہ چمتکار چندروز سے زیادہ نہ تھہر سکا، دلی ہم کے بعد ھے سرکار نے جو چوطرفت دمن شروع کیا اُس سے ملک میں یہر ایک بار اندھیاری چھا گئی، اور برھتی گئی ، اُس کے بعد بھی کچھ همت والے لوگوں نے اِدعر اُدھر اِسی طرح کی چیزیں جاری رکھیں ، پر پائچ سات برس کے تعجریے سے اُس دل کے وچاروان لوگوں لے دیکھ لیا که اِن طریقوں سے' اور جو کچھ بھی مر کر پائیں یا تع کر پائیں انعریزی راہے دیعی سے نہیں مثایا جا سکتا۔ ایک ایک گوت هتیا کا ٹیک ٹیک کرنے میں بیس بیس اور تیس تھس آدمیوں کی ضرورت یوتی تھی۔ سپھلتا ھو بھی گئی تو پرلیس کے سراغ لگانے بر ُ قریب قریب فاصمن تها که أن مين سے كوئى لم كوئى يهرت نم جاوے . برسال مقدمت چلنے کے بعد ایک جان کے بدلے بیس بیس اور ریس تیس دیھی بھتوں سے زندگی بھر کے لئے ماتھ دعو بیتھنا پڑنا تھا ، بجنتا میں جو لوگ اِن کے کام سے اندر اندر همدردی الله ركيتينه وه إن سزاؤن لو ديكه كر سهم جاتے تهے. دكيتهوں ميں ایک ایک قایتی پر کبھی کبھی اِتنا خرب مو جاتا تھا جتنا رمول نه هو یاتا تها بهر جو لوگ جان یر کهال کر دائیتهار دَانِدَ اللهِ أَفَهِينِ مِينِ رِينُهِ يهسهِ يا هدّيارون كي بندّراره يريا ان کے ٹھیک ٹھیک استعمال ، یو بھر وہ سر بھٹول ہوتی تھی که جس سے دل يهث جاتے تھے . يوليس كو اگر يته چلاا تها كه اِس دل کا کوئی اَدمی فال کاؤں میں تھہرا تھا تو اُس کاؤں کے لوگوں پر وہ ماریں پرتی تھیں که ایک ایک گاؤں والا پولیس کی چوکی پر جاکو ناک رگونا نها اور سرکار کی وفاداری کی فسمیں کھالے لکتا تھا . دال کے معتجدار لوگین کو دکھائی دے گیا که جو انگریز قوم ایک جنگ میں اپنے ہزاروں آدمی نثرا سکتی ہے اور لاکھوں رویلے گواے بارود پر خزے کر سکتی ہے وہ لکا دکا اعمیوں کی سال دو سال کے اندر جانین گنوا کر اور وہ یعی اِنلی زیردست قیمت ومول

में अंगरेष हिन्दुस्तानियों से सँमलकर बैठने लगे. एस आन्दोलन का सब से बड़ा अड्डा कलकता था. कलकते की एस नाखुशगबार हवा से बाहर निकलने के लिए अंगरेजों ने दिल्ली को राजधानी बनाया. दिल्ली में बड़े शानदार जलूस के साथ दाख़िल हांते हुए जब उन्होंने मुग़नों के तीन सी बरस के रोब को अपने ऊगर श्रोदना चाहा तो सन 1912 के लाई हाईंग के बम ने किर एकदम श्रंगरेज क्रीम की एस सारी शान और सारे मजे को किरकिरा कर दिया. सारे हिन्दुस्तान में एक लहर सी दौड़ गई कि दिल्ली को राजधानी बनाना श्रंगरेज सरकार का रास नहीं आयेगा. बम और पिस्तौल की राह ने कुछ देर के लिये अपना कुछ न इस चमत्कार दिखलाया इससे इनकार नहीं किया जा सकता.

पर वह चमत्कार चन्द रोज से ज्यादद न ठहर सका. दिस्ली बम के बाद ही सरकार ने जो चौतरका दमन शुरु किया उससे मुल्क में फिर एक बार क्रन्धयारी छा गई और बढ़ती गई. उसके बाद भी कुछ हिम्मत वाले लोगों ने इषर डघर इसी तरह की चीजें जारी रखीं. पर पाँच सात परस के तजरबे से उस दल के विचारवान लागों ने देख लिया कि इन दरीक़ों से और जो कुछ भी हम कर पाएँ या न कर पार्थे धंगरेजी राज देश से नहीं मिटाया जा सकता. एक एक गुप्त हत्या का ठीक ठाक करने में बीस-बीस और शीस-डीस बादमियों की जरूरत पडती थी. सफलता हो भी गई तो पुलिस के सुराग्न लगाने पर क़रीब-क़रीब ना-मुमकिन था कि इनमें से काई न काई फूट न जावे. बरसों मकदमा चलने के बाद एक जान के बदले बीस-बीस और धीस-तोस देश भक्तों से जिन्दगी भर के लिये हाथ धो बैठना पहुता था, जनता में जो लोग इनके काम से अन्दर-अन्दर इमद्दी भी रखते थे वह इन सजाओं की देखकर सहम जाते थे. डकैतियों में एक-एक डकैतो पर कभी-कभी इरना खर्च हो जाता था जितना वसल न हो पाता था. फिर जो लांग जान पर खेल कर इकेती डालते थे उन्हीं में इपये पैसे या हथियारों के बँटवारे पर या इनके ठीक-ठीक इस्तेमाज पर फिर वह सिर-फ़टीवल होती थी कि जिस-से दिल फट जाते थे. पुलिस का अगर पता चलता था कि इस दल का कोई आदमी कलों गाँव में ठहरा था तो इस गाँव के लोगों पर वह मारें पड़ती थीं कि एक-एक गाँववाला पुलिस की चौकी पर जाकर नाक रगइता था और सरकार की बफादारी की क़स्में खाने लगता था. दल के सममदार लोगों को दिखाई दे गया कि जो अंगरेज क्रीम एक जैंग में अपने हजारों आदमी कटवा सकती है और लाखों रुपये गोले बारुद पर खर्च कर सकती है बह इका-दुक्का बादमियों की साल दो साल के धन्दर जामें ग्रेंचा कर और वह भी इतनी जबरदस्त कीमत वस्त

107 mil

गांधी जी के साथ पहली मुलाकातें

पंडित सुन्दरलाल

सन 1915 की बात है.

मैं सोलन में था. हिन्दुस्तान की राजनीति में उस समय दो ही दल थे. एक नरम दल जो इंगलिस्तान के बादशाइ की वफादारी की क्रसमें खाता था, अंगरेज सरकार के रहते अपने देश को शिक्षा प्रचार और समाज सुधार के जरिये ऊँचा ले जाना और मजबूत करना चाहता था, श्रीर दरखास्तों और धरबी परचों के जरिये अंगरेजों से राज-काज में छाटे-मोटे अधिकार और नौकरियाँ लेकर अपने को सफल मानता था, कांगरेस इसी दल के हाथों में थी. दूसरा गरम दल जो स्वदेशी, अंगरेजी माल के बायकाट, क्रीमी तालीम श्रीर 'स्वराज' की प्यास लोगों में पैदा करके बम और पिस्तील के जरिये इचर-उधर अंगरेज हाकिमों की हत्या करके और खजानों वर्रों रा को लूटकर अंगरेजों का इस देश से निकाल देने की आशा करता था. इस दूसरे दल का जन्म बँगाल की तकसीम के साथ-साथ सन 1905 में हुआ था, इस दल में बहुत से जान पर खेलने बाले नीजवान थे. धन्होंने अपनी समितियाँ बनाईं. कई श्रंगरेजां श्रीर वनके हिन्दुस्ताना मददगारों की जगह-जगह इत्याएँ कीं. खजानों और हथियारों के गोदामों पर डाके डाले. मालूम होता है अच्छी और बुरी सभी चीजें अपने-अपने समय पर भौरअपनी जगह कुछ न कुछ उपयोग रखती हैं. शायद अच्छे और बुरे का फरकर्भा मन्धेरे और उजाले के फुरक की तरह मौके और महल का ही फुरक है. मुफ्ते अब्झी तरह याद है कि सन 1907 से पहले अंत-रेजों का दबदवा और उनका घमन्ड कितता गहरा था श्रीर सारे देश पर किस तरह छात्रा हुआ था. बड़े से बड़े हिन्दु-स्तानी के जिए पहले या दूसरे दर्जे के रेल के हिसी ऐस दिन्दे में घुसने की हिम्मंत करना जिसमें कोई अंगरेज पहले से बैठा हो एक रौर मामूली बात थी और काई भी होटे से होटा अंगरेज ऐसे मौके पर किसी बड़े से बड़े हिन्दुस्तानी का खुत्ते अपमान कर सकता था. सन 1907 के .खुरीराम बास के मुजफारपुर वम ने इस हालत को मानो जाद की तरह एक रात में बदल दिया. अंगरेज समक गए कि यह कीड़ा काट भी सकता है. हिन्दुस्तानियों को इधर से उधर तक निराशा की अध्यारी घटा में आशा की एक शिक्षती की कींचरी हुई दिसालाई पढ़ गई. रेल के दिव्यो

گاندھی جی کے ساتھ پہلی ملاقاتیں

بنتت سادر ال

سن 1915 کی بات ہے.

میں سوان مرں تھا ، مندستان کی راجایتی میں اُس سنّم دو هي دل ته . أيك نهم دل جو إنكلستان كے بادشاء کی وفاد اُرس کی قسموں کیانا تھا؛ انگریز سرکار کے رہتے اپنے دیھی كُوشَكَشًا يَرْجَارُ أَرْرُ سَمَاجٍ سَدَهَارُ كَلَ ذَيْعَهُ أُولُنِهَا لَهِجَانًا أَرْر مضبوط کونا چاهتا تھا اور درخواستیں اور عرضی یہچوں کے فریعه انکویزوں سے راجکاج موں چھوٹے موٹے ادھیکار اور ٹوکویاں ایکر اینے کو سیال التا تھا ۔ کادعریس اسی دل کے ماتھوں میں تھی ، دوسرا گرم دل جو سودیشی انکریوی مال کے بالیکائ قومی تعلیم اور سورلیے کی پیاس لوگوں میں پیدا کر کے ہم اور یستول کے فریعة اِدھر اُدھرانکریزهاکموں کی هتیاکر کے اور خوانوں وفهره کو لوت کر انگریزوں کو اِس دیھی سے شکال دینے کی أشا كرتا تها . إس درسرے كے دل كا جنم بنكال كى تقسيم كے ساته ساته سن 1905 مين هوا تها . أس دل مين بهت سے جان پر کھیلئے والے نوجوان تھے۔ اُنہوں نے اپنی سمتھاں بنائیں . کئی انکریزوں اور آن کے هندستانی مدداروں کی جگہہ جمه متدائيں كيں . خوانوں اور هتيداروں كے كوداموں يو ذاكے . دَائه . معلوم هوتا هے اچھی اور بری سبھی چھڑیں اپنے اپنے سم ير اور اپني جکهه کنچه نه کنچه أپيوگ رکهتي هين . شايد اچے اور برے کا فرق بھی اندھھرے اور اُجالے کے فرق کی طرح موقع اور محدل كا هي فرق هي . مجهد أجهي طرح ياد ه كه سن 1907 سے پرلے انکربزس کا دیدیہ اور اُن کا کھمنڈ کتنا گہرا تھا اور سارے دیکس پر کس طرح جھایا ہوا تھا ، ہوے سے بوے ھادستانی کے لئے پہلے یا دوسرے درجه کے ریل کے کسی ایسے کُیْ مُیں گیسانے کی مست کرنا جسمیں کرئی انکریو پہلے سے بيُّلَّهَا هُو أيك غير معولي بات تهي أور كوئي بهي چهوال عه چھوٹا انگروز ایسے موقع پر کسی بڑے سے بڑے ھلاستانی کا کیلے آپمان کو سکتا تھا ۔ سن 1907 کے خودی رام ہوس کے خطفر پور ہم لے اِس حالت کو ماتو جادر کی طرح ایف رات مين بدل ديا . انكريز سمجه كل كه يه كيوا داي بهي سكتا ه . هَادِينَهُ كَالْرُون كو إِدَهْر سَ أَدِعُو لَكَ دُرِاشًا كِي أَنْدَهِ عِلْوَى كَهِمَّا مِينَ ا أشا ئي ايک بعلىسى كوندتى هوئى دئيائى ير كئى. ريل ع قيون

अक्तुबर 1957 ।

				The state of the s
क्र्य किससे		सका	منصد	کیا کس قعے
1. गांघी जी के साथ पहली ग्रुलाकातें				1. کاندهی چی کے ساتھ پہلی مطاقاتیں
—पंडित सुन्दरलाल	•••	141	•••	سيلتت سندر ال
2. गुजल (कविता)				2 غزل (کویتا)
-श्री सम्रादत नंजीर एम० ए०	•••	154	•••	-شرى سعادت نظهر أيم. أ.م.
3. उम्मत				3. است
—कुमारी रैहाना तैयवजी	•••	156	•••	-کاری ریحاته طیب جی
4. ग्रहम्मद साहब के कुछ उपदेश				4. محمد ماحب کے کچم اُپدیش
—डाक्टर मिरचा श्रबुल फजल	•••	159	***	ــــةاكتر موزا أبوالضل
5. वचन और जतन				5. رچن اور جتن
श्री श्रवदुल हलीम श्रन्सारी	•••	162	•••	د شرى عبدانحليم الصارى
.5. चिरागों के सिलसिले (अंग्रेजों से लिस	।। कवि	ता	كويتا	6. چرافوں کے ساسلے (انگریزوں سے خطاب)
—श्री सलाम मञ्जली शहरी		167	•••	- شری سلم مچهای شهری
7. शहीदे आजम बहादुरशाह की याद में				7. شهید آعظم بهادر شاله کی یاد میں
—श्री डी. राजन	***	168	•••	ــــشری تی. راچن
8. 1857 का देश भक्त अखबार 'पयामे व	गजादी'			8. 1857 كا ديص بهكت أخبار 'بيام أزادى'
—विश्वम्भरनाथ पांडे	•••	173	•••	وشوميهر ثاته بالذه
9. कुछ किताचें	•••	178	•••	و، پئچ کالیاں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔
10. हमारी राय-	116	184	•••	01. أحداق زاليب
-गान्धी जी के जनम दिन पर-चिरवम्भरमाथ पांडे			بانقى	. گلندی هی ک جلم دن پربشرمندر ناته



जिल्द 24 ्रा नम्बर 4

अक्तूबर 1957 अश्रीहरू

हिन्दुत्तानी कलचर सोसायटी क्ष्मिण प्रकार केरानी करावर सोसायटी अंग प्रकार अंग केरा १४६

E MEDICALLEA E MAN BUTTAN ME

Editorial Board

Dr. Tara Chand M.A., D. Phil. (Oxon)

Mahatma Bhagwan Din

Dr. Syed Mahmud, M.A., Ph.D., Bar-at-Law

Pandit Sundarlal

Bishambian Nath: Pande

Editor-in-Charge

Bishambhar Nath Pande

Asst. Editor

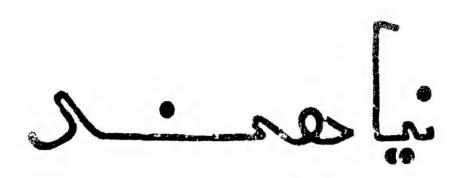
Suresh Ramabhai

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-Foreign Rs. 10/-Single Copy As. /10/- only or 62 N. P.

NAYA HIND

THE MUSTIFICABLE ALLANDADA



इस नम्बर के खास लेख

गांधीजी के साथ पहली मुलाक़ातें । हिंदिया की की साथ पहली मुलाक़ातें

शहीदे आजम बहादुरशाह की याद में الله على ياد - يل क्षेत्र के अजम बहादुरशाह की याद में —श्री डी राजन : شری دی راجن —

—पंडित सुन्द्रलाल

1857 का देश भक्त अखबार 'पयामे ديعر پيکت أخبار ' هام 1857 श्राजादी'

--- विश्वम्भरनाथ पांडे

हमारी राय---

-गांधी जी के जनम दिन पर بن ير جي کے جام دن پر

—विश्वम्भरनाय पांडे



هنو کو

कसचर पर हर तरह की किताचे मिसने का एक वड़ा केन्द्र—पाठक हिन्दी, उर्दू, अंग्रेज़ी की अपनी मन-पसन्द कितावों के लिये हमें लिखें।

ज्यारी नई किताबें

महात्मा गान्धी की वसीयत

(हिन्दी और उदू में) लेखक—गान्धीवाद के माने जाने बिद्वान : स्व० श्री मंजर श्रली सास्ता सके 225, क्रीमत दो रुपया

-:0:-

गान्धी बाबा

(बक्चों के लिये बहुत दिलचस्प किताब)
लेखिका—कुद्सिया जैदी
भूमिका—पन्डित जवाहरलाल नेहरू
मोटा काराज, मोटा टाइप, बहुत-सी रंगीन तसबीरें
दाम दो रुपया

पंक्ति सुन्दरलाल जी की लिखी किताबें गीता और क्रुरान 273 सके, दाम ढाई रुपया

हिन्दू मुसलिम एकता 19 9 150 ती दाम बारह आने हिलाहार पानधीं के बलिदान से सबक

पंजांब हमें क्या सिखाता है क्रीमत चार बाने बंगाता और उससे सबक

क्रीमत दो जाने

145 महोगेज उचाहाबाद

پر پر ہو طرح کی کتابیں ملنے کی بڑا کیندر۔۔۔باٹھک ھندی انگریزی کی می پسند کتابوں کے امیں لکھیں .

هماری نئی کتابیں مهاتما گاندهی کی وصیت (هندی اور آردو میں) لیمک گاندهی واد کے مالے جالے ودوان: سورکی شری منظر علی سوخته منحے 225 تیبت در رویه

كاندهى بابا

(بحچوں کے لئے بہت دلحیسپ کتاب)
لیکھکا۔۔۔قدسیہ زیدی
بھوہکا۔۔پنڈت جوانفر الل فہرو
موٹا گانڈ موٹا ٹائپ ، بہت سی رنگین تصویریں
دام دو روپیہ
۔:د:۔۔۔

پندت سندرال جی کی لئمی کتابیں گیتا اور قران 375 صنحہ دام تعاثی رریعہ هندو مسلم ایکتا 100 منحہ دام بارہ آنے

ائما کاندھی کے بلیدان سے سبق تیس بارہ آنے

بنجاب همیں کیا سکھاتا ھے نست چار آئے بنگال اور اس سے سبق نست سالے،

3th or 15th 3th 18th

اگذا طر کئے ادآباد

- (2) परिया और अफ़ीक़ा की सरकारे यू० पत० ओ० की आने बाली जनरल एसम्बली के सामने यह तजबीज पेश करें कि इन तजरबों को बिना किसी शत के बन्द करके एक पेसे समफ़ीते की तरफ क़दम उठाया जावे जिस से दुनिया की सब फ़ीजें आम तीर पर ख़त्म की जा सकें.
- (3) इस तरह के तजरबों की आगे का सब सजबीजें किनमें एनीबेंटाक एट।स्त की तजबीज भी शामिल हैं मनसूख कर दी जावें. ऐटमी शक्तियाँ, ऐटमी खड्डे बनाना और दूसरे देशों के फीजी खड्डों में ऐटमी हथियार दाखिल करना या ऐटमीसपोर्ट (Task force units) दाखिल करना बन्द कर दें.

इन परेश्यों के पूरा हो जाने से विश्व शान्ति को और राष्ट्रों की आजादी को बहुत बड़ी मदद मिलेगी. इन बरेश्यों को पूरा करने के लिये एशिया और अभीका के सब देशों को मिलकर पूरी कोशिश करनी चाहिये चाहे किसी देश के राजकाजी आदर्श या धार्मिक विचार इस मी क्यों न हों या किसी देश में कितने भी विचारों और धर्मों के लाग क्यों न रहते हों. एशिया और अभीका के बाहर के लागों का इनमें सहयाग प्राप्त करने के लिये भी हम पूरी काशिश करेंगे.

चगस्त सन् 1957

—सन्दरलान

2 ایشیا اور افزیقه کی سرکایس یو . این . او کی آلے ان جنول اسبانی کے سابقے یہ تجویز پیش کریں که اِن جوہوں کو بنا کسی شرط کے بند کرکے ایک ایسے سنجیوتے کی ایف تیم آلیایا جارے جس سے دلیا کی سب فوجیں عام طور رختم کی جا سکیں .

اس طرح کے تجوہوں کی آگے کی سب تجوہوں ہی ہی ابنی ویٹاکی آیٹالس کی تجویز بھی شامل ہے ملسونے اوری جاویں ایٹنی التم بنانا اور دوسرے دیشن کے نوجی اتوں میں ایٹنی متهیار داخل کرنا یا لیٹنی سهورے (Task Force Units) داحل کرنا بلد

اردين .

ان ادیشوں کے پورا ہوجائے سے وشو شائتی کو اور راشتروں کی آزادی کو بہت ہوی مدد ملے گی . اِن آدیشوں کو پورا کرنے کے لئے ایشیا اور افریقہ کے سب دیشوں کو مل کر پوری کوشک کرنی چاہیے چاھے کسی دیش کے راج کاجی آدرش یا دہار۔ ک وچار کچھ بھی کیوں نہ ہو یا دیش میں کانے بھی رچاروں اور دھرسوں کے لوگت کیوں نہ رمانہ ہوں . ایشیا اور افریق کے لوگت کیوں نہ رمانہ ہوں . ایشیا اور ایشیا کرنے کے لئے اللہ ہی ہم پوری کوشک کریں گے .

ــسادر الل

الست سن 1957

यसंपि मिस्र पर फ़ीजी इमला कामियाव नहीं हुआ किर मी बीच पूरव के देशों में अन्तर्राष्ट्रीय तनाव अब भी कई शकतों में बढ़ रहा है.

- (१) जाशनियों के राष्ट्रीय भावों और उनकी ऐतिहा-निक परम्पराओं के जिलाफ बोकीनावा टापुओं को जापान से अलग कर दिया गया है और उन्हें संयुक्त राज अमरीका के लिये ऐटमी अहडा बनाया जा रहा है.
- (२) संयुक्त राज अमरीका ने जारहन और अरब देशों के अन्दर के मामलों में जबरदस्ती दखल देने के लिये अपना खटा जहाजी बेड़ा लबनान के समन्दर में भेज दिया है और उस बेड़े को ऐटमी हथियारों से लैस कर दिया है.
- (३) ताईवान का टापू पीपुरुस रिपविलक आफ बाइना का एक आंग और उसके जिस्म का एक दुकड़ा है. फिर भी पेटमी मिसाइल "मेटेडीर" त ईवान भेज दिया गया. दिक स्वत कोरिया में भी लड़ाई बन्द सममौते के खिलाफ पेटमी हथियार दाखिल किये जा रहें हैं.

बड़ी-बड़ी ताकतों की युद्ध नीति ऐटमी युद्ध की तरक जा रही है. जो फीजी अबबे फीजी गुट बन्दियों की जरूरत के लिये कायम किये गए हैं उनमें अब ऐटमी युद्ध का सामान जमा किया जा रहा है और वे ऐटमी मबबे बन रहे हैं. विदेशी ऐटमी अड़ां का बनाया जाना और दूसरे देशों में ऐटमी हथियारों का दाखिल किया जाना इन देशों की स्वधीनता पर एक हमला है इससे ऐटमी युद्ध का सात्रा बदता जाता है.

पशिया और अ.फीका के किसी देश में भी नए पेटमी अड़ों का कायम किया जाना पशिया और अफ्का के सारे इलाके के लिये खतरनाक है.

शान्त महासागर में सारी एशियाई और अफ़ीक़ी कौमों की इच्छा के विबद्ध ऐटमी और हाइड्राजिन बमों के तजरबे जारी हैं.

ऐडमी शिक्तियाँ अपने इलाकों से बहुत दूर अपने को तुकसान से बचाने के लिये शान्त महासागर में यह तजुरने कर रही हैं. इन तजरनों का जहरीला असर परिया और अफ़ीका के लोगों पर पड़ रहा है. यह तजरने इसलिये किये जा रहे हैं कि करोड़ों लोगों को एक साथ कैसे जत्म किया जा सके. संयुक्त राज अमरीका अगले साल एनो नेडाक एटाल्स (Eniwetok Atoils) में एक बड़े पैमाने पर इस तरह के तजरने करने की सजनोज कर रहा है.

इव हालतों में हम पशिया और अफ़ीका के नुमाइन्दे

(1) पेटमी राक्तियाँ बिना किसी शर्त के इन तजरबां को बन्द करे.

یدیی مصر پر قربی حملہ کامیاب تہیں ہوا ہور بھی بیج برب کے دیشوں میں انتر راشتریہ تنام آپ بھی کئی شکلوں بین بود رما ہے ،

- (1) جایاتھوں کے راشائریہ بھاشاؤں اور آن کی انہاسک دوم راؤں کے حاف اوکی نارا ٹاپس کو جایان سے انگ کر دیا گیا کے اور انہیں سنیکٹ راج امریکہ کے لئے ایالی لاآ بنایا جا ھا ھے۔
- (2) سنیکت راج آمریکہ نے جارتن اور عرب دیشوں کے آندر کے معاملوں میں زبردستی دخل دیانے کے لئے اپنا چھٹا جہازی بیزالبنان کے سمندر میں بہتم دیا ہے آور اُس بیزے کو آیائی متهاروں سے لیس کر دیا ہے .
- (3) تائی وان کا ٹاپوپیوپلس ری ببلک آف چائٹا کا ایک انگ اور اس کے جسم کا ایک ٹکڑا ہے ۔ پھر بھی ایٹمی مسائل ''میٹر دیا گیا ۔ دکون کو رہا میں بھی لوائی بند سمجھوتے کے خالف ایٹمی متیبار داخل کئے جا رہے میں .

بری بری طاقتری کی یدھ نیتی ایتی یدھ کی طرف جا
رھی فے ، جو فرجی اتب فرجی گٹ بلدیوں کی ضروتوں کے
لئے قائم کئے گئے میں اُن میں اب ایتی یدھ کا سامان جمع کیا
جا رہا ہے اُور رے ایتی اتب بن رہے میں ، ودیشی ایتی اتبی
کا بنایا جانا اُرر دوسرے دیشوں میں ایتی متبیاروں کا داخل
کیا جانا اُن دیشوں کی سوادھینتا ہر ایک حمله ہے اِس سے
ایتی یدھ کا خطرہ بوعتا جاتا ہے ،

ایشیا اور افریقد کے کسی دیش میں بھی نئے ایکی اقرس کا قائم کیا جانا ایشیا اور افریقد کے سارے عاقبے کے لئے خطراناک ہے ۔

شانت مہا ساکر میں ساری ایشیائی اور افریقی قیموں کی اِچھا کے ورودہ ایٹم اور ھاندروجی ہموں کے تجربے جاری ھیں .

ایٹنی شکتیاں اپنے علاقیں سے بہت دور اپنے کو نقصان سے بچانے کے لئے شانت مہا ساگر میں یہ تجوربے کر رھی ھیں . اور تجوربی کا زھریلا اثر ایشیا اور ادریته کے لوگوں پر پڑ رہا ہے . یہ تجربے اِس لئے کئے جارہے ھیں که کروروں لوگوں کو آیک ساتھ کیسے ختم کیا جا سکے سینکت رائے امریکه اگلے سال آیلی کویلک کیسے ختم کیا جا سکے سینکت رائے امریکه اگلے سال آیلی کویلک ایٹلس (Eniwetok Atolls) میں ایک بڑے پھمائے پر اِس طرح کے تجربے کرنے کی تجویز کو رہا ہے .

اِن حالتوں موں هم ايشيا أور انويقه سے مانگ كرتے هيں ادا :

1. ایٹنی شعبان بنا کسی شرط کے اِن تجربین کو بند کویں . विचारकों से बातचीत के आधार पर कह रहे हैं. जापानी लोग साहसी हैं, नेक हैं, बहादुर हैं, मेहनती हैं, होशियार हैं, प्रेमी हैं और उन्नतिशील हैं. इस समय सारे पशिया की, अफ़रीक़ा की और दुनिया के सब स्वतन्त्रता प्रेमी भीर न्याय प्रेमी लोगों को उनके साथ पृरी हमदरदी है. हमें विर-बास है कि जापान बहुत जलदां ही किर से पृरी तरह आखाद होगा और पशिया और अफ़रीक़ा के दूसरे देशों के साथ मिलकर दुनिया के सब देशों और सब लोगों की आजादी, खुशहाली और यकजेहती को फिर से क़ाबम करने में बहुत बड़ा हिस्सा लेगा. وچاکس سه بانعا چیبت کے آدھار پر کید رضیس، جایائی ایک ساھی ھیں نیک ھیں بہادر ھیں مصنتی ھیں ھرشیار ھیں بریسی ھیں اور انتت شال ھیں ۔ اس سے سارے ایشیا کی انریقہ کے اور دنیا کے سب سونتترنا پریسی اور لیائے پریسی لوگیں کو آن یک ماتو پریس ھیدردی ہے ۔ ھیس وشواس ہے کہ جایاں بہت جادی ھی بھر سے پررس طرح آزاد عوام اور ایشیا اور انریش اور سب لوگیں کی آزادی خوشحالی اور بعجیتی کی دیشی بہت ہوا حصہ لیگا .

एशिया और अफ़ीका के प्रतिनिधियों का एलान, तोकियो 16-8-57

श्रमस्त सन् १९५७ के तोक्यो विश्व सम्मेतन में एशिया और अफ़ीका के जो तुमाइन्दे जमा हुये ये उन्हों ने मिल-कर नीचे लिखा ऐलान शाया किया.

हम परिया और अफ़ीक़ा के देशों के तुमाइन्दे जो पेटम और हाइड़ोजिन बम के खिलाफ और फीजों को खत्म कर-ने के पक्ष में तीसरे विश्व सम्मेलन के मीक़े पर तोक्यों में जमा हुए हैं नीचे लिखा पेजान शाया करते हैं.

परिशया और अम्होका की कौमों की सभ्वता बहुत प्राचीन सभ्यता है. यह कौमें अब सब की आजादी और विश्व शान्ति का एक नया युग लाने की कोशिश कर रही

सन १९५५ में एशिया और अफ़ीक़ा की २९ सरकारों के जुमाइन्दे बानबु ग कानफ़ेन्स में जमा हुए थे. उन्होंने यह प्रस्ताव पास किया था कि ऐटम और हाइक्राजिन हथि-यारों का उपयोग न किया जाम और एक देश के लोगा का दूसरे देश के लोगों पर राज करना बन्द किया जाने. इन देशों की ढेद अरब जनता का संकल्प इस प्रस्ताब के पीछे था.

हाल में परित्या और अम्बीका के देशों में कुछ देशी घटनाएँ हुई हैं जिन से इस इलाके की आजादी और शान्ति अतरे में पढ़ गई है.

ایشیا اور افریقه کے پرتی ندھیوں کا اعلان توکیو 57-2-16

اگست سن 1957 کے توکیو وشو سمیلن میں اشها اور ادریت کے جو اسائلات جمع ہوئے تھے آنہوں نے مل کو نہیچے لیا اطلن شائع کیا ۔

ھم ایشھا اور افریقت کے دیشوں کے نمائندے جو ایتم اور ھائدروجن ہم کے خالف اور نوجوں کو ختم کرلے کے پتھی میں نیسرے رشو سیان کے مرقعے پر توکیو میں جمع ھوئے ھیں نیسچے کیا اعلیٰ شائع کرتے ھیں ۔

ایشیا اور انویات کی قرمین کی سبهبتا بہت پراچین سبهبتا هے به قرمین آب سب کی آزادی دور وشو شاتتی کا ایک لیا یک لانے کی کوشش کو رہی ہے ۔

1955 میں ایشیا اور افریقہ کی 29 سرکاری کے اسائندے باتذاگ کانفرنس میں جسم میلیتے۔ آئیوں نے یہ پرسٹاؤ پاس کیا تیادہ ایم اور مافتورجی میں متیار کا آپیوٹ نہ کیا جائے اور ایک دیمی کے لوگوں کا دوسرے دیمی کے لوگوں پر راج درتا باد کیا جارے ۔ آئی دیکھوں کی تیزہ آرب جنتا کا سنکاپ ایس برسٹاؤ معجمے تیا ۔

حال میں ایفیا اور انریتہ کے دیھرں میں کچھ ایسی گلتائیں میٹیں میں جس سے اِس اعلیٰ کی آزائی اور شاتتی خطرے میں پر کئی ہے ۔

تینی خاص پرستاؤں کے پاس هو جانے کے ہمی سمیان سمارت هرئے سے پہلے ''اب اور هیرو شما تهیں هوئے دیائے''۔ ثام کا جاپائی گاتا پررہ بیس هزار آدماوں نے کھڑے هو کر برہ جرهی اور ایک آواز کے ساتھ گایا ، گاتے سمے سب ایک دوسرے کی باعوں میں باهیں قال اور زنجهرے کی طوح بلدھ هوئے تیے اور گائے کے سور میں ساتھ ساتھ سب کے سب دائیں اور بادی کو جھنتے جاتے تھے ، بالکل سمادر کی سی لیریں معاوم هوئی تھیں ، جلتا کی سنکلپ شکتی اور جوش دونوں سیما کو لائکتے هوئے دکھائی دے رہے ہے .

جاپان کی اِس باترا میں هم نے جو خاص چیز دیکھی أن مين سے ايک يه يهي تهي كه ناكا ساكي مين تهيك أس جگہ جس جگہ بارہ برس پہلے ہم گرایا گیا تھا آج ایک ہوی سندر اور اونچی پاہر کی مورای بنی موئی ہے . مورتی شاید لگ بیگ دس ذف أونجے كهمير-نماچبوترے پر بيٹهے هوئے آسور مدر هـ؛ آیک پیر نیسچے الک رها هـ دوسرا پهر بالتهی مور ہے ، ردن نکا ہے ، کوول ایک چھوٹی سی دھوتی پھور هم میں اوردی موثی کمر سے اللہی ہے ، اُس دعوتی کا ایک سرا مائیں کندھے پر ہوا ھے . دامنا ھاتھ اُوپر کی طرف اُٹھا ھوا انتاراته کے پاس کی انتا سے آسمان کی طرف آھارہ کرتا معلوم هرنا هـ . بايان هاته سيدها بهيلا هوا هـ . هليلي نيج كي طرف هے . هم نے جایانی متروں سے اِس کا مطلب پوچھا . همیں بنایا گیا که داهنا ها ته ایشور کی طرف اشاره کرتا هے اور بایاں شانتی کی طرف کہا گیا که مورتی شانتی کے اُس دیوتا کی مررای ہے جو ایشور سے سب کے بیلے اور وشو شاندی کے لئے پرانھنا كو رها هـ . مورتي كو ديكه كو بالكل مهاتما كاندهى كي ياد آجاته هـ . ماته ير تيدك بديج مين كچه ايورا هوا نشان ھے ، هم نے پرچھا به کیا ھے تو همیں بتایا گیا که هادؤں کا

جاپان میں ایک ''کاندھی پیس ایگ'' نام کی سنستہا ہیں قائم ہے جس کے ایک خاص کاریدکرتا پورینڈ شوجی مھبو ھیں جو ھم سے ملے تھے ۔

جاپان کے جاپانی جاتی کے لئے اور اور جاپانیوں سے پروم همارے دل میں بہت بڑھا ، جاپانی ایشیائی هیں ان کا رهن سہن ایشیائی هی اس میں سادیو تبویل سپری ایشیائی هی اس میں سادیو تبویل پچھلی در تین پفڑھیس کے اندر جاپان اچت سے ادھک پچھلی در تین مغربیت کی طرف بڑھ چلا تھا ، اِسی کارن پورپ کے درسرے دیشوں سے رہ کچھ کب سا گیا تھا ، لیکوں اِس کو درسرے دیشوں سے رہ کچھ کب سا گیا تھا ، لیکوں اِس میں بیہی شک نہیں کہ جاپان کو اپلی اُس غلطی کے لئے۔ اور غلطیاں هم سب سے هوتی هیں۔ سکانی سکیس ادھک ڈنڈ بھکٹنا پڑا ہے ، جاپان آج انہائے پؤرٹ ہے ، جاپان کے انک تر رچاروان لوگ پی غلطی کو بھی اُچھی طارح محسوس کر رہے جیں ، هم به جاپانی یہ غلطی کو بھی اُچھی طارح محسوس کر رہے جیں ، هم به جاپانی۔

तीनों सास प्रसादों के पास हो जाने के बाद, सन्मेलन समाप्त होने से पहले, "अब और द्विरोशिमा नहीं होने देगें"—ना का जणानी गाना पूरे बीस हजार आदामयों ने खड़े हो कर बढ़े जोश और एक आवाज के साथ गाया. गाते समय सब एक दूमरें की बाहों में बाहें शालकर जंजीर की तरह बँधे हुए थे और गाने के स्वर के साथ-साथ सबके सब हाँए बौर बाँए को मुकते जाते थे. बिलकुल समन्दर की सी आहें मासू । हाता. थीं. जनता की संकल्प शांक और जाश-दानों सामा की लाँभते हुए दिखाई दे गहे थे।

आपान की इस यात्रा में इमने जो खास की वें देखीं उनमें से एक यह भी थी कि नागासाकी में ठीक उस जगह जिस जगह बारह वर्ष पहले बम गिराया गया था आज एक बड़ी सुन्दर और ऊँची पत्थर की मूर्ति बनी हुई है. मूर्ति शायद लगभग दस फ़ुट ऊँचे खंबे-नुमा चब्तरे पर बैठे हुए बासन में है. एक पैर नीचे लटक रहा है. दूसरा पैर पालथी में है. बद्न नंगा है. केवल एक छोटी सी घोती ,पत्थर ही में ख़दी हुई कमर से लिपटी है. इस धोवी का एक सिरा बाँए क'धे पर पड़ा है. दाहना हाथ ऊपर की तरफ उठा हुआ अंगुठे के पास की डँगली से "आसमान की तरक इशारा करता मालून होता है. बाँयाँ हाथ सीधा फैजा हुना है. इथेबी नीचे की वरफ है. हमने जापानी मित्रों से इसका मतकब पृद्धा. हमें बताया गया कि वाहना हाथ ईश्वर की तरफ इशारा करवा है और बायाँ शान्ति की तरक, कहा गया कि मूर्ति शान्ति के उस देवता की मूर्ति है जो ईश्वर से सब के मले और विश्व शान्ति के लिये प्रार्थना कर रहा है. मृति को देखकर बिलकुल महारमा गाँधी की याद आ-जाती है. माथे पर ठीक बीच में कुछ उभरा हुआ निशान है. इमने पूछा यह क्या है तो हमें बताया गया कि महिन्दुओं का तिलक.

जापन में एक 'गाँधी पीस लीग" नाम की संस्था भी कायम है जिसके एक खास कार्यकर्ता रैवरैएड शौजुन भीव हैं जो इससे मिले थे.

जाना नाकर जापानी नाति के लिये बादर और जापानि तियों से प्रेम हमारे दिल में बहुत बढ़ा. जापानी एशियाई है. इनका दिल एशियाई है. इनका दिल एशियाई है. इसमें सन्देह नहीं पिछली हो तीन पीढ़ियाँ के अन्दर जापान अधिक से अधिक पिछलीयता यानी मरारवीयत की तरफ बढ़ बला था. इसी कारण पूरव के दूसरे देशों से वह इख कट सा गया था. लेकिन इसमें भी शक महीं कि जापान का अपनी इस गलती के तिये जार रालतियाँ हम सबसे होती हैं जापान आज अन्याय पिकृत है. जापान के अधिक इएड मुगतना पड़ा है. जापान आज अन्याय पिकृत है. जापान के अधिक दूसह सुरातना पड़ा है. जापान आज अन्याय पिकृत है. जापान के अधिक दूसह सुरातना पड़ा है. जापान आज अन्याय पिकृत है. जापान के अधिक दूसह सहस्य कर रहे हैं. हम यह जापानी दहाती को भी अच्छी तरह महस्य कर रहे हैं. हम यह जापानी

- (व) ''इस तरह के जज़सों की कार्रवाई सीधे या मुख-तिलक देशों की सरकारों की मारफत यू० एन० को० के पास भेजी जावे."
- (स) "इस तरह का आन्दोलन ६र देश के लोग अपने अपने ढंग से करें ताकि अधिक से अधिक जनता इस आन्दोलन में साथ दे सके".

इस प्रस्ताव में यू० एन० श्रो० की एस "हिम श्रार-मामेंट सब कमेटी" यानी '.फीज, ताइ सब-कमेटी" का भी जिकर किया गया है जो लन्दन में हो रही है, जिसमें पाँच राष्ट्र शामिज़ हैं श्रीर जिसकी यही रारज है कि इन तजरबों का बन्द किया जावे श्रीर .फीजों को खत्म करने की तरफ क़द्म बद या जावे.

दुनिया के लोगों से सिफारिश की गई है कि वह अपनी-अपनी सरकारों पर जोर दें कि वे यू० एन० ओ० जनरल एसम्बली से और लन्दन की सब-कमेटी से इस काम को प्रा करावें.

इस बात पर जोर दिया गया है कि इस बारे में सब देशों और सब क़ोमों को मिलकर काम करना चाहिये, खास-कर:—

- (1) दुनिया के साइन्सदानों ने इस बारे में जो खोज की है उसके नतीजों को सब देशों में फैलाया जावे और जहाँ तक हो सके जलदी साइन्सदानों की एक अन्तर राष्ट्रीय बैठक की जावे.
- (2) सब देशों के धार्मिक नेताओं, कियों, विद्यार्थियों, मजदूरों, मझियारों, किसानों वर्रो रह से सिकारिश की गई है कि वह इस नेक और जरूरी काम के लिये दूसरे देशों के इसी तरह के लोगों के साथ मिलकर काम करें.

इस प्रस्ताव में पशिया और अकरीका के देशों और शान्त महासागर यानी पैसिकक आंशन के किनारे के लोगों से खास तौर पर सिकारिश की गई है कि वह इस काम के लिये मिलकर खड़े हा जाएं "क्योंकि हाल में इस तरह के जो तजरने हुए हैं वह अधिकतर इसी इलाक़े में हुए हैं और इसी इलाक़े में ऐटम और हाइड्रोजिन हथियार अधिकतर दाखिल किये जा रहे हैं. खासकर ओकीनावा, कोरिया और दूसरी जगहों के .फौजी अडडों में ऐटमी युद्ध की तैयारीयाँ जारी है."

"हम इस बात को भी जरूरी सममते हैं कि इन मक्तसदों को पूरा करने के लिये जहाँ तक हो सके जलदी इसरी अफरोक्ता-पशियन कानफरेन्स की जावे.

इस प्रस्ताब के आखीर में उन लोगों की मदद के लिये भी अपील की गई है जिन्हें इस तरह के बमों और तजरबों से नक्तसान पहुँचा है. بست الس طرح کے جلسوں کی کاروائی سیدھ یا مختلف ذیشوں کی سرکاروں کی معرفت یو ۔ اُبن ۔ او کے پاس بیبجی جائے .

سے"اِس طرح کا آندولن ہر دیش کے لوگ اپنے اپنے آئی تمال سے کریں تاکم ادھک سے ادھک جنتا اِس اندولن میں باتیہ دے سکے" .

اِس پرستاؤ میں یو . این . او کی اُس 'تس آرماست سب کدتی'' یعنی قوچ ترز سب کمیٹی'' کا بھی ذکر کیا گیا ہے جو لندن میں هو رهی ہے' جس میں پانچ راشٹر شامل هیں اور جس کی یہی فرض ہے که اُن تجربوں کو بند کیا جارے اور نہوں کر ختم کرنے کی طرف قدم بڑھایا جارے .

دنیا کے لوگوں سے شغارش کی گئی ہے که وہ اپنی اپنی سرکاروں پر زور دیں که وے یو این ، او کی جنرال اسمبلی سے اور لندن کی سب کمیٹی سے اِس کام کو پررا کراویں ،

اِس بات پر زور دیا گیا ہے که اِس بازے میں سب دیشوں اور سب قوموں کو مل اور کام کرنا چاملے کاس کر:

1. دنیا کے سائنسدانوں نے اِس بارے میں جو کورے

کی ہے اُس کے نتیجوں کو سب دیشوں میں پھیالیا جوے اور
جہاں تک عو سکے جلدی سائنسدانوں کی ایک انتر راشتریہ ر
بیتھک کی جارے ،

2. سب دیشوں کے دھارمک نیفاؤں' استریوں' ودیارتھوں مزدرروں' معجیهاروں' کسانوں وغیرہ سے شفارھی کی گئی ہے که وہ اِس نیک اور ضروری کام کے لئے دوسرے دیشوں کے اِسی طوح کے لوگوں کے ساتھ مل کو کام کریں:

اِس پرستاؤ میں ایشیا اور افریقہ کے دیشوں اور شائتی مہاساگر یعنی پیسفک اُرشن کے کنارے کے لوگوں سے خاص طور پر شنارش کی گئی ہے کہ رہ اِس کام کے اُئے مل کر کرتے ہو جائیں کیونکہ ''حال میں جو اِس طرح کے تعجربے ہوئے ہیں وہ ادھک تر اِسی علاقے میں ہوئے ہیں اور اِسی علاقے میں ایٹم اور هائقروجن ہتھیار ادھک تر داخل نئے جارہے ہیں ، خاص کو اور مارا آکوریا اور دوس ہی جکہرں کے فوجی آدوں میں ایٹمی یدھ کی تیاریاں جارہے ہیں'' ،

ورهم اس بات کو بھی ضروری سنجھتے ھیں که هم مقصدوں کو پر اکرنے کے لئے جہاں تک هو سکے جلدی دوسری افریکه - ایشین کانفرنس کی جارے ۔''

اِس پرمتاؤ کے آخر میں اُن لوگوں کی مدد کے اٹی بھی اپیل کی گئی ہے جنہیں اِس طرح کے ہموں اور تجربوں سے نقصان بہنچا ہے ۔

इस अपील में लिखा है कि "दुनिया के सब लोग इस बात के लिये उत्सुक हैं कि क़ौमों-क़ौमों के बीच तनाव घटे, दुनिया की कीजें खत्म हों और ऐटम और हाइट्रोजन बम द्धत्म हों".

इसके लिये सब से पहली जरूरत इस बात की बताई गई है कि "ऐटम और हाइड्रोजिन बमों के तजरबे .फीरन बन्द किये जावे". क्योंक "इन तजरबों से ऐटम और हाइड्रोजिन हथियारों की दौड़ तेज होती जा रही है, और दुनिया के लोगों के स्वास्थ्य का खतरा बदता जा रहा है".

इसके बाद इस अपील में कहा गया है कि 'जापान केलोग तीन बार इन बमों की बरवादी बरदाश्त कर चुके हैं, इसलिये सब महाद्वीपों के नुमाइन्दों के साथ मिलकर हम, जिनमें हिरोशिमा और नागासाकी के जलामी लाग भी शामिल हैं, संयुक्त राष्ट्र संघ से और दुनिया की सरकारों से यह मांग करते हैं कि:

'अमरीका, इंगलैंड और सोवियत रूस .फीरत और बिना किसी शर्त के आपस में यह समभौता करें कि ऐटम और हाइड्रोजिन बम के तजरबे बन्द कर दिये जावें.

"इस तरह का सममौता कराने में यू० एन० घो० अपनी पूरी ताक़त लगा दे.

और "दुनिया की सरकारें इस तरह का सममौता कराने की हर तरह से कोशिश करें"

अन्त में कहा गया कि:— ''इस तरह का सममौता हांजाने से पेटम और हाइड्रोजन बमों का बनाना, जमा करना और काम में लाना भी बन्द हो सकेगा और आम तौर पर फ़ौजों के खत्म करने के लिये रास्ता साफ हो जायगा".

श्रीर "उन सब लोगों के नाम पर जो दुनिया की शान्ति श्रीर खुशहाली चाहते हैं, यू० एन० श्रो० से श्रीर दुनिया की सरकारों से श्रपील करते हैं कि वह हमारो श्रावाज की तरक ध्यान दें".

तीसरे प्रास्ताव में ऐटम और हाइड्रोजिन बम को बन्द कराने और दुनिया की फ़ौजों का खत्म कराने के लिये दुनिया के सब लोगों से मिलकर काम करने की सिकारिश की गई है.

इस प्रस्ताव में कहा गया है कि "यू० एन० ओ० की जनरल ऐसम्बली पर जोर डालने के लिये और तीनों ऐटमी देशों से इन तजरबों को बन्द कराने के लिये दुनिया के लागों का नीचे लिखे काम करने चाहिये:

(श) 'शक्तूबर श्रीर नवम्बर के महीनों में तारी खें मुक्तरेर करके जलसे बरौरह करके यह माँग की जावे कि इन तजरबों को फीरन श्रीर बिना शर्त के बन्द किया जाय." ﴿ أِسَ أَيْدُلُ مِينَ لَهُا هِ كَدُرُ دَنِيا كَ سَبِ لَوَكَ أِسَ بَاتَ لَكُ أُسَكَ عَيْنَ كَهُ قُومُونَ كَ بِيعٍ تَنَاوُ كَهِنَّهُ دُنِيا كَى فَرِهِ اللَّهِ أَنْسَكَ عَيْنَ كَا قُومُونَ كَ بِيعٍ تَنَاوُ كَهِنَّهُ دُنِيا كَى فَرِهِ فَيْنَ عَيْنَ عَلْنَ عَيْنَ عَيْنَ عَيْنَ عَيْنَ عَيْنَ عَيْنَ عَيْنَ كُمْ عَيْنَ عَيْنِ عَيْنَ عَيْنَ عَيْنَ عَيْنَ عَيْنَ عَيْنَ عَيْنَ عِيْنَ عَيْنَ عَلْنَ عَلِي عَيْنَ عَلْنَ عَيْنَ عِيْنَ عَيْنَ عَلَيْنَ عَلِي عَلْنَ عَلْنَا عَلَيْنَ عَلِي عَلْنَ عَلِي عَلْنَا عَلِي عَلْنَا عَلَيْنَ عَلِي عَلْنَ عَلْنَ عَلْنَا عِي عَلْنَ عَلْنَ عَلْنَ عَلْنِ عَلْنِ عَلْنَ عَلْنَ عَلْنَا عِي عَلْنَ عَلْنَ عَلْنَ عَلْنَ عَلْ

اِس کے لئے سب سے پہلی ضرورت اِس بات کی بتائی گئی ہے که '' ایتم اور هاندروجن بموں کے تجربے نوراً بند کئے جائیں۔'' کیونت تعجرہوں سے ایتم اور هائدروجن هنهیا وں کی درج تیز هوتی جا رهی ہے' اور دنیا کے لوگوں کے سوانے کو خطرہ بومتا جا رها ہے ''

اِس کے بعد اپیل میں کہا گیا ہے کہ جاپان کے لوگ تین بار اِن بموں کی بربادی برداشت کو چکے هیں اِس لئے سب مہادیهوں کے نمائندددوں کے سانھ مل کر هم جن میں هیروشما اور نماکا ساکی کے زخمی لوگ بھی شامل هیں سنکیت راشڈر سنکھ سے اور دنیا کی سرکاروں سے یہ مانگ کرتے هیں که:

''امریکت انگلینڈ اور سویٹ روس فوراً اور بنا کسی شرط کے آپس میں یہ سعجھوتا کریں کہ ایٹم اور مائڈروجی ہم کے تجربے بند کو دئے جاریں .

' اِس طرح کا سمہجوتا درائے میں یور این. او اپنی پوسی طاقت لگا دے .

اور الدندیا کی سرکاری اِس طرح کا سمجھوتا کرائے کی ہر طرح سے کوشش کریں'' ،

أنت میں کہا گیا ہے کہ :—"اِس طرح کا سمجھونا عوجانے سے ایٹم اور ھائڈروجی ہموں کا بغانا' جمع کرنا اور کام میں لانا بھی بند ہو سکے کا اور عام طور پر فوجوں کے ختم کرنے کے لئے راستہ صاف عو جائےگا'' ۔

ارر ''ان سب لوگرں کے نام پو جو دنیا کی شانتی ارر سب کی خوص حالی چاہتے ہیں' یو این ، او سے اور دنیا کی سرکاررں سے اپیل کرتے ہیں کر وہ ہماری آواز کی طرف دھیاں دیں'' ،

تهسرے پرستاؤ میں ایقم اور ھائقروجن ہم کو بلد کرائے اور دنیا کی فوجوں کو ختم کرائے کے لئے دنیا کے سب لوگوں سے مل کو کام کرائے کی سفارھی کی گئی ہے ۔

اِس پرساؤ میں کہا گیا ہے که "یوه این ، اوه کی جنرل اسبلی پر زور قاللے کے لئے اور تینو ایٹی دیشوں سے اِن نجوبوں کو بلد کوالے کے لئے دنیا کے لوگوں کو نیچے لئے کام کونے چاعلے ،

انف و التوبر اور نومبر کے مہمنوں میں تاریخیں مقرر کرکے جلسیا وغیرہ کرکے یہ مانگ کی جارے که اِن تجربوں کو فرا اور بنا شرط بند کیا جائے .

तोक्यो सम्मेलन के आख़िश कैंसले भी दुनिया के लिये बहुत हो अधिक महत्व के थे. 16 अगस्त सन् 1957 का कम से कम बीस हजार जनता की मीजूदर्गः में सम्मेलन में तीन प्रस्ताव एक राय से पाम हुए. प्रस्तावों के पास हान के समय जनता का जाश देखन ही की चीज थी.

पहला प्रस्ताव सम्मेलन की तरफ से एक एलान के रूप में था जिसे 'ता म्यो का एलान' कहा गया. इस एलान के अन्दर सम्सलन में शामिल होने वाले सब देशों के सब प्रतिनिधियों का एक उद्देश्य 'एटमी युद्ध की सब तैयारियों का खत्म करना' बनाया गया है. और यह मांग की गई कि:—

- (1) ''जो सरकारें इस तरह के बमों के तजरबे कर रही है वे आपस में एक तरह का सममौता करें जिससे ऐटम और हाईड्रोजन बमों के तजरबे कौरन और बिना किसी शर्त के बन्द कर दिये जावें''.
- (2) 'ऐटम और हाइड्रोजिन हथियारों का बनाना, जमा करना और काम में लाना बिल्क्षल बन्द कर दिया जाने".
- (3) 'जिन राष्ट्रों के पास इस तरह के हथियार हैं वह किसी दूसरे देशों में इन हथियारों को हरागज दाख़िल करने न पावे''.
- (4) "आम तौर पर सब देशों की फौजें खतम कर दी जावें श्रीर इस काम पर इस तरह की निगरानी रहे जिसे सब देश मन्जूर कर लें, यदि इस तरह सारी फौजों का खतम करना श्रभी सम्भव नहीं है तो फिलहाल कम से कम सब देशों की फौजों को कम करने का सममौता कर लिया जावे".
- (5) ''दूसरं देशों में क्रीजी अड्डे क्रायम करने और उन्हें बदाने के इम खिलाफ हैं".
- (6) "हम इस बात को सममते हैं कि सब अलग-अलग फीजी दलों और अखाड़ों को एक साथ तोड़ देने से, सब फीजी अड्डों को खत्म कर देने से और सब दूसरे देशों से अपनी-अपनी फीजीं को हटा लेने से ऐटमी युद्ध का खतरा कम हो जानेगा"

इसके बाद इस एलान में एक ऐसे भविष्य की मांग की गई है जिससे हिरोशिमा और नागासाकी के शहीदों की आत्माओं का शांत्त मिले. और "हर तरह के युद्ध को नाजायज क़रार दना और बन्द कराना "अपना आखरी मक़सद" बनाया गया है.

दूसरा प्रस्ताव "संयुक्त राद्भ संघ यानी यू० एन० खो० और दुनिया की सरकारों के नाम एक अपाल" की शक्ज में है, توکیو سمیان کے آخری فدصلے بھی دلیا کے لئے بہت عی ادعک مہتو کے تھے ۔ 16 اگست 1957 کو کم سے کم بیس ہزار جنتا کی موجودگی میں سمالی میں تھی پرستاؤ ایک رئے سے پاس ہوئے ، پرستاؤ کے پاس عودے کے سمئے جنتا کا جرش دیکھنے کی چدز تھی ،

بہلا پرستاؤ سمیلی کی طرف سے ایک اعلان کے روپ میں تھا جسے قتو ذیو کا اعلان کہا گیا ۔ اِس اعلان نے اندر سملی شمل ہوئے والے سب دیشوں کے سب پرتی ندھیوں کا ایک ادبھی 'آیا می یدھ کی سب ترایوں کو ختم کرنا' بتایا گیا ہے' اور یہ مانگ کی گئی که ہے۔

- (1) ''جو سرکایں اس طرح کے ہموں کے تجربے کو رھی خیں وے آپس میں ایک اِس طرح کا سمجھوتا کریں جس سے ایٹم اور ھانڈروجن ہموں کے تجربے فوراً اور بنا کسی شرط کے بند کر دیئے جاویں ۔''
- (2) "ایقم آور هاندروجن هنهیارون کا بنانا جمع کرنا آور کا مین لانا بالکل بند کر دیا جارے ."
- (3) روجن راشقررں کے پاس اِس طرح کے متھیار ھیں وہ کسی دوسرے دیشوں میں اِن ھتھیاروں کو ھرگز داخل کرنے نم پاریں .
- (4) دعام طور پر سب دیشوں کی فوجیں ختم کو دی جاویں اور اِس کام پر اِس طرح کی فکرانی رہے جسے سب دیش منظور کر لیں' یدی اِس طرح ساری فوجوں کا ختم کرنا اُبھی سمبھو فہیں ہے تو فی التحال کم سے کم سب دیش کی دوجوں کو کم کرنے کا سمجھونا کر لیا جارے ۔''
- () ''دوسرے دیشوں میں فوجی آتے قائم کرنے اور اُنھیں بڑھائے کے م خلاف ھیں ۔''
- (6) "هم إس بات دو سمجهتم هيں كد سب الك انگ فرجى داوں اور اكهاؤں كو ايك سابه قرر دينم سه سب نوجى انس ختم در دينم سے اور سب دوسرے ديشوں سے اپنى فوجوں كو عقا لينم سے ايقمى يدھ كا خطرہ كم هو جائيگا ."

اِس کے بعد اِس اعلان میں ایک ایسے بھوش کی مانگ کی گئی ہے جس میں ھیروشما اور ناکا ساکی کے شہدوں کی آساؤں کو شانتی ملے اور ''ھر طرح کے یدھ دو ناچائو قرار دینا اور بند کوان ''اپنا'' آخری مقصد بنایا گیا ہے ۔

دوسرا پرسکاؤ اسفہوکت راشتر سنکی یعلی ہو۔ ایس او اور نہا کی سردکارس کے نام ایک اپیل' کی شکل میں ہے۔

Additional property of their

, - · · · ,

टापू के मिछहारों के नुमाइन्दे भी थे. इल जापानी नुमा-

दस दिन के सम्मेलन में पहले अलग्न्यलग व्यवसाय के लोगों की अक्षग-अलग सभाएँ हुई, जैसे धामिक लागों की सभाएं, साई-सदानों की समाएं, वकीलों की समाएं, ट्रेड्यूनियनिस्टों की सभाएं, माताओं की सभाएं वहीरह. सब ने अपने-अपने टिव्टकोख और अपने-अपने ढंग से सम्मेलन के उद्देशों का समर्थन किया, और अपने-अपने बयान लिखकर बड़े सम्मेलन के सामने पेश किये. इन सभाओं के अन्दर और सम्मेलन के आन्दर बहुसे बहुत ही दिल खोलकर और सकाई के साथ हुई जा देखन के काबिल चीज थी.

सम्मेलन के प्रस्ताओं और उसके अन्तर राष्ट्रीय राज-काजी प्रभाव से हटकर केवल यह एक बात ही बड़ी अच्छी कीमती और गहरा असर रखने वाली थी कि सम्मेलन के अन्दर तागभग दा सप्ताह ,तक सब देशों के अच्छे से श्रद्धे लोग जिन में सब धर्मी, सन नसलों श्रीर रंगों के, गोरं, काले, पीले, भूरे, और लाल सब तरह के लोग शामिल थे. रात दिन पूरी बेतकल्लुफी के साथ एक दूसरे से मिलते-जुलते साथ खाते वीते और खुलकर बातें करते रहे. साफ दिखाई देता था कि ये लांग अपने को इस देश या उस देश के नागरिक न समभकर, श्रीवश्य के नागरिक समभ रहे हैं, सम्मेलन के अन्दर और उसके चारों और के बाता-वरण में एक नई मानवता जन्म लेती हुई दिखाई दे रही थी, अपने-अपने राष्ट्रों के अलग-अलग दृष्टिकां मा थे, अलग-अलग बहरों भी थीं, लेकिय इन सब के अन्दर से यह साफ चमक रहा था कि आखिर में सारा मानव समाज एक कुटुम्ब है, उसे एक कुटुम्ब ही की तरह रहना होगा, और उसकी व्यापक अन्तरात्मा, उसकी इन्तहाई रूइ, एक कुदुम्ब की तरह रहने के लिये बेचैन है.

इस समय दुनिया में दो ही खास संगठन ऐसे हैं जिन-में सब देशों के लाग मिलकर बैठते हैं और सब के भिले-जुले हित की बातें सो बते हैं—एक संयुक्त राष्ट्र सङ्गठन यानी यू० एन० श्रो० श्रीर दूसरे इस तरह के शान्ति सम्मे-लन. फरक यह है कि संयुक्त राष्ट्र सङ्गठन में श्रधकतर सरकारों के नुमाइन्दे होते हैं. उन ६ मिलने में एक अपरीपन, थांड़ी बहुत बनाबट, कायदों की पाबन्दी श्रीर कुछ एहति-यात श्रीर संकाच कुद्रती है. जबकि इस तरह के मम्मेत-नों में जनता श्रीर जन संस्थाओं के नुमाइन्दे हांते हैं जिनमें जान्तों की काई पाबन्दी नहीं होती श्रीर लांग कहीं ज्यादा दिख खोलकर मिलते-जुलते श्रीर बिचारों का श्रादान-प्रदान कर सकते हैं श्रीर करते हैं. گاہو کے معجدہاروں کے نمائندے بھی تھے · کل جاہانی نمائندوں کی تعداد لگ بیگ جار عزار نمی .

فیس میں کے سمیان میں پہلے آگ آگ بیاسائے کے لوگوں کی انگ الگ سبھائیں ہوئیں' جیسے دھارسٹ لوگوں کی سبھائیں' سائنس دانوں کی سبھائیں' ونیلوں کی سبھائیں' ستیتیو نیڈسٹوں کی سبھائیں وغیرہ میں نے اپنے اپنے درشتی کوڑں اور اپنے تھنگ سے سمیان کے آدیشوں کا سمرتھی کیا' اور اپنے اپنے بھاں انموکر ہوسمائی کےساملے پیش کئے ۔ این سبھاؤں کے اندر اور سمیلن کے اندر بحدثیں بہت ھی دال کورل کر اور صفائی کے ساتھ ہوئی جو دیکنے کے قابل چیز کھول کر اور صفائی کے ساتھ ہوئی جو دیکنے کے قابل چیز

سمیلن کے پرستاؤں اور اُس کے انترراشقریہ راج کلجی پربهاؤ سے هٹ کر کيول يه ايک بات هي بري اچهي، قيدتي اور گہرا اثر رکینے والی تھی که سمیلن کے اندر لگ بھگ دو سهداة تك سب ديشوں كے أچهے سے أچهے لوگ جن ميں دھرموں' سب نسلوں اور سب رنگوں کے کررے' کالے' یعلے بھورے ارر ال سب طرح کے لوک شامل تھے رات دین پیرے مِتكلفی کے ساته ایک دوسرے سے ملتے جلتے سابھ کیاتے پیٹے کیل کر ہاتیں گرتے رہے ، صاف دیکھائی دیٹا تھا ته یہ لوگ اپنے کو اِس دیمس یا اُس دیش کے ٹاگرک ته سمجھ کرا وشو نے ٹاگرک سمجھ رہے ھیں ، سمیلی کے اندر اور اس کے چاروں اور کے واناورن میں أيك نئى مانوتا جنم ليتى هوئى دكهائى دے رهى تهى . إينے لینے راشتروں کے انگ انگ درشتی کورں بھی تھ' انگ انگ پحثیں بھی تھیں . لیکن اِن سب کے اندر سے یہ صاف چمک رها تها كه أخر مين سارا ساب ساج ايك تقديه هـ؛ أحد ايك نقمبه هی کی طرح رهد هوگا، اور اس کی ویایک ابتر آنما، اُس کی اجامعی روح' ایک تامیه کی طرح رعنم کے لئم ي چين ه

اِس سمے دنیا میں دو هی خاص سنگتین ایسے هیں جن میں سب دیشوں کے اوگ مل کر بیٹیتے هیں اور سب کے ملے جلے هت کی باقیں سوچتے هیں۔ایک سنوکت رائٹر سنگٹین یعنی یوہ این، او اور دوسرے اِس طرح هے کے شانٹی سمیلن ، فرق یه هے که سلیوکٹ رائٹری سنگٹین میں ادعکٹر سرکاروں کے نمائلنے هوتے هیں ، اُن نے ملنے میں ایک اُوپری پن بھوڑی بہت بناوٹ فاعدوں نی پابندی اور کچھ احتیاط اور سنکوچ قدرتی هے ، جب که اِس طرح نے سمیلنوں میں چننا اور جن سنستھاؤں کے نمائلنے هوتے هیں جن میں ضابطوں که کوئی یابندی نہیں هوتی اور لوگ کہیں زیادہ دل کوئی کر ملتے جاتے اور چاروں کا اُدان پردان کر سکتے هیں اور کرتے هیں ۔

कर कई दरजन बड़े-बड़े और सैकड़ों छोटे-छोटे अड्डे हैं. श्रोकीनावा जैसे जापान के टापुओं पर तो अमरीका का पूग की ती कवजा है. मन् 1 + में हिरोशिमा और नगमा ी पर बर पड़ने के बाद जापान की अमरोका के साथ जो मान्ध करनी गई। थे। उसमें छुटकारा पान के लिये और अपने देश का फिर से पूरी तरह आजाद करने के लिये जापानी पूरी कोशिश कर रहे हैं. कुद्रती तौर पर जापान की इस समय की अन्तर राष्ट्रीय नीति भी पूरी तरह आजाद जापानी नीति नहीं समभी जा सकती.

लगभग तीन सप्ताह जापान में रहकर हमने वहाँ के अनेक नगरों जैसे तोक्यो, कामाकुरा, यांकाहामा आदि में और अनेक बड़े-बड़े जलसां में इन अमरीकी जकड़बांन्द्यों के खिलाफ जापानी जनता और खासकर जापानी नी-जवानों के असन्तोप और उनकी तड़प को अच्छी तरह देखा है. जापानी लोग बहुत धीर, गम्भीर, हद दरजे के मेहनती और बहादुर हैं. जाहिर है इन गुणों के सामन अमरीकी जकड़बन्दी और यह अन्तर राष्ट्रीय अन्याय बहुत देर तक नहीं ठहर सकते. सवाल केवल समय का है.

शायद इस परवशता ही के कारण सम्मेजन के अन्दर कुछ देशों के जुमाइन्दों के आने में भी दिक्कतें पेश आई'. खासकर नए चीन और रूस के जुमाइन्दों का हजाजत (विजा) मिलने में बड़ी कठिनाई हुई. एक बार ता ऐसा लगता था कि शायर इन देशों के जुमाइन्दे सम्मेजन में भाग न ले सकें. लेकिन फिर किसी तरह जूं तूं कर मामला हल हुआ. चीन और रूस के जुमाइन्दे समय पर भाग लेने के लिये सम्मेजन में पहुँच सके. मंगालिया के जुमाइन्दे सम्मेजन समाप्त होने से ठीक एक दिन पहले पहुँचे. कुछ पुर्वीय योरप के देशों के नुमाइन्दे आखीर तक भी नहींपहुँच सके.

फिर भी तोक्यो सम्मेलन खासा जबरदस्त और सार्व-देशिक सम्मेलन था. अमरीका, इन्गलैन्ड, फ्रान्स, पूच जरमनी, पिछम जरमनी, आसट्रीया, हालैन्ड, फ्रान्स, पूच जरमनी, पिछम जरमनी, आसट्रीया, हालैन्ड, फ्रान्स, मांगोलिया, चीन, मिस्र, भारत, शंका, बरमा, आसट्रेलिया, न्युजीलैन्ड, फिलिप्पाइन, इन्डोनेशिया, इन्डोचाइना, पेरु, पोलैन्ड, रामे नथा. चीकास्लोवाकिया, थाइलैन्ड, कोरिया, पुर्तगाल, वैनजुला आदि लगभग तीस देशों प्रथ्वी के पाँचों महाद्वापो और दुनिया भर की अनक सार्वजनिक संस्थाओं और अन्तर राष्ट्रीय सगठनों के नुमाइन्दे सम्मेलन में शामिल थे. इन नुमाइन्दों में बीद, शानता, ईसाई, मुसालम, यहूदा, और इन्दू सब धर्मों के मानने वाले, बड़े-बड़े इनाइ पादर्रा और बाद्ध महन्त, राजनीतक नता, प्राक्तेमर, खाक्टर, वकील, लेखक, पत्रकार दुनिया की पार्लमटा के मेम्बर मांजूद थे. जापान के नुमाइन्दों में हिराशिमा और नागासाकी के घायल लोगों के नुमाइन्दो और विकिनी

کو کئی فارجوں اور اور سیکورں چھوٹہ چھوٹہ اللہ اللہ عیس ، اوکھناوا جیسہ جادئی کے تابہوں پر امریکنکا پر ایفناوا جیسہ جادئی کے تابہوں پر امریکنکا پر ایم پرنے کے بعد جاپان دو امریک کے ساتھ جو سندھی کوئی پری تھی اس سے چھتکارا ہائے کے لئے جاپائی پوری کوشش کو پھر سے پوری اطرح آزاد کرنے کے لئے جاپائی پوری کوشش کو بھر سے پوری طور پر جاپان کی اِس سے کی افترراشتریک بھی پوری طرح آزاد جاپائی نیتی کی افترراشتریک بیتی بھی پوری طرح آزاد جاپائی نیتی کی افترراشتریک بیتی بھی پوری طرح آزاد جاپائی نیتی کی

لگ بھگ تین سپتاہ جاپان میں رہ کر ھم نے وھاں انیک ناروں جیسے موکیو' کامانورا' یادوعاما ادبی میں انیک ہوت ہوت جاپانی میں ان امریکی جکڑبلدیوں کے خلاف جاپانی جنتا اور خاص در جاپانی نوجوانوں کے آمنتوش اور اُن کی نوب کو اچھی طرح دیکھا ھے ، جاپانی لوگ بہت 'دھھو' گبھیر حد درجے کے متحنتی اور بہادر ھیں ، ظاھر ھے کہ اِن گبری کے سامنے امریکی جکڑ بادبی اور یہ انترراشٹریہ انیائے بہت دنوں نک نہیں 'پہر سکتے ، سوال کیول سے کا ھے .

شاید اِس پروشته هی کے کارن سمیلن کے اندر کچے دیشوں کے نمائلدوں کے جانے میں بھی دقتیں پیش آئیں ۔ خاص کو نئہ چین اور روس کے نمائندوں کو اجازت (ویزا) ملنےمیں بڑی کھنائی ہوئی ۔ ایک بار تو ایسا لکتا تھا که شاید اِن دیشوں کے نمائلدے سمیلن میں بھاگ نته لے سکیں ، لیکن پھر کسی طرح جھوں تھوں کر معامله حل عوا چین اور روس کے نمائندے سے پر بھاگ لھانے کے لئے سمے پر سمیلن میں پہوچ سکے منازلیا کے نمائیدے سمیلی سمانی سمانی میں پہوچ سکے منازلیا کے نمائیدے سمیلی سمانی کے دیشوں کے نمائندے آخر تک بہی نہوں پہلچے ہیں۔

پهر بهی نو کیو سمیای خاصه زبردست اور سارودیشک سمیان امریکه انکلیات فرانس پورو جرمنی آستریا هائینده ررس ملکولیا چهن مصو بهارت لغکا برما آستریلیا نیوزی این ملکولیا چهن مصو بهارت لغکا برما آستریلیا نیوزی این ملکولیا تهری اندوپائیا پدرو پولیند رمانیا چیکو سوواکیا تهائی ایند کوریا پرتکال ونیزولا آدی لگ بهگ تیس دیشون پرتهری کے دانچون مهادیهون اور دنیا بهر کی اندک سرجفک سنستوای اور افتر راشتریه سائتهای کونما مدے سمیلی میں شامل تھی اور افتر راشتریه سائتهای کونما مدے سمیلی بهردی اورهده سب دهرمی کے مائد والد بردے بدے عیسا یا بی بهردی اورهده سب دهرمی کیمانی ورونیسر قائم والد برے بیاری باری باری باری کیمان کی ادامانین کیمان کیمان کیمان کیمانی کیمان کی



ऐटम और हाईड्रोजन वम के खिलाफ़ तीसरा विश्व सम्मेलन

ایتم اور ھائیتروجن بم کے خلاف

تيسرا وشو سميلن

ऐटम और हाई ड्रांज बमों से सब से अधिक नुक्रसान अभी तक जापान को उठाना पड़ा है. कु दरती तौर पर जापान में ऐटम और हाई डोजन बम के खिला और .फौजें कम करने के हक में एक जापान कौंसिल' है. इस कौनिसल की तरफ से जापान के अन्दर दो विश्व सम्मेखन पहले हो चुके हैं. तीसरा विश्व सम्मेखन तोक्यों 6 अगस्त सन् 1957 से 16 अगस्त सन् 1957 तक हुआ.

सम्मेलन की तैयारी के लिए 'तैयारी कमेटी' (पिपेरेटरी कमेटी बनाई गई थी, जिनमें दुनिया के लगभग सा देशों के थांड़े-थांड़े आदमी शामित थे और जिसकी बैठकें ता-क्यों में कई सप्ताह पहने से हाती रहा. इन्गलैंन्ड अमरी-का, आसट्रेलिया, फान्स, चीन, भारत, लका, बरमा आदि अनेक देशों के नुमाइन्दे इस तैयारी कमेटो में शामिल थे.

तैयारी कमेटी के एक मेम्बर की हैसियत से हम भी 28 जुलाई को पहुँच गए थे.

जापान की जनता और वहाँ की सरकार दोनों ऐटम और हाईड्राजन बम के तजरवों के सखा खिलाफ़ हैं. वह दिल से चाहते हैं कि हर तरह के सर्वनाशक हथियारा का बनना और काम में लाया जाना क़ानू । बन्द कर दिया जावे और इस तरह के बमों के जा ढेर कुछ देशां ने जमा कर रखे हैं उन्हें नष्ट कर दिया जावे. वह चाहते हैं कि दुनिया भर के देशों की कीजें धारे-और, आपसी सममाते से, कम कर दी जावें ताकि अन्त में युद्ध की सम्भावना हो दुनिया में मिट जावे. इस काम के लिये जापान के प्रधान मन्त्रा और वहाँ कीं जनता के प्रतिनिधि दोनों दुनिया भर में घूम चुके हैं और भारत भी आ चुके हैं. दुनिया के देशों में शायद जापान ही अहेला देश है जिसके विधान की एक धारा में साफ-साफ शब्दा में युद्ध का विरोध किया गया है और यह लिख दिया है कि जापान की अन्तर्राष्ट्रीय नीति युद्ध विरोधी नीति होगी.

लेकिन जापान आज बुरी तरह अमरीका के फ़ी जी शिकंजे में जकड़ा हुआ है. छंटि से जापान के अन्दर अम-रीका की स्थल सेना, जल सेना और हवाई सेना के मिला- ایتم ارر ھائدروجی ہموں سے سب سے ادھک نقصان ابھی نک جاپان کو اتبانا پرا ہے . قدرتی طار پر جاپان میں 'ایتم اور ھائیدروجی ہم کے خلاف اور فرجیں کم کرنے کے حق میں ایک جایار کونسل' ہے ایس کونسل کی طرف سے جاپان کے اندر دو وشو سمیلن ہو چکے ھیں . تیسرا وشو سمیلن توکیو میں 6 اگست سن 1957 سے 16 اگست 1957 تک ہوا .

سمیان کی فراری کے لئے ایک اتھاری کمیائی (پریوزپڑی کمیائی) بنائی گئریائی جس میں دفیاکے لگ بھگ سب دیشوں کے تھوڑے آورے آوری شامل تھے اور جس کی بیٹھمیں توکیو موں دئی سپتاہ پہلے سے موتی رھیں ، انکلینڈ امریکٹ آماریلیا فرانس چین بھارت لنکا برما آدی افریک دیشوں کے فرانس تیاری کمیائی میں شامل تھے ،

تباری کمیٹی کے ایک ممبر کی حیثیت سے هم بھی 28 جوائش کو توکیو پہنچ گئے تھے .

جائی کی جنتا اور وهاس کی سرکار دونوں ایٹم اور هائدروجن بم کے تجوبوں کے سخت خلاف هیں وہ دل سے چاہتے هیں نہ اِس طرح کے سروناشک هتیاروں کا بنذا اور کام میں لایا جانا نائوناً بند در دیا جارے اور اِس طرح کے بموں کے جو قهیر اچچ دیشرں نے جمع اور اِس طرح کے بموں کر دیا جارے ، وہ چاہتے هیں که دنیا بهر کے دیشوں کی فرجیں دهیرے ، وہ چاہتے هیں که دنیا بهر کے دیشوں کی فرجیں دهیرے ، آپسی سمجھوتے سے کم کر دی جاری فرجیں دهیرے ، آپسی سمجھوتے سے کم کر دی جاریس کے اللہ جاران کی سمبھاؤنا هی دنیاسے مس جارے اس کام دونوں دنیا بهر میں گھوم چکے هیں اور بھارت بھی آچکے هیں ۔ کونوں دنیا بھر میں گھوم چکے هیں اور بھارت بھی آچکے هیں ۔ دونوں دنیا بھر میں شاید جاران هی ایک انبلا دیش هے دیا کو ورده کیا گیا ہے اور یہ لکھ دیا گیا ہے کہ جاپان کی انبر بھر کا ورودھ کیا گیا ہے اور یہ لکھ دیا گیا ہے کہ جاپان کی انبر بھر کا ورودھ کیا گیا ہے اور یہ لکھ دیا گیا ہے کہ جاپان کی انبر بھر کا ورودھ کیا گیا ہے اور یہ لکھ دیا گیا ہے کہ جاپان کی انبر

لیکن جاپان آج ہری طرح آمریکہ کے، فوجی شکلتھے من جکوا ہوا ہے ۔ چھوٹے سے جاپان کے اندر آمریکہ کی اسٹیل سیفا جل سیفا اور ہوائی سیفا ملا

आवे तो मैं और मेरे बहुत से हिन्दुस्तानी साथी बड़ी .खुशी के साथ उसमें हिस्सा लेना चाहेंगे.

डेलिगेट बहनो और भाइयो ! आप का काम इस युग का सबसे बड़ा आध्यात्मिक काम है. हम में से हर एक पूरी अद्धा और पक्के इरादे के साथ अपने कर्तव्य का पूरा करें तो हमारी सफलता लाजमी है. آرے میں اور مورے بہت سے هادستانی ساتھی ہری خوشی کے ساتھ اُس میں حصہ لینا چاھیں گے ، قریدی میں حصہ لینا چاھیں گے ، قریدی کا قریدی کا اُس یہ ہرا اُدھیاتیک کا قد میں ایک پوری شردھا اور یکے ارادے کے ساتھ آینے کو کر تویہ کو پورا کرے تو هماری سهیلتا اور یکے ارادے کے ساتھ آینے کو کر تویہ کو پورا کرے تو هماری سهیلتا اور یکے ارادے کے ساتھ آینے کو کر تویہ کو پورا کرے تو هماری سهیلتا اُنہی ہے ،

700 PAGES,

32 ILLUSTRATIONS

2 COLOURED MAPS

"CHINA TODAY"

PRICE

BY PANDIT SUNDARLAL

Rs. 7. 8. 0

A vivid narration of the glorious and wounderful achievements of New China... A picture of China which is both convincing and authentic... the best book that has come out so far on New China i. the English language ... the most objective in approach and comprehensive in treatment.

—National Herald, Lucknow.

Highly informative...throws vivid light on conditions obtaining in that country...a book which deserve to be widely known.

—Leader, Allahabad.

Encyclopsedic...characterized by acute observation of detail as well as by. instinctive grasp of thes fundamental perspective...To read it is veritably like accompanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New Chins.

— Blitz Bombay

A mine of information which gives a picture of China as nothing else dose...the best guide to New. China...Those who would like to understand what is happeing in New China can do not better than to study it

—Bharat Jyoti, Bombay

The wealth of information it gives on China new and old...makes fascinating reading...is comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs.

—Indian Express, Madra.

China Today is an eloquent tribute to his (Pandit Sundarlal's) shrewd understanding of men and matter... brings to the lighty mighty endeavour of the Chinese People to rebuild their great nation on firm new foundations or a tomorrow which is theirs.

—Vigil, Delhi

में सहयोग देने से साफ इन्कार कर दें, बाहे इस इन्कार के लिये उसे प्राण्य ही क्यों न देना पड़े. इसी तरह हर मजदूर का और हर काम करने वाले का, जो युद्ध के सामान के बनाने या लाने लेजाने में लगा हो, यह पंचत्र कर्तन्य है कि यदि उसे इस बात का विश्वास हो गया है कि युद्ध सुरी चीज है तो इस तरह का काम करने से इनकार करदे.

हम सब यह चाहते हैं कि अपने .फैसलों पर अमल कराने के लिए हम कुछ अमली क़दम बढ़ा सकें में आप से कहना चाहता हूँ कि दुनिया के मजदूर ही दुनिया की सब सरकारों की आर्थिक और राजनीतिक नीति को असली रूप देने वाले हैं. वे यदि एक बार इस सचाई को समभ लें और अपनी शिक्त को जान जायँ तो दुनिया की कोई हाक़त मानव समाज को नए युद्ध की ओर नहीं ढकेल सकती.

जो सरकार या जो देश दुनिया की जनता की इस राय की परवाह न करते हुए इसके खिलाफ अमल करता रहे उसका आर्थिक, सामाजिक और जरूरत पड़े तो राज-नैतंक बहिष्कार यानी उसके साथ असहयाग भी एक ऐसा तरीका है जिसकी तरक सब शान्ति प्रेमियों का गम्भीरता के साथ ध्यान देना चाहिये.

अन्त में हाइडोजन बमों के नित्य नए तजरबों का बन्द कराने के लिये मेरी प्रार्थना है कि इस इतने बड़े मामले में दुनिया की अन्तरात्मा को जानने के लिये हम सब को दर तरह की .कुरबानी के लिये तैयार रहना चाहिये. हम सब का यह पवित्र कर्तव्य है. इस लिये मैं फिर एक बार अमरीका के सत्यामहियों को प्रशाम करता हैं. भारत में इम लागों ने जब यह सुना कि । करमस टापुत्रों की तरफ एक सत्याप्रही जहाज भेजे जाने की तजवीज हो रही है, तो इस में से बहुत से जैसे मेरे मैथिडस्ट दोस्त डा० जें सो कुमारपा, मेरे दास्त डा चौथ राम गिडवानी, खुद में, और बहुत से लोग उस मत्थ मह में शामिल हाने क लिये उत्पुक्त थे, अपने लिये तो मैं इस से अन्द्री किसी मीत का अनुमान ही नहीं कर सकता कि दुरनय की शान्ति के लिये में प्राण दे सकूँ. मैंने कुछ अमराही दास्तों से पूछा था कि हम म से कुछ अमरीकी सस्यामहिया के साथ शामिल हां सकते हैं या नहीं. मुकसे कहा गया कि इससे अमरीकी सत्याप्रहियों की कठिनाइयाँ और बद सकती हैं. मैं फिर जापान के, आस्ट्रेलिया के, अमरीका के और दुनिया के किसी भी हिस्से के दास्तों और साथियों से नम्रता के साथ अपील करता हैं कि जहां कहीं भी और -जब कभी भी मिलकर इस तरह के काम करने का मौका

مهى سهيوك دينے سے ماف انكار كريں ' چاھے إس انكار كريں ' چاھے إس الكار كے اللہ أسے بران هى كييں نہ دينا برے ، اسى طرح هر مزدور كا اور هر كام كرنے والے كا جو يدہ كے سامان كے بنائے يا لائے لے جائے ميں لكے هيں يہ پوتو كرتوية هے كه يدى أسے إس بات كا وشواس هو گيا هے كه يده يوى چيو هے تو ايس طوح كا كام كرنے سے انكار كو دے .

هم سب یه چاهتی هیں که اپنے نیصلیں پر عمل کوالے کے لئے هم کچھ عملی قدم اتبا سکیں میں آپ سے کہنا چاهگا هرس که دنیا کے مزدور هی دنیا کی سب سرکاروں کی ارتهک ارزاج نیتک نیتی کو اصلی روپ دینے والے هیں ، وے یدی ایک بار اِس سنچائی کو سنجھ لیں اور اپنی شکتی کو جان جائیں تو دنیا کی کوئی طاقت سماج کو نئے یدھ کی اور نبیس تھکیل سکتی ،

جو سرائر یا جو دیھی دنیا کی جنتائی اِس رائے کی پرواط نے کرتے ھوئے اِس کے خلاف عمل کرنا رہے اُس کا ارتهک سماجک اور ضرورت پڑے نو راج نیتک بہشکار یعنی اُس کے ساتھ آسپیوگ بھی ایک ایسا طریق ہے جس کی طرف سب شائحی پریمیوں کو گھیرتا کے ساتھ دھیاں دینا چاعئے .

انت میں عاندروجن بموں کے ثبت ثاب تجونوں کو بند كرالے كے لئے مدرى پرارتبذ ہے كد إس أثنے بڑے معاملے ميں دنیا کی انتر آسا دو جانئے کے المے ام سب کو ہر طرح قرباتی كے لئے بوار رهما چدئے . هم سب كا يه پوتر كردويه هے . أس لئے میں بھر ایک بار امریک کے ستداکرهیوں کو پرشام کرتا ھوں . بھارت میں عم لوگوں لے جب یہ سفا تھ کرسمس ڈادروں کی طرف ایک ستیه کرمی جهاز بیاسے جالے کی نجویز هو رهی ھے دو عم میں سے بہت کے حسے مفرے متراست دوست دي هي سي آنه يا مرب دوست دي چرته ام گدراني، و و من اور ادر بهت سے نوگ اس سالیا ، 8 میں شامل دولے کے نئے اسک ہے . اپنے نئے تو میں اس = اچم سی موت کا انومان هی نہیں کو سنتا که دنیا کی شارعی نے لئے میں ہوان دے سکوں میں لے تحج امریکی دوستوں سے پوچھا تھا دہ عم سے کنچہ امریکی ستیاگرعدوں کے ساتھ شامل هو سکتے هیں یا نہدر منجیسے کیا گیا تہ اِس سے امریکی ساتھ گرھدوں کی نقینایاں اور بڑھ سکنوں ھیں ۔ میں ،ور جاپان کے اسقریلہ! کے ا امریم کے اور دنیا کے کسی بھی دصہ کے دوستوں اور سابھیوں سے تہرتا کے سابھ ایول درہا ہوں کہ جہاں دھوں بھی اور جب تھی بھی مل کر اِس طارح کے کام کرنے کا موقعہ

रीत दिशा में है और हमारी आजकत की अधिकतर मुसी-बतों की जड़ हमारा यही रालत सुकाव है.

आत्म-संयम याना अपनी इच्छाओं को कायू में रखना और अपरिषद यानी किसी चीज का अपनी निजी सम्पत्ति न समम्प्रना यह दोनों बातें हमारे सर्वोच्च आदर्श होने चाहिये. हम मानते हैं कि दुनिया के सब लोग तब ही सुखी रह सकते हूँ जब क हर आदमी दूसरों के सुख की अधिक और अपने सुख की कम चिन्ता करे.

इससे यह भी नतीजा निकलता है कि जहाँ तक हो सके दुनिया की सब अच्छी चीजों और आम तौर पर उत्पत्ति के सब साधन समाज की सम्पत्ति होने चाहिये, न कि व्यक्ति की. इस मामले में हम कम्युनिचम के बहुत निकट पहुँच जाते हैं और हमें इसका गर्व है.

तीसरी बात यह है कि महारमा गाँधी की तालीम में सब से अधिक महत्व की चीज ''अहिंसा" है. गाँधी जी के अनुसार हर मर्द और हर औरत का यह पित्र कर्तव्य है कि वह हर अन्याय और हर बुराई का डटकर मुकाबला करें और यदि आवश्यकता हो तो इस मुकाबला करने में अपने सर्वस्त्र की बाजी लगा दे. लेकिन गाँधी जी का कहना है कि यह मुकाबला ''अहिंसात्मक'' हाना चािये. इस तरह के मुकाबला करने वाले को गाँधीजी ''सत्याप्रहीं कहते हैं. सत्याप्रही को चाहिये कि जहाँ तक हो सके अपने दिल को सब की तरफ से यहाँ तक कि बुराई या अन्याय करने बालों की तरफ से भी, प्रेम से भर ले और फिर ख़द अपने त्याग और कब्ट सहने के जिर्ये बुराई या अन्याय करने बालों को ठीक रास्ते पर लानं की कोशिश करे.

में जानता हूँ कि यह मामला कुछ कठिन मामला है.

बहन श्रीमती रामेश्वरी नहर ने उस दिन इस रास्ते की

तुलना तलवार की धार पर चलने से की थी. लेकिन भारत
ने महात्मा गाँधी के नेतृत्व में इसी रास्ते पर चलकर अपने
को सब से बड़ी साम्राज्य प्रेमो शक्ति के पंजे में आजाद

दुनिया के सब शान्ति प्रेमियों से मेरी विनम्न प्रार्थना है कि वे अहिंसात्मक सत्यामह के इस तरीकें को अधिक गम्भीरता के साथ जानने और सममने की कोशिश करें, इस ग्रस्ते की अपनी एक अलग तकनीक है, उसके लिये एक खास तरह की रीयारी की आवश्यकता होती है, एक साधन की जरूरत होती है. यह साधना और तैयारी हिं-सात्मक विरोध की साधना और तैयारी से बिलकुल दूसरी ही तरह की होती है.

इस रास्ते के अनुसार हर ऐसे साइंसड़ों, एंजीनिसर या कारीगर का, जिसे इस बात का विश्वास हो गया हो कि ऐटम और हाइडोजिन हथियार बुरी चीकों हैं, यह पवित्र कर्तव्य है कि वह इस तरह के हथियारों के बनाने دیا میں ہے اور مالی آجال کی ادمکتر مصیبتیں کی چو

Comment & Ash at her

آنمسلیم یعنی اپنی اِچهاؤں کو قابو میں رکھنا آور اُپریکوہ یعنی کسی چیز کو اپنی تعجی سمپتی نه سنجھنا یه دونوں باتیں همارے سروچ آدرهی دولے چاہئے ، هم مانتے هیں که دنیا کے سب لوگ تب دی سکھی رہ سکتے هیں جب که هر آدمی دوسروں کے سکھ کی کم چنتا کرے ،

اِس سے یہ بھی نتاجہ نکلتا ہے کہ جہاں تک ھو سنے دلیا کی سب سے اچھی چھزرں اور عام طور پر انپتی کے سب سادھن سماج کی سمیتی ھولے چاہئے' نہ کی وکیتی کی اِس معاملے میں هم کمیولوم کے بہت نکت پہنچ جاتے ھیں اور ھمیں اِس کا گرو ہے .

توسری بات یه هے که مهاتما گاندهی کی تعلیم میں سب
ادهک مهتو کی چیز 'اهنسا' هے گاندهی جی کے افوسار
هر مرد اور هر عورت کا یه پوتر کرنویه هے که وه هر انبائه اور هر
برائی کا ذخ کر مقابله ادرے اور یدی ارشدکت هو تو اِس مقابله
کرنے میں اپنے سررسو کی بازی لگا دے ، یکن گاستهی چی کا
نهنا هے که یه مقابله ''اهنستمک'' هونا چاهئه اِس طرح
کے مقابله کرنے والے کو گاندهی جی ''ستیا گرهی'' کہتے هیں ،
ستیا گرهی کو چاهئه که جہاں تک هو سکه اپنے دلل کو سب
کی طرف سے یہاں تک که برائی یا آنبائه کرنے والیں کی طرف
سے بی کی دریم سے بھاں انبائه کرنے والی کی طرف
کے ذریم برائی یا آنبائه کرنے والے کو ٹھیک راستے پر لانے کی

میں جانتا ہوں کہ یہ معاملہ کنچہ کتھن معملہ ہے بھن شریعتی رامیسوری نہرنے آس اِس راستی کی تولنا قلوار کی دھار پر چانے سے کی تھی ۔ لیکن بھارت میں مہاتما کاسدھی کے تھتوت میں اِسی راستے پر ہل کر اپنے کو دنیا کی سب سے بچی سامراج پریمی شکتی کے نہجے سے آزاد کیا ۔

دنیا کے سب شانتی پریمیں سے میری پرارتینا ہے که رسے المنساآنیکی ساتھ گراہ کے اِس طریقه کو ادھک گمبھیرتا کے ساتھ جانئے اور سمعجھیے کی کوشھی کریں' اس راستے کی اپنی ایک اگ نمفیک ہے' اِس کے لئے ایک خاص طرح کی تفاری کی ارشکتا ہوتی ہے' ایک سادھن کی فرورت ہوتی ہے ۔ یہ سادھن اور تیاری هنساآتیک ررودہ کی سادھنا اور تماری کے مااکل دوسری طرح کی ہوتی ہے ۔

اِس راسته کے انوسار هر ایسے سائنسدان، انجیریا کاریکر کا جسے اِس بات کا وشواس هوگیا هو که ایتم اور هائذروجون هتهیار بری چهزیں هیں، به پروتر کر تو هے که ولا اِس طرح کے هتههاروں کے بنا لے मैजा है जिसमें हम सब ने उन्हें प्रणाम किया है और उनका पूरा-पूरा समर्थन करने का उनसे वादा किया है. तीस वर्ष तक मैं अपने गुढ महात्मा गाँधी के चरणां में हैठा हूँ और उनके नेतृत्व में अपने देश की आजादी के लिये लड़ चुका हूँ. इसलिये मैं आप से इजाजत चाहता हूँ कि मैं आपके सामने उस रास्ते का पेश कहाँ जिसे मैं गाँधी जी का बताया हुआ शान्ति का रास्ता समकता हूँ और यह मी बताऊँ कि ऐटम और हाइड्राजिन बम के सवाल के साथ उसका क्या सम्बन्ध है.

पहली बात यह है कि महत्मा गाँधी की सबसे बडी विशेषता उनकी धार्मिकता थी. धर्म में उन्हें गहरा विश्वास था. मैं स्वयं धर्म का मानने वाला हूँ. मैं ईश्वर में विश्वासी हुँ, मृत्यु के बाद के जीवन में विश्वासी हूँ, आध्यात्मिक यानी हहानी जिन्दगी का मानने वाला हूँ और हहानी ("कम्यु-नियन" यानी योग या सलुक का भी मानने बाला हूँ. लेकिन हम लोग दुनिया के सब बड़े-बड़े धर्म मजहबी की बुनियादी एकता के मानने वाले हैं. हम मानते हैं कि इन धर्म मजहबों में जो फरक़ हैं वह अधिकतर ग़ैर जरूरी बातों सं सम्बन्ध रखते हैं. इस पृथ्वी पर किस तरह का जीवन बिताना चाहिये इस बारे में सब धर्मों की बुनियादी शिज्ञा एक सी है. इस मानते हैं कि हर सभ्य देश के अन्दर ।लागों कां धर्म मजहब के मामले में पूरी आजादी होनी चाहिये. जा-जो चाहें माने और जिस तरह चाहे अपने इंश्वर श्रष्ठाह की पूजा-श्राराधना करे. साथ ही हम यह भी कहना चाहते हैं कि अब समय आ गया है जबकि, विश्व शान्ति के हित में, मानव समाज की प्रेम के साथ एक दूसरें का सममा-बुमाकर श्रीर निस्पक्षता के साथ एक दूसरे का समम कर, इस बात की काशिश करनी चाहिये कि मानव जाति एक मिले-जुले बीच के ऐसे धर्म की तरफ क़द्म बढ़ा सकें जिस धर्म का अधिक सम्बन्ध इस बात के साथ हा कि हम सब किस तरह कपनी जिन्दगी बसर करें और एक दसरे के साथ किस तरह बरतें, और कम सम्बन्ध इस बात के साथ हो कि हम संसार की उत्पत्ति या परलोक आदि के बारं में क्या मानताएँ रखते हैं या किस विधि के साथ उस देश्वर अखाह की पूजा-आराधना करते हैं जो हम सब का मालिक है. इस तरह के धर्म में इम सब बढ़े-बढ़े धर्मों के कायम करने वालों का एक बराबर घन्दर कर सकेंगे और दुनिया की सब बड़ी-बड़ी धन पुराकों से एक लाभ उठा सर्वेगे.

दूसरी बात यह है कि महात्मा गाँधी की शिक्षा केश्रनुसार मनुष्य की जिन्दगी का आदर्श अपनी इन्द्रियों पर कायू हासिल करना होना चाहिये, न कि इन्द्रियों के सुबां की आर बौड़ना आजकल की सभ्यता का मुकाब इसके ठीक विप- البیس ایک سفدیشا بھی بھڑھ ہے جس میں ہم سب نے پرونام کیا ہے اور آن کا پورا پورا سمرتین کرنے کا آن سے کیا ہے. تیس ریش نک میں اپنے گرو مہاتما لاندھی کے س میں بیٹھا ہوں اور آن کے نیترتو میں اپنے دیش کی نے اللہ لو چکا ہوں ایس لئے میں آپ سے اجازت چاھتا کہ میں آپ کے سامنے اُس راستے کو پیش کروں جسے کا میں آپ کے سامنے اُس راستے کو پیش کروں جسے کا بنایا ہوا شانتی کا راستہ سمنجہتا ہوں اور می بناؤں کے ایٹم اور ہانڈروجن بم کے سوال کے سانے اُس کا میبندھ ہے ۔

پہلی بات یہ ہے کہ مہاتما گاندھی کی سب سے بڑی وشهشتا كى دهارمكتا تهى . دهرم مين أنهين كهرا وشواس تها . مين و دهرم كا مائله والاهرن ، مهن ايشور مين وشواسي هون یو کے بعد کے جیرن میں رشواسی موں' ادھیانیک، یعلی الله وندگی کا ماننه والا هول اور ردهانی "کمونین" یعنی ے یا ساوک کا بھی ماننے والا ھوں ۔ لیکن ھو لوگ دنیا کے سب بڑ یہ بڑے صفرم مذہبوں کی بنیادی ایکٹا کے مانیے والے . هم مائتے هيں كه إن دعرم مذعبوں ميں جو فرق هيد، دهندر غير ضروري باتون سے سمبندہ رکھتے عیں ، اِس برتھوی اس طرح کا جهرن بتانا چاهئے اِس بارے میں سب دھرموں بنیادی شکشا أیک سی فی م مانته هیں که هر سبویه ی کے آندر لوگوں کو دھرم مذھب کے معادلے میں پوری نی هرنی چاهئے ، جو جو چاھے مالے اور جس طرح چاھے ایشور الله کی پوجا اراده ا کرے . ساتھ هی هم یه بھی فینا متے میں کہ اب سے آگیا ہے جب کہ وشو شانتی کے عت م مانو سماج دو پریم کے ساتھ ایک دوسرے کو سمجھا بحجہا اور تشیکشنا کے ساتھ ایک دوسرے کو سمجھ کرا اِس بات کوشھ کرنی چاھئے که سانو جاتی آیک ملے جلے بھے کے م دهرم کی طرف قدم برها سکیس جس دهرم کا ادعک بندء اِس باس کے ساتھ ہو کہ ہم سب کس طرح اپنی زندگی ر کریں اور ایک دوسرے کے ماتھ کس طرح برتھی' اور قم بندھ اِس بات کے ساتھ ھو کہ ھم سنسار کی اُنہتی یا درلوک ی کے بارے میں کیا مانتائیں رکھتے ھیں یا کس ودھی کے ته ایشور اللفای پوجا آرادهنا کرتے میں جو هم سب کا مالک . اِس ا طارح کے دھارم میں عم سب بڑے بڑے دھرموں کے ئم کرتے والیں کا ایک برابر آدر کر سکھی کے اور دنیا کی سب م بوی دهرم پستموں سے ایک لابھ اُٹھا سکیلکے۔

درسرہ بات یہ ہے کہ مہاتما گاندھی کی شکشا کے سار منشیہ کی زندگی کا آدرش اپنی آندریوں پر قابو عامل کرنا ھونا جاءئی' نہ نہ اندریوں کے سکھوں کی آور برنا اِ آج کل کی سبھیتا کا جیکاؤ اِس کے ٹھیک وہریت

ستمبر 67'

सदर साहब, डैलीगेट साथियो छीर मेरे जापानी भाइ-यो और बहना।

मैं अपने उन जापानी दोस्तों का आभारी हूँ जिन्हों ने हमें इस सुन्दर देश में अने का और ऐटम और हाइड्राजिन बम के खिलाफ़ और दुनिया की की जो का कम करने के पक्ष में अपनी काशिशों में हिस्सा लेने का यह मौक़ा दिया, उनकी इन नेक कोशिशों में सारे भारतवासी पूरी तरह उनके साथ हैं.

चन्द् श्रीर हैलिगेट भाइयों के साथ में श्रभी नागा-साकी श्रीर हिरोशिमा होकर श्राया हूँ. उस भयंकर दुर्घटना को हुए बारह बरस बीत चुके. इतने दिनों के बाद भी ओ कुछ मैंने श्रपती श्राँखों से देखा उसे देखकर मुक्ते श्रचरज होता है कि कोई भी मनुष्य इस तरह का काम कैसे कर सका. बेगुनाह माताश्रों की गोद में बैठे हुए मासूम बच्चों को जिन्हा भून डालना श्रीर बीमारों श्रीर बुद्धों को उनके बिस्तरों के श्रन्दर जलाकर ख़ाक कर देना इतनी बड़ी दुष्टता श्रोर इतना बड़ा पाप है जिसे दुनिया की जनता को बरदाश्त नहीं करना चाहिये, श्रीर मुक्ते श्राशा है कि दुनिया की जनता इसे श्राइन्दा कभी बरदाश्त नहीं करेगी. "श्रव श्रीर हिरोशिमा नहीं होने देंगे" यह श्राव ज श्राज मानव समाज के हृदय से जोरों के साथ निकल रही है. कोई श्रव इस श्रावाज की श्रवहेलना नहीं कर सकता.

भारतवासी यह भी मानते हैं कि किसी भी देश या राष्ट्र को यह श्राधिकार नहीं है कि वह दुनिया के किसी भी दूसरे देश में अपनी फौजी अड्डे कायम करे. नए नए देशों में ऐटम और हाइडोजिन हिथयारों को दाखिल करना तो भारत वासियों की निगाह से एक अव्वल दरजे का अन्तर्राष्ट्रीय जुमें है. भारत उन सब सिन्धयों और सममौतों के भी खिलाफ है जो दुनिया को एक दूसरे के विद्ध दो जंगी अखाड़ों में बाँट दते हैं भारतवासी सब राष्ट्रों के मिले जुले एक ऐसे सुलहनामें के पक्ष में हैं जिसके अनुसार सब मिल कर दुनिया की शान्ति को कायम रखने का वचन दें और जिसमें अमरीका और दस दोनों शामिल हों. भारत किसी तरह का युद्ध नहीं चाहता. भारत सारे मानव समाज को एक कुटुम्ब मानता है और दुनिया की सब लोगों की एकता का हामो है.

इस उद्देश्य का पूराकरने के लिये क्या-क्या उपाय करने चाहिये इस पर इस सम्मेलन में काफी वहसें हो चुकी हैं. उन बहसों के दौरान में कई बार उन उपायों की भी चरचा हुई है जो भारत के नेता महत्मा गाँधी ने हमें सिखाए हैं. हमारे बहादुर अमरीकी दोस्त हाक्ड्रोजिन बम के खिलाफ इस समय भी वह उपाय काम में ला रहे हैं जिन्हें वह "गांधियन उपाय" और "अहिसात्मक उपाय" कहते हैं. विश्व सम्मेलन के इस मंच से हमने उन्हें एक संदेशा भी مدر صاحب کیلیکیت ساتهیو آور میرے جاپائی بهائیو اور بہنو!

میں اپنے آن جاپائی درستوں کا آبھاری ھوں جنھیں لے ميور إس سلدر ديص ميں آنے كا أور أيتم أور هاندروجن بم كے خالف اور دائما کے فوجوں کو کم کرنے کے یکھی میں ایلی كشش مين حصه لينه لا يه مرقعه ديا ان كي إن نهك كششون ميں سارے بهارت وأسى بورى طرح أن كے ساتھ ميں . چند اور تینیکیت بھائیوں کے ساتھ میں ابھی ناکسائی ار هيا و شما هو كر آيا هول ، أس يهينكر در كهدنا كو هوثم بارة رہس ابیت چکے ا آنے دنوں کے بعد بھی جو کچ میں نے اپنی أنهور سه ديكها أسه ديكه كر مجهه الجرج هونا هه كه كوئي بھی منشیہ اِس طرح کا کام کیسے کر سکا ، بِے گناہ ماتاؤں کی گون میں بیٹھے ہوئے معصوم بحوں کو زندہ بھون ذالغا اور بقداورں ار پرتوں کو اُن کے استروں کے اندر جلاکر خاک کر دینا اتنی بتی دشتنا اور اِننا برا یاپ ف جس دنیا کی جنتا کو برداشت نهين كرنا چاهئه اور مجه آشا في كه دنها كي جنتا إس أثادة اللهي برداشت نهيل كرم كي . " أب أور هيروشما نهيل مرنے دیں گھ'' یہ آراز آج مافو سماج کے هردی سے زوروں کے سابق نکل رہی ہے ، کوئی اب اِس آراز کی آوھیلفا فہیں در سکتا .

بھارت واسی یہ بھی مائتے ھیں کہ کسی بھی دیھی یا راشتر کو یہ ادھیکار نہیں ہے کہ وہ دنیا کے کسی بھی دوسرے دیھی میں اپنے فوجی اقت فائم کرے . نئے نئے دیشوں میں اپنے اور ھانڈروجن ھتھیارں کو داخل کرنا تو بھارت واسھوں کی نگاہ میں ایک اول درجے کا انتر راشتریہ جرم ہے بھارت ان سب سندھیوں اور سمجھوتوں کے بھی خلاف ہج دنیا کو ایک دوسے کے ورودھ دو جنکی اکھاروں میں بائٹ دیتے ھیں ، بھارت واسی سب راشتروں کے ملے دلے ایک ایسے صلحتا ہے کے بعص میں ھیں جس کے انوسار سب مارکر دنیا کی شائتی کو دائم رکینے کا وچن دیں اور جس میں امریکہ اور روس دونوں شا۔ ل ھوں ، بھارت کسی طرح کا یدی نہیں چاھتا ، بھارت سارے مانو سماے کو ایک کتمب مانتا ہے اور دنیا کے بھارت سارے مانو سماے کو ایک کتمب مانتا ہے اور دنیا کے سب لوگوں کی ایکتا تا حامی ہے ،

اِس آدیش کو پورا کرنے کے لئے کیا کیا آپائے کرنے چاعثے اِس پر اِس سیلی میں کئی بحثیں ہو چکی ھیں، اُن بحثوں کے درران میں کئی بار اُن آپائیوں کی یعی چرچا ھوئی ہے جو بہارت کے ٹیٹا مہانما گادھی نے ھمیں سکھائے ھیں، ھمامے بہادر امہیکی درست ھائدررجن ہم کے خلاف اِس سمے بھی وہ اپائے کام میں لا رہے ھیں جاپیں وہ ''گاندھیں آپائے'' اور اھنالیک اپائے'' کہتے ھیں۔ وشو سمیلی کے اِس ملجے سے

کرم یا نعل کے آئدر ہمیں تھن طرح کے کام ملتے ہیں۔۔
گیرل سوارت پراتھ اور پرمارتھ یعنی خود غرفی دوسروں
کا بھا اور کیرل فرض سمجھر سب کا یکساں بھا ، پہلی
طرح کے کام ایسے مقی جیسے فرقہ لینا؛ دوسری طرح کے
کام ایسے میں جیسے دوسرے کو قرقہ دینا؛ اور تیسری
طرح کے کام سب قرقہ سے چھٹکا ایانا ، پاپ اور پنھہ
مونوں بندھی میں ، مہاہی یعنی نجات ان دونوں سے آزاد
ہو جانا ہے ، پاپ کرما، نوئی برائی کرنا ایسامی ہے جیسا قرقہ
لینا جسے ہمیں دند یا تعلیف کی شکل میں ادا کرنا موگا ،
لینا جسے ہمیں دند یا تعلیف کی شکل میں ادا کرنا موگا ،
فیکی کرنا، پرریکار درن اسا ہے جیسا کسی کر قرقہ دینا ، وہ
ہمیں سکھ کے روپ میں واپس ملیکا ، اور اصلی آزادی ان
دونوں وچاروں سے آور آئو در سب حساب چکتا یعنی بیباتی
کر دینا ہے ، یہی حالت عمیں فری محدث کے بعد گہی

یہ سب چیزیں تین تین کے روپ میں چلتی هیں اور تیسرا میں دو روپ ایک دوسرے کے خلاف معلوم عوقے هیں اور تیسرا آمیں جورتا ہے ، جیسے اِچھا کسی چیز کی جانگاری کو اور اُسی کے ماتھ همارے کام کو دونوں کو جرزتی ہے ، همارے سارے شریر کی بناوت میں یہی تین تین تین کے جرزے دکھائی دیتے هیں ، همارے هاته پیر' همارے دل اور دماغ درنوں میں فاتا جرزتے هیں ، یہی آنما اور غیر-آنما کے دائے کا حال ہے ،

اپنے شریر کی بنارت کو اگر هم اِس برکار اُچھی طرح سمجھ سکیں آور شریو اور من اور آنا یعنی روح کے سمبدھ کو سمجھ سکیں تو یہ سارا بھید هم پر کیل سکتا ہے ۔ اِس بھید کو تھید تھیک سمجھنے کا راستہ وهی ہے جسے هندو دهرم گرنتھوں میں 'میوگ'' مام دهرم گرنتھوں میں 'سلوک' یا ''شغل'' اور عیسائی دهرم گرنتھوں میں ''نمیونین ود دی آرپرت'' کیا ہے۔

कर्म या फेल के अन्दर हमें तीन तरह के काम मिलते हैं—स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ यानी खुदरारजी, दूसरों का मला और केवल फर्ज सममकर सब का यकसाँ मला पहली तरह के काम ऐसे हैं जैसे करजा लेना, दूसरी तरह के काम ऐसे हैं जैसे दूसरे का करजा देना और तीसरी तरह के काम सब करजों से छुटकारा पाना. पाप और पुण्य दोनों बन्धन हैं. मोक्ष यानी निजात इन दोनों से आजाद हो जाना है. पाप करना, कोई बुराई करना ऐसा हो है जैसा करजा लेना जिमे हमें दण्ड या तकलीक की शक्त में अदा करना होगा. नेकी करना, परापकार करना ऐसा है जैसा किसी को करजा, परापकार करना ऐसा है जैसा किसी को करजा देना. वह हमें सुम्ब के क्य में वापिस मिलेगा. और असली आजादी इन दोनों विचारों से ऊपर एठकर सब हिसाब जुकता यानी बेवाक कर देना है. यही हालत हमें कड़ी महनत के बाद गहरी मीठी नींद यानी 'निर्वाण' का हक्दार बना देती है.

यह सब चीजों तीन-तीन के रूप में चलती हैं, इनमें दो रूप एक दूसरे के ख़िलाफ मालूम होते हैं और तीसरा उन्हें जाइता है. जैसे इच्छा किसी चीज की जानकारी को और उसके क्षाथ हमारे काम को दोनों को जाइती है. हमारे सारे शरीर की बनावट में यही तीन-तीन के जोड़े दिखाई देते हैं. हमारे हाथ पैर, हमारे दिल और दिमारा दोनों में नाता जोड़ते हैं. यही आत्मा और ग़ैर-आत्मा के नाते का हाल है.

अपने शरीर की बनावट को अगर हम इस प्रकार अच्छी तरह समम सकें और शरीर और मन और आत्मा यानी रुद्ध के सम्बन्ध की समम सकें तो यह सारा मेद हम पर खुल सकता है. इस मेद का ठीक-ठीक समम्भने का रास्ता बही है जिसे हिन्दू धर्म प्रन्थों में "योग" मुसलिम धर्म प्रथों में "सलूक" या "शराल" और ईसाई धर्म प्रथों में "कम्यूनियन विद दि स्पिरिट" कहा गया है.

महत्मा गाँधी के अनुसार शान्ति का रास्ता, और ऐटम और हाईड्रोजन बम का सवाज पहित सुन्दरकाल

(बह भाषण जो 18 अगस्त सन 1957 को तोक्यों (जापान) में तीसरे विश्व सम्मेजन के सामने दिया गया) مهاتما گاندھی کے انوسار شانتی کا راستنا اور ایٹم اور ھائتروجی بم کا سوال ہنت سیرال

(ولا بهاشن جو 16 اگست سن 1957 کو توکیو (جاپان) -یں تیسرے وشو سمیلن کے ساماے دیا گیا ،) TO A POMISH 2007 19

रौर-आत्मा को वह अभी तक सच समसे हुए था वह अब उसे मूठ श्रीर केवल धोका मालूम होने लगता है. जबानी मे जो चीज सुन्दर, आनन्द देने वाली और चित्त को मोहती हुई मालून होती थी, वह बुढ़ापे में बदसूरत, बद-शकल और तकलीप देह मालूम होने लगती है. एक पुराना मुहावरा है ''ज्ञान रख का बढ़ाता है," श्रंगरेजी शब्द 'वाइज' के मूल मानी ही 'ग्रमगीन' है, जो चीज अच्छी लगती थी वह अब बुरी लगने लगती है, जो ठीक मालूम होती थी वह गतत होने लगतः है और आगे चलकर अच्छ। और बुरा, ठाक श्रीर रालत दोनों ही रालत मालूम होने लगते हैं. पुराय श्रीर पाप यानी और और शर दोनों पाप यानी शर मालम होने लगते हैं, साने की बेड़ियाँ वैसी ही बेड़ियाँ हैं जैसी लाहे की. एक पीढ़ी के लोग पैदा होते हैं, बढ़ते हैं और तजरबों और तकलीकों के अन्दर से गुजरते हुए उन्हें अकल और समभ आती है. वह फिर चल देते हैं. दूसरी पीढ़ी उनकी जगह लेती है. उसी तरह की ग़लतियों, तजरबों श्रीर तकलीकों में से निकल कर उसे समभ श्राती है. वह भी चल देती है, यह चकर बराबर जारी रहता है, एक बीमारी खतम हा जाती है, दूसरी बीमारियाँ उसकी जगह श्रा जाती हैं. एक बुराई मिटती है, दूसरी सर उठाती है. नेका और बदी, सुख और दुख हमेशा एक दूसरे का काटते रहते हैं. अन्त मं दोनों एक साथ खतम होते हैं. इस तुई का आत्मा खुद ही पैदा करता है और खुद ही खतम करता है. नेकी और बदी दानों जुड़वाँ बच्चे हैं. दोनों साथ साथ खतम होते हैं. जब तक श्रादमी जागता रहता है श्रीर काम करता रहता है तब तक उस श्रात्मा के लिये जिसकी श्राँखें खुल गई हैं नेकी यानी निष्काम कर्म का रास्ता ही फ़र्ज यानी कर्त्तच्य का रास्ता है, लेकिन धारे-धीरे यह बदारी भी कम हाने लगती है, थका हुआ आत्मा फर 'निर्वाण' की नींद सोना चाहता है, कुछ देर के लिये वह कठिन मेहनत श्रीर श्रारामदह श्रालस्य दोनों से थक जाता है. पाप श्रीर पुएय, स्वार्थ श्रीर परमाथ दोनों के चक्कर से वह निकलना चाहता है.

इस तरह ज्ञान के अन्दर हमें तीन तरह की चीजें मिलती हैं—सत्य, मिण्या और माया, यानी जो चीजें हैं, जो नहीं हैं और जिनका होना एक धोका है. इच्छा यानी खाहिश के अन्दर तीन सूरतें आ जाती हैं—राग, द्वेश और वैराग्य, यानी ग्वास चीजों से मोह या लगाव हाना, खास चीजा से नफ़रत होना और सब चीजों की तरफ से बेलाग होना, ना काहू से दास्ती ना काहू से बैर. इन्हीं तीनों को काम, काथ और नैक्काम्य भी कह सकते हैं. यह वैराग्य या नैक्काम्य एक शान्त और सकून की हालत है.

نهر-آندا کو وہ ابھی تک سے سنتجے ہوئے تھا وہ اب آسے جهوت الم كيرل دهوكا معاوم هولے الكا في جوالي ميں جو چيز سادر ار آنند دینه والی اور چت کو موهای هوای معاوم هوای تهی وه بتهایے میں بدصورت، بدشکل أور تعلیف دہ معلوم هونے لکتی ہے، الكيوانا محاوره هـ و كيان رنج كو بزهاتا هـ ١٠٠ انكريزي شبد أوانز ع مول معلى هي "فعكين" هي جو چيز اچهي لكتي تهي وه اب بری لگانے لگائی گے ۔ جو ٹھیک معلوم عوقی تھی وہ غط ملهم هونے لکتی ها اور أكے چلكو اچه اور برا تهيك اور غلط ورنس عى غلط معلهم مولى الكتم عهل . يغيم أور ياب يعنى خدر ارر شر دودوں پاپ یعنی شر معلوم هوئے اکتے هیں ، سوئے کی بیزیاں ریسی می بیزیاں میں جیسی لوقے کی . ایک پیزمی کے لوگ پیدا ہوتے میں' بُوها میں اور تجوربوں اور تکلینوں کے اندر سے گذرتے ہوتے انہیں عقل اور سمجھ آئی ہے . وہ پور چل دیتے هیں . دوسری پیزهی أن ئی جابد لیتی هے . أسى طرح کی غلطیوں کتھرموں اور تکلیفوں میں سے نکلکو أسے سمجے آنی ه ، وه يهي چل ديتي ه . يه چکر برابر جاري رهتا ه . ايک بیماری ختم هو جادی هے، دوسری بیماریاں أس کی جکہہ آجاتي هين . ايک برائي مئتي هـ؛ دوسري سر أباتي هـ . نیعی اور بدی، سع اور دکه همیشه ایک دوسرے دو کائتے رهتے ھیں . انت میں دونوں ایک ساتھ ختم ھوتے ھیں . اِس دوئی كو أسا خود هي بيداً كردا في أور خود هي خام كرنا في . نديمي اور بدی دونوں جرواں بدے دیں . دونوں ساتھ ساتھ ختم دوتے ھیں . جب تک آدسی جاگتا رہتا ہے اور کام کرنا رہتا ہے تب نک اس آتما کے لئے جس کی آنکھیں کہل گئی ھیں نیعی يمنى نشكام كرم كا راسته هي فرض يعقى كرتويه كا راسته هي ، ليكن دعيرے دعيرے يه بيداري بھي كم عرفي نكتي هے . تهكا عرا أسا ہد انروان کی نیند سونا چاهدا فع . نجع دیر کے لئے وہ کھوں معدت آرر آرامدة ألسية دولون سر تهك جانا هي. پاپ اور پنیعا سوارتھ اور پرمارتھ دونیں کے چکر سے وہ نکلنا

اس طرح گیان کے آئد; همیں تین طرح کی چیزیں ملتی هیں۔ بھی جو چیزیں هیں جو نہیں میں اور جس کا عوقا ایک دعوکا ہے ، اچیا یعنی خواعش کے اندر تین صورتیں آجائی سیں۔ راگ دو بھی اور ویراگیہ اندر تین صورتیں آجائی سیں۔ راگ دو بھی اور ویراگیہ هونا اور سب چیزوں سے سوہ یا لگاؤ هونا خاص چیزوں سے نفرت دوسی قال کامو سے پیالگ هونا نا کلمو سے دوستی نا کامو سے بھر ، اِنھیں تینوں دو کام دورد، اور نیشکامیه ایک شانتی اور سکن کی حالت ہے ۔

ستىبر 57'

कमें, अपनी भलाई को सब की भलाई के लिते क़रबान कर देना, ठबक्ति की भलाई को कुटुम्ब की भलाई के लिये या समान की भलाई के लिये कुरबान कर देना, यही यह "यह" है. भगवद्गीता में लिखा है:— "प्रजापित ने जब शुरू में दुनिया को बनाया तो "यह" के साथ बनाया और अपनी सारी पजा से कह दिया कि "यह ' के द्वारा ही तुम बढ़ोंगे और फला फूलोंगे....हमारा झांटा आपा हमारे बड़े और व्यापक आपे के लिये अपने को क़रबान करता है यही यह है". यह बढ़ा आपा ही असली सत्यम् सुन्दरम् और शिवम् है. इस दुनिया में जो कुछ हमें सबा, सुन्दर और अच्छा दिखाई देता है वह सब उसी का अक्स है.

सर्वात्मा या रुद्दे कुल के इन गुणों के मुकाबले में रौर-श्रात्मा यानी प्रकृति या जब्द माद्दे में सत्व, तमस श्रीर रत्रस् -यह तीन गुण पाये जाते हैं. सत्व चीजां का वह ग्ण है जिसके जरिये चीजें जानी जा सकती हैं. तमस वह गुण है जिसके कारण उन्हें रखने की आत्मा को इच्छा हाती है. रजस् वह गुण है जिसका सम्बन्ध चीजां की हरकत से है. अगर हम किसी भी ठोस चीज का ले लें तो यही तीनों बार्ते गुरा, द्रव्य और कर्म शब्दों से प्रकट की जा सकती है. इस चीजों के गुणों से उन्हें जानते सममते हैं. उनके द्रव्य रूप के कारण उन्हें रखने की इच्छा करते हैं. और उनके कर्म रूप के कारए हम उनके साथ तरह-तरह के काम करते हैं. हमारे शरीर भी रौर-आत्मा यानी जड़ पदार्थ ही हैं. लेकिन श्रकसर हम उन्हें ही श्रपना श्रापा समक बैठते हैं यह ऐसा ही है. जैसे लोहे की किसी लाल तपती हुई गेंद की गरमी को हम उसकी लाली और श्रीर उसके लाहे सं श्रलग करके नहीं देख सकते. पर हैं वद अलग-अलग चीजें और फिर भी एक.

हमारे जिस्म हमारे आत्मा के इतने निकट हैं कि अक-सर हम जिस्म के तीन गुणों यानी सत्व, तमस् और रजस् का आत्मा के गुण समक्षने और कहने लगते हैं. कभी-कभी हम इन तीन शब्दों से मतलब अपने मन की तीन हालतों से लेते हैं. और यूँ उसे आत्मा से जोड़ देते हैं. हम कहते हैं कि सात्विक आत्मा झानी, आरिक, सममदार और नेक आदमी का ज्ञानवान, सुसन्स्कृत, प्रकाशवान और न्रानी आत्मा हैं, जो बीजों को ठीक-टीक सममता है. तामस् आत्मा उस आदमी का जो अपनी खाहिशों के काबू में है आलस्य और प्रमाद भरा आत्मा है, जो दुनिया की बीजों को चिपटा हुआ हो. राजस् आत्मा कियाशील यानी बाधमल आदमी का आत्मा है जो सदा चंचल, बेचैन और काम में लगा रहता है.

आला जब रीर-आला की तरफ से हटने लगता है
 भौर दसें अपने से खलग कर देना चाहता है तब जिस

کر دینا' آریکایی کی بھائی کو سب کی بھائی کے لئے قربان کر دینا' آریکایی کی بھائی کو کٹسب کی بھائی کے لئے یا سماج کی بھائی کے لئے تابان کر دینا' یہی یہ 'یکھہ' ہے بھکرد گیتا میں لکیا ہے: —''پرجا پتی نے جب شررع 'میں دنیا کو بنایا تو ''یکھہ'' کے ساتھ بنایا اور اپنی سامی پرجا سے کہہ دیا که ''یکھہ'' کے دوارا ہی تم برعوکہ اور پہلو یہولوگ ... عمارا جہوٹا آیا ہمارے بڑے اور ربایک آبے کے لئے اپنے کو دربان کرنا ہے یہی یکھہ ہے،'' وہ بڑا آیاهی اصلی ستیم' سندرم اور شوم ہے ۔ ایس دنیا میں جو کجھ همیں سجوا' سندر اور اچھا دکھائی دیتا ایس دنیا میں جو کجھ همیں سجوا' سندر اور اچھا دکھائی دیتا ہے۔ وہ سب آس کا عکس ہے۔

سرو آتما یا روح کل کے اِن گنوں کے مقابلے میں غیر-آنما يعلى پركرتى يا جر مادے ميں ستو' تمس' أور ,جس_ یہ تبن گن ہائے جاتے ہیں . ستو چیزوں کا وہ گن ہے جس کے ذربع چهزين جاني جا ساتي هين . تيس وه گن ه جس کے کارن اُنہیں رکھنے کی اُتہ کو اِچھا ہوتی ہے ، رجس وہ گن ھے جس کا سمبندھ چیزوں کی حرکت سے ھے ، اگر عم کسی بھی تھرس چدر کو لے لیں تو یہی تہاوں باتیں گئی، درویم، اور کرم شہدوں سے پرکٹ کی جا سکتی ھیں ، ھم چیزوں کے گئوں م أنهال جائتم سمجيتم هيل . أن كے دروية روپ كے كارن أفهون رکھنے کی اِچھا کرتے ھیں ، اور اُن کے کوم روپ کے کارن ھم اُن کے ساتھ طرح طرح کے کام کرتے ھیں ، ھمارے شریر بھی غير-آتما يعلى جرّ بدارته هي هين . ليكن أنثر هم ألهين هي أينا أيا سمجه بيتهتم هين . يه أيسا هي هـ جيسم لوهـ كي كسي لال تیتی موثی گیند کی گرمی کو هم اُس کی لالی ا ر اُس کے لید سے الگ کو کے نہیں دیکھ سکتے . یو هوں وہ الگ الگ چيزيں اور پهر بهی ايك .

مارے جسم مارے آتا کے اِتنے نکٹ عیں که اکثر هم حسم کے نین گنوں یعنی ستو' تمس اور رجس کو آتما کے گن سمجھاے اور کہنے اکتے میں ، کبھی کبھی هم اِن قیرن شبدوں سمجھاے اور کہنے اکتے میں ، کبھی کبھی هم اِن قیرن شبدوں سے مطاب اپنے من کی تین حالتیں سے لیتے میں 'اور ییں اُسے مورد دیتے میں ، هم کہتے میں که ساتوک آتما گیائی' عارف' سمجیدار اور نیرک آدمی کا گیائوان' سو سنسکرت' پرکاشوان اور نیرانی آتما ہے'جو چیزوں کو تھیک تھیک سمجھتا ہے ۔ تامس آتما اُس آدمی کا جو اپنی خوانشوں کے قابو میں ہے آاسیه اور پرماد بھرا آتما ہے' جو دنیا کی چیزی کو چیٹا موا هو ، راجس آنما کریا شدل یعنی باعمل آدمی کا آتما ہے موا هو ، راجس آنما کریا شدل یعنی باعمل آدمی کا آتما ہے جو سدا چنچل' بےچین اور کلم میں لگا رمتا ہے .

آنما جب غير-آنماً كى طرف سے مثلے لكتا هے أور أسم أينے سے الك كو دينا چاهكا هے تب جس आतमा या हर को धापनी इस जीवन यात्रामें दो रास्तों से गुजरना पड़ता है. पहला 'प्रवृत्ति मार्ग' यानी 'क्रीसे नजूल' जिसमें कह रीर-आत्मा यानी रीर-कह यानी बाहर की चीजों को अपनाती है, यानी उन्हें अपने ऊपर श्रोदती है. श्रीर दूसरा 'निवृत्ति मार्ग' यानी 'क्रीसे उक्तन' जिसमें फिर से ऊपर चदने के लिये कह रीर-कह को अपने से श्रातग करती है या उतार फेंकती है.

आत्मा के जो तीन क्ष्य हमने उपर बताये हैं उन तीनों का अलग-अलग सम्बन्ध ज्ञान, इच्छा और क्षिया यानी इल्म. खिहिश और अमल में है. इनमें 'इच्छा' यानी 'खाहिश' ही वह असल चीज है जो एक व्यक्त आत्मा को दूसरी व्यक्त आत्मा से, एक कह को दूसरी कह से, एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से अलग करती है. जब इच्छा मिट जाती है तो यह अलहदगी भी जाती रहती है. यही हमारे सब अच्छे बुरे कामों को जड़ है.

यही तीन यानी ज्ञान, इच्छ। और क्रिया रूढीं या जीवों को एक दूसरे सं श्रलग करते हैं. ऐसा श्रलग श्रात्मा 'पराग श्रातमा' कहलाता है. पर जब इस श्रात्मा का रख अन्दर को हो जाता है तब वह 'प्रत्याग आत्मा' हो जाता है. तब यह सब अलहदगी मिट जाती है. तब यही तीनों सुरतें एक व्यापक श्रात्मा यानी रुहेकुल के तीन गुणों-चित्त, त्रानन्द और सत्त यानी मारफ्त, कुद्रत और बजूरे हक्रीक़ी-में बदल जाती हैं. यह मारकत ही अक्रले कुल है. इन्हीं तीनों को सर्वज्ञता, सर्वशक्तिमत्ता श्रीर सर्व व्यापकता भी कहते हैं. शुद्ध आत्मा यानी ऋहे कुल के इन्हीं तीन गुर्खों के नाम सत्यम, प्रियम श्रीर हितम, या शान्तम, सुन्दरम और शिवम भी हैं. श्रमली वजूद यानी वजुदे हक्कीक्की केवल यही शुद्ध आत्मा या रुहेकुल है. वही देखने वाला है श्रीर वही देखने की चीज. वही जानने बाला है और वही जानने की चीज. उसी से सब राशन है जिस तरह यह दुनिया सूरज से. वह अपने को भी जानता है श्रीर रौर-श्रापे को भी. वह अपने जानने का भी जानता है, वही है और कुछ है ही नहीं. वह निस्य है श्रीर सब बदलता हुआ धोका है. इससे हमें कभी धोका नहीं हो सकता. वही आनन्द का भएडार है, सुन्दरता का खजाना है, वही प्रेम है, वही अनन्त बरकत है, वही एक चाहने की चीज है. सब दिलों का वही एक प्रीतम है भीर जो कुछ प्यार के काबिल है केवल उसी क का गा. बह नित्य है, अनन्त है. वह नेकी का भगडार है. वही यज्ञ यानी कुरवानी है. प्रेम और सेवा के जरिये अपने छोटे आपे की उस बड़े आपे के लिये, जो सब के अन्दर रमा हुआ है, कुरबान कर देना ही उसके दर्शन, दीवार, यानी आत्म दशन का तरीका है. इसी का नाम निःश्रेयस है यानी सब का भला है. अन्त में नि:स्वार्थ कम. निष्काम

اتما یا روح کو آپلی اِس جهون یاترا میں دو راستوں سے گزرنا ہوتا ہے ، پہلا 'پرورتی امارگ' یعنی 'توس فرول' جس میں روح غیر-آنما یعنی غیر-رح یعنی باهر کی چینوں کو آیناتی هے' یعنی انہیں آپنے آرید آوتھتی ہے ، اور دوسرا 'نرورتی مارگ' یمنی 'توس عرجے' جسمیں پھر سے آوپر چڑھنے کے ائے درج غیر رح کو آپنے سے آلگ کرتی ہے یا آثار پھینکتی ہے .

آنداکے جو تھیں روپ ہم لے آوپر بتائے ھیں آن تیلوں اللہ انگ سبندھ گیاں' اچھا' اور کریا یعنی علم خواعش ار عمل سے ہے اس میں اِچھا' یعنی 'خوامش' ھی وہ اصل چیز ہے جو ایک ویکت آنما سے' ایک روک کو دوسرے ویکتی سے' الگ روک کو دوسرے ویکتی سے' الگ کرتی ہے جب اِچھا محت جاتی ہے تو یہ علی تحدگی بھی جاتی روتی ہے دیے حسل روتی ہے دیے دوسرے کموں کی جو ہے ۔

يهي تين يعلي گيان اچها اور نويا روحوں يا جيوں کو ايک دوسرے سے الک کرتے ہؤی ، ایسا الک آنما "پراک أتما كهلانا هے , پر جب اِس آتماکا رہے اندر کو هو جاتا هے تب وہ "پرتياگ أسا عو جانا هے . نب يه سب عليصدگي ست جاتي ھے، نب یہی تینوں صورتیں ایک ویاپک آنما یعنی روح کل کے تین گنی - چت آنند اور ست یعنی معرفت قدرت اور وجود حقيقي-مهر بدل جاتي هين . يه معرفت هي عقل فل هـ . اِنهدن تینوس کو سروگیتا سرو شکتیمتا اور سرو ویایکتا بھی کہتے هیں . شدھ آنما یعلی روح کل کے اِنھیں تین گنوں کے نام ستیم پریم اور هتم یا شانتم سندرم اور شوم بهی هیل . أملى وجود يعنى وجود حقيقى كول يهى شده أنما يا ررح ال هے . وهی ديكها والا هے اور وهی ديكها كى چهر . رهی جائلے والا ہے اور وعی جائنہ کی چھڑ . اُسی ا سب روشن هے جس طرح یه دنیا سورج سے ، وہ اپنے كو بهي جانتا هے اور غير-آبے كو بهي . ولا أينے جانئے كو الهي جانتا هي وهي هي أور كنجه هي نهين ، ولا نتيم هي ارر سب بدلتا هوا دهوكا هے . أس سے همين كبهي دهوكا نهين هُو سَمَناً ، وهي أَنْنَد كَا بَهِنْدَار هَا سَنَدِرِنَا كَا خَوَالْمَ هَا وهي بريم ها وهي أنْنَد كَا بِهِنْدَار ها وهي أيك چاهنه كي چيز هـ . سب داس کا رهی ایک پریٹم ہے اور جو کچھ پیار کے قابل ہے کیول اُسی کے کارن ، وہ تدیم ہے اُنات ہے ، وہ ٹیکی کا پہندار ہ وہی یکید یعنی قربالی ہے . پریم اور سیوا کے ذریعے اپنے چہوئے ایے کو اُس بڑے آیے کے لئے جوسب کےاندر رما ہوا ہے قربان کردینا می اُس کے درشن دیدار یعلی آتم درشن کا طریقه عے اِسی كا فارنيشر أيس هيعني سبكا بهلا هـ أنت مهن نسوارته كرم نشكلم

एक आत्मा के अलग-अलग रूप

हाक्टर भगवान दास

आतमा एक और वेश्वन्त है. उसका कोई ओर छोर नहीं. उससे बाहर कुछ नहीं. उसी आतमा का सर्वातमा या हरेकुल भी कह सकते हैं. लेकिन इस दुन्या में देखने सममने के लिए उसी एक का तीन अलग-अक्षा क्यां में देखा जा सकता है. एक आतमा का व्यापक अव्यक्त रूप जो सब में रमा हुआ है. दूसरे अलग-अलग व्यक्त आत्मायें जिन्हें अलग-अलग आत्मा, जीव या रूह कहते हैं. और तीसरे हमारे यह अलग-अलग मन और शरीर, पहले यानी व्यापक अव्यक्त आतमा के अन्दर सब व्यक्त आतमा यानी अलग-अलग रूहें शामिल हैं. और हमारे अलग-अलग मन-शरीर ही इन अलग-अलग आत्माओं को एक दूसरे से अलग और व्यक्त यानी जाहिर करते हैं.

इसकी एक मिसाल एक ही नदी के अन्दर अलग अलग बरतनों में एक ही पानी की शकलें बदल जाने स दी जाती है.

उस व्यापक अव्यक्त आस्मा की जानकारी का नाम 'मैटाफ़िजिक' यानी 'दर्शन शास्त्र' या 'फ़लसफा' है. अलग-अलग व्यक्त आत्माओं के बयान का 'साइकालांजी' यानी 'मनोविद्यान' कहते हैं. हमारे मन-शरीरों से सम्बन्ध रखने वाली साइन्सों का मामूली जड़विज्ञान या 'साइका फिजिनस' कहा जाता है. दर्शन शास्त्र या फ़लसफे में हमें सब साइन्सों के बुनियादी असूल मिल जाते हैं.

जब श्रास्मा ग़ैर-श्रात्मा यानी अपने से बाहर की चीजों की बात करता है तो तीन सूरतें पैदा होती हैं. पहली यह कि श्रात्मा ग़ैर-श्रात्मा को अपने सामने रखकर उसकी जानकारी हासिल करता है. फिर चाहे उसके वजूद को सबा माने या मूडा. दूसरी यह कि श्रात्मा ग़ैर-श्रात्मा के साथ कुछ न कुछ काम करता है. उसे श्रपने ऊपर श्राद्ना है जैसे श्राद्मी कपड़े पहनता है, या उसे अपने अन्दर बांखल कर लेता हैं जैसे श्रादमी खाना खाता है. उसके साथ अपना अपनापन जोड़ता है. या उसे उतार फेंकता है श्रीर अपने को इससे श्रलग कर लेता है. तीसरी यह कि जानने और काम करने के बीच में श्रात्मा ग़ैर-श्रात्मा से अपने को जोड़ लेन की या उसे अपने अन्दर हजम कर लेते की या इसे फेंक देने की 'इच्छा' करता है. यह 'इच्छा' वीसरी सुरत है. यह इच्छा या खिहरा श्रात्मा की ही वृत्ति च्या हाल है.

ایک أنها کے الگ الگ روپ

The second secon

قائقر بهاران داس

اس کی ایک مثال ایک هی تدی نے اندر الگ الک برنتین میں ایک هی پائی دی شکلیں بدل جانے سے دی جانی هے ۔

أس رباپک آویکت آنما کی جانگاری کا دم "میقانیک"
یعنی "درشن شاستر" یا "نلسفه" هے الگ الگ ویکت آنماؤں
کے بیان کو "سائیکالوجی" یعنی "منو رگیان" کہتے ہیں ۔ همارے
من-شریدرن سے سمبغدہ رکیفے والی سائنسون" کو معمولی جو
وگان یا "سائکو فؤدس" کہا جانا ہے ، درشن شاستو یا فلسفے
میں حموں سب سائنسوں نے بنیادی اُصول مل جاتے ہیں ۔

جب آدما غیر-آتما یعلی اپنے سے باتو کی چفروں کی بات
کرنا ہے تو تون صورتوں پیدا ہوتی ہیں۔ پہلی یہ کہ آتما غیر آنما
کواپنے سامنے رنہ کر اِس کی جانکاری حاصل کرتا ہے پور چاہے اُس
کے وجود کو سجا مانے یا جہوٹا ، دوسری یہ کہ آتما غیر آتما کے
مالہ بچھ نہ تجھ کام کرنا ہے اُسے اپنے اوپر اور اور اللہ حیسے آدمی
کرتے پہنتا ہے یا اُسے اپنے ادر داخل کو لیتا ہے جیسے آدمی
کہانا کہانا ہے اُس کے ساتھ اپنا اپناپن جہونا ہے ، یا اُسے ادار
وہلکتا ہے اور اپنے کو اُس سے الگ کو لیتا ہے تیسری یہ کہ جانئے
وہلکتا ہے اور اپنے کو اُس سے انگ کو لیتا ہے تیسری یہ کہ جانئے
اور کام کونے کے بوج میں آتما غیر-آدما سے اپنے کو جوز لیانے کی یا
ایے بینے اندر دہنم کی لیانے کی یا اُسے پہیلک دیانے کی 'اِچھا' کرتا
ہے ، یہ اِچہا تیسری صورت ہے ، یہ اِچہا یا خوادھی آتما کی
ہے ، یہ اِچہا تیسری صورت ہے ، یہ اِچہا یا خوادھی آتما کی

कारण हुई. इस समय मेरी बहन की उम्र सिर्फ पाँच वर्ष की थी. कितनी प्यारी और द्या पात्र थी वह ! मैं अब उसे देख सकता हूँ. वे माँ को समकाकर राने से चुप कर रहे थे, लेकिन वह बिना हुके हुए लगानार रा रहा थी. शायद इसका राना सुनकर इनका अन्त:करण खिद्ना था, क्यांक इन्होंने मेरी बहन का खा डाला था. यदि इनका अन्त:करण खिद्ना था तो

मेरी बहन का मेरे भाई ने खा डाला! मैं नहीं कह सकता कि यह बात मेरी माँ का मालुम था या नहीं.

माँ की जरूर मालून हुआ होगा, लेकिन राते समय उसने कुछ कहा नहीं. शायद उसने इसे ठीक सममा हो. मुमे याद है कि जब मैं चार या पाँच वर्ष का था तो उस समय मेरे माई ने मुमसे कहा था कि पुत्र के लिये माता-पिता के प्रति सब से बड़ा भक्ति का काम यह है कि जब वे बीमार पड़ें तो वह अपने माँस का एक दुकड़ा काटकर उसे पकाये और उन्हें खाने के लिए दे. और मां ने यह नहीं कहा था कि यह ठीक नहीं है. यि एक दुकड़ा खाया जा सकता है, तो वास्तव में पूरा भी खाया जा सकता है! लेकिन अब मैं सोचता हूँ कि जिस ढ ग से मां रो रही थी उससे दूसरों के हृद्य फटे जा रहे थे. अब उसे याद करने से भी मुभे दु:ख हाता है. कितना अजोब है!

12

पिछले चार हजार वर्षों से मनुष्य एक दूसरे को खा रहे हैं और मैं आज ही यह जान सका कि मैं आजीवन उन्हों में घुला-मिला रहा. मेरी बहन ठाक उसी समय मरी जब मेरे बड़े भाई घर-गृहस्थी का प्रबन्ध कर रहे थे. मुक्ते कैसे विश्वास हो सकता है कि हमें खिलाने के लिये उन्होंने गुप्त हप से उसे हमारे खाने में नहीं मिला दिया ?

हा सकता है कि अनजाने मैंने अपनी यहन को खा विया! और अब मेरी बारी आई है कि मैं खाया जाऊँ!

मेरी चार हजार वर्ष पुरानी मनुष्य-भक्षी वंश-परम्परा है. यहाप इसे मैं पहले नहीं समक सका, लेकिन खब मैं इसे समक रहा हूँ. वास्तविक मनुष्य पाना कठिन है!

13

शायद अब भी कुछ ऐसे बच्चे हैं जिन्होंने भनुष्य का माँस नहीं खाया है. बन बच्चों का बचाइये !

अप्रैल 1918

پارن ہوئی ، آس سمے میری بہن کی عمر صرف پانچ ورہی کی بہی ، کتلی پیاری آور دیا یاتر تھی وہ اِ میں آب آس دیکھ سکھتا ہوں ، وہ ماں کو معجها کر روئے سے جب کر رہے تھے لیکن وہ بنا کے بوئے لگانار روزھی تھی ، شاید اس کا روزا سن کر اِن کا انتخار روزھی تھا کیونکھ اِنہوں نے مدری بہن کو کیا ڈالا نیا ، یدی اِن کا انتخاری چھدتا تھا تو ...

مهری بهری کو مهری بهائی لے کها ڈالا اِ میں نہیں کہت سکتا کے یہ بات مهری مال کو معلوم تھی یا نہیں ۔

ملی کو ضرور معلوم ہوا ہوگا لیکن روتے سے اس لے کچھ کہا نہیں ، شاید اس لے اِسے قهیک سمجھا ہو ، حجے یاد ہے کہ جب میں چار یا بانچے ورش کا آیا تو اُس سے میرے بہائی لے مجھے کہا تہا کہ بتر کے لئے ماتا بتا کے پرتی سب سے بڑا ایک تموا کات کر اُسے پکائے اور اُنھیں کہائے نے لئے دے ، اور کہایا جا سکتا ہے اور اُنھیں جورا بھی کھایا جا سکتا ہے اِنسان کہایا جا سکتا ہے اِنسان کہایا جا سکتا ہے اِنسان کہا ہے اُنسان دوسروں کے موردنے بہتے جا رہے تھے ، اب اسے یوسروں کے موردنے بہتے جا رہے تھے ، اب اسے یاد کرنے سے بھی مجھے دکھ ہوتا ہے ، دتنا عجمیب ہے ا

12

پنچھلے چار ہزار ورشوں سے منشیہ ایک دوسرے کو کھا رہے ہیں، اور میں آج بھی یہ جان سکا کہ میں آجیوں انھیں میں کھلا الا رہا ۔ میری بہن تھیک اُسی سمے مری جب مهرے برے بھائی گھر گرهستی کا پربلدھ کر رہے تھے۔ محمد کیسے وشواس مرسکتا ہے کہ ہمیں کھانے کے لئے انھوں نے گھت روپ سے اُسے ہمارے کھانے میں نہیں ملا دیا ؟

میری چار دزار ورش برانی منشیه بهکشی ونفی پرمپرا هے، یدپی اِسے میں بہلے نہدں سمجہ سکا ایکن اب میں اِسے سمجہ رہا ہوں ، واستوک منشیہ بانا انہن هے ،

13

شاید آپ بھی کچھ آیسے بچے عیں جابوں نے مذشیع کا مانس نہیں کھایا ہے ۔ اُن بچوں کو بچائید ،

ايريل 1918

تب أن كا أيك أور طویقه بهی مهری سبجه مرس أكیا .
و م صوف سدهار كرنے سه هی إفكار فهیں كرتے بلكه إس كے ساته
هی ساته أنهيں نے أينی تهاری بهی كر لی هے . أنهيں نے مهر م
أورر "پاگل آدمی" كی چهی بهی چپكادی هے . جب و م مجهه
كها تألينكم تو اس كے بعد أن كے كاره كا كوئی كوپرينام نه هوكا .
بهی فهيں" وأستم ميں لوگ أن كی تعریف كوپدكم . جب
آساميس نے يه كها تها كه أنهيں نے أيك بده هاى كو مار كو
كها تألا تو و م بهی بهی طویقه أينا رهے ته . يه أن كا پرانا
راگ هے .

اس پرچین الاِ-وو هم اوگون کے پاس بڑے غصے سے آئے ۔
ایکن وے میوا منه کرسے بند کر سکتے تھے 8 میں جالسازی
کے اِن سحیوں کے سامنے اپنے وچار رکبنے کے ائم تل گیا ، اُن
سے مینے کہا کہ 'آپ اوگون نو سدھار کرنا چاھئے اِ آپ اوگوں
کو هردئے کے بهیتر سے سدھار کرنا چاھئے اِ آپ اوگوں کو سمجھ
لینا چاھئے دے منسیہ بہکشی محدیوں کے لئے سمسار میں دوئی
اُرتوان نہیں ہوگا اگر آپ سدھار نہیں کرتے تو آپ اوگ
خود کیا ڈالے جائینکے اِ اگر آپ بہت سے بچوں کو بھی پددا
درس تو بھی وے سب کے سب اصلی منشیوں کے دوارا اُسی
طرح نشٹ نو دیئے جائینگ جیسے شکاریوں دوارا ایھیزیئے اِ آپ
سب کیزوں کی طرح نشٹ کر دیئے جائینگے اِ

چھن لؤ-رو نے اُن سب منشدوں کو بھگا دیا اور میں نہیں جاندا که میرا بھائی دہاں غایب ھو گیا ، چھن لاو-رو نے مجھے سمجھا کو میرے کورے میں واپس بھیجا ، پورا کمرا اندھکار میں ذریا تھا ، چھت کی شہتیر اور دھنیان کانھنے لگیں ، کچپ دیو کانھنے کے بعد اُن کی لمائی چوزائی اور موثائی بہت ادک برق گئیں ،

وم بہت علی زیادہ بہاری عیں . وہ علائی ذلانی بھی نہیں اسا سکتیں . وم بہت علی زیادہ بہاری عیں کہ مهم صوحان . لهمن میں جانتا عوں که واستو معن رہ بہاری نہیں عیں . اِس اللہ میں اُنھیں دمکا دیکر عقا دونگا . میرا شرور رسینہ سے تر عو گیا ہے . لیکن آپ لوگ مجھے چلانے سے نہیں روک سکتے 'نورا سدہ ر دیجئے ! اُنے عود رئے کے بھیتر سے سدھار کیجئے ! آپ لوگی کو جانہ ا چاھئے که منشیم بھکشی منشیوں کے لئے سنسار لوگیں کو جانہ ا چاھئے که منشیم بھکشی منشیوں کے لئے سنسار میں کوئی استہان نہ ربیگا!'

11

سورج نہیں چمک رہا ہے ، دوار کبھی نہیں کیلتا ، پرتی دن دوبار بھوجن ۔ اپنی کالے کی درنوں چورٹی جورٹی اکریوں کو پکڑے دوں ، مینے اپنے بھائی کے بارے میں سوچا اور یه انوبھو کیا کہ میری بہن کی مرتبو اِنھیں کے

तब उनका एक और तरिका भी मेरी समक्त में आ गया. वे सिर्फ सुधार करने से ही इनकार नहीं करते बिल्क उनके साथ ही साथ उन्होंने अपनी तैयारी भी कर ला है. उन्होंने मेरे ऊपर 'पागल आदमी' की चिप्पी भी विपक्ता ही है. जब वे मुक्ते खा डालेंगे तो उनके बाद उनके कार्य का कोई कुपरिसाम न होगा. यही नहीं, वास्तब में लाग उनकी तारीफ करेंगे. जब आसामियों ने यह कहा था कि उन्होंने एक बदमाश का मारकर खा डाला तो वे भी यही तरीका अपना रहे थे. यह उनका पुराना राग है.

इस पर चेन लाको वू हम लागों के पास बड़े गुरसे से श्राये. लेकिन वे मेरा मुंह कैसे बन्द कर सकते थे ? में जालसाजी के इन सदस्यों के सामने अपने विचार रखने के लिये तुल गया, उनसे मैंने कहा कि 'आप लोगों का सुधार करना चाहिए! आप लोगों को हृदय के भीतर से सुधार करना चाहिए! आप लोगों को समफ लेना चाहिए कि मनुष्य-भक्षी मनुष्यों के लिये संसार में कंाई स्थान नहीं होगा! अगर आप सुधार नहीं करते तो आप लोग खुद खा हाले जायेंगे! अगर आप बहुत से बच्चों को भी पैदा करें तो भी वे सब के र ब असली मनुष्यों के हारा उसी तरह नष्ट कर दिये जायेंगे जैसे शिकारियों हारा भेड़िये! आप सब की हों को तरह नष्ट कर दिये जायेंगे!'

चेन लाम्रो-वू ने उन सब मनुष्यों को भगा दिया और में नहीं जानता कि मेरा भाई कहां सायब हो गया. चेन लाम्रो-वू ने ममें समफाकर मेर कमरे में बापस भेजा. पूरा कमरा अन्धकार में डूबा था. छन की शहतीर और धन्नियाँ काँपने लगीं. कुछ देर काँपने के बाद बनकी लम्बाई, चौड़ाई श्रीर मोटाई बहुत श्रिधिक बढ़ गई और वे सब मेरे ऊरर ढेर हो गई.

वे बहुत ही ज्यादा भारी हैं. वे दिलाई जुनाई भी नहीं जा सकतीं. वे लोग चाहते हैं कि मैं मर जाऊं. लेकिन में जानना हूँ कि बास्तव में वे भारी नहीं हैं. इस लये मैं उन्हें धक्का देकर हटा दूँगा. मेरा शरीर पसीने से तर हो गया है. लेकिन आप लोग सुके चिल्लाने से नहीं रोक सकते, 'फौरन सुधार कीजिये! अपने हृद्य के भीतर से सुधार कीजिये! आप लोगों का जानना चाहिये कि मनुष्य-भक्षी मनुष्यों के लिये संसार में कोई स्थान न रहेगा!'

11

सूरज नहीं चमक रहा है. द्वार कभी नहीं खलता. प्रति-दिन दो बार भोजन, अपनी खाने की दोनों छोटी-छोटी तकि इयों को पकदे हूँ. मैंने अपने भाई के बारे में सोचा और यह अनुभव किया कि मेरी बहन की मृत्यु इन्हीं के

Maria Land

تک که پنچیلے دیں اُنھوں نے واف ولیعے میں اُس منشیه کو بہترا پہلے سال جب ایک سابو حلک استهاں پر ایک منشیه کو بول دند ملا تو تبیدی کے ایک روگی نے اُس موے ہوئے ابرادی کے خون میں روثی کا تکوا دیو کر اِس آشا سے چاٹا که اس سے اُس کا روگ ٹیهک ہوجائیگا .

The state of the state of

جب مینے اپنے بھائی سے اِس برکار کہا تو بھلے در وے روکھ دَهَنگ سے مسکوائے . ایکن شیکور هی أن کی مدرا کرور هو گئی . اور جب مرنے جال ماری کے گیت معاملوں کا بھندا بھور دیا تو أن كے منه كا رنگ بالكل هي بدل گيا ، سامنے كے دروازے کے باہر منشهن کا ایک جهند کہرا تھا . اُس مهن برء چاؤ ارر أن كا كنا بهي تها . وه سب ايني كردنيس نكال كو آگه بجماء الم . ميں تعجه چه وں كو نهيں ياعجان سكا . وم أيسم دکیانی دے رقع تھے جیسے که یردے سے تعام هوں ، لیکن درسرے أدم كمبهدر تھے . أن كے دنت كيلے هوائے تھے اور وے ابنی مسکراهت چههائے کے اللہ آینے هونت کات رقع تھے میں سبكو يهجان كيا. وله سب أسى جالسازى مين شامل تهد وله سب منشه، بهمشی دانو تهے . ایکن اِس کے ساتھ ساتھ میں یہ بھی جان گیا کہ آن کے وچاروں اور اُن کی بھاوناؤں میں فاق تبا . أن مين سے كنچه كا وجار نها نه ملشيم بهمشن سدا سے چلتا آیا ہے آور وہ ٹھیک یہی ہے۔ اِن کے ورودہ کچھ ایسے بھی تھے جوں کا وجار تھا که منشهه بهکشن ڈبیک نہیں گے، لیکن يهر بهي وه درتے تهے ، انهيں به در تها نه كهيں أن كا بهندا يهرو نه هو چائے اور اِسی مه و مدرم کتهنوں پر چهبده آه . وسم سجه مله جوها رق ته .

ایسا پرتیت هرتا هے که اُسی سمے میرا بھائی بھی مجبسے چہدد هو گیا اور اُس نے زرر سے چلا کر کہا' چلے جاو ! پاکل اُسی کو دیجھے میں کیا مزا آنا ہے 8'

तक कि पिछले दिन उन्होंने बुल्फ विलेज में उस मनुष्य को पकड़ा, पिछले साल जब एक मार्बजनिक स्थान पर एक मार्बजनिक स्थान पर एक मार्बजनिक हो प्राया-दगड़ मिला तो तपेदिक के एक गोगी ने उस मरे हुए अपराधी कं .खून में रोटी का दुकड़ा डुबांकर इस आशा सं चाटा कि उससे उसका रोग ठीक हो जायेगा.

'मेरे भाई, अगर वे सब मनुष्यों को खाना चाहते हैं तो आप उन्हें रंक नहीं सकते. परन्तु आप भी उस जाल- साजी में क्यां शामिल हुए हैं ? उनकी तरह के मनुष्य-मक्षी दानव कुछ भी करने में न चुकेंगे. वे मुक्ते भी खा सकते हैं. वोर उसी जालसाजी में वे एक-दूसरे को भी खा सकते हैं. और उसी जालसाजी में वे एक-दूसरे को भी खा सकते हैं. लेकिन अगर वे घूम पड़ें और अचानक अपने को खुधार लें तो हर-एक को शान्ति मिल जायगी. अगर ऐसी ही हालत रहे तो भी हम दोनों खासतीर से एक-दूसरे को स्नेह कर सकते हैं, मेरे भाई! उनका साथ छोड़ दीजिये! उनका खएडन कीजिये! उनसे कहिये कि आप ऐसा नहीं कर सकते हैं, क्योंकि अभी पिछले दिन जब आसामियों ने आपसे लगान कम करने के लिये कहा था तो आपने 'नहीं' कह दिया था.

जब मैंने अपने भाई से इस प्रकार कहा तो पहले तो वे रुखे ढंग से मुस्कराये. लेकिन शीध ही धनकी मुद्रा कर हो गई, श्रीर जब मैंने जालसाजी के गुप्त मामलों का भंडा फोड़ दिया ता उनके मुंह का रंग बिल्कुल ही बदल गया, सामने के दरवाजे के बाहर मनुष्यों का एक भएड खड़ा था. उसमें बड़े चात्रो और उनका कुत्ता भी था, वे सब अपनी गर्दने निकाल कर आगे यदने लगे. मैं कुछ चेहरों को नहीं पहचान सका, वे ऐसे दिखाई दे रहे थे जैसे कि पर्दे से देंके हों, लेकिन दूसरे अ।दमी गम्भीर थे, उनके दाँत खुले हुए थे श्रीर ने अपनी मुस्कराहट छिपाने के लिये श्रपने होंठ काट रहे थे, मैं सब का पहचान गया, वे सब उसी जालसाजी में शामिल थे. वे सब मनुष्य-भक्षी दानव थे. लेकिन इस हे साथ-साथ मैं यह भी जान गया था कि उनके विचारों और उनकी भावनात्रों में फर्क था. उनमें से कुछ का विचार था कि मनुष्य-भक्षण सदा से चलता आया है और वह ठीक भी है, इनके (बढद्ध कुड़ ऐसे भी थे जिनका विचार था कि मनुष्य-भक्षण ठाक नहीं है, लेकिन फिर भी वे करते थे. उन्हें यह डर था कि कहीं उनका मन्हा फोड़ न हो जाय अगर इसी से वे मेरं कथनों पर श्रृ व्ध थे. वे मुक्ते मुँह चिदा

ऐसा प्रतीत होता है कि उसी समय मेरा माई भी मुक्से भ्रुट्य हो गया और उसन जोर से विस्ताकर कहा, 'चले जाओ ! पागल आदमी का दखने में क्या मजा झाता है ? अगर अपने उस स्थायी विचार से उन्हें छुटकारा मिल जाय तो वे आत्म-वश्वास के साथ अपने काम-काज कर सकते हैं और शान्तिपूर्वक घूम-फिर सकते हैं, खाना खा सकते हैं और सो सकते हैं. तब वे कितने आधक सुख-चैन में होंगे! अपनी आदतों में सुधार करने का मतलब होगा एक नई दुनिया में प्रवेश, एक दर्रे स गुजर कर आगे के एक नये दृश्य का दर्शन!

लेकिन पिता और पुत्र, भाई श्रीर बहन, पित श्रीर प्रती, मित्र श्रीर शत्रु, श्रध्यापक श्रीर शिष्य श्रीर श्रजनबी —सभी आलसाची में हैं, एक-दूसरे को बढ़ावा दे रहे हैं, एक-दूसरे को शामिल कर रहे हैं. व मर जाना पसन्द करेंगे, लेकिन सुधार का एक मामूली क़दम नहीं उठायेंगे.

10

प्रात:काल तड़के मैं अपने भाई की खोत में निकला. वह हाल के द्वार के सामने खड़े थे और आकाश की ओर देख रहे थे. मैं उनके पीछे जा पहुँचा और रास्ता रांककर मैंन उनसे बड़ी सच्चाई और शान्ति से कहा — 'माई साहब, मुक्ते आपसे कुछ कहना है.'

'कह डाला,' जल्दी से घूमकर और अपना सिर हिलाते

हुए उन्होंने उत्तर दिया.

'मुफे सिफ कुछ शब्द कहने हैं, परन्तु मेरे लिये उन्हें कहना कठिन हो रहा है, भाई साहच, मेरा विचार है कि शुरू में सब असभ्य मनुष्य कुछ न कुछ मनुष्य-भक्षी थे. बाद को उनके विचारों में अन्तर हो गया. उनमें से कुछ ने मनुष्यों को खाना छाड़ दिया. अपनी नैतिक अवस्था को सुधारने की प्रवल प्रेरणा से वे मनुष्य बन गये, मेरा मतलव है, वास्तविक मनुष्य. उनमें से कुछ ने मनुष्यों को खाना जारी रक्खा. वे कीड़ों की तरह थे. उन्हाने मछली और वन्दरों की स्थित से होकर विकास किया और आखिर में वे आदमी बन गये. उनमें से कुछ सुधरना चाहते ही न थे, और वे अब भी कीड़े हैं. मनुष्यों का खाने वाले मनुष्य मनुष्यों को न खाने वाले मनुष्य मनुष्यों के न खाने वाले मनुष्य के पात्र हैं. । जतना अन्तर कीड़ों और वन्दरों में है हमसे भी आध्यक अन्तर इन दो कोटियों के मनुष्यों में है.

वह घटना बहुत पुराने युग की है जब बी-या ने चीह और चाउ को खिलाने के लिय अपन पुत्र का मांस पकाया था. इस बात की कल्पना कीन कर सकता था कि पान-कू के पृथ्वी और आकाश का अपन-अलग बाँटने के दिन से लेकर यी-या के पुत्र के समय तक मनुष्य मनुष्य को खाता रहा है ? यी-या के पुत्र के समय से लेकर सू-सू-लिंग के समय तक वे मनुष्य को खाते आये हैं. और सी-सु-लिंग के आगे भी उन्होंने मनुष्य को खाना जारी रक्खा है, यहां اگر اپنے اُس استهائی وجار سے اُنھیں چھتکارا مل جائے تو اُوے آتم دشواس کے ساتھ اپنے کام کاج کر سکتے ھیں اور شائتی پوروک گھم بھر سکتے ھیں اور سو سکتے ھیں ، تب وے کتلے ادھک سکھ چین میں ھونکے ! اپنی عادتیں میں سدھار کرنے کا مطلب ھوگا ایک نئی دنیا میں پرویھی ایک درشت کا درشن !

لیکی پتا اور پتر' بھائی اور بہیں' پتی اور پتنی' متر اور شترہ اور شترہ اور اجنبی سبھی جالساؤی میں میں اور اجنبی سبھی جالساؤی میں میں ایک دوسرے کو بوعاوا دے رہے میں ایک دوسرے کو شال در رہے میں وہے سر جانا پسند کریدگے' لیکی سمار کا ایک معمولی قدم نہیں آئوائدگے .

10

پرائکال ترکے میں اپنے بیائی کی کہوے میں نکلا ، وہ هال کے دوار کے سامنے کورے تھ ، میں اُن کے دوار کے سامنے کورے تھ ، میں اُن کے پیعچھے جا بہونیچا اور راسته روک کر میلے اُن سے بری سچائی اور شانتی سے کہا۔ اُن صاحب مجھے آپ سے کچھ کہنا ہے؛

'کہت ڈالو' جلدی سے گہرم کر اور اینا سر ملاتے ہوئے اُنہوں نے اُنہ دیا ۔

'مجھے صرف کنچھ شبد کہتے ہیں' پرلتو مدرے لئے آنہیں کہنا کتھی ہو رہا ہے۔ بھائی صاحب' مدرا وچار ہے کہ شروع میں سب اسبہہ منشبہ کنچہ نہ کنچھ منشبہ بھکشی تھے۔ بعد و کو اُن کے وچارس میں ادار ہو کیا ۔ اُن میں سے کنچھ نے منشبی کو اُن کے وچارس میں ادار ہو کیا ۔ اُن میں سے کنچھ نے منشبی کو کیانا چارت سدھارنے کی پوہل پریزنا سے وہ منشبہ بین آئے' میرا مطالب ہے' واستوک' منشبہ ۔ اُن میں سے کنچھ نے منشبی کو کھانا جاری راہا ۔ دے کھروں کی طرح نھے ۔ اُنھی نے منجہلی اور بندروں کی اِستھتی سے مو کر وکلس دیا اور آخیر سیں وہ آدمی بین کئے ۔ اُن میں سے ننچھ سیمرن چاہتے ہی نہ تھے' اور وہ اب علی کیتے عیں منشبی کو تہ علی کیتے عیں ، منشبی کی کہنا کے علی کیتے اور کہنا کے علی کیتے انہ ران میں ہے اور کیتران اور بندروں میں ہے اور کہنا کے پاتر ہیں ، جتنا انتر کیتری اور بندروں میں ہے اس سے بھی پاتر ہیں ، جتنا انتر کیتری کو منشبی میں ہے اس سے بھی ان میں ہے اس سے بھی

وہ گھٹنا بہت پرالے یگ نی ہے جب بی-یالے چیہہ اور چئو کو کھٹا بہت پرالے یگ نی ہے جب بی-یالے چیہہ اور چئو کو کھٹا کو ایس بات کی کلھنا کون کر سکتا تھا کہ دان-کو کے درتیوی اور آگھن کو انگ الگ یانٹلے کے دان سے لیکر بی-یا کے پتر کے سمے سے لیکر سوسوسمشید کو نهاتا رہا ہے آ یہ منشید کو نهاتے آئے ہوں ، اور سیسولئگ کے سیے تک ویہ منشید کو نهاتے آئے ہوں ، اور سیسولئگ کے آگے بھی آنہوں نے منشید کو کھانا جاری رکھا ہے یہاں لئگ کے آگے بھی آنہوں نے منشید کو کھانا جاری رکھا ہے یہاں

नहीं थी. मैंने उससे पूछा—'क्या मनुष्य-भक्षण ठीक है ?' सुम्कराते हुए ही उसने जवाक दिया—''इस वर्ष कोई श्रकाल ता पड़ा नहीं है. ।फर मनुष्य-भक्षण की क्या जरूरत ?'' मैं फौरन समभ गया कि यह भी जालसाजी में शामिल है। यह भी मनुष्यों को खाना चाइता है. इसलिये मेरी हिम्मत सी-गुनी बढ़ गई.

मैने हठ करते हुए किर बही सवाल पूछा—'क्या यह ठीक है ?'

वह बोला—'ऐसी चीजों के बारे में पूछने से क्या लाभ ? सचमुच आपको मजाक करना आता है. आज मौसम बड़ा अच्छा है .'

"मौसम बड़ा श्रच्छा है. चन्द्रमा .खूब चमकद।र है. लेकिन फिर भी मैं श्रापसे हठ करके पूछता हूँ कि क्या यह ठीक है ?' "

मेरे हठ करने से वह हड़बड़ा गया श्रीर गुनगुनाकर कहा—'नहीं...'

'नहीं ठीक है. फिर वे मनुष्यों को क्यों खाते रहते हैं ?' 'यह सच नहीं है.'

'सच नहीं है ! बुल्फ विलेज में उन्होंने यही किया और सब पुरानी कितावों में यह मोटे-मोटे श्रक्षरों में साफ-साफ लिखा है !'

उसका भाव बदल गया और उसका मुख बदरंग हो गया. आँखें फाड़ कर दंखते हुए उसने कहा'—मुमिकिन है कि यह सच हो. ऐसा हमेशा से होता रहा है.'

'हमेशा सं होता रहा है-पर क्या यह ठीक है ?'

'मैं श्रापके साथ बहस करने नहीं जा रहा हूँ. श्राप इसका जिक्र न की जिये, श्राप श्राप जिक्र करते हैं तो ग़लती करते हैं.'

में उद्घल कर खड़ा हो गया और मैंने उसकी श्रोर घूर कर देखा. परन्तु तभी वह सायब हो गया. चोटी से एड़ी तक मैं पसीना-पसीना हो गया. उन्न में वह मेरे भाई से कहीं ज्यादा छोटा था. लेकिन फिर भी वह उस जालसाजी में शामिल था. उस हे माता-पिता ने उससे ऐसा करने के लिये कहा होगा. और मुमे डर है कि कहीं उसने श्रपने लड़कों का भी यही शिचा न दी हो. इसी से बच्चे भी मेरी श्रार करू हिष्ट से देखते हैं.

9

वे मनुष्यों को खाना चाहते हैं, लेकिन .खुद खाये जाने से डग्ते हैं. वे चौकन्ने होकर चारों श्रोर सन्देहपूर्ण दृष्टि से देखते हैं. ہوں تھی۔ میاء آس سے دوچھا۔ کیا منشیع بھکشن ٹھیک ہے ؟ اسکواتے ہوئے ہی اسکواتے ہوئے ہی اسکواتے ہوئے ہیں اسکواتے ہوئے اگل تو را انہوں ہے ۔ بھر منشیع بھکشن کی کیا ضرورت ؟ " میں دوراً محت کیا کہ یہ بھی جال سازی میں شامل ہے ۔ یہ منشیوں کو بانا چاہٹا ہے ۔ اِس لئے مهری عمت سوگی بچھ گئی ۔

مینے مٹھ کرتے ہوئے پھر روھی سوال پوچھا۔۔ کیا یہ ٹھیک

رہ بولا۔ ایسی چدزوں کے بارے میں پوچھنے سے کیا لابہ آآ بے مبے آپ کو مزاق کونا آبا ہے ۔ آج موسم برا اچھا ہے .'

'موسم ہوا اچھا ہے ۔ چندرماں خاب چمکدار ہے ، افکن :4ر میں آپ سے هناته کو کے پوچھتا ماس که 'کیا یه تبیک و ، ، ،

میرے ہتے کرنے سے وہ ہو ہوا گیا اور گنگنا کر کہا۔۔۔۔'

'نہیں ٹھیک ہے ۔ پہر رہے منشیس کو عبرس کیاتے رہتے ۔ بہر ہو ؟ ا

ایہ سچ نہیں ہے ۔

سے نہیں ہے ! واف ولیج میں آنہوں نے یہی کیا اور ب پرانی کتابوں میں یہ موٹے ہوتے اکشروں میں صاف صف با ہے !!

اُس کا بھار بدل گیا اور اُس کا مکھ بدرنگ عو گیا۔ آنکھیں اور کر دیکھتے ہوئے اُس نے کہا۔ انکھیں اور دیکھتے ہوئے اس نے کہا۔ انکھکن کے نام بات سچے عوا۔ ایسا بیشت سے ہوتا رہا ہے؛

العميشة سے هوتا رها هے پر كيا يه تهيك هـ 9 ا

سمیں آپ کے ۔ اتھ بحث کرنے نہیں جا رہا ہوں ۔ آپ م کا ذکر نه کوجئے ۔ اگر آپ ذکر کرتے میں تو غلطی کرتے ہیں اُن

میں اُچھل کر کہوا عو گیا اور مینے اُس کی اُرر کھور کر کھا ۔ پرنتو تبھی وہ غایب عو گیا ۔ چوقی سے ابری نک میں بیاء پسینے عو گیا ۔ عمر میں وہ مدرے بھائی سے نہیں زیادہ ہوئا تیا ۔ لیکن پھر بھی وہ ۔س جال سازی میں شامل تھا ، لیکن پھر بھی سے ایسا کرنے کے لئے کہا ھوگا ، اُور مجھے ہے کہ کہیں اُس نے اپنے اوکوں کو بھی یہی شکشا نہ دی ہے کہ کہیں اُس نے اپنے اوکوں کو بھی یہی شکشا نہ دی ۔ اِسی سے بچے بھی میری اُور کرور درشتی سے دیکیتے ۔ اِسی سے بچے بھی میری اُور کرور درشتی سے دیکیتے

9

وسے ساشیوں کو کہانیا چاہتے ھیں ایکن خود دہائے جانے ترتے عیں ۔ وہ چوکنے دو کر جاروں اُور سندیہ پرون درشتی دیکھتے ھیں ،

(116)

वे इस मतला से जाल विद्या रहे हैं कि मैं ख़ुद अपने का मार ड'लूँ. पिछले दिन के सबक पर आदमियों के जमान और अपने माई के बर्ताब का मिलान करके ही मैं उनकी जालमाजा का लगभग 9/10 भाग समम गया हूँ. अगर में अपमी कमर में बंधी हुई पेटी को खाल लूँ और उसे छत की किसी शहतीर में डाल कर फाँसी लगा लूँ तो इसस अधिक ख़ुशी की दूसरी बात उनके लिये न हागी. मेरा खूब अच्छी तरह से दम घुट जायेगा. वे हत्यारे कहे जाने की बदनामी से भी बच जायेंगे और इसके साथ ही साथ उनके हत्य की इच्छा भी पूरी हो जायगी, सचमुच वे खुरी के मारे नाचेंगे. इसके विरुद्ध, अगर में डर या चिन्ता से मर जाऊँ, तो मैं और अधिक दुवला हो जाऊंगा. लेकिन इसे भी वे स्वीकार कर लेंगे.

वे सिर्फ मरे हुए का माँस खा सकते हैं! जरा ठर्शिये—
एक बार मैंने एक प्रकार के जानवर के बारे में पढ़ा था.
उमें 'लकड़बग्घा' कहते हैं. उसकी आँखें और पूरा शारि देखने में बड़ा डराबना लगता था. वह अक्सर मरा माँस खाता था और बड़ी से बड़ी हिंडुयाँ चया कर निगलें जाना था. उसके बारे में सांचने से ही मुफे डर लगता है. लकड़बग्घा भेडिये का रिश्तेदार होता है और भेड़िया कुत्ते का. पिछलें दिन चाओं के कुत्ते ने कई बार मेरी आर देखा था. उसके दिमारा में भी वही विचार होगा. वह भी इन लांगों में मिला है और उसने भी अपना हिम्सा पक्का कर लिया है. वह बुड़ा आदमी अपनी आँखें बराबर फर्शा पर जमाये था, लेकिन उससे मैं धांखे में नहीं आया.

सबसे श्रधिक धिक्कार मुमे श्रपने माई पर श्राता है.
श्रालिर वह मनुष्य है. उसे ढर क्यों नहीं लगता ? मुमे खाने के लिये वह इस जालसाजी में क्यों शामिल हुआ ? अभ्याम हो जाने से क्या उसका स्वभाव कठार हो गया है ? इसी से क्या वह इस काम में कोई बुरी बात नहीं देखता ? या वह यह जानता है कि वह अपराध कर रहा है श्रीर जान युम कर भी वह अपने श्रन्तः करण का श्रावाच के खिलाफ काम कर रहा है ?

पहले तुम्हें और फिर सब सनुष्य भक्षी दानवों को मैं कासता हूँ ! पहले तुम्हें श्रीर फिर सब मनुष्य-भक्षी दानवों को मैं बदल देंगा !

8

श्रव वे सारे विचार उन्हें साफ साफ मालून हो जाने चाहियें.....

अचानक एक नौजवान बादमी मेर पास आया. उसकी उम्र बीस वर्ष से ज्यादा न रही होगी. मैं उसका चेहरा अच्छी तरह से नहीं देख सका. लेकिन वह मुस्करा रहा था. उसने मुक्ते देखकर सिर हिलाया. उसकी मुस्कराइट असली وسه اِس مطلب سے جائل بعقیا رہے ہیں کہ میں خود آپنے کو مار ڈانوں ، بھیلے دن کے سرک پر آدمیوں کے جماؤ اور آپنے ہوائی کے برتاؤ کا میلان کو کے ہی میں اُن کی جائلسازی کا لگ علی بیالی کو کے ہی میں اُن کی جائلسازی کا لگ علی بیالی ہوئی ہوئی ہیتی کو کھول اور اُس چھت کے کسی شہیئر میں ڈال کو پھائسی لگا اور تو اِس سے آدھک خوشی کی دوسری بات اُن کے لئے نه ہوگی ، میوا خوب اچھی طرح سے دم کیمت جائزگا ، وسے ہائیگا ، سیچ میچ دے خوشی کے سارے ناچیں بیچ میچ دے خوشی کے سارے ناچیں اور اِس کے میں ڈر یا چاتا سے موجاؤں' تو میں اور ایس کے دوردہ' اگر میں ڈر یا چاتا سے موجاؤں' تو میں اور ایس کے دوردہ' اگر میں ڈر یا چاتا سے موجاؤں' تو میں اور ایس کے دوردہ' اگر میں ڈر یا چاتا سے موجاؤں' تو میں اور ایس کے دوردہ' اگر میں ڈر یا چاتا سے موجاؤں' تو میں اور ایس کے دوردہ' اگر میں ڈر یا چاتا سے موجاؤں' تو میں اور ایسکے دیا تھو جائے گا ، ایکن اِسے بھی وسے سوئیکار کر اینکے ،

وے صرف موے موادی مانس کیا سکتے ایس ا فرا تھہوئی۔
ایک بار میں نے ایک پرکار کے جانور کے بارے میں پڑھا تھا ،
آسے التربکیا مہتے ھیں ، اس کی آنکھیں اور پورا شریر دیکھلے میں بڑا درلونا انکا تیا ، وہ انا، سرا مانس کیا با تھا اور بڑی سے بڑی عدال جوا کر نکل جانا تیا ۔ اس کے با ے میں سوچنے سے ھی مجھے تر انکا ہے ، اکربکیا بھیڑیئے کا رشتدار ھونا ہے اور بھیڑیا نئے کا ، پچھلے دی جاؤ کے کتے نے دئی بار می می اور دیکیا دیا ، اس کے دانے میں بھی وھی وجاز ھوگا ، وہ بھی۔ اور لیا ہے اور اس نے بھی اپنا حصہ پکا کر لیا ہے ، وہ بڑی انکھاں برادر فرش پر جدائے تیا المکن اِس وہ بدیا آدمی اپنی آنکھاں برادر فرش پر جدائے تیا المکن اِس سے میں دھرکے میں نمیں آیا ،

سب سے ادمک دیکار مجھے آپنے بہائی پر آبا ہے ۔ آخروہ منھیہ ہے . اسے تر کیوں نہیں لکا ۔ مجھے نیائے پر آبا ہے ۔ اللہ وہ اِس جالسازی سے کیوں شامل ہوا ؟ ابھاس ہو جانے سے کیا اس کا سوبھاؤ تھور ہو گیا ہے ؟ اِس سے کیا وہ اِس کام میں کوئی بہی ات میوں دیکھا ؟ یا وہ یہ جانا ہے کہ وہ ابرادھ کو رہا ہے اور جان بوجھ کو بھی وہ اپنے اللہ کون کی آواز کے خلاف کام کر رہا ہے ؟

پہلے تمہیں اور پھر سب منشیع بھکشی دائوں کو میں کو میں کو کو کا عوں ! پہلے تمهیں اور پھر سب منشیہ بھکشی دائوں کو میں بدل دونکا!

8

آب و مارد وچار آنهیں ماف مان معلوم هو جانے اللہ مارد و اللہ و اللہ مارد و اللہ ما

اچانک ایک نوجولی آدمی میرے پاس آیا ۔ آس کی عمر بیس ررض سے زیادہ نہ رھی ہوگی ۔ میں آس کا چہرد اچھی طرح سے نہیں دیکھ سکا ۔ لیکن وہ مسکرا رہا تھا ۔ آس نے محمد دیکھ کرڈ سر جالیا ۔ اُس کی مسکراہٹ املی

5

जब मैं श्रीर श्रागे संविता हूँ तो इस नवीजे पर पहुँचता हूँ कि श्रगर यह बुढ़ा श्रादमा छिपे भेस में जछाद नहीं है श्रीर सबमुब एक डाक्टर ही है, ता भी इतना ता तय है ही कि बद मनुष्य-भक्षी मनुष्य है. श्राजकल के डाक्टरों के पूर्वगानी प्रथमदशक ला-शीह-चेन ने 'जड़ी-बूटियों पर' नामक जो प्रन्थ लिखा है उनमें साफ-साफ कहा गया है कि मनुष्य का भाँस तन कर खाया जा सकता है. इसलिये क्या वह मनुष्य-भक्षी मनुष्य होने से इनकार कर सकता है ?

जहाँ तक मेरे भाई का सवाल है, मैं उस पर मूडा श्चाराप नहीं लगाता हैं. जब वे मुक्ते प्राचीन-काल का इतिहास पढ़ाते थे, ता उन्होंने खुद कहा था कि मनुष्य अपने 'पुत्रां के बदले में अन्न' पा सकता था, और एक बार एक दृष्ट मनुष्य के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा था कि इसकी हत्या करना उसे एक ऋत्यन्त नम्र दएड देना था. 'उसका ता माँस खा डालना चाहिये था और उसकी खाल का कम्बल बनवाना चाहिये था.' उस समय मैं बहुत छाटा था श्रीर बहुत देर तक मेरा दिल धड़कता रहा भौर पिछले दिन जब बुल्क विलेश नामक गाँव के आसा-मियों न मनुष्य के दिल श्रीर जिगर के खाये जाने की कशनी बताई तो मुक्ते तनिक भी अवरज न हुआ, उस समय मेरा भाई बिना करे हुये लगातार अपना सिर हिलाता रहा था. इससे आप समक सकते हैं कि एनके विचार अब भी बिल्कुल पहले-जैसे ही कर हैं. यद आप पुत्र देकर बदले में खाना' ले सकते हैं तो आप बदले में कुछ भी ले-दे सकते हैं. श्राप किसी का भी खा सकते हैं पहले मैं सिर्फ उनके भाषण सुन भर लेता था और किसी बात पर पूछ-ताछ नहीं करता था. लेकिन अब मैं समक गया कि मुझे भाषण देते समय उनके हांठों पर मनुष्य की चर्बी तो रगड़ी ही रहती थी, इसके साथ-साथ उनका पूरा दिल भी मनुष्य की खाने के त्रिचारी से भरा रहता था.

6

हर जगह श्रंधेरा, मैं नहीं जानता कि इस समय दिन है या रात, चात्रा का कुत्ता फिर भूँकने लगा है,

शेर की क्रूरता, खारगोश का उरपोकपन, लोमड़ी की मकारी...

7

मैं उनका तरीका भलीभांति समक गया हूँ, वे मुके सीधे नीं मारना चाहते, उनकी हिम्मत नहीं है, वे नतीजों से दरते हैं. इसलिये उन सबने मिलकर गुटबन्दी की है और جب میں اور اگر سوچھا میں تو اِس ندھے پر پہونھھا میں کہ اگر یہ بدھا آدمی جہے بهبس میں جات نہیں ہے اور میں دائتر می ہے تہ بہبس میں جات نہیں ہے اور می میں منشیہ ہے ۔ آجال کے قائدرس کے پیرٹائی بتھ پردشک لی شیہ جین نے 'جوی بوڈ وں پر' نامک جو گرنتو لکھا ہے اُس میں صاف کیا گیا ہے ته منشیہ باکس نال کو کہا ہا سکتا ہے ۔ اِس لئے کیا وہ منشیہ باکشی منشیہ ہونے سے اللا کر سکتا ہے ؟

جہاں تک میرے بھائی کا سوال ہے؛ میں اُس پر جبوثا ارب نہیں الاتا موں . جب وے مجھے براچین کال کا اِتھاس برهاتے تھے تو انہیں لے خود کہا تھا که منشید النے 'بتروں کے برای میں ان ایا سکتا تھا ، اور ایک بار ایک دشت منصه کے بارے میں بتائے ہوئے انہوں نے کہا تھا نہ اس کی مقیا کرد اسے ایک اینتا نمرم داند دیا تها . اس کا دو مادس کها دانها چاعثے نیا اور اس کی کھال کا کمبل بلوآنا چاعثے تھا: اس سمہ میں بہت چبرڈا تھا اور بہت دیر تک میرا دل دھونکا رھا ار بچہلے دن جب رف ولیم نامک کاؤں کے آسامیوں لے منشیه کے دل اور جگر کے نہائے جانے کی کہائی بتائی تو مجھے سک بھے اچرے تع ہوا ، اِس سمے میرا بھائی بنا رکے حوثے گادار أيا ما بعلانا رها تها . إس سے أب سمجم سكتے هيں كه أن كے رچار اب بھی ۽ لکل پہلے جيسے ھي کرور ھيں . يدي آپ 'يتو دیدر بدانے میں کھانا' لے سکتے میں تو آپ بدانے میں دھی بھی لے درے سکتے طیں . آپ کسی کو بھی کھا سکتے عهں . پہلے میں مرف أن كے بهاشن سن بهر ليتا تها أرر كسى بهى بات ير يوچه ناچه نهیں کرتا تها . لیکن اب میں سمجع گیا که مجھے بہاشی دیتے سے اُن نے ہوئٹیں پر منشیہ کی چربی تو رکزی ہی رحتی تھی ایس کے ساتھ ساتھ آن کا پورا دال بھی منشیہ کو کھائے کے وچاروں سے بھرا رھتا تھا .

6

هر جكهة الدهورا . مين فيهن جانتا كه إس سمه دي هـ

شهرر کی کوررنا' خرگرش کا تدپرک پن لومزی کی

7

میں آن کا طریقہ بھلی بھانت سمجھ گیا ہوں ، وے مجھے مدھ نہیں گا ، وے نتیجوں مدھ نہیں گا ، وے نتیجوں عادم نہیں گا ، وے نتیجوں عادم نہیں اس اللہ ان سب لے ملکو گٹ بلدی کی گا اور

श्रव्हा'. क्या वे सोचते थे कि मैं यह नहीं सममा कि दूसरा भेष धारण किये हुए वह बुड्डा आदमी वास्तव में एक जल्लाद था. नब्ज देखने के बहान वह सिर्फ यह पता लगाना नाःता था कि मारे जाने के लिए मैं काफी मंटा हूँ अथना नहीं. और इस खाम काम के लिये उसे एक दुःहा मिलेगा. के कन मैं डा नहीं. गोकि मैं उनकी तरह मनुष्य-भक्षां नहीं हूँ तो भी मुममें उनसे , ज्यादा हिस्मत है. मैंन अपनी दानों मुहियाँ बॉधकर बाहर निकाल लीं और इन्तिजार करने लगा कि देखें अब आगे वह क्या कल्ला है. वह वहुत श्रादमी चुपचाप बैठ गया. उसने अपनी झाँखें बन्द कर लीं और बहुत देर तक मेरी नब्ज देखता रहा. वह बहुत देर तक चुप रहा. इसके बाद उसने अपनी दानवी झाँखें खोलों और कहा—'तरह-तरह की बाते' न सोचा करो. शान्त रहा और कुछ दिनों तक आराम करो. इससे तुम बिल्कुल अच्छे हो जाओगे.'

'तरह-तरह की बाते' न सोचा करो ! शान्त रहो श्रीर आराम करो.' श्राराम करते-करते जब मैं ब्रीर ज्यादा माटा हो जाऊँगा तब मुक्तमें उनके खाने के लिये श्रीर ज्यादा सामान हो जायगा. इस श्राराम से मेरा क्या लाभ होगा १ में 'बिल्कुल श्रच्छा' कैसे हो जाऊँ ॥ १ मनुःशों का यह कुएड जा दूसरों का निगल जाना चाइता है, लेकिन जां चारों की तरह सब बात का छियाने का काशिश करता रहता है श्रीर जो सीधे-सीधे मारने की हिम्मत नहीं करता है —ये तो मुक्ते हँसाते हँसाते मार डालेंगे. में श्रपने को रोक न सहा श्रीर मेरी हँसाते हँसाते मार डालेंगे. में श्रपने को रोक न सहा श्रीर मेरी हँमा फूट निकली. में पूरी तरह से खुश था. में सत्र जानता था कि मेरी हँमी में हिम्मत श्रीर सच्वी भावना है. वह बुड़ढ़ा श्रादमी श्रीर मेरे भाई हका बक्ता हो गये. मेरी हिम्मत श्रीर सची भावना ने उन्हें जीत लिया था.

लेकिन मुक्तमें हिम्मत है, इस कारण वे मुक्ते निगलने के लिये और भी अधिक उत्सुक हो जायेंगे, क्योंकि मुक्ते निगलने पर उन्हें मेरी हिम्मत मिल जायेगी. वह बुड्ढा आदमी द्वार से बाहर चला गया. लेकिन बहुत दूर जाने के पहले ही उसने धीमी आवाज में मेरे भाई से कहा—'जल्दी लेना है'. मेरे भाई ने अपना सिर हिलाया. तो आप भी इसमें शामिल हैं! अपने भाई की साजिश की मुक्ते आशा न थी, फिर भी मुक्ते यह जानकर अवरज नहीं हुआ, मुक्ते खाने की साजिश में मेरा ही भाई है!

मेरा भाई मनुष्य-भची दानव है! मैं मनुष्य-भक्षी दानव का भाई हूँ!

पाहे में .खुद ही खा डाला जाऊँ, तो भी मैं एक मनुष्य-मध्री दानव का भाई ही कहलाऊँगा! اچھا ، کیا وے سوچاتے تھے کہ میں یہ نہیں سبجھا کہ دوسرا بہبس دماری کئے ہوئے وہ بڑھا آدمی واستو میں ایک جاد نہا ، قبض دیتھنے کے ببانے وہ صرف یہ پتہ لگا ا چاہتا تیا کہ مارے جائے کے اٹم میں کانی موڈا میں انہوا نہیں ، اور اِس خاص کام کے لئے اسے ایک ٹکڑا ملیگا ، لیکن میں توا نہیں ، گوئہ میں اُن کی طرح منشیہ بہکشی نہیں ہوں تو بدی مجھ میں اُن سے زبادہ عمت ہے ، میں نے اپنی دونوں مقیداں باندھکو بلمر نکال لیں اور انتظار آرنے لگا کہ دیکھیں اب مقیداں باندھکو بلمر نکال لیں اور انتظار آرنے لگا کہ دیکھیں اب اپنی آنکھیں بند کو لیں اور بہت دیو نک میری نبض دیکھتا اپنی آنکھیں کھولیں اور بہت دیو نک میری نبض دیکھتا آرام کو یہد اُس نے اپنی دائوی آنکیس کھولیں اور کھا سرے طرح کی باتیں نہ سوچا کو و . شائمت بدو اور کچھ دنوں نک آرام کو و اس سے تم بالکل اچھے شائمت بدو اور کچھ دنوں نک آرام کو و . اِس سے تم بالکل اچھے ہو جاؤ گے . *

الرام کرتے کرتے جب میں اور زبادہ موٹا ہو جاؤنگا تب متجھ میں اور کردہ میں اور زبادہ موٹا ہو جاؤنگا تب متجھ میں اور زبادہ موٹا ہو جاؤنگا ، اِس آرام میں اُن کے دُوائے کے لئے اور زبادہ سامان ہو جاؤنگا ، اِس آرام میں ایکل اچھا کیسے ہو جاؤنگا اُلا میں وہائی کیسے ہو جاؤنگا اُلا میں کا یہ جہند جو دوسروں دو نکی جانا چاھتا ہ لیکن جو چوروں کی طرح سیج بات کو چبھائے کی کوشش کوتا رهتا ہے اور جو سیدھ ، سیدھ مارنے کی ہمت نہیں کونا ہے۔ یہ نو میری هنساتے مار قالینکے ، میں اپنے کو روک سے سکا اور میری هنسی پہرت نکلی ، میں بوری طرح سے خوش نھا ، اور میری هنسی میں نامت اور سیچی میں بارنا ہے ، میری هنسی میں نامت اور سیچی میں بارنا ہے ، میری میں بارنا ہے ، میری میں ایک اور میرے بھائی میکا یکا ہو گئے ، میری میت اور سیچی بہارنا نے آنہیں جیت لیا تھا ،

ایکن مجه میں هدت ہے، اِس کارن وے مجھے نالمنے کے اللہ اور بھی ادمک آسوک ہو جائے کے کونکه مجھے نالمنے پر اُدین مرری هدت مل جائدگی ، وہ بدما آن ی دوار سے باہر چلا کیا ، اوکن بہت دور جائے کے پہلے ہی اس نے دهدی آراز میں مدرے بہائی سے نہا۔ اجادی لینا ہے، میورے بہائی نے اید سر اللیا ، او آپ بھی اِس میں شامل بھیں ا اپنے بھائی نے کی سازش ای مجھے یہ جان کو اچرچ نہیں بھوا ، منجھے کھائے کی سازش میں مهوا ہی

میرا بیائی منشیه بیکشی دانو هے! میں منشیم بیکشی دانو کا بھائی ہوں!

چاہے میں خود علی کها ذالا جاؤں تو بھی میں ایک منشیہ بیکشی دانو کا بھائی علی کھاؤنگا ہ

नहीं करते. मैं कैसे कल्पना कर सकताथा कि इन मनुष्यों के विचार क्या हैं, खास तौर पर उस समय जबकि वे किसी की निगतने की तैयारी कर रहे हों ?

श्रव प्रत्येक बस्तु को सम्भने के पूर्व उसकी जाँव-पड़ताल कर लेना जरूरी है, यद्यपि साफ साफ नहीं तो भी थोड़ा-बहुत तां मुक्ते याद पड़ता ही है कि प्राचीन काल से लंकर आज तक मनुष्य अक्सर खाये गये हैं. पता लगाने के लिए मैं एक इ!तहास की पुस्तक देख रहा था, लेकिन उसमें तिश्याँ नहीं ही थीं हर एक पन्ने पर सिर्फ 'दान-शीलता, 'सदाचारिता,' 'नैतिकता' और 'गुण्' के लिए कुछ शब्द लिखे थे. मैं बराबर करवटे बदलता रहा, लेकिन मुक्ते नींद न आई. आधी रात तक मैं पुस्तक में बड़ी साब-धानी के साथ छान-बीन करता रहा. तब कहीं मैं यह समम पाया कि उन शब्दों के बीच में क्या लिखा था. पूरी पुस्तक में सिर्फ दो ही शब्द थे 'मनुष्य-भक्षण'.

पुस्तक में वे सब शब्द और आसामियों द्वारा कही गई वे सारी बारों ह सती हुई अपनी बड़ी-बड़ी आँखें खोल रही हैं अजीब तरह से मेरी ओर देख रही हैं.

मैं भी मनुष्य हूँ. वे मुमे निगल जाना चाहते है !

4

श्राज प्रातःकाल में चुपचाप बैठा था. तभी चेन लाखां-वून खाना भेजा—तरकारियों का एक कटारा और उन्नली हुई मछली का एक कटोरा. मछली की आँखें सकेंद्र और कड़ी थीं. मनुष्य-भर्छा उस जन-समूद की माँति ही उसका मुँह खुला था. मैंने कुछ लुक्रमे खा लिये. परन्तु मुक्ते यह पता न लगा कि यह चिक्रनी चीज मछली है या मनुष्य. इसलिए मैंने के कर दी और उसे फर्श पर उगल दिया.

मैंने कहा—'लाश्रां-व, कृपया जाकर मेरे भाई से कह दीजिए कि मेरा मन बहुत बुरी तरह से ऊब गया है श्रीर मैं बारा में टहलना चाहता हूँ, लाश्रां-वू ने कोई जवाब न दिया. वे बाहर निकल गए. कुछ समय बाद वे वापस श्राए श्रीर उन्होंने द्वार खोला.

वास्तव में मेरी समक्त में यह न आया कि वे मेरे साथ क्या करने जा रहे थे। लेकिन मैं यह समक्त गया कि वे मेरे ऊपर रक्खे गए अपने शिक्रक को ढीला करने नहीं जा रहे हैं. निःसन्देह, मेरे भाई एक बूढ़े आदमी का भीतर लाए. वह धीरे-धीरे मेरी और बढ़ा. वह आदमी डर रहा था कि कहीं मैं उसकी आँखों की क्रूर टिंड न देख लूँ. इसी से वह अपनी आँखों को फ्री पर मुकाए रहा. उसने मुक्ते अपनी आँखों की कोरों से देखा. मेरे भाई ने कहा— 'आज तुम बिल्कुत ठीक मालूम हाते हो.' मैंने कहा, 'हाँ'. इस पर मेरे भाई ने कहा —'हम लागों ने डाक्टर से आज आकर तुम्हें ठीक करने के लिये कहा है —'मैंने कहा, 'बहुत نہیں کرتے۔ مفن کفسے کلینا کر سکتا تیا که اِن سنشھیں کے وچار کیا هیں' خاص طور پر اُس سمے جب که رہے کسی کو نکانے کی تیاری کر رہے هیں ؟

اب پرتئیک وستو کو سعجھنے کے پررد اس کی جانبے پرتال کولینا ضروری ہے . یدپی صاف صاف نہیں تو بھی تھرتا بہت تو مجھے یاں پرتا ھی ہے که پراچھیں کال سے لیکر آج تک مشیع ایر ایار کھائے گئے ھیں . یکھ لگائے کے لئے میں ایک اِتہاس کی بستک دیکھ رھا تھا لئی اس میں تقیماں نہیں دی تھیں ، هر ایک اِنہا بھی ایک اِتہا اور 'گی' کے لئے کچھ شبد اکھے تھے ، میں برابر کروٹیں بدلتا رھا لیکن مجھے نیند نہیںآئی اُدھی رات تک میں پستک میں برتی ساودھائی کے ساتھ چھان بھی کرتا رہا ۔ تب کہیں میں یہ سعجھ پایا که آن شبدوں کے بھی میں کیا لکھا تھا ، پروی پستک میں صرف در ھی شبد تھے میں کیا لکھا تھا ، پروی پستک میں صرف در ھی شبد تھے میں کیا لکھا تھا ، پروی پستک میں صرف

پسٹک میں وے سب شدد اور آساموں دوارا کہی گئی وے ساوی ہاتیں فلستی دوئی اپنی بچی بچی آنکھیں کھول وہی میں اور تجھب طرح سے میری اور دیکھ رہی مدی ۔

میں بھی منشیه عوں . وحد مجھے نکل جانا چاھیے عیں !

4

آج پراسکال میں چپ چاپ بیٹیا تھا ، تبھی چھن الاؤور نے کیا نا بھیجا ۔ ترکاریوں کا ایک کقررا اور آبلی ہدئی مجھلی کا ایک کقررا اور کڑی تھیں ، منشیع کا ایک کقررا ، مجھلی کی آنکھیں سفید اور کڑی تھیں ، منشیع بیشی اس جن سموہ کی بھانت ھی اس کا منه چھا تھا ، میں نے کچھ لقمے کھا لئے ، پرستو مجھے یہ پتہ نع لگا کہ یہ چکنی چیز مجھلی ھے یا منشیہ ، اِس لئے مھی نے قے کر دی اور آسے نرش پر آگل دیا ،

میں نے کہا۔۔۔ ور؛ کرپیا جا کر میرے بھائی سے کہ دبیجئے کو میرا میں بہت ہری طرح سے آوب کیا ہے اور میں باغ میں تہلنا چاہتا ہوں؛ لاؤ رو نے کوئی جواب نہیں دیا ، وے باہو نال گئے ، کچھ سمے بعد وے واپس آئے اور انہوں نے دوار کہوا ،

واستو میں میری سمجھ میں یہ نہ آیا کہ وہ مفرے ساتھ کیا کرنے جا رفے ہیں ، لیکن میں یہ سمجھ گیا کہ وہ مفرے کو رکھے گئے اپنے شہ حجے کو تعیلا کر نے نہیں جا رہے ہیں ، نسبن بہت میرے بھائی ایک بروقے آدسی کو بھیٹر لائے اور وہ دعمرے دھفرے میری اور بڑھا ، وہ آدسی تر رہا تھا کہ کہوں میں اس کی آنکھوں کی کرور دوشگی نہ دیکھ لوں ، اِسی سے وہ اپنی آنکھوں کو فرص پر جھکانے رہا ، اُس نے محجھ اپنی انکھوں کی کروری سے دیکھا ، میرے بھائی لے کہا۔ آج تم ہااکل انکھوں کی کروری سے دیکھا ، میرے بھائی لے کہا۔ آج تم ہااکل نہیں معاوم میری ہوتے ہو ، میں نے کہا۔ اُج تم ہااکل میرے بھائی نے کہا۔ ہوتے ہو ، میں نے کہا۔ اُج تم ہاکل میرے بھائی نے کہا۔ اُج کہا۔ اُد تمہیں تھیک کرنے کے لئے کہا ہے؛ میں نے کہا وہ بہت

इस पर विरूप मुख थाले मनुष्यों का वह कुएड दाँत स्रोतकर जोरों से हँ सने लगा. तब चेन लाओ-वू मेरे. पास आये और मुक्ते स्वींचकर घर ले गये.

वे मुफे खींचकर घर ले गये. घर के मनुख्यों ने ऐसा हल अपनाया कि जैसे वे मुफे जानते ही न हों., उनके मुख के भाव वैसे ही थे जैसे कि दूसरे मनुख्यों के. जब मैं अपने पढ़ने-लिखने वाले कमरे में घुम गया तो उन्होंने द्वार पर ताला लगा दिया. ऐसा लग रहा था कि जैसे वे किसी मुग़ीं अथवा बतल को कटघरे में बन्द कर रहे हों.

कुछ दिन हुए, बुल्फ बिले त नामक गाँव के आसामी यह कहने के लिये आये थे कि उनके जिले में अकाल पड़ा है. उन्होंने मेरे भाई को सूचना दी कि वहाँ गाँव वालों ने एक बड़े बदमाश को मार डाला और इसके बाद उनमें से कुछ एक ने उसे चीरकर उसका हृदय और जिगर निकाल लिया. उन्होंने उन दुकड़ों को तला और उन्हें खा डाला जिससे उनमें हिम्मत पैदा हो. मैं उनके बीच में ही बोल पड़ा. आसामियों और मेरे भाई ने बुरी तरह मेरी आर देखा. अब मेरी समफ में आया कि उन्होंने मेरी और उसी प्रकार देखा था जिस प्रकार बाहर के सुन्ड ने.

जब मैं इसे साचता हूँ तो चोटी से लेकर एड़ी तक सिहर जाता हूँ.

वे उस मनुष्य के भीतरी श्रङ्ग खा गये, ता क्या वे मुफे न खाजायेंगे ?

उस स्त्री के कथन पर विचार की निये, 'जी चाहता है कि तुमें कई बार दाँतों से काट खाऊँ.' और इस कथन का उन हाँसी अथवा विरूप मुख और खुले हुए दाँतों बाले मतुत्र्यों के उस मुन्ड तथा आसामियों द्वारा कही गई उस कहानी से मिलान की जिये. सान जाहिर है कि ये शब्द एक गुप्त सङ्कृत थे. उनके शब्दों में जहर था, उनकी हाँसी में कटारें था. और उनके चमकते हुए सकेद दातों की कतारें पकट कर रही थीं कि वे मनुष्य-मक्षी दानव हैं.

श्रव, जैसा कि मैं साचता हूँ, मैं कोई बदमारा नहीं हूँ. लेकिन मुक्तसे श्री कु-चिड का कुत्ता कुचल गया था. इस-लिये श्रव यह कहना कठिन है. ऐसा लगता है कि उनके दूसरी तरह के विचार हैं. उनकी मैं करपना तक नहीं कर सकता. इसके श्रवाया, जा कभी ने श्राप से नाराज होंगे तो श्रापको बदमारा समक्तते लगेंगे. मुक्ते वे बाते याद हैं जब मेरे बड़े भाई मुक्ते निबन्ध लिखना सिखाते थे. जब कभी भले से मले मनुख्य की भी मैं कड़ श्रालोचना करता था तो मेरे भाई उसका श्रवायोदन करते थे, श्रीर यदि मैं दुध्य मुद्धां को क्षमा कर देवा था तो वे कहा करते थे कि, विम बड़े भले लड़के हो जो सर्वसाधारण की तरह व्यवहार

اِس پر رورب منه والے منشیوں کا وہ جہند دالت کھول کر زوروں سے عنسنے لگا۔ تب چین الو-رو میرے پلس آئے او مجھے کہینچ کر گھر لے گئے۔

وسے مجھے کھینچ کر گھر نے گئے ۔ گھر کے منشیس نے آیسا رخ آپفایا کہ جدسے وسے مجھے جانتے بھی تہ ھوں ، اُن کے متع کے بھاؤ ویسے بھی تھے جیسے که درسرے منشوس کے . جب میں اپنے پرعفے لکھنے والے کمرے میں گیسگیا تو اُنھرسنے دوار پرتالا لگا دیا۔ ایسا گ رہا تیا کہ جہسے وسے کسی مرغی اُنھوا بطخ کو کھاورے میں بند کر رہے ھیں ،

کچھ دن ہوئے واقب والیج نامک گاؤں کے آسامی یہ کہنے
کے لئے آئے تھے گد اُن کے ضلع میں اکال پڑا ہے ۔ اُنھوں نے میرے
بھائی کو سوچنا دی که رهاں گاؤں والوں نے ایک بڑے بدہ عاش
کو مار ڈالا اور اِس کے بعد اُن میں سے کچھ ایک نے اسے چھر
گر اُس کا ہودئے اور چکر مکال لیا ۔ اُنھوں نے اُن ڈکڑوں کو تلا
اور اُنھوں کہا ڈالا جس سے اُن میں ہمت پیدا ہو ۔ میں
اُن کے بیچ میں ہی برل پڑا ، آسامیوں اور میرے بھائی نے
بری طرح میری اور دیکھا ، اب میری سمجھ میں آیا کہ انہوں
نے میری اُرر اُسی پرکار دیکھا تھا جس پرکار باہور کے جھنڈ نے .

جب میں آسے سوچتا جوں تو چوئی سے ایمر آبتی تک مهر جانا هوں .

وے اس منشیہ کے بدیتری انگ کیا گئے . تو کیا وے صحیے ا عالیانکہ ؟

أس اِستری کے کتین پر وچار کیدیئے' کہی چاھتا ہے که تعجمے کئی بار دانتوں سے لات کیاؤں؛ اور اِس کتین کا اُس هنسی انہوا وروپ مکھ اور کیلے عوثے دانتوں والے منشیوں کے اُس جهند تنها اُسامیوں دوارا کی گئی اُسانهائی سے میالی کیجیئے۔ صاف منظور ہے نه یہ شہد ایک گھت سلامت تھے ، اُن کے شہدوں میں زور نها؛ اُن کی هنسی میں کتاریں تھیں ، اور اُن کی چمکھے ہوئے سنید دانتوں کی فطاریں پرکٹ کو رہی تھیں که وہ منشیہ بھکشی دانو عیں ۔

सात आदमी श्रीर भी थे जो मेरे बारे में काना-फूसी कर रहे थे. वे डर रहे थे कि कहीं मैं उन्हें देख न लूँ. सड़क के सारे श्रादमी बैसे ही थे. उनमें से एक खास तौर से करूर था. वह सीधे मेरी श्रार देखकर मुँह फाड़कर हँसा. मैं चोटी से लेकर एड़ी तक काँप उठा. मैं जानता हूँ कि उन्होंने पूरी तैयारी कर ली है.

लेकिन मैं हरा नहीं. मैंने सड़क पर घूमना जारी रक्खा. वहाँ बबों का एक मुन्ड था. वह भी मेरे बारे ही में बातें कर रहा था. उनके मुख का भाव वैसा ही था जैसा कि बड़े चात्रों का. उनके मुख विरूप थे. मैं सोचने लगा, 'छाटे बबों से मेरी क्या दुश्मनी है जिससे ये भी इस प्रकार के हैं ?' बरबस मैं चिस्ला उठा, 'तुम लोग मुफे बतास्रों!' इस पर वे सब भाग गये.

मैं संचित लगा, 'बड़े बाबो श्रीर मुममें क्या दुश्मती है ? मुममें श्रीर सड़क के मतुष्यों में क्या दुश्मती है ?' सिवाय इसके कि बीस वर्ष पूर्व मुमसे श्री कु चिड का कुत्ता कुचल गया था श्रीर इससे श्री कु चिड बहुत चिढ़ गये थे. गो। क बड़ा चाश्री उन्हें नहीं जानता तो भी उसने इसके बारे में सुना होगा श्रीर उसी श्रपमान का बदला लेना चाहता है. इसी ने सड़क के मतुष्यों को मेरा शत्र बना दिया है. परन्तु बच्चों के बारे में क्या कहा जाय ? उस समय तो वे पैदा भी नहीं हुए थे. फिर वे मेरी तरफ श्रांखें फाड़-फाड़कर क्यों घूरते हैं जैसे कि वे मुमसे डरते हों अथवा इसी से मैं डरता हूँ. इसी से मुमें बेहद अचरज श्रीर दु:ख होता है.

श्रव मैं समक गया—उनके माता-िपता ने उन्हें ऐसा वर्ताव करने के लिए कहा है।

3

रात को मैं सो नहीं पाता हूँ. किसी बात को समभने के लिये पहले उस पर छान-बीन करना जरूरी हो जाता है. वे मनुष्य—उनमें से कुछ को मजिस्ट्रेट ने दएड दिये हैं, कुछ जनसाधारण द्वारा चाँटे ला चुके हैं, कुछ की पित्याँ साधारण कोटि के मनुष्यों की गालियां ला चुकी हैं, कुछ के माता-पिता महाजनों (ऋण दाताओं) द्वारा मार डाले गये हैं; लेकिन इतनी बड़ी-बड़ी मुसीबतों के समय भी ये ऐसे डराबने नहीं दिखाई दिए जैसे कि कल दिखाई दे रहे थें—आरे उस समय न तो ये इतने कुर ही थे.

कल सड़क पर सब से क्योदा अजीव तो वह स्ती थी. चसने यह कहते हुए अपने लड़के की चाँटा मारा, 'जी चाहता है कि तुम कई बार दांतों से काट खाऊँ, तभी मेरा गुस्सा शान्त होगा'. लेकिन जब बह यह कह रही थी तब मेरी आर देख रही थी. سات آدمی آور بھی تھے، جو مھرے بارے میں کانا چھوسی کو رہے تھے

ہے در رہے تھے کہ کہیں میں انھیں دیکھ نماری ، سڑک کے سارے

آدمی ریسے ھی تھے ، اُن میں سے ایک خاص طور سے کرور تھا ،

ہۃ ۔ یدھے مھری اور دیکھ کہ منھ چھاڑ کر ھنسا ، میں چوٹی سے

اے کر ابڑی تک کانپ اٹھا ، میں جانتا ھیں کہ انھیں نے چوری

تیاری کرلی ہے ،

ایکن موں ڈرا نہیں ، میں نے سرک پر گھومنا جاری رکھا ، رھاں بحجوں کا ایک جہاڈ تھا ، وہ بھی مورے بارے ھی میں باس کر رھا تھا ، اُن کے مکھ کا بھاؤ ویسا ھی تھا جیسا کہ بوے واؤ کا ، اُن کے مکھ وروپ تھے ، میں ۔وچنے لگا' 'چہوئے بحص سے یہ بھی اِس پرکار کے ھیں آ ' بربس میں چا اُ آھا' 'نم لوگ مجھے بتاؤ ا' اِس پر وے سب بیاگ گئے ،

میں سرچنے لگا' 'بڑے چاگ اور مجھ میں کیا دشمنی ہے ؟

اجھ میں اور سڑک کے منشیوں میں کیا دشمنی ہے ؟

اس کے بیس ورش پورو مجھسے شری کو۔چیگ کا کتا کچل گیا

تیا اور اِس سے شری کو۔چیگ بہت چڑہ گئے تھے . گوکہ بڑا چاگ

انھیں نہیں جانتا 'و بھی اُس نے اِس کے بارے میں

سنا ہوگا اور اُسی ایمان کا بدلہ لھنا چا تا ہے . اِسی نے سڑک

کے منشیرں کو مھوا شقرو بنا دیا ہے . پونتو بچوں کے بارے میں

نیا کہا جائے ؟ اُس سے تو وے پیدا بھی نہیں ہوئے تھے . پور

دے میری طرف آنکھ پھاڑ پھاڑ کر کیوں گہورتے بھی جیسے که

وے مجھسے قرتے ہوں آنھوا اِسن سے میں قرنا ہوں . اِسی سے

مجھے بےحد اُچرے اور دیم ہوتا ہے .

اف موں سمجھ کیا۔ أن كے ماتا پتانے أنهيں ايسا برتاؤ كرنے كے لئے ديا هے!

2

کل سڑک پر سب سے زیادہ عجیب تو وہ استری تھی ۔
اُس نے یہ کہتے ہوئے اپنے لڑکے کو چانٹا مارا کے چانٹا ہے کہ
تجھے کئی بار دانٹوں سے کانے کھاؤں ۔ تبھی میرا غصہ شائت
ہوٹا لیکن جب وہ یہ کہہ رہی تھی تب میری اُرر دیکھ
رھی تھی ۔

दिया और आरबासन देते हुए पुनः सूचित किया कि अव उसका भाई बिल्कुल ठीक हो गया है और इस समय द्वतर के एक काम से बाहर गया है. इसके बाद वह खिल-खिलाकर हँस पड़ा और उसने मुक्ते अपने भाई की वह द्वायरी दिखाई जिसे वह अरने पागलपन में किखा करता था. शायद यह डायरी मेरे मित्रों की किंच का विषय बन सके.' यह कहते हुए उसने मुक्ते वह डायरी दे दी.

मैं पढ़ने के लिये डायरी घर ले आया. मुक्ते उससे पता चला कि मेरे मित्र को 'परिपीइन-भ्रम' का रोग था. डायरी की भाषा में न स्पन्टता थी और न क्रम. स्थान-स्थान पर उसमें बेलगाम श्रीर वे सिर-पैर की बात लिखी थीं. हायरी में कहों पर भी तारीख न थी और न उसकी स्याही अथवा लेख ही एक से थे. इन बातों से मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि यह एक साँस में एक ही बार बैठकर नहीं लिखी गई थी. परन्तु (कर भी सम्पूर्ण डायरी में एक तुक, एक तथ्य, दिखाई देता है. इसी से मैं उस डायरी की एक नकल तैयार कर रहा हूँ. इसे मैं दिमारी रागों के विशेषज्ञां के सामने रखना चाहता हूँ. डायरी में लिखे हुए मनुष्यों के नामों का ही मैंने बदला है, गोकि वे सभी नाम मेरे गाँव के मनुष्यों के ही थे जिन्हें बाहर की दुनिया का काई भी मनुष्य नहीं जानता. इनकं अलावा डायरी का एक शब्द भी मैंने नहीं बदला. इससे डायरी के शेष मूल में कोई अन्तर नहीं आया है. जहाँ तक इसके शीर्षक का प्रश्न है, उसे स्वयं मेरे मित्र ने बीमारी से छुटकारा मिलने के बाद दिया है और उसे बदलने का कोई कारण नहीं दिखाई देता.

> ८ अप्रैल 2 अप्रैल गणतन्त्र का सातवाँ वर्ष (अर्थात् 1918)

श्वाज शाम का चन्द्रमा बड़ा चमकदार है. इस प्रकार का चन्द्रमा मैंने पिछले 30 वर्षों में नहीं देखा. श्राज इसे मैंने देखा श्रीर इससे मुमे एक श्रजीव ताजगी का श्रनुभव हुआ. तब मुमे झात हुआ कि मेरे बीते हुए जीवन के तीस वर्ष से .ज्याहा का समय सिर्फ एक सपना रहा है. लेकिन मुमे बहुत ही होशियार रहना चाहिए. नहीं ता—नहीं तो चाशा के कुत्ते ने मेरी तरफ इस प्रकार क्यों देखा १ श्रीर कई थार!

श्राज रात की चन्द्रमा नहीं निकल'. मैं जानता हूँ कि इब श्रानिष्ट होने वाला है. श्राज सबेरे बाहर जाते समय में बड़ा सावधान था. बड़े चाश्रो की मुख-मुद्रा बड़ी श्राजीव श्री. वह मुक्तसे ढरा हुआ सा मालून होता था, जैसे कि वह मेरी इब हानि करना चाहता हो. उसके श्रलावा छ:—

یا اور آشواسی دباتے هوئے پاتے سوچت کیا کہ آپ آس کا ہائی بالکل ٹھیک ہو گیا ہے اور اس سے دفار کے ایک ام سے باهر گیا ہے ۔ اِس کے بعد وہ کہ کیا کو هنس پرا اور اُس لے مجھے اپنے بھائی کی وہ ڈابری دکیائی جسے وہ اپنے پاگلیں بین لکھا کرتا تھا ۔ شاید یہ ڈائری میرے معوم وہ ڈائری وچی کا وشے بین سکے؛ یہ کہتے ہوئے اُس نے مجھے وہ ڈائری دی ۔

میں برمنے کے لئے ڈائری گھر لے آیا . سجھے اُس سے بته چا که میدے مثر کو اپرییزن بهرما کا روگ تها. قایری کی بهاشا میں نع اسیشقنا تھی اور نه کرم استهان استهان پر اس میں بےلگام اور بے سر پیر کی باتیں لکھی تھیں . خابری میں کہیں پر بھی تاریخ نہ تھی اور نہ اُس کی سیاھی اُتھوا لیکھ عي أيك سه تهم . إن بانون سه مهن إس نارحي بر يهامجا که یه ایک سانس میں ایک هی دار بیٹه کر نہیں اعهی تئی آھی۔ پوئٹو پھر بھی سمھاری ڈایوی سیں ایک تک ایک تعیما دعمائي دينا هـ . إسى ص من أس ذائري كي أيك نقل تيار کو رہا ہوں ۔ اِسے میں دماغی روگوں کے بشیشکھوں کے سامنے رکینا چاھتا ھوں . تاہوی میں المه ھوٹ منشیوں کے ناموں کو ھی میں نے بدلا ہے گرکه وے سبھی نام میرے گاؤں کے مشیسی کے می تھے جنہیں باہر کی دنیا کا کوئی بھی منشیم فہیں جانتا ، اِس کے عالم داری کا ایک تبد بھی میں لے نہیں بدلا ، اِس سے دایری کے شیش مول میں دوئی انتر نہیں آیا ہے ۔ جہاں نک اِس کے شیرشک کا پرشن ہے، اسے سوئم میرے متر نے بیماری سے چھٹکارا ملنے کے بعد دیا ہے اور اُسے بدلانے کا كوئى كازى نبهين دكهائي ديتا .

2 اپريل گن تنتر کا سانواں ورع*ی* (ارتبات 1918)

آج شام کا چندرماں بڑا چددار ہے ۔ اِس پرکار کا چندرماں میں نے بچھلے 30 ورشی میں نہیں دیکھا ۔ آج اِسے میں نے دیکھا اور اِس سے مجھے ایک عجیب نازگی کا انوبیو ہوا ۔ تب مجھے کیات ہوا کہ میرے بیتے ہوئے جیوں کے نیس ورش سے زیادہ کا سیے صرف ایک سینا رہا ہے ۔ لیکن مجھے بہت ہی موشیار رہنا چاہئے ۔ نہیں نوسانیس تو چاؤ کے نتے نے صوری طرف اِس پرکار کیوں دیکھا 8 اور نئی بازا

2

آج رأت کو چندرماں نہیں نکلا میں جاننا ہوں کہ کچھ آئٹش ہونے والا نے ۔ آج سویرے باہر جاتے سے میں ہزا ساؤیمان بھا ۔ بڑے چاؤ کی ماہ مدرا بڑی عجیب تھی ۔ وہ مجسے کرا ہوا سا معلوم ہوتا نھا جیسے کہ وہ میری کچھ ھائی کرنا چاہتا ہو ۔ اُس کے علوہ چھسے

"मगर इस बीच थीं कहाँ तुम ?"

कई शहरों के नाम उन्होंने बताए—कुछ इस तरह गोया बहुत पहले मूली किसी बात को याद करने की कोशिश कर रही हैं. और इस बीच बराबर किसी बाज की तरह सारे कमरे में बरौर जरा भी आवाज किये चक्कर काटती रहीं.

"बह पोशाक कहाँ से मिली ?"

"मैंने ही बनाई है. अपने सारे कपड़े मैं ही बनाती हूँ." यह सोचकर मुक्ते अच्छा लग रहा था कि वह औरों से मुख्तिलिक हैं. लेकिन अफसोस यही था कि वह बोलती बहुत ही कम थीं. जब तक मैं कुछ पूछता नहीं था तब तक अमूमन वह चुप्पी हो साधे रहती थीं.

अब वह फिर आकर मेरे पास कोच पर बैठ गईं और खुपचाप, एक दूसरे से चिपटे हम दोनों उसी तरह बैठे रहे—जब तक कि नाना-नानी लौट नहीं आए. वह लोग जब आए तब उनमें से मोम और धूपबत्ती की महक आ रही थी, और एक अजीब सी संजीदगी और मिठास थी उनके बरताव में.

रात का खाना हम लागों ने त्ये हारों के दिन की तरह खाया—वैसी ही संजीदगी के साथ और खाते वक्त बहुत ही कम बाले और इतने धीरे-धीरे गाया बहुत ही हलकी नींद कोई साया हुआ है, जिसके जग जाने का डर है.

-- अनुवादक, श्री सुमंगल प्रकाश

ودمر اس بدج تهیں کہاں تم ? "

کئی شہروں کے نام اُنھوں نے ہتائے۔۔۔اُنچہ اِس طرح گویا ہے۔ پہلے بھولی کسی بات کو یاد کرنے کی کوشش کر رھی ھیں ، اور اِس ببچ ہرابر کسی باز کی طرح سارے کمرے میں بنیر ذرا ھی آراز نئے چکر کاٹٹی رھیں ،

''وہ ،وشاک کہاں سے ملی ؟ ''

"مينے هي بنائي هے ، اپنے سارے کپڑے مدن هي بناتي عبن ."

یه سوچکر مجھے اچها نگ رها تها که وه اوروں سے مختلف هیں ، لهکن انسوسیهی تها که وه بولتی بهتهی کم تهیں، جب تک میں کچه پوچهتا نهس کها تب تک عموماً وه چهی هی سابھ رمکی تهیں ،

اب وہ پھر آئر مھردپاس کرچ پر بیٹھگٹیں اور چپ چاپ ایک دوسرے سے چپٹے ہم دونوں آئی طرح بیٹھے رہے۔جب تک کہ ثانا۔نائی لوگ نہیں آئے ، وہ لوگ جب آئے تب آن میں سے موم اور دھوپ بتی کی مہک آرھی تھی' اور ایک عجیب سی سنجیدگی اور مٹھاس تھی اُن کے برتاؤ میں ،

رات کا کھانا ھم لوگوں نے تیوھاروں کے دین کی طاح کھایا۔۔
ریسی ھی سنجیدگی کے ساتھ اور کھاتے وقت بہت ھی کم بولے
اور اِبنے دھیوے دھورے گویا بہت ھی ھلکی نیند درئی سو یا
ھوا ھے جسے کے جگ جانے کا قو ھے۔

ــانوادك، شرى سومنكل پركاش.

एक पागल आदमी की डायरी

श्री तुइ सुन

दो भाई थे. यहाँ उनके नाम बताना जरूरी नहीं हैं.

मिखिल स्कूल में वे दोनों मेरे गहरे दोस्त रह चुके थे. लेकिन
इधर पिछले बहुत वर्षों से हम लंग अलग-अलग हो गये
थे. इससे उन दोनों भारयों के बारे में मिलने वाले समाचार
भी बराबर कम होते गये। लेकिन कुछ दिन पहले,
अनानक मुभे खबर मिली कि उनमें से एक बहुत बीमार
हा गया था. इसलिये जब मैं अपनी जन्म-मूमि वापस आया
तो बिरोपतया उन्हें देखने गया. वहाँ बड़े भाई ने मेरा स्वागत किया और यह बताया कि उसका छोटा भाई बीमार
था, अपने घर पर आने के लिये उसने मुभे धन्यवाद

ایک پاگل آلمی کی تایری

شرى لوئى سن

دو بھائی تھے ۔ یہاں اُن کے نام بنانا ضروری فہیں ھیں ۔
مثل اسکرل میں وے دونوں میرے گہرے دوست را چیا تھے ،
لیکن اِدھر بچھلے بہت ورشوں سے ھم اوگ الگ الگ ھو گئے
تھے ۔ اِس سے اُن دونہر بھائیوں کے بائے میں مانے والے سماچار
آیی براور کم ھوتے گا ۔ لیکن کچھ دن پہلے اُچاک منجھے
خبر ملی که اُن میں سے ایک بہت بیمار ھو گیا تھا ۔ اِس لئے
جب میں اپنی جام بھومی واپس آیا تو وشهشتیا اُنھیں دیکھنے
جب میں اپنی جام بھومی واپس آیا تو وشهشتیا اُنھیں دیکھنے
اُن کا جُھوا ھائی بھمار تھا ۔ اُنے گھر پرآلے کے لئے اُس لے منجھے دھایکوان

श्रीर कुछ देर तक वह संजीदगी और कड़ाई के साथ मुक्तमे बातें करती रहीं; लेकिन उन्होंने जो कुछ कहा वह मेरी समक्त में नहीं श्राया और वह उठ खड़ी हुई और श्रपनी ठाड़ी पर उँगलियाँ मारती हुई कमरे में टहलने लगा—उनकी घनी भौंहें कभी तन जातीं, कभी ढोली पड़ जातीं.

मेज पर जलती हुई मोमकत्ती पिघलती चली जा रही थी श्रीर शीशों में उसका श्रवस जगमगा रहा था, कर्श पर काली काली परछाइयाँ लाट रही थीं, कोने में मूर्जि क श्रागे रोशनी जल रही थी श्रीर बर्क से ढकी हुई खिड़िकयों के शीशों पर चाँदनी ने चाँदी कर दी थीं. माँ चारों तरफ इस तरह देख रही थीं गोया नक्की दीवारों या छत पर कुछ हुँद रही हों.

"सोने का क्या बक्त है तेग ?"

"थोड़ी देर और रहने दो मुक्ते यहाँ !"

'श्रो हाँ, आज दिन में भी तो थोड़ा सो लिया है', उन्हें याद आया.

"वया तुम फिर चली जाना चाहती हो ?' मैं उनसे पृक्ष बैठा.

''कहाँ ?'' वह चौंक सी पड़ीं, घौर मेरा सिर ऊपर को उठाकर मेरी तरक इतनी देर तक ताकती रहीं कि मेरी आँखों में आँसू आ गये.

"क्या बात है रे ?" उन्होंने पूछा.

"गरदन दुख रही है".

दिल भी दुख रहा था मेरा, क्योंकि यकायक मैं यह समम गया था कि वह हमारे घर नहीं रहेंगी और फिर चली जायेंगी.

"अपने बाप-सा होता जा रहा है तू", पायदान को टोकर से एक तरफ का हटाते हुए वह बोलीं. "उनके बारे में कुछ बताया है तुमो—तेरों नानी ने ?"

"官".

"वह मैक्सिस को बहुत प्यार करती थीं—बहुत ही क्यादा. और वह भी जन्हें प्यार करते थे—"

"मैं जानता डूँ."

माँ मोमबत्ती की तरफ देखने लगीं और उनकी भौंहें सिकुड़ गई'. फिर उन्होंने उसे बुका दिया और कहा—''अब ठीक है.''

सचमुच इससे हवा में ताजगी और उम्दगी आ गई, और काली-काली परछाइयाँ गायब हो गईं. लगह-जगह फ्री पर तेज दूधिया रोशनी बिखर गई और खिड़की के रिप्रों पर सुनहरे दाने चमक उठे. اور کچھ دیر نک وہ سنجیدگی اور کرائی کے ساتھ مجھسے ہائیں کرتی رھیں ؛ لیکن اُنھوں نے جو کچہ کہا وہ معربے سمجھ میں نہوں آیا اور وہ اُٹھ کہتی ہوئیں اور اپنی ٹھرتی پر اُٹھائیاں مارتی ہوئیں کمرے میں ٹہلنے لکیں۔۔اُن کی کہنی بھوئیدں کبھے تی جانیں ؛ کبھی تامیلی پر جانیں ،

مهر پر جلتی هوئی موم بتی پاپلتی چلی جا رهی تهی اور شیشہ میں اس کا عکس جکمگا رها تها فرض پر کالی کالی پرچہائیاں لوت رهی تهیں ، کولے میں مورتی کے آگہ روشنی جل رهی تهی اور برف سے تھائی هوئی کھڑکورں کے شیشوں پر چاندنی لے چاندی دو دی تهی ، ماں چاروں طرف اِس طرح دیکھ رهی تهیں گویا ندگی دیواروں یا چھت پر کچھ تامونده رهی هوں ،

وأسون كا كيا وقت هے تيرا ؟ "

"نهوري دير أور رهنه دو مجهد يهل !"

''او ھاں' آج دیں میں بھی تو تھررا سو لیا ہے' '' انھیں یاد آیا .

''کیا تم پهر چلی جانا چاهتی هو ؟ '' مهر اُن سے پوچه یتھا .

در دران و ، وه چونک سی پرین، اور میرا مر آرپر کر آنها کر میری طرف اِتنی دیر تک نانگی رهین که میری آنکهون مین آنسو آگئے ،

وونيا بات هے رہے ؟ " أنهوں نے پوچها .

"گردن دکھ رھی ھے ۔''۔

دن بهی دکه رها تها میرا کیونکه یکایک میں یه سمجه گیا تها که وه همارے گهر نهیں رهینگی اور پهر چلی جائیس کی .

' اپنے باپ۔سا ہوتا جا رہا ہے تو '' چائدان کو تھودر سے ایک طوف کو ہتاتے ہوئے وہ بولیں۔۔''اُن کے بارے میں کچھ بتایا ہے تجھے۔۔تیری نانی نے ''

"هان ."

''وہ میکسس کو بہت پیار کرتی تھیں۔۔۔ہہت ھی زیادہ ۔ اور وہ بھی اُنھیں پیار کرتے تھے۔۔۔'' ''میں جانگا ھوں ۔''

ماں موم بتی کی طرف دیکھنے لگیں اور اُن کی بھو نہیں سکو گئیں ، پھر اُنھوں نے اُسے بجھا دیا اور کھا۔"اب اُنھیک ہے ۔"

سپے سپے ایس سے ہوا میں تازکی اور عمدگی آ گئی' اور کالی پرچہائیاں غایب ہو گئیں . حکہہ جکہہ فرض پر تیز دودھیا روشنی بکور گئی اور کوڑئی کے شیشوں پر سنہرے دائے جبک آئیے .

शाम को नाना जी और नानी अपनी मंजों से उन्दा पोशाक पहनकर 'वेश्पर्स' की दुआ के लिये गिरजाघर चल दिए. नानाजी रंगसाजों के मुंखया की अपनी वर्दी में चमचमा रहे थे, जिसके अपर रोयेंदार अनी लबादा पड़ा हुआ था, और उनकी तोंद शान के साथ बाहर को निकली हुई थी. चुलबुलाहट के साथ उनकी तरक आँखों का इशारा करके नानी मेरी माँ से बोलीं—''जरा देख तो बाबु जी को! कितने शानदार लग रहे हैं नं १—छोटे से बकरे की तरह फुरतीले". और माँ खिलखिला कर हँस पड़ीं.

जब माँ के कमरे में उनके साथ मैं अकेला रह गया तब वह कोच के उत्पर पालधी मार कर बैठ गई और अपनी बरात को तरक इशारा करती हुई बोलीं—'आ, यहाँ बैठ जा. अच्छा बता कैसा लगना है तुमे यहाँ ? अक्छा नहीं लगता, क्यों ?"

"कैसा लगता है मुक्ते यहाँ १" कैसा सवाल था यह ! वैने जवाब दिया—"मैं क्या जानूँ",

"नाना जी पीटते हैं तुमे, क्यों ?"

"श्रव उतना नहीं पीटते !"

"ओह ?—अच्छा, अब मुक्ते अपनी सारी वार्ते सुना —जा कुछ कहना चाहता हो कह डाज—हाँ, तो ?"

नाना जी के बारे में मैं उनसे कुछ नहीं कहना चाहता था. इसिलये मैं उन्हें उस भले आदमी की बाते सुनाने लगा जो अपर की काठरी में रहा करता था और जो किसी को भी अच्छा नहीं लगता था और नाना जी ने जिसे निकाल दिया था. पर मैं समफ गया कि यह गतें उन्हें अच्छी नहीं लग रही थीं, क्योंकि वह बोलीं—''ठीक, और बातें सुना''.

उन तीन लड़कों की बात मैंने कही और किस तरह उस कनल ने अपने ऋहाते से मुक्ते निकाल बाहर किया था, यह भी सुनाया. और यह सब सुनते-सुनते उन्होंने मुक्ते अपनी बाँहों में और भी कस लिया.

'यह क्या बहुदा बाते !'' उनकी आँखें जल उठीं, श्रीर एक मिनट तक फर्श की तरफ वह चुपचाप ताकती रहीं.

"नाना जी क्यों बिगड़ रहे थे तुमसे ?" मैंने पूत्रा.

"क्योंकि मैंने रालती की है, उनके हिसाब से".

"कि उस पच्चे को यहाँ नहीं लाई तुम-?"

वह गोया आसमान से गिरीं—एकदम चौंक पड़ीं, भौंहें सिकुड़ गई और अपने होंट काटने लगीं. फिर कह-कहा मारकर हूँ स पड़ीं और मुक्ते और भी कसकर विपटा के बोलीं—"तू तो बड़ा शैतान है रे! देख ख़बरदार, कभी किसी से नहीं कहना यह बात, समका ? कभी मुँह से न निकले—बस, भूल ही जा कि कभी यह बात सुनी थी". شام کو ناتا جی آور نانی آپلی مرضی سے عمدہ پرشاک پہن کر 'ویسھوس' کی دعا کے لئے گرجا گھر چل دبئے۔ ناتا جی رنگسازوں کے منہیا کی اپنی وردی میں چمچما رہے تھے' جس کے آوبو روئیں دار آوئی ابادہ بڑا ہوا تھا' اور ان کی تو ند مان کے ساتھ باھر کو نکلی ہوئی تھی ۔ چلباللہ کے ساتھ ان کے ساتھ ان کے ساتھ ان کے ساتھ ان کر خراف آئکھوں کا اِشارہ کر کے ناتی میری ماں سے بولیں۔ ''ذرا دیکھ تو باہو جی کو اِ کتنے شاندار لگ رہے ھیں نہ ہے۔ چھوٹے سے بموے کی طرح پھرتیلے '' اور ماں کیلکھ کو ھنس دیا ہے۔

جب ماں کے کمرے میں ان کے ساتھ میں اکیلا رہ گیا تب رہ کوچ کے آوپر بالتھی مار کر بیٹھ گئیں اور اپنی بنل کی طرف اشارہ کرتی ہوئی بولیں۔۔"آ' یہاں بیٹھ جا ۔ اچھا بتا کیسا انتقا ہے تجھے یہاں ؟ اچھا نہھں انتقا کھوں ؟ "

نانا جي بيئت هين تجي کيون ""

"اب أتنا نهين بيلته ! "

"أوه 9 — إچها أب مجه أيني سارى باتين سنا— جو كهه كهنا جاهنا هو كه، ذال— هان تو 9 "

نانا جی کے بارے میں میں اُن سے کچھ نہیں کہنا چاھٹا تھا۔ اِس لئے میں اُنھیں اُس بیلے آدمی کی بانیں سنانے لگا جو اربر کی کوئھری میں رھا کرتا تھا ارر جو کسی کو بھی اچھا نہیں لکتا تھا اور ناناچی نے جسے نکال دیا تھا ، پر میں سمجھ گیا تھ یہ باتیں اُنھیں اچھی نہیں لگ رھی تھیں' نیود کھ وہ برایور ۔۔۔''ٹھیک' اور باتیں سنا ۔''

آن قسی لوکوں کی بات مہنے کہی اورکس طرح اُس کوئل فی این احاطے محصد نکال باعر دیا تھا یہ بھی سنایا ، اور یہ سب سنتے اُدھوں نے مجھے اپنی بانہوں میں اُور بھی کس لیا ۔

دید کیا بهرده بانیں! " أن كى أنكهیں جل أقهیں ارد ایک منت تک فرص كى طرف ولا چپ چاپ تاكتى رهیں .

> رانانا جی کیوں بکر رہے تھے تم سے ؟ '' میلے پوچھا ۔ ''کیونکہ میلے فاطی کی ہے' اُن کے حساب سے ۔''

"کے اس بچے کو یہاں نہیں لائیں تم۔ آ

وہ گریا آسان سے گریں۔ایعدم چونک پڑیں' بھرنہس مکر گئیں اور اپنے ھونٹ کاٹنے لکیں ، پھر قبقیہ مار کر ھنس بڑیں اور مجھے اور بھی کس کر چھٹا کے بولیں۔''تو تو ہڑا شیطان ھے رے ا دیکھ خبردار' کبھی کسی سے نہیں کہنا یہ بات' مسجھا آ کبھی منہ سے نہ نکانے۔ بس' بھول ھی جا کہ کبھی یہ بات سنی تھی ۔''

(106)

बाव में अपने को रोक नहीं सका—मेरे ऑसू किसी तरह भी नहीं दक रहे थे—और में तन्दूर पर से नीचे कूर पड़ा और उनके पास दौड़ गया. मेरी आँखों से ख़ुशी के आँसू वह रहे थे—यह देखकर कि इतनी अजीव और गहरी मोहब्बत के साथ नाना-नानी एक दूसरे से गुफ़तगू कर रहे हैं और मेरे आँतू इस लिये भी बह रहे थे कि उनकी बातें सुनकर मुक्ते रंज हो रहा था, और इस लिए भी कि मेरी माँ आ गई थीं और फिर आख़िर में इस लिए भी कि उन्होंने मुक्ते—आँसुओं समेत लेकर अपनी छाती से लगा लिया. उन्होंने मुक्ते कसकर चिपटा लिया और मेरे साथ ख़ुद भी रोते लगे.

बड़ी धीमी आवाज में बुदबुदाते हुए से नाना जी मुमले कहने लगे—"ता तू यहाँ था, शैतान की दुम! ले, तेरी माँ फिर छा गई है और अब तो हमेशा तू उसी के पीछे लगा फिरेगा न, क्यों ? और बूढ़े खूसट नाना जी अब जाँय भाड़ में ! है न यही बात ? और नानी ने ता बिल्कुल चौपट ही कर दिया है तुमे...सो वह भी नहीं, चाहिये अब—क्यों ? धत तेर की !"

हमें हटाकर वह उठ खड़े हुए और ऊँची आवाज में गुस्से के साथ बाले—सबके सब छोड़ते जा गहे हैं हमें— सब मुँह फेरे ले गहे हैं हमारी तरफ से,—ता फिर बुला लाओ उसे अब, देर क्यों करती हो १ जल्दी करी !"

नानी बावरचीखाने से चली गई, श्रौर नाना जी काने में जाकर सिर मुकाए खड़े हो गए.

"या ,खुदाए करीम !" उन्होंने बुद्युदाना ग्रुष्ट किया 'देख—तू ता हमारे दिल की सब जानता है !" श्रीर श्रपने सीने पर उन्होंने एक घूँसा मारा.

यह सब मुक्ते अञ्चा नहीं लगा. असल में ख़ुदा से दुआ करने का उनका तरीका ही मुक्ते बहुत बुरा लगता था, क्योंकि अपने बनाने वाले के आगे भी गोया वह अपने ही को बड़ा समक्ते थे.

जब माँ अन्दर आई तब उनकी लाल पाशाक से सारा बादरची खाना रोशन हो गया, श्रीर जब वह मेज के श्रामे नाना जी और नानी के बीच में बैठ गई तब उनकी पोशाक की बौड़ी-चौड़ी ढीली बाँहें नाना जी और नानी जी के कन्धों पर लहराने लगीं. वह अहिस्ता-श्रहिस्ता संजीदगी के माथ कुत्र सुनाने लगीं, श्रीर वे दोनों भी चुपचाप, बीच में दख़ल देने की कोशिश किए बगैर, इस तरह मेरी माँ की बात सुनने लगे गोया बही उनकी माँ है और वे उनके बच्चे!

जोश के सबब से मैं इतना थक गया था कि कोच पर

آپ میں اپنے کو روک ٹیھی سکا سمیرے آئسو کسی طرح بھی ٹیمیں رف رہے تھے ساور میں تدور پر سے ٹھنچے کود پڑا اور آن کے پاس دور گھا۔ میری آنکھوں سے خوشی کے آئسو بہت رہے تھے دیتھ کو کہ اِتنی عجیب اور گھری متحبت کے ساتھ نانا ناتی ایک دوسرے سے گفتگو کو رہے ھیں اور میرے آئسو اِس لئے بھی بہت رہتے کہ آنکی باتھی دین کو منجھے رئیج ھو رہا تھا اور اس لئے بھی که میری ماں گئی تھیں اور پھر آخیر میں اِس لئے بھی که انھوں نے منجھے سائسوؤں سمیت اُخیر میں اِس لئے بھی که انھوں نے منجھے سائسوؤں سمیت اُخیر میں اِس لئے بھی کہ انھوں نے منجھے سائسوؤں سمیت اُنکور اپنی چھاٹی سے لگا لیا ، آنھوں نے منجھے کس کو چھٹا لیا اُور میرے ساتھ خود بھی رونے لگے ،

بڑی دھیمی آواز میں بدیداتے دوئے سے نانا جی مجہسے کہلے لگی۔ اثر تو یہاں تھا' شیطان کی دم الے تیری ماں پھر آگئی ہے اور اب تر مدیشہ تو اُسی کے پیچھے لگا پھریگا نہ' کیوں ؟ اور بوڑھ کیوسٹ نانا جی اب جائیں بھاڑ میں ا ہے نہ یہی بات ؟ اور نانی نے تو بالکل چوپٹ ھی کو دیا ہے تجھے۔۔۔۔۔سو وہ بھی نہیں چاہئے اب کیوں ؟ دھت تیجھے۔۔۔۔سو وہ بھی نہیں چاہئے اب کیوں ؟ دھت تیجھے۔۔۔۔سو وہ بھی نہیں چاہئے اب

همیں مثا کر وہ 'ٹھ کھڑے ہوئے اور اونچی آواز میں غصہ کے ساتھ بولے۔''دس کے سب چھوڑتے جا رہے میں عمیں۔سب ملھ پھیرے لے رہے میں مماری طرف سے ۔ ۔تو پھر بلا لاؤ اسے اب دیر کیوںکرتی ہو 8 جلدی کرو !''

فائمی باروچی خانے سے چابی گئیں' اور نائا جی کولے میں جا کو سر جھکاٹے کبڑے ہو گئے .

"ایا خدائے کریم!" أنهوں نے بدیدانا شروع کیا "دیکھے۔ تو تو عمارے دل کی سب جانتا ہے!" أور أپنے سینے پر أنهوں نے ایک گھرنسہ مارا ،

یہ سب مجھے اچہا نہیں لگا ۔ اصل میں خدا سے دعا کرنے کا آن کا طبیقہ سی مجھے بہت برا نکتا تھا کیونکہ اپنے بنانے والے کے آکے بھی گویا وہ اپنے ھی کو بڑا سمجھتے تھے .

جب ماں اندر آئیں تب ان کی ال پرشاک سے سارا باورچی خانہ روشن ھو گیا' اور جب وہ میز کے آگے ناتا جی اور نانی کے بدیج میں بدیّا تکئیں تب ان کی پوشاک کی چورّی چورّی تعیلی باعیں نانا جی اور نانی جتی کے کندھیں پر لہوائے لکیں، وہ آعست آھستہ سنجیدگی کے ساتھ کچھ سالے لگیں' اور وہ دوئوں بھی چپ چاپ' بدیج میں دخل دینے کی کوشش کئے بغیر' اِس طرح میری ماں کی بات سننے لگے گویا وھی اُن کی ماں ہے اور وے اُن کے بچے !

جوش کے مبب سے میں اِننا تیک گیا تیا که کوچ پر بیٹھے بیتھ می مجھے گہری نیند آ گئی ،

'बाबू जी' माफ कर दो उसे ! ईसामसीह के लिये, माफ कर दो उसे ! क्या इस तरह उसे छोड़ ही दोगे बिलकुल ? क्या तुम्हारा ख्याल है कि बड़े आदमियों और रईसों के घर ऐसी बार्ते नहीं होतीं ? जानते हो कि औरतें कैसी होती हैं. देखा, माफ करदो उसे इस बार ! ग़लती किससे नहीं होती बाबू जी ?"

नाना जी ने दीवार के सहारे अपनी पीठ टेककर नानी की तरफ देखा. और फिर कड़वी हाँसी हाँसकर —हाँसे क्या, रोना भरा था इस हाँसी में —बह भुनभुना इठे— "और १ फिर इसके बाद १ कोई भी है ऐसी राजती जो तुम माफ न कर दो १ क्यों १ अगर तुम्हारी चल सके तो सभी को माफी मिल जाया करें "धन् तरे की."

खौर नानी के ऊपर मुक्कर, उनके दोनों कंधे पकड़कर वह उन्हें हिलाने लगे खौर जल्दी-जल्दी फुसफुसाते हुए बोले"लेकिन तुम क्यों इनती परेशान हो? मेरे अन्दर रहम नहीं रह गया है जरा भी. देखा न, बिलकुल क्रज में पैर लटकाए बैठे हैं हम लोग, फिर भी इस बुढ़ापे में सजा ही सजा अगतनी पड़ रही है! न जरा भी चैन मिल पाता है न सुख… खौर न कभी मिलेगा अव… खौर इसके अलावा… देख लेना तुम! "मरने के पहले भीख माँगने की नौबत आएगी —हाँ भीख!"

नानी ने उनका हाथ अपने हाथ में ले लिया, और उनकी बग़ल में बैठी-बैठी धीरे-धीरे हँसती हुई बोर्ली— "अरे, छि: छि: ! तो भीख माँगने से घवड़ाते हो तुम ? अच्छा मान लो, इस भीख माँगने की ही नौबत; आ गई! तुम्हें कुछ नहीं करना पड़ेगा तब, तुम घर में बैठे रहा करना और मैं भीख माँग लाया करूँगी.—हमारा घर तब भी भरा-पूरा रहेगा; इसकी फिक तुम विरुक्कल छोड़ दो!"

वह अचानक क्रहक़हा मारकर हँस पड़े श्रीर बकरे की तरह श्रपना सिर हिलाने लगे श्रीर फिर उन्होंने नानी की गरदन पकड़कर उन्हें श्रपने सीने से लगा लिया, बिल्कुल जरा से श्रीर सिकुड़े-सिकुड़ाए से लग रहे थे वह नानी की बराल में!

"ओह, कैसी नादान हो तुम," वह बांल उठे "कितनी भोली भाली!— वस, अब तुम्हीं तो एक मेरी रह गई हो! तुम सममती नहीं हो न कुछ, इसीलिये किसी भी बात की घवड़ाहट नहीं होती तुम्हें. लेकिन पीछे थे फिर कर देखें। जरा— और सोचो तो, कि कितनी मेहनत की है तुमने और मैंने इनके लिये—कैसे-कैसे गुनाह तक किये हैं मैंने इनकी ख़ातिर—लेकिन फिर भी, इतना करने पर भी, आज—" "باہو جی معاف کو دو آسے ! عیسی مسیدے کے لئے ا معاف کو دو آسے ! کیا اِس طرح آسے چھوڑ ھی در کے باکل ؟ کیا تمہارا خیال ہے کہ بڑے آدمیوں اور رئیسوں کے گھر آیسی باتیں نہیں ہوتیں ؟ جانتے ہو که عورتیں کیسی ہوتی ہیں ، دیکھو، معاف کو دو آسے اس بار ! فاطای کس سے نہیں ہوتی باہو جی ؟ ''

نانا جی نے دیوار کے سہارے اپنی پتیم قیک کر نانی کی طرف دیکھا ، اور پھر کوری ہنسی ہنسکر منسے کیا کرنا بھرا ہما اس ہنسی میں وہ بینبھنا آئے۔۔"اور آ پھر اِس کے بعد آ کہا یہی ہے ایسی فلطی جو تم معاف نہ کر دو آ کیں آگر تمهاری چل سکے تو سبھی کو معافی مل جایا کرے دیں آگر تمهاری چل سکے تو سبھی کو معافی مل جایا کرےدھت تیرے کی ۔"

ارر نائی کے آوپر جھک کو' اُن کے دونوں کندھے پکڑ کو ود اُنھیں ھلانے لگے اور جلدی جلدی پھسپھساتے ھوئے براہ ۔۔
''لیکن تم کیوں اِنٹی بریشان ھو آ میرے اندر رحم نہیں رہ گیا ہے ذرا بھی دیکو نئ بالکل قبر میںپیر لقکائے بھیتے ھیں ھم لوگ' پھر بھی اِس پڑھاپے میں سزا ھی سزا بھکتنی پر رھی ہے اِنٹ ذرا بھی چین مل پاتا ہے نہ سکھ۔۔ اور نہ کبھی ملیکا اب ۔۔ اور اِس کے تالود۔۔دیکھ اینا تم، مرنے کے پہلے بھیک مانگنے کی نویت آئییکی ۔۔ ھاں بھیک اِن'

نائی نے اُن کا هاته اپنے هاته میں لے لیا' اور اُن کی بغل میں ہیتی بیتھی دھورے دھیرے هنستی هوئی بولیں۔''ارے' چھی چھی اِ تو بھیک مانکنے سے 'گہراتے هو تم آ اچها مان لو' اِس بھرک مانکنے کی هی نوبت آگئی اِ تمهیں کچھ نهیں کرنا بورک مانکنے کی هی نوبت آگئی اِ تمهیں کچھ نهیں کرنا بورک میں بھیک مانگ لایا کررنگی ۔۔ همارا گھر تب بھی بھرا پورا رهیگا' اِس کی فکر تم بالکل چھور دو اِ''

ولا اُلوانک عبقهه مار کر هاس پڑے اور بکرے کی طرح اینا سر هلانے لکے اور پھر انہوں نے نانی کی گردن یکو کو انہوں اپنے سائے سکا لیا' بالکل ذرا سے اور سکوے سکوائے سے گا لیا' بالکل ذرا سے اور سکوے سکوائے سے گا رہے تھے وہ نانی کی بغل میں !

(اوء) کرسی نادان هو تم ، '' وہ بول اُٹھ' (اکتنی بھولی بھالی اِسیس' اب تمہیں تو ایک میری رہ گی ہو اِ تم سمجھتی نمیوں ہو نہ کچوہ اِسی اللہ کسی بھی بات کی کبراهٹ نمیوں ہوتی تمہاں ۔ لیکن پیچھے تو پھر کر دیکھو ذراد اور سوچو نو' که کتنی محلت کی شے تم نے اور میں نے اور میں نے اِن کی خاطر اِن کے لئے کیسے اُسے گناء تک کئے میں مینے اِن کی خاطر اِن کی خاطر بھی' آبے۔''

आँख ही श्राँख धीर कान ही कान हैं. मेरे सीने के अन्द्र न जाने कैसा होने लगा श्रीर मेरी बड़ी जबरदस्त ख्वाहिश हुई कि चीख डठूँ.

''लेक्सी तू जा यहाँ से !" नाना जी ने रुखाई के साथ

ममसे कहा !

"क्यों ?" मेरी माँ ने मुक्ते फिर अपनी तरफ खींचते हुए उनसे पूछा, "नहीं, तू यहाँ से नहीं जाएगा. मैं मना कर रही हूँ." और किसी गुलाबी बादल की तरह उठकर मेरी माँ धीर-धीर नाना जी के पीछें जा खड़ी हुई.

"ज्रा सुनो तो बाबू जी-"

नाना जी उनकी तरफ मुङ्कर चीख उठे-

"चुप रह."

"श्रपनी जवान को कायू में रिखये, बाबू जी." संजी-रंगी से माँ ने जवाब दिया.

तानी कोच पर से षठ खड़ी हुई श्रीर श्रपनी उँगली दिखाते हुए उन्हों ने माँ को टोका—"यह क्या' वारवारा ?"

श्रीर नाना भी बुश्बुदाते हुए बैठ गए— "अच्छा ठैर्रो तो जरा ! मैं यह जानना चाहता हूँ कि किसने —? क्यो ? कीन था वह ? · · · · कैसे हुआ यह सब ?"

और अचानक ऐसी आवाज में, जो उनकी नहीं मालूम पड़ती थी, वह गरज चठे—"मेरा मुँह काला कर दिया तून" वारका !"

"भाग यहाँ से !" नानी मुक्त बोलीं, और मैं बाव-रवीखाने में जा छुना. ऐसा लग रहा था गाया मेरा दम घुटा जा रहा है. तन्दूरी चूल्हे के ऊर मैं जा चढ़ा, और बहुत देर तक वहाँ बैठा-बैठा उन लोगों की बात-चीत सुनता रहा, जो बीच के दीवार के बावजूद सुनाई पड़ रही थी. या ता व सब के सब एक साथ बोलने लगते थे, और या बड़ी देर तक बिल्कुल चुप रहते, गोया सो गये हों. उन लोगों की बातचीत का मजमून था कोई बच्चा, जो हाल ही में मेरी माँ के पैदा हुआ था और किसी के यहाँ छाड़ दिया गया था. लेकिन मैं यह नहीं समफ सका कि नाना जी की नारा-जी किस बात पर थी—उनसे बग़ैर पूछे बच्चा पैदा किया गया इस पर या इसलिये कि वह उस बच्चे को नाना जी के यहाँ नहीं खाई.

बाद को वह बावरची खाने में चले आए. उनके बाल बिखरे हुए थे, चेहरा नीला सा पड़ रहा था, और बेहद थके दिखाई दे रहे थे. उनके पीछे नानी भी आ पहुँचीं, अपने गालों पर बहते हुए आँसुओं को कुरते से पोंछती हुई. नाना जी एक वेंच पर उपर पैर करके बैठ गए और अपने हाथ भी डसी पर टेककर कांपते कांपते अपने पीले पड़े हुए हांटों को काटने लगे. और नानी उनके आगे घुटनों के बल सुक गई और सुकून के साथ लेकिन जोर देकर बोलीं—

آئے ھی آئے اور کل ھی کان ھیں. میرے سینے کے اندر نہ جانے کیسا ھونے لگا اور میری زبردست خواھش ھوئی کھ چینے تیوں .

''لیکسی' ترجما یہاں سے اِ'' ناناجی نے رکوائی کے ساتھ جیسے کیا اِ

''کورں '' ''موری ماں لے معجهے پور اپنی طرف کھینچہ ہوئے اُں سے پوچھا ، ''نہوں' تو یاں سے نہیں جائیگا ، میں منع کر رھی ھوں ۔'' اور کسی گلابی بادل کی طرح اُٹھ کر مہری ماں دھورے دھورے نانا جی کے پرچھے جا کھڑی ھوئیں ،

" خرا سلو تو بابو جي --."

"فانا چی آن کی طرف مار کو چیخ آنه-

وو اُپنی زبان کو قابو میں رکھٹھے بابو جی ۔'' سنجیدگی سے ماں نے جواب دیا ۔

ناتی کوچ پر سے آئے کبڑی ہوئوں اور اپنی آنکلی دکھاتے ہوئے انہوں نے ماں کو ٹواسے دی کیا واروارا آ "

اور نانا بھی بدیداتے ہونے بیٹھ گئے۔۔''اچھا ٹھپرو تو ذرا! میں یہ جاننا چاھٹا ہوں که کسنے۔ ﴿ کیوں ﴿ کون تھا وہ ﴿ ... کیسے ہوا یہ سب ﴿ ''

اور اچانک ایسی آواز میں' جو آن کی نہیں معلوم ہوتی تھی، وہ گرج آتھے ۔ ''مهرا منه دلا کر دیا تہئے' وارکا اِ''

"بھاگ بہاں سے!" نائی مجھ سے بوایں اور میں باورچی خالے میں جا چھھا ۔ ایسا لگ رہ تھا گویا مدرا دم گیٹا جا رہا شے ، تغدوری چولہ نے اوپر میں جا چڑھا اور بہت دیر تک وہاں بیٹھا بیٹھا ان لوگوں کی بات چیت سنتا رہا جو بیچ کی دبوار کے باوجود سنائی پڑ رھی نہی ، یا تو رہ سب کے سب ایک سانھ بولنے لگتے نہے اور یا بڑی دیر نک بالکل چپ رہتے کویا سو گئے ھوں ۔ ان لوگوں کی بات چھت کا مضمری تھا کوئی بچہ جو حال ھی میں میری ماں کے پیدا ھوا تھا اور کسی کے بہاں چھوڑ دیاگیا تھا لیکن میں یہ نہیں سمجھ سکا کہ نانا جی کی ناراضی کس بات پر نھی۔۔۔ان سے بغیر پوچھ بچے بیدا کیا گیا اِس پر یا اِس لئے کہ وہ اُس بجے کو نانا جی کے بہاں نہیں اُئیوں ،

खतार कर वह देहजी ज के उधर फेंकती जाती थीं और दिकारत से अपने लाल-लाल होंट सिकोड़े लगातार बोलती ही चली जा रही थीं—"बोलता क्यों नहीं है तू १ ख़ुरी। नहीं हुई तुमें मेरे आने की १ उफ! कैसी गन्दी है यह कमीज...."

फिर उन्होंने बतख़ की चर्बी से मेरे कान मलने शुरू किये जिससे मुक्ते तकलीफ होने लगी, लेकिन इतनी बढ़िया ख़ुशबू निकल रही थी उनके कपड़ों से उस वक्त कि तकलीफ जितनी हो रही थी उससे कम मालूम हुई.

मैं उनकी आँखों की तरफ ताकता हुआ उनसे चिपटता ही चला जा रहा था. खीफ के सबब मेरे मुँह से आवाज नहीं निकल पा रही थी. और उनके अल्फाज के साथ-साथ बीच-बीच में नानी की दुखभरी आवाज मेरे कानों तक पहुँच रही थी—''इतनी मनमानी करने लगा है यह...जरा किसी की नहीं सुनता. अपने नाना तक से नहीं डरता, जरा भी……आरी बारिया! वारिया!"

"क्यों पैं-पैं कर रही हो माँ, चुप भी रहो. इस तरह वक-वक करके क्या कर लोगी ?"

सभी चीजें माँ के सामने छोटी लगने लगी थीं, रहम के क़ाबिल और बूढ़ी ! मैं खुद भी बूढ़ा सा लगने लगा था, नाना जी की तरह बूढ़ा.

अपने, घुटनों से मुफे चिपटा कर मेरे वालों पर अपना गरम-गरम, भारी हाथ फेरती हुई वह बोलीं—"किसी कड़े आदमी की देख-भाल में रखने की जरूरत है इसे. और अब स्कूल भी वो जाना चाहिये ... कुछ सीखना चाहता है कि नहीं ? क्यों रे ?"

"मैं वो सब सीख चुका, जो जानना था."

"और भी थोड़ा-बहुत सीखना बाक़ी है रे! "अरे! कितनी ताक़त आगई है तुममें!" और मेरे साथ खेल-तमाशा करते हुए वह अपनी तेज मीठी आवाज में दिल खोजकर इसने लगीं.

उसी वक्त नाना जी अन्दर दाखिल हुए. उनका चेहरा एकदम सकेद पड़ गया था, आँखें लाल हो रही थीं, और गुस्से के मारे वह काँप रहे थे. मेरी माँ ने उन्हें देखते ही मुक्ते दूर हटा दिया और ऊँची आवाज में उनसे पूछा—'तो फिर।क्या तय किया आपने बाबू जी ? मुक्ते नहीं रहने देंगे यहाँ ?"

नाना जी खिड़की के पास खड़े होकर अपनी उँगिलयों के नाखूनों से शीशे पर जमी बरफ खुरचने लगे, और बड़ी देर तक कुछ नहीं बोले. हालत बहुत ही नाजुक और तक-लीफ़देह थी और, जैसा कि ऐसे संगीन मौक्रों पर मेरे साथ हमेशा होता था, मुक्ते लग रहा था गोया मेरे जिस्म मर में آنار کر وہ دہلوز کے آدھر پہینکٹیجاتی ٹیس اور حقارت سے اپنے لال لال ھونٹ سکرڑے لگاتار ہوائی ھی چلی جارھی تھیں۔"ہولتا کیوں نہیں فوئی تجھے میرے آنے کی ؟ آن ! کیسی گلدی ہے تہ تمرض نہیں ہوئی تجھے میرے آنے کی ؟

پھر اُنھوں نے بطائے کی چربی سے مدرے کان ملئے شروع کئے جس سے متجھے تکلیف ہونے لکی ، لیکن اِنٹی بڑھیا خوشبو لکل رھی تھی آن کے کپڑوں سے اُس رِقت کہ تکلیف چتنی ہو رہی تھی اُس سے کم معلوم ہوئی ،

میں أن آنكھوں كى طرف تاكنا هوا أن سے چپقتا هى چلا جا رها تها، خوف كے سبب ميرے منه سے آواز نهيں نكل پا رهى تهى ، اور أن كے انفاظ كے ساتھ ساتھ بيچے بھچے ميں نائى كى دام بھوى آواز مهرے كانوں تك پہوئچ رهى تهى۔"[تلى من مانى كرنے لكا هے يه ... ذوا كسى كى نهيں سنتا . أينے نائا نك سے نهيں قرقا فرابھى... أور واريا ! واريا ! "

''کیوں پیں پیں کر رھی ھو ماں' چپ بھی رعو۔ اِس طوح بک بک کر کے کیا کر لوگی ؟ ''

سبھی چیزیں ماں کے سامنے چھوٹی لگنے لگی تھیں' رحم کے قابل اور ہرتھی ! میں خود بھی ہورتھا سا لگنے لگا تھا' نائنا جی کی طوح ہوڑھا۔

اپنے گھتنوں سے مجھے چھتا کو میرے ہالوں پر اپنا گرم گرم ہواری ھاتھ پھفرتی ھوئی وہ بولیں۔ ''کسی کوے آدمی کی دیکھ بھال میں رکھنے کی ضرورت کے اِسے اُر اُب اِسکول بھی تو جانا چانئے ۔ کچھ سیکھنا چانتا ہے کہ نہیں آ کھوں رے آ''

"ميں تو سب سيكه چكا جو جاننا تها "

"ارر بھی تھرڑا بہت سیکھنا ہاقی ہے رے!...أرے! كتنی طاقت آگئی ہے تجھ میں!" ارر مفرے ساتھ كھال تماشا كرتے موئے وہ اپنی توز میٹھی آراز میں دل كھولكر عنسنے لكيں .

اِسی وقت نانا جی اندر داخل ہوئے ۔ اُن کا چہرہ ایکدم سنید پر کیا تھا آنکھیں قل ہو رہی تھیں' اور غصہ کے مارے وک کانپ رہے تھے ، میری ماں نے آنھیں دیکھتے ہی مجھے دور ھتا دیا اور آرنچی آواز میں آن سے پرچھا۔""و پھر کیا طے کیا آئے باہو جی 8 مجھے نہیں رہنے دیلکے یہاں 8"

نانا جی کہرکی کے پاس کہرے ہو کر آ پنی اُنگلیوں کے ناخونوں سے شیشے پر جمی برف کہرچنے لکے اور بری دیر تک لکچھ نہیں ہولے ۔ حالت بہت ھی نازک اور تکلیف دہ تھی اور جیسا کہ ایسے سنگین موقعوں پر میرے ساتھ ہمیشہ ہوتا تیا مجھے لگ رہا تھا گویا میرے جسم بھر میان

मुक्ते यक्नीन नहीं आया, और अगर पादरी साहब ही हों तो वह किसी किरापदार के ही यहाँ आप होंगे.

"चल-चल !" कोचबान ने घोड़ों को हाँका, और इनकी पीठ पर कोड़ा फटकारते हुए मौज के साथ फिर मीटी बजाने लगा.

घोड़े मैदान को चीरते हुए दीड़ चले, श्रीर मैं खड़ा घड़ा उनकी तरफ ताकता रहा, फिर मैंने फाटक बन्द कर दिया. सूने पड़े बावरचीखाने में घुसते ही सबसे पहली श्रावाज मैंने श्रपनी माँ की सुनी. पास वाले कमरे में श्रपनी जारदार श्रावाज में वह कह रहीं थीं—-"तो श्रव चाहते क्या हैं श्राप ? मेरी जान लेंगे ?"

श्रपनी उपरी पोशाक बदले बरौर ही मैं पिंजड़ों को पटक-पठकाकर दौड़ा हुआ बाहर के बरामदे में आया और नाना जी से टकरा गया. उन्होंने मेरी गरदन दवाच ली श्रीर अपनी खूंख्वार सी आँखें मेरे चेहरे पर गाड़ दीं, और वड़ी मुश्किल स एक घूँट सा सटक कर भारी गले से बाले—

'तेरी माँ फिर छा गई है.....जा उसके पास..... ठैढ्रां.....!'' उन्होंने इतनी जोर से मुफे ककमोर डाला कि मैं मुश्किल से गिरते-गिरते बचा और भीतर के दरवाजे तक लुढ़कता चला गया. ''चला जा.....! जा.....!''

में दरवाजे से जा टकराया, जिस पर ऊन श्रीर मामजामा चढ़ा हुआ था, लेकिन खटका गिराने में मुक्ते काफी देर लग गई क्योंकि मेरा हाथ सर्दी से ठिउरकर विल्कुल सुन्न हो गया था श्रीर धवड़ाहट के मारे काँप रहा था. जब आखीर में मैं धीरे से अन्दर घुसा तो बिल्कुल खौफजदा और अभे से मरा हुआ देहलीज पर ही इक गया.

"यह आ गया!" मेरी माँ बील उठी, "परमात्मा, कितना बड़ा हो गया है यह ! क्यों, मुक्ते पहचानता नहीं है ?.....यह कैसे कपड़े पहनाप है इसे माँ ?..... और देखों तो, इसके कान बिल्कुल सफेद पड़े जा रहे हैं ! बतख़ की चरबी तो लाओ माँ, जुरा जल्दी से."

कमरे के बीचोंबीच खड़ी बह मेरे ऊपर मुककर मेरी ऊपरी पोशाक उतारने लगीं और मुक्ते इस तरह उतट पतट कर देखने लगीं गोथा मैं कोई गेंद हूँ. उनके लम्बे चौड़े बदन पर एक गरम, मुलायम, ख़ूबसूरत पोशाक थी, मदीं के पूरे लबादे से बड़ी; और कंधे से ले हर कमर तक उस पर काले काले बटन तिरछी कतार में टँके हुए थे. पहले कभी मैंने वैसी कोई पोशाक नहीं देखी थी.

उनका चेहरा पहले से छोटा लग रहा था खीर खाँलें पहले से ज्यादा बड़ी खीर घँसी हुई थीं; पर उनके बालों का सुनहरापन और भी गहरा हो एठा था. मेरे कपड़े उतार- مجھے یقین نہیں آیا، اور اکر پادری صاحب هی هوں تو وہ کسی کرایددار کے هی یہاں آئے هونگے .

''چل چل !'' کوچوان نے کھرزوں کو ھانکا' اور اُن کی پھٹھ پر کرا پھٹکارتے ھوئے موج کے ساتھ پھر سیٹی ہنجانے لگا .

گھوڑے میدان کو چیرتے ہوئے دوڑ چلے' اور میں کھڑا کھڑا کو کی مدن کے بہتے ہوئی کی طرف ناکٹا رہا' پھر مینے پھائک بند کر دیا ، سوئے پہنے باروچی خانے میں کہستے ہی سب سے پہلی آواز مینے اپنی ماں کی سنی ، پاس وائے کمرے میں اپنی زوردار آواز میر وہ کہتے رہی تھیں ۔"نو اب چاھتے کیا عین آپ آ میری جان لیکے آ "

اپنی آویوی پوشاک بدار بغیر هی میں پنجوری کو پقت پتکا کو دورا هوا باهر کے برآسے میں آیا اور نانا جی سے تکرا گیا ، آنھوں نے میری گردین دبوج لی اور اپنی خونخوار سی آنکھیں مھرے چہرے پر گار دیں' اور مشکل سے ایک گھونٹ سامقک کر بھاری گئے سے بولے —

"تهری ماں پھر آگئی ہے...جا اُس کے یاس... تھھرو...!'' آنھوں نے اِتلی زور سے مجھے جھکجھور ڈالا کہ میں مشکل سے گرتے گرتے بچا اور بھیتر کے دروازے تک لوطکتا چلا گیا ، "چلا جا...! جا...!''

میں دروازے سے جا تعرایا' جس پر اُوں اور موم جامع چوھا ھوا تھا' لیعن کپتکا گرائے میں مجھے کانی دیر لگ گئی کیرنکہ میرا ھانھ سردی سے ٹیٹھر کر بالکل سن ھو گیا تھا اور گھرانت کے مارے کانپ رھا تھا۔ جب آخیر مھی میں دھورے سے اندر گھسا تو بالکل خرف زدہ اور اچنبھے سے بھرا ھوا دھلیڑ پر ھی رک گیا۔

"یہ آگیا !" میری ماں ہول آئھی' فے پرساتما' کتفا ہزا ھو گیا فے یہ ! کیس' مجھے پہچانتا نہیں فے ؟ ...یہ کیسے کپڑے پہنائے ھیں اِسے ماں ؟ ...أرر دیکھو تو' اِس کے کان ہااکل سفید پڑے جا رہے ھیں ! بطخ کی چربی تو لااِ ماں' ذرأ جلدی سے ."

کمرے کے بھچوں بھچ کھڑی وہ مھرے اُرپر جھک کر میری اُرپری پوشاک آتارلے اکیں اور مجھے اِس طرح اُلت پلت کر دیمھنے لیس طرح اُلت پلت کر دیمھنے لکھں گویا میں نوئی گیند ھوں ۔ اُن کے لمبہ چوڑے بدن پر ایک گرم' ملایم' خوبصورت پوشاک تھی' مردوں کے پورے لیادے سے بڑی' اور کندھ سے لیکر کمر تک اُس پر کالے کالے بیتن ترچھی قطار میں گئکے ھوئے تھے ۔ پہلے کبھی میڈے ویسی کوئی پوشاک نہیں دیکھی تھی ۔

آن کا چہرہ پہلے سے چھوٹا نگ رہا تھا اور اُنکھیں پہلے سے زیادہ بڑی اور دھنسی ھوئی تھیں' پر اُن کے بالوں کا سنہرا پن اور بھی گہرا ھو اُٹھا تھا ۔ معرے کھڑے اُتار

میری ماں شری گرنی

ایک ررز سنیچر کے دن بہت سربرے میں بیتررونا کے سبزی کے کھیت میں بلبل یکونے کے لئے جا کھسا ، وہاں میں بہت دیر تک رھا' کیونکہ رے اِنٹی تیز نہیں کہ میرے جال میں یہنستی می نہیں تھیں . اُن کی خوبصورتی لے مجھے ہری طرح سے لبھا لیا تھا ۔ چاندی سے چمکالے جمع ہوئے برف یر وہ بهدکتی پهرتیں اور برف سے تھکی ھوئی جھازدوں کی دانور ير أو كر جا بيتهتي تهيل أور برف كا دودهيا براده سا جارون طرف جهر أثبتا تها . يه سب مجهر إتنا لبهاؤنا لك رها نها که میں آیئی تاکمیابی کی پریشائی بهول گیا ، یوں بھی میں شکار کے دن میں استاد نہیں تھا کیرنعه دراصل اپنا شکار دائے سے زیانہ مجھے اُس کے پرجھے ایکے بور نے میں مزہ اُنا تھا اُور سب سے زیادہ مزہ چوہرں کے طور طریقے جاننے اور اُن کے بارے مين سرچان سعجها مين ملتا تها . برف سے دعام عوال ايك کیہت کے کنارے بیٹھے بیٹھے' اُس برفیلے دیں کے گہرے سناتے میں کی چہچہاہت سننے میں میں مست تھا کد کسی کاری کی گھنڈیوں کی ٹنٹناہٹ مجھے دو پر ہلکی سی سنائی دی کسی یہیہ کے دلسوز گیت کی طرب

برف پر برتھا بیٹھا میں اکر سا گیا تھا اور مجھے لگا که مھرے کل برف کے مارے جم سے گئے ھیں . اِس لئے جال اور پنجروں کو بٹھر کر میں دیوار پر چڑھ باغیجے میں کود پڑا اور گھر آپہرنچا ۔ 88

سڑک کی طرف کا پھاٹک کیلا پڑا تھا اور ایک بہت بڑا' لمبا چوڑا آدسی موج سے سیٹی بجاتا' ایک بڑی سی بند گاڑی میں جتے ہوئے پسینے سے تربتر تین گھوڑوں کی راس پکڑ کر احاطے سے باہر لئے جا رہا تھا ، میرا دل اُچھلنے لگا .

"كسي ليكر أن ته تم ي

اُس نے میری طرف مر کر اپنی بانہوں کے نیچے سے مجھے دیکھا اور کوچوان کی گدی پر چڑھکر جواب دیا۔''پادری ماھب کو ۔''

گہبچہیں میں ھی والد کے اِنتقال ھوجانے کے ہمد گورکی اپنی والدہ کے ساتھ نانا نائی کے پاس رہنے لگا تھا ۔ اُس کے نانا رنعویؤ تھے اور ہوے اچھے مزاج کے تھے ، گورکی کی ماں کچھ دین ھی وھاں رہ کر کہیں باھر چلی گئیں اور گورکی اپنی پیاری بانی کے سایہ میں رہ کر پلنے لگا .

एक रोज सनीचर के दिन बहुत सबेरे मैं पेत्रोवना के सन्त्री के खेत में बुलबुल पकड़ने के लिये जा घुसा. वहाँ मैं बहुत देर तक रहा, क्योंकि वे इतनी तेज थीं कि मेरे जाल में फँसती ही नहीं थीं. उनकी खूबसूरती ने मुक्ते बुरी तरह से लुभा लिया था. चाँदी से चमकते जमे हुए बर्फ पर वह फुर्कती फिरतीं. श्रीर बर्फ से बकी हुई माडियों की डालों पर उड़कर जा बैठती थीं भीर वर्फ का द्धिया बुरादा सा चारों तरफ माड़ उठता था. यह सब मुभे इतना लुभावना लग रहा था कि मैं अपनी नाकामयाबी की परेशानी भूल गया. यों भी मैं शिकार के फन में उस्ताद नहीं था, क्योंकि द्रश्रमल श्रपना शिकार पाने से ज्यादा मुक्ते उसके पीछे लगे फिरने में मजा श्राता था श्रीर सब से ज्यादा मजा चिद्धियों के तौर तरीक़े जानने श्रीर उनके बारे में सोचने सममने में मिलता था. वर्फ से ढके हुए एक खेत के किनारे अकेले बैठे बैठे, उस बर्फीले दिन के गहरे सन्नाटे में, चिड़ियों की चह्चहाहट सुनने में मैं मस्त था कि किसी गाड़ी की घन्टियों की दुनदुनाहट मुभे दूर पर हलकी सी सुनाई दी, किसी पपीहें के दिलसाज गीत की तरह.

बर्फ पर बैठा बैठा में अकड़ सा गया था और मुक्ते लगा कि मेरे कान बर्फ के मारे जम से गये हैं. इसलिये जाल और पिंजड़ों को बटोरकर मैं दीवार पर चढ़ बाग्राचे में कूद पड़ा और घर आ पहुँचा.%

सड़क की तरफ का फाटक खुला पड़ा था और एक बहुत बड़ा, लम्बा चौड़ा श्रादमी मौज से सीटी बजाता, एक पड़ी सी बन्द गाड़ी में जुते हुए पसीने से तरबतर तीन घाड़ों की रास पकड़कर श्रहाते से बाहर लिये जा रहा था. मेरा दिल उछलने लगा.

"किसे लेकर आए थे तुम ?"

उसने मेरी तरफ गुड़कर अपनी बाँहों के नीचे से मुक्ते देखा और कोचवान की गई। पर चढ़कर जवाब दिया— 'पादरी साहब को.''

क्ष बचपन में ही वालिद के इन्तकाल हो जाने के बाद गांकी अपनी बाल्दा के साथ नाना नानी के पास रहने लगा था. उसके नाना रंगरेज़ थे और बड़े अच्छे मिज़ाज के थे. गोर्की की माँ इन्छ दिन ही वहाँ रहकर कहीं बाहर चली गईं और गोर्की अपनी प्यारी नानी के साथे में रहकर प्लने लगा.

के तौर पर इंगलैन्ड में जी ऐडवर्ड छटे के नाम पर हुकूमत करता था उसने हुक्म दे दिया कि तमाम अंग्रेजी कीम प्रोटेस्टेंट मजहब को माने और सारा इंगलिस्तान प्रोटेस्टेंट हो गया. इसके बाद मलका मेरी तख्त पर बैठी श्रीर गोया किसी ने जाद कर दिया. फौरन तमाम इंगलिस्तान के लोग फिर से रोमन कैथोलिक हो गये. मल्का मरी खौर पहिया फिर वम गया. सारा इंगलिस्तान अब ऐंगलीकन मजहब का मानने वाला हो गया. आजकल हम इस बात के सुनने के बहत आदी हो गये हैं कि राज्य या बादशाह रिश्राया के मजहब में कोई दखल नहीं देता. लेकिन हिटलर श्रीर उसके वारिस श्राजकल भी दुनिया को इस तरह की श्राजादी देने को तैयार नहीं हैं. सोलइवीं श्रीर सत्तरहवीं सदी में दुनिया के हर मुल्क के अन्दर राज को इससे गहरा ताल्लुक होता था कि रिष्टाया किस मजहब को मानती है. लेकिन हिन्द-स्तान में मुराल बादशाहों ने अपनी रिश्राया के मजहबी विश्वास में दखल नहीं दिया और इस मामले में रिश्राया का श्राजाद छोड़ दिया या श्रीर इस बात में मुग़ल,बादशाह श्रवने जमाने के लिहाज से अपनी एक श्रलग मिसाल थे. सोलहवीं सदी ईसत्री में एक दूसरे के बाद इंगलैन्ड के कई बादशाहों ने ऐक्ट्स आफ सुपरीमेसी और एक्टस आफ य्निफारमिटी नाम के कानून पास करके जबरदस्ती यह हुक्म दे दिया कि इंगलैन्ड के लाखों रोमन कैथालिक श्रपने मजहब को छोड़कर अपने गिरजों में बादशाह के मजहब यानी प्रोटेस्टेंट मजहब की लिखो हुई दुआएँ भी पढ़ा करें श्रीर हर मजहबी बात में सब से बड़े पुराहित पोप के बजाय प्रोटेस्टेन्ट बादशाही हक्म मानें. इस शाही फरमान के न मानने पर हजारों रोमन कैथोलिक पाद्रियों को कड़ी सजाएँ दी गईं. इस तरह सन 1562 ईसवी में इंगलैंड में राज की तरफ से उन्तालीस मजहबी उसूलों की एक केहरिस्त क़ानून की शकता में पास कर दी गई और उनमें से हर उसूल का मानना मुल्क के हर एक आदमी का कानूनी फर्ज बना दिया गया. यह बात भी याद रखनी चाहिये कि उस वक्त तक इंगलैंड के मुखतलिफ जिलों में पचास फीसदी से लेकर नब्बे फीसदी तक आबादी रोमन कैथालिक थी. इन सब को जबरद्स्ती अपना मजहब छोड़कर उस उक्त के बादशाह का मजहब मानना पड़ा. मुराल बादशाहों ने कभी इस तरह के कांई क़ानून जारी नहीं किये. और शपनी रियाया की बहुत बड़ी तादाद को, जो ग़ैर मुसलिम भी, मजहब के मामले में पूरी तरह आजाद रखा. मुसलमानों के लिये भी किसी मुराल बादशाह ने या ता इसलाम ब्रोइकर दूसरा मजहब अख्तियार करने वालों का कभी कोई सजा दे दी या ज्यादा से ज्यादा यह हुकम द दिया कि आम रहन सहन में मुसलमान एक खास उपरी त्रीके की पावनदी करें, मसलन यह कि लोग शराव न पय वर्ग रा.

ع طور پر انکلیفق میں جو ایدورد چھٹے کے نام پر حکومت کرنا تھا اس نے حکم دے دیا که نمام انگریزی قرم پروئد تینت مذهب كو مالي أور سارا انكلستان پررئستينت هو گيا . اس کے بعد المکه مهرمی تخت پر بیٹھی اور گویا کسی نے جادو کر دیا . فوراً تمام افکلستان نے لوگ بھر سے رہمن کیٹھولک ہو گئه. ملکه مهری اور پهها پهر کهوم کیا. سارا افکاستان اب ابنکلیمن مذهب کا ماننے والا هو گیا ، آجال هم اِس بات کے سللے کے بہت عادی ہو گانے میں که راج یا بادشاہ رعایا کے مخصب میں کوئی دخل نہیں دیتا ۔ لیکن مثار اور اُس کے وارث آجکل بھی دنیا کو اِس طرح کی آزادی دبنے کو تھار قہدی ہیں ، سولوویں اور سترهویں صدی میں دنیا کے عر ملک کے اندر راج کو ایس سے گہا نعاق ہوتا تھا که رعایا کس حدیقب کو مائتی ہے ، لیکن هندستان میں منل بادشاهوں نے اونی رعایا کے مذہبی ودولس میں دخل نہیں دیا اور اس معاملے میں رعايا فو آزاد چهود ديا نها اور ايس بات ميں منال بادشاه اينے زمانے کے لحاظ سے اپنی ایک الک مثال تھے ، سراوریں صدی عیسوی میں ایک دوسرے کے بعد انتظیفت کے کئی بادشامیں نے ایکٹس آف سیریمنسی اور ایکٹس آف ہونیفارمٹی نام کے قانون یاس کر کے زبردستی یہ حکم دے دیا که انگلینڈ کے الکھوں رومن کیتهولک اپنے مذهب کو چهور کر اپنے گرجوں میں بادشاہ کے مذہب یعنی پروڈیسٹینٹ مذھب کی لکھی ھوئی دعائیں ھی ہرتا کویں اور ھر مذھری بات میں سب سے بڑے پروست یوپ کے بجائے روقیستینٹ بادشامی حکم ماس اس شامی فرمان کے تع ماننے پر ہؤاروں رامن کیاھواک یادریوں کو کوی مزانیں دے گئیں . اِس طرح سن 1562 عیسری میں انکلیند میں زاہے کی طرف سے انتالیس مذہبی اصولوں کی ایک فہر ست قانون کی شکل میں پاس کر نبی گئی اور اُن میں سے مو اُصول کا ماننا ملک کے هو ایک اُدمی کا قانونی فرض بدا دیا گا . یه بات بهی باد رکهنی چاهلم که اُس وقت تک أنكيند كے منعالف ضلموں ميں يعجلس فيصدى سے لوكو فيب فیصدی مک آیادی رومن کیتھ،الک تھی ، اِن سب کو زبردستی اینا مذهب چهرو کر أس وتت کے بادشاہ کا مذهب ماننا يوا . منل بادشاہوں نے کبھی اِس طرح کے کوئی قانون جاری نہیں كئے . أُور اپنى رعايا كى بهت برى نعداد كو ، جو غير مسلم تهى ، مذھب کے معاملے میں پوری طرح آزاد رکھا ، مسلمانوں کے اللہ بھی کسی مغل بادشاہ نے یا فو آسلام چھرو کر دوسر! مذہب اختیار کرنے والوں کو کبھی کوئی سؤا دے دی یا زیادہ سے زیادہ یه حکم دے دیا نه عام رقبی صهن میں مسلمان ایک خاص اوبری طریقے نی پاہندی کریں مثلاً یہ که لوگ شراب نہ يهاين رغيره .

को मानने से इन्कार कर दिया क्योंकि उस वक्त वह खुद दुनिया भर में सबसे बड़ा हाकिन था. अपने को खत्तीका का नाइब मानने से कुछ दिनों तक यहाँ के बादशाहों का काम जरूर चल गया लेकिन उससे इस बात का कोई कायदा न बन पाया कि एक बादशाह के बाद तख्त का इक़दार कीन श्रीर कैसे हो. इस बारे में न कोई क़ानून था श्रीर न पराने बादशाहों के श्रमल से कोई मदद मिल सकती थी. कुद्रती नतीजा यह था कि क़रीब क़रीब बादशाहों के मरने के वक्त तख्त के लिये खासी गरमा गरमी श्रीर भाग दौड़ दिखाई देनी है. जिस वक्त बराबर मौत के बिस्तर पर पड़ा हुआ था उसका वजीर आजम इस फिक्र और साजिश में लगा हुआ था कि हुमायूँ को किस तरह तख्त से अलग किया जावे. हुमायूँ की मौत इतनी अचानक हुई श्रीर हिन्दुस्तान में मुरालों की हालत उस वक्त इतनी नाजुक थी कि उस वक्त तख्त के लिये ज्यादा अगड़ा न हो पाया. अकबर की मौत के बाद जहाँगीर तख्त पर बैठा लेकिन जहाँगीर के सब से बड़े बेटे ख़ुसरां ने अपने बाप के उस इक के स्तिजाफ हाथ पैर मारे. जहाँगीर की हुकूमत के श्राखिरी दिनों में तख्त के लिये तरह तरह की भई। साजिशें हुईं . जहाँगीर के मरने के वक्त शाहजहाँ दकन में था इसलिये शाहजहाँ के जिये तस्त का तैयार रखने की गरज से बद्किस्मत बुलाकी की चना गया. शाहजहाँ के पहुँचते ही बुलाक़ी मार डाला गया श्रीर तस्त के दूसरे दावेदारों के खून में से अपना रास्ता बनाकर शाहजहाँ बाप के तस्त पर बैठा. श्रीरंगजेब ने शाहजहाँ से बदला चुकाया. उसने शाहजहाँ को क्रेंद करके शाहजहाँ की जिन्दगी में शाहजहाँ के नाम पर नहीं बल्कि ख़ुद अपने नाम पर बादशाहत करनी शुरू की. इस सबसे जाहिर होता है कि इस जमाने के बारे में मुसलमानों में जो श्राम रूयाल था इसी से मिलता जलता मुगलों का अमल था. यह बात नहीं थी कि एक बादशाह के बाद दसरे का गही मिलने का कोई माना हुआ क़ानून या रिवाज रहा हो श्रीर किसी ने जवरदस्ती बगावत करके उसे तोड़ा हो. बल्कि जो कुछ होता था वह एक मामूली चीज थी और इसलिये होता था कि इस मामले में कोई खास क़ानून पहले से नहीं था.

यह भी याद रखना जरूरी है कि मुग़ल बादशाहों ने रियाया को अपनी मरजी के मुताबिक आजाद जिन्दगी बसर करने की बहुत बड़ी आजादी दे रखा था. उसमें बादशाह कोई दखल न देता था. यह वह जमाना था जब यूरप में वे बादशाह भी जो बिल्कुल .खुदमुख्तार थे और बे भी जिनके यहाँ पार्लीमेंट बनी हुई थी, दोनों अपनी अपनी रियाया को साफ-साफ यह हुक्म देते थे कि रियाया इस खास किस्म के मजहबी अकीदों (विश्वासों) को माने और बसके खिलाफ किसी दूसरे अकीदों को न माने. सिसाल ى مائنے سے انكار كو ديا كھولكم أس وتت ولا خود دليا بير ميں سب سے برأ حاكم آيا . اپنے كو خليات كا نائب ماننے سے کچے دنوں تک یہاں کے بادشاھوں کا کام ضرور جل گیا لیکن اُس سے اِس بات کا کوئی قاعدہ نہ ہی پایا که ایک بادشاہ کے بعد تخت کا حقدار کون اور کیسے ہو ۔ اِس بارے میں نه کوئی قانون تھا اور نه برانے بادشاعوں کے عمل سے کوئی مدد مل سکتی تھی ، قدرتی نتیجه یه تها که قریب دریب بادشاهوں کے مرنے کے وقت تخت کے لئے خاصی گرما گرمی اور بھاگ دور دکھائی دیتی ہے . جس وقت باہر موت نے بستر پر پڑا ہوا تھا اُس کا وزیراعظم اِس فکر اور سارش میں لكا عوا تها كه هدايوں كو كسى طرح تنخت سے ألك كيا جارے . همایوں کی موت اتنی اچانک هوئی اور هندستان میں مغلوں عي حالت أس رقت اتني نازك تهي كم أس رقت تخت کے بیٹے زیادہ جهکڑا نے دو یایا . اکبر کی موت کے بعد جہانگیر تخت یر بیتھا لیکن جانگیر کے سب سے بڑے بیٹے خسرو نے اپنے اپ کے اُس حق کے خاف ھاتھ پیر مارے . جانگیر کی حكومت كے آخرى دائوں ميں نخت كے للے طرح طرح كى بدی سازشیں ہوئیں . جہانکور کے مرنے کے وقت شاہ جہاں دان میں تھا اِس للہ شاہ جہاں کے لئے تخت کو اھار رکانہ کی ا ض سے بدفسمت الله کو چفا گیا . شاهجهال کے بہنچتم عی النے مار ڈالا گیا اور نخت کے دوسرے دعویداروں کے خون میں ے آبنا راستم بناکر شاہ جہن باپ کے تخت پر بیٹھا۔ اورنگزیب نے شاہ مہاں سے بدلہ چکایا . اُس نے شاہ جہاں کو قید کر نے ناہ جہاں کی وندگی میں شاہ جہاں کے نام پر نہیں بلکه خرد اینے قام بر بادشاهت کرنی شروع کی . اِس سب سے ظاهر ر تا فے که اِس زمالے کے بارے میں مسلمانوں میں جو عام دينال تها إسى مع ملاتا جلتا مغلول كاعمل تها. يه بات نهيل ہی کہ ایک بادشاہ کے بعد دوسوسے کو گدی ملنے کا کوئی مانا برآ قائرن یا رواج رها هو اور کسی نے زبردستی بناوت کر کے ے ترزا موا بلکہ جو نعجم هوتا تها وہ ایک معمولی چیز تھی ور اِس لئے ہوتا تھا کہ اِس معاملے میں کوئی خاص قانون پہلے

یہ بھی یاں رکھنا ضوروں ہے کہ منل بادشانوں نے رعایا کو پنی مرضی کے مطابق آزاد زندگی بسر کولے کی بہت بڑی آزادی درے رکھی تھی ۔ اُس میں بادشاہ کوئی دخل نہ دیتا ہا ۔ یہ وہ رمائہ تھا جب یورپ میں رے بادشاہ بھی جو بالکل خود مختار تھے اور رے بھی جون کے یہاں پارایمید شانی ھوئی تھی دوتوں آپنی آپنی رعایا کو صاف صاف یہ حکم دیتے تھے کہ رعایا اِس خاص قسم کے مذہبی عقیدوں (وشواسوں) کو مائے اور اِس کے خالف کسی دوسرے تقیدوں کو نہ مائے۔ مثال

· 建筑多种产品的

हैसियत से काम कर रहा हूँ, लेकिन इसलाम उससे क्या बाहता है इसका वह खु.द फैसला करता था. मुराल राज में एक ऐसी शख्सी हुकूमत थी जिसमें उसूल के तीर पर भी बीर अमली तौर पर भी लोगों को अपनी मरजी के मुताबिक आजाद जिन्दगी बसर करने का एक बहुत बड़ा मैदान छूटा हुआ था.

लेकिन इस बारे में एक बात याद रखनी चाहिये. व.ई बातों में मुराल बादशाह के अख्तयार बँधे हुए थे, फिर भी अगर कोई बादशाह उन हदों से बढ़ जाने का फैसला कर लेता था तो राज के तौर तरीक़ों में पार्लीमेन्ट या असेम्बली या कौंसिल जैसी कीई ऐसी चीज मीजूद नहीं थी जो बाद-शाह को ऐसा करने से रोक सके. बादशाह की किसी वालिसी के साथ अपनी नाराजगी जाहिर करने का रियाया के पास सिर्फ एक तरीका था और वह था बगावत करने का तरीका. वह तरीका उन दिनों हमेशा ठीक तरीका माना जाता था. मसलन उस जमाने में इंगलैंड के बादशाह के खिलाफ इस तरह की बरावित एक मजहबी गुनाह सममा जाता था. हिन्द्स्तान में यह बात नहीं थी. इसके अलावा शह शह जमाने के मुसलिम कानून में बादशाह के बार में कोड़ ऐसा क्रायदा नहीं था कि किसी बादशाह के बाद गही उसके लड़के ही का मिले. शुरू के मुसलमान बादशाहा ने अपने अमल में भी इस तरह का कोई क्रायदा नहीं माना. यह सही है कि शीओं ने इस तरह का दावा किया था और इसी वजह से शीश्रों श्रीर सुन्नियों में फर्क़ पड़ गया. मिस्र में खलीका ही मुसलमानों का हाकिम होता था. खर्ताका को मुसलमान अपने में से चुनते थे. शीश्रों का बांडकर कुरान या हदीस में किसी ने भी बेटे को बाप की गदा पर बैठने के हक या उसूल को नहीं माना. यहाँ तक कि बादशाहत के मामले में मुसलमानों में का स्तास कानून एक के बाद दूसरे के गई। पर बैठने का है ही नहीं. बादशाहत के लिये किसी इनसान का जाती इक इसलाम नहीं मानता. इसलाम के मुताबिक बादशाहत किसो की जाती मिल्कियत नहीं होती और न किसो की बपौती हो सकती है. क़ुदरती तौर पर तस्त का कौन इक़रार है और कौन नहीं, इस पर न किसी क़ानून की जहरत थी और न कोई कानून माना जा सकता था. हिन्दुस्तान में शुरू के मुसलमान बादशाहों ने इस मुश्किल काम को इस तरह इल किया कि उन्होंने कम से कम कहने के लिये अपने को ख़ुदमुख्तार बादशाद नहीं माना. वे कहते थे कि इस अपने किसी जाती हक से बादशाहत नहीं कर रहे हैं बल्कि उस दूसरे बैठे हुए मुसलिम बादशाह के मुकर्र किये हुए श्रक्रसर या नाइब की हैसियत से काम कर रहे हैं जो अपने को खतीका कहता है. बाबर श्रीर उसके बाद के बादशाहों ने इसलिये इस पुरानी कर्ती रहन

حیثیت سے کام کر رہا ہوں ایکن اِسلام اُس سے کیا چاہتا ہے اِس کا وہ خود فرصلیہ کو کا تھا ۔ مغل راج میں ایک ایسی شخصی حکومت تھی جس میں اُصول کے طور پر بھی اور عملی طور پر بھی لوگوں کو اپنی مرضی کے مطابق آزاد زندگی بسر کرنے کا ایک بہت بڑا میدان چھوٹا ہوا تھا .

ليكن إس بارم مين ابك بات ياد ركهني چاهيم. كيى باتوں میں منل بادشاہ کے اختمار بندھے ہوئے تھے . پور بھی اگر كرئى بادشاه أن حدول سے برتم جانے كا نيصله كر ليتا تها تو رأب کے طور طریقوں میں پارلیمنٹ یا اسمبلی یا کونسل جیسی کرئی ایسی چیز مرجود نهیں تھی جو بادشاہ کو ایسا کرنے سے روک سکے بادشاہ کی کسی پایسی کے ساتھ اپنی نارافکی ظاہر کرنے کا رعایا کے یاس صرف ایک طریقه تھا اور وہ تھا بغارت کرنے کا طریقہ وہ طریقہ آن دنوں همرشہ تھیک طریقہ مانا جاتا تها . مثلاً أس زمائے میں انگلینڈ کے بادشاہ کے خلاف اِس طرح کی بناوت ایک مذهبی گذاه سمجها جانا تها . هدستان میں یہ بات نہیں تھی ایس کے الارہ شروع شروع زمالے کے مسلم قائری میں بادشاہ کے بارے میں کوئی أیسا قاعدہ نہیں تھا تھ کسی بادشاہ کے بعد گدی اُس کے اوکے ھی کو ملے . شروع کے مسلمان بادشاہوں نے اپنے عمل میں بھی اِس طرح کا کوئی قاعدہ نہوں مانا ، یہ صحوم هے که شیموں نے اِس طرح کا دعى كها تها أور إسى وجه سے شهعوں أور سندوں ميں فرق ير گوا . مصر موس خلينه هي مسلمانون كا حاكم هوتا تها . خليفه كو مسلدان اين ميں سے چنتے تھے . شيعوں كو چيور كر قرآن يا حدیث موں کسی نے بھی بیٹے کو باپ کی گدی پر بیٹھنے کے حتى يا أمرل كو نهين مانا . يهان تك كه بادشاهت ك معاملے میں مسلمانیں میں کوئی خاص فانین ایک کے بعد دوسے کے گدی پر برتھنے کا هے هی نہیں . بادشاعت کے لئے کسی انسان کا ذانی حق اسالم نہیں مانتا . اسالم کے مطابق بادشاهات کسی کی ذاتی ملکوت نبهی هوتی اور نه کسی کی بهرانی مو سکتی هے . تدرتی طور پر تخت کا کون حقدار هے اور کین نہیں ایس پر ٹھ کسی قانون کی ضرورت تھی اور نہ كوئي فانون مانيا جا معتا تها . هندستان مين شروع كي مسلمان بادشاهرں نے اِس مشکل کام کو اِس طرح حل کیا کہ اُنہوں نے کم سے کم کہنے کے لئے اپنے کو خودمختار بادشاہ نہیں مانا ، وے کہا۔ تھے کا مم اپنے کسی ذاتی حق سے بادشاہت نہیں کر رہے میں بلعداس دوسر مديته هواء مسلم بادشاه كرمقرركي هرائه أفسر يا فائب كى حرثيت سے كم كر رقع هوں جو أينے كو خليف كوتا في ، بابر اور اُس کے بعد کے بادشاموں نے اِس لئے اِس برانی فرضی رسم

1

बातों में मुराल बादशाह इसलाम के एजेन्टों की तरह भी काम करते थे. यहाँ एक उसूल की बात है. मुराल बाद-शाह और सबसे ज्यादा औरंगजेब, इसलाम के एजेंट से ज्यादा और कुछ न थे. अकबर इस बात के कहने में फ़ब्स करता था कि मेरी फ़तहों से इसलाम के उसूल दूर दूर तक फैलते हैं और इसलाम के पैराम्बर का हुक्म उन मुस्कों तक पहुँचता है जहाँ पहले कभी पैराम्बर का नाम भी नहीं सुनाया गया था.

जहाँगीर श्रीर शाहजहाँ दोनों अपने को सच्चे दीन के रक्षक मानते थे श्रीर दीन के जायज हक का ख्याल रखते थे. श्रीरंगदोब की सबसे बड़ी खाहिश यह थी कि न सिर्फ मुसलमानों बल्कि कम से कम बाहर के रहन सहन में शैर मुसलुमानों में भी मुसलिम रहन सहन को बढाया जाय. साथ ही औरंगजेब को भी इस मामले में ईसाइयों के साथ यह रियायत करनी पड़ी थी. उन्हें शराब पीने की इजाजत दी गई थी जबकि बाक़ी तमाम रियाया के लिये शराब पीना कानूनन मना था. लेकिन इसलामी हुकूमत के वे उसल जो खासकर करान पर नहीं बल्कि बाद के मुसलिम बादशाहों के रिवाजों श्रीर ईरान के ग़ैर मुखलिम बादशाहों की रिवा-यतों पर ढाल लिये गये थे आसानी से हिन्दुस्तान में न चल सकते थे. एक सवाल यह था कि हिन्द्रस्तान दाहत-इसलाम है, या दारुलहरब. दारुलइसलाम के माने हैं मुसलमानों का घर श्रीर दारुलहरब के माने हैं मुसलमानों के हमले की जगह. इस तरह के सीधे सादे मामले में भी श्रीरंगजेब जैसे बदशाह के लिये भी उन मुसलिम रिवाजों को जो हिन्दुस्तान के बाहर चलते थे हिन्दुस्तान में जारी करना नामुमकिन था. इससे पहले के हिन्दुस्तान के मुसलिम बादशाहों ने कभी-कभी मुसलिम शरब या मुसलिम रिवाज के खिलाफ अमल करने की भी हिम्मम न की थी. मालम होता है कि इसलाम के हिन्दुस्तान आने के शुक्र के दिनों में ही यह बात समभ ली गई थी कि तमाम हिन्दुस्तान को इसलाम का अपनाना नासुमकिन है. यह मामला यहीं पर रह गया और इसकी वजह से हिन्दुस्तान के अन्दर इस-लामी क़ानून श्रीर इसलामी रिवाज में काफी तब्बीलियाँ करनी पड़ी. इसका क़द्रती नतीजा यह हुआ कि यह उसल बिल्कुल खत्म हो गया कि हिन्दुस्तान में यहाँ के मुसलमान बादशाह मजहबे इसलाम के महज एजेन्ट बनकर हुकूमत €ť.

अब हम फिर यह देखना चाहते हैं कि मुग़लों की हुकू-मत का दंग क्या था. मुग़ल हुकूमत यानी शख्सी हुकूमत यानी एक आदमी की हुकूमत तो थी ही लेकिन वह एक हद के अन्दर ही शख्सी हुकूमत थी. बादशाह आम तौर पर यह दावा करता था कि मैं इसलाम के एक एजेन्ट की ہترں میں منل ہادشاہ اِسلام کے ایجنتوں کی طرح بھی کام کرتے تھے۔ یہاں ایک اُصول کی ہات ہے۔ منال ہادشاہ اور سب سے زیادہ اورنگزیب اُسلام کے ایجنت سے زیادہ اور کچھ نہ تھے۔ اُنہر اِس ہاسے کے کہنے میں فخو کرتا تھا کہ میری فتندیں سے اِسلام کے اُصول دور دور تک پھیلتے میں اور اِسلام کے پینمبر کا حکم اُن ملکوں نک پہلچتا ہے جہاں پہلے کبھی پینمبر کا تام بھی نہیں سایا

جہانکیر اور شاہجہاں دونوں اپنے کو سیجے دبن کے رنشک سانتہ تھے اور دین کے دائر حق کا خیال رکھتے تھے. اورنگزیب کی سب سے بڑی خواهش یه تهی کا نه صرف مسلمانیں بلکہ کم سے کم باعر کے رهن سهن میں غیر مسلمانوں میں یہی مسلم رجن سہن کو برهایا جائے ، ساتھ عی اورنگاویب کو بھی اِس معاملے میں عیسائیوں کے ساتھ یہ رعایت کوئی یری تھی . اُنھیں شراب پینے کی اجازت دے کی تھی جب كه باقى تمام رءايا كے لئے شراب پينا قانوناً منع تها ، ليكي إسلامي حنومت کے وے اصول جو خاص کر قرآن پر فہیں بلکه بعد کے مسلم بانشاھوں کے رواجوں اور ایران کے غور مسلم بادشاهی کی رعایتیں در دھال لئے گئے تھے آسانی سے ھندستان میں نہ چل سکتے تھے . ایک سرال یہ تیا که مفدستان دارالسلام ھے یا دارالحرب ، دارالسلام کے معنے هیں مسلمانوں کا گھر اور دارالحرب کے معنے میں مسلمانوں کے حملے کی جگھ، ایس طرح کے سیدھے سادے معاملے میں بھی اورنگزیب جیسے بادشاہ کے نئے بھی آن مسلم رواجوں کو جو ہندستان کے باعر چلتے تھے هندستان میں جاری کرنا ناسمی نها ، أس سے بہلے کے هندستان کے مسلم بادشاهوں لے کبھی کبھی مسلم شرع یا مسلم رواج کے خلاف عمل کرلے کی بھی ہست نہ کی تھی . معلوم ہوتا ہے کہ إسلام کے هندستان آنے کے شروع کے دنس میں عی یہ بات سمجه لی گئی تھی که تمام هدرستان کو اِسلام کا ایننا اسمعن هے . یہ معاملہ بھھی پر رہ گیا اور اِس کی بچہ سے علاستان کے اندر اِسلامی قانوں اور اِسلامی رواج میں کافی تبدیلیاں کرنی يوين . إس كا قدرتي تتيجه يه هوا كه يمر أصول بالكل ختم هو کیا بد مغرستان میں یہاں کے مسلمان بادشاہ مذهب اِسلام کے محض ایجات بن کر جارست کریں .

آب هم پهر یه دیکها جاهتم هیں که مغلوں کی حکومت کا دینگ کیا تھا مغل حکومت یعنی شخصی حکومت یعنی ایک آدمی ایک حد کے ایک آدمی ایک حد کے اندر هی شخصی حکومت تهی ، بادشاہ عام طور پر به دعهوں کرتا تھا که میں اِسلام کے ایک ایجیات کی

ها تها، صدر ألصدر رأي كاخاص عالم هونا تها، شايد ملك بهر مهن ولا شرع السب کے زیادہ جائیے والا سمجهاجانا تھا اور ممکن ف که الرع در سب سے زیادہ واقف بھی رھی ھو۔ سب مغل بادشاھیں في شريع كا مطلب أعلن كرنے كا يبرأ حق صدر كو دسم ركها تها . صرف اکبر نے یہ حق اپنے هاته میں لیا تھا که جب کبھی عام وں الى رائد له ملتى نهى تو بادشاه عادل كى حيثيت س خود أن میں سے جس رانے کو ٹھیک سمجھے آسی پر عمل کرے ، لیکن إس أعلن ير بهي الابر أس وقت تك، عبل نه كر سكا جب تک اُس نے اپنے برائے صدر الصدر کو نکال کر اُس کی جکہہ دوسرا مدر مقررت کو لیا، عبدالنبی کو نکال کر اس کی جگه صدر جہاں ؟و مقور کیا گیا ، علماؤں کے فاوے کا اطلق بھی تب تک نہیں ہو سکا جب تک که صدرالصدر لے خاص کر دستخط نہیں كر ديا . يه إيك عجيب مورت تهى . مدرالصدر جب تك مدر الصدر رهمًا تها تب تك صرف أصعى يه أعلن كرام كا حق تها كه شرع كا حكم كيا هي. ليكبي بادشاة صدر كو مقرر أور برخاست كر سكتا تها . وة بادشاة كي ماتحت له تها بر بادشاة أس نكال سعنا تها . اورنكزيب كي تنفت ور بدنهلم كي وقت إس کی یہت اچھی مثال دیکھنے کو ملی . صدر الصدر لے شاہجہاں کے زندہ رہتے ہوئے اورنگزیب کو بانشاہ قرار دینے سے انکار کو دیا ۔ اورنعزیب کو آسے برخاست کر کے دوسرا صدر مقرر کونا ہڑا . اِس دوسرے مدر نے پہلے می سے یه رائے ظاهر کو دی تھے کہ چودعہ شاہجہاں قید میں ھونے کی وجہ سے کام کرنے کے قابل نہیں اِس لئے اُس کے زندہ رمتے ہوئے بھی اوردعویب ك نام كا خطبه يوها جا سكتا هي إس طرح مغل بادشاهون کے لئے اپنے کسی کام کو ٹھیک ٹابت کرنے کے لئے یہ الزسی تھا کہ ولا دُولَى له كولي أيسا عالم قعونده لين جو صدرالصدر بن كر ہادشاہ کے کام کو جائز قرار دے سکے ، اورنگزیب کے زمانے میں ایک اور طرے سے یہ چمک گیا که شرع کے مماسلے میں بادشاہ كس طرح دوسرے كے ماتحت تها . كنچه أنسر إس كام كے لاء مقرر کام گائے تھے جو رعایا در اجازت دیتے تھے که وے اگر بادشاہ کے خالف کوئی نالص کرنا چاعیں نو کر سکیں . یہ انسر والد شرع کیلاتے تھے . یہ مددمے بادشاہ کے خلاف اُس طرح کے فاتم معاملوں میں دائر کئے جاسکتے تھے جس طرح که انگریزی قانين مين يبليننس أف رائت ك مانحت دائر كيا جانا تها. اورنعویب کی حکومت کی پاایس سے اِن کا کرئی نعاق نہیں نھا اور نہ دوئی اس نے مطابق ملک کے راج کاج میں دول

منل سلطنت مذهبي سلطنت فو نهين تهي ليكن كثي

लिया था. सद्दलसद्र राज का खास भाविम होता था. गायद मुल्क भरं में वह शक्षर का सब से ज्यादा जानने वाला ममका जाता था और मुमकिन है कि शरक पर सब से ज्यादा वाकिक भी वही हो. सब मुराल बादशाहों ने शरध का मतलब ऐलान करने का पूरा हक सहर को दे रखा था. सिर्फ अकबर ने यह इक अपने हाथ में लिया था कि जब कभी उल्लाभों की राय न मिलती थी तो बादशाह आदिल की हैसियत से .खुद उनमें से जिस राय को ठीक सममे उसी पर अमल करें. लेकिन इस ऐलान पर भी अकदर उस वक्त तक अमल न कर सका जब तक उसने अपने पुराने सदरलसदर को निकालकर उसकी जगह दूसरा सदर मुकर्रर न कर लिया. अब्दुल नबी को निकालकर उसकी जगह सदरजहाँ को मुक्तरेर किया गया. उल्माओं के फतवे का ऐलान भी तब तक नहीं हो सका जब तक कि सदरलसदर ने खासकर दस्तखत नहीं कर दिया. यह एक अजीव सरत थी. सद्दलसद्र जब तक सद्दलसद्र रहता था तब तक सिर्फ उसे ही यह ऐलान करने का हक्तें था कि शरश्र का हक्म क्या है. लेकिन बादशाह सदर को मुक़र्रर श्रीर बरस्तास्त कर सकवा था. वह बादशाह के मातेहत न था पर बादशाह उसे निकाल सकता था. श्रीरंगचेत्र के तख्त पर बैठने के बक्त इसकी बहत श्रच्छी मिसाल देखने को मिली, सद्दलसद्र ने शाहजहाँ के जिन्दा रहते हुए श्रीरंगजेब को बादशाह करार देने से इनकार कर दिया. श्रीरंगजेब को उसे बरखास्त करके दूसरा सदर मुकरंर करना पड़ा. इस दूसरे सदर ने पहले ही से यह राय जाहिर कर दी थी कि चूँ कि शाहजहाँ क़ैद में होने की वजह से काम करने के क़ाबिल नहीं इसलिये उसके जिन्दा रहते हुए भी श्रीरंगजेब के नाम का .खुतवा पढ़ा जा सकता है, इस तरह मुराल बादशाहों के लिये अपने किसी काम को ठीक साबित करने के लिये यह लाजिमी था कि वह कोई न कोई ऐसा आलिम ढूँढ लें जो सद्रुलसद्र बनकर बादशाह के काम को जायज करार दे सके. श्रीरंगलोब के जमाने में एक और तरह से यह चमक गया कि शरश्र के मामले में बादशाह किस तरह दूखरे के मातेहत था. कुछ अकसर इस काम के लिये मुक्तर्रर किये गये थे जो रियाया को इजाजत देते थे कि वे अगर बादशाह के खिलाक कोई नालिश करना चाहें हो कर सकें. यह अफसर बकलाए शरम कहलाते थे. यह मुझद्में बादशाह के खिलाफ उस तरह के जाती भामलों में दायर किये जा सकते थे जिस तरह कि अंग्रेजी कानून में पेटन्ट्स-आफ-राइट के मातेहत वायर किया जाता या. श्रीरंगजेब की हुकुमत की पालिसी से इनका कोई ताल्लुक नहीं था और न कोई उसके मुताबिक मुल्क के राज काज में दखल दे सकता था.

मुग्नल सरतनत मजहबी सरतनत तो नहीं थी, लेकिन कर्र

जान बक्त देने के बजाय उसे काजी के पास हुक्म के लिए भेज दिया. श्रीरंगजेब का जमाना मुसलमानों के पूरे जार का जमाना था श्रीर श्रीरंगजेष .खुशी से मुसलमानों के फैसले के श्रागे सर मुका देता था.

श्रव यह सवाल पैश होता है कि मुराल राज मजहबी राज था. मुग्रज राज से पहले के यानी शुरू जमाने के मुसलिम बादशाहों का अमल चाहे कैसा भी रहा हो मुरालों की हकूमत इसलामी या मजहबी नहीं कही जा सकती. मजहबी हुकूमत का मतलब यह है कि हुकूमत यानी सरकार पुरोहितों, पदारियों या मुल्लात्रों के मातेहत हो. इसलाम ने ईसाई चर्च की तरह कभी मुसलिम मुलाओं का इजतमा नहीं खड़ा किया. इसलाम में कभी भी कोई खास पुरोहित यानी मजहबी रस्में श्रदा करने कराने वाली कोई खास जमा-श्रत नहीं रही. मजहबी तौर पर इसलाम में कभी भी कोई खास छोटे बड़े पुरोहित या पादरी नहीं हुए. इसलिये मज-मून में मजहबी हुकूमत मुसलिम राज में हो ही नहीं सकती थी जबकि किसी को किसी वक्त भी शरश्र का ऐसा मतलब बता देने का इक नहीं था जिसमें राल्ती न हो सके. मुसल-मानों में खलीका हुए हैं. कभी करी एक साथ एक से ज्यादा भी खलीका हुए हैं. लेकिन खलीका उन मानों में गुसलमानों का रुहानी हाकिम नहीं होता था जिन मानों में अभी तक पाप कैथालिक ईसाइयों का रूहानी हाकिम है. जिस तरह पाप को ईसाई धर्म के मामलों में इस तरह के हुक्म जारी करने का इक है जिनका मानना हर ईसाई का कर्ज है उस तरह खलीका का कभी श्राम मुसलमानों के लिये हुक्म जारी करने का इक हासिल नहीं हुआ. इसलाम अभी तक मज़-हवी मामलों में सिर्फ एक ही चीज को सनद मानता है और वह है रसूल की हदीसों श्रीर सहावा की जिन्दगी के वाक्रयों की रोशनी में क़ुरान का हुक्म. उसमें सिर्फ एक तब्दीली मान ली गई थी. वह यह कि तमाम मुसलिम दुनिया मिलकर जिस चीज को जायज कह दे वह जायज

जबिक सब जगह इसलाम की सूरत यह थी तो हिन्दु-स्तान में और खासकर मुगल हिन्दुस्तान में तो यह और भी ज्यादा जरूरी थी. इस मुल्क में हिन्दुस्तान की आबादी के एक बहुत बड़े हिस्से के साथ इसलाम को शरश्च से कोई ताल्लुक नहीं था. जिस मुल्क में आबादी के इतने बड़े हिस्से का बड़े-बड़े मामलों में उनके अपने क़ानून के मातेहत छोड़ दिया गया था वहाँ इसलाम की कोई मजहबी हुकूमत हो ही नहीं सकती थी. इस मामले में औरंगजेब ने भी कोई तब्दीली करने की कोशिश नहीं की.

लेकिन एक बात ऐसी थी कि जिस में मुराल राज ने एक मजहबी जालिम के अस्तियार को बहुत दर्जे तक मान جان بخش دیا۔ اور اکریب کا زمانہ مسلمانیں کے پاس حکم کے لئے بھیج دیا۔ اور اکریب کا زمانہ مسلمانیں کے پورے زور کا زمانہ تھا اور اور اکریب خوشی سے مسلمانیں کے نیصلے کے آگے سر جہکا دیتا تھا .

اب یه سوال پیدا هوتا هے که خل راج مذهبی راج تها. مغل راج سے پہلے کے یعلی شروع زمانے کے مسام بادشعوں کا عبل چاھے کیسا بھی رہا ہو مغلوں کی حکومت اِسلامی یا مذھبی نہیں کہی جا سکتی . مذهبی حکومت کا مطلب یه الله که حکومت یعلی سرکار بروهةرن پادريوں يا ملاؤں كے ماتحت هو . إسلام نے عیسائی چرپ کی طرح کبھی مسلم ملاؤں کا اجتماع نہیں کھڑا کیا . اِسلام مهن کبهی بهی کوئی خاص پروهت یعنی مذهبی رسمیں ادا کرنے کرانے والی کوئی خاص جماعت نہیں رھی . منعبی طور پر اسلام میں کبھی بھی کوئی خاص چھوٹے ہوے يروهت يا يادري لهين هوئه . إس لله مضمون مين مذهبي حکومت مسام رأیم میں هو هی نبهیں سعتی تھی جب که کسی کوکسی وقت بھی شرع کا ایک ایسا مطلب بتا دیلےکا حق نهين تها جس مين غلطي نه هو سكه . مسلمانون مين خليفه هرئے هیں . کبھی کبھی ایک ساتھ ایک سے زیادہ بھی خلیفہ هوئه هيون ، لكين خليفه أن معنون مين مسلماتون كا روحاني حاكم نهين هوتا تها چن معلون مين ايهي نك، پوپ كهيتولك عیسائیوں کا روحانی حاکم ہے . جس طرح پوپ کو عیسائی دورم کے معاملوں میں اِس طرح کے حکم جاری کرنے کا حق ہے جن كا ماننا هر عيسائي كا فرض في أس طرح خليف كو عبهي عام مسلمائوں کے لئے حکم جاری کرنے کا حق حاصل نہیں عوا . اللم ابهی تک مذہبی معاملی میں صرف ایک هی چيز کر سند مانتا ہے اور وہ ہے رسول کی حدیثرں اور صحابت کی زندگی کے وانعوں کی روشنی میں قرآن کا حکم ، اِس میں صرف ایک تبديلي مان لي گئي تهي ، ولا يه كه أمام مسلم دانيا حل كو جس چيز کو جائز کهه در وه جائز هے .

جب که سب جگهنه اسلام کی صورت یه نهی تو هندستان میں اور خاص کو مغل هلاستان میں تو یه اور بهی زیادہ ضوروی تهی اوس ملک میں هندستان کی آبادی کے ایک بہت ہوتے حصے کے سانھ اِسلام کو شرع سے کوئی تعاق نہیں تھا ، جس ملک میں آبادی کے انفی ہوتے حصے کو بوتے ہوتے معاسلوں میں آن کے اپنے قانون کے ماتحت چھور دیا گیا تھا وعاں اِسلام کی کوئی مذہبی حکومت ہو ھی نہیں سکتی تھی ، اِس مماملے میں اورنگویب نے بھی کوئی تبدیلی کرنے کی کوشش نہیں گی ۔

لیکن ایک. بات ایسی تھی که جس میں منل راج ایک مذہبی الہ کے اختیار کو بہت درجے تک مان ľ

किया जाता था कि जो मुखलमान मजहबी जुर्म करेगा यानी अपने किसी मजहबी फर्ज को पूरा नहीं करेगा उसपर खास हालतों में शरम के मुताबिक मुकदमा नहीं चलाया जायगा. मानना पहता है कि मुराल बादशाहों ने इस मामले में लोगों को काकी रियायत दे दी थी. बाज लांग समभते हैं कि इसकी पहल अकबर ने की थी लेकिन यह रालत है. अकबर से पहले अलाउद्दोन और मुहम्मद तुग़लक इसी तरह का श्राजाद ढंग अस्तियार कर चुके थे. अकबर ने .खुद अपने सल्तान बादिल या इसाम बादिल होने का जा फरमान उत्माद्यों को जमा करके उनसे जारी कराया था जिसके मताबिक उल्माश्रों की एक दूसरे के खिलाफ दो रायों में किसी एक को ठीक ऐलान कर देने का अकबर को हक मिल गया था, जिसे योदप वाले ग्रस्ती से "इनफालिएवि-लिटि डिकी" यानी 'बादशाह की मासूमियत का फरमान' कहते हैं, वह भी असल में मुसलिम शरझ का बदलने वाली चीज नहीं थी बल्क एक बहुत बड़े दर्जे तक मुसलमानों को तसल्ली देने वाली चीज थी. अला हदीन ने यह ऐँलान कर दिया था कि 'में शरस्र का क़।नून नहीं जानता और इस-लिये जो मेरा दिल कहता है वही करता हूँ " इसके खिलाक श्रकवर का यही कहना था कि मैं जो करता हूँ शरध कं मुताबिक करता हूँ. सिर्फ शरअ के जानने वाले मुखतिलक श्रालिमों की जो अलग अलग राय एक दूसरे के खिलाफ मीजूद हैं उनमें से मैं किसी एक राय को चुन लेता हूँ." इसका मतलब यह हुआ कि जहाँ तक उसूल की बात है श्रकबर ने भी शरश्र को बदलने का श्रक्तियार अपने हाथ में नहीं लिया. यह दूसरी बात है कि अमल ,में उसने शरध के कुछ हुक्मों की परवाह नहीं की और उसका श्रमल किसी वात में शरश्र के खिलाफ रहा.

श्रीरंगजेब ने शरक के बदलने के इस हक से बिलकुल ही हाथ खींच लिया. बार बार देखने में आता है कि श्रीरंग-जब न सिर्फ दीवानी और फीजदारी के मामले में ही शरै के त्रालिमों की राय लेता था बल्कि सरकारी टैक्स लगाने के मामले, तिजारत और ब्योपार के क्रायरे क़ानून बनाने में भी वह अक्सर शरश्र का हुक्म देखता था. श्रहमदाबाद में कुछ लोगों ने तार बनाने का काम श्रपने ही हाथों में ले रखा था. औरंगजेब ने ब्रालिमों से सलाह कर इस इजारे को तोड़ दिया और सबको तार बनाने और बेचने की इजाजत दे दी. एक मर्तवा औरंगजेब ने ग्रह्मा वरौरा का निर्ख बाँध देना चाहा लेकिन जैसे ही उसे मालूम हुआ कि ऐसा शरध के खिलाफ है उसने अपनी कोशिश बन्द कर दी. उसे किसी के मुखलमान होने पर .खुशी होती थी लिकिन फिर भी एक मतेबा जब किसी आदमी ने, जिसे क़तल के मामले में मौत की सजा दी गई थी, मुसलमान हो जाने और जान बरुरावाने की स्वाहिश जाहिर की तो औरंगजोब ने उसकी

لها جاتا نها که جو مسلمان مذهبی جرمکریکا بعلی اِینیکسی مذهبی وض کو پررا نہیں کرے کا اُس پر خاص حالتیں میں درع کے طابق مقدمه نهيل چلايا جائيلا، ماننا پونا في كه منل بادشاهين نے اِس معالے میں لوگوں کو کانی رعایت دے دی تھی . یعض اوک سمجھتے میں کہ اِس کی پیل آئیر نے کی تھی لیکن به غلط في . ائبر سے يہلے علاؤالدين أور محمد تغلق إسى طاح کا آزاد تعنگ اختیار کر چکے تھے . اکبر نے خود اپنے ساطان عادل یا امام عادل ہونے کا جو فرمان علماؤں کو جمع فر کے اُن سے چارہی کرایا تھا جس کے مطابق علماؤں کی ایک دوسر م کے خالف دو رائیوں میں کسی ایک کو تھیک اعلان کر دینے کا اكبر كو حق مل كيا تها عيس بورب وألم غلطي سم "أنفالله بليلي ذكري" بعني وانشاه كي معصوميت كافرمان الهته هين ولا هي أصل میں مسلم شرع کو بدائے رألی چیز نہیں تھی بلکه ایک بڑے درجے تک مسلمانوں کو تسلم دینے والی چیز تھی . علاؤ الدین نے یہ اعلال کر دیا تھا کہ ''میں شرع کا قانوں نہیں المائة أو إس لله جو مهرا دل كهذا ه وهي نونا نون " إس کے خلاف اکبو کا یہے۔ کہذا تھا کہ لامیں جو کرتا عیں شروع کے مطابق کرنا عبن ، صرف شوع کے جائنے رائے مختلف عالموں کے دو انگ الگ رائے ایک درسرے کے خلاب موجود میں ان میں سے میں کسی ایک رائے کو چن لیتا موں . اوس کا مطلب یہ عوا کہ جہاں نکہ اصول کی بات ہے انبر نے بھی شرع کو بدانے الا اختیار اپنے هاہ میں نہیں لیا ، یه دوسری بات ھے کہ عال میں اُس نے شرع کے کجھ حکمیں کی پرواد نہیں كى اور أس كا عمل دسى بات مين شرح كے حلاف رها .

اورنکونیب نے شرح کے بدانے کے اِس حق سے بالنل عی ماتھ کیونیے ایا ، بار بار دیکھتے میں آنا ہے کہ اورنکونیب نہ صرف دیوانی اور فرجداری کے معاملے میں می شدع کے عالموں کی رانے لیتا نها بلکه سرکاری تیکس گانے کے معاملے ' نجارت اور بیوپار کے فاعدے فائوں بنانے میں بھی وہ ادثر شرع کا حکم دیکھتا تھا، احمدالیاد میںکنچھ لرگوں لے تار بنانے کا کام اینے ھی ھاتھوں میں ترز دیا اور سب کو تار بنانے اور بینچنے کی اوجازت دے دی ، ایک مرتب اور کونیب نے غلہ وغیرہ کا فرخ بائدھ دینا چاھا لیکن جیسے ھی اسے معلوم ھوا کہ ایسا شرع کے خلاف ہے اُس نے اپنی کیشش بند کر دی ۔ آے کسی کے مسلمان ھوئے پر خوشی ھوتی تھی لیکن پور بھی ایک موتب کسی آدمی نے جسے معلوم موا کہ ایک موتب کسی آدمی نے جسے معلوم ہوا کہ ایسا شرع کے خلاف ہے اُس نے اُس نے معلوم ہوا کہ ایسا شرع کے خلاف ہے اُس نے اُس کے معاملے میں موت کی سزا دی گئی تھی' مسلمان ھو جانے کی فرار جان بخشوالے کی خوادھ طاھر کی تو اورنگزیب نے اُس کی اور جان بخشوالے کی خوادھ طاھر کی تو اورنگزیب نے اُس کی

113

जरूर था लेकिन उसके बनाने में मुराल राज का कोई हाथ नहीं था. इन यूरप वालों को कोई मुराल क़ानून नहीं मिले क्योंकि मुरालों ने कभी नये कानून बनाये ही नहीं. जिखे हुए क्रानून ता उस जमाने में इतने ज्यादा थे कि श्रीरंगजंब न, जो .खुद वड़ा आलिम था, यह महसूस किया कि मुस-लिम शरश्र की पेचीव्रियों में से रास्ता मिलना भी कभी कभी मुश्किल हो जाता है. इसिलये श्रीरंगजेब ने शरक्र के कानून को फिर से तरतीय देकर लिखवाया. इस काम में औरंगजेंब ने बादशाह की हैसियत से अपना कोई अक्तियार नहीं जवाया. "फ़तवए आलमगीरी" नाम की किताब तैयार कराई गई. बहुत से आलिमों ने मिलकर उसे तैयार किया. किसाब के नाम के साथ आलमगीरी के नाम से यह नहीं समभना चाहिये कि उसमें कोई आलमगीर का हक्म शामिल है. हर बात जो किताब में कही गई है उसके लिये किताब लिखने वाले आलिमों ने शरश्र की किसी न किसी परानी किताब से हवाला दिया है.

मुराल जमाने में ही हिन्दू धर्म शास्त्र की भी कई संस्कृत किताबें तैयार कराई गई', लेकिन इनमें भी किसी बादशाह के हक्म से कोई बात नहीं लिखी गई. कमलाकर, रघुनन्दन, मित्र मिश्र, नरसिंह ऋौर बहुत से छाटे मोटे पंडितों ने धर्मशास्त्र के अलग अलग हिस्सों पर मेहनत का, इन बिह्नानों ने हमेशा पुराने शास्त्रों से ही लेकर अपनी राय जाहिर की है. कहीं कहीं इतना जरूर किया है कि जहाँ उन्हें पुरानी कितावों में तरह तरह की एक दूसरे के खिलाक रायें मिली हैं वहाँ उन्होंने उन्हीं में से किसी एक राय को लेकर अपना एक नया रास्ता बनाया है. इस मामले में हिन्दुओं की एक श्रीर रियायत थी जो मुसलमानों को नहीं थी. हिन्दु श्रों की श्रपनी कचहरियाँ थीं जो पंचायतें कहलाती थीं. धर्मशास्त्र का मतलब मालूम करने में जहाँ दिककत होती थी यह पंचायतें उसी पर आखिरी फैसला देती थीं. आम मगुन जमाने में किसी मुग़ल बादशाह की तरक से इन पंचायतीं के रंग रूप, उनके पंचीं या उनके काम के दंग की बद्लने या उसमें दखत देने की कोशिश नहीं की गई.

फ़ौ जदारी का क़ानून यानी जुमें की सजा देने का क़ानून इसलामी क़ानून था. मामूली तौर पर रियाया और राज और रियाया के ताल्लुक इसलामी क़ानून से चलते थे. अकबर ने मुग़ल राज की मफ़ाइबी पालिसी का बदलकर एक खास नई तब्दीली की थी. लेकिन जो तब्दीलियाँ अकबर ने कीं बे भी असल में मुलक के अमन आमान से ही वास्ता रखती थीं. ऐसे मौक़ों पर आम तौर से राज की तरफ़ से यह ऐलान कर दिया जाता था कि कुछ क़ायदे क़ानून को तोड़ देने पर भी सरकार, खासकर, गैर मुसलिम मुजरिमों पर मुकदमा नहीं चलावेगी. कभी कमी यह ऐलान

دید میں اسلام میں عادو دھرم شاستر کی بھی کئی سنسکرت منایوں تیار کرائی گئیں؛ لیکن اِن میں بھی کسی بادشاہ کے مام سے کوئی بات نبھیں لیمی کئی . نما کرا رکھوندیں، متر مشرا نرستان اور بہت سے چھوئے موتے بلذتوں نے دھرم شاستر مشرا نرستان اور بہت سے چھوئے موتے بلذتوں نے دھرم شاستر کے الگ الگ حصوں پر منحنت کی اِن ودوانوں لے هدیشه برانے شاستروں سے ھی لے کر اپنی رائے ظاهر کی ہے کہیں کہیں انتا فرور کی ہے کہ جہاں انبھی برانی کتابوں میں طرح طرح کی ایک دوسرے کے خالف رائیں ملی ھیں وهاں آنھاں نے ایک دوسرے کے خالف رائیں ملی ھیں وهاں آنھاں نے ایک مار رعایت تھی جو آنبھیں میں سے کسی ایک رائے کو لے کر اپنا ایک نیا راستہ بنایا مسلمانوں کو نبھی ہی ۔ ھلاؤں کی اپنی کچھوریاں تھی جو بندوائمیں کہاں دوسرے میں میں میں معلم کرلے میں مسلمانوں کو نبھی تھی ۔ ھلاؤں کی اپنی کچھوریاں تھی جو بندوائمیں آس پر آخری خیصلہ بہاں دقت ہوتی تھی یہ پنچانتیں آس پر آخری خیصلہ دیتی تھیں ۔ عام مغل زمانے میں کسی مغل بادشاہ کی طرف دیتی تھیں ، عام مغل زمانے میں کسی مغل بادشاہ کی طرف سے اِن بنچابتوں کے رنگ روپ اُن کے پنچوں یا اُن کے کام سے اِن بنچابتوں کے رنگ روپ اُن کے پنچوں یا اُن کے کام سے اِن بنچابتوں کے رنگ میں دخل دینے کی کوشش نہیں

کی گئی .

فوجد ارمی کا قانون یعنی جرموں کی سزا دینے کا قانون اِسلامی

قانون تھا ، معمولی طور پر رعایا اور راج اور رعایا کے تعلق اِسلامی

قانون سے چلتے تھے ، اکبر نے مغل راج کی مذہبی پالیسی دو

بدل کو ایک خاص نئی تبدیلی کی تھی ، لیکن جو تبدیلیاں

بدل کو ایک خاص نئی تبدیلی کی تھی ، لیکن جو تبدیلیاں

ائبر نے کیں وجہ بھی اصل میں ملک کے اس آمان

سے ھی واسطہ رکھتی تھیں ، ایسے موقعوں پر عام طور سے

سے ھی واسطہ رکھتی تھیں ، ایسے موقعوں پر عام طور سے

راج کی طرف سے یہ اعلان کو دیا جاتا تھا کہ کچھ قاعدے

زاج کی طرف سے یہ اعلان کو دیا جاتا تھا کہ کچھ قاعدے

قانون کو ترو دینے پر بھی سرکار خاص کو غیر مسلم

متجرموں پر مقدمہ نہیں چلارے کی کبھی کبھی یہ اعلان

شاهی محکومت کے سمبلدہ میں آتا ہے وہ صرف ایک رواجی چوڑ ہے یا وہ انظر کا هیر پھیر ہے یا یہ ہے که اور سب چھڑوں کی طرح بائشاہ کا پھرا کوئے رائا بھی اللہ هی ہے ۔ اب هم اپنے دوسرے مسئلے پر آجاتے هیں یعنی یہ که منل حکومت کہاں تک ایشیائی نائاشاہی تھی ۔ اس سے یہ سوال بھی پھدا ہوتا ہے که قرایشیائی تاتا شامی "کیا چیز ہے آباس بات میں بہت شک ہے کہ ایشیا میں کبھی کسی خاص تسم کی تائاشاهی گڈھی گئی ہو جو بورپ کی تائاشاهی سے زیادہ بوی ہو ۔ اِس قسم کی حکومت میں بورب اور بچھم' ایشیا اور بورپ کا کوئی فرق کی حکومت میں بورب اور بچھم' ایشیا اور بورپ کا کوئی فرق نہیں ۔ جیسے فرانس میں لوئی چودھواں یہ دعوی کوتا تھا که میں ہوتھ کر کوئی بات نہیں ویسے عی هندستان میں اورنکزیب نے اُس سے بوتھ کر کوئی بات نہیں کہی ، بلکہ عام طور پر یہ دعوی بھی سے بوتھ کر کوئی بات نہیں کہی ، بلکہ عام طور پر یہ دعوی بھی

إس مير كوئه يشك نهير كه مغل بادشاهور كي حكوست شخصي حکومت تھی ۔ اُس زمانے میں عام جنتا کے چنے ہوئے لوگوں کی کوئی اِس طرح کی کونسل یا پارلیمهات وغیرہ نہیں تھی جس کے خریمت بادشاہ کے کاموں پر روک تھام رکھی جا سکتی . لیکن اگر اس کے یہ معنی اوں کہ مغل بادشاہ اپنی رعایا کے جان مال کے پورے مااک تھے اور جو چاھے کو سکتے تھے یا سیاسی معاملوں میں بھی جو چاهے حکم در سکتے تھے' أنهیں كبھی بھی قانون کے ماتعت نہوں منا گیا' بلکہ وے اکثر خود اپنے کو قانون کے نوکر کہتے تھے تو دوسری بات ہے ۔ جائیداد وغیرہ سب طرح کے معاملوں میں رعایا کا کل ذاتی قانون هادو دهرمشا۔ آر أور مسلم شرع ير چلتا تها . منل بادشاء مانة ته كه أنهدن أس مين تردیلی کرنے کا کوئی اختیار نہیں ہے ۔ جہاں نک بته چلتا ہے مرف شاہ جہاں نے ایک موتم پر هندو دهرم شاستر هیں کچھ تبدیلی کی تھی یہ اس وقت جب شاہجہاں نے یہ حکم جابه کر دیا که اگر کوئی هندو اسلام کو اینانا چاهے تو اس گهر کے لوگ اُس پر جائدداد وغیرہ کے در کا بیجا دباؤ نے دالیں . مدین ہے کہ اِس سے دعوم شاستر کے جائداد کے وراثت کے فانون میں کوئی تبدیلی پیدا هوئی عو . کیونکه دهوم شاستر کا قانین یه رها هوگا که مذهب بدل لینه پر کوئی شخص آپنی خاندانی وراثت نہیں یا سکتا ، اور شاہدہاں کے قانون کے مطابق آیک، علدو مسلمان هوجالے در بھی اپنی خاندانی وراثت یا سکتا تھا ، مسلمالیں کی شرع میں تو کبھی کسی بادشاہ لے کی تبدیلی کی کوشش نہیں کی .

اِس وجه؛ سے کنچہ مشہور پوروپین مسانروں تے یہ عجیب بات کہت ذالی ہے که مغلوں کے زمانے میں کوئی ایا ہوا قانون تو

शाही हुकूमत के सम्बंध में शाता है वह सिर्फ एक रिवाजी बीज है या वह लग्न में का हेर फेर है या यह है कि और सब बीजों की करह बादशाह का पैदा करने वाला भी अछाह ही है. अब हम अपने दूसरे मसले पर आ जाते हैं यानी यह कि मुराल हुकूमत कहाँ तक पशियाई तानाशाही थी. इससे यह सवाल भी पैदा होता है कि "एशियाई तानाशाही" क्या बीज है ? इस बात में बहुत शक है कि एशिया में कभी किसी खास किस्म की तानाशाही गढ़ी गई हो जो यूरप की तानाशाही से ज्यादा बुरी हो. इस किस्म की हुकूमत में पूरव और पश्चिम, एशिया और यूरप का कोई कर्क नहीं. जैसे .फांस में लुई शीदहवाँ यह दावा करता था कि मैं ही हुकूमत हूँ वैसे ही हिन्दुस्तान में औरंगजेब ने उससे बदकर कोई बात नहीं कही. विक्त आम तौर पर यह दावा मी नहीं किया.

इसमें कोई शक नहीं कि मुग़ल बादशाहों की हुकूमत शख्सी हुकूमत थी. उस जमाने में आम जनता के चुने हुए लागों की कोई इस तरह की कौंसिल या पालीमेंट बरौरा नहीं थी जिसके जरिये बादशाह के कामों पर रोक थाम रखी जा सकती. लेकिन अगर उसके यह मानी लें कि मुराज बादशाह अपनी रियाया के जान माल के पूरे मालिक थे श्रीर जो चाहे कर सकते थे या सियासी मामलों में भी जो चाहे हुक्म दे सकते थे, उन्हें कभी भी कानून के मातेहत नहीं माना गया, बल्कि वे अक्सर .खुद अपने को क्रानृन के नौकर कहते थे तो दूसरी बात है. जायदाद वरौरा सब तरह के मामलों में रियाया का कुल जाती कानून हिन्दू धर्म शास्त्र और मुसलिम शरश्र पर चलता था. मुराल बादशाह मानते थे कि उन्हें उसमें तब्दीली करने का कोई श्रक्तियार नहीं है. जहाँ तक पता चलता है सिर्फ शाहजहाँ ने एक मौक्रे पर हिन्दू धर्म शास्त्र में कुछ तब्दीली की थी. यह उस वक्त जब शाहजहाँ ने यह हुक्म जारी कर दिया कि अगर कोई हिन्द इसलाम को अपनाना चाहे तो उस घर के लोग उस पर जायदाद वरौरा के डर का बेजा दबाव न डालें. मुमिकन है कि इससे घर्मशास्त्र के जायदाद के विरासत के क़ानून में कोई तब्दीली पैदा हुई हो. क्योंकि धर्मशास्त्र का क्रान्न यह रहा होगा कि मजहब बदल लेन पर काई शकत अपनी खान्दानी विरासत नहीं पा सकता. और शाहजहाँ के कान्त्र के मुताबिक एक हिन्दू मुसलमान हो जाने पर भी अपनी खान्दानी विरासत पा सकता था. गुसलमानों की शरश्र में तो कभी किसी बादशाइ ने किसी तब्दीली की कोशिश नहीं

इस वजह से कुछ मशहूर योरोपियन मुसाफिरों ने यह अजीव बात कह डाली है कि मुरालों के जमाने में कोई लिखा हुआ कानून था ही नहीं. लिखा हुआ कानून तो

युख होता है वह अबुदा के ही हुक्म से होता है. इन बातों से यह साबित नहीं होता कि मुगल बादगाहों का यह दावा था कि वह मामूली इन्सान से कुछ मी ऊँचा रुतवा रखते थे और न इन चीजों से उन्हें कोई मजहबी या दीनी उतबा हासिल होता था. उस जमाने के यूरप के बहुत से बादशाहों का यह दावा था कि उनकी तख्तनशीनी के वक्त उनके सर पर पवित्र तेल की मालिश किये जाने से उनको खास मजहबी रुतवा हासिल हो जाता था जो आम इन्सानों को हासिल नहीं था. इस बारे में मुराल वादशाहों का जो ख्याल था और यूरप के (Divine Right) .खदाई हक मानने बाले बादशाहों का जो ख्याल था उन दोनों का फर्क सत्र-हवीं सदी के इंगलिस्तान की वारीख को देखने से अच्छी तरह समम में आ सकता है. जब जेम्स अव्वल ने राज के लिये अपने इक को खुदा का दिया इक बताया तो यह एक मजहबी उसल पैदा होगया कि बादशाह की किसी चीज की किसी को मुखालिकत नहीं करनी चाहिये और सबका बादशाह का हुक्म चुपचाप मान लेना चाहिये. बादशाह से बगावत करना सिर्फ एक क़ानूनी जुर्म ही नहीं रहा बल्क एक मजहबी गुनाह भी समका गया जिसको परलोक या श्रा खरत में भुगतना पड़ेगा. इसी से इंगलैंड के इन्कृताब के बाद ऐसे पादरी पैदा हो गये थे जिन्होंने विलियम और मेरी की वकादारी की क़सम खाने से इन्कार कर दिया था. उनमें उस जमाने के इंगलिस्तान के कुछ बड़े से बड़े पाद्री भी शामिल थे. उन्होंने यह ख्याल जाहिर किया कि जेम्स होयम जो समुद्र पार चला गया था उनका कानूनी बादशाह है, उन्हीं में से कुछ लोगों ने मिलकर हालैन्ड से विलियम की बुला भेजा था ताकि जेम्स दोयम इंगलिस्तान को कैयोलिक बना डालने की कोशिश न कर सके. शाही मरतवे के बारे में इस तरह का रूयाल मुराल जमाने के हिन्दस्तान में मौजूर नथा. जब सलीम ने अपने बाप अकबर के खिलाफ बरावत की तो किसी काजी ने उसके खिलाफ फतवा नहीं दिया श्रीर न जब .खुरम ने जहाँगीर के खिलाफ बरावत की तो किसी क्रांची ने उसे गुनहगार ठैहराया. अलबता यह सच है कि औरंग तेब के गही पर बैठने के बक्त सद्देशसद्र ने उसी के नाम को पढ़ने और उसके शहनशाह हाने का पेलान करने से इन्कार कर दिया था, इसलिये कि श्रीरंगजेब का बाप शाहजहाँ उस वक्त जिन्दा था. मगर उस मिसाल से मुराल ताज के दैवी या .खुदाई होने का उसूल साबित नहीं हाता. श्रकवर के जमाने में भी जब उसके सौतेले भाई इकीम ने हिन्दुस्तान पर हमला किया तो अकबर ने कोई खुदाई दावा पेश नहीं किया बल्कि बाप की सल्तनत को विरासत में पाने के लिये सिर्फ अपनी फौजी ताकत पर ही भरोसा किया था. इस तरह जहाँ कहीं .खुदाई इक का जिक, शादी ताकत या

کیے ہوتا ہے وہ خدا کے می حکم سے عوتا ہے. ان ہاتوں سے یہ ثابت نہیں ہوتا کہ منل بادشاہوں كا يه دعويل تها كه ولا معدولي إنسان سے كنچه بهى أونحها رتبه رکھتے تھے اور نم اِن چیووں سے اُنھیں کوئی مذہبی یا دینی رتبة حاصل عونا تها . أس زمائے كے يورپ كے بہت سے بادشاعوں ا یه دعول تها که أن كى تخت نشيلى كے رقت أن كے سر بر ہوتر تیل کی مالش کئے جانے سے اُن کو خاص مذھبی رتبہ حاصل هو جانا تها جو عام إنسانون كو حاصل نهين تها . اِس بارے میں مغل بادشاہیں کا جو خوال تھا اور برپ کے (Divine Right) خدائی حق مائنے والے بانشاهوں کا جو خیال نها أن دونوں کا فرق سترهویں صدی کے انگلستان کی تاریخ کو دیکھنے سے اچھی طرح سمجھ میں آ سکتا ھے . جب جیسس اول نے راج کے لئے اپنے حق کو خدا کا دیا حق بتایا تو یه ایک مذه می أصول پیدا هو گیا که بادشاه کی سی چیز کی کسی کو مخالفت نہیں درنی چلفٹے اور سب کو رادشاه كا حكم حب جاب مان لينا جاءئي. بادشاه سے بغارت كرفا صرف أيك قانوني جرم هي فهين رها باكم أيك مذهبي گفاه يهي سمجها گيا جس كو براوك يا أخرت مين بهكتفا بہریکا اسی سے انگلینڈ کے انقلاب کے بعد ایسے یادری بهدا مو گئے تھے جنہوں نے وایم اور میری کی وفاداری کی قسم کھانے سے انکار کو دیا تھا ، أن ميں أس زمانے كے انكلستان كے كنچھ بوے سے بڑے پادری بھی شامل تھے . انھرں نے یہ خیال ظاهر کیا کہ جسمين دريم جو سندر يار چا گيا نبا اُن كا قانوني بادشاه ه . اِنهيں ميں سے کچھ لوگوں نے مل کو هاليلة سے وليم کو بلا بهدی تها تائه جدمس دریم اسکاستان کو کیتهو سک بنا دالله کے کوشش نے کو سکے شاھی موقعہ نے بارے میں اِس طرح کا خهال مغل زمانے کے هادستان میں مهجود، تع نها . جب سلیم نے اپنے باپ اُکبر کے حلاف بغارت کی نو کسی قاضی نے اُس کے خالف انتهوا نهيس ديا اور نه جب خرم لے جهانگير کے حالف بنارت کی تو کسی قاضی نے اے گناهگار قہراایا . البته یه سپے هے که اورد ویس نے گدی پر بیٹیلے کے وقت صدرالصدر نے اس کے نام کو پڑھنے اور اس کے شہنشاہ ھونے کا اعلان کوئے سے انکار كو ديا تها إلى لله كه أورنكويب كا باب شاهجهال أس وقت زندہ تھا۔ مگر اُس مثال سے منال ناج کے دیری یا خدائی مونے کا اصول ثابت نہیں موتا ۔ انبر کے زمالے میں بھی جب أس كے سوادلے بهائي حكوم نے هندستان پر حمله كيا تو اكبر نے کوئی خدائی دعوی پیش نہیں کیا بلکہ باپ کی سلطنت کو وراثت میں یانے کے نئے صرف اپنی فوجی طاقت پر ھی بھروسة كيا تها. إس طرح جهال كهدل حداً ي حق كا ذكر شاهى طانت يا

का होग کنه مغل حکومت کا ترهنگ

پروفیسو شری رام شرما ایم الے.

هندستان میں منل بادشادر کی مذہبی بالیسی پر اِتنی گرما گرم بحث عوتی رهی فی که مغلوں کے حکومت کولے کے طراقم کے بارے میں لوگن کو بہت کم جانکا ی ہے ، کوئی كهما ه كه مغلول كي حكومت بالكل أبك أيشيد في نائلشاهي تمی اور کوئی کون ہے کہ وہ ایک اسلامی یعنی مذہبی حکومت تھی ۔ بہاں نک دعری کیا گیا ہے که هندستان کا رأج مغلوں کی خدائی دین تھی اور کنچھ اوگ مغل بادشاھوں کو الله کے مقرر کئے موٹے کہتے میں یمنی یہ کم خود الله نے آنہیں اِس ملک پر حکومت کرنے کا حکم دیا تھا . بدقسمتی سے اِن نتیجوں پر پانسچنے سے بہلے لوگوں نے أن اصلى كتابوں اور دستاردووں كو أجهى طرم نزوي ديمها جو همارے ياس هادستان ميں مغل حکومت کے بارے میں اِس وات موجوں عوں ، شروع کے عرب فائدو بنائے والوں کے فائونی مسئلوں اور دوسوے ماہوں میں مسلمان باشاهوں کے کاموں یا هندستان کے باهر کے لیکھموں کی بڑی بڑی انظی بحثیں سے بہاں کی میل حکومت کا تهرک تهرک روپ سمجهنی مون همین کوئی مدد نهین ملتی ، هال أبي باتوں كو دهيان ميں ركه كو هم اپني نعطيقات آگے

مغل زمانے کے کچھ انہاس لکھنے والوں اور کچھ حال کے لاکھکوں نے بعض مغل بادشاھوں کی بابت یہ دعوی کھا ہے کہ انہوں خدا نے بادشاھوں کا حق دیا تھا ، پہلے ہم اِسی دعوے پر غور کر لینا چاہتے اھیں ، اببر اور اُس کے بعد کے بادشاھوں کو اُس زمانے کے تاریخ اکینے والوں اور خاص کو شاھی انہاس لاکھکوں نے انثر خدا کا خاھف یا نابب کہہ کو بھاں کھا ہے ، حب جہائٹور کے برتے خسرو نے اپنے باپ کے خاف بغارت کی جب جہائٹور کے برتے خسرو نے اپنے باپ کے خاف بغارت کی دعوی کیا تھا کہ نہا کہ خوا کی دعوی کیا تھا کہ اُس کہ حدا نے ہندمتان کا شہنشاہ بنا یا ہے . دعوی کیا تھا کہ اُس کہ حدا نے ہندمتان کا شہنشاہ بنا یا ہے . شادجہاں نے گول کندہ کے عادل شاہ کے نام اپنے ایک خط میں اپنے کو دنیا میں خدا کا وایل لکھا ہے ، اورنگ زیب نے میں اپنے کو دنیا میں خدا کا وایل لکھا ہے ، اورنگ زیب نے

برها سكته شين.

یه سب دعوے ثابت کرتے هیں که میل بادشاہ مانتے تھے که اُنہیں راج کرنے کا حق ظاهرہ دیکھنے میں خدا سے ملا ہوا ہے ، لیکن جب هم ذرا غور سے دیکھیں تو پته چلتا ہے که اِن بادشاهوں کے یه سب دعوے صوف اِس عام اِسلامی یفهن کو دوهراتے هیں که دنیا میں جو

हिन्दुतान में मुग्ल हुकूमत का ढंग

प्रोफेसर श्रीराम शर्मा एम० ए०

हिन्दुस्तान में मुग्ल बादशाहों की मजह वी पालिसी पर इतनी गरमा गरम बहस होती रही है कि सुगलों के हकूमत करने के तरीक्रे के बारे में लोगों को बहुत कम जानकारी है. कोई कहता है कि मुरालों की हुकूमत बिलकुल एक एशियाई तानाशाही थी और कोई कहता है कि वह एक इसलामी यानी मजहबी हुकूमन थी. यहाँ तक दावा किया गया है कि हिन्दुस्तान का राज मुरालों की खुदाई देन थी श्रीर कुछ लांग मुराल बादशाहों को अल्लाह के मुकरेर किये हुए कहते हैं, यानी यह कि .ख़ुद झहाह ने उन्हें इस मुल्क पर हुकूमत करने का हुक्म दिया था. बदकिस्मती से इन नतीजों पर पहुँचने से पहले लोगों ने उन असली किताबों और दस्तावेजों को अच्छी तरह नहीं देखा जो हमारे पास हिन्द-स्तान में मुराल हुकूमत के बारे में इस वक्त मौजूद हैं. शुरू के अरब क़ानुन बनाने वालों के क़ानूनी मसलों और दूसरे मुल्कों में मुसलमान बादशाहों के कामों, या हिन्द्रस्तान के बाहर के लेखकों की बड़ी-बड़ी लपनी बहसों से यहाँ की मुराल हुकूमत का ठीक-ठीक रूप समभाने में हमें काई महद नहीं मिलती. हाँ, इन बातों को ध्यान में रखकर हम अपनी तहक्रीकात आगे बढ़ा सकते हैं.

मुग्नल जमाने के कुछ इतिहास लिखने वालों धौर कुछ हाल के लेखकों ने बाज मुग्नल बादशाहों की बाबत यह दावा किया है कि उन्हें खुदा ने बादशाहत का हक दिया था. पहले हम इसी दावे पर ग़ौर कर लेना चाहते हैं. अकबर शौर उसके बाद के बादशाहों का उस जमाने की तारीख़ लिखने वालों और खासकर शाही इतिहास लेखकों ने अक्सर .खुदा का खलीफ़ा या नायब कहकर बयान किया है. जब जहाँगीर के बेटे .खुसरों ने अपने बाप के खिलाफ़ बगावत की थी तो जहाँगीर ने खुद अपनी डायरी (तुजक जहाँगीरी में दावा किया था कि उसको .खुदा ने हिन्दुस्तान का शहन्शाह बनाया है. शाहजहाँ ने गोलकुन्डा के आदिल-शाह के नाम अपने एक खत में अपने को 'जिलह्डाह'' (.खुदा का साया) लिखा है. श्रीरंगजेब ने अपने को दुनिया में .खुदा का बकील लिखा है.

यह सब दावे साबित करते हैं कि मुराल बादशाह मानते थे कि उन्हें राज करने का इक्ष जाहिरा देखने में . खुदा से मिला हुआ है लेकिन जब हम जरा शौर से देखें तो पता चलता है कि इन बादशाहों के यह सब दावे सिर्फ इस आम इसलामी यक्षीन को दुहराते हैं कि दुनिया में जो

सितम्बर 1957 ستبار

· 1

क्या किस से		सका	tol.	یا کس سے	\$
1. हिन्दुस्तान में मुगल हुकूमत का दक् —प्रोक्तेसर श्रीराम शर्मा पम० प०	•••	89	•••	. هندستان میں منل حکومت کا دھنگ —پرونیسو شری رام شوما ایم اے	1
2. मेरी माँ —श्री गोर्की—अनुवादक श्री सुमङ्गल प्रकार	n	100	ال يركاش	2۔ مہری ماں ۔۔شری گورکی۔۔۔انوادک شری سومانا	2
 एक पागल आदमी की डायरी श्री लुई सुन 	•••	108	•••	3. ایک پاگل آدمی کی ةایری —شری لوئی سن	}
4. एक भारमा के भलग भलग रूप —हाक्टर भागवानदास		121	•••	4. ایک آتما کے انگ الگ روپ ستائڈر بھکوان داس	
ठः महात्मा गाँधी के अनुसार शान्ति का रास् पेटम और हाहद्रोजन नम का सनावा	वा, यं		ه اور ایتم	 جہانیا کاندھی کے انوسار شانتی کا راست اور ھائدروجن ہم کا سوال 	!
—पंडित सुन्दरलाल 8. इमारी राय—	•••	126 131	•••	—پلآت سلور لال 8. هماری رائی—	}
पेटम और इ।इड्रोजन बम के खिलाफ तीस विश्व सम्मेलन; पशिया और अफ़ीका प्रतिनिधियों का प्लान तोकियो 16-8-57- पंडित सुन्द्रत्लाल.	के		٤	ایتم اور ہائڈروجن ہم کے خلاف ا وشو سمیلی؛ ایشیا اور انویته پرتیندھیوں کا اعلان تو کیو 57.8.6 پلقت سادر لال .	

William Control



जिल्द 24 अ

नस्वर

3

نمبر



सितम्बर 1957

ستيبر

हि साना कलचर सोसायटी अध्य प्रमुख काराबाद अध्य अध्य अध्य अध्य भारत

17 (See (Becel) Malacan Shares

It, Bred Maland D Pandte Strederial

Beaughter Nett Di

Eator-in-Charge

Bishseshhar Nath Pande

lugah Basalikai

نيا هد ـ د د

इस नम्बर के खास बेख ह्म्मिक हैं मान

हिन्द्रश्तान में मुराल हकुमत का दह अंबेट है क्यून की का - प्रोफ्रेसर औराम शर्मा प्म०ए० مرماليم المرماليم ایک اُنیا کے انگ انگ روپ एक बात्सा के बातन बातन रूप حة كاكتر بهكوان دلس -- हाक्टर भगवानवास क्रात्मा गाँधी के बातुसार शान्ति अध्य أنرسار شائتي का रास्ता, और ऐटम और दाइबो- ار مائدرون الم الم الم يم كا سوال जन वस का सवाल —पंडित सुन्दरलाल سينته سادرال हमारी राय-पेटम चौर हाइहोजन दम के विजाक ने हैं। वीसरा विश्व सम्मेलन; पेशिया । । । । । । । । । । । । । । । । । ار انریته کے پرتبلدمیں کا प्रांतनिषयों का प्रमास तोस्यो 16-8-57- -16 .8 .57 अंग्र अर्थ पंडित सुन्दरकाताः

1.4 1645 1625



ां न्दा घर

क्रमण पर हर तरह की किताचें मिलने का एक बड़ा केंग्य-पाठक हिन्दी, उदू, क्रमेजी की अपनी मन-पसन्द कितावों के जिये हमें जिसें।

हमारी नई कितावें

महातमा गान्धी की वसीयत

(हिन्दी भीर डदू में) लेखक—गान्धीबाद के माने जाने विद्वान : स्व॰ श्री मंजर चली सांस्ता सके 225, क्षीमत दो रुपया

गान्धी बाबा

(बच्चों के लिये बहुत दिलचस्प किताब)
लेखिका—कृद्सिया जैदी
भूमिका—पन्डित जवाहरलाल नेहरू
मोटा काराज, मोटा टाइप, बहुत-सी रंगीन तसवीरें
दाम दो ठपया

नः ०: —
पंडित सुन्दरताल जी की लिखी कितावें
गीता और क्रुरान
275 सके, दान ढाई रुपया
हिन्दू सुसलिम एकता

100 सके, राम बारह जाने महारमा गान्धी के बिलदान से सबक

> क्रीमत बारह जान पंजाब इमें क्या सिखाता है क्रीमत बार जाने

वंगास और उससे सबक्र कीरत वो भाने

न्दुस्तानी कलचर सोसायटी

145 सहोगंज इसाहाबाद

ہو پر هر طرح کی کتابیں ملف کی برائیں ملف کی برا کیندر۔ باتھک هندی ' انگریزی کی من پسند کتابوں کے امیں لکھیں۔

ههاری نئی کتابیں

مهاتما کاندهی کی وصیع

لیکھک۔ گلنگی واد کے مالے جائے ودوان: سورگیه شری منظر علی سوخته صفحے 225 تیست دو روپیه

-:0:-

كاندهي بابا

(بچوں کے لئے بہت دلچسپ کتاب)
لیکھکاستدسیہ زیدی
یورمکاسپنڈت جواہر الل نہرو
ہوتا کافذ' موتا تائپ' بہت سی رنگین تصویریں
دام دو ردیه

دام دو روپيه

پندت سندرال جي کي لکھي کتابيس

كيتا اور قران

275 منحم دام تعانى رويه

هندو مسلم ایکنا 100 منحہ دام بارہ آنے

تما کاندھی کے بلیدان سے سبق

قهبت باره ألے

نجاب هیں کیا سکھاتا ھے نست چر آلے

المنگال اور اس سے سبق

هندستاني كلجور سرسائتم

147 سبقی علی اعلماد

्राकी प्राचीन संस्कृति एं कीमत-यो सपया हाजी सम्बद्धा सोर संकृति पास्तर हुसेन राज्युरी क्रिक

इनमें कई सी बेबारे कोड़ी हैं जो अपना कोड़ दिखा दिखा कर पैसे माँगते फिरते हैं और कभी-कभी कुछ अधिक पा जाते हैं तो शराब पीकर या किसी और बुराई में फेंसकर अपना ग्रम ग्रालत करने की भी कोशिश करते हैं. इन सब से अपर उठकर दिल्ली के लाखों ग्रोंबों की दालत से भी हम बाकिफ हैं पर इस से जियादा कहने को अब दिल नहीं उभरता.

शासकों, शायद दुनिया के अधिकतर शासकों की एक बहुत बड़ी बद क्रिसमती यह होती है कि उन्हें खास ऐनकों के जरिये से ही दुनिया को देखना मिल सकता है. उनके कान दूसरों के कान होते हैं, उनकी आँखें दूसरों की आखें. चनको खबरें देने वाले यह ताड़ लेते हैं कि उनके मालिक किस तरह कीखबरें सुनना चाहते हैं जोर उसी तरह की खबरें उन्हें सुनाते हैं. जैसे वह चाहते हैं उसी तरह के आँकड़े उनके लिये तैयार हो जाते हैं. हम दंग रह गए जबकि दिल्ली के एक बहुत बढ़े शासक ने हम से बात करते हए कहा की - "लोग खाहमखाह ग्रलत कहते हैं कि देश में बेकारी है. कहीं बेकारी नहीं हैं." एक और साहब ने राय जाहिर की कि-"देश को निकम्मे पेजुएटों की जरूरत नहीं है, देश को जरूरत है एन्जीनियर्श की और वह कभी बेकार नहीं रह सकते." यह बताने का उन पर कोई खास असर नहीं हुआ कि देश के अनेक एनजीनियरिंग कालिजों से पास हुए काकी नौजवान बरसों एक दुप्तर से दूसरे दुप्तर अरिजयाँ लेकर घूमते फिरते हैं. श्रष्टाचार की बाबत तो आम तीर पर यह कहा जाता है कि देश में जो कुछ म्रष्टाचार है वह हमें अंग्रेजी हकूमत से वरासत में मिला है और इन है सात बरस के अन्दर काफी कम हुआ है, और दूसरे देशों से हमारे देश में अब्दाचार अब भी बहुत कम है! इन बातों का क़ुद्रती नतीजा यह है कि नेताओं और जनता के बीच, शासकों और शासितों के बीच खाई और बद्गुमानी बद्ती चली जा रही है.

ال میں سے کئی سو بدھھارے کورھی میں جو اپنا کررھ دکا دکیا کو بیسے مالکتے پہرتے میں اور کبھی کبھی کچھ ادھک یا جاتے میں تو عراب ہی کو یا کسی اور برائی میں پہنس کو اپنا غم خط کرنے کی بھی کوشش کرتے میں ، اِن سَب سے اُرپر آئو کو دلی کے لائیس فریبوں کی حالت سے بھی ہم راتف میں پر اِس سے زیادہ کہتے کو آب دل نہیں اُبوریا .

شامین شاید دارها کے ادمتی شاسین کی ایک بہت ہی برقسمتی یہ ہرتی ہے که اُنہیں خاص مینکس کے ذریعے سے ھی دنیا کو دیکھتا مل سکنا ہے۔ اُن کے کان دوسروں کے کان مرتے میں' أن أنهيں دوسروں كى أنهيں . أن كو خبريں ديلے والي يه تار ليته هين كه أن ي مالك كس طوح كي خبرين سلفا جامته هیں أور أسى طرح كى خبرين وة ألهيں ساتے هيں. جسم و، چاہتے میں اُسی طرح آنکڑے اُن کے لئے تیار ہو جاتے میں . هم دنگ رہ کئے جب کددلی کے ایک بہت ہوے شاسک نے هم سر بات کوتے هوئے کہا که--"الوگ خوالا معفواة غلط لهتے هيں که دیف میں بیکاری ہے . کہیں بیکاری نہیں ہے . ایک اور ملحب لے رائے ظرهر کی که۔" دیش کے نکبے گریجوالیس کی فروت نہیں ہے؛ دیش کو ضرورت مے انجینیوس کی اور وہ كبهي بيكار لهيس رة سكتم " يه بكاني كا أن ير كوثي خاص اثر نہیں ہوا که دیمی کے انیک انیجینیرنگ سے کانجوں یاس مرثے كافي نوجوانو برسول ايك دفار سے دوسرے دفار عرضيال ليكر گهرمتے بھرتے میں ، بهرشتاچار کی بابت تو عام طور پر یہ کہا جانا ہے که دیمی میں جو کچے بھرشتاچار ہے وا همیں انکریزی حرمت سے وراثت میں ملا فے اور اِن چھ ساس برس کے اندر کانی کم عواق اور دوسوے دیشوں سے عمارے دیش میں بهرشتا اب بھی بہتاکم ف ! اِن ہاتیں کا قدرتی نتیجہ یہ ف که نیتاؤں اور جنتا کے بیج شاسکوں اور شاسکوں کے بیچ کھائی اور بدگانی ہومتی چلی جا رھی فے ،

—युन्दरलाल

-سندر لل

弱)

martin '57

विदी हमारे मित्र के साथ लगी हुई थी इसी तरह दसी _{जीववि} की और से एक मोटर और एक मोटर बराइबर ही भी डियुटी उसी जगह लगी हुई थी. और अधिक कुरेदने ा हमारी बाँखों से बाँस् टक्क पड़े. अधिक पृष्ठताल करने पर मालम हुआ कि पारिलमेन्ट के और भी बहुत से मेन्बर ासी तरह के असरों से दबे हुए हैं. डन पर खर्च करने हाले अपने खर्च का पूरा बदला चुका लेने में कोई कसर ह्या नहीं रखते. इन पंक्तियों के लिखते समय भी हमारा विल .खन के ऑसू वहा रहा है. हमें नहीं मालूम कि पार-निमेन्ट के मेम्बरों में इस तरह के भाइयों का अल्पमत है या बहुमत, पर हम सममते हैं कि इस बात में किसी हो भी किसी तरह का कोई शक नहीं हो सकता कि हमारी बाजकल की पारिलमेन्टों और धारा समाओं में मुशकिल से दस फीसदी मेन्बर ऐसे होंगे जी सचमुच पारिलमेन्टों के या घारा समा के कामों में, तजबीजों और बिलों में कोई सच्ची, खीर समम्हारी की दिलक्सी रखतें हों. शासन पर भीर देश भर में क्रोटे बड़े सरकारी कर्मचारियों पर जो इसका बुरा असर पड़ता है वह कहीं भी थोड़ी सी शाँख खालकर देखा जा सकता है. देश भर में जिस तरह की बेजा दुखलबन्दाची, तरह तरह के सरकारी कामों में होती रहती है उसकी कहानियाँ दिल्ली से कलकत्ते, दिल्ली से बम्बई, या दिल्ली से मद्रास के किसी भी रेल के सफर में अनेक सुनने का मिल सकती हैं. सुनने की इच्छा रखने वाले को इसके लिये दिल्ली से बाहर जाने की भी जरूरत नहीं है.

उँचे से उँचे नेताओं और सरकारी लोगों,पर भी इसका श्रसर पड़े बरौर नहीं रह सकता. चुनाओं के लिये नाम जदगी के वरीके, नामजदगी की कसौटियाँ और चुनाओं के ढंग लगभग सब सदाचार की दृष्टि से पतन की हद को पहुंच चुके हैं. गाड़ी चल रही है, जिस तरह भी चल सके और जब तक चल सके.

दिस्ली में पिछले साल पीलिया (Jaundice) की वना के फैजने की जो दुर्घटना हुई और अभी तक जारी है वह केवल अन्दर के गहरे रोग का केवल एक ऊपरी लक्षण है. इस बीमारी का फैलना इन हालात में किसी को कोई अजीब बात मालूम नहीं होनी चाहिये. दिल्ली भारत की राजधानी है. वह से वह शासकों और नेताओं का यहाँ सदा अमघट रहता है. यहाँ बदे-बदे महलों जैसे बंगले हैं आए दिन बड़ी-बड़ी दावतें होती हैं. इसी दिस्ली में लगभग द्य इचार इनसान गली-गली भीख माँगते फिरते " हैं. इनमें से जगभग आठ हजार कड़ाके की सर्वी में चीयकों में लिपटे हुए या बिना चीयकों के खुले आसमान के नीचे पर्हरेयों पर सांते हैं या किसी तरह रात विताते हैं.

يولى هناري متو غ ساته لكي هوكي تهي أسي طرح سی پولنجی یکی کی آور سے ایک مراثر اور ایک موثر رایور کی بھی کھوٹی اُسی جکیه لکی ہوئی تھی ، اور تُعک کریدنے پر هماری أنکهر سے أنسو لیک پڑے ، ادھک رچہ تاچہ کرنے پر معارم هوا کم پارلیمائے کے ارزیبی بہت سے مهمبر سى طرح كے افروں سے ديے هوئه هيں . أن ير خرب كرنے والم پنے خربے کاوررا بداء چکا لینے میں کرئی کسر اُٹھا نہیں رکھتے . ن پلکتیں کے لعبتے سے بھی همارا دل خون کے آنسو بہا رهاھے. سیں نہیں معلیم که پارلیمات کے مهمبروں میں اِس عارم کے ہائیں کا البت فے یا بہرست . پر هم سنجیکے عیں که اِس آت میں کسی کو بھی کسی طرح کا کوئی شک نبھی ہو سکتا م هماري أجكل كي دارليمنتون اور دهارا سبهاؤن مهن مشكل ے دس فرصدی میںبر ایسے هونکے جو سے مے پارلیمالوں کے ا دھاراً سبھا کے کاموں میں تجویزوں اور ہلوں میں کوئی بنجے ؛ اور سه جهداری کی دانچسپی رکهتم هوں ، شاس پر اور یکی بهر میں چہوئے ہوے سرکاری کرمجاریوں پر جو اِس کا ہرا آثر یونا ہے وہ کہیں بھی تھوری سی آنکھ کھول کر دیکھا جا ستدا هے . دیش بهر میں جس طرح کی بیعا دخل اندازی عرج طرح کے سرکاری کاموں میں عوتی رھتی ہے اُس کی المانيان داني سے دائمة داني سے بيبئي يا داني سے موراس كے اسی بھی ریل کے سفر میں انیک سفنے کو مل سعتی میں . سللے کی اِچھا رکھنے والے کو اِس کے لئے دلی سے باعر جانے کی يهي ضرورت نهيں ھے .

أرنج سه أرنج نيتاون اور سركاري لوكن ير بهي إس كا اثر برے بنور نہیں رہ سکتا . چناؤں کے لئے نامزدگی کے طریتے فامزدگی کی کسولیاں اور چناؤں کے تعنگ لگ بیگ سب سالچار کی درشتی سے پتن کی حد کو بہرنے چکے هیں . کاری چل رہی ہے، جس طرح میں چل سکے اور جب تک

دلی سے بچھلے سال بیلیا (Jaundice) کی رہا کے پیدائے کی جو در گھٹنا ہوئی اور ابھی تک جاری ہے وہ کیول اندر کے گہرے روک کا کیول ایک آریری تعجین ہے . اس بیماری کا پهیلنا اِن حالات مهی کسی کو کوئی عجهب بات معلوم نہیں مونی چادئے . دلی بھارت کی راجدھانی ہے . بوس سے برے شاسكون اور نيتاؤن كا يهان سدأ جمايت رمتا هـ . يهال بود برے معال جیسے باکلے میں ، آلے دن بری بری دعرتیں هوتی هوں ، اِسی دلی موں لگ بیک دس هزار انسان کلی كالى يهيك مالكلة بهرية عين. إن مهن سه لك يهك أنه هوار كواك کی سردی میں چھتھورں میں لیاتے ھوئے یا بلا چیتیتروں کے کیلے أسان كرنيج باريس پرسوراليس يا كسى طرح رأت باتر هين.

पार्टी से सम्बन्ध रखने वाले बहुत से मेम्बरों को अकसर ऐसे विषयों पर भी जिनका देश के भले या बुरे के साथ गहरा सम्बन्ध होता है अपनी अन्तर आत्मा की आवाज के खिलाफ भरे सदन में हाथ चठाना पड़ता है. इसका कुद्रती और लाजमी नतीजा यह है कि हमारी आजकल की पालिमेंटों या धारा सभाओं के अधिकांश मेम्बर इस बात पर सोचना भी बन्द कर देते हैं कि किस तजवीज या किस बिल से देश का क्या फायदा या क्या नुक्रसान होगा. वह मजबूर होकर अपनी मेम्बरी से दूसरी ही तरह के फायदे इठाने में लग जाते हैं.

इस तरह के मेम्बरों की हालत कुछ-कुछ उस जज की सी हालत होती है जो उस जबान माँ को जिसने किसी जबरदस्त दुख और निराशा की हालत में अपने तीन बरस के बच्चे का गला घोंट कर मार हाला और फिर उस पर रोना और सिर पीटना शुरू किया. इसलिये फाँसी की सजा देनी पड़ती है क्योंकि क़ानून की दका, क़ानून का जाब्ता और क़ानूनी गवाहियाँ जज के लिये और कोई रास्ता ही नहीं झोड़तीं. अकसर पढ़े लिखे जज ता इसे अपनी "हियुटी" अपना "फ्जी" समम कर भी इस तरह के फैसले देते हैं.

आज हमारे सदाचार के गिरावट की यह हालत है कि देश के उत्तर से दक्क्खिन तक और पूरव से पच्छिम तक सैकड़ों शिक्षा संस्थाएं ऐसी हैं जिनमें अध्यापकों से एक सौ बीस रुपये तनखाइ लेकर दो सौ की रसीद पर दसस्तत करने पड़ते हैं. हमें बड़ी हार्दिक बेदना के साथ कहना पड़ता है कि जिस तरह इस तरह की शिक्षा संस्थाओं में इस तरह के अध्यापकों से शिक्षा लेने वाले बालकों से यह आशा करना कि उनका चरित्र कभी भी जीवन में कँचा हो सकेगा, लगभग वैसा ही है, जैसा बबूल बोकर इससे आम की आशा करना. ठीक उसी तरह पारिलमेन्ट के या धारा सभाश्रों के जिन मेम्बरों को पारटी भक्ति के कारण अपनी अन्तर आत्मा की आवाज के जिलाफ हाथ षठाना पड़ जाता है उनसे यह आशा करना कि वह उन जिन्मेवारी की कुरसियों पर बैठ कर देश को सचमुच कैंचा ले जा सकेंगे या करोड़ों जनता का सच्चा भला कर सकेंगे उतना ही गलत है.

इस द्रैनाक हालत का असर देश की इन पारिलमेन्टों और घारा सभाओं में साफ दिखाई देता है. दिल्ली में हम एक दिन अचानक अपने एक पुराने मिन्न पारिलमेन्ट के एक मेम्बर के घर पहुँच गए. हमने वहाँ एक नौजवान को टाइप करते हुए देखा जिसे हम पहले से जानते थे. हम कुछ हैरान हुए. पूछने पर मालुम हुआ कि वह अब भी देश के उसी मशहूर पूँजीपित का नौकर था और उसी से वेतन पाया था जिससे कभी पहले पाया करता था. अब उसकी پارٹی سے سمھندھ رکھانے والے بہت سے میمبووں کو اکثر آیسے وشھوں پر بھی جن کا دیش کے بھلے یا برے کے ساتھ گہرا سمبندھ ہوتا ہے اپنی انتر آتما کی آواز کے خلف بھرے سدن میں ہاتھ آئیانا پرتا ہے ایس کا قدرتی ارر الزمی نتیجہ یہ ہے کہ ہماری آجکل کی پارلیمنٹوں یا دھارا سبھاؤں کے ادھیکا بھی میمبر اِس بات پر سوچنا بھی بلد کر دیتے ہیں نہ کس تعجیر یا کس بل سے دیش کا کیا فائدہ یا کیا فتصان ہرگا ۔ وہ محبور ہو کر اپنی میمبروی سے دوسری ہی طرح کے فایدے آئھانے میں لگ جاتے ہیں .

اِس طرح کے سبروں کی حالت کتھ کتھ اُس جھ کی سی حالت ہوتی ہے جو اُس جوان ماں کو جس نے کسی زبردست دکھ اور نواشا کی حالت میں اپنے تین بوس کے بچے کا گلا گھوٹ کر مار قالا اور پھر اُس پر رونا اور سر پیٹلا شروع کیا ۔ اِس لئے پھانسی کی سزا دیئی پڑتی ہے کیونکھ قانوں کی نفعہ قانون کا ضابطہ اور قانونی کواھیاں جبے کے لئے اور کوئی راستہ ھی نہیں چہوڑیں ۔ انثر پڑھے لکھے جبے تو اِسے اپنی دیتے ھیں ۔ اپنی اِس طرح کے فیصلے دیتے ھیں ۔

آج همارے سداچار کے گراوت کی یہ حالت ہے کہ دیش کے اُتر سے دکھن تک اور پورپ سے پنچھم تک سیکروں شکشا سنستھائیں ایسی هیں جنمیں ادهیاپکوں کو ایک سو بیس روپئے تاخواہ لیکر دو سو کی رسید پر دستخط کرنے پرتے هیں ، همیں برتی هاردگ ویدنا کے ساتھ کہنا پرتا ہے کہ جس طرح اِس طرح کے اشکشا ساستھاؤں میں اِس طرح کے ادھیاپکرں سے شکشا لینے والے ہانکوں سے یہ آشا کرنا کہ اُن کا چرتر کبھی بھی جیوں میں اُرنچا هو سکیکا لگ بیگ ویسا هی ہے، جیسا ببول ہو کر اُس سے آم کی آشا کرنا ، تھیک اُسی طرح پارلیسات کے یا دھارا سبھاؤں کے جن میں جروں کو پارٹی بھکتی کے کارن اپنے انتر دھارا سبھاؤں کے جن میں جرورں کو پارٹی بھکتی کے کارن اپنے انتر کرنا کہ وہ اُن زحمراری کی کرسوں پر بیٹھ کہ دیش کو سے کرنا کہ وہ اُن زحمراری کی کرسوں پر بیٹھ کہ دیش کو سے میے آرنیجا لیجا سکیلکے یا کروزرں جنتا کا سچا بیلا کر سیکلکے می غلط ہی غلط ہی غلط ہی غلط ہی غلط ہی

اِس دردناک حالت کا اثر دیش کی اِن پارلیماتوں اور دھارا سبھاؤں میں صاف دکھائی دیتا ہے . دلی میں ہم ایک دن اچانک اینے ایک پرائے متر پارلیمات کے ایک میمبر کے گور پہونچ گئے. ہمنے وہاں ایک نوجوان کو تائب کرتے ہوئے دیکھا جسے ہم پہلے سے جالتے تھے۔ ہم کچھ حیران ہوئے، پرچھنے پر معلوم ہوا کہ وہ اب بھی دیش کے اُسی مشہور پونسی بتی کا نوکر تھا اور اُسی سے ویتی باتا تھاجس سے کبھی پہلے پایا کرتاتھا۔ اب اُس کی

पार्टी शासन के लिये दो बातें जरूरी हैं. एक यह कि हेश में एक से अधिक राजनीतिक पारिटयां हों और दूसरी यह कि देश की सारी हकूमत किसी एक पार्टी के हाथों में हो. इस तरह की राजकाजी पारिटयां आम तौर पर किसी एक लच या उद्देश को सामने रखकर बनाई जाती हैं. मसलनंडस देश की कांगरेस पार्टी शुक्र में केवल "शान्त श्रीर वैध ज्यायों द्वारा स्वराज प्राप्त" केउद्देश से बनी. भारत के जो नर नारी इस उद्देश से सहमत थे वह कांगरेस के मेम्बर बन गए. देश के विदेशी शासन से आजाद हो जाने के बाद इस बहेश में थोड़ा सा फरक खाया. कांगरेस का बहेश अब देश में कल्याग्यकारी राज (Welfare State) कायम करना या उसके बाद समाजनादी ढाँचे (Socialistic pattern) पर राज क्रायम करना ठहराया गया. काँगरेस ने समय समय पर कुझ और खास खास विषयों पर भी एक मत से या बहुमत से ठहराव पास किये. इस बीच देश की सब से बड़ी पार्टी होने के कारण हक्रमत की बाग काँगरेस पार्टी के हाथों में आई. पारिलमेंट के सामने या किसी धारा सभा के सावने कोई ऐसा सवाल आया या कोई ऐसा बिल पेश हका जिसका काँगरेस के उस समय तक के निर्धारित उद्देश से कोई स्त्रास सम्बन्ध नहीं था. कोई मेम्बर उस स्नास सवाल पर इधर या उधर वचन देकर काँगरेस का मेन्बर नहीं हुआ। था. अब वह सवाल या वह बिल बहस के लिये काँगरेस पार्टी की बैठक में सामने आया. काँगरेस के प्रधान नेताओं की राय या हाई कमांड की राय एक तरफ दिखाई दी. इस पर भी जब पार्टी की बैठक में बोट लिये गए तो मामूली कसरत राय से नेताओं की राथ के इक में फ़ैसला हो गया. इसके बाद उन सब लोगों के लिये जिनकी राय बहुमत से नहीं मिलती थी जरूरी सममा जाता है कि वह बहुमत के साथ ही वोट दें चाहे वह कितना भी उनकी आत्मा की आवाज के खिलाफ क्यों न हो. अगर हम इस बात का भी ध्यान रखें कि बहमत में कम या अधिक कब न कब लोग ऐसे भी हो सकते हैं जिन्होंने खास खास नेताओं के जा या बेजा असर में आकर पार्टी मीटिंग में बोट दिया हो तो यह बात भी दावे से नहीं कही जा सकती कि सचमुत्र पार्टी का सच्चा बहुमत इसी ओर या जिस ओर अधिकांश के हाथ वठे. यह घटना पारदियों के आधार पर शासन की आए दिन की घटना है.

इस एक मामले में जो हाल उस पार्टी का है जिसके हायां में शासन की बाग है लगभग वही हाल बिरोधी पारिटयों या और दूसरी पारिटयों का है. पार्टी शासन का न्यह एक सास और उजागर पहलू है. नतीजा यह होता है कि हर पारिल मेंट और हर धारा सभा के अन्दर किसी भी ، پارلی شاسی کے لاء دو باتیں ضروری میں ۔ ایک یه که ده میں ایک سے ادھک راجلیتک پارٹیال هوں اور دوسری یہ کہ دیش کی ساری حمومت کسی ایک پارٹی کے هاتوں میں هو ، أس طوح كى راجكاجى پارتياں عام طور پر كسى أيك لكس يا أديش كو ساسني ركه كو بنائي جاتي هيل ، مثلًا إس دیش کی کانگریس پارٹی شروع میں کیول 'شانت اور ویدھ اُپایش دوارا سوراج پرایتی" کے آدیش سے بلی . بھارت کے جو فر فاری اِس أُديس سے سهدت تھے وہ کاتکریس تھے میمبر بی گئے؛ دیھی کے ودیشی شاسی سے آزاد مو جانے کے بعد اِس اُدیش میں ٹھوڑا سا فرق آیا ۔ کاتکریس کا ادیص اب دیص میں کلیان کری راج (Welfare State) قایم کرنا یا اُس کے بعد سمایے رایی قانیم (Socialistic pattern) پر راج تایم كرنا تهورآيا گيا . كانكريس نے سے سے پر كچھ اور خاص خاص وشهوں ير بھي ايک مت سے يا بهرست سے تهيراؤ داس كئے. اس بوچ دیش کی سب سے بڑی پارٹی عولے کے کارن حکومت۔ کی ہاگ کانکریس ہارٹی کے ھاتھیں موں آئی . بارلیمات کے سامنے یا کسی دھارا سبھا کے سامنے کوئی ایسا سوال آیا یا کوئی ایسا با یہھی ہوا جس کا کاٹکریس کے اُس سے تک کے فردهارت أديش ص كوئي خاص سمبلده نهين نها . كوئي ميمبر أس خاص سوال پر ادهر یا أدعر وچن دیکر کانکریس کا مهمبر نیوں عوا نیا . آب وہ سوال یا وہ بل بحث کے لئے کانکویس یارثی کی بیڈیک میں سامنے آیا ۔ کانکریس کے دروعان نیٹاؤں كي رأئه يا هائي كماند كي رائه ايك طرف ديهائي دي . إس ير بھي جب پارٽي کي بيتيک ميں ووت لئے کئے کو معمولي تثرت رائے سے نیتاؤں کی رائے کے حق میں نیصلہ مو گیا ، اِس کے بعد أن سبالوگوں کے لئے جن کی رائے بہومت سے نہیں ملتی نھے ضروری سنجھا جاتا ہے کہ وہ بہرمت کے ساتھ ھے ووق دیں چاھے وہ کتنا ہی اُن کی اُنساکی اُواز کے خالف کیس نہ مو. اگر هم اِس بات کا بھی دھان رکھیں که بہوست میں کم یا اُدھک کچے نے کچے لوگ ایسے بھی مو سکتے میں جابوں لے خاص خاص نیالؤں کے جایا بیجا آثر میں آکر دارتی میتنگ میں ووت دیا هو تو یه بات یهی دعوم سے نہیں کہی جا سکتی که سپے میم پارٹی کا سنچا بہوست اُسی اُور تھا جس اُور اھیکانھ کے هاته أته . يا گهتنا الرئيس كے أدهار در شاسى كى أثم دن كى کیتنا ہے ۔

اِس ایک معاملے میں جو حال اُس پارٹی کا ہے جس کے هاچوں میں شاسی کی باگ ہے لگ بھگ وہی حال دروروی پارٹیوں کا ہے ، پارٹی شاسی کا یہ ، پارٹی شاسی کا یہ ایک خاص اور آجاگر پہلو ہے ، تتیجہ یہ ہوتا ہے کہ هر پارلیبات اور هر دعارا سبها کے الدر کسی بھی

महात्मा गांधी की कुछ बातें इस सम्बन्ध में याद रखने के क्राबिल हैं. एक यह कि उन्होंने इन्गलेन्ड की उस पार्रालमेंट की तुलना, नो दुनिया की पालिमेंटों की माँ मानी जाती है, एक "बाँम वैश्या" (A barren prostitute) से की थी. दूसरी यह कि जब आजादी के दिन नजदीक आने लगे तो उन्होंने यह साफ कहा था कि—"आजकल के कांग्रेसी नेता पार्लिमेंटरी हुकूमत के लिये काम कर रहे हैं, मैं पालिमेंटरी हुकूमत नहीं चाहता, पर इस समय तो मैं उन्हों का साथ दे रहा हूँ." तोसरे गांबीजी के बलिदान से थोड़े ही दिन हिले जब दिल्ली में आजाद हिन्द की पालिमेंटरी हुकूमत बाजाब्ता कायम हो गई ता उसका रूप देखकर गाँघीजी के मुँह से निकल पड़ा:—"यह तो एक बहुत बड़ी बला आ गई! मुक्ते अब इस बला से लड़ना पड़ेगा!"

अब हम जरा अपनी आजकल की शासन व्यवस्था की तरफ एक निगाह बालें. हमारे आजकल के अधिकतर राजकाजी नेता श्रांगरेजों की दी हुई शिचा पाए हुए श्रीर श्रंगरेजी विचारों में ही पले हुए थे. क़द्रती तौर पर वह शंगरेजी शासन पद्धति के दिलदादा थे. अपने देश में अच्छी से अञ्जी नियत के साथ भी वह उसी की नक़ल कर सकते थे. यही उन्होंने किया-वही पार्लिमेंटरी तर्ज, वही हा सदन, वही चुनाव के ढंग, इंगलैन्ड के बादशाह की जगह भारत का राष्ट्रपति, गवरनरां और लेफटोनेन्ट गवरनरों का वही सिलसिला, पालिमेंट और घारा, सभाश्रों के अन्दर वही सरकारी वल (Treasury Benches) और विरोधी दल Opposition) और वही धुवाँधार तक्तरीरें. हालत यहाँ क पहुँच चुकी है कि हमारे स्वतन्त्र दलों और विरोधी दलों हे बढ़े से बढ़े नेता भी ईमानदारी के साथ मानते और कहते कि शासन चाहे किसी भी दल के हाथों में हो अच्छे ासन के लिये अच्छे और जबरदस्त विरोधी दलों का होना तकरी है. बिना अलग अलग और कम या अधिक एक सिर के प्रतिस्पर्धी राजकाजी दलों के वह शासन की ल्पना भी नहीं कर सकते. इसीलिये इम में से बहुत से रूस मीर चीन जैसे देशों की बाबत यह सुनकर कि वहाँ अलग मलग राजकाजी पार्टियां नहीं हैं, या अगर हैं तो एक दूसरे हे विरोधी या प्रतिस्पर्धी नहीं हैं, हैरान रह जाते हैं श्रीर ह समक ही नहीं सकते कि इस तरह के किसी भी देश ी हुकूमत अच्छी और बनता के लिये हितकर हुकूमत से हा सकती है.

पार्टियों के आधार पर शासन न्यवस्था दूसरे किसी श के लिये कहां तक हितकर साबित हुई है या नहीं या स समय हितकर है या नहीं इस सवाल में हम अभी नहीं इना चाहते. हम केवल अपने देश की आजकल की क्वस्था को ही जरा और पास से देखना चाहते हैं. مہاتما گاندھی کی کچھ ہاتیں اِس سبادھ میں یاد رکھے

کے تاہل ھیں ۔ ایک یہ کہ اُنھوں نے اُنکلینڈ کی اُس پارلیمات

کی تلنا جو دنیا کی بارلیمیاتیں کی ماں مانی جاتی ہے؛ ایک

ہانچہ ویشیا (A barren prostitute) سے کی تھی ،

دوسری یہ کہ جب آزادی کے دن نزدیک آنے اگے تو آنھوں

نے یہ صاف کہا تھا کہ ۔''آجکل کے کانگریسی نیٹا پارلیمیائٹری حکومت نہیں

حکومت کے لئے کام کر رہے ھیں' میں پارلیمائٹری حکومت نہیں

چامٹا' پر اِس سمہ تو میں اُنھیں کا ساتھ دُسے رھا ھوں ۔''

نیسرے گاندھی جی کے بلیدان سے تھوڑے ھی دن پہلے جب

دلی میں آزاد ھند کی پارلیمائٹری حکومت باشابطہ قایم ھو گئی

تو اُس کا روپ دیکھ کر گائدھی جی کے منہ سے ناکل پڑا:۔۔

''یہ تو آبک بہت بڑی راڈ آ گئی! مجھے آب اِس بلا سے لڑنا

نہگا ا''

اب أم ذرا اپنی أجال كي شاسي ويوستها كي طرف ايك نگاہ ڈالیں . ممارے آجکل کے آدشکتر راجکاجی نیتا انگریزوں کی دی تعربی شکشا پائے هوئے اور انکریزی وچاروں میں میں پلے هونے اسے . قدرتی طور پر وہ انگریزی شاسی پدیتی کے دادادہ تھے ، اپنے دیص میں اچھی سے اچھی نیت کے ساتھ بھی وہ اُسی کی نقل کو سعتہ تھے۔ یہی اُنہوں نے کیا۔۔وهی پارلیمالمری طرز وهی دو سدین وهی چناؤ کے تنگ انکلیلڈ کے بادشاہ کی جهم بهارت کا راشتریتی کورنروں اور لفئینت کورنروں کا وهی سلساء بارلیمنٹ اور دھا سبھاؤں کے اندر وھی سرکاری دل (Opposi- ית העבש בע (Treasury Benches) tion) اور وهی دعوان دهار تقریرین . حالت یهان تک بہرنیم چکی ہے که هدارے سوتنا دلوں اور درودھی دانوں کے بڑے سے بڑے نیتا ہی ایمانداری کے ساتھ ،انتے اور کہتے ھیں که شاسی چھافسی بھی دل کے هاتھوں میں هو اچھ شاسی کے اللہ اچھ اور زبردست رووھی دارس کا ھونا ضروری ھے . بنا اگ الک اور کم یا ادمک ایک درسرے کے پرتی اسپردھی راجکاجی دارو کے وہ شاسوں کی کامنا بھی تبھی کر سکتھ، اِسی لئے ہم میں سے بہت سے روس آور چین جہسے دیشوں کی بابت یہ سن کر ته وعلى الك الك راجكاجي پارتيان نهين هين، يا اگر هين تو ايك، درسوے کے ودروهی یا پُرتی اسپردھی نہیں ھیں' گیراں رہ جاتے میں اور یہ سمجھ می نہیں سکتے که اِس طرح کے کسی یعی دیش کی حکومت اچھی اور جندا کے لئے متکر حکومت کیسے ہو سکتی ہے ۔

پارٹیوں کے آدھار پر شاسن ویوسٹھا دوسرے کسی دیش کے لئے کہاں تک متعر ثابت موثی ہے یا نہیں یا اِس سے متعر ہے یا نہیں یا اِس سے متعر ہے یا نہیں اِس سے اللہ میں مم ایمی نہیں پرنا چامیت ، هم کیول اپنے دیھی کی آجکل کی ویوسٹا کو هی خرا اور پاس سے دیکٹا چاہتے میں ،

वाजकल की सरकारें

दुनिया के अन्दर एक एक जमाने में एक एक चीज का खास जोर होता है. उसीके अनुसार कोई जमाना धर्म प्रधान सममा जाता है, कोई संस्कृति प्रधान, कोई अर्थ प्रधान इत्यादि. कभी कभी एक ही समय में अलग अलग देशों में अलग अलग चीजों का जोर होता है, आजकल लगभग सारी दुनिया में राजनीति का बोल बाला है. इसलिये इस युग को राजनीति प्रधान युग कहा जा सकता है. धर्म, सदाचार, अर्थ, संस्कृति, कला और साहित्य सब को आज इस अधिकतर राजनीति ही की निगाइ से देखते हैं. राजनीति आज हमारे सारे मानव जीवन पर आई हुई है. इसीलिये राजनीतिक नेता और कार्यकर्ता ही सब जगह माज दुनिया के नेता माने जाते हैं.

कहा जाता है कि मानव इतिहास के शुरू में मनुष्य श्रीर पशुश्रों में बहुत कम अन्तर था. धीरे धीरे मनुष्य ने श्रपने मस्तिष्क के सहारे उन्नति करना शुरू किया. कुटुन्ब बना. समाज बना. छोटे छोटे गिरोह बने. उन गिरोहों में प्रबन्ध और संचालन के लिये सरदार होने लगे. धीरे धीरे राजा बने, सम्राट बने, श्रीर राजा और प्रजा का श्रन्तर

पैदा हुआ.

दुनिया के स्कूजों में पढ़ाई जाने वाली समाज शास की श्रधिकतर कितावें मनुष्य की सबसे पहले की जंगली हालत से शुरू होतो हैं. राजनीति की अधिकतर किताबें राजाओं

श्रीर सम्राटों के युग से शुरू होती हैं.

श्राजकल श्रकसर कहा जाता है कि राजाश्रों या सम्राटों यानी बादशाहों या शहनशाहों का जमाना बड़े अन्धकार का जमाना था. उसी से गुलामी का रिवाज चला, राजा और प्रजा, मालिक और गुलाम का अन्तर पैदा हुआ, समार में ऊँच नीच की बात आई. दूसरों को चूस कर थोड़े से बड़ा बनने बालों और लाखों और करोड़ों द्तित, नादार चुसने वालों में दुनिया बंट गई, इत्यादि.

यह भी कहा जाता है कि जिसे आजकत डेमोकेसी, जमहूरियत, प्रजातन्त्र, जनवन्त्र या लोकशाही कहा जाता है उसने जनम लेकर दुनिया और दुनिया की जनता को मुसीबत के उस गड़ हे में से निकाला. इस तरह की अधिकतर बातों में सचाई का एक अंश वो होता ही है, फिर चाहे वह रुपये में है झाने हो या दस झाने. इस तरह के जनतंत्र की सबसे बड़ी मिसालें आज संयुक्त राज अमरीका और इंग्लैन्ड की दी जाती हैं. भारत का आजकल का विधान भी, यूँ तो कहीं से कुछ और कहीं से कुछ लेकर तैयार किया गया है, पर अधिकतर प्रजातंत्र या जनतन्त्र की इसी करवना पर दला हुआ है.

اجکل کی سرکاریں

دنیا کے اندر ایک ایک زمانے میں ایک ایک چیز کا خاص زور هوتا هے ۔ اُسی کے انوسار کوئی زماند دهرم پردھان سجها جاتا هـ كرئي سنسكرتي يردهان كوئي ارته يردهان أنيادي، نبهی کبهی ایک هی سد میں الگ الگ دیشوں میں الگ لك چيزوں كا زور هونا هے . أجكل لك بهك سارى دنيا ميں لجنیتی کا بول بالا هے اِس لئے اِس یک کو راجنیتی پردهان بك كها جا سكتا هي دعرم سداچار ارته سنسكرتي كا أور ساھتیہ سب کو آج ھم ادھکتر راجندتی ھی کی نگاہ سے دیکھتے هیں . راجلیتی آج همارے سارے مانو جهرن پر چھائی هوئی ھے ، اِسی لئے راجایتک نیٹا اور کاریہ کرنا ھی سب جائم آ آج دنها کے نیکا مالے جاتے هیں.

کہا جاتا ہے که مائو انہاس کے شروع میں منشید اور پشوؤں میں بہت کم انار تھا . دعیرے دعیرے منشیع نے اپنے مستشک کے سہارے اُنٹی کونا شروع کیا . نقمب بنا . سماج بنا . چهوثه چہرتے گروہ بنے۔ آن گروھیں میں پرمندھ اور سنسچالی کے لئے سردار هرنے لیے . دهورے دهورے راجا بنے سمرات بنے اور راجا اور يرجا كا أنتر يودا هوا .

دنیا کے اِسکولوں موں پُرتائی جانے والی سماج شاستر کی ادهنتراکایوں ، اشیءکی سب سے پہلےکی جنگلی حالت سے شروع هوتی هیں . راجایتی کی ادعک تر کتابیں راجاؤں اور سمراقوں کے یک سے شروع عولی عیں .

آجيل اکثر کيا جاتا هے که راجاوں يا سعرائيں يعلى بادشاهور یا شهلشاهور کا زمانه بریم اندهکار کا زمانه تها . اسی سے فلامی کا رواج چلا راجا اور پرجا اسالک اور غلام کا انتر پیدا هوا سالے میں ارتبے نیچ کی بات آئی ، دوسروں کو چوس كو تهرزے سے بوا بات والوں اور لابوں اور كورووں داسا نادارر

چساے والی میں دنیا بیت کئی انهادی .

يه بھي کها جاتا فے که جيسے آجال ڏيمو اريسي عمهوريت يرجا تنترا جور تنتريا لوك شاهى كها جاتا في أس لي جلم لیکو دنیا اور دنیا کی جنتا کو مصیبت کے اُس گڑھے میں سے نكال إس طرح كي ادهكتر باتوں ميں سچائي كا ايك الش نو هونا هي ها يهر چاه ولا رويئه ميں چه آلے هو يا دس آلے . اس طرح کے جن نلتر کی سب سے بڑی مثالیں آب سلیکت راج اسریکه اور انگلینت کی دی، جاتی میں . بھارت کا آجال کا ردهان بھی عرب تو کہیں سے کچے اور کہیں سے کچے لیکر تیار کیا كيا هـ؛ ير أدهكتر يرجاننتر يا جن تنتركي إسى كلهنا ير دها

Congression of the second

अमरीका या इंगलैंड बना देने के ही चक्कर में पड़े हुए हैं. दूसरी तरफ विदेशों के साथ अपने सम्बन्ध में हम शान्ति और अहिंसा के उस रास्ते पर चलने की कोशिश कर रहे हैं जो राष्ट्र पिता महात्मा गाँधी ने हमारे सामने रखा था. कभी कभी तो हम लगभग उन्हों के शब्दों में उन्हों के भावों को प्रगट भी करते रहते हैं. यह है आजकल के भारत का दो रखा पन.

इस दो ठाली चाल के चलने में सब से बड़ी भूल हम यह कर रहे हैं कि हम एक ऐसे बुनियादी उसल की मुल जाते हैं कि जो जड़ और चेतन यानी बेजान और जानदार दोनों तरह की सुष्टि में साफ काम करता हुआ दिखाई देता है. वह उसूल यह है कि कोई भी परस्वर विरोधी शक्तियाँ जब एक साथ मैदानों में छोड़ दी जाती हैं तो वह दोनों एक दूसरे को काटकर अपने को नष्ट कर देती हैं. एक ही देश की शासन नीति में हिंसा और ऋहिंसा को साथ-साथ चलाने की यह के।शिश देश को अन्दर से और बाहर से दोनों तरक से वेउद खोखला करती जा रही है. अगर भारत एक बार इस बात को समभ ले और पक्के इराहे के साथ देश के अन्दर की व्यवस्था को अपनी पुरानी कलचर से मिलाकर चले, अपनी श्रीद्योगिक और श्रार्थिक आकांचा श्रों यानी सनश्रती और माली प्रोप्रामों को श्रपने नैतिक श्रीर रुहानी उसू जों के साथ मिलाकर चले, श्रीर निहरता श्रीर सच्चाई के साथ 'पीसकल को-एगिजिस्टेन्स यानी शान्ति पूर्वक सब के साथ मिलकर रहने के उन झहिंसात्मक उसूलों और बादशां पर ख़ुद अमल करने लगे जिन्हें बह दुनिया के सामने पेश कर रहा है, तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि दुनिया की आजकल की कठिनाइयों पर भारत उसे वैसी ही अपूर्व विजय दिला सकता है जैसी विजय राष्ट्र-पिता ने हमें अपने आजादी के संमाम में दिलाई है.

इसी भाव और इसी आशा के साथ हम अपने देश भाइयों और अपनी सरकार से यह अपील कर रहे हैं. हमें विश्वास है कि अगर हम सब मिलकर समय की आवश्यक-ता को सममें और उस पर अमल करें तो हम अमरीका और यूरप के नक़लची और उनके दस्तनिगर बने रहने के बजाय उनको राह दिखाने वाले और उन्हें नजात दिलाने वाले बन सकते हैं. आज हम साक-साफ उनके नक़लची और दस्तनिगर बने हुए हैं. المربکة یا انگلیات بنا دینے کے هی چکو میں پڑے هوئے هیں. درسری طرف ودیشوں کے ساتھ اپنے سمبادھ میں هم شائتی اور اهنسا کے اُس راستے پر چلنے کی کوشش کر رہے هیں جو راشار پتا مہاتما گاندهی نے همارے سامنے رکھا تھا ۔ کبھی کبھی تو هم لگ بھگ اُنھیں کے بھاؤں کو پرگت بھی کرتے رہتے ھیں ، یہ ہے آجکل کے بھارت کا دورخایدی .

اِس دو رخی جال کے چلنے میں سب سے بڑی بھول ھم یہ کر رہے میں که هم ایک ایسے بنیادی آصول کو بھول جاتے میں که جو جز اور چیتن یعنی بے جان اور جاندار درنس طرح کی سرشتی امیں صاف کلم کرتا هوا دکھائی دیتا ہے ۔ وہ اُصول یہ ہے که کوئی بھی پرسپر ورودھی شکتیاں جب ایک ساتھ میدان میں چھور دی جاتی میں تو وہ دونوں ایک دوسوے کو کات کر اپنے کو نشت کو دیتی میں . ایک عی دیش کی شاسی نیتی میں هنسا اور اهنسا کو ساتھ ساتھ چلانے کی یہ کہشمی دیمی کو اندر سے اور باہر سے دونوں طرف سے بےحد کھوکھا کرتی جا رہی ہے . اگر بھارت ایکبار اِس بات کو سمجھ لے اور یکے اِرادے کے ساتھ دیش کے اندر کی ویوستھا کو ایلی درانی کلنچر سے ما کر چلے اینی آردیوگک اور آرتهک آکانشای یعنی صنعتی اور مالی روگراموں کو اپنے نیا کہ اور روحانی اصولوں کے ساتھ ملاکر چلے اور رندرتا اور سجائے کے ساتھ 'بیسنل کوایکزسٹینس' یعنی شائتی پوروک سب کے ساتھ مل کر رہنے کے اُن اہنسانیک اُصولوں اور آدرشوں پر خود عمل کرنے لکے جنہیں ود دنیا کے سامنے پیش كو رها هـ؛ تو إس مين كوئي سنديه، نهين كه دنيا في أجكل كى كَالْهَانْهِين يو بهارت أعه ويسى هي أيورو وجدُّ دلا سكتا ه جیسی وجید راشتر بتانے همیں اپنے آزادی کے سلکوام میں دائم ہے .

اسی یا بھاؤ اور اِسی آشا کے ساتھ ھم اپنے دیکس بھائھہں اور اُسی سے کہ اگر اُپئی سرکار سے به اُپیل کر رہے ھیں ۔ ھییں وشواس ہے کہ اگر معم سب ملکر سماء کی آرشیکنا کو سمجھیں اور اُس پر عال کریں تو ھم امریک اور یورپ کے نقلجی اور اُن کے دست نگر بنے رہنے کے بجائے اُن کو راہ دکھائے والے اور اُنہیں نجات دلائے والے بی سکتے ھیں ۔ آج ھم صاف مان اُن کے نقلجی اور دست نگر بنے ھوئے ھیں ۔

—सुन्द्रलाल

سسلام الل .

लेकिन सवाल यह है कि इस मामले में पहल कौन करे, और कैसे करे ?

मेरी राय में इस सवाल का जवाब सीधा और साक है. जवाब यह है कि यह पहल भारत ही कर सकता है और इसे ही करनी चाहिये. भारत ही का सबसे पहले अपने सब हथियार फेंक देने चाहियें और अपनी सब की जें बरखास्त कर देनी चाहियें. भारत ही इस पर तुरन्त और पृरी तरह अमल करके दिखा सकता है.

इस के कारण भी साफ हैं और भारत के प्राचीन और हाल के इतिहास के पन्नों पर मोटे अक्षरों में लिखे हुए हैं. प्राचीन समय में अशोक ने दुनिया को एक नया रास्ता ऐसे बढ़े पैमाने पर दिखाया कि जिस से उस समय उसी की सारी नैतिक बुनियादें हिल गई. अशोक के उस कारनामें ने ही महात्मा गांधी के आगमन के लिये जमीन तैयार की जिसने उनके उस्लों, उनके तरीक़ों, उनके अहिंसारमक उपायों, और उनकी आजादी की लड़ाई और उसकी अन्तिम विजय को सुमिकन बना दिया.

पर कठिनाई यह है कि भारत की पुरानी मजहबी और कहानी तहजीब के साथ यूरप की दुनिया और माहा परस्ती के भयंकर टकराव ने भारत के राष्ट्रीय जीवन में एक अजीब दो रुखी और दो दिली पैदा कर दी है. इस द्वंध या दो रुखे पन ने जब तक महात्मा गांधी जीवित रहे, उनके स्वतंत्रता संप्राम में वराबर तरह तरह की रुकावट डालीं जिनसे उन के अहिंसात्मक मिशन को काफी नुक्रसान पहुँचा और वह जैसा चाहिये था कामयाब न हो सका. उन के मरते ही हमारे इस दो रुखेपन ने देश की लगभग सारी शक्ति को पिछ्छशी राहों पर डाल दिया. मगर फिर भी हमारी यह ग़जत रवी और कमजोरी ने जमाने के उस रुख, हालात और उन जरूरतों को न बदल सकी जिन्होंने महात्मा गाँधी को जन्म दिया था और न दुनिया की उन शक्तियों को नष्ट कर सकी जिन की मदद से महात्मा गाँधी भारत को अपने ढंग से आजावी दिलाने में कामयाब हो सके.

इस दुविधा या दो रुखे पन को ठीक ठीक सममने के लिये हमें एक बार अपने देश के अन्दर की हालत और अपने विदेशी सम्बन्धों दोनों को पूरी तरह सममना हागा और दोनों का मुकाबला करके देखना होगा. इन दोनों का मुकाबला करने से पता चलेगा कि एक तरक तो देश के अंदर के प्रोप्ताम, प्रवन्ध और व्यवस्था में, और देश का आगे वदाने की योजनाओं में हमने अपने आप को बिलकुल पच्छिमी विचारों और पच्छिमी तरीक़ों के हवाले कर रखा है, और देश के प्रवन्ध और की जों के संगठन दोनों में हमने जीवन के वही आदर्श अपने सामने रख रखे हैं जो अमरीका और यूरप के सामने रहे हैं, यहां तक कि हम अपने देश को

لیکن سوال یہ ہے کہ اِس معاملے میں پیل کون کرے اور اسے کرے اور

میری رائے میں اِس سوال کا جواب سیدھا اور صاف ہے ، جواب یہ ہے کہ یہ پہل بھارت ہی کر سکتا ہے اور اُسے ہی کرنی چاہئے ، بھارت ہی کو سب سے پہلے اپنے سب متیار بھینک دینے چاہئیں اور اپنی سب فوجیں برخاست کو دینی چاہیئی ، ہارت ہی اِس پر ترنت اور پوری طوح عمل کر کے دکھا سکتا ہے ،

اِس کے کارن بھی صاف ھیں اور بھارت کے پراچین اور حال کے اِنھاس کے پئوں پر موڈ ے اکشروں میں اکھے ھوٹے ھیں . پراچین سے میں اشوک نے دنیا کو ایک، نیا راستہ ایسے بڑے پیائے پر دکھایا کہ جس سے اُس سے اُسی کی ساری نیتک بنیادیں ھل گئیں، اشوک کے اُس کارنامے نے ھی مہاتما گاندھی کے آگئی کے لئے زمین تیار کی جس نے اُن کے اُصولوں' اُن کے طریقی' اُن کے اُس کی اُزادی کی لڑائی طریقی' اُن کے اُن کی اُزادی کی لڑائی

پر کلهنائی یہ ہے کہ بھارت کی پرانی مذہبی اور روحانی

تہذیب کے ساتھ یہرپ کی دنیا اور مادہ پرسٹی کے بھفکر ٹکراؤ نے
بھارت کے راشتریہ جھوں میں ایک عجیب دورخی اور دو دنی
پیدا کر دی ہے . اِس دوندھ یا دو رخے پن نے جب نک مہانما
گاندھی جھوت رہے اُن کے سوتنترنا سنکرام میں برابر طرح طرح
کی روکاوتیں تاایس جن سے اُن کے اعتسانیک مشن کو کافی
نقصان پہرنچا اور وہ جیسا چاہئے تھا کامھاب نہ ھو سکا ، اُن
کے مرتے ھی ھمارے اِس دورخے پن نے دیش کی لگ بھگ
ساری شکتی کو پچھمی راھوں پر قال دیا ، مگر پھر بھی ھماری
یہ غلط روی اور کموری نے زمانے کے اُس رخ' حالات اور اُن
ضوروتیں کو نہ بدل سکی جنہوں نے مہانما گانگھی کو جنم دیا
تھا اور نہ دنیا کی اُن شکتیش کو نشت کر سکی جن کی مدد
سے مہانما کا دھی بھارت کو اپنے تھنگ سے آزادی دائے میں
کامیاب ھو سکے .

اِس دویدها یا دورخے پن کو تھیک تھیک سمجھنے کے لئے
همیں ایکبار اپنے دیش کے اندر کی حالت اور اپنے ودیشی
سمبندھوں دونوں کو پوری ظرے سمجھنا ہوگا اور دونوں کا مقابلہ
کو کے دیکھا ہوگا ، ان دونوں کا مقابلہ کرنے سے پاتھ چلیگا که
ایک طرف تو دیش کے اندر کے پروگرام' پر بادھ اور دیوستھا
میں' اور دیش کو آگے برمائے کی یوجفاؤں میں میں ہم اپنے آپ
کو بالکل پچھمی وچاروں اور پچھمی طریقوں کے حوالے کو رکھا
فی اور دیش کے پربادھ اور فوجوں کے سائٹھیں دونوں میں ھم
فی جھیوں کے وہی آدرش اپنے ساملے رکھ رکھے ھیں جو امریکہ
لے جھیوں کے ساملے رہے ھیں' یہاں تک کہ ھم اپنے دیش کو
لور یورپ کے ساملے رہے ھیں' یہاں تک کہ ھم اپنے دیش کو
لور یورپ کے ساملے رہے ھیں' یہاں تک کہ ھم اپنے دیش کو

इसने इसे 'शान्ति युद्ध' कहा है. शान्ति युद्ध सममुच एक बनोसा वाक्य है. यह आन्दोलन भी अपने ढंग का वैसा ही नया और अनोसा। है. लेकिन जाने या अनजाने समय की आवश्यकताओं और माँगों को जितनी अच्छी तरह यह आन्दोलन जाहिर कर रहा है उतनी अच्छी तरह दुनिया का कोई आन्दोलन इस सम्य नहीं कर रहा है. वास्तव में यही आन्दोलन इस दौर का 'युग धर्म' है.

यह बात भी क़दरती और लाजमी है कि इस शान्ति-युद्ध का सब से खास मक्तसद, श्रीर श्राखिरी मंजिल वह तहरीक हो जो आज 'डिस-आरमामेन्ट' के रूप में चल रही है यानी यह कि दुनिया की सब क्रीमों के सब हथियार ले लिये जावें और दुनिया की सब फ्रीजें बरखास्त कर दी जावें. इस शान्ति आन्दोलन की असली और श्राखरी जीत हार इन्हीं फीजों भीर हथियारों के कम या खतम हो जाने के सवाल पर निर्भर है. इसी एक सवाल पर यह भी निर्भर है कि मानव जाति का जीवन खत्म होगा या मानव इतिहास में एक ऐसे नए युग और नई सभ्यता का उदय होगा जो अब तक के सब युगों और सब सभ्यताओं से कहीं अधिक शान-दार होगी. आजकल दुनिया के सामने जितनी समस्याएँ हैं उन सब के हल की कसौटी भी डिसम्रारमामेन्ट ही है. श्रगर एक बार यह सवाल ठीक ठीक हल हो जाये तो बाक़ी के वह सब सवाल धीरे-धीरे अपने आप शान्ति और सममौते के साथ हल हो जाँयों जो आज मानव जाति को एक जबरदस्त भूत भूलैयां में डाले हुए हैं और जिनका इल श्रासानी से किसी को सूम नहीं रहा है. पिछले पचास बरस के अन्दर जैसे-जैसे हिंसा के नये नये हथियार और तरीक़े निकलते गये वैसे ही आदमी के अन्दर सच्ची मानवता और इनसानियत भी जोरों के साथ पैदा होती गई. यह मानवता ही शान्ति आन्दोलन में राष्ट्रों के एक दूसरे को अधिक अन्छी तरह सममने की इच्छा में और पूरी या अधरी हथियार-यन्दी में अपने को प्रगट कर रही है.

एक श्रांर सोवियत रूस की राजनीति श्रीर उसकी पालिसी में जो जबरदस्त उलट फेर हुए हैं उन्होंने श्रीर दूसरी श्रोर भारत की श्राहंसात्मक तटस्थता यानी रौर जानिबदारी श्रीर इसके साथ भारत के 'पंचशील' के उसूल ने जो विश्व शान्ति श्रीर विश्व मैत्री की बुनियाद हो सकता है, इन दोनों ने मिलकर पूरी कामयाबी के साथ दुनिया की नैतिक तराज के पलड़े को शान्ति की तरफ मुका दिशा है. सारी दुनिया श्रव शान्ति के हक में श्रावाज उँची कर रही है. दुनिया को इससे जो शक्ति मिली है श्रीर जो श्रवसर मिला है उससे यदि ठीक ठीक श्रीर सच्चाई के साथ कायया उठाया जा सकता है जिसके लिये सारी मानव जाति इस समय मूकी श्रीर श

هم ل إس شائلی "يده کها ه . شائلی يده سي مي ايک انوکها واکهه ه . يه آندولن بهی آپني دهنگ کا ويسا هی نيا اور انوکها ه . ايکن جالے يا انجالے سم کی آوشيکتاؤں أور مائکوں کو جننی اچهی طرح جننی اچهی طرح يه آندولن ايس سيّه نهيں کر وها ه آننی اچهی طرح دنيا کا که اندولن ايس سيّه نهيں کر وها ه . واستو ميں يهي آندولن ايس دور کا ايگ دهور ه ه .

ید بات بھی قدرتی اور لازمی ہے کہ اِس شائتی یدھ کا سب سے خاص مقصد اور آخری منزل وہ تحریک ہو جو آج اتس آرما میلگ کے روپ میں جل رھی ہے یعلی یدکه دنیا کی سب قرموں کے سب ھتھار لے لیٹے جاویس اور دائیا کی سب فوجیس ہرخاست کردی جاریں، اِس شانتی اندولن کی املی اور آخری جیت هار اِنهیں فوجیں اور هتیاریں کے کم یا ختم هو جالے کے سوال پر تربهر هے . اِسی ایک سوال پر یہ بھی تربیر هے که مانو جاتي كا جيون ختم هوكا يا مانو إنهاس مين أيك أيسم نئے یک آور نئی سبھیتا کا ادرے ہوگا جو اب تک کے سب یکوں اور سب سبهیتاؤں سے کہیں ادھک شاندار ھوگی۔ آجمل دنیا کے سامنے جتنی سمسیائیں هیں أن سب كے حل كى كسوتى بھى تس أرمامينت هي هي اگر ايک باريه سوال تبيک تبيک حل مو جائے تو باقی کے وہ سب سوال دھیرے دھیرے اپنے آپ شاذتی اور سمجھوتے کے ساتھ حل هو جائينکے جو آج مانو جاتی کو ایک زبردست بهرل بهلهاں میں ڈالے هوئے هیں اور جن کا حل آسائی سے کسی کو سوج دیوں رہا ہے . پنچالے پنچاس باس کے أندر جیسے جیسے ہاسا کے ناہ نئے متیار ارر طریقے نمالتے گئے ویسے هی آدمی کے اندر سجے مانونا اور انسانیت بھی زوروں کے ساتھ پیدا ہوتی گئی . یہ مانوا می شانتی اندوان میں راشاروں کے ایک دوسرے کو ادھک اچھی طرح سنجھانے کی اچھا میں اور پوری یا ادھوری ھتیار بادی میں اپنے کو پرکٹ

ایک آور سوویت روس کی راجنیتی اور اس کی پالیسی میں جو زبردست آت پھنو ہوئے ھیں آنہوں نے اور درسوی اور اس بھارت کی اهنسائیک، تقسهیکا یعنی غیر جانب داری اور اِس کے ساتھ بھارت کے 'پنچشدل' کے اصول نے جو رشو شانتی اور وشو میٹری کی بلیاد ھو سکتا ھا اِن درنوں نے ما کو پوری کامیابی کے ساتھ دنیا کی نیٹک ترازد کے پلڑے کو شانتی کی طرف جوکا دیا ہے ، ساری دنیا اب شانتی کے حق میں آواز آولنچی کو رھی ہے ، دنیا کہ اِس سے جو شکتی ملی ہے اور چو اوس ملا ہے اس سے یدی تھیک آور سنچائی کے ساتھ اوس ملا ہا بیکتا ہے اس سے یدی تھیک آور سنچائی کے ساتھ فایں اُلی نیا پلنا پلتا جا سکتا ہے جس کے لئے ساتی مائوتا جاتی اِس سے بھوکی آور



शान्ति युद्ध

شانتي يده

श्रीरं जी में एक मशहूर कहाबत है कि श्रादमी के जीवन श्रीर उसके तरह तरह के मामलों में कभी कभी इस तरह की एक जोरदार लहर श्राती है जिससे श्रार उसी समय पूरा पूरा फायदा उठा लिया जाय तो श्रादमी की क्रिस्मत जाग जाती है श्रीर श्रार श्रादमी उस समय चूक जाय तो लहर के एक बार चढ़कर उतर जाने के बाद सिवाय बरबादी श्रीर पछतावे के श्रीर कुछ बाक़ी नहीं रह जाता, यहाँ तक कि इस बरबादी से फिर पनप सकना भी कठिन हो जाता है. श्राज दुनिया में ठीक इसी तरह की एक लहर श्राई हुई है. मानव जाति का सबसे श्रीयक भला इसी में है कि इस लहर से वह पूरा पूरा फायदा उठा ले श्रीर उसे पीछे हट जाने का मौका न दे

यह लहर दुनिया का वह जबरदस्त आन्दोलन है जिसे शान्ति आन्दोलन, अमन तहरीक या पीस मूबमेन्ट कहा जाता है. कोई कोई इसे ''पीस-बार" यानी शान्ति-युद्ध या 'शान्ति के लिए युद्ध' भी कहते हैं. यह अद्भुत युद्ध बास्तव में हिंसा और अहिंसा के बीच का युद्ध है. इस युद्ध के अन्त में चाहे हिंसा जीते और चाहे अहिंसा जीते मगर हकीकत यह है कि इतना बड़ा संभाम मानव जीवन में हिंसा और अहिंसा के बीच आज तक दुनिया में कभी नहीं हुआ था. इस संभाम में बाजी और दाँच भी बहुत गहरे लगे हुए हैं हार जीत केवल इसमें नहीं है कि मानव सभ्यता और संस्कृति जिन्दा रहे या न रहे, बल्कि इस बात की भी है कि मानत जाति जिन्दा बचे या न बचे.

हिंसा ने दुनिया में इस समय वह विराट रूप और एक ऐसे भयंकर ज्वालमुखी पहाड़ का सा रूप धारण कर लिया है कि उस का कुद्रती नतीजा यह हुआ कि इनसान के दिला दिमारा के अन्दर अहिंसा और शान्ति की जा प्रदुत्तियाँ और उजहान साए हुए थे वह एकदम जगह जगह जगर जाग उठे. इन सब दितकर प्रदृत्तियों और उजहानों का विश्वव्यापी और आलमगीर शान्ति आन्दोलन में अपने का जाहिर करने का मौका मिल रहा है. इसीलिये यह आन्दोलन इतना गहरा, जवरदस्त और ज्वापक विसाई देता है.

انگریزی میں ایک مشہور کہاوت ہے کہ آدمی کے جھون اور اس کے طرح طرح کے معاملوں میں کبھی کبھی اِس طرح کی ایک زوردار لہرآتی ہے جس سے اگر اُسی سمے پرراپورا فایدہ اُٹھا لیا جائے تو آدمی کی قسمت جاگ جاتی ہے اور اگر آدمی اُس سمے چوک جائے تو لہر کے ایک بار چڑھ کر اُٹر جائے کے اُس سمے چوک جائے تو لہر کے ایک بار چڑھ کر اُٹر جائے کے بعد سوائے برہادی اور نجھاوے کے اور کچھ ہاتی نہیں رہ جاتا ، یہاں تک کہ اُس بربادی سے پھرپاپ سکنا بھی کٹھن ھو جاتا ہے ، آج دنیا میں ٹھرک اِسی طرح کی ایک لہرآئی ھوئی ہے ، مائر جاتی کا سب سے ادھک بھالا اِسی میں ہے کہ اِس لہر مائر جاتی کا سب سے ادھک بھالا اِسی میں ہے کہ اِس لہر اُسے پریچھے ھے جائے کا موتع سے وہ پررا پورا فایدہ اُٹھا لے اور اُسے پریچھے ھے جائے کا موتع

یه لهر دنها کا وه زبردست آندولی هے جسے شانکی آندلی اس تحریک یا پیس موومینت کها جاتا هے . کوئی کوئی اِسے الریس-وار" یعنی شانتی یده یا اشانتی کے لئے یده بھی کہتے هیں . یه ادبهت یده واستو میں هنسا اور اهنسا کے بیچ کا یده هی اِس یده کے انت میں چاهے هنسا جهتے اور چاهے اهنسا جهتے مک حقیقت یه هے که اِنغا برّا سنکرام مانو جهوں میں هنسا اور اهنسا کے بیچ آج نک دنها میں کبھی نہیں هوا تها . اِس سنکرام میں بازی اور داؤں بھی بہت گہرے لکے هرئے هیں . هل جیمت کول اِس میں نہیں هے که مانو سبههتا اور سنسکرتی زنده ره یا نه ره بلکه اِس بات کی بھی هے که مانو چانی زنده بچے یا نه رهے بلکه اِس بات کی بھی هے که مانو چانی زنده بچے یا نه ره بلکه اِس بات کی بھی هے که مانو چانی زنده

هنسا نے دنیا میں اِس سے وہ ورات روپ اور ایک ایسے بهدنکر جوالامکمی پہار کا ساروپ دھاری کو لیا ہے کہ اُس کا قدرتی نادجہ یہ ہوا کہ اِنسان کے دل و دماغ کے اندر اهنسا اور شائنگی کی چو پروتیاں اور رجحان سوئے ہوئے تھے وہ ایکدم جگہہ جاگ آئے و اِن سب هنکر پرورئیوں اور رجحانوں کو جگہہ جاگ آئے و اِن سب هنکر پرورئیوں اور رجحانوں کو وہودیایی اور عالمگور شائنگی آندولی میں اپنے کو ظاہر کوئے کا موقع مل رہا ہے ، اِسی انے یہ آندولی اِتنا گہرا کوردست اور وہایک دکوئی دیتا ہے ،

كسف للله

बहादुरी को सराहते हुए अपनी पिछली दुरमनी को भुता विया. इस दोस्ती से सिखों में फिर कुछ होसला बढ़ा और वह अंग्रेजी फीज में भरती होने लगे जहाँ वे अपनी सिख निशानियों को जैसे के तैसा ही क्रायम रख सकते थे. लेकिन और सब बातों में सिखों में कोई जीवन नहीं रह गया था. उनमें न तो धार्मिक जीवन था और न क्रीमी जीवन. वह उन्हों पुराने देवताओं को पूजने लगे थे और वही पुरानी और लचर रस्में अदा करते थे जिनमें से उन्हें निकालने के खिये उनके गुरुधों ने निहायत बहादुरी से कोशिश की थी. सिखों की तालीम और पाँच निशानियाँ सिर्फ वराए नाम बहु गई. आजकल की संघ सभा सिखों को फिर पुराने ठीक रास्ते पर लाने की कोशिश कर रही है.

بہادری کو سواھئے ہونے آپنی پچھلی دشمنی کو بیلا دیا۔ اِسی، دوستی سے سکھرں میں بھر کچھ حوصاء بڑھا اور رہ انگریزی فوج میں بھرتی ہونے لگے جم ں وے اپنی سکھ نشانمیں کو جیسا کے تیساھی قائم رکھ سکتے تھے۔ لیکن اور سب باتوں میں سکھرں میں کوئی جھوں نہیں رہ گیا تھا ۔ اُن میں نہ تو دھارمک جھیں تھا اور تعقومی جھوں، وہ اُنھیں پولئے دیوتاؤں کو پوجئے لگے تھے اور وہی پرائی اوراچور رسمین اداکرتے تھے جن میں سے اُنھیں نکاللے کے لئے اُن کارؤں نے نہایت بہادری سے کوشھی کی تھی ، سکھوں کی تعلیم اور اور پانچ نشانیاں صرف برائے نام رہ گئیں ، آجکل کی منتھ سبھا سکبوں کو پھر پرائے ٹھیک راستے پر لانے کی تبھی کر دھی ہے ۔



700 PAGES, 32 ILLUSTRATIONS 2 COLOURED MAPS

"CHINA TODAY"

PRICE

BY PANDIT SUNDARLAL

Rs. 7. 8. 0

A vivid narration of the glorious and wounderful achievements of New China...A ricture of China which is both convincing and authentic...the best book that has come out so far on New China in the English language ...the most objective in approach and comprehensive in treatment.

—National Herald, Lucknow.

Highly informative...throws vivid light on conditions obtaining in that country...s book which deserves to be widely known

—Leader, Allahabad.

Encyclopaedic...characterized by acute observation of detail as well as by. .instinctive grasp of the fundamental perspective...To read it is veritably like accompanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New China.

—Bitz Bombay

A mine of information which gives a picture of China as nothing else dose...the best guide to New. China...Those who would like to understand what is happeing in New China can do not better than to study it.

—Bharat Jyoti, Bombay

The wealth of information it gives on China rew, and old...makes fascinating reading...is comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs.

—Indian Express, Madra.

China Today is an elequent tribute to his (Pandit Sundarlal's) shrewd understanding of men and matter... brings to the lighty mighty endeavour of the Chinese People to rebuild their great nation on firm new f undations for a tomorrow which is theirs.

—Vigil, Delhi

。 第2分的数据数据数据数据数据数据数据

नन्द सिंद बेरार, खेरसिंद श्रंबाबा और करमसिंद मान बतीरा. एक मुसलमान को जिसका नाम सोनता था सिख बनाकर उसका नाम भी रामसिंद रखा गया था और उसकी लड़कियों की शादी रामगड़िया के सरदारों के यहाँ हुई थी. भेदों के भाई हरिसिंद पैदाइशी मुसलमान थे. उनको भाई खोनेसिंद कंथल वाले ने सिख बनाया था. एक मुसल-मान, जिसका सिख नाम निद्दालसिंद रखा गया था, गुरुद्धारा भिलयानी का महंत हो गया था. महाराज नरेन्द्र सिंद पटियाला नरेश के इशारे से एक शक्स सद्द उद्दीन सिख बनाया गया था और महंत इयासिंद ने उसका नाम फतह सिंद रखा था. यह शक्स 26 साल तक धर्मशाला फूल का महंत रहा और सन1869 में मर गया. इस तरह महाराजा रंजीतसिंद के जमाने में इजारों मुसलमान मर्द और वश्रीरतें सिख धर्म के हलके में शामिल हुए थे,3

लेकिन महाराजा रंजीतसिंह की हुकूमत में हिन्दू इसर ने सिख धर्म का सकत धक्का पहुँचाया: उसका इसर जाल्सा सिपाहियों पर भी पड़ा. अगरचे इन सिपा-हियों में सिख धम क़रीब क़रीब अपनी पुरानी पाकीज़गी में भीजूद था. नयी ऐरा पसन्दों ने सिखों की सादगी और आजादी का बरबाद कर दिया. असल में सिख धर्म एक सादा और सकत धर्म है और आसानी से सिख लोग ऐरा और आराम की तरक नहीं मुकते. सिखों के मजहबी और दुनियाबी रस्मों में अक्सर सिबाय मजन गाने और प्रार्थना करने के और कुछ नहीं होता.

एक महाराजा अपने बराबर बाले महाराजों में अपना मर्तवा किस तरह क्षायम रख सकता है जब तक कि वह गद्दी पर बैठने व अपनी शादी के मौके पर नजूमियों और पंडितों को बुलाकर उन रस्मों और जलसां को शानदार न बना दे. सिख राजाओं और अमीरों को सिख धर्म को अपनी पसन्द के मुताबिक बना लेना हमेशा मुश्किल रहा है. इसलिये जब कभी वह दिखावा और रस्में पूरी करना चाहते हैं तो सिख धर्म के दायरे के बाहर जाने के लिये मजबूर होते हैं.

महाराजा रंजीत सिंह के बाद जब बादशाहत सिर्फ जेवरों और फ्रीमती कपड़ों तक ही रह गई तो ऊँचे जान्दानों के लिये सिस्स धर्म भी सिर्फ पगड़ी और दाढ़ी का कैशन रह गया. नतीजा यह हुआ कि आगे चलकर ऐसलागों ने, जिनके रहन सहन के तरीक सक्त और जिनमें जन्त मौजूद था, सिस्स सरदारों के हाथ से हुकूमत छीन ली. आम सिसों में चभी पुरानी इसप्रिट कुंछ बाक़ी थी लेकिन वह भी गुरुद्वारों की हालत बदल जाने और लड़ाई में धक्का - पहुँचने की बजह से कम होने लगी. अंग्रेजों ने उससे कावहा उठाने की कोशिश की और सिसों की शरीफाना گلف سلکھ بھرار' کھؤر سلکھ اقدھارا اور کرم سلکھ مان وھورہ ایک مسلمان کو جس کائام سوئا تھا سن بناکر اُس کا نام بھی رام سلکھ رکھا گیا تھا اور اُس کی لوانھوں کی شادی رام گرہا کے سوداورں کی بھائی ھری سلکھ پیدائشی مسلمان تھے ۔ اُن کو بھائی اونے سلکھ کلتھل والے نے سکھ بنایا تھا۔ ایک مسلمان نجس کا ۔ کہ نام نرال سلکھ رکھا گیا تھا' گرودوارا بیلیائی کا مہنت ھو گیا تھا ، مہاراج تریندر سلکھ پائیا تھا اور مہنت کے اشارے سے ایک شخص صدر الدین سکھ بنایا گیا تھا اور مہنت حمیا سلکھ نے اُس کا نام فتح سلکھ رکھا تھا ۔ یہ شخص 26 سال تک دھرمشالا بھول کا مہنت رھا اور سن 1869 میں مر گیا ۔ اُس طرح مہاراجت رفعیت سلکھ کے زمانے میں ھزاروں مسلمان مورد اور عورتیں سکھ دھوم کے حلقے میں شامل ھوئے تھے ۔ ن

لیکن مهاراچه رنجیت سلام کی حکومت میں هندو اثر لے سکم دهرم کو سخت دهکا پهنچایا . اُس کا اثر خالصه سهاهیوں پر بھی پڑا گرچه اِن سیاهیوں میں سکم دهرم قریب قریب اللی پرانی یائوزگی میں موجود تھا . نئی عیش پسندی لے سکموں کی سادگی اور آزادی کو برباد کر دیا ، اصل میں سکم دهرم ایک سادا اور سخت دهرم نے اور آسانی سے سکم لوگ عیش اور آرام کی طرف نہیں جھکتے . سکموں کے مذهبی اور دنیاری رسموں میں اکثر سوائے بھجن کالے اور پرارتهنا کرنے کے اور دنیاری رسموں میں اکثر سوائے بھجن کالے اور پرارتهنا کرنے کے اور کیوے نہیں مونا .

ایک مہاراچہ اپنے برابر والہ مہاراچوں میں اپنا مرتبہ کس طرح قائم رکھ سکتا ہے جب تک کی وہ گدی پر بیٹیلے و اپنی شادی کے موقع پر تنجومتیوں اور پندوں کو بلا کر اُن رسموں اور امیروں کو سکھ دھرم کو اپنی پسند کے مطابق بنا لینا ھیشت مشکل رھا ہے ۔ اِس لئے جب کبی وہ دکھاوا اور رسمیں پوری کرنا چاہتے ھیں تو سکھ دھرم کے دائرے کے باھر جانے کے لئے مجبور ھرتے ھیں ،

مہاراجة رئجیت سلکے کے بعد جب بادشاعت صرف زیوروں اور قیمتی کپروں تک ھی رہ گئی تو اُرنچے خاندانوں کے لئے سکے دھر م بھی صرف پکڑی اور داڑھی کا فیشن رہ گیا ، فیجید یہ ھوا کہ آکے چل کر ایسے لوگوں نے جن کے رھن سہیں کے طریقے سخت اور جن میں ضبط موجود تھا سکے سوداروں کے عام سکھوں میں ابھی پرائی کے مات دیجو باقی تھی لیکن وہ بھی گرودواروں کی حالت بدل جائے اور لوائی میں دھکا پہنچنے کی وجہہ سے کم ھوئے لکی ، تکویووں کے اور سکھوں کی اور سکھوں کی شریفائد

रसा.8 ईसाई गिरजे के कुल इक तो उन्हीं लोगों को दिये जाते थे जो यहूदियों से ईसाई होते ये और जिनका सतना होता था.

इसी सरह जब पुराने सिखं जिनको गुरु गोविन्द सिंह ने खुद दीचा दी थी, शहीद हो गये और उनकी श्रीलाद जिलाबतनी (परदेस) में रहने के लिये मजबर हो गई और संगतें बिना सरदारों के रह गई' ता वह पुराने रस्म रिवाजों भौर विश्वासो में ढल गईं. जो लीग छोटी क्रौमों में से आए थे उनसे और उन लोगों से फर्क होने लगा जा ऊँची जातों से आए थे. दीक्षा लेने के बाद भी कुछ को तो सिर्फ दरवाजे पर ही जगह मिलती थी, और दूसरों को मन्दिर के अन्दर दाखिल होने का हक्म हाता था. कुछ लोग ऐसे थे जो उस मुसीबत के जमाने में खुले तौर पर सिख होने का इक़रार करने की हिम्मत नहीं करते थे, उनको इजाजत दी गई कि वह सिख धर्म की ऊपरी निशानियों के बरौर ही काम चलाएँ और ऐसे आदमियों को 'सहजधारी' कहा गया. उन दिनों जब लम्बे केश रखना मौत को खुलाना था कंई आदमी उनके उस भेस बदलने पर ऐतराज करने का ख्याल दिल में नहीं लाता था जो सहजधारियों ने अक्तयार कर रखा था. उनको सिख धर्म पर पूरा ऐतकाद था मगर वह इसके लिये मरने को तैयार न थे. जिन सहजधारियों ने मह रियायती तरीका अख्तयार कर रखा था वह असली सिखों की बराबरी का दावा नहीं करते थे. यह अपने जिलावतन भाइयों की इसप्रिट और उनकी जाहिरी शकल का हमेशा ख्याल रखते थे धीर हर तरह उनकी मदद किया करते थे.

इस तरह सिख इसप्रिट और तर्जे जिन्दगी खाल्सा की सरत में इस बक्त भी क़ायम रखा गया जबकि क़सबों और शहरों में पाबन्दियाँ ढीली पड़ गई थीं. सरदार रतनसिंह के तिसे हुए "पुन्य प्रकाश" में लिखा है कि मुसीबत के जमाने के बाद भी जिसमें होकर वह गुज़र चुके थे लड़ने वाले सिखों के दिलां में पुरानी भावना श्रव भी साफ साफ श्रीर मुस्तैदी से मौजूद है. वह अब भी मुर्ति पूजा से दूर रहते हैं और नये तरीके पर शादी करते और पंथ की हुकूमत सब से शदकर मानते हैं. जो सुमाव (तजवीजें) उनकी संगत या पंचायत में ते होती हैं उन पर अमल करते हैं. जनेऊ, अवतार, जात पात या छुट्टा छूत को नहीं मानते और श्राष्ट्राही से उन लोगों को वापस ले लेते हैं जो असलमान हो गये थे. बहुत से मशहर सिखों ने ऐसी मुसलमान धौरतों से शादी की जिन्होंने सिख धर्म को अपना लिया बा, उनमें से बाज के नाम यह हैं-अनून सिंह जो चन्द्रथाल हा रहने बाला ब्रह्मण था, सखतसिंह पेजगढ़ का सत्त्री था.

फिर भी बन्दा के सरहद फ़तह करने पर कुछ दुसलमानों ने सिख धर्म अस्तयार किया था (दीक्षा दस्तूर इस्तुनीशा, मुखिभिफ बाज मोहन्मद).

ركا . 3 عيسائي گرچيك كل حق تو أليس لوگوں كو ديات حالة ته جو بهديون سے عيسائي هوتے تھے أور جون كا ختله هوتا تها . اس طرب حب برالے سم جن کو گرو گووند سلکم لے خود دبعشا دی جمی عمید موئئے اور آن کی اولاد جالوطنی (یردیس) میں رہانے کے اللہ مجیور ہو گئی اور سنگتیں بنا سرداروں کے رة كثيور تو وه يراني رسم رواجون أور وشواسون مين قعل كثين . جو ارگ چھوٹی قوموں میں سے آئے تھے اُن سے اور اُن لوگوں س نرق عولے اللا جو ارتجى ذاتوں سے آئے تھے . ديمشا ليلے كے بعد بھی کچھ کو تو صرف دروازے پر ھی جکہ ملتی تھی اور درسروں کو مندر کے اندر داخل عولے کا حکم عوتا تھا ۔ کچھ لرگ ایسے تھے جو اُس مصیبت کے زمانے میں کیلے طور پر سکھ ھونے کا اقرار کرنے کی ھمستنہدں کرتے تھے . أن كو اجازت دى كئى که وہ سکھ دھوم' کی اُوپری لشانیوں کے بغیر ھی کام چلائیں اور ایسے آدمیوں کو 'سلحدہاری' کیا گیا ۔ اُن دنس جب لمیے کرھی رکھنا مرت کو بالٹا تہاکرئی آدمی أن کے اُس نهيس بدانے پر اعتراض کرنے کا خیال دل میں نہیں اتنا تھا جو سہجدھاریوں نے اختیار کر رکیا تیا ۔ اُن کو سکھ دھرم پر پورا اعتقاد تھا سکر وہ اس کے لئے مرلے کو تیار نہ تھے . جن سمجدھاریوں نے یہ رعایتی طریقه اختیار کر رکها تها ولا اصلی سکھوں کی برابری کا دعولا نہیں کرتے تھے . یہ اپنے جالوطان بھائیوں کی اسپرت اور اُن کی ظاهری شکل کا همیشه خیال رکهتے تھے اور در طرح آن کی مدد کیا

پہر بھی بادا کے سرحد فتع کرنے پر کچھ مسلمانیں نے سکھ دھرم اختیار کیا تھا (دیکشا دستوراللیشا مصافی باز محمد) .

16 3 Jun 11 - 1

गुढ गोबिन्द सिंह ने विलक्क्स साफ्-साफ् कहा है कि विख दसरी कीमों से हमदर्श और मोहब्बत रखते भी ऐसा त करें कि अपने मैआर को दूसरों के साथ मिलाकर गडवड कर दें. सिख अपनी रसमों को बारों फिरकों के लोगों से अलग ही रखेंगे, वह सब से मनासिब बर्ताव करेंगे लेकिन इनका विश्वास और जिन्दगी के काम का अमल सबसे अलग रहेगा." 2 सिख अपने उसूजों को बहुत दिनों तक बरक्ररार रखे रहे और हिन्दू और मुसलमान दोनों के मेल से बहुत कायदा उठाते रहे और अपनी तरक्की को दोनों तरक के राजत असर से बचाते रहे. लेकिन जब सिखों को मुगल हुकूमत से लड़ना पड़ा तो उनकी वह भावना कम होने लगी. गुरु गोबिन्द सिंह मोहब्बत के भन्डार होने के सबब से अपने दुश्मनों के दिलों में भी मोहब्बत पैदा कर सके. श्रीरंगजेव का एक सिपहसालार सैयद बेग गुरु से जंग करने श्राया लेकिन उनसे मुलाकात होने पर उसे श्रक्तमांस हुआ और र में से लौटकर उसने श्रहद कर लिया कि जल्म की मदद के लिये मैं कभी जंग न कहाँगाँ, बुद्ध -शाइ, नवीखाँ श्रीर रानीखाँ मुसलमान ही थे जिन्होंने बहुत नाजुक वक्त पर गुरु की मदद की थी. सिखों से मुसलमानों की बढ़ती हुई नकरत का नतीजा यह हुआ कि मुसलमानों में सिख धर्म की बड़ती पर असर पड़ा और मुसलमानों का सिक्खों में शामिल होना कम होता गया. यहाँ तक कि जब बाद के मुराल बादशाहों की सिख्तयाँ बाबा बन्दा के हिन्दुओं श्रीर सिखों के खिलाफ बढ़ गई तो सिखों में दीक्षा सिर्फ हिन्दुओं तक ही महद्द हो गई. नतीजा यह हुआ कि सिख धर्म ने जा नया ख्याल पैदा किया या उसमें पुराने हिन्दू ख्याल भी शामिल होने लगे.

यही हाल ईसाई धर्म का भी हुआ था. शुरू में जब प्यादातर यहूदियों में से भी ईसाई बनते थे ता नये ईसाइयों के साथ पुराने यहूदी तरीक़े पर बर्ताव होता था. उस तरीक़े में अन्दर के हुलक़े के मुरीदों श्रीर बाहर वाले मुरीदों में फक़े सममा जाता था.

अन्दर के इलके के मुरीदों का खतना हुआ करता था और वह यहूदी रस्म अदा किया करते थे, गिरजे के सब से अन्दर के हिस्से तक जाने के इक्षदार होते थे और बाहर के इलके के मुरीदों को जो उन रस्मों की पावन्दी न करते थे सिर्फ 'हमद्बं' सममा जाता था, उनकों सिर्फ गिरजे के दरवाजे पर ही पूजा करने की इजाजत होती थी. ईसाइयों और गैर यहदियों में यही फर्क

ی کیرٹی ساتھ نے بااعل ضاف میاف کیا ہے کہ ساتھ دوسری نوموں سے همدردی اور معصمت زکیتے بھی ایسا ته کویں که اپنے سیار کو دوسروں کے ساتھ ملا کو گو ہے کو دیں . ساتھ آینی رسموں کو چاروں فرقوں کے لوگوں سے الگ می رکھوں گے ، وہ سب سے مناسب برتاؤ کریں کے لیکن اُن کا رشواس اور زندگی كے كام كا عمل سب سے الگ رهيكا ." 2 سكھ أينے أمراس كو بہت دلوں تک بوقواد رکھے رہے اور هادو اور مسلمان دولوں کے سیل سے بہت فائدہ اٹیاتے رہے اور اپنی ترقی کو دونوں طرف کے غلط اثر سے بحیاتے رہے ، ایکن جب سکھوں کو مغل حکومت سے اونا ہوا تو اُن کی وہ بھاؤنا کم ھونے لکی ، گرو گووند سنکھ محبت کے بہندار عولے کے سبب سے اپنے دشماوں کے داوں میں بهي منصبت يبدأ كر سكي أورنكزيب كا ايك سيمسا لر سيد بیک گرو سے جنگ کرنے أیا لیکن أن سے ملافات هرنے پر أسے انسوس ہوا اور شرم سے لوٹ کو اُس نے عہد کو لیا کہ ظلم کی مدد کے لئے میں کبھی جنگ نه کرونکا ، بدھوشاد انبی خان ارر غلی خال مسلمان هی تعے جلهوں لے بہت تازک وقت پر گرو کی مدد کی نهی . سکهوں سے مسلمانوں کی پرعلی طوئی ندرت کا نتیجہ یہ عوا که مسلمانوں میں سکھ دعرم کی برعتی ير اثر يرا أور مسلمانون كا سكهن مين شامل هونا كم هونا كيا .. بہل تک که جب بعد کے مغل بادشاهوں کی سختیاں بابا بلدا کے ھندؤں اور سکھوں کے خالف ہڑھ گئیں تو سکھوں میں دیکشا صرف هندوں تک هی صحدود هو گئی. تنیجه یه هوا که سکه دهرم نے جو نیا خیال بھدا کیا تھا اُس میں برائے هندر خیال بھی شامل ہوئے لکے .

یہی حال عیسائی دھرم کا بھی ھوا تھا . شروع میں جب
زیادہ تر یہردیوں میں سے بھی عیسائی بنتے تھے تو نئے عیسائیوں
کے ساتھ پرانے یہردی طریقے پر برناؤ ھوتا تھا . اُس طریقے میں
اندر کے حلقے کے مریدوں اور باھر والے مریدوں میں فرق سمجھا
جاتا تھا .

انتر کے حلقے کے مریدوں کا خاتم ہوا کرتا تھا اور وہ یہودی
رسم ادا کیا کرتے تھے، گرچے کے سب سے اندر کے حصے تک جائے
کا حقدار ہوتے تھے اور باہر کے حلقے کے مریدوں کو جو اُن رسموں
کی پابلدی ناء کرتے تھے صرف 'ہمدود' سمجھا جاتا تھا!
اُن کو صوف گرچے کے دروازے پر ھی پوچا کرلے کی اُجازت
ہوتی تھی ، عیسائیوں اور فیر یہودیوں میں بھی فرق

^{े2.} सूर्य प्रकाश-अवत 3-अध्याय 50.

^{2 --} سوريه پركافى -- روت كا-دهيائه 50 .

"न मैं मक्के को इज करने जाऊँ और न हिन्दुओं के सीथों में पूजा करने."

"मैं सिर्फ उस एक की बन्दगी करूँगा किसी दूसरे की

'मैं न मूर्तियों को पूजूँगा श्रीर न नमाज पद्या.'' ''मैं अपने दिल को सिक उसके क़दमों में लगाऊँगा जो सब से ऊपर है.''

'हम न हिन्दू हैं और न मुसलमान.''

"हमने अपने तन और अपनी जानों को अल्लाह व राम के नाम कु बीन कर दिया है."—भैरो राग, द्विस्तान का लेखक छटे और सातवें गुरुओं के जमाने में पंजाब आया था. वह सिखों की बाबत लिखता है—

"गुढ नातक के सिख मूर्ति पूजा को बुरा कहते हैं. उनका विश्वास है कि सब गुरू गुरू नातक के ही अवतार हैं. वह हिन्दू मन्त्रों को नहीं पढ़ते और न हिन्दू मन्दिरों की कोई खास इ.ज्जत करते हैं. वे हिन्दू अवतारों को नहीं मानते और न संस्कृत ही पढ़ते हैं जो हिन्दु औं की राय में देवताओं की जवान है."

सिखों को हिन्दू शास्त्रों में लिखे हुए रीत रिवाज पर यक्रीन नहीं और न वे खाने पीने में छूत छात की पाबंदियों के क्रायल हैं. एक आलिम हिन्दू प्रतापमल ने जब यह देखा कि उसका लड़का इसलाम की तरफ सुका है तो उसने उससे कहा था—''तुमका मुसलमान हाने की कोई 'जरूरत नहीं, अगर तुम खाने पीने की आजादी चाहते हो तो अच्छा हो कि तुम सिख हो जाओ."

गुरु के लन्मरखाने में और बराबरी सिखाने के लिये सब का एक साथ बिठाकर खाना खाने के सिवाय सिख अपने गुरुद्ववारों में किसी तरह की कोई बड़ी रसम अदा नहीं करते. इसालये आपस में मगड़े की कोई वजह नहीं पैदा होती और न उनमें अलग अलग फिरक़े ही पैदा हुए. अमृतसर के गुरुद्वारे में मजहबी पूजा सिक यह होती है कि रात दिन अखंड पाठ मंथ साहब का जारी रखा जाता है. सिक आधी रात के करीब एक दा घन्टे बन्द रहता है. बाक़ी तमाम बक्त रागी लोग मन्थ साहब के शब्द बारी बारी से मिलकर गाया करते हैं. किसी तरह की कोई लैकचर बाजी या बहस मुबाहि सा वहाँ नहीं होता और इसीलिये कोई हुज्जत आपस में पैदा नहीं होती. सिखों। का यह सादा और ख्वसूरत रिवाज 2 0 बरस पहले सुजानराय बटाला वाले ने देखा था. उसने 1667 ईसबी में अपनी किताब "खलास खलतबारीस में लिखा है—

"उनके लिये सिफ पूजा का यह तरीका है कि वह अपने गुड़कों के बनाये मजनों का मीठे स्वरों में साख और बाजों के साथ मिलकर गाते हैं." دند میں معے کو معے کولے جاؤں اور ند هندوں کے تیرتیوں میں میں پوچا کولے .**

دیمیں صرف اُس ایک کی بندگی کرونکا کسی دوسرے کی نہیں ۔ا'

ور المیں نہ مررتیوں کو یوجوں کا اور نہ نماز پڑھوں کا ۔'' ور میں اپنے دل کو صرف اس ایک کے قدموں میں الکاؤلکا جو سب سے آرپر ہے ۔''

العم لله هلدو هيل أور أنه مسلمان ""

''ھم لے اپنے تی اور اپنی جانوں کو الله و رام کے نام قوبان کر دیا ہے ۔''۔بھوروں راگ ۔

دیستان کا لیکھک چھٹے اور ساتویں گرؤں کے زمائے میں پانجاب آیا تھا ، وہ سکھوں کے ہاہت لکھتا ہے۔۔۔

''گرو نانک کے سکھ مورنی پوجا کو ہرا کہتے ھیں ۔ اُن کا وشواس ہے که سب گرو گرونانک کے ھی اوتار ھیں ۔ وہ ھندو منتروں کو نہیں پڑھتے اور نه ھندو مندروں کی کوئی خاص عوت کرتے ھیں ، وے ھندو اوتاروں کو نہیں مانتے اور نه سنستوت ھی پڑھتے ھیں جو ھندؤں کی رائے میں دیوناؤں کی زایے میں دیوناؤں کی زایے ہیں ہے۔''

سکھوں کو ھندو شاستروں میں لکھے ھوئے ریت روآج پوریقین نہیں اور نہ وے کیانے پینے میں چھوت چھات کی دابندیوں کے قائل ھیں ، ایک عالم ھندو پرتاپ مل نے جب یہ دیکھا کہ اُس کا لوکا اِسلام کی طرف جھکا ہے تو اُس نے اُس سے کہا تھا۔"تم کو مسلمان ھونیکی اُکوئی ضوورت نہیں' اگر تم کھانے پینے کی آزادی چاھتے ہو تو اُچھا ھوکہ تم سکھ ھو جاؤ ۔"

گرو کے لفکرخانے میں اور ہواہری سکھانے کے لئے سب کو ایک ساتھ بیٹھا کر کھانا کھانے کے سوائے سکھ اپنے گرودواروں میں کسی طرح کی کوئی ہوی رسم ادا نہیں کرتے . اِس لئے آپس میں الگ جھکوے کی کوئی وجہ نہیں پیدا ھوئی اور نہ اُن میں الگ وجہا صرف یہ ھوئی ہے امرتسر کے گرددوارے میں مذھبی پیدا ھوئی ہے کہ رات دن اکھلتے پائے گرنتے صاحب کا جاری رکھا جانا ہے . صرف آدھی رات کے قریب ایک دو گینٹے باد رھٹا ہے . باقی تمام وقت راگی لوگ گرنتے صاحب کے شہد باڑی باری سے مل کر گیا کرتے ھیں ، کسی طرح کی گوئی انہوں باری سے مل کر گیا کرتے ھیں ، کسی طرح کی کوئی انہوں باری یا بحص مباحثہ وھاں نہیں ھونا اور اِس لئے کوئی انہوں وراج کی برس پیدا نہیں ھوتی ، سکھوں کا یہ ساتھ کوئی حصوت ایس میں پیدا نہیں ھوتی ، سکھوں کا یہ ساتھ اور خوبصورت رواج 250 ہرس پہلے سوجان رائے بٹانے والے نے دیکھا تھا ، اُس نے 1667 عیسوی میں اپنی کتاب دیکھا تھا ، اُس نے 1667 عیسوی میں اپنی کتاب دیکھا تھا ، اُس نے 1667 عیسوی میں اپنی کتاب

اُن کے لئے صرف پوجا کا یہ طریقہ ہے که وہ اپنے گرؤں کے پنائے پیجانوں کو میٹھے سروں میں ساز اور باجوں کے ساتھ ملمو گلے میں .

विला किसी फक्र के सबको बापने मखद्दव में शामिल कर केने के जलाबा और भी ऐसे तरीक़े थे जिनसे सिख धर्म की इस भावना को कायम रखा जाता था. "गढकों का लंगर" जिसमें बिला लिहाच छोटे बढ़े सबको खाना मिलता था. इसलिये कायम किया गया था कि वे तमाम हडावटें जो फिरके और मजहब के तास्मुब की वजह से कायम थीं दर ही जायें और सब बराबर हो जायें. इस लिये यह क्रायदा रखा गया था कि जो भी खाना खाने आये. चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान, सबको एक पंगत में बैठकर एक साथ खाना खाना होगा. यहाँ तक कि अकबर ब्रीर राजा साहब हरीपुर को भी, जब वह राह अमरदास से मुलाक्रात करने गये थे, उसी तरह सब के साथ बैठकर खाना खाना पड़ा था. यह जाहिर करने के लिये कि मुसल-मान और नीच जात के हिन्दू सब वैसे ही रहते हैं जैसे ऊँची जात वाले, गुरु अर्जुन देव ने 1 मंथ साहब में इन लोगों की साखियाँ भी शामिल की हैं. इनमें कबीर साहब मसलमान जुलाहे थे, करीद एक मुसलमान ककीर, भीखन एक मुसलिम आलिम, साई नाई, नाम देव छीपी, रवि-दास मोची, मदीना मुसलमान, मिरदहा श्रीर बहुत से दूसरे मुसलमान रागी शामिल हैं. यह बात और भी साफ हा जाती है जब हम यह देखते हैं कि सिख लोग उस पूरे प्रंथ साहब को जिसमें यह सब राग साखियाँ वरौरा शामिल ईश्वरी या इल्ह्ममी समऋते हैं और उसकी बेहद इज्जत करते हैं.

इन बातों का असर उस जमाने के सिखों को अदालतों और रस्म रिवाजों पर बराबर दिखाई पड़ता है. सिख लोग हिन्दुओं और मुसलमानों को एक ही निगाह से देखते थे और मज़हबी तौर पर अपने को इनमें से किसी करीक़ में शामिल नहीं करते थे. गुरु नानक का पहला कौल जब उन्होंने प्रचार शुरू किया था यह था कि "ना कोई हिन्दू न मुसलमान और जब उनका चोला छुटा तो हिन्दू मुसलमान दोनों उनको अपना बताते थे. गुरु अर्जुन ने अपनी किताब में निहायत दिलेरी से साफ-साफ कहा है—

'भैं न हिन्दू वर रखता हूँ चौर न रमजान के रोजे.'' 'भैं सिर्फ उसकी इवादत बरता हूँ, वही मेरी आखिरी पनाह है."

"मैंने हिन्दू और तुर्क दोनों से नाता तोड़ लिया है." "मैं सिर्फ एक मालिक को मानता हूँ जो अल्लाह है."

بلا کسی فرق کے بیشہ کو لیے منجب میں تلدل کو لیان کے عاولا أور بهي أيسم طريقي آهم جن سه سكه دهرم كي إس بهاؤثنا كو قائم رُهَا جاتا تها. وتروى كا لنكر" جس مين بالحاط جهرات يونه سب كو كهانا ملتا تها أس الله قائم كيا گيا تها كه ويد تمام رکاوٹیں جو فرتے اور مذھب کے تعصب کی وجہ سے قام عمیں در هو جائين اور سب برابر هو جائين . اِس لله يه قاعده ركها كيا تها كه جو يهي كهانا كهائے أثير چاهے وه هندو هو يا مساه ای سب کو ایک یناعث میں بدیم کر ایک ساته کهانا هوگا یهاں نک که اکبر اور راجه صاحب هری پور کو بھی ، جب وہ گوو امرداس سے ماتات کرنے گئے تھے؛ اُسی طرح سب کے ساتھ بھٹھ کو کیانا کیانا روا تھا. یہ ظاہر کرلے کے لاءکه مسلمان اور نہیج ذات کے هادو سب ويسم هي رهام هيل جيسم أولنجي ذات والي كرو أجن ويو له 1 گرنته صاحب ميں إن لوگوں كى ساكههاں بھى شامل كي هير. إن مين كبير صاحب مسلمان جولاف ته ويد أيك مسلمان فقير' بهيكين أيك مسلم عالم' سائين فائي 'نام ديو چهدي ' ررمی داس مرچی، مردانه مسلمان مردها اور بهت سے دوسرے مسلمان راگی شامل هیں . یه بات اور بھی صاف هو جاتی ه جب هم يه ديكهتم هيل كه سكم لوك أس برريم كرنته صاحب كو جس میں یہ سب راک ساکھیاں وغیرہ شامل ھیں ایشوری یا الهامي سنجهتم هيں اور أس كي يحد عزت كرتے هيں .

این ہاتوں کا اثر آس زمانے کے سکھرں کی عدالتوں اور رسم رواجوں پر ہراہر دکیائی پرتا ہے ۔ سکھ اوگ ھندؤں اور مسلمانوں کو ایک ھی نگاہ سے دیکھتے تھے اور مذہبی طور پر اپنے کو اِن میں سے کسی فریق میں شامل نہیں کرتے تھے ۔ گرد نانک کا پہلا قول جب اُنھرں نے پرچار شروع کیا تھا یہ تھا کہ ''نا کوئی ھندر نا مسلمان' اور جب اُن کا چولا چھوٹا تو ھندر مسلمان دونوں اُن کو اِبلا ہتاتے تھے گرد ارجن نے اپنی کتاب میں نہایت داہری سے صاف صاف کہا ہے۔

''میں نه هندو ورت رکھتا هوں اور نه روضان کے روزے م''

"میں صرف اُس کی عبادت کرتا ہوں' وہی میری آخری یناہ ہے ،"

''میں لے هلدو أور ترک دونوں سے ثانا تور لیا ہے ۔''' ''میں صرف أیک مالک کو مانٹا هوں جو الله ہے ۔''

^{1. &#}x27;'सारी संगत एक साथ विला लिहाज वरन या आश्रम के संगरकाने में दाखिल होकर एक पंगत में बैठती , श्री जीर समस्त्र जाता था कि सब एक बराबर'साफ धौर पाक हैं"—सूर्य प्रकारा रास 1—बाब 20

^{1 &#}x27;ساری سلکیت ایک سانه بالداظ برن یا آشرم کے لفکر خانے میں داخل هو کر ایک پلکت میں بیالیتی تهی اور سمجها جاتا تها که سب ایک برابر صاف اور پاک هیں ۔ ''—سوریه پرانی اس اسباب 30 ۔ 'پرانی اسباب 30 ۔

سعور سنوو که پیلے ایک قاکر تھا مکر گرولانک کی نصيحت سے سکھ عوا اور اُن كے دهرم كا اُس لے يزچار كيا؟ ایک نواب یا لوکا جس کو ڈلا کے بھائی یا و لے جالندھر دو آب میں سکھ بنایا تھا؛ رؤیر خان۔۔۔ اکبر کا ایک ثائب وزیر کھا اور خلیه طور یر گرو آر هن دیو کی تعلیم یر عمل کرتا تها؛ بدهن شاد کرو نانک کا بڑا بھات تھا اور آخر میں گرو گروند کے زمانے میں سمع هو کو هی مرا؛ بی بی کلدین ۔ الفور کے قافی کی لوکی تھی اور اُس کو گرو ہوگورند نے سکھ دھرم کی تعلیم دی تھی؛ سیفاہاں ریاست پتیاله کے رهنے والے شفیع الدین کو گرو تینم بهادر نے عین اپنی گرفتاری سے پہلے سع بنایا تھا؛ سید شاہ کو بھائی ناد ال لے سکھ بنایا ایک مسلمان فقیر ابراهیم لے سب سے پہلے اپنے کو گرو گورند سلام کے روبر سکو دهرم اختیار کرلے کے لئے پیص کیا تھا۔ گرو لے اُس کا نام أجمير سلكم ركها أور ستهول كو أيك حكم جارى كيا كه "اكو كوئي مسلمان أدنهن هو يا أعلهن سمجائي سے خااصه دهرم مائلا چاهنا هو تو مناسب هے که اُس کو دیکشا دی جائم اور سنكت مين شامل كر لها جائم ."

بہت سے ناموں میں سے جنہوں نے سکھ دھرم اختیار کیا تھا یه صرف چند نام میں . ان نئے سکھوں کی حالت جانیے کرنے یو' جو گرو فافک اور آن کے بعد سنکت میں شامل ہوئے تھے' أيسا معاوم هونا هے که پتھان سيد اور شيعه جن کو معاول لے شکست در دی تبی سکه مذهب کو زیاده دسند کرتے تهے جب که مهرور مدل أن اوگوں كا دهرم اختيار كرنا ايني توهين سمجهتے تھے جن کو اُنہوں نے جنگ میں شکست دی تھی . جہانگیر کو گرو ارجن نے خلاف جیسا که جہانگیر نے خود النوک جہالکیوی'، میں لکیا ہے' سب سے بڑی شکایت یہ تھی که الهمت سے سیدھ سادسے هندو هی نهیںبلکه بهت سے بهرقرف مسلمان بھی گرو ارجن کی دیکشا اور طریقوں سے موھت ھو جاتے میں " گرو لے بہت سے ایسے لوگرں کو بھی دیکشا دی تھی جو نیجے ذاتوں کے تھے ، مثلاً رام داس جو موچی تھے ، کرو کووند سلکھ لے یہول (سکھ بدلے) کا دروازہ سب کے لئے برابر کھول دیا تها . یهاں تک که مهاروں کو بھی دیکشا دی تھی اور آنھیں اُن کے مضبوط وشواس کے لئے 'مذھبی' کہا جانا تیا . اُن مذھبیوں کو بعض وفت ورن رنگهریگا بهی کهته هیں اس کی وجه یه هو سکتی ہ کد اُن میں سے بہمت سے اوک ارانکوا ذات کے مسلمان نھے ، اِن لوگیں لے گرو تینے بہادر کی نالی ھوٹی اھی دو نکال لانے میں فهایت خوانمزدی سے کام نوا تیا ۔ اِس پر اُن کو کرر کورند سلکھ نے انہوریٹے کے بھالے کہا کر یکارا تھا .

सज्जन - जाकि पहले एक डाकू था मगर गुरु नानक की नसीहत से सिख हुआ और उनके धर्म का उसने प्रचार किया: एक नवाय का लड़का जिसको हला के भाई यार ने जलन्धर दोश्राव में सिख बनाया था: वजीरखाँ-अकबर का एक नायब बजीर था और खुकिया तौर पर गुर अर्जु न देव की तालीम पर अमल करता था; बुधन-शाह-गुरु नानक का बड़ा भक्त था और आखिर में गुरु गोविन्द के जमाने में सिख होकर ही मरा; बीबी गुल्दन-लाहीर के काजी की लड़की थी और उसको गुरु हर गोबिन्द ने सिख धर्म की तालीम दी थी: सैफाबाद रियासत पटिया ला के रहने वाले शकी उद्दीन को गुरु तेरा बहादुर ने ऐन अपनी गिरक्तारी से पहले सिख बनाया था: सैयद शाह को भाई नन्दलाल ने सिख बनाया. एक मुसलमान फक्कीर इत्राहीम ने सब से पहले अपने को गर गोबिन्द सिंह के क बरू सिख धर्म अख्तियार करने के लिये पेश किया था. गुरु ने उसका नाम अजमेर सिंह रखा और सिखों को एक हुक्म जारी किया कि "अगर कोई मुसलमान अदना हो या आला, सचाई से खालसा धर्म मानना चाहता हो तो मुनासिब है कि उसको दीश्वा दी जाय श्रीर संगत में शामिल कर लिया जाय."

बहुत से नामों में से जिन्होंने सिख धर्म श्रव्हितयार किया था यह सिर्फ चन्द नाम हैं. इन नये सिक्खों की हालत जाँच करने पर, जो गुरु नानक और उनके वाद संगत में शामिल हुए थे, ऐसा मालूम होता है कि पठान, सैयद और शिया जिनको मुरालों ने शकिस्त दे दी थी सिख मजहब को ज्यादा पसन्द करते थे, जबकि मराहर मुराल उन लोगों का धर्म श्रास्तियार करना श्रापनी तौहीन समभते थे जिनको उन्होंने जंग में शक्तिस्त दी थी. जहाँगीर को गुर अर्जु न के खिलाक, जैसा कि जहाँगीर ने खुद "तुजक जहाँगीरी" में लिखा है, सब से बड़ी शिकायत यह थी कि "बहुत से सीधे सादे हिन्दू ही नहीं बल्क बहुत से बेबक क मुसलमान भी गुरु अर्जन की दीक्षा और तर्र कों से माहित हा जाते हैं." गुरु ने बहुत से ऐसे लोगों को भी दीक्षा दं थी जो नीची जातों के थे, मसलन रामदास जो मोची थे. गुरु गोविन्द सिंह ने पहुल (सिख बनने) का दरवा-जा सब के लिये बराबर खोल दिया था. यहाँ तक कि मेहतरों को भी दीक्षा दी थी, और उन्हें उनके मजबूत विश्वास के लिये 'मजहबी' कहा जाता था. उन मजहबिया का बाज दक्त ्रॅघरीटा' भी कहते हैं. इसकी वजह यह हां सकती है कि इनमें से बहुत से लोग 'रॉगइ' जात के मुसलमान थे. इन लोगों ने गुरु तेरा बहादुर की कटा हुई लाश-का निकाल लाने में निश्चत जबाँमरदी से काम लिया था. इसपर धनको गुरु गोविन्द सिंह ने 'रॅंघरेटे के बंटे' कहकर प्रकारा था.

TO THE REPORT OF THE PARTY OF T

होबारा जारी करने का मौका मिल गया था. सिसा गुकद्वारे मठवारी महन्तों के हाथ में पड़ गये और सगतों से जब पहले के हम-मअहब सिल खत्म हो गये तो हकूमत वन्हीं महन्तों के हाथ में आ गई जो गुकदारों पर क्रव्या रखते हे

पक बात और भी थी जिस से सिख धर्म के सच्चाई के साथ बढ़ने में खलल पड़ गया. सिक्खों की तारीख के आखिरी जमाने में सिख धर्म में दाखिजा सिर्फ एक मीके के लिये रह गया. चूँकि इस पहलू पर आम तौर से विचार नहीं किया गया है इसलिये में इसको कुछ तफसील के साथ

बयान करना चाहता हूँ.

सिख धर्म सब जातों और फिरक्तों के लिये था और शुरू में हिन्दू और मुसलमान दोनों में से ही सिख लिये जाते थे. गुरु नातक ने पशियाई कोचक, ईरान और दूसरे गुल्कों में, जहाँ जहाँ वह गये थे, बहुत से गुरीद बनाये थे. सेवादास ने अपने प्रंथ "जन्म साखी" (1528 ईसवी) में बहत सी ऐसी जगहों का जिक्र किया है जैसे "पठानों की किरी", जहाँ बहुत से मुसलमानों ने सिख धर्म अपनाया था. सिक्खों की इस फेहरिस्त से जो भाई गुरुदास (1629)ने अपने ग्यारहवें गीत में दी है इसमें और नामों के साथ ऐसे नाम भी लिखते हैं जैसे मदीना जो गुरु नानक के साथ रहता था, दीलतखाँ पठान जो बाद में एक सिख संत हुन्ना है श्रीर गूतर लोहार जो गुरु श्रंगद का चला था. उसने श्रपने गाँव में सिख धर्म की लोंगों को तालीम दी थी. इनके श्रलाबा हमजा श्रीर मियाँ जमाल बराबर गुरु गोविन्द की खिद्मत में हाजिर रहते थे. तारीख में हमका मसज-मानों के बहुत से नाम मिलते हैं जो सिख धर्म का सराहते थे; मसलन राय बुता रतलबन्डी का मुसलमान सरदार जो गहनानक के माँ बाप की निस्वत भी गुरु नानक की .ज्यादा क़दर करता था. श्रल्जाह्यार श्रीर हुसेनी शा रू, जिन्होंने गुरु अमरदास से रुहानी सबक लिया था, करीब करीब सिख ही सममें जा सकते हैं. अकबर की रवादारी पर और सती के रिवाज के बन्द करने पर भी गुढ अमरदास का असर था. साई मियाँ मीर का गुरु अर्जुन देव से इस क़द्र गहरा ताल्लुक था कि गुरु जी अमृतसर के गुरु-द्वारे की नींव रखने के लिये साई मियाँ मीर को लाये थे. गुरुद्वारे की नींत्र साईं मियाँ मीर के हाथों की रखी हुई है. दाराशिकोह का सिखों की तरक इतना .ज्यादा मुहाव था कि इसी वजह से घोरंगजेब ने उनके साथ .ज्यादितयाँ की थीं. सैयद बुद्ध शाह साकिन सुधौरा, कालेखाँ और सैयद बेग गुढ गोबिन्द सिंह की तरफ से लड़े थे इनके ्रिसीय और बहुत से ऐसे लोग भी ये जिन्होंने सिख धर्म कुबुख कर लिया था. इनमें सिर्फ बोड़े से नाम यहाँ दिये जा सकते हैं. मसलम्-

دوبارہ جاری کرنے کا موقعہ مل گیا تھا ۔ سکھ گرودوارے متھ دھاری مہلتوں کے ہم مہلتوں کے ہاتھ میں بڑ گئے اور سنکتوں سے جب پہلے کے ہم مخصصات انہیں مہلتوں کے هاتھ میں آگئی جو گردواروں پر قبضہ رکھتے تھے ،

ایک بات اور بھی تھی جس سے سکھ دھوم کے سچھٹی کے مانے ہوھئے میں خال پڑ گیا ، سکھوں کی ناریخے کے آخری وسائے میں سکھ دھوم میں داخلہ صرف ایک موقعہ کے لئے وہ گیا ، چونکہ اِس چہلو پر عام طور سے وچار نہھں کیا گیا ہے اِس لئے میں اِس کو کچھ تفصول کے ساتھ بیان کرنا چاعتا ہوں ،

سکھ دھوم سب جاتوں اور فرقوں کے نئے تھا اور شروع میں عفدو أور مسلمان دونوں میں سے سی سکھ لئے جاتے تھے۔ گرونانک نے ایشیائی کو چک ایران اور درسرے ملکوں میں جہاں جہاں وہ گئے تھے بہت سے مرید بنائے تھے . سیواداس نے اپنے گرفتھ "جاء ساكهي" (1628 عيسري) مين بهت سي ايسي جكهوں کا ذکر کیا ہے جیسے ''پٹھائوں کی کری'' جہاں بہت سے مسلماتوں لے سکھ دھرم اپلایا تھا ۔ سکھرں کی اِس فھرست سے جو بھائی گروداس (1559) نے آئنے گیارھویں گیت میں دی ہے اِس میں اور ناموں کے ساتھ ایسے قام بھی لیتے ھیں جیسے مردأنتا جو گرو نانک کے ساتھ رهنا تھا دوات خال بٹھان جو بعد میں ایک مکه سنت عوا هے اور گوجر اوعار جو گرو انگد کا چيد تها . أس في ايني الون مون ساه دهوم كي لوكون كو تعليم دی تھی . اِن کے علاوہ همزہ اور میاں جمال برابر گروگورند کی خدمت میں حافر رہاے تھے، تاریخ میں مرکو مسلمانوں کے بہت سے قام ملتے هيں حو سکه دعرم کو سراهتے تھے؛ مثلاً رائے بولا رتل ولدی کا مسلمان سردار جو گرونانک کے ماں باپ کی نسوت بھی گرونا ک کی زیادہ قدر کرنا تھا ، الله یار اور حسینی شاء جنهوں لے گرو امرداس سے روحانی سبق لیا تھا ، تربیب قریب سکھ ھی سمع ہے جا سکتے هيں . انبر کی رواداری پر اور ستی کے رواج کے باد کرنے پر بھی گرر امر داس کا اثر تھا ۔ سائیں میاں مہر کا گرو أرجن ديو سے اِس قدر گهرا عملق تها كه گرو جي اموتسو كے گرددوارے کی نفو رکھنے کے لئے سائیں میل میر کو لائے تھے. گرودرارے کی نیو سائیں میاں میرکے ھاتھوں کی رکھی ھوئی ھے۔ دارا شکوه کا سکوں کی طرف اتنا زیادہ جھکاؤ تھا کہ اِسی وجه سے اورنگ زیب نے اُن کے ساتھ زیادتیاں کی تھیں . سید بدہو شاهٔ سائن سودهورا کالے خال اور سید بیگ گرو گرو نیسته کی طرف سے اوے تھ . ان کے سوائے اور بہت سے ایسے لوگ بھی تھ جاہوں لے سکم دھرم قبول کو لیا تھا۔ اِن میں سے صرف تھوڑے عه نام يهال ديئه جا سكنه هيل . مثلاً

तिख मजहब का दरमियानी रास्ता

प्राक्रीसर तेजासिंह एम० ए०

सिख धर्म उस वक्तत तक सिफी एक मजहबी धान्दोलन था जब तक कि दुनियाबी ताकत की हिवस का उस पर असर न हुआ था. शुरू के सिख गुरुओं ने जालिम हाकिमों से लड़ाई जरूर लड़ी थी मगर वह किसी लोभ में न आये थे. इटे सिख गुरु ने जितनी लड़ाइयाँ लड़ीं उन सब में फ़तह पाई और दसवें गुरु साहब ने भी ज्यादातर लड़ाइयों में फतह पाई थी. मगर उन लड़ाइयों में जीतने पर भी उन्होंने एफ इंच जमीन पर भी क़ब्जा नहीं किया. जो कुछ जमीन उनके पास थी उसको उन्होंने या तो नक्कद रुपया देकर खरीदा था या उनके चेलों ने उन्हें नजर दी थी.

सिख गुरुषों के पास जब ऐशो घाराम के सारे सामान मीजद थे तब भी उन्होंने अपना रहन सहन सादा ही बनाये रखा. जिन रागियों की साखियाँ ग्रंथ साहब में जमा की गई हैं उन्होंने हमेशा श्रीसत दर्जें के रहन सहन के तरीक़े को ही सराहा है. इसे वे राजयोग कहा करते थे-ऐसा योग जो त्याग और भोग दोनों के बीच का रास्ता है. यह कहना टीक नहीं है कि पाँचवें या छटे सिख गुरु के जमाने से सिख धर्म का मेत्रार गिर गया और गुरुओं को सच्वा बादशाह और धनकी गद्दी को तख्त और सिखों की संगत को दरबार कहा जाने लगा. लेकिन शुरू गुरुओं और खासकर उन रागियों की तहरीरों से जिनकी साखियाँ दूसरे गुरु के वक्त से ही लिखी जाने लगी थीं यह साफ मालूम होता है कि इस तरह के लक्ष्य बाद में नहीं चले बल्कि शुरू से ही काम में आते रहे हैं. पशिया में फक़ीर महात्माओं का दर्जा बादराहों से बढ़ा माना जाता रहा है और उनकी शान में इसी तरह की पद्वियाँ काम में लाई जाती रही हैं.

सिख धर्म में तब्दीली बाद में जरूर हुई लेकिन यह सब्दीली उस बक्ष्त से ही नजर आती हैं जब आखिरी गुरु साहब पंजाब से चले गये थे और दिनखन में जाकर उन्होंने रारीर त्याग दिया था. गुरु के जिन चुने हुए भक्तो ने गुरु गोविन्दसिंह से सबक पाया था और जिनकी मौजूदगी से आम सिक्खों में सच्चाई की भावना क्रायम रह सकती थी उनको गुरु के रारीर त्यागने के बाद कमजोरों की हिफाजल करने के लिये अपनी जिन्दगी बचाना और जालिमों से लक्ष्मा पढ़ गया और उन्हें आम लोगों से दूर चला जाना पढ़ा. उस बक्ष्त आम सिक्खों को या तो अपनी क्रिस्मत पर मरोसा करना पढ़ा या उन पुराने पेरी नर गुरु मों से सबक्र केना पढ़ा जिन को अब कपया लेकर अपने पुराने पेरो को

سکھ مذھب کا درمیانی راسته

پروفیسر نینجا ساعی ایم. اے.

سکھ دھرم اُس رقت تک صرف ایک مذھبی آندولی تھا جب نک که دنیاوی طاقت کی حرس کا اُس پر اُتو نہ ھوا بھا ۔ شروع کے سکھ گرؤں نے ظام حاکدوں سے لوائی ضرور لوی تھی مگر وہ کسی لوبھہ میں نہ آئے تھے ، چقے سکھ گرو نے چتنی لوائیاں لویں اُن سب میں فتح پائی اُور دسویں گرو صاحب نے بھی زیادہ تو لوائیوں میں فتح پائی تھی ، مگر اُن لوائیوں میں جیتنے پر بھی آنھوں نے ایک انہے زمین پر بھی قبضہ نہیں کیا ، جب نجھ زمین اُن کے پاس تھی اُس کو اُنھیں نے یا تو نقد رویعہ دے کر خریدا تھا یا اُن کے چیلوں نے اُنھیں نذر دی تھی ۔

سکھ گرؤں کے پاس جب سب عیش و آرام کے سارے سامان موجود تھے تب بھی آنھوں نے اپنا رھن۔ سہن سادہ ھی بنائے رکھا ۔ جن راکھوں کی سائھباں گرنتھ صاحب میں جمع کی گئیں ھیں آنھوں نے ھمیشہ اوسط درجے کے رھن سہن کے طربقے کو ھی سراسا ہے ۔ اس وے راج یوگ کہا کرتے تھے۔ ایسا یوگ جو تیاگ اور بھوگ دوتوں کے بیچ کا راستہ ہے ، یہ کہنا تھیک نہیں ہے کہ پانچویں یا چھتے سکھ گرو کے زمانے سے سکھ دھرم کا میعار گر گیا اور گرؤں کو سچا بادشاہ اور آن کی گدی کو تخت اور سکھوں کی سلکت کو دربار کہا جانے لگا ۔ لیکن شروع گرؤں اور خاص کر آن راگھوں کی تحدیدوں سے جن کی سائھیاں دوسرے گرو کے وقت سے ھی کی تحدیدوں سے جن کی سائھیاں دوسرے گرو کے وقت سے ھی لیمی جانے لگی تھیں یہ صاف معلوم ھوتا کہ ہے!س طرح کے لفظ بعد میں نہیں چلے بلکہ شروع سے ھی کام میں آتے رہے ھیں ، ایشیا میں فقیر مہاتیاؤں کا دوجہ بادشاہوں سے بڑا مانا جاتا ایشیا میں فقیر مہاتیاؤں کا دوجہ بادشاہوں سے بڑا مانا جاتا ۔ رہا ہے اور آن کی شان میں اِسی طرح کی پدویاں کام میں لئی جاتی رھی ھیں ،

سکھ دھرم میں تبدیلی بعد میں ضرور ھوئی لیکن یہ تبدیلی اس وقت سمعی نظر آتی ھیں جب آخری گرو صاحب پلنجاب سے چلےگئے تھے اور دکھن میں جاکر آنھوں نے شریر تھاگ دیا تھا۔ گرو کے جن چنے عولے بھکتوں نے گرو کورند سکھ سے سبق پایا آور تھا جن کی موجودگی سے عام سکھوں میں سخچائی کی بھاؤنا، گور تھا جن کمزوروں کی حفاظت کرنے کے لئے آپئی زندگی بحجانا اور ظالموں سے لونا پرکیا حفاظت کرنے کے لئے آپئی زندگی بحجانا اور ظالموں سے لونا پرکیا اور آنھیں عام اوگوں سے دور چلا جانا پڑا اور ظالموں سے لونا پرکیا کو یا تو آپئی قسمت پر بھروستہ کونا پڑا یا اُن پرانے پیشمور کو یا تو آپئی قسمت پر بھروستہ کونا ہڑا یا اُن پرانے پیشمور

143 30

मुसलमानों की दोस्ताना मजहबी बहस बराबर बलती रहती थी.

کی درستا نه مذهبی بحث برابر چلتی . رهتی

Islamic Culture Vol. 1, No. 2 pp. 190-191. 1.

.फुनूह अल-बलदान (लेडेन،, सफा 440 مترح البلدان (اليدين) منحة Ibn Batuta (H. A. R. Gibb) p. 295 2.

Burton's Pilgrimage to Al-Madinah, Vol. 11, p. 174.

AS, Soc. Vols, iii and iv

Balazuri, p. 489.

7. The Caliphate its Rise, Decline and Fall, by Sir W. Muir, pp. 354-355.

Islamic Culture, Vol. I, No. 2. p. 205 8.

Ajaib al Hind (ed. P. A. Von Der Lith), p. 155. 9.

10. Abid. p. 481.

11. Voyage du Merchant Sulayman (Paris), p. 119.

12. Ibn Haugal (de Goeje)' p. 232.

Ahsan ut Taqasim, p. 482. 18.

14. Voyage du Merchant Sulayman (Paris), p. 119.

Muruj-uz-Zahab (Paris), Vol I. pp. 253-54. 15.

16. Ajaib al-Hind, pp. 2-3

Voyage du Merchand Arb (Frrand), p. 139. 17.

18. Ajaib al-Hind, p. 147.

19. Fihrist pp. 345-349.

700 PAGES. **\$2 ILLUSTRATIONS** 2 COLOURED MAPS "CHINA TODAY"

PRICE

BY PANDIT SUNDARLAL

Rs. 7. 8. 0

A vivid narration of the glorious and wounderful achievements of New China. .. A ricture of China which is both convincing and authentic...the best book that has come out so far on New China in the English language ...the most objective in approach and comprehensive in treatment. -National Herald, Lucknow.

Highly informative...throws vivid light on conditions obtaining in that country ... a book which deserves to be widely known -Leader, Allahabad.

Encyclopaedic...characterized by soute observation of detail as well as by. .instinctive grasp of the fundamental perspective... To read it is veritably like accompanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New China. -Blitz, Bombay

A mine of information which gives a picture of China as nothing else dose...the best guide to New. China... Those who would like to understand what is happeing in New China can do not better than to study it. -Bharat Jyoti, Bombay

The wealth of information it gives on China new and old...makes fascinating reading...is comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs. -Indian Express, Madra.

China Today is an eloquent tribute to his (Pandit Sundarlal's) shrewd understanding of men and matter ... brings to the lighty mighty endeavour of the Chinese People to rebuild their great nation on firm new foundations -Vigil, Delhi for a temorrow which is theirs.

بعجارى ته أور الكلت تعداد مين عرب سياح عالم تاريعيدال ارر جمرانیه داں بھارت میں آ آ کر گیان کے اِس امحدود خزائے سے دان حاصل کرنے لکے . هاروں الرشيد کے وويو بہواہرمکی نے ایک عالم کو اِس بات کے لئے مقرر کیا که وہ هندستان موس رائع ، مخة ف مذهبوس أورهادستان كي جوى برقيوس کے بارے میں اپنی تنصیلی رپرٹ پیش کرے، ابن-ان-تظیم كا كينا هـ : كم أس لے بتاريخ 349 متجرى كى الكندى كے هاته کی لکھی موئی اِس رپورٹ کی ایک نتل دیکھی ہے ۔ اہن۔ان نظیم نے مطابق اِس رپورے میں بلبھ رائے کی راجدھائی مہانگر کے دیو مندروں اور ملتان اور بھرت کے مختف مذہبوں اور مذهبی نتابی کا بھی بیان تھا ۔ ابن-ان-نظیم نے پوری کتاب کا خاصه بھی دیا ہے . جن مذهبی كتابوں كا اِس ميں بيان ہے أن میں سے کچے یہ مہر —مہاکالیا اُ آدت بھکتیا خدر بھکتیا وکرانتہا (جس کے پیروکار زنجیر پہنتے تھے)' گنکا یاتریا' رأج پتریا اور ایک اور فرقه جس کے حامی امیر بال رکیتے تھے شراب سے پرهیو كرتے تھے أور عورتوں كى صحبت سے بحیتے تھے . " 19

ھندستان کے مغربی ساحل پر جکہ جکہ ھندو مسلمانوں کی جس طرح کی ملی جلی آبادیاں اُس وقت بس گئیں تھیں اور جس طرح دونوں ایک دوسرے کے مذہب کی کہائی اور مذہبی کہرایوں میں داخلہ پانے کی کوشش کر رہے تھے' اُن کا یہ شوق آبس کے گہرے تماق اور میل جول سے ھی پوری ھو سکتی تھی ،

اس رقت کے ایک راجہ کے بابت اکہا ہے کہ اُس نے خلیظ هارور الرشيد كو خط ٤١ كر كسى أيس مسلم عالم كو بهيجل كي درخواست کی جو راجه کے ملدو یندتوں سے مذهبی بعدث کر سكه . اسى وافعه كا ايك دوسرا بيان يه ف كه راجه لے مسلمان عالم كو إس لله باليا تاكه وة أبك بهت أونج بوده عاام سه مناهبي بحث مباحثه كرسكه . يه صحوم بهي هو عكا هي . بہر حال وہ مسلم عالم بھارت آیا' لیکن آس بودہ عالم کے ساملے أس كي ايك ثه چاي . كئي دن تك بحث هوني رهي . مسلم عالم قرآن اور حديث كو آخري سلدر كهه كر پيش كونا تها جب که بوده عالم قرآن اور حدیث دونوں سے انکار کرنا تھا . اِس کے بعد بعدث خدا کے وجود پر شروع ہو گئی اور بودھ الجواب مولے لگا اور أس عار كى شرم سے بحول كے لله كها هين ايک دن أس مسلمان عالم كو زهر دے در مروا قالا ، ليكن إس أنسهسلاك رانع سے يه مذهبي بعدث ۔ وکی تبییں اور اُس زمانے کے واتعات میں اِن کی ایسی مثانی ملتی میں جن سے ظاهر هوتاف که هندو

पुजारी थे और अनगिनत तादाव में अरब सैयाह, आलिम, तारीखवाँ और जुराराफियावाँ भारत में आ आकर ज्ञान के इस लामहद्द ख्वाने से दान हासिल करने लगे. हाह - बर-रशीद के बजीर यहवा बरमकी ने एक बालिम को इस बात के लिये मुक्तरेर किया कि वह हिन्दुस्तानमें राइज मुखतलिक मजहवों और हिन्दुस्तान की जड़ी बृटियों के बारे में अपनी तफसीली रिपोर्ट पेश करे. इब्न-अन-नजीम का कहना है कि उसने बतारीख 349 हिजरी की अलकिन्दी के हाथ की लिखी हुई इस रिपोर्ट की एक नक्कल देखी है. इटन-अन-नजीम के मुताबिक इस रिपोर्ट में बल्लभराय की राजधानी महानगर के देव मन्दरों श्रीर मुलतान श्रीर भारत के मुखतिबक मजहबों श्रीर मजहबी कितायों का भी बयान था. इब्न-श्रन-नजीम ने पूरी किताब का ख़ुलासा भी दिया है. जिन मजहबी किताबों का इनमें बयान है उनमें से कुछ ये हैं-महाकालिया, आदित्यभक्तिथा, चेन्द्रभक्तिया, वक्रान्तिया (जिसके पैरोकार जंजीर पहनते थे), गङ्गायात्रिया, राज-पुत्रिया और एक और फिरक़ा जिसके हामी लम्बे बाल रखते थे, शराब से परहेज करते थे श्रीर श्रीरतों की सोहबत से बचते थे."19

हिन्दुस्तान के मगरिबी साहिल पर जगह जगह हिन्दू मुसलमानों की जिस तरह की मिली जुली खाबादियाँ उस वक्त बस गई थीं खीर जिस तरह दोनों एक दूसरे के मजहब की कहानी और मजहबी गहराइयों में दाखिला पाने की कोशिश कर रहे थे. उनका यह शीक आपस के गहरे ताल्लुक और मेल जोल से ही पूरी हो सकती थी.

चस वक्तके एक राजा की बाबत लिखा है कि उसने खलीका हाहूँ रशीद को छत लिखकर किसी ऐसे मुसलिम अालिम को भेजने की दरस्तास्त की जो राजा के हिन्दू पहितों से मजहबी बहस कर सके. इसी वाक्रिये का एक दूसरा बयान वह है कि गजा ने मुसलमान आलिम को इसलिये बुलाया ताकि वह एक बहुत ऊँचे बौद्ध आलिम से मजहवी बहस मुबाहिसा कर सके. यह सही भी दो सकता है. बहर हाल वह मसलिम आलिम भारत आया, लेकिन उस बौद्ध चालिम के सामने उसकी एक न चली. कई दिन तक बहस होती रही. मुसलिम आलिम करान और हदीस को आखिरी सनद कहकर पेश करता था जबकि बौद्ध आलिम .करान और इदीस दोनों से इनकार करता था. इसके बाद बहस खुदा के वजूद पर शुरू हो गई और धीद लाजवाब होने लगा और उसने हार की शर्म से बचने के लिये, कहते हैं, एक दिन उस मुसलमान आलिम को जहर देकर मरवा डाला. लेकिन इस अफसोसनाक बाक्रये से यह मजहबी बहस हकी नहीं और उस जमाने के बाक्रेयात में इनकी ऐसी मिसालें मिलती हैं जिनसे जाहिर होता है कि हिन्द

مليو مس*لدالون كا له*ديين...

भरमान भी बढ़ा. मिस्राल के तौर पर मसूदी लिसता है— "सम्भात का राजा मुसलमानों भीर दूसरे मजहबी वैरोकारों के साथ, जो उसके दरबार में आते थे, मजहबी ख्यालात का तबादला करता था." 15

इसी तरह से बुजुर्ग बिन शहरयार लिखता है कि अलीर के राजा महरग ने जिसकी हकूमत उँचे और नीचे के कारमीर के बीच में थी, मनसूरा के राजा को लिखा कि वह किसी ऐसे आदमी को भेजे जो हिन्दी जबान में इसलाम के उसलों को उसे समका सके. मनसूरा के शाह ने अब्दुल्ला नामी एक क़ाबिल शख्त को, जो तीन बरस तक मनसूरा में रह चुका था, अलीर भंजा. उसने क़ुरान का हिन्दी में तर्जु मा करके रोज राजा को सुनाना शुरू किया. राजा पर उसका गहरा असर पड़ा 16 इस तरह के असर पड़ने उस वक्त क़ुद्रती थे; इसके बाद मुसलिम मुल्कों में हिन्दुओं की आमर रश्त शुरू हुई और दोनों के बीच के समाजी तात्लुक़ात और ज्यादा गहरे और दिलचस्प होते गये. सुलेमान लिखता है—

इराक के बन्दरगाह सैराफ में बहुत से हिन्दू रहते हैं और जब कोई अरब सौदागर उनकी दावत करता है तो उनकी तादाद सौ तक पहुँच जाती है. उनमें से हर शख्स का खाना अलग अलग रकाबियों में परसा जाता है क्योंकि एक ही रकाबी में कोई एक दूसरे के साथ नहीं खाता."17 इन्हीं हिन्दुओं के मुताल्लिक बुजुर्ग बिन शहरयार कहता है—

"ये लोग बोल चाल की अरबी इस सफ़ाई, से और जल्द जल्द बोलते हैं कि इमारे आलिम फ़ाजिल मौलबी दंग और हैरान रह जाते हैं. इन लोगों में आम तौर पर सिंधी, गुजराती और मुलवानी हैं जो, अरसए क़दीम से हमारे मुलकों के साथ तिजारत करते आ रहे हैं."18

इस तिजारती रिश्ते से हिन्दुस्तान मुसलिम मुल्कों के गहरे मेल जोज में आया और इसलामी दुनिया पर अपने ज्ञान, साइन्स, रहानी ताल्लुकात और मजहब का असर हाल पाया. अरब और ईरानी सीदागर हिन्दुल्तान से तिजारती माल के साथ साथ सनत और साइस के खेंत्र भी ले जाते थे.

दूसरी तरफ अन्वासी जलीकाओं के द्रवार की इनसानी रहम दिली और मजहवी वरदारत से मुतास्सिर हाकर हिन्दू पिटत बड़ी तादाद में बरादाद में जमा होने लगे. खलीका के द्रवार में नजूम और वैद्यक के सब से आला ओह्दों पर हिन्दू पंडित ही सरकराज थे. मुसद्धमानों के दिलों में हिन्दुस्तान के ज्ञान की भेद भरी गहराई की थाह जोने की, ज्ञानी, ध्यानी और सिरजनशील भारत को जानने का गहरा शीक पैदा हुआ. अरब के आलिम ज्ञान के सच्चे أرمان بھی ہوما مثال كے طور پر مسودى لكھتا هـــــ وتهمديات كا راجة مسلمانوں اور دوسرے مذهبى پهروكاروں كے ساتھ جو أس كے دربار ميں آتے تھے مذهبى خيالات كا تبادله كرنا تھا ۔ 15

اسی طرح سے بزرگ بن شہریار انهتا ہے کہ الور کے راجہ مہروگ نے جسائی حکومت اُونچے اور نینچے کے کشمیر کے بیچ میں تھی' ملصورا کے راجہ کو لنها کہ وہ کیسی ایسے آدمی کو معلمجے جو ہندی زبان میں اِسلم کے اصوابل کو سنجھا سکے ملصورا کے بادشاہ نے عبداللہ نامی ایک قابل شخص کو' جو ترین برس تک ماصورا میں رہ چکا تیا' الور بہنجا ، اُس نے قرآن کا ہندی میں ترجمہ کو کے روز راجہ کو سنانا شروع کیا راجہ پر اُس کا گہرا اثر بڑا ، 10 اِس طرح کے اثر پڑنے اُس راجہ پر اُس کا گہرا اثر بڑا ، 10 اِس طرح کے اثر پڑنے اُس وقت قدرتی تھے ، اِس کے بعد مسلم ملکون میں ہندوں کی امرات شروع ہوئی اور دونوں کے بیچ کے سماجی تعلقات اور وادہ گورے اور دانچسپ ہوتے کے ، سایمان لکھتا ہے۔

عراق کے بندرگاہ سیراف میں بہت سے علدو رہتے ہیں اور جب کوئی عرب سوداگر اُن کی دعوت کرتا ہے تو اُن کی تعداد سو تک پہنچ جاتی ہے۔ اُن میں سے ہرشخص کا کہانا الگ الگ رکاییوں میں پرسا جاتا ہے کیونکہ ایک ہی رکایی میں کوئی ایک دوسرے کے ساتھ نہیں کہاتا ۔" 17 اِنھیں ہفدؤں کے مطابق بزرگ بن شہریار کہتا ہے۔۔۔

"یہ لوگ ہول چال کی عربی اِس صفائی سے اور جلد جلد ہولئے ھیں کہ ھمارے عالم فاضل مواجی دنگ اور حفران رہ جاتے ھیں ، اِن لوگوں میں عام طور ہر سندھی' گنجرائی اور ملکانی ھیں جو عرصلہ قدیم سے عمارے ملکوں کے ساتھ تنجارت کرتے آ رہے ھیں ۔'' 18

اِس تجارتی رشتے سے هندستان مسلم ملکوں کےگھرے میل جول میں آیا اور اسلامی دنیا پر اپنے گیان' سائنس' روحانی تعلقات اور مذهب کا اثر ذال یا یا . عرب اور ایرانی سوداگر هندستان سے تجارتی مال کے سانهسانه سلمت اور سائنس کےگھورے بھی لے جاتے تھے .

دوسری طرف عباسی خلیفاؤں کے دربار کی انسانی رحمدالی اور مذہبی برداشت سے متاثر ہو کو ہندو پلات بڑی تعداد میں بنداد میں جمع ہوئے لگے خلیفہ کے دربار میں نجوم اور ویدک کے سب سے اعلیٰ عہدوں پو ہندو پندت ہی سرفراؤ تھے اور سب کے دلوں میں ہندستان کے گیاں کی بھید بھری گہرائی کی تھا لیا کی گیائی کے دیا ہور سرجی شفل بھارت کو جانئے کا کیوا شیق بیدا ہوا ۔ عرب کے عالم گیاں کے سنچے جانئے کا کیوا شیق بیدا ہوا ۔ عرب کے عالم گیاں کے سنچے

1.3

उसने इसलाम के बारे में अपनी वाक्रिक्यत लोगों को वताई. उसने बताया कि मुसलमानों का व्यलीका निहायन सावी जिन्दगी बसर करता है और राहर उसे छू तक नहीं गया. शहरवार लिखता है—''यही वजह है कि बौद्ध मुसलमानों से इतनी मोहन्यत करते हैं और उनके साथ इतनी हमद्वी रखते हैं." (10) मुलेमान सीदागर लिखता है—''राजा बस्हर की तरह राजा गुष्प भी अरबों कीजा निब दोस्ताना बर्तान रखता है." 11

अस्ताखरी 951 ईसवी में हिन्दुस्तान आया था. उसके जुराराफिये की किताब में हिन्दुस्तान का बयान है. अस्ताखरी ने सबसे पहले हिन्द्रस्तान के एक सूबे सिन्ध का नक्षशा तैयार किया. अस्ताखरी के वक्त तक खास-खास शहरों में हिन्द-मुसलिम तिजारत के मरकज क्रायम हो चुके थे. एक मुसलिम मुसन्निक के मुताबिक इन भरकजों में हिन्दू और मुसलमानों के समाजी (रश्ते के नतीजे की शकल में मिले जले रस्म रिवाज और बर्ताव बनते जा रहे थे. इबन हौकल लिखता है-"मुलतान में हिन्दू और मुसलमान एक ही सी पोशाक पहनते हैं और एक ही कैशन के बाल सँवारते हैं. मनसरा और मुलतान और आस गस के शहरों में दोनों यकसाँ अरबी और सिन्धी जवान बोलते हैं." 12 बस्सहरी लिखता है कि-"सिंध में श्ररबी, फारसी श्रीर सिन्धी तीनों यकसाँ समकी जाती हैं." 13 अस्ताखरी और इब्न होकल लिखते हैं कि हिन्दू इलाकों में मुसलमान जगह जगह बस गये थे और उन्होंने इबादत के लिये मसजिदें तामीर कर ली थीं. सलेमान सौदागर सिंहल के बारे में लिखता है कि "सिंहल में मुखतिलिक मजहबां के पैरोकार बसते हैं और सिंहल का राजा इन मुखतलिक मजहबी पैरोकारों को अपने अपने मजहब को फैलाने की इजाजत देता है."14

यह जाहिर है कि तिजारत के मरकज तहजीबी रहा वहता के भी मरकज थे. इनमें जास शहर खुजदार महफूजाह, मन्स्राह और जन्दीर बरीरा थे. जो मुसलमान इन शहरों में बस गये थे वे कीम के अरब थे. वे भारतीयों में इस दरजे मिल जुल गये थे कि कुछ पीढ़ियों बाद उनका पहचाना जाना भी नामुमकिन हो गया.

इनके तौर तरीके, ख्यालात विक्रत हिन्दुओं जैसे हो गये. इन लोगों की एक अलग ही जमात बन गई जो तमाम जनूबी भारत में फैल गई. इनमें से एक जमात अली को शिव का अवतार सममकर पूजा करती थी.

विजारती रिश्ते के साथ ज्यों ज्यों तह जीवी लेन देन बढ़ा त्यों त्यों भारतीयों और अरवों में एक दूसरे को जानने, समफने और एक दूसरे से मोहब्बत करने और एक दूसरे के मजहब की प्यादा से ज्यादा बाक्न ज़ियत हासिल करने का آس نے اسلم کے بارہ میں اپنی واقفیت لوگوں کو بتائی۔ اس فے بتانیا کہ مسلمانوں کا خلیفہ نہایت سانی ولدگی بسر کرتا ہے اور فرور آت چھو تک نہیں گیا، شہر یار اکہتا ہے۔"یہی وجہ ہے کہ بودھ مسلمانوں سے اتای متعبت کرتے میں اور اُن کے ساتھ اِتلی معددوں رکھتے میں ۔" 10 سلیمان سوداگر اکھتا ہے۔" راجہ بلہر کی طرح راجہ گجر بھی عربوں کی جانب دوستانہ برتا کی رکھتا ہے۔" راجہ رکھتا ہے۔" داہد

أستاخري 951 عيسوي مين هندستان أيا تها . أس كے جغرافیہ کی کتاب میں هندستان کا بیان هے . استاخری لے سب سے پہلے هندستان کے ایک صوبے سندھ کا نقشہ تیار کیا ، استاخری کے وقت تک خاص خاص شہوں میں مدرو مسلم تجارت کے مرکز قائم هو چکےتھے . ایک مسلم مصنف کے مطابق اُن سرکورں میں هندو اور مسلمانیں کے سماجی رشتے کے نتیجے کی شکل میں ملے جلے رسم رواج اور برتاؤ بنتے جارھے تھے . اس ھوکل لتهتا هـــ"ملتان مين هادر اور مسلمان ايك هي سي پوشاك پہنتے میں اور ایک می نیشن کے بال سنوارتے میں ، منصورہ اور ملتان اور آس یاس کے شہروں میں دونیں یکساں عربی أور سندهى زبان بولته هين ." 12 بسيرى لتهتا هے كه_"ساده میں عربی اور سلاھی تیاوں یکساں سمجھی جاتی هيس " 13 أستاخرى أور أبن هوكل لتهتم هيس كه مندر عالنون میں مسلمان جکہ جکہ ہس گئے تھے اور اُنھوں نے عبادت کے لئے مسجدیں تعمیر کر لی تھیں ، سلیمان سرداگر سنگھل کے بارے میں لکھٹا ہے که ! استهکل میں منعناف مذربوں کے بیروکار بساتے هیں اور سنهال کا راجه اِن مختلف مذهبی پدروکاروں کو اپنے اپنے مذعب كو بهوائے كى أجازت دينا هے ." 14

یہ ظاہر ہے کہ تجارت کے مرکز تہذیبی ردوبدل کے بھی مرکز تھے۔ اِس میں خاص شہر خوزدار ماحفوزا منصورا اور جندر وغیرہ تھے ، جو مسلمان اِن شہروں میں بس گئہ تھے وے قوم کے عرب تھے ، وے بہارتیوں میں اِس درجے مل جل گئے تھے کہ کچھ بیزھیوں بعد آن کا پہنچانا جاتا بھی نامیکی ھو گیا ،

ان کے طور طریقے' خیالات بالکل ھندروں جیسے ھو گئے . اِن لوگوں کی ایک الک ھی جماعت بن گئی جو تمام جنوبی بھارت میں پھیل گئی ، اِن میں سے ایک جماعت علی کو شو کا اُرتار سمجھکر پوچا کرتی تھی .

التجارتی رشالے کے ساتھ جنہیں جنہیں تہذیبی لھی دنین بودہ نوس ایک درسوے کو بودہ نوس ایک درسوے کے جانبہ اور ایک درسوے سے محبت کرتے اور ایک درسوے سے محبت کرتے اور ایک درسوے کے مذیب کی زیادہ واتفیت حاصل کرتے کا

मोहब्बत का .क्याल .कायम हो गया जिसमें खलीफा तक ने सिन्ध में मन्दिरों को गिरने या इसखाम को फैलाने की इजायत नहीं दी.

अंत्रेज तारीखदाँ सर विक्रियम म्यूर अकसोस के साथ लिखता है:--

"यह बात याद रखनीं चाहिये कि अरब .फातेह जो रबय्या मातेहत .कीमों के साथ बरतते थे वह हिन्दुस्तान में जाकर बिलकुल उलट गया. मन्दिरों को ज्यों का त्यों मह.फूज छोड़ दिया गया और बुत-परस्ती की कोई मनाही नहीं की गई. जैसा कि वेल ने लिखा है 'हिन्दुस्तान की लड़ाई मजहबी जंग या जेहाद नहीं रह गई क्योंकि वहाँ मजहबी तब्दीली का सवाल ही नहीं उठाया गया. सिन्ध में अल्लाह की परिस्तिश के साथ साथ बुतों की परिस्तिश की भी आजादी हो गई.……और इस तरह बावजूद इसलामी हकूमत के भारत एक बुत-परस्त मुक्क बना रह गया." 7

जर्मन आलिम बान केमर लिखता है -

सिन्ध में श्रवुल .कासिम की हकूमत में और उसके पाद भी बाझ एों की इल्जत और शान ज्यों की त्यों .कायम रही. जमीन की मालगुजारी भी 3 .फीसदी ज्यों की त्यों जारी रखी गई. हिन्दु श्रों को खुली इजाजत थी कि ने मन माने मन्दिर बनवायें, मुसलमानों के साथ तिजारत करें श्रीर बेखीफ होकर अपनी बढ़ती के लिये जो कुछ मुनासिष सममें करें." 8

इस पर आसानी से ऐतबार किया जा सकता है कि इन हालतों के अन्दर दोनों गिरोह एक दूसरे की तरफ बहुत दरजे तक नरम हो गये होंगे और दोनों में तहजीबी रिश्ता .कायम हुआ होगा. लेकिन सिन्ध ही अकेला ऐसा सूबा नहीं था जहाँ दोनों गिरोहों के बीच दोस्ताना समाजी बर्ताव चल रहा था. भारत के तमाम मगरिबी साहिल के मुसलमान हिन्दुओं के साथ मिल जुल कर मोहब्बत के साथ रह रहे थे. मुसलिम सन्याहों के मुताबिक मुसलमानों भौर भारती बौद्धों में बेहद भाईचारा हो गयाथा. बुजुरी बिन शहरवार नवीं सदी के मारत के पिछ भी किनारे के बारे में अपने खास तजरबों के बल पर लिखता है -"बिकुर या भिक्खुओं का गिरोह सिंहल का रहने वाला है. इन्हें मुसलमानों से मोहब्बत श्रीर मुसलमानों की जानिव ये बेहद नरम हैं." 9 इन भिक्खुओं ने इसलाम के बारे में बाक्षियत हासिल करने के लिये अपना एक नुमाइन्दा भारव भेजा यह तुमाइन्दा खलीका उमर के वक्त में अरव बहुँचा. बापस लौटते हुए मकरान में उसका इन्तकाल हो गया. क्षेकिन उसका एक साथी सही सलामत सिंहल पहुँचा और वहाँ محدیث کا خیال قائم هو گها چس میں خلیات تک فی منده میں مندررں کو گرائے یا اسلم کو پیدائے کی آخارت فہس دین ،

أنكروز تاريح دال سروليم ميور أنسوس كے ساتھ لكهما هـ:--

"یه بات یاد رکهنی چاهئه که عرب ناتم جو رویه مانحت قوموں کے ساتھ برتتے تھے وہ هندستان میں جاکر بالکل الت گیا ۔ مندروں کو جمہر کا تیوں محفوظ چھرز دیا گیا اور بت پرستی کی گئی ، جیسا که ول نے لتھا ہے 'مندستان کی لوائی مذہبی جنگ یا جہاد نہیں رہ گئی کیونکه وهاں مذہبی تبدیلی کا سوال هی نہیں اُٹھایا گیا ، سندھ میں الله کی پرستھ کی بھی آزادی هوکئی اور اِس طرح باو چود اسلامی حکومت کے بھارت ایک بت پرست ملک بنا رہ گیا ." 7

جرمن عالم وأن كريم لكهمًا هــــ

سندہ میں ابولقاسم کی حکومت میں اور آس کے بعد بھی بوھمئوں کی عزت اور شان جیوں کی تیوں قائم رھی ، زمین کی مالکواری بھی کا فیصدی جیوں کی قبوں جاری رکھی گئی ، ھندوں کو کہلی اجارت ، تھی که وجہ من مالے مندر باوائیں مسلمائوں کے سانھ تجارت کریں اور بےخرف ھو کر آپائی بوھتی کی لئے جو کچھ مناسب سمجھیں کریں ."8

. إس يه آسائي سے اعتبار كيا جا سكتا هے كه إن حالتوں كے اندر دونیں گروہ آیک دوسرے کی طرف بہت درجے تک قرم هو گئے هوں کے اور دونوں میں تهذیبی رشته قائم هوا هوگا . ليكن سده هي اكيلا ايسا صوبة نهين تها جهان دونون گروهون کے بیچے درستانہ سماجی برتاؤ چل رہا تھا۔ بھارت کے تمام مغربی ماحل کے مسلمان ھادؤں کے ساتھ مل جل کر محبت کے ساتھ را راقع تھے . مسلم سھاحوں کے مطابق مسلمانوں أور بهارتی بردهوں میں بےدد بهائی چارا هر کیا تھا ، بزرگ بن شہر یار نویں صدی کے بیارت کے بچھی کنارے کے بارے میں لینے خاص تجربوں کے ال بر لکھا ہے۔ "بیکور یا بھکھوؤں کا گروہ سلكل كا رهنه والا في إنهين مسلمانون س محبت أور مسلمانون کی جانب یہ برحد فرم هیں ." 9 ان به کوئ نے اسلام کے بارے میں واقفیت حاصل کرنے کے لئے اپنا ایک نمائات عرب بهرجا ، به نمائنده خادمه عمر کے وقت میں عرب پہنچا . واپس الوئلي هوئه معران مين أس كا التقال هو كيا . ليكن أس كا ايك ساتهي متحدم سلامت سنكهل دينعها اور وهان

Warry and a garage

वासबृत और तफसील से लिखा है और जिसका नाद के मुसिनिफों ने भी सनद के तौर पर हवाला दिया है. इनके अलावा इब्न रिस्ताह (903 ई०), अबु जुल्फ (943 ई०), अस्ताखरी (951 ई०) मसूदी (945 ई०) मुताहर इब्न ताहर, अलबेस्की (999 ई०), इब्न बत्ता (948 ई०), हमदुल्ला मुस्तका और बाद के दूसरे मुसिलिम तारीखदानों ने उस बक्त के हिन्दुस्तान के बारे में निहायत कीमती तारीखी, तिजारती, जुराराफियाई और समाजी जानकारी की बारों अपनी कितावों में दर्ज की हैं.

श्रद्धासी या श्रद्धी तह श्रीब ने युनानी श्रीर भारती आर्य तहजीव से ही वजूद पाया. अरब-अञ्बासी तहजीव की बैरूनी शकल हालाँ कि सेमेटिक और ईरानी थी लेकिन स्मका साइन्सी श्रीर रूहानी ज्ञान, उसकी वैद्यक श्रीर उसकी फिलास की पर गहरा भारती और बाद में यूनानी असर पड़ा. उसके अरबी ढाँचे में भारती रूह जाहिर हा रही थी. सिन्ध की .फतह के बाद भारत की माली दौलत के साथ-साथ भारत की रूहानी दौलत भी खलीफा के दरबार में पहुँची. भारती यूनिवर्सिटियों में तक्षिला में जरूर मुसलिम तालियइल्म रहे होंगे. काश्मीर एस जमाने में तह्वीब का खास मरकज था जहाँ ईरानी-बौद्ध तुल्बा तालीन हासिल करने आया करते थे. अब्बासी तहजीब को खली.फा के बरमकी (बौद्ध) वजीरों ने जो अजमत श्रीर शान दी वह विलाशक बोमिसाल है. .कानून श्रीर इन्सा.फ के बजीरों की हैसियत से और तहजीब के रोशनी के मीनार की हैिसियत से कोई भी ईरानी या अरव शाही खान्दान उनका मुकाबला नहीं कर सकता. ये बरमकी उस बक्त बौद्ध मजहब स इसलाम में दाखिल हुए थे और इन्हीं की कोशिश से अ बों और भारतीयों में गहरा तहजीबी रिश्ता .कायम हुआ था. इन्हीं की कोशिशों से इसलामी तहजीव ने दिल खोलकर भारती तहजीब की देन को दोनों हाथों से .कबूल किया.

जब मुसलमानों ने सन् 707 ईसवी में सिन्ध .फतह किया तो उन्होंने दंखा कि मुल्क बौद्धों श्रीर ब्राह्मण हुक्म-रानों में बँटा हुआ है श्रीर ब्राह्मण धीरे-धीर बौद्धों को पहाइते जा रहे हैं. ब्राह्मणों श्रीर अरवों की जंग में बौद्धों ने अरवों का साथ दिया श्रीर इस तरह से श्ररबों की सिन्ध .फतह को श्रासान बना दिया. सिन्ध .फतह करने के बाद श्रद्धल क्रासिम ने ऐलान किया कि भारत के वाशिन्दे भी एक .खुदा की परिस्तिश करते हैं श्रीर उनके मन्दिर भी ईसाईयों के गिरजों, यहुदियों के सिनागागों श्रीर मागियों के आतिशक्दों की तरह हैं श्रीर उसी तरह से ये लोग श्रहले किताब हैं जिस तरह से ईसाई श्रीर यहुदी." 6 सिन्ध विजय के बाद से ही अरवों श्रीर भारतीयों में एक ऐसी मजबूत

بالیوف أو تضیال کی اور جس کا بعد کے مصنفی نے بھی سفد کے طور پر حوالہ دیا ہے ۔ اِن کے عالوہ ابنی رستاج (903 میسوی) ابوظرزاف (943 میسوی) استاخری (951 میسوی) مسعودی (945 میسوی) مطاهر ابن طاهر ابیورنی ر949 میسوی) ابن بطوطه (918 میسوی) حدالله مصطفی اور بعد کے دوسرے مسلم قاریخ دائوں نے اُس وقت کے هنستان کے بارے میں نہایت قیمتی تاریخی تجارتی جغرانیای اور سماجی جانگاری کی باتیں اپنی کتابوں میں درج کی هیں .

عباسی یا عربی تہذیب نے یونانی اور بھارتی اُریم تہذیب سے هی وجود پایا ، عرب عباسی تهذیب کی بدرونی شکل حالانکه سیمیٹک اور ایرانی تھی لیکن اُس کا سائنسی اور روحانی گیان' اس کی ویدک اور اُس کی فلاسفی پر گہرا بھارتی اور بعد میں یونانی اثر پڑا ۔ اُس کے عربی تعانیے میں بھارتی روح ظاءر هو رهی تھی ، سندھ کی نشم کے بعد بھارت کی مالی دولت کے ساتھ ساتھ بھارت کی روحانی دولت بھی خلافه کے دربار میں پہنچی ، بھارتی یونیورسٹیوں میں نکشلا میں ضرور مسلم طالب علم رہے موں کے . کاشمیر اُس زمالے میں تہذیب کا خاص مرکز تھا جہاں ایرانی ہودھ طلبا تعلیم حاصل کرنے آیا کرتر تھے ، عباسی تہذیب کو خلیفہ کے برمکی (بودھ) وزیروں نے جو عظمت اور شان دی وہ بلاشک ہے۔ قانون اور انصاف کے رزیروں کی حیثیت سے اور تہذیب کے روشنی کے مینار کی حیثیت سے کوئی بھی ایرانی یا عرب شلعی خاندان أن كا مقابله نهيل كر سكتا . يه برمكى أس رقت برده مذهب سے اِسلام میں داخل ہوئے تھے اور انہیں کی کوشش سے عربیں اور بهارتهی میں گہرا تهذیبی رشته قائم هوا تها . انهیں کی کوششوں سے اسلامی تہذیب نے دل کھول کر بھارتی تہذیب کی دین کو دونوں هانهوں سے قبول کیا .

چپ مسلمانوں نے سن 707 عیسوی میں سندھ فتع کیا
تو انہوں نے دیکھا کہ ماک بردھوں اور براھمن حکمرانوں میں
یقا ہوا ہے اور براھمن دھیرے دھرے بردھوں کو پچھارتے
جا رہے ھیں، براھمنوں اور عربیں کی جنگ میں
پودھیں نے عربوں کا ساتھ دیا اور اِس طرح سے عربوں
کی سندھ نتم کو آسان بنا دیا، سندھ فتم کرنے کے بعد
ایرالقلم نے اعلیٰ کیا کہ ''بھارت کے باشلاے بھی ایک خدا کی
پرستھی کرتے ھیں اور اُن کے مندر بھی عیسایوں کے گرجوں'
بھودییں کے سناگائوں اور ماگیوں کے آتشکدوں کی
جوس طرح ھیں، اور آسی طوح سے یہ لوگ اعل نتاب ھیں
جوس طرح سے عیسائی اور بہودی '' 6 سندھ وجیمہ کے بعد

निशाने . इस पण उँचे काले पत्थर पर नक्षरा है. यह निशान पत्थर पर इसने अन्दर धँस गया है कि अब तक ज्यों का त्यों . कायम है. यह निशान सवा आठ . फुट लम्बा है. 8 इस सञ्चाई को साबित करने के लिये कि हिन्दु-स्तान सब मुस्कों का सरताज है इस तरह की दलीलें आकिरी सबूत की तरह पेश की जाती थीं. इन बातों से मुसलमान हिन्दुस्तान के और . ज्यादा करीब आते थे और उसे अपना पाक मुस्क सममकर उससे मोहञ्चत करने लगते थे. लोग उस वक्त तक रिवायतें नहीं गढ़ा करते जब तक कि उसके पीछे कोई लास वजह न हो.

इसी तरह हिन्दू भी मुसलमानों के काबे को अपना ही धर्म-मन्दिर सममते थे. एक जमाने में काबा, अरव और अरब के आस-पास के रहने वाले सभी धर्म मजहब वालों का एक पाक मरकज था. नीचे के बाक्रये को नामुमिकन मानते हुए भी हमें उससे हैरत में नहीं आना चाहिये. बर्टन लिखता है—

"हिन्दू पंडित इस बात को जार के साथ कहते हैं कि मक्के में शिव और पार्वती 'कपोतेश्वर' और 'कपोतेश्वरी' की शकल में जलवा अफ़रोज हैं कुछ मुसन्निकों का कहना है कि हजरत मोहन्मद के बक्त मक्का के देवी-देव-ताओं में लकड़ी में खुदी हुई कपोतेश्वर और कपोतेश्वरी के बुत थे जिन्हें अली ने पैराम्बर के कन्धों पर चढ़कर नीचे गिरा दिया था. 4

विलफोर्ड लिखता है—

''हिन्दु कहते हैं कि मक्का या 'मोचेश' या 'मोक्षस्थान' में जो काला पत्थर या 'सङ्ग-ए-अस्वद' है वह 'मोचेश्वर' भगवान शिव के अवतार का निशान है. भगवान शिव और पार्वती अल-हेजाज के अपने भक्तों की पूजा से .खुश होकर मोचेश्वर की शकत में मक्का में जलवागर हुये थे. 5

हमश्रसर मुसलमान सय्याहों और मुसिनन्तों ने मारत की उस बक्त की हालत को अपने मन्थों में दर्जिकया है. सिन्ध के इतिहास पर पहला मन्थ 'झझ-नामा' है, जो जुनियादी शक्त में अरबी में लिखा गया. वह मुसिलम तारीखदानों की हिन्दुस्तान पर पहली तारीखी किताब है. 'झझ-नामा' के बाद इन्न .खुदादादबीह ने सन् 816 ईसबी में हिन्दुस्तान के जुराराफिये पर एक किताब लिखी. एक दूसरी किताब अबु खाहिद ने सन् 916 ईसबी में लिखी जिसमें मुलेमान सीदागर की भारत और चीन की सियाहतों का हाल दर्ज है. इसमें हिन्दुस्तान की मखहबी और समाजी हालतों पर बहुत तक्षतील के साथ रोशनी हाली गई है. इसी जुमाने का एक दूसरा तारीखदाँ अबु खाहिद अलबलखी (984 ईसबी) हैं जिसने हिन्दुस्तान की तारीख पर बहुत فشان قدم ایک آرنجے کالے پتھر پر نتھی ہے۔ پہا
نھان پتھر پر اتنے آئدر دہلس کیا ہے کہ آپ لک
جھوں کا تیس قائم ہے۔ یہ نشان سوا آئم فٹ لبا ہے۔ 8
اس سجائی کو قابت کرنے کے لئے کہ هادستان سب الموں کا سرتاج ہے اِس طرح کی دارایس آخری نبرت کی طرح پیش کی جاتی تھیں۔ اِن باتی سے اسلمان هادستان کے اور زیادہ قبیب آئے تھے اور اُس سے احصبت کرنے دائیس نہیں گڑھا کرتے کرنے تک روایتیں نہیں گڑھا کرتے جب تک کہ اُس کے پیچھے کوئی خاص وجہ نہ ہو۔

اِسی طرح عندو بھی مسلمانوں کے کعبے کو اُپنا ھی دھرم مندر سنجھتے تھے ایک زمانے میں کعبہ عرب اُور عرب کے آس پاس کے رہنے والے سفعی دھرم مذھب والوں کا ایک پاک مرکز تھا ۔ نمینچے کے واقعہ کو ناسکن مانتے ھوئے بھی ھمفن اُس سے حھرت میں نہیں آنا چاھئے ۔ ہوئن لکھتا ھے۔۔۔

"هلدر پندت اِس بات کو زور کے ساتھ کہتے میں کہ مکم
میں شو اور پاروتی 'کورتیشور' اور 'کورتیشوری' کی شکل میں
جلوہ افروز ھیں...کچھ مصنفوں کا کہنا ہے کہ حضرت محمد کے
وقت مکہ کے دیوی دیوتاؤں میں لکتی میں کہدی ھوئی گیرتیشور
اور کیرتیشوری کے بت تیے جنھیں علی نے پہنمبر کے کندھوں پر
چوھ کو نیتچے گرا دیا تھا . 4

ول فورة لهما هـ

"اهادو کہتے هیں که مکه یا اموکشیش، یا اموکش استهان، میں جو کالا پتهر یا اسلاک اسود هے وہ اموکیشیشور، بهگوان شو اور پاروتی التحجاز کے اینے بهکتوں کی شکل میں مکه میں جاودگر ہوئے تھے ۔ 5

معصو مسلمان سیاحوں اور مصنفوں لے بھارت کی اُس وقت کی حالت کو اپنے کرنیتوں میں درج کیا ہے ۔ سندھ کے اُنہاں پر پہلا گرنتھ 'چپچھ نامہ' ہے' جو بفادی شکل میں عربی میں انکها گیا ۔ وہ مسلم تاریخ دائرں کی هادستان پر پہلی تاریخی کلاب ہے ۔ چپچھ۔ نامہ' کے بعد ابن خداداد بھیہ نے سن 815 عیسوی میں هادستان کے جغرافیہ پر ایک اللہ لکھی ۔ ایک دوسری کتاب ابوراهد نے سن 916 عیسری میں ایک میں کی میں میں میں میں اور چھن کی سیاحتوں کا حال درج ہے ۔ اِس میں هادستان کی مذهبی اور سیاحتوں کا حال درج ہے ۔ اِس میں هادستان کی مذهبی اور سیاحی رائے کی ایک درسرا تاریخ دان ابوراهدالبلطی ہے ۔ اِس زمانے کا ایک درسرا تاریخ دان ابوراهدالبلطی ہے ۔ اِس زمانے کا ایک درسرا تاریخ دان ابوراهدالبلطی

غرف سوداگروں کا ایک جٹھا سلکیل دیپ میں 'آدم کی چوٹی' کا سفر کرنے کے لئے روائع ہوا ۔ کرنگالور کے بلدرگاہ میں راجہ چیرومن پیرومل نے اِن سوداگروں کا استقبال کیا ۔ سوداگروں نے پیغمبر محدد کے ذریعہ چائد کے ٹکڑے کئے جانے کی کہائی راچہ کو سفئی ۔ راچہ نے اسلام قبول کر لیا اور چپ چاپ اِن سوداگروں کے ساتھ مدیلے کا سفر کیا ، واپس لوٹٹے ہوئے راستے میں اُس کا انتقال ہو گیا ۔ مرتے وقت چیرومن نے مسلمائوں کو شاہی فرمان کے ذریعہ مستجدیں بلوائے کی اجازت دے دی ۔ اُسی کے مطابق سلابار میں کئی چکہ مستجدیں بلوائے کی اجازت بنائی کئیں ، بلنچری بھی سن 842 عیسوی کے قریب پیچھی اور بھائی گئیں ، بلنچری بھی سن 842 عیسوی کے قریب پیچھی اور بھائی گئیں ، بلنچری بھی سن 842 عیسوی کے قریب پیچھی بنائی گئیں ، بلنچری بھی سن 842 عیسوی کے قریب پیچھی بنائی گئیں ، بلنچری بھی سن 842 عیسوی کے قریب پیچھی میں اور سوداگر سلیمان' جو نویں صدی میں بزرگ بن شہریار اور سوداگر سلیمان' جو نویں صدی میں میں مسلمائی آئے تھ' اکھتے ہیں کہ ہندستان کے راجاؤں کے دائوں میں مسلمائیں کی طرف بے حد اُچھا خیال موجود تھا ،

یته نہیں کیسے مسلمانوں کے دلوں میں یه اعتبار گھر کر گیا ہے که اِنسانی قوم کے بہلے پیغمبر اور بہلے اِنسان حضرت آدم بشت سے نکالے جانے کے بعد عندستان میں سنکھل دیپ میں آکر ادرے . هندستان میں جو خوشبرداو پهول اور جری ہوئی بهری بڑی ہے وعد حضرت آدم هی بہشت کے 'بغ ارم' سے بہال اله تھے جس بہمر پر حضرت آدم أترے أس پر أن كے قدموں كا نشان آج تک موجود ہے . اِسی پتور کے نشان کو سنکھا کے بودھ بھکوان بردھ کے نشان تدم سمجھ کر پوجائے میں . بعد کے مسلم لیکھکوں نے درسرے ملکون کے مقابلے میں بھارت کی عظم د پر اِس بنا پر اور زیادہ زور دیا ہے که حضرت آدم انسانی قوم کے یرلے یہدیر تھے اور اللہ نے اپنا حکم سب سے پہلے انہیں کو سنایا اور آدم چونکه أس رقت هندستان میں تھے اِس لئے هندستان هی کو سب سے پہلے حکم خدا سللے کا فخور هو سکتا فے ر معکن ہے که شاید اِسی اللہ اُسلام کے بنتمبر نے فر مایا ہے۔ ومھن مندستان سے بہت کر آئی موٹی الله کے وجود کی بهدنی بهدنی خوشبو سونکه رها هرس " عام السمانوں کے لئے هدستان کی سرزمین کی پاکیزگی کی یه آخری اور زبردست دلیل هے . اِس طرح کی روایتیں کیوں شروع ہوئیں اِس کی میں وجه نہیں بنی هوئی هیں ، پڑھ کھے اور سمجهدار لوگ بھی اِن روایتوں كو لغظ به لغظ سي ماثله هيل .

ابن بطرطة (1877 عيسرى) نے بھی حضرت آدم کے پاک نشان قدم کی زيارت کی تھی . اِس نشان کو دينو کر اُس نے لکھا ہے۔۔"حضرت اُدم کا يہ پاک

अरब सौदागरों का एक जत्था सिहलद्वीप में 'आदम की चोटी' का सफर करने के लिले रवाना हुआ. केंक्सानोर के बन्दरगाह में राजा चेरूमन पेरूमल ने इन सौदागरों का इसतकवाल किया. सीदागरों ने पैराम्बर मोहम्मद के जरिये चाँद के दुकड़े किये जाने की कहानी राजा को सुनाई. राजा ने इसलाम .कुब्ल कर लिया और चुपचाप इन सीदागरों के साथ मदीने का सफर किया. वापस लीटते हुए रास्ते में उसका इन्तकाल हो गया. मरते वक्त चेरूमन ने मसलमानों को शाही फरमान के जरिये मसजिदें बनवाने की इजाजत दे दी. उसी के मुताबिक मलाबार में कई जगह मसिजदें बनाई गई. बलाजरी भी सन् 842 ईसवी के .करीब पश्चिमी उत्तर भारत के एक राजा के इसलाम .कुब्ल करने का वाके या सुनाता है. 2 बुजुर्रा विन शहरयार श्रोर सीदागर मुलेमान, जो नवीं सदी में हिन्दुस्तान श्राय थे, लिखते हैं कि हिन्दुस्तान के राजाओं के दिलों में मुसल-मानों की तरफ बेहद अच्छा . ख्याल मौजूद था.

पता नहीं कैसे मुसलमानों के दिलों में यह ऐतबार घर कर गया है कि इनसानी .कौम के पहले पैराम्बर और पहले इनसान हजरत आदम बहिश्त से निकाले जाने के बाद हिन्दुस्तान में सिंहलद्वीप में आकर उतरे. हिन्दुस्तान में जो .खुशबूदार फूल धीर जड़ी बूटी भरी पड़ी है वे हजरत आदम ही बहिश्त के 'बारो इरम' से यहाँ लाए थे. जिस पत्थर पर हजरत आदम उतरे उस ।र उनके कदमों का निशान आज तक मौजूद है. इसी पत्यर के निशान को सिंहल के बौद्ध भगवान बुद्ध के निशाने क़द्म सममकर पूजते हैं. बाद के मुसलिम लेखकों ने दूसरे मुल्कों के मुकाबले में भारत की श्रजमत पर इस बिना पर और ज्यादा जोर दिया है कि हजरत आदम इनसानो .कौम के पहले पैरान्बर थे और अल्लाह ने अपना हुक्म सबसे पहले उन्हीं को सुनाया और आदम चूँ कि उस वक्त हिन्दुस्तान में थे इसित्ये हिन्दुस्तान ही को सब से पहले हुक्मे .खुदा सुनने का .फल हो सकता है व सुमिकन है कि शायद इसीलिये इसलाम के पैराम्बर ने फरमाया है-- "मैं हिन्दुस्तान से बहुकर आई हुई अल्ला के बजूद की भीनी-भीनी खुराबू सूँघ रहा हूँ." भाग मुसलमानों के लिये हिन्दुस्तान की सरजमीन की पाकी जगी की यह आखिरी और जबरदस्त दलील है. इस तरह की रिवायतें क्यों शुक्त हुई इसकी मैं वजह नहीं खोज सका लेकिन फिर भी ये भारत के मुसलमानों के आम ऐत-बार का ज़ुज बनी हुई हैं. पढ़े-लिखे और सममदार लोग भी इन रिवायतों को लफ्ज-ब-सफ्ज सच मानते हैं.

इब्न बत्ता (1377 ई०) ने भी हजरत आदम के इस पाक निशाने क़दम की जियारत की थी. इस निशान को देखकर उसने जिसा है—"हजरत आदम का यह पाक

خوشبوؤں سے معطر ھیں ۔''لیکن ھلاستان کے بارے میں صحابم محیم جانگاری حامل کرنے کی پہلی کرشش شاید خلیفه عثمان كے زمالے ميں كى كئى۔ عثمان نے 624 أور 664 عيسوى كے بينے حکیم بن جباله کو مقرر کیا که وه پته لگاکرهندستان کے بارےمیں صحیم محیم خبریں خاینعکو دے جبالہ فیعادستان آکر بہاں کے بارے موں ایک ربورٹ (Thaghar al Hind) نیار کر کے خلیقه کی خدمت میں پیش کی . 1 اِس بات کے بھی بہت سے بہت ملتے میں که ساتریں صدی عیسوی کے شروعات میں ایران سے لکے ہوئے ہندستان کے صوبین کے ساتھ عرب سوداگروں کا تجارتی رشته قائم تها اور و جائس اور مدرون سے واقف تھ . چونعه هادستان کے اِن حصوب پر ایک وقت ایرانیس کی حمومت تھی اِس لیے اِن حصوں کے هندستائی قبیلوں اور ایرانیس کے بیچ قریبی رشته رها هوا . جب ایران نے اِسلم قبول کیا توتجارتی رشتے کے ساتھ ساتھ یہ نودیکی اور زیاد ہوھی عوكي . ايك بات همين اور دهيان مين ركيلي چاهله كه ایک زمانے میں حراسان ورکستان اور ایران میں بودھ مذھب رحد یہیا ہوا تھا اور بودھ مذھب کے پھرو اعراق موصل اور شام کی سرحد تک پھلے حرثہ تھے ، اِن ملکوں کے باشلدون نے حالات ہودہ مذہب کی جکہت اسلام قبول کو لیا تھا پھر بھی اُن کے داہن میں هندستان کے لئے ایک محبت أور عدت كا خيال ضرور رها هوكا .

جب کہ آپس کے تعلقات بہت تھرتے تھے تپ بھی مسلمان هندستان کو رئیا کا سب سے زیادہ تہذیب یافکہ ملک سمجھ کو آس کی بےحد قدر اور عزت کرنے لگے تھے . ٹبوت کے طور پر هندستان کی تعرریف میں اسلام کے پنعمبر اور اُن کے مشہور پیروکاروں کی روایتیں لفظ به لفظ پیش کی جاتی تھیں . اِس طرح کی روایتوں کی سنچائی پر تھرزا بہت مت بھید ھو سکتا هے لیان یہ بات دعوے کے ساتھ کہی جا سکتے ہے کہ شروع زمانے کے اِسلام کے ادب میں ھندستان کی بےحد تعریف بھری بوی ہے ۔

آس وقت کے عرب سوداگروں نے گجرات کے بلهر راجاؤں اور مقابلر کے سامرری راجاؤں کو اپنی طرف پیحد مہرہائی اور دوستی سے بہرا ہوا پایا ، سمندر کے کنارے کنارے آنهیں آنمی بستیان بسانے اور مسجدیں بنوانے کی اجازت تھی ، اِن مسلمائیں نے مغذو لوکورں سے عمی شادی کی جن کی ملی جلی اُولادیں مقابلہ میں 'مویلا' اور کوکن میں 'هتیا' کے نام سے مشہور عوئیں ، اگر هم مقابل کے راجت چدرومن پدومل کے اِسلام قبول کرنے کی عام فہم روایت مان لیں تو همیں هندستان کی مسلم نو آبادیوں کا وقت پہندر کی زندگی کے هی قریب مانیا پریکا، روایت یکھ که

,खुराबुओं से मुश्रंचर हैं." लेकिन दिन्दुस्तान 🕏 बारे में सही सही जानकारी हासिल करने की पहली कोशिश शायद खलीफा उसमान के जमाने में की गई. उसमान ने 621 और 664 ईसवी के बीच हकीम बिन जवाला को मुकर्र किया कि वह पता लगाकर हिन्दुस्तान के बारे में सही-सही .सबरें खलीफा को दे. जबाला ने हिन्दस्तान आकर यहाँ के बारे में एक रिपोर्ट (Thaghar al Hind) तैयार करके .खलीफा की खिदमत में पेश की. 1. इस बात के भी बहुत से सबूत मिलते हैं कि सातवीं सदी ईसबी के शुरुवात में ईरान से लगे हुए हिन्दुस्तान के सूबों के साथ अरब सीदागरों का तिजारती रिश्ता .कायम को और वे जांटों और मदरों से वाकिफ थे, चूँ कि हिन्दुस्तान के इन हिस्सों पर एक वक्त ईरानियों की हकूमत थी इसलिये इन हिस्सों के हिन्दुस्तानी .कबीलों और ईरानियों के बीच .करीबी रिश्ता रहा होगा. जब ईरान ने इसलाम कुबूल किया तो तिजारती रिश्ते के साथ-साथ वह नजदीकी और ज्यादा बढ़ी होगी. एक बात हमें और ध्यान में रखनी चाहिये कि एक जमाने में .खुरासान, तुर्किस्तान और ईरान में बौद्ध मजहब बेहद फैला हुआ था और बौद्ध मजहब के पैरो इराक, मांसल और शाम की सरहद तक फैले हुये थे. इन मुल्कों के बाशिन्दों ने हालाँ कि बौद्ध मजहब की जगह इसलाम .कुबूल कर लिया था फिर भी उनके दिलों में हिन्दु स्तान के लिये एक मोहब्बत और इज्जत का ख्याल जहर रहा होगा.

जबिक आपस के ताल्लुकात बहुत थोड़े थे तब भी
मुसलमान हिंदुस्तान को दुनिया का सब से ज्यादा सहजीब
यापता मुल्क समम्कर उसकी बेहद कर और इञ्जत करने
लगे थे. सबूत के तौर पर हिन्दुस्तान की तारीफ़ में इसलाम
के पैगम्बर और उसके मशहूर पैरोकारों की रिवायतें लफ्ज-ब
लक्ष्ण पेश की जाती थीं. इस तरह की रिवायतों की सचाई
पर थाड़ा बहुत मत मेद हो सकता है लेकिन यह बात दावे
के साथ कही जा सकती है कि ग्रुह् जमाने के इसलाम के
बादब में हिन्दुस्तान की बेहद तारीक भरी पड़ी है.

उस बक्त के अरब सौदागरों ने गुजरात के बल्हर राजाओं और मलाबार के सामुरी राजाओं को अपनी तरफ़ बेहद मेहरबानी और दोस्ती से भरा हुआ पाया. समन्दर के किनारे-किनारे छन्हें अपनी बस्तियाँ बसाने और मसजिदें बनबाने की इजाज़त थी. इन मुस्जमानों ने हिन्दू लड़कियों से ही शादी की जिनकी मिली जुली खीजादें मलाबार में 'मोपला' और कोकण में 'हदिया' के नाम से मशहूर हुई. अगर हम मलाबार के राजा चेहमन पेहमल के इसलाम कुबूत करने की आम फहम रिवायत मान लें तो हमें हिन्दुस्तान की मुसलिम नीआबादियों का बक्त पैरान्बर की जिन्द्रजी के ही करीब मानना पदेगा. रिवायत यह है कि

तुर्कों का हिन्दुस्तान में आना एक उतना ही अजीब-ओ-रारीय .कुद्रती वाक्रेया है जितना तुफानों का एक जगह से द्खरी जगह मँडराना ! तुकों ने आकर हिन्दुस्तान को उसकी जड़ों तक हिला दिया और लोगों को सकसीर कर नये इमिकनात के लिए जगाकर तैयार और बाखवर कर दिया. ये बद्ताव अपने आप में .फायदेमन्द या तुक्रसान्देह हैं इसका .फैसला मैं नहीं कर सकता, लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि इस बदलाव ने भारत की समाजी बनियादों को धी बदल दिया. आयों के हमले ने भारत की समाजी जिन्दगी को जिस तरह जह से हिला दिया था तुकी का हमला इससे थोड़ा ही कुछ कम रहा. लेकिन तुकान के बाद सुकून लाजिमी है, जलजले के बाद दोबारा तामीर जरूरी है. जब निदयों का मेल होता है तो दोनों निदयों की धारायें गरजते हुए टकराती हैं लेकिन जल्द ही वे .खामोश होकर रल मिलकर एक धारा में बहने लग जाती हैं. इलाहाबाद के बाद गङ्गा जमुना की घारा में कोई .फर्क नहीं रह जाता. इसी तरह हिन्द और मुसलमान श्रापस में टकराकर एक इन्सानी संगम में मिले थे और फिर इनकी तहजीवें रल मिलकर भारतीय तहजीब की अट्टधारा बनकर बहुने लगी थीं कि जिसने सनत और हिरफत, कारीगरी और साइन्स, अदब और शायरी, मुसञ्जरी और बुत तराशी - सभी मैदानों को सरसङ्ज भौर हरा भरा कर दिया था. श्राज हम फिर एक बार जलील तरीक्षों के जरिये तहजीब की उस श्रद्ध धारा के टुकड़े-टकड़े करने की, जमुना की धारा को गंगा की धारा से अलग करने की शर्मनाक कोशिश कर रहे हैं.

भारत में तुर्कों के हमले के तीन सो बरस पहले से मुसलमानों में भारत की श्रजीम तहजीब श्रीर उसके साइन्स के लामहदूद जलीर का समझने और उसकी तरफ इज्जत का इजहार करने की लगातार कोशिश हो रही थी. मारत और अरब के बीच बहुत पुराने क्रमाने से तिजारती ताल्लकात चले आ रहे थे लेकिन मीजूदा ताल्लुकात का सिरा हम उसी तक्त से जोड़ सकते हैं जब अरबों ने अपने मशरिकी इकूमत में तहजीब के नये नये मरकज कायम किये. खलीका उमर के जमाने तक इसलामी दुनिया को हिन्दुस्तान के बारे में सच्ची जानकारी थी. हिन्दुस्तान के समुद्री किनारों के बारे में भरव और ईसनी मरुबाहों को थोड़ी बहुत बाक्रफियत थी और वे हिन्दुस्तान की तिजारती दौलत की तारीफ के गीत गाया करते थे. जब खलीका उपर ने एक अरब मल्लाह से हिन्दु-स्तान के बारे में पूछा तो वह तारीफ़ के पुल बॉथने लगा कि-"हिन्दुस्तान के दरिया मोतियों से भरे हैं और उसके पहाड़ों में हीरे जबाहरात की खानें हैं और उसके पेड़ पौधे

تركين كا هدستان مين أنا أيك أناهي عجيب و فريب قدرتی واتعه هے جللا طوفائوں کا ایک جایم سے درسری جایم ماقرانا 1 ترکوں لے آکر هندستان کو اُس کی جورں تک علا دیا ارر لوگوں کو جباجهور کر لیٹے اسکانات کے لئے جگا کو تیار اور باخبر كر ديا ، يه بداؤ اين آپ ميں فائدة مند يا تقصان دة ميں اِس کا فیصلم میں نہیں کر سکتا کلین اِس میں کئی شک نہیں کہ اِس بداؤ نے بہارت کی سماجی بنیادوں کو ھی بدل دیا، آریوں کے حملے نے بہرت کی سماجی زندگی کو جس طرح جو سے ملا دیا تھا ترکس کا حمله اُس سے تھررا ھی کچھ کم رہا . لهكن طوفان كے بعد سكون الزمى هے . زاؤلے كے بعد دوبارہ تعمير ضرورم هے . جب نديرن كا ميل هوتا هے تو درنوں نديون کی دھارائیں گرجاتے ہوئے ٹکراتی ہیں لیکن جلد ہی وے خامرهی هو کر رال مل کرایک دهارا میں بہنے اگ جاتی هیں۔ العاباد کے بعد گنکا جملا کی دہارا میں کوئی فرق نہیں رہ جاتا . اِسی طرح هندو اور مسامان آیس میں اعرا کو ایک انسانی سنکم میں ملے تھے اور پھر اُن کی تہذیبیں رل مل کو بھارتی تہذیب کی اٹوے دھارا بن کر بہنے اکی تھیں کہ جس لے صفعت اور حونت کاریکری اور سائنس ادب اور شاعری ا مصوری اور بت تراشی سیبهی میدانین کو سردیز اور هرا بهرا کر دیا تھا . آبے هم پهر ایک بار ذایل طریقوں نے دریعے تهذیب کی اُس ائرہ دھارا کے تکرے تکرے کرنے کی جمنا کی دھارا کو گنگا کی دھارا سے الگ کرنے کی شرمناک کوشھی کو رهے میں .

ھندو مسلمانوں کے تہذیبی میل جول کی شروعات

دَاكِتُر اطيف دفترى أيم. أحد تني. قل.

مسلمان ترکوں کے پلجاب آنے کے ایک صدی بعد هی هندو اور مسمانوں کے تہذیبی میل جول کی پہلی داغ بیل ملی جلی بولی کے شکل میں بڑی . هندی اور قارسی نے مل کو اردو بولی کو جام دیا ، ملی جلی بولی کی پیدائش اِس بات کو ظاهر کرتی ہے کہ اُس وقت تک هندو اور مسلمانوں میں ایک ملا جلا باهمی خیال هماری سماجی سیاسی اور دمائی زندگی کے هر میدان میں گہرائی کے ساتھ پیدا هو رها تھا . اِس ملے جلے خیال نے تہذیبی ایکتا کی گہری چھاپ هماری کاریکری مارے مذہب کے آویر چھوڑی ہے .

بھارت کے اِس تہذیبی ایکٹا کے کھرے سے بھرے ھوٹے مطالعة کی اب تک بہت نہروی سی کوشش کی گئی ہے . اِس بارے میں جو چاد کتابیں چینی ہوئی میں اُن میں مولی سید سلیمان ندوی کی اعرب اور عند کے تعلقات کاکٹر تھی۔ آر، سنڌار کر The Slow Progress of Islam in عبتدار کر ا "The Influence of Islam دَاكْر تاراچند كي India on Indian Culture ارز ایک بوریی عاام کی کتاب 'Scriptorum Arabum de Rebus Indicis 'loci et Opuscula Inedita وغيرة خاص هين. يهجلے سیکورں برس میں انسانی بہتری کے بعواری کئی مسلمان السلتون سهاستدانون أور عالمون في هندستان مين هندو اور مسلمانین کے ملنے سے جو الجھنیں بیدا ہو گئی تھیں. ان کے محبت سے بورے ہوئے حل کھوجلے میں بہت ساغور خوض کیا ہے ، هلاستانی عالبوں کے ذریعہ اِن کی نیک کوششوں کو جللی امیت دی جائی چاهای اتنی امیت نهیں دی گئے ۔ اھمیت دیا تو دور رہا دونوں فریقوں کے عالمفیر تاریخی اور جھوائی دلیلیں کے ذریعہ ملی جلی بھارتی توذیب کو اعجے قترے کرلے کے اور ہندو اور مسلمانوں کے دلیں کو ایک دوسرے سے جدا کرنے کی خراب اور بری کوششیں کر رہے میں . ملدو اور مسلمانوں نے سیکروں ہرس تک جس هندستانی تهذیب کو افنا رسیم بنایا ہے اُنہوں کے نام لیرا آبے شرسناک طریقوں سے أس كي دهنجيان أواله مين مشنول هين .

हेन्दू-मुसलमानों के तहजीबी मेल-जोल की शुरूआत

डाक्टर लतीफ क्ष्मरी एम० ए०, डी० फ़िल

मुसलमान तुकों के पंजाब आने के एक सदी बाद ही हिन्दू और मुसजमानों के तह जीवी मेल-जोल की पहली दाग़वेल मिली-जुली बाली के राकल में पड़ी. हिन्दी और फ़ारसी ने मिलकर उर्दू बोली का जन्म दिया. मिली-जुली बाली की पैदायरा इस बात को जाहिर करती है कि उस वक्त तक हिन्दू और मुसलमानों में एक मिला-जुला बाहमी . ख्याल हमारी समाजी, सियासी और दिमापी जिन्दगी के हर मैदान में गहराई के साथ पैदा हो रहा था. इस मिले-जुले ख्याल ने तह जीबी एकता की गहरी छाप हमारी कारीगरी, हमारे अदब और हमारे मजहब के ऊपर छोड़ी है.

भारत के इस तहजीबी एकता के खोज से भरे हुए मुताले की अब तक बहुत थोड़ी सी कोशिश की गई है. इस बारे में जो चन्द कितावें छपी हुई हैं उनमें मौलवी सय्यद सलेमान नद्वी की 'अरब और हिन्द के ताल्लुकात' 'डाक्टर ही॰ आर॰ भंडारकर की 'The Slow Progress of Islam in India' 'डाक्टर ताराचन्द की 'The Influence of Islam on Indian Culture' और एक यूर्पी आलिम की किताब Scriptorum Arabum de Rebus Indicis loci et Opuscula Inedita' वरौरा खास हैं. पिछले सैकड़ों बरस में इन्सानी बेहतरी के पुजारी कई मुसलमान सन्तों, सियासतदानों श्रौर श्रालिमों न हिन्दुस्तान में हिन्दू और मुसलमानों के मिलने से जो उलमनें पैदा हो गई थीं उनके मोहब्बत'से भरे हुए हल स्रोजने में बहुत सा ग़ीर खोज किया है. हिन्दुस्तानी आलि-मों के जरिये इनकी नेक कोशिशों को जितनी अहमियत वी जानी चाहिये उतनी ऋहमियत नहीं दी गई. ऋहमियत देना तो दूर रहा दोनों फ़रीक्रों के आलिम रीर ताराखी और मूखी दलीलों के जरिये मिली-जुली भारती तहजीब को दुकेंद्देकदे करने के और हिन्दू और मुसलमानों के दिलों को एक दूसरे से जुदा करने की खराब और बुरी क्रोशिशे कर रहे हैं. हिन्दू और मुसलमानों ने सैकड़ों बरस तक जिस हिन्दुस्तानी तहजीब को इतना बसी बनाया है उन्हीं के नाम लेवा आज शर्मनाक तरीक्रों से उसकी धिजन-याँ चढ़ाने में मशराल हैं.

अब रहजन कहलाने लगा है. आज का इन्सान जिन नित्य नए तजरबों से गुजर रहा है उनकी बिना पर उसे कहना पडता है:

कितने शिक्षक ऐसे हैं इनमें जो भच्नक हैं मूल में ! कितने धर्मात्मा ऐसे हैं ऊपर से जो पापी है भीतर से ! कितने प्रेमधारी हिंसाकारी हैं और कर्मवारी अत्यावारी हैं।

इस्रजाकी तौर पर अन्याय और अत्याचार से तोबा करके, पाप का दामन गंगा जल से धोकर, दुई की यू मन से निकालकर और भगवान का भय दिल में रखकर अपना नैतिक सुधार करना चाहिये. वरना जब इन्सानों की दुनिया बसेगी तो ऐसे लोग उस दायरे से खारिज सममें जाएंगे.

धन्त से बेखबर रहने वाले जीहोश नहीं बेहोश होते हैं. समय ही इनको होश में ला सकेगा. तब तक यह लत-पथ ही रहेंगे. हमने बहुत कुछ देखा इस उलट फेर में, कल से लेकर आज तक और आज से लेकर आगे तक.

नागों को धार्मिक संसार में बड़ा मान मिलता है और दूध का डनको दान मिलता है, उनकी पूजा भी होती है, लेकिन हर देश और हर हृद्य में नहीं. हर देश और हर मन का चलन जुदा होता है. कहीं यह पूजा जाता है, कहीं पाला जाता है, कहीं खाया जाता है, कहीं मारा जाता है—अपने अपने मन की बात है, किसी के मन पर किसी का बस नहीं. मन भी देश की मानिन्द आजाद होता है जैसे आजाद हुक्मत! मन जोर जब से कभी काबू में नहीं लाया जा सकता. मन पर विजय रही है हमेशा प्रम की.

कहने को एक साँप है आस्तीन में लेकिन उसकी पौथ और फीज कितनी रेंगती फिर रही है आस पास तनजीम के साथ, जैसे कि संघ हो साँपों का और घेरा डालकर क़ैद में ले रखा हो धैर्य और निर्भाकता की एक अतम और महान चट्टान को. उनकी लकीरें और निशान, उनके कास और जाल दर्शन शास्त्र का काम देते हैं, सोचने समभने बालों के लिये और भविष्य वािंग्यों के लिये.

श्रगर ग्राँप मारना हिंसा है या मना है श्रापके मत में तो यह छोड़े भी जा सकते हैं, लेकिन इनका श्राजाद करने के दो ही साधन हैं. या तो डाल दो "श्री शंकर" के गले में इनको, या फिर दे दो यह सब साँप सियासी सँपेरों को जो राजनीतिक बीन पर प्रेम के राग श्रजापकर और तमाशा उनका दिलाकर खाते कमाते फिरें नगर नगर, प्रान्त प्रान्त, पथ पथ, प्राम प्राम. اب رحون کہلانے لگا ھے ، آج کا انسان جن نتیہ نئے تجربوں سے ر گذر رہا ھے آن کی بنا پر آسے کہنا پوتا ھے:

کننے شکشک آیسے هیں اِن میں جو بهکشک ههی مول میں ا

کنئے دھرمانیا ایسے ھیں اُربر سے جو پاپی ھیں بھیتر سے اُن کننے پریم دھاری ھنساکاری ھیں اور کننے کرمچاری انہاجاری ھیں ا

اخلاقی طور پر انبائے اور انباچار سے توبہ کر کے پاپ کا دامی گنگا جل سے دھو کر کوئی کی ہو می سے نکال کر اور بھکراں کا بھے دل میں رکھ کر اربنا نیتک سدھار کرنا چاھئے ۔ ورتہ جب انسانوں کی دنیا بسے گی تو ایسے لوگ اُس دائرے سے خارج سمجھے جائیں گے ۔

انت سے پخبر رہنے والدنی ھرش نہیں پھرش ہوتے میں ۔
سمے می ان کو ھرش میں لا سمیگا ، نب نک یہ اتھے ہته
ھی رھیں گے، ھم نے بہت تھے دیکھا اِس اُلٹ پھر میں' کل سہ
لیکر آے نک اور آے سے لیکر آگے تک ۔

ناگرں کو دھار ک سنسار میں بڑا مان ملتا ہے اور دودھ کا اُن کو دان ملتا ہے ۔ اُن کی پوچا بھی ھوتی ہے اُلکن ھر دیھی اور ھر من کا چلن دیھی اور ھر من کا چلن دیھی اور ھر من کا چلن جدا ھوتا ہے کہیں پالا جاتا ہے کہیں کہایا جاتا ہے کہیں مارا جاتا ہے اپنے من کی بات ہے کہیں کسی کے من پر کسی کا بس نہیں ، من بھی دیھی کی مانند آزاد ھوتا ہے جیسے آزاد حکومت! من زور جبر سکبھی فاہو میں نہیں گیا جا سکتا ، من پر رجے رھی ہے ھمیشتہ پریم کی ،

کہنے کو ایک سانپ ہے آستیں میں لیکن اُس کی پودہ اور فوج کتنی رینکتی پھر رھی ہے آس پاس تنظیم کے ساتھ' جیسے که ساتھ ھو سانیوں کا' اور گھیرا ڈال کر قید میں لے رکیا ھو دھیریہ اور نربھیکتا کی ایک انم اور مہاں چتاں کو . اُن کی لکھریں اور نشان' اِن کے کواس اور جال درشن شاستر کا کام دیتے ھیں' سوچا سمجھنے والوں کے لئے اور بھرشت وانعوں کے لئے .

اگر سائب مارنا هلسا هے یا منع هے آپ کے مت میں تو
یہ جھوڑے بھی جا سکتے ہیں' لیکن اِن کو آزاد کرنے کے دو هی
سادهن هیں ، یا تو دالدو ''شری شنکر'' کے گلے میں اِن کو' یا
پہر دیدو یہ سب سائب سیاسی ساپھروں کو' جو راجنیتک بین
پریم کے راگ الاپ کو اور تماشا اُن کا دکھا کو کھاتے کماتے پھریں
گڑ نکو' پرانت پرانت' پتھ پتھ' گرام کرام .

किसी भी जात या नाम का हो, किसी भी मेस या भेद का हो, दुश्मन से अपनी हिकाजत में देरी केवल राकलत का ही नतीजा होती है. पर कुछ हर और सहम का भी कारण होता है. सहमे रहने से शत्रु साहस पाता है. शत्रु या दुश्मन को कभी हक़ीर न सममना चाहिये. साँप का बच्चा साँप ही कहलाता है. नाग की औलाद नाग ही होती है साखिर.

सामाजिक राजनीति की तरह "नागिक नीति" में भी बदले का भाव होता है जिसकी मुद्दत बारह बरस तक कही जाती है. लेकिन राजनीतिक नाग का बदला शताब्दियों तक चलता है और चलता ही रहता है. वह ता सिर्फ एक से बदला लेता है और यह नसलों तक जहर उगलता रहता है साम्भवायिकता का; अपने दुश्गर्न को पकड़ने या केंद्र करने के लिये नागों के पास हिंद्र यों की गिरहबन्द रिस्स होती हैं. और बलिदान का पद देने के लिले जहर का जाम तैयार रहता है. इन कालों के पास केवल मीठी छुरी होती है मगर जहर की बुसी!

महात्मा गाँधी पर हमला करने वाला कौन था ? वह

एक नाग ही तो था जिसने उनको हसा.

मगर दुनिया उसे दूसरे नाम से जानती है. दुनिया की नजरों में वह इन्सान ही था जिसने इन्सान की जान ली.

श्रव भी कितने ऐसे हिंसक हैं जो नुमायशी रूप श्रीर लिबास में श्रहिंसक हैं मगर उनको उपदेश देने का बड़ा शौक़ है. न देखें बड़ा न देखें मौका, न देखें विद्वान न देखें सभ्य, बदतमीजी श्रुक्त कर देते हैं.

अपना सुधार और निर्माण करने से पहले दूसरे के धरों की ताक माँक बड़ी हद तक बेहूदा जसारत है. सेवा और सुधार के काम में तमीज और तहजीब पहली चीज है. पहले अपना मन साफ करें और अपना दामन धोवें. पहले अपनी अन्तर आत्मा को जवाब दे लें फिर आगे बढें.

मानते हैं हम कि प्रेम इन्सानियत का सन्देश है. और एकता का केन्द्र ही सही मुकाम है इन्सानियत का. लेकिन इसी मुकाम पर प्रेम और एकता का गला काटा जाता है और इन्सानियत का खून किया जाता है. कितना दुख होता है यह कहते कि इसी प्रेमिक और अहिंसक बातावरण में कितने बेगुनाह शुट किये गए, कितनों को जहर दिया गया, कितने साजिशों का शिकार हुए और कितनों को "डोज आफ डेथ" दिया गया. यह वह सच्चाइयाँ हैं जिनसे कोई इनकार नहीं कर सकता और जिनको तारील ने समेट कर अपने दामन में महक्ज कर रखा है.

आज शिक्क और उपरेशक इतने ही सस्ते शब्द हो नगप हैं जैसे लीडर और नेता के शब्द हलके और वेबक्सन हो गप हैं. इनके क्ये तक अब पलट गए हैं. रहबर کسی بھی جات یا آنام کا ہوا کسی بھی بھیسی یا بھدد کا ہوا دشمن سے آپنی حفاظات میں دیرہی کیول غفلت کا ھی نتیجہ ہوتی ہے۔ پر کچھ در آور سہم کا بھی کارن ہوتا ہے ، سہمے رہنے سے شترو ساھس یا تا ہے ، شترو یا دشمن کو کبھی حقیر تم سحجهنا چاھاء ، سانب کا بنچہ سانب ھی کہلانا ہے ، ناگ کی آراد ناگ ھی ہوتی ہے آخر ،

ساماجک راجنیتی کی طرح ''ناگک نیتی'' میں بھی بدلے کا بھاؤ ھوتا ہے جس کی صدت بارہ برس تک کہی جاتی ہے ۔
لیکن راجنیتک ناگ کا بدله شتابدیوں تک چلتا ہے اور چلتا ھی رھتا ہے ۔ وہ تو صرف ایک سے بدله لیتا ہے اور یہ نسلوں تک زھر اُگلتارھتا ہے سمپردایت کا اپنے دشمن کو پکڑنے یا قید کرنے کے لئے بناگوں کے پاس ھذیوں کی گرہ بند رسیاں ھوتی ھیں ۔ اور بلیدان کا ید دینے کے لئے زھر کا جام نیاز رھتا ہے ۔ اِن کالوں کے پاس کیول میتھی چھرتی ھوتی ھی مگر زھر کی بجھی اُ

مهاتما کاندہ ی پر حمله کرنے والا کون تها ؟ وہ ایک ناگ هی تو تها ۔

مگر دنیا آسے درسرے نام سے جانتی ہے ، دنیا کی نظروں میں وہ اِنسان هی تها جس نے انسان کی جان لی ،

اب بھی کتنے ایسے هنسک هیں جو نمانشی روپ اور لباس میں اهنسک هیں مگر آن کو آپدیش دینے کا بڑا شرق هے ، نه دیکھیں بڑا تم دیکھیں مرتعه تم دیکھیں ودران تم دیکھیں سبهت بدتمؤوں شروع کر دیتے هیں .

ادنا سدھار اور نرمان کرنے سے پہلے درسروں کے گھروں کی تاک جہانک بڑی حد تک بھبودہ جسارت ہے ۔ سیوا اور سدھار کے کام میں تمیز اور تہذیب بہلی چیز ہے ۔ پہلے اپنا من صاف کویں اور اپنا دامن دھوئیں ۔ پہلے اپنی انتر آتما کو جواب دے لیں پھر آگے بڑھیں ۔

مانتے میں هم که پریم اِنسانیت کا سندیش هے . اور ایکنا کا کیندر هی صحیح مقام هے انسانیت کا . لیکن اِسی مقام پر پریم اور ایکنا کا گلا کا گاتا جاتا هے اور انسانیت کا خون کیا جاتا هے . کتنا دکھ موتا هے یه کہتے که اِسی پریمک اور اهلسک واناورن میں کتنے برگناہ شوت کئے گئے کتنوں کو زور دیا گیا گتنے ماؤشوں کا شکار هوئے اور کتنوں کو 'تقرز آف تیتی'' دیا گیا ، یہ وہ سجھائیاں میں جن سے کوئی انکار نہیں کو سکتا اور جی کو تاریخ نے سیمٹ کو اینے داس میں محضوظ کو رکھا ہے .

آج شاشک اور آپدیشک اِنلے هی سستے شبد هو کئے هیں جیسے لیڈر آور نینا کے شبد هاکے اور پوروں هو گئے هیں ۔ رهبر

घात में लगी रहती हैं. घात और काट का असर सर्व की सन्तान को विरसे में मिलता है.

नाग के सम्बन्ध में हमने "गुण गान" के शब्दों के बारे में इख खोज की है. इस खोज के अनुसार हम "गान" के मानी नाग के लेते हैं. गान को उल्टा करके देखों तो मालूम होगा कि गान ही से नाग ने जन्म लिया है. इसी तरह "गुण" से नाग का अर्थ निकलता है. वह नग ही तो है जो नाग के मणि से निकल कर राज के ताज को जगमगाता और शोभा देता है—कहने को तो यह एक की ड़ा है मगर मणि का हीरा

भारत में नाग श्रीर नागिन देवी देवता माने जाते हैं. इनमें राजा भी होता है जिसको "वासकी" कहते हैं.

आजकल विश्व मित्रता के कारण देश और अन्तर देश भाई-भाई का नारा बुलन्द है. इसी राजनीतिक नीति के अनुसार अमरीका और भारत में भी बह्नापा शुरू हो गया है. मगर यह नाता हमको खटकता है. अमरीका का "मिल्क पाउडर'' भारती नागिन के स्वभाव और मिजाज को अनुकूल नहीं पड़ेगा, क्योंकि वह हमेशा से शुद्ध दूध के आदी रहे हैं. यह बात अच्छी तरह अनुभव में आ चुकी है कि सियासी भाई एतबारी भाई नहीं होते, इसलिये कि सियासत खुद एतबारी चीज नहीं.

यूँ तो साँपों की सैकड़ों किस्में हैं लेकिन भारत में इनकी दो जातें खान हैं—धार्मिक श्रीर राजनैतिक.

धार्मिक अहिंसक होते हैं और राजनैतिक हिंसक.

आजकल राजनीतिक काले श्रधिक उबल पड़े हैं देश के भाग-भाग में, बस्ती-बस्ती श्रीर गाँव-गाँव में. यही काले फ्यादा कटीले श्रीर जियादा जहरीले होते हैं.

यह बात याद रखने की है कि धार्भिक नाग अहिंसक ही नहीं रहता सदा. इस भी लेता है अचानक. मगर उसका दोष नहीं, वह तो उसकी कितरत है.

नाग जब इसता है तो हिंसक कहलाता है और जब हाँसता है तो घिट्सिक होता है. उस समय वह कितना सुन्दर और प्रेमी मालूम होता है! उसका इसना जितना स्नतरनाक है, उसका हाँसना भी स्नतरे से खाली नहीं. बह हाँसते-हाँसते जान लेता है और खेलते-खेलते जाम पी जाता है किसी के भी प्राण का, उसपर भरोसा गलत. भरोसे की चीज तो मनुष्य भी नहीं; बह तो फिर आखिर कोड़ा है.

मनुष्य भी इसता है श्रवश्य, पर सर्प और मनुष्य के इसने इसने में श्रन्तर है. भाव भाव में श्रन्तर है.

सर्प इसता है अपनी जात बाहर किसी भी प्राणी को, और मनुष्य उसता है अपनी ही जात को, यानी आदमी आदमी को. यही इसकी वह विशेषता है जिसके कारण इसने बरबरता को जीता है और विजय प्राप्त की है हैवानों की .सू .ससलत पर. گھات میں لکی رهتی هیں۔ گھات اور کاٹ کا اثر سرپ کی سنتان کو ورثه میں ملتا ہے .

ناگ کے سبادھ میں ہم نے ''گنگلی'' کے شدوں کے بارے میں کچھ کوچے کی ہے۔ اِس کھچے کے انوسار عم ''گلی'' کے معلی ناگ کے لیتے دیں ۔ گلی کو اُلٹا کر کے دیکھو تو معلوم دوگا که گلی هی سے ناگ نے جام لیا ہے ۔ اِسی طرح ''گن'' سے نگ کا اُرتے فیلئا ہے ۔ وہ نگ می تو ہے جو ناگ کے من سے نکائر راج کے تاج کو جکمگانا اُور شوبھا دیتا ہے۔۔۔ کہنے کو تو یہ ایک کیرا ہے می می می کا دیرا ہے ۔

بھارس میں ٹاگ اور ٹاگن دیری دیوتا مانے جاتے ھیں . اِن میں راجا بھی ھوتا ہے جس کو ''واسکی'' کہتے ھیں .

آجکل وشومترتا کے کارن دھی اور انتر دیش بھائی بھائی کا فعرہ بلند ہے۔ اِسی راجنیتک نیتی کے الرسار امر کہ اور بھارت میں بھی بہنایا شروع ھو گیا ہے ، مکو یہ ناتا ھم کو کھٹکتا ہے ، امریکھاکا اللہ کوتن ''بھارتھی ناگن کے سبھاؤ اور مزاج کو انوکول نہیں پریگا' کیونکہ و عمیشہ سے شدہ دودھ کے عادی رہے ھیں ۔ یہ بات اچھی طرح انوبھو میں آچکی ہے کہ سیاسی بھائی اعتباری چیز بھائی نہیں ، ہون اعتباری چیز بھائی دیوں ،

یوں تو مانہوں کی سینکروں قسمیں هیں لیکن بھارت میں اِن کی دو جانیں خاص هیں۔دھارمک اُور راجنیتک .

دهارمک اهنسک هوتے هیں اور راجنیتک هنسکت.

آجال راجنیتک کالے ادمک آبل پڑے میں دیعی کے بھاگ بھاگ میں' ہستی بستی ارز گؤں گؤں میں ۔ یہی کالے زیادہ کتبلے اور زیادہ زهریلے موتے میں ۔

یہ بات یاد رکھنے کی ہے که دعارمک ناگ اعنسک می نہیں ارھتا سدا . جس بھی لیتا ہے اچانک . مکر اُس کا درهن نہیں . وہ تو اُس کی نطرت ہے .

ناگ جب تستا هے تو هنسک کہلاتا هے اور جب هنستا هے تو انتسک هوتا هے اس سمولاکلنا سادر اور دریمی معلوم هوتا هے! اس کا تسنا جلنا خطرناک هے اُس کا هنسنا بهی خطرے سے خالی نهیں ۔ وہ هنستے هنستے جان لیتا هے اور کهیلتے کهیلتے جام ہی جاتا هے کسی کے بھی دران کا اُس پر بهروسه غلط ، بهروسے کی چیز تو منتهی بھی نہیں؛ وہ تو پھر آخر کھڑا ھے .

ملشیت بھی نستا ہے ارشیت پر سرپ اور منشیت کے ڈسنے ڈسنے میں انتر کے ، بیای بھاؤ میں انتر ہے ،

سرپ قستا ہے اپنی جات باہرکسی بھی پرانیکو' اور منشیہ قستا ہے اپنی ہی جات کو' یعنی آدمی آدمی کو ، یہی اِس کی وہ وشیشتا ہے جس کے کارن اِس نے بربرتا کو جیتا ہے اور وجے پراپت کی ہے حیوانوں کی خو خصلت پر

श्रास्तीन में साँप

भाई अब्दुल हलीम अनसारी, आरटिस्ट

जैसे अमन में जंग-रंग में भंग-मन्दिर में पाप-यह केवल सियासत की बात कि आसतीन में साँप.

सियासत हमेशा सेवा और प्रेम का दम भरती रहती है. कितनी सुन्दर होती हैं उसकी भावनाएं और कितने लुभावने होते हैं बसके प्रेम भाषण सियासी स्टेज पर.

जैसे किसी पिक्चर हाउस के फिल्मी परदे पर मूरी

मुहब्बत के बनावटी अदाकार!

जैसे समाज सुधार के नाटक और प्रेम प्यार के मृहे किरदार!

सकेद आस्तीन की लम्बी गुफा में रहने वाला सर्प राज-नीति की बीन पर प्रेम की रागिनी से कितना आनन्द लेता है श्रीर गोल कुन्डल पर बैठा पहरा देता है. देवल उसके फुंकार की दहरात और विष का भय मनमानी कराने के लिये काकी होता है. इनसानियत के साथ प्रेम और हमदर्दी के कारण हमारी यह ग्रुभ कामना कभी-कभी दिल से निकले बिना नहीं रहती कि उस आसतीन का भिटक देना ही उचित है.

जैसे धन के ढेर पर साँप नाथ लहराते हैं, इसी तरह राज्य के संघ पर नाग नाथ पहरा देते हैं. राज्य का भन्डार केवल धन का ही नहीं होता. उसका भन्डार भिन्न भिन्न प्रकार का होता है. यह कहना अनुचित नहीं कि आज के समय जबिक नए-नए टैक्सों की भरमार है, भूमि का कण-कण भन्डार है और मनुष्य का अंश-अंश धन है राज्य के निकट.

जान की रक्षा सब से अधिक अक्रलमन्दी की बात है

और शत्रु की मित्रता बड़ी नादानी !

एक रात्रु को जियादा दिन मुहलत देने से एक के दो होते हैं, और दो के चार. अब भी कितने रंग बिरग के सर्प छुपे द्वंप हैं, मतभेद के सूराखों में, साम्प्रदायिकता के गारी में, श्रीर राजनीति के पिटारों में. इनकी जबान का बारीक श्रीर जहरदार करेन्ट पेटम से कम नहीं, इसिल्ये कि जान लेना दोनों का मकसद है.

एक नागिन सैकड़ों अन्डे देती है, उन अन्डों से सैकड़ बच्चे निकालती है. उनसे कितनी नसलें बनती हैं. कितनी पीदियां चलती हैं जो रेंगती फिरती हैं धरती के ऊपर भी श्रीर भीतरभी और फुंकारती रहती हैं इफर उघर, जिससे वातावरण पहरीला होता है-कितने ही गाफिल और लापरवाह लाग ब्दरों के घेरे में आ जाते हैं, साँपों की रस्सी के नाले में बँध जाते हैं. नई नसर्ते एनको अपनी निगरानीमें रखते हुए अपनी-अपनी

أستين ميل سانپ

بهائي عبدالعطيم انصاري أرتست

جيسے أمن مهن جنگ رنگ ميں بهنگ مندر ميں پاپسدید کیول سیاست کی بات که آستین میں سائپ .

سیاست همیشه سیوا اور پریم کا دم بهرتی رهای هم . کانی سلدر هوتی هیں اُس کی بهاونائیں اور کتنے اجهاؤنے هوتے هیں اس کے بریم بھاشن سیاسی اِستیم بر .

جیسےکسی یکنچر هاؤس کے فلمی بردے بر جورثی محصبت کے بناؤتی اداکر!

جمسے سماج سدھار کے ناتک اور بریم بیار کے جھوٹے کردار، سفید آستین کی لمبی کیها میں رهنے والا سرپ راجنیتی کی بین پر بریم کی راگئی سے نتنا آند لیتا کے اور گرل کلدل پر بیتھا پہرا دیتا ہے ۔ کبول اُس کے پھنکار کی دھشت اور وش كا بهم من مائي كرالے كے لاء كاني هوتا هے . إنسانيت كے ساتھ پریم اور همدردی کے کان هماری یه شبهه کامنا کبھی کبھی دل سے نائے بنا نہیں رهای که اُس آستین کا جھٹک دینا هی أحت في

جیسے دھن کے قدیر پر سائپ ناتھ لہراتے ھیں' اسی طرح راجیت کے سنکم پر ناگ انه یہرہ دیتے هیں. راجیم کا بهندار کیول دھن کا ھی نہیں ھوتا ۔ اُس کا بھندار بھی بھی پرکار کا هوتا هے . يه نهنا انوچت نهيں كه أج كے سم جب كه نبَّ نئه ٹیکسوں کی بھرمار ہے . بھرمی کا دی کی بھنڈار ہے اور منشیع کا انص انص دعن هے راجیه کے نکث .

جان کی رکشا سب سے ادھک نقلمادی کی بات فے اور شترو کے مترنا ہوی نادائی ا

ابک شتروائو زبادہ دن مہلت دینے سے ایک کے دو ہرتے میں، اور دو کے چار ، اب بھی کتاء رنگ برنگ کے سرپ چھے ھوئے ھیں' مت بدید کے سور آخوں میں' سا پردایکتا کے غاروں میں' اور راجنتی کے یتاروں مدی . اِن کی زبان کا باریک اور لهردار كرينت أيتم سے كم نهيں' اِس لله كه جان لينا درنين كا مقصد في .

ایک ماکن سیکورں اثدے دیتی ہے کا ان اندرن سے سیکون بجے نکائلی ہے اُن سے کتنی نسلیں بلتی میں . کتنی بیزدیاں چاتی ھیں جو رینکٹی پھرتی ھھی دھرتی کے اُوپر بھی اور بهبتر بهي . اور يهنكارني رهتي هيس إدهر أدهر عس سے واتاورن زهريلا هوتا هـ سائناء هي غافل اور الايرواه لوك خطرون كي گهوره میں آجاتے میں' سانہوں کی رسی کے پالے میں بلدھ جاتے ه ر. نئی نسلیں أن كو اپنی نكرانی ميں ركبتم هوئه اپنی اپنی हेरात की घाटी में 'ताजिकों' की काफी बड़ी आवादी है. ताजिक मुल्क के बहुत पुराने वाशिन्दे हैं और अफ़ग़ानों के बाद इन्हों की आवादो सब से ज्यादा है. आजकत यह .ज्यादातर अफ़ग़ानिस्तान के शुमाल में रहते हैं लास-कर हेरात सूचे में जहाँ वे कुल आवादी के 24 फीसदी हैं; काबुल सूचा (28.8 फीसदी), कताघान-बदखशाँ सूचा (46फीसदी) मजरा शरीफ सूचे में (23.7 फीसदी). वे हिन्दूकुश, गोरबन्द, पंजर्श, नेजराब, न्रस्तान और स्रोगर की पहादियों में भी रहते हैं.

ताजिक मेहनतकश आदमी हैं. लेकिन वे ज्यादातर किसान हैं और जमीन के छौटे-छोटे टुकड़ों पर काम करते हैं. यह लोग चेरीकर कहलाते हैं और बहुत रारीबी में रहते हैं. यह लोग चेरीकर कहलाते हैं और बहुत रारीबी में रहते हैं. सूखी या ताजा मलबरी ही उनकी .खूगक है. बहुत से गाँव में ज्वार का दलिया, जिसमें घास भी मिली रहती है, बहुत जायके से खाया जाता है. हरीकद और बालामरिंग की घाटियों में और उनके जनूब में भी किसानों को लकड़ी के हलों से जमीन जोतते हुए देखा जा सकता है.

किसान अप गानिस्तान की आबादी के 70 फीसदी है', लेकिन उनको सिर्फ दो-तिहाई हैक्टर जमीन की शख्स मिसती है.

खेती की जाने वाजी जमीन का रक्तवा 15,00,000 है, जिसमें से 9,00,000 बड़े जमींदारों के पास है, बाक़ी मुल्लाओं के पास है. 60 की सदी किसानों के पास या तो कोई जमीन नहीं है और किसी के पास है भी तो बहुत कम.

'स्तीकन्दया' नामी इलाकों में, जोकि ग्रुमाली अफग्रा-निस्तान में हैं, इजारों हैक्टर, जिनमें कि साम्केदार लोग काम करते हैं, उन्हें गल्ले का दर नवाँ गट्टा मिलता है. यह लोग अपना नवाँ हिस्सा या अच्छी फसल होने पर पाँचवा हिस्सा पाने के लिये शबो रोज काम करते हैं, कुदालियों से जमीन खोदते हैं. इस तरह के कानूनों से खेती की तरक्षकी नहीं हो सकती.

ध्यफ्गानिस्तान की जिन्दगी इसी तरह चलती रहती है लेकिन साना बदोशों के तम्बुओं में पुराना समन ही क्रायम है. हर नये धार्रेल के महीने में ग्वाले घीर उनके जानवरों के मुन्ड धापने सफ़र के लिये रवाना होते हैं, जैसा कि सिद्यों से करते आये हैं. हर बसन्त को यह जफ़ा क्श घीर मेहनतकश क्राफ़िला ग्रुमाल की जानिव कूच करता है, जबकि खिलां उसे वापस धापने पहले की जगह पर ले आती है. فرات کی گیائی میں فتاوکیں کی گئی ہوی آبادی کے یہ تارائی کے بہت برائے باشادے هیں اور انبائی کے بعد انبیس کے بعد انبیس کی آبادی کے بعد انبیس کی آبادی کے بہت برائے ہیں خاصر هرات صوبہ میں ابنیستان کے شمال میں رہتے هیں خاصر هرات صوبہ میں دخشان صوبہ (46 نبصدی) مزعه شریف صوبہ میں (23.7 نبصدی) ، رہ هدوکش گربات شریف صوبہ میں (23.7 نبصدی) ، رہ هدوکش گربات پنجرش نبیجرش نبرستان اور کہاگر کی پہاریس میں بھی رہتے ہیں ۔

نازک محملت کھی آدمی ھیں ، لیکن وے زیادہ تر کسان ھیں اور زمین کے چھوٹے چھوٹہ ٹکروں پر کام کرتے ھیں ، یہ لوگ چیویکو کھلتے ھیں اور بہت غریبی میں رھتہ ھیں ، سوکھی یا تازہ ملدوں ھی اِن کی خوراک ہے ، بہت سے گئوں میں حوار کا دلیا ا جس میں گھلس بھی ملی رہتی ہے، بہت ذایقہ سے کھایا جاتا ہے ، ھری وں اور بالاسرغب کی گھاٹیوں سیں اور اُن کے جاوب میں بھی کسانوں کو لکڑی کے ہلوں سے زمین جوتاہ ہوئے دیکھا جا سکتا ہے ،

کسان افغانستان کی آبادی کے 70 فیصدی هیں' لیکن آن کو صرف دو تہائی هیکٹر زمین فی شخص ملتی ہے .

کھیتی کی جانے والی زمین کا رتبہ 15,00,000 ہے، جس میں سے 9,00,000 ہڑے زمینداروں کے پاس ھے، باقی ملاؤں کے پاس نے دوں فرمین زمین نہیں ھے اور کسی کے پاس ھے بھی تو بہت کم .

'طیفادیه' دامی علاقی میں' جو که شمالی انفانستان میں هیں' هزاری هیکٹر' جن میں که ساجهدار لوگ کام کرتے هیں انهیں غله کا در نواں کُنها ملتا هے . یه لوگ اپنا نواں حصه یا اچھی فضل هوئے پر پانچواں حصه پائے کے لئے شب و روز کام کرتے هیں' کدائیوں سے زمین کهودتے هیں . اِس طرح کے قانولیں سے کہیتی کی ترقی نہیں هو سکتی .

افغانستان کی زندگی اِسی طرح چلتی رهتی هے ایکن خانهبدوشوں کے تمبروں میں پرانا اُس هی قایم هے ، هر نئے اپریل کے مهینے میں گرائے اور اُن کے جانبروں کے جهند اپنے سفر کے لئے روانہ هوتے هیں جیسا که صدیوں سے کرتے آئے هیں ، هر بسنت کو یہ جاناہی اور متحلت کئی قائلہ شمال کی جانب کوچ کرنا ہے، جب کہ خزاں اُسے واپس اپنے پہلے کی جگہہ پر لے آئی ہے .

मशिकी अक्षरानि जातियों ने अपने खास किरम के जग्दूरी पत्थायती शक्त को कायम रखा है—मगर मगरिबी जातियों, खासकर शिल्जाई और दुरोनी फिरकों का कबीली तकावुन टूट रहा है और उनमें अमीरों और जागीरदारों का खोर बढ़ रहा है. यह जातियाँ अब खाना-बदोशी छोड़कर सिचाई वाली जमीन पर आबाद हो रही हैं. कबीलों के ऊँचे खान्दान तमाम जमीन पर कब्जा कर लेते हैं और कबीले के सरदार बन जाते हैं. यह ऊँचा तबका धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा है. इससे कबीले वालों को जुक्तसान है. यह सरदार खान उन गढ़िरयों से उन जरीद लेते हैं जिन्हें उन्होंने खधार देकर क्रजदार बना दिया है. यह खान सरकार के लिये टैक्स भी वसल करते हैं.

क्रन्धार से .फराइ तक का सफ़र गर्मियों के दिनों में बरदारत नहीं किया जा सकता क्योंकि गर्मी बहुत सखत पड़ती है. मगर बसन्त की शुरूआत में यह जिले बहुत .खुशनुमा हो जाते है. गरिश्क के नजदीक गहरी हिल्मन्द घाटी को यह सड़क पार करती है. 'दिलाराम' नामी जगह के पास से याकुआ नामी रेगिस्तान शुरू होता है. इधर अब खानाबदोशों के तम्बू भी बहुतायत से लगने लगे हैं.

फराह नामी स्वाई दावलसल्तनत, जिसका पहले फैद्रा कहते थे, पहले एक तहजीबी मरकज था. इसके जनूब में वस्तम का मशहूर शहर निमरोज है. पुराने जमाने में यह हिस्सा सीस्तान के नाम से मशहूर था, यहाँ बहुत सी सिंचाई की नहरें थीं और यहाँ की खेती भी बढ़ी चढ़ी थी. इसका सबसे .ज्यादा उक्क यूनानियों के वक्त में हुआ था.

लेकिन मंगोलों ने सब कुछ बरबाद कर दिया. आखिरी हमला तैमूर लन्ग के जिरिये किया गया, जिसने हिलमन्द्र दिया के सब पुरतों और सब सिंचाई की नहरों को बरबाद कर दिया. नतीजा यह हुआ कि रेगिस्तान सीस्तान को पार कर तमाम इलाक़ में फैल गया और आज .फराह की हालत अजहद काबिले रहम है.

फ्राह से शुमाल की तरक जाते हुए, हम काले तम्बुओं (जानाबदोशों) के इलाक को छोड़कर उन जिलों में दाखिल होते हैं जहाँ पश्तो नामी अफराानी जवान बहुत कम सुन पडती है.

हम एक पहाड़ी सड़क पर चलकर शुमाली अफ़राानि-स्तान चले जाते हैं, जहाँ हम हेरात की जरखेज घाटी में रुकते हैं. अफ़राानिस्तान का चौथा नम्बर का शहर हेरात इस घाटी के ठीक वस्त में है, जो लम्बाई में 120 क्लोमीटर और चौड़ाई में 30 क्लोमीटर है.

हेरात की पुरानी शान चली नई है. शहर की आवादी आब 25,000 आदमियों से .ज्यादा नहीं है, लेकिन यह एक पुश्तेनी रिवायत है कि मंगोलों के हमले के पहले हेरात की आवादी इस लाख थी. متعرقی أفغایی جاتیرں نے لیئے خاص قسم کے جبیری پلچایتی شکل کو قایم رکھا فیسسکر منربی جاتیرں خاص کر فلخائی اور فترانی نوقرں کا قبطلی تعارن ٹرے رہا ہے اور ان میں امیروں اور جاگیرداروں کا زور بڑھ رہا ہے ۔ یہ جاتیاں اب خانہدوشی چھوڑ کر سنچائی رالی زمیں پر آباد هو رهی هیں . قبیلوں کے اُرنچے خاندان تمام زمیں پر قبضہ کر لیتے هیں ، قبیلوں کے اُرنچے خاندان تمام زمیں پر قبضہ کر لیتے هیں اور قبطے کے سردار بین جاتے هیں . یہ اُرنچا طبقہ دهیرے دهیرے بڑھتا جا رہا ہے . اِس سے قبیلے والوں کو نقصان ہے . یہ سردار خان اُن گذریوں سے اُرن خرید لیتے هیں جنہیں آنہوں سردار خان اُن گذریوں سے اُرن خرید لیتے هیں جنہیں آنہوں نے اُدھار دیمر قرضدار بنا دیا ہے . یہ خان سرکار کے لئے تیکس بھی وصول کرتے هیں ۔

قلدهار سے فراح تک کا سفر گرمیوں کے دنوں میں برداشت نہیں کیا جا سکتا کیونکہ گرمی بہت سخت پڑتی ہے ۔ مگر ہسلت کی شروعات میں یہ ضلعے بہت خوشلما هو جاتے هیں ۔ گرشک کے نودیک گروو هلمندگهائی کو یہ سوک پار کرتی ہے ۔ ادارام نامی جگہہ کے پاس سے یاقوہ نامی ریکستان شروع هونا ہے ۔ ادھر اب خانع بدوشوں کے تمبو بھی بہوتایت سے نگاہے هیں ۔

فرآے نامی صوبائی دارالسلطت کیس کو پہلے فیدرہ کہتے تھے پہلے ایک، تہذیبی مو کو تھا ۔ اِس کے جنوب میں رستم کا مشہور شہر نسروز فے ، پرائے زمائے میں یہ حصه سیستان کے نام سے مشہور تھا یہاں بہت سی ساجائی کی نہریں تھیں اور نہاں کی کہیتی بھی بڑھی چڑھی تھی ، اِس کا سب سے زیادہ عورج بہانالمیوں کے وقت میں ہوا تھا ۔

لیکی منکولس نے سب کچھ برباد کر دیا ۔ آخری حمله تیمور انگ کے ذریعہ کیا گیا ، جس نے هلمند دریا کے سب پشتوں اور سب سنچائی کی نہروں کو برباد کر دیا، نتیجہ یہ هوا که ریکستان سیستان کو بار کر تمام علاقہ میں پھیل گیا اور آج فراہ کی حالت ازدد تابل رحم ہے ۔

فرآج سے شمال کی طرف جاتے ھوئے' ھم کالے تبہوؤں (خامہ بدوشوں) کے علاقے کو چھرز کر اُن ضلعوں میں داخال ھوتے ھیں جہاں پشتو نامی افغانی زبان بہت کم سن بیتی ھے .

هم ایک پہاری سرک پر چل کر شمالی انبانستان چلے جاتے هیں' جہاں هم هرات کی زرخهر گھاتی میں رکتے هیں۔ انبانستان کا چوتھا تدبیر کا شہر هرات اِس گھاتی کے تھیک وسط میں ہے' جو لیہائی میں 120 کلومیٹر ہے ۔ لیہائی میں 30 کلومیٹر ہے ۔

مرات کی پرانی شان چلی گئی ہے ، شہر کی آبادی آج 25,000 آدمیوں سے زیادہ نہیں ہے، لیکن یہ ایک پشتیلی روایت ہے که ملکولوں کے حملہ کے پہلے عرات کی آبادی دس لاک تم . दुनिया में ऐसा कोई मुल्क नहीं है जहाँ कि जफरानि-स्तान की तरह बाशिन्दों की खाना बहोश जिन्दगी में बदलाब हुए हों, तमाम साल भर जानवरों के मुन्ड के मुन्ड चरते रहते हैं और मुल्क की चौथाई जावादी हमेशा चरागाह ही दूँ दने में मशापूल रहती है. गर्मी के मोसम की गरमी जन्द के चरागाहों को मुखा देती है, जिससे हजारों अफ़्सान शुमाल से जन्द और मशरिक से मसरिब तक हर साल चरागाहों की तलाश में भटकते रहने पर मजबूर होते हैं. भेड़ों, बकरों, और ऊँटों के बड़े-बड़ मुन्ड सड़कों में भरे रहते हैं और उनके साथ उनका स्याह तम्बू और सीधा सादा सामान भी रहता है. अपने 'खानों' और बड़ -बूढ़ों की देख-रेख में यह काफिले हमेशा चलते फिरते रहते हैं.

जब खिजाँ आती है तो यह क्राफिले अपने जाड़ों की चरागाहों की तरफ वापस चले जाते हैं. हरेक क्रबीले और फिरक्रे के अपने खास रास्ते हैं, और उन लोगों की खराबी होती है जो दूसरे क्रबीलों के चरागाहों को छीनने की क्रोशिश करते हैं. अच्छे चरागाहों की क्रमी के सबब से कई जिलों में इस तरह के हथियार बन्द मगड़े होते रहते हैं जहाँ पर हमलावरों के खिलाफ हथियारों का इस्तेमाल किया जाता है.

यह जानाबदोश धीरे-धीरे घूमते हैं — कस्बों में ऊन, चमड़ा और कर बेचते हैं और बदले में रूई का कपड़ा, बारूद, कारतूस और राइफ़ल ज़रीदते हैं.

क्यादासर लोग हथियार रखते हैं. जिन्दगी उनके लिये आराम की चीज नहीं है और वे हमेशा चौकन्ने रहते हैं. उनकी मुश्किलात में उनकी बहादुर अक्षग्रान औरतें, माँ और बच्चे भी उनका साथ देते हैं. अपने शहर की बहनों की तरह गाँव की अफ़्ग़ानी औरतें अपनी खानाबदोशी में पर्दे का इस्तेमाल नहीं करतीं.

अफ़राान एक .खूबस्रत और मेहनतकश क्रीम है. वे लम्बे मजबूत पट्टों बाले, नपे तुले सिडील कद के और घुँघराले बालों वाले होते हैं.

अफ़राान अपनी आजादी की मोहब्बत के लिये मशहूर हैं. बुढ़े अपनी लड़ी गई पुरानी लड़ाइयों को बयान करने के लिये हमेशा तैयार रहते हैं.

अफरानिस्तान ने बरतानिया से तीन खड़ाइयाँ लड़ी. 1838 42 की ज'ग में अंग्रेजी .फीजें हारीं. दूसरी खड़ाई 1878-80 में हुई. इस जंग के नतीजें की शकत में अफ़रानिस्तान बरतानिथा के पूरे क़ब्जे में नहीं तो मातेहलीं में तो आ ही गया. सन 1919 में लड़ी गई तीसरी जंग से, जिसमें अफ़रानिस्तान के साथ सोवियत रूस की .फीजें भी थीं, अफ़रानिस्तान को आजादी मिज गई. فلیا میں ایسا کوئی مملک کیس کے جہاں کہ انتظامیان کی طرح باشندس کی خاتعبدرہ زندگی میں بدائو ہوئے ہیں اور نمام سال بھو جانوروں کے جابت کے جہات چرتے رہتے ہیں اور ملک کی چربھائی آبادی حمیشت چراگلا ہی تھ نتھلے میں مشنواں رہتی ہے ۔ گرمی کے موسم کی گرمی جنوب کے چراگاہوں کو سکیا دیتی ہے ۔ جس سے هزاری اندان شمال سے جنوب اور مشرق سے منرب تک ہر سال چراگلہی کی گلش میں بھٹکتے رہنے چہات سز وں میں بہرے رہتے ہیں اور اُن کے ساتھ هزاروں برے جہات سز وں میں بہرے رہتے ہیں اور اُن کے ساتھ هزاروں اسی چلتے رہتے ہیں ۔ اُن کے ساتھ اُن کا سیاہ تمبو اور سیدھا سادہ سامان بھی رہتا ہے ۔ اپنے تخاتیں ' اور برے برزہوں کی دیکھ ریکھ میں یہ دانانے ہمیشہ چلتے بھرتے رہتے ہیں ۔

جب خزاں آئی ہے تو یہ قائلے اپنے جازوں کی چراگانیں کی طرف واپس چلے جاتے ہیں۔ ہو ایک قبیلے اور فرقے کے اپنے خاص راستہ میں اور اُن لوگوں کی خرابی ہرتی ہے جو دوسرے قبیلوں کے چراگاموں کو چھینلے کی کوشش کرتے میں اچھے چراگاموں کی کے سبب سے نئی ضلعوں میں اِس طرح کے حالف میں بید جہاں پر حملہ آوروں کے خالف متھاروں کا اِسعتمال کیا جاتا ہے ۔

یه خانه بدوش دهورے دهورے گورمتے هیں ۔ قصور مهں اور نو بیچتے هیں اور بدال میں روئی کا کوڑا بارون کا کرتوس اور رائش خریدتے هیں ،

زیادة تر لوگ هتیار رکھتے هیں . زندگی أن كے لئے آرام كی چيز نہيں ہے اور وے هميشه چوننے رهتے هيں ، أن كي مشكلات ميں آن كى بهادر انهاں عورتیں' ماں اور بچے ہیں آن كا ساتھ ديتے هيں اينے شہر كى بهنوں كى طرح كاؤں كى انفانى عورتيں اپنى خانه بدوھى ميں پردے كا اِستعمال نہيں 'وتيں .

انفان ایک خوبصورت اور محدثت کس قوم هے . و لدید مضبوط پہیں والے نهد تلے سدول قد کے اور گھدکھوالد بالوں والے مور هوں .

افدان اپنی آزادی کی محبت کے لئے مشہور ھیں ، برزھے اپنی اوئی گئی پرانی لوائیوں کو بیان کرنے کے لئے ھمیشہ نیلر رھیے ھیں ،

افغانستان نے برطانیہ سے تین لوائیاں اوب، 448 18 کی چنگ میں انکریزی فوجیں ھاریں ، درسری لوائی 20-1878، میں ھوئی ، اِس جنگ کے نابجے کی شکل میں افغانستان برطانیہ کے پورے قبضے میں نہیں تو مانتحتی میں تو آھی گیا ، سی 1919 میں اوپی تیسری جاگ سے جس میں افغانستان کو ساتھ ھی سوویت روس کی فوجوں بھی تھیں' افغانستان کو ساتھ ھی سوویت روس کی فوجوں بھی تھیں' افغانستان کو آئی ۔

राजनी पहले चंगजराँ के जरिके और बाद की जमीर हुसेन के जरिये बरबाद कर विद्याराया था. इस चोट से कमजोर होकर शहर का जबात हो बला है, उसकी पुरानी चमक-दमक के जासियी निशान इस दूरी हुई शानदार कमें और एक पुराना किला ही रह गये हैं.

राजनी सूबे में अफ्यान क्रीम का 16,25,000 आबादी वाला शिलां कि किरका रहता है. हजाराजात तक सारा राजनी का पठार इन्हीं जातियों से बसा है, जिनका पेशा जराअत और गोदाम इक्ट्रे करना है, मगर वहाँ मिट्टी की बहुत कभी है और शिलां इयों में से एक हिस्सा हर साल कानाबदोशी के लिए भारत की तरफ निकल जाता है. और भी जन्म की एक और बड़ी, फैली हुई घाटी में मुल्क का पुराना दारलसल्तनत क्रन्धार है. यहाँ की हरारत सदा जाड़ों में भी पानी जमने की हरारत से ज्यादा नहीं धटती. क्रन्धार जन्मी और जन्मी-मगरिबी अफ्यानिस्तान का एक बड़ा तिजारती मरकज है. काबुल जाने वाली सड़कों और हरात को भारत से मिलाने वाले रास्तों का भी यह मरकज है.

क्रन्धार और काराह सूबे जिनके जरखेज नखिलस्तान हेलमन्द, अररान्दाब और फ्राहरूद की घाटियों में हैं, 14,40,000 आबादी वाले दरूदी फिरक के हैं—जोकि मुस्क के हकूमत करने वाले अफरान फिरकों में से सब से जबरदस्त हैं. इसी फ्रिक में से हकूमत करने वालों और ऊँच ओहदों के सरकारी काम करने वालों को छाँटा जाता है.

राजनी से कन्धार जाने वाली सड़क से गुजरने पर हम किसानों को अपने छाटे से खेतों को अपने लकड़ी के हलों से जोवते या पस्थर और लकड़ी की छुदालियों से खोदते देख सकते हैं. सार जनूबी अफग़ानिस्तान की (हजाराजात की पहाड़ी वलहिटयों का छोड़कर) खेती सिचाई के ऊपर मुनहिंसर है, मगर सिंचाई बड़े ही पुराने करीकों से हाती है, वे पुराने बाँध, जिन्होंने यहाँ बिचाई से बड़े-बड़े जरहे ज नखलिस्तान बना दिये थे, अब नहीं रहे. नये बाँध बनाये भी नहीं जा रहे हैं. परिया और पराकोशिया के तबारीकी मशहूर शहरों के आज खंडहर ही वहाँ नजर आते हैं, पुरानी बस्तियों के खंडहर भी रेत से पटे जा रहे हैं.

क्रम्बार से फराइ जाने वाली सड़क पर भेड़ों के बड़े -बड़े-मुन्ड चरते हैं. काली पगड़ी और ढीले लबादे पहने अफ़ग़ान गर्डारये एन्डें चराया करते हैं.

मुल्क की माली जिन्दगी में जानवरों का पाला जाना भी खास बहमियत रखता है क्योंकि इसके जरिये बहुत सा कच्या सामान जैसे उन, चमेदा और काराकुल दरामद के जिये पैदा होता है. فوئی پہلے چاکیو خاں کے خرید اور بعد کو آنیو حسون کے گریدہ برباد کر دیا گیا تھا۔ اِس چوٹ سے کبوور ہو کو شہر کا ذوال ہو چھ ہے اُس کی برانی جدک دسک کے آخری انسان کچھ گوٹی ہوئی شاندار تبریں اور ایک پرانا قلعہ ہی رہ گئے ہیں ۔

فزئی موبه میں انغان دوم کا 16,25,000 آبانی والا فلائی فرقه رهنا هے . هزارهجات تک سارا غزئی کا یتهار انهیں جانیوں سے بسا هے جن کا پیشه زراعت اور گردام اِنهائے کرنا هے مگر وهارمنی کی بهت کمی هے اور غلقائیوں میں سے ایک حصه هر سال خانه بدوشی کے لئے بهارت کی طرف نکل جاتا هے . اور بھی چنوب کی ایک اور برتی پیهائی هرئی گهائی میں ملک کا پرانا دارالسطنت قلمهار هے . یہاں کی حرارت سدا جازوں میں بھی پانی جمنے کی حرارت سے زبادہ نہیں کہائی . قلدهار میں بھی پانی جمنے کی حرارت سے زبادہ نہیں کہائی . قلدهار جنوبی اور جنوبی افغانستان کا ایک برا دجارتی صرکو هے . کابل جانے والی سرتوں اور هرات کو بهارت سے ملانے والے راستوں کا بھی یہ مرکز هے .

قندعار اور فاراح صوبے جن نے زرخفز نخلستان هیلمند؛ افغداب اور فرا رود کی گھائیوں میں هیں؛ 14,40,000 آبادی والے درودی فرقے کے هیں۔۔جو که ملک کے حکومت کرنے والے انغان فرقوں میں سے سب سے زبردست هیں ، اِسی فرقے میں سے حکومت کرنے والوں اور اُرنچے عہدوں کے سراباری کام کرنے والوں کو چھانڈا جاتا ہے .

فزئی سے قلدھار جانے والی سرک سے گذرنے پر عم کسانوں
کو اپنے چھوٹے سے کھیتوں کو اپنے اکتری کے هلوں سے جونتے یا پتھو
اور لکتری کی کدالیوں سے کھردتے دیکھ سکتے هیں ، سارے جلوفی
افیانستان کی (هزارة جات کی بہاڑی تاہتیوں کو چھوڑ کر)
کھیٹی سننچائی کے آوپر منحصو ہے، مگر سنچائی بڑے ھی پرائے
طریقوں سے ھوٹی ہے، وے برائے باندہ، جنھوں نے یہاں سنچائی
سے بڑے بڑے زرخیز نظاستان بنا دیئے تھے، اب نہیں رہے ،
تولیشی سشہور بشہور نے یہا رہے میں ، ایری اور ایراکرشیا کے
تولیشی سشہور بشہور نے کہاندر ھی وھاں نظر آتے ھیں،
پرائی بستیوں کے کہاندرہی رہت سے بڑے جا رہے ھیں ،

قلدهار سے فراح جالے والی سڑک پر بھدروں کے بڑے بڑے جید چیند چرتے میں ، کالی پکڑی اور دمیلے لبادے پہلے اُمغان گذریے اُنھیں چرایا کرتے میں ،

ملک کی مالی زندگی میں جانوں کا بالا جانا بھی خاص المدیت رکھا کے کوئیت اس کے ذریعہ بہت سا کتھا سامان جمیت اور کوائل درآمد کے لئے پیدا ہوتا گے .

अक्रगान जातियाँ खास तौर पर जन्द की तरक पाई जाती हैं, जबकि हिन्दूकुश के शुमाल में मुकीम मुल्क के बाक़ी हिस्से में, अफ़गान शुमार में कम व थाड़े ही हैं.

अक्ष गानी चार खास हिस्सों में बँटे हैं—शरबानी, रिल्जाई, कैरलानी और गरश्त. इनमें से भी हर शाख़ कई फिरक़ों, खान्दानों और बढ़े या छोटे क्षबीलों में तक़सीम हो गई है. मगरिबी गिरोह के खान्दानी क़बीलों का हकूमतीइन्त-जाम पुश्तेनी, 'खान' गामी अफसर करते हैं. लेकिन मशरिक़ी कैरलानी गिराह आज भी थड़े बुढ़ोंके पचायती गिरोह जिन्हें 'जिगी' कहा जाता है, क़बीलों की तनजीम करते हैं.

श्रकरानिस्तान एक शाही ख़ुद्मुख्तार मुल्क है. यहाँ का शाह, जो साथ ही साथ तमाम की जी दस्तों का कमान्डर-इन-चीफ भी है, यहाँ का सब से ऊँचा हाकिम है. यहाँ की पार्लीमेंट में दो चेन्बर, एक हकूमता मजलिस, जिसके जुमाइन्दे रियाया चुनती है और एक सिनेट होता है जिसके मेन्बर ख़ान्दानी श्रमीरों और सरदारों में से शाह की राय के

* मुताबिक चुने जाते हैं.

कानून के जरिये पालींमेंट को बिल पेश करने व पास करने की आजादी है. उसके जरिये सरकारी कानून भी बनाये जाते हैं और मुलहनामों का मंजूर करने का हक भी उसी को है. दूसरे लक्जों में पालींमेंट को कानून बनाकर बजीरों को उनके मुताबिक हकूमत के लिये जिम्मदार बनाना है. पर अस्लियत में कानूनी मजलिस में ऐसे कायदे भी हैं, जिन्होंने पालींमेंट की ताक्कतों को महदूद कर दिया है जैसे कि क़ानून में यह भी है कि हकूमतो नुमाइन्दों की मजलिस के फैसले सरकारी पालिसी या इस्लाम के खिलाफ नहीं होने चाहियें. पालींमेंट सरकार के ऊपर अदम ऐस्माद की तजबीज नहीं पास कर सकती और न बजीरों की मजलिस के इस्तीफ की ही मांग कर सकती है. तमाम बजीर बजीर आजम की राय से शाह के जिरये कायम किये या निकाले जाते हैं.

इस वक्त जाहिरा तौर पर श्रक्ष ग्रानिस्तान ने भारती हद के 'आजाद क़बीलों' की दिकाजती पालिसी को छाड़ दिया है. इन क़बीलों के कुछ सरदारों का यह ऐतवार है कि बरतानिया ने श्रक ग्रानिस्तान को उनके ख़िलाफ करने के लिये कुछ माली रियायतें दी हैं जिनमें श्रक ग्रान माल के भारत से होकर गुजरने देने की मंजूरी श्रीर उस मुल्क से प्यादा तिजारत करने की मंजूरों भी शामिल है.

अगर यहाँ पर देखा जाये कि अक्तरानिस्तान की प्रयादातर दरामद भारती हद के अन्दर से ही होती है ता

राय मजकूर दुरुश्त मालूम देती है.

काबुत से जन्म की तरफ मुद्दकर, कुछ घन्टों के सफर के बाद राजनी नामी सूबे के राजनी नामी मरकज में ही पहुँचते हैं. महमूद राजनवी के वक्त में राजनी ही मुस्क का दावलसस्तनत था. उसकी शोहरंत की शुरूकात दसवी सदी में ही हो गई थी, जबकि वह जनूची-मशरिक्षी हरान की सिसासत का मरकज था.

افغان جاتیاں خاص طور پر جانب کی طرف پائی جائی بھائی میں متیم ماک کے باقی حصے میں افغان شمار میں کم و نہورے هی هیں ۔

الفنانی چار خاص حصون میں بناتے هیں۔۔۔شربائی فلذائی کیرائی ارر گرشت ۔ اِن میں سے بھی هر شائے کئی فرقوں خاندانوں اور بڑے یا چھوٹے قبیلوں میں نقسیم دو گئی ہے ۔ مغربی گروہ کے خاندانی قبیلوں کا حکومتی انتظام پشتیلی مغربی نامی انسر کرتے هیں ، لیکن مشرقی کیرائنی گروہ میں آج بھی بڑے بوڑھوں کے پنچابلی گروہ جنھیں 'جرگه' کہا جانا ہے تھی بڑے بوڑھوں کے پنچابلی گروہ جنھیں 'جرگه' کہا جانا ہے قبیلوں کی تنظیم کرتے هیں ،

افغانستان ایک شاهی خودسختار ملک هے ، یہاں کا شاه جو ساتھ هی ساتھ تمام فوجی دسترں کا کاندر-ان-چیف بھی هے یہاں کا سب سے اُرنچا حاکم هے ، یہاں کی پارلیمنٹ میں دو چیمبر ایک حکومتی متجلس جس کے نمائندے رعایا چنتی هے اور ایک سنیٹ هوتا هے جس کے میمبر خاندانی امیروں اور سرداروں میں سے شاہ کی رائے کے مطابق چنے جاتے هیں ،

قانوں کے ذریعہ وارلیمینٹ کو بل پیش کرنے و پاس کرنے و پاس کرنے فی آزادی ہے ۔ آس کے ذریعہ سرکاری قانوں بھی بنائے جاتے دوسرے افظوں میں پارلیمینٹ کو قانوں بنا کر وزیروں کو آن کے مطابق حکومت کے لئے زمدار بنانا ہے ۔ پر اصلیت میں فانونی مجلس میں آیسے قاعدے بھی ہیں' جنہوں نے پارلیمنٹ نی طافتوں کو محدود کر دیا ہے جیسے کہ فانوں میں یہ بھی ہے طافتوں کو محدود کر دیا ہے جیسے کہ فانوں میں یہ بھی ہے کہ حکومتی نماندوں کی مجلس کے فیصلے سرکاری پائیسی یا آمام کے خلاف نمهیں ہوئے چاندئیں ، پارئیمینٹ سرکاری پائیسی یا محلس کے خلاف نمهیں ہوئے چاندئیں ، پارئیمینٹ سرکار کے آوپر محلس کے استینے کی می مانگ کر سکتی ہے ۔ تمام وزیر وزیر محلس کے استینے کی می مانگ کر سکتی ہے ۔ تمام وزیر وزیر محلس کے استینے کی می مانگ کر سکتی ہے ۔ تمام وزیر وزیر

اِس وقت ظاهرہ طور پر انفانستان نے بھالوتی حد کے 'آزاد قبیلوں' کی حفاظتی پالیسی کو چھوڑ دیا ہے ۔ اِن قبیلوں کے کچھ سردازوں کا یہ اعتبار ہے که برطانیہ نے انفانستان کو اُن کے خلاف کوئے کے لئے کچھ مالی رعایتیں دی ھیں جن میں انفان مال کے بھارت سے ھو کر گذرنے دیئے کی منظوری اور اُس ملک سے زیادہ تجارت کرنے کی منظوری ھی شامل ہے ۔

اگر یہاں پر دیکھا جائے کہ افغانستان کی زیادہ تر درآمد یہارتی حد کے اقدر سے ھی عوتی ہے تو رائے مذکور درست معلوم دیکی ہے۔

کابل سے جہارت کی طرف موکر کچے گھٹارں کے سفر کے بعد غونی فیامی صوبہ کے غونی نامی مرکز میں ھی پہرٹنچتے ہیں ، محصود غالوی کے وقت میں غزنی ھی ملک کا دارانسلطنت کیا ، آس کی شہرت کی شرعات دسریں صدی میں ھی ھو گئی تھی جب کہ وہ جنوبی مشرتی ایران دی خیاست کا مرکز تھا ،

जन्द की तरक यह सूत्रा जन्दी इलाके के हिस्से से
निला हुआ है जिसमें अकराानी पहाड़ी वारीन्दों की, जाडजी,
मनाल, जाड़न, दर्नेशक्तेल, कज़ीरी वर्रों रा जितियाँ वस्ती
हैं. इन पहाड़ी गाँवों में बड़ी ख़रीबी है. यहाँ की मिट्टो की
तोल सोने के बराबर है, क्योंकि लोग उसे हाथ और सर में
भर और रखकर ऊँचे पहाड़ों में अपने चट्टानी खेतों तक
ले गये हैं. अपने इस अन्थक मेहनत से भी लागों का गुजर
नहीं होती और क़बीले के क़बीले .खूराक हासिल करने के
लिये भारत की तरफ चल पड़ते हैं.

मशरिकी और जन्नी सूबा एन जंगजू अक गान जातियों के रहने के इलाक हैं जोकि कोह सुलेमान से इधर खली आई हैं. शुमाल और मगरिव की तरफ बढ़ कर इन जातियों ने बाहरी हमलावरों के रास्ते को रोक दिया और पहली अक गान रियासत की बुनियाद ढाली. जन्नी हद के पार भी कई जिले हैं जोकि अक गानों से आवाद हैं. यह कबीले, जोकि अपने सुरूक से अलग कर दिये गये हैं, 'आ जाद कबीलों के इलाके' नागी अपनी खास अभीन में रहते हैं. एक सदी से वे अपने ओं के जिर्थ जीते जाने की कोशिशों का मुकाबला करते रहे हैं. कितने ही छोटे-छोटे कौजी दस्ते इनका दबाने के लिये भेजे जा चुके हैं; चन्दे इकड़े किये जा चुके हैं और उनके सरदारों को रिश्वत देकर फोड़ लेने की कोशिश भी हूई है, पर उनके हिका जती मोचें को कभी नहीं तोड़ा जा सका.

अक्षतानिन्तान में आने वाले मुसाफिर यहाँ की जातियों और बाशिन्दों में फेली हुई बद्धन्तजामी को देखकर दंग रह जाते हैं. यह इस मुल्क की जुगराकियायी हालत का ही नतीजा नहीं है, जिसने कि पिछले दिनों में कई तरह की जातियों के लिये रास्ता बनाया. इसका सबब कुछ हद तक बरतानवी नी-आबादयाती पालिसी भी है, जिसने इस मुल्क की हदों को भी क्रायम किया. बरतानिया अक्षतानिस्तान को एक बक्तर (इकावटी) रियासत बनाने पर तुला हुआ था. इस तरह उसकी हदों में ऐसे जिले भी हैं जहाँ तुर्कमानी, उजवेक व ताजी जातियाँ रहती हैं, जबिक जनूब में 40 लाख से स्थादा (41, 78,500) अफ्गानी रियाया अपने मुल्क से अलग करके हिन्दुस्तान और बलोविस्तान में मिला दी गई है. यह हिस्सा आजाद क्रबीलों का और बन्नू, पेशावर, कोहाट, देरा इस्माईल खाँ और भारती हजारा के शुमाली सरहवी सूचे में है.

अफरानिस्तान में रहने वाली खास जावियाँ अफरान (44,84,562), ताजी (21,06,000), उज्जवेक (8,02,00%) और हजारा (8,67,000) हैं. वाकी रियाया तुर्कमानियों जार दूसरी रीर जातियाँ जैसे न्रस्तान, तैमिनी, फर्जे को ह, उमरोही, वैसूरी, बलोची, अरब, हिन्दुस्तानी, तुर्की, यहकी, स्वानीं, कुर्व और कपचाक लोगों से बनी है.

جرا ہے جس میں افغانی پہاری باشانیوں عالی کے حصہ بھ ملا جوا ہے مثال افغانی پہاری باشانیوں کی جات جی مثال جات ہیں۔ اور جانیاں بستی ہیں ، اور پہاری گاوں میں بتری غریبی ہے ، یہاں کی مالی کی تول سراے کے برابر ہا کیونکہ لوگ آسے مانی اور سر میں بھر اور رکھ کر اونچے پہاروں میں اپنے کھیترں تک لے گئے ہیں، اپنے اِس انتها معطت سے بھی لوگوں کی گذر نہیں ہوتی اور قبیلے کے قبیلے معطت سے بھی لوگوں کی گذر نہیں ہوتی اور قبیلے کے قبیلے خوراک حاصل کرنے کے لئے بھارت کی طرف چل پرتے ہیں ،

مشرقی اور جاہبی صوبه ان جاکھو افغان جاتھوں کے رہائے کے علاقے مدیں جواکہ کوہ سایمان سے ادھر چلی آئی ہیں ، شمال اور مغرب کی طرف ہرت کو ان جاتھوں نے باھری حمله آرروں کے راستے کو روک دیا اور چہلی افغان ریاست کی بنیان ڈائی ، جانبی حد کے بار بھی کئی ضلعے ہیں جو که افغانوں سے آبان ہیں ، یہ فبدائے ' جو که اپنے ملک سے ایک کر دیئے گئے مھی ' آزاد قبیلوں کے علاقے' نامی آپنی خاص زمین میں رہائے کی کوششوں ایک صدی سے رہے انگریزوں کے ذریعہ جیتے جائے کی کوششوں ایک صدی سے رہے انگریزوں کے ذریعہ جیتے جائے کی کوششوں کو دہائے کی نئے بھیجے جا چکے ہیں؛ چذرے ارتھے کئے جا چکے میں اور اُن کے سرداروں کو رشوت دیکر پھرڈ لیائے کی کوششیں بھی ہوئی ہیں؛ پر اُن کے سرداروں کو رشوت دیکر پھرڈ لیائے کی کوششیں بھی ہوئی ہیں؛ پر اُن کے خطاطتی مورچہ کو کبھی نہیں تورا بھی ہوئی۔

انفانستان میں آنے والے مسافر یہاں کی جاتیوں اور باشادوں میں پہلی بدانتظامی کو دیکھ کر دنگ رہ جاتے ھیں۔ یہ اِس ملک کی جغرانیائی حالت کا ھی تقیود نہیں ھے، جس نے که بحجائے دنوں میں کئی طرح کی جاتیوں کےلئے راسته بلیا ۔ اِس کا سبب نجع حد تک برطانوی نوآبادیاتی پالیسی بھی ھے، جس نے اِس ملک کی حدوں کو بھی قایم کیا ، برطانیۃ افغانستان کو ایک بفر (روکارتی) ریاست بنانے پر بلا ہوا تھا ، اِس طرح اُس کی حدوں میں ایسے ضلعے بھی میں جہلی ترکمانی، آزبیک و تازی جاتیاں رهتی ھیں، جب که جنوب میں 41,78,500 افغانی میں جب رہایا اپنے ملک سے الگ کو کے هندستان اور بلوچستان میں میں دی گی ھے ، یہ حصہ آزاد قبیلوں کا اور بلوچستان میں میں میں قبرہ اِسمعیل خاں اور بھارتی ہوزارہ کے شمالی مغربی سرحدی موجہ میں ھے ۔

أنيائستان ميں رهاي والي خاص جائياں أنغان (84'84'562)؛
تازى (9,02'000) (21)؛ أزيدك (9,02'000)؛
أور مؤارة (67,000) (8) هيں ، باقى رعايا تركمائيوں أور دوسرى فير جاتيوں جيسے تورستان؛ طيملى؛ دور كولا، جمهيدى؛ تيمورى؛ يلوچى؛ عرب، هندستانى؛ تركى؛ يهودى؛ كيائى؛ كود أور كيوپاك لوگيں سے بلى هى .

हिन्दुकुश का बढ़ा पहाड़ मुल्क को दो हिस्सों में तक्क सीम कर देता है—ग्रुमाली और जनूबी, जिनमें कि जुरारिक याथी और आबादी से ताल्लुक रखने वाला कर्क है. मुल्क के सब से बड़े जराअती नखलिस्तान श्रुमाली अकतानिस्तान में ही हैं, जहाँ दरजनों जातियाँ और किरके आबाद हैं. यही हिस्सा जनूबी अकरानिस्तान को खूराक देता है जोकि चट्टानी और अकरान जातियों से बसी ऊसर जमीन है!

सब से उँचे कोहिस्तान शुमाल-मशरिक में हैं, जहाँ कि समन्दर की सतह से तीन या चार हजार मीटर तक की ऊँचाई के बहुत से दरें हैं. हिन्दूकुश कोह श्रवाबा के नाम से आगे फैलकर श्रामू दिरया और सिंध के बीच के मैदान में पानी बाँटने वाले का काम करता है. वस्ती श्रकतानिस्तान 'हजार जत' नाम के सकत बहाड़ी हिस्से से बना व घरा है. मगरिब की तरफ कोह श्रवाबा की पहाड़ी तीन सिलसिलों में बँट जाती है जोकि धीरे-धीरे लक्कबा, हलमन्द और रेगिस्ताब की चट्टानी और बालुदार जमीन में सन्दील हो जाती है.

अक्रग्रानी जातियों की पैदाइशी जगह भारत सुलेमान पहाक्यों के उस पार है. ब्लाचिस्तान चुग्रताई के पहाड़ों के

जन्ब में है.

यह पहाड़ी सिलसिले मुल्क को अलग-अलग हिस्सों में तक़सीम कर देते हैं, गांकि हाल ही में बनी सड़कों ने अलग अलग सूत्रों को एक धागे में बाँधने में मदद दी है—लेकिन हालत में सुधार नहीं हुआ है. शुमाली और जनूबी हिस्सों को मिलाने वाली एक जास कड़ी खाना-बदोश अफग़ान जातियाँ हैं, जांकि हर साल मुल्क को पार करती हैं और जनूब से शुमाल हेरात, मेमाना और कथाधान-बद्खशाँ के सूबों की तरफ जाती हैं.

श्रक्ष ग्रानिस्तान का मशिरकी सूबा भारती सरहद से मिला हुआ है. इस सूबे का वस्त जलालाबाद का मैदान है. यहाँ की श्राब-हवा गरम है, जहाँ कि खजूर व गन्ने की खेती होती है. काबुल श्रीर कीनार निदयों की घाटियाँ बहुत घनी श्राबाद हैं; पर शुमाल की तरफ नूरस्तान नामी पहाड़ है जो क श्रभी तक दुश्वारगुजार ही है.

नदी की घाडियों का झाड़कर इस सूचे की सारी जमीन चरक्केज नहीं है और खेती सिर्फ पहाड़ों पर विखरे हुए अलग

अलग खेतों पर ही होती है.

मशरिकी सूबों की आवादी अकराान जातियों से बनी है जोकि कोहचानी. शनवारी, मोहमन्द, सकी वरीरा नहल की हैं. इनमें से कुछ जातियाँ अभी भी गारों में रहती हैं. स्वाई मरकज जलालाबाद ही यहां का एक क़स्बा है. पेशावर से काबुल जाने वाले रास्ते पर आवाद यह जगह काबुल के अमीर तबके के लोगों की जाड़ों के रहने की जगह है. इसके छोटे शहरों में बहुत से खूबस्रत बागीचों से बिरे हुए शाही महल भी हैं. مدوکش کا بوا پهار ملک کو دو حصوں میں تقسیم کو دیتا ہے۔ شمالی اور جنوبی جن میں که جغرافیائی اور آبادی سے نمالی کے سب سے بور زراعتی تنظستان شمالی افغانستان میں هی هیں جہاں درجنوں جاتاں اور فرقہ آباد هیں یہی حصه جنوبی افغانستان کو خوراک دیتا ہے جو که چتانی اور افغان جاتیوں سے بسی ارسر زمین ہے ،

سب سے آونچے کوھستان شدال ، مشق میں بھیں' جہاں کہ سمندر کی سطع سے تین یا چار ہزار میڈر تک کی اونچائی کے بہت سے درے ھیں ، ھدو کش' کوہ ابابا کے نام سے آگے پہل کر آمو دریا اور سادھ کے بیچ کے میدان میں پانی بائنے والے کا کام کرتا ہے . وسطی انفانستان 'فزار جست' نام کے سخت پہاڑی بہاڑی حصہ سے بنا و گھرا ہے مغرب کی طرف کوہ ابابا کی پہاڑی تھی سلسلوں میں بات جاتی ہے جو کہ دعورے دھورے لقوہ' ھلمان اور ریکستان کی چاتی اور ہااودار زمون میں تبدیل ھو جاتی ہے .

انغانی جاتفوں کی پیدایشی جگہت بھارت سلیمان پہاڑیوں کے جلوب کے اُس پار ہے ۔ ہلوچستان چنگائی کے پہاڑوں کے جلوب میں ہے ۔

یه پهاری سلسلے ملک کو الگ الگ حصوں میں تقسیم کر دیکے ھیں گو که حال هی میں بنی سرکوں نے الگ الگ موجوں کو ایک دعائے میں باندھنے میں مدد دی هے لیمن حالت میں سدهار نہیں هوا هے شمالی اور جنوبی حصوں کو ملانے والی ایک خاص کری خانتهدوهی انغان جاتیاں هیں خو که هر سال ملک کو پار کرتی هیں اور جنوب سے شمال هوات میمانه اور کتھاگیاں ، بدخشاں کے صوبوں کی طرف جاتی هیں "

انغانستان کا مشرقی صوبه بهارتی سرحد سے ملا عوا هے . اِس صوبه کا وسط جلال آباد کا مهدان هے یہاں کی آب هوا گرم هے ' جہاں که کهجور و گنلے کی کههتی هوتی هے کابل اور کونار ندوں کی گهائیاں بہت گهنی آباد هیں ؛ پر شمال کی طرف نورستان نامی بہار هے جو که آبهی تک دشوار گذار هی هے .

ا ندی کی گیائیوں کو چھوڑ کر اِس صوبه کی ساری زمین ورخیؤ نہیں ہے اور کیمٹی صرف بھاڑوں پر یکھورے ہوئے الگ الگ کھیٹوں پر ھی ہوتی ہے .

مشرقی موہوں کی آبادی افغان جاتوں سے بنی ہے جو که کوهیائی شاولوں موہدات صفی وغیرہ نسل کی هیں ۔ اِن میں سے کچے جاتیاں ابھی بھی غاروں میں رهتی هیں ۔ موہائی مرکز چھل آباد هی یہاں کا ایک قصبه ہے ، دیشاور سے کابل جالے والے رائمتے پر آباد یہ جکہہ کابل کے امیر طبقہ کے لوگوں کی جاتوں کے رهتے کی حکمہ ہے ۔ اس کے چھوٹے شہروں میں بہت سے کیومیرس بانیسچوں سے گیرے هوئے شاعی محل بھی هیں ،

" 157 was

हमारा पड़ोसी अफ़रानिस्तान

प्रोकैसर कज्लबाश स्रॉ

अफ़्रानिस्तान एशिया के ठीक द्रिमयान उस जगह पर आबाद है जहाँ कि बड़ी-बड़ी पहाबियाँ मिलकर हिन्दु-स्तान की तरफ एक पहाड़ी सिलसिला बनकर मुड़ जाती हैं.

अफ़ग़ानिस्तान ग्वालों और किसानों का गुल्क है. आज भी यहाँ की क़रीब-क़रीब चौथाई जनता खाना-बदोश है.

धफ़ग़ानिस्तान का रक्षवा 6,,55,000 मुख्बा (वर्ग) कतोमीटर है पर उसकी आबादी 95,00,000 से ज्यादा नहीं है. मुसल्लस मगर शुमाल मशिरक की तरफ कुछ तंग हद लिये हुए, अफग़ानिस्तान के शुमाल में सोवियत रूस का तुर्क-मानिया, उजवैक और ताजी जम्हूरियत, मग़िरबु में ईरान और जनूब व जनूब-मशिरक में भारत और ब्लाचिस्तान हैं.

मीजुदा अफगानिस्तान के संगठन से पहिले, जांकि श्रठारहवीं सदी में किया गया, यह मुल्क कई हिस्सों में मुनक्रसिम था, जिसकी तवारीख मुखतलिक थी. इसकी जुराराफियाई हालत ने इस सारे इलाक्ने को वस्वी-मशरिक्न से द्र द्राज मशरिक को मिलाने वाले मरकज का रुतवा देकर दुनिया की खास शाहराहों में खास जगह दे दी है. एक बक्त था जबकि योरप और ऐशिया से बडी-बडी फीजों भौर आवादियों ने इस मुल्क के अन्दर से गुजर कर हिन्दु-स्तान में क़द्म रखा. श्रक ग्रानिस्तान में पार्थी, हुण, श्रीर सक जातियाँ आईं; मेसिडोन के सिकन्द्र आजम ने भी इस मुल्क को फतह किया. चंगेजलाँ के गिरोहों, तेमूर लंग की कौजों और इस्लाम कायम करने वाली अरब कीजों ने भी इस देश पर बकतन् अवकतन् क्रव्या किया. मशरिक से लेक्र मरारिक तक और श्रमाल से लेकर जनूब तक बस्तिद बनती और बरबाद होती रहीं. कोई भी ऐसा हमला नहीं हुआ जिसके ननीजे के बाइस यहाँ नये आदिमियों की कोई नई बस्ती आबाद न हुई हो. यहाँ से बड़ी-बड़ी संसतन्तों के उरूज के सितारे का दौर शुरू हुआ और यहीं से वे खवाल के तवारीखी निशान से बनकर ग्रायप भी हो गये.

अपनी जमीन के 4/5 हिस्से के पहादियों से घिरे होने के सबब अफग्रानिस्तान एक पहादी मुल्क है. इसलिये यहाँ की रिकाया का बढ़ा हिस्सा बढ़ी या छोटी घाटियों में, निद्यों के किनारे या शुमाल व शुमाल - मग्रिव के तंग सबद्धों मैदानों में क्रयाम करता था.

همارا بروسى انغانستان

يروفيسر قزلباهم خأس

انفانستان ایشیا کے امیک درمیان اُس جگه پر آباد ہے جہاں که بوی بوی پہارہاں مل کر ہندستان کی طرف ایگ پہاڑی سلساء بن کر مع جاتی ہیں .

انفانستان گوالوں اور کسانوں کا ملک ہے . آج بھی بہاں کی قریب قریب چوتھائی جنتا خانہ بدوش ہے .

افغانستان کا رقبه 000،55،000 مربع (روگ) کیلومیر هے پر اس کی آبادی 95,00,000 سے زیادہ نہیں ہے مثلث مکر شمال مشرق کی طرف کچھ تنگ حد لئے موئے اینانستان کے شمال میں سویت روس کا ترکیانی، آزبیک اور تازی جمہوریت مغرب میں ایران اور جارب و جارب مشرق میں بھارت اور بلوچستان ہیں .

موجودة أفغانستان کے سنکٹھن سے پہلے جوکہ اٹھاردیں صدى مين كيا گيا' يه ملك نئى حصون مين منقسم تها' جس کی تواریم مختاف تھی . اِس کی جغرانیائی حالت نے اِس سارے علاقه كو وسطى مشرق سے دور دراز مشرق كو ملالے والے موكز کا رتبه دیکو دنیا کی خاص شاعراهی میں خاص جامع دے دی ه ایک وقت تها جبکه بورب اور ایشیا سه وی بری فوجوں اور آبادیوں نے اِس ملک کے اندر سے گذر کر هندستان میں قدم ركها . انفائستان ميں پارتهی عن اور سک جاتياں آئيں ؛ مهسهدون کے سکلار انظم نے بھی اِس ملک، کو فاتم کیا. چنگهز خان کے کا وہوں تھمور لنگ کی فوجوں اور اسلام تایم کرنے والی عرب نوجوں نے یمی اِس دیش پر رقتا نوتنا قبضه کیا . مشرق سے لیکر مفرب تک اور شمال سے لیکر جنوب تک بستیاں بنتی اور برباد ہوتی رہیں ۔ کوئی بھی ایسا حملہ نہیں ہوا جس کے لترجے کے باعث یہاں نئے ادمیوں کی کوئی نئی بستی آباد نہ ھوئی ہو . یہوں سے بڑی بڑی سلطنتوں کے عروج کے ستارے کا دور شروع هوا ارر بهیں سے وے ذوال کے تواریضی نشان سے بن کر غایب یهی هو گئے .

اہلی رسین کے 5/4 حصد کے پہاریس سےگھرے ہوئے کے سبب انبائستان ایک پہاری ملک ہے ۔ اِس للے یہاں کی رعایا کا ہوا حصد بری یا چہوئی گہائیس میں ندیس کے کنارے یا شمال و شمال سنرب کے تمگ سرحدی میدانوں میں قیام کرتا تھا ۔

अगस्त 1957 ७ जी

क्या किस से		सका	المحق
 इमारा पड़ोसी अफ़ग़ानिस्तान —प्रोक्षेतर क्रजलवाश खाँ आस्तीन में साँप 	•••	47	کیا کس سے ۔ 1. همارا پورسی افغانستان برونیسر تزلیاش خاں ۔۔۔
-भाई अब्दुल इलीम अनसारी आरहिस्ट 3. हिन्दू मुसलमानों के तहज़ीबी मेल जील की -हाक्टर लतीक दफ्तरी एम० ए॰ डी० फिला॰ 4. सिंख मज़हब का दरमियानी रास्तामांकैसर तेजासिंह एम० ए०	 I	55 भात 59	بہائی عبدالحلیم انصاری ارتساط 3۔ هندو مسلمانوں کے تہذیبی میل جول کی شروعات
 हमारी राय— शान्ति युद्धः ब्राजकश की सरकारें—सुन्दरलाल 	•••	79	5. هماری رائی- شانتی یده؛ آچکل کی سرکاریس-سادر ال



अगस्त 1957

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ज्यान प्रमुख ज्यान विकल्प सोसायटी अविक प्रमुख ज्यान विकल ज्या

Editorial Board

Dr. Tara Chand M.A., D. Phil. (Oxon)

Mahatma Bhagwan Din.

Dr. Syed Mahmud, M.A., Ph.D., Bar-at-Law

Pandit Sundarlal

Bishambhar Nath Pande

Editor-in-Charge

Bishambhar Nath Pande

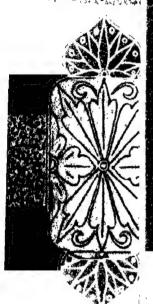
Asst. Editor

Suresh Ramabhai

Annual Subscription

Inland Rs. 6/Foreign Rs. 10/Single Copy As. /10/- only or 62 N. P.





इस नम्बर के खास लेख Jamia Milia Islamia, इमारा पहोसी अक्रपानिस्तान 3 AUS 1957 istuated - प्राक्तिसर क्र नजवारा खाँ بررنيس الولياهي شال भारतीन में साँप — भार्ड बाब्दुल इसीम जनसारी है है। विकास अंदिक हिन्दू मुसलमानों के तह्वीशी मेल जा المنافق ال —डाक्टर वातीफ दफ़्तरी एम० ए० डी॰ किला

सिस मजहम का दरमियानी रास्ता - प्रोफोसर वेजासिंह एम० ए० 📜 ूना हार प्राप्त

هندی گهر

कलचर पर हर तरह की कितावें मिलने का एक बड़ा केन्द्र—पाठक हिन्दी, उदूं, अंग्रेज़ी की अपनी मन-पसन्द कितानी के लिये हमें लिखें।

हमारी नई कितावें

महात्मा गान्धी की वसीयत

(हिन्दी और उद् में) लेखक-गान्धीबाद के माने जाने विद्वान : स्वर् श्री मंजर श्रली सांस्ता सके 225, क्रीमत दो रूपया

गान्धी बाबा

(बच्चों के लिये बहुत दिलचस्प किताब) लेखिका-कुदिसया जैदी भूमिका-पन्डित जबाह्र लाल नेहरू मोटा काराज, मोटा टाइप, बहुत-सी रंगीन नमवीरें दाम दा कपया

> -:0:-पंडित सुन्दरलाल जी की लिखी किताबें

गीता और क़ुरान

275 सके, दाम ढाई मपया

हिन्दू मुसलिम एकता

100 सफे, दाम बारह आन

महारमा गान्धी के बलिदान से सबक

क्रीमत बारह आन

पंजाब हमें क्या सिखाता है

क्रीमत चार आने

वंगाल और उससे सक्क

क्रीयत यो आने

स्तानी कलचर सोसाय

145 मुद्रोगंज इलाहाबाद

کلچیز پر هر طرح کی کتابیں ملنے ایک برا کیندر باتیک هندی أرور الكروني كي ن اسند كتابول ك الله همين لكهين.

> ههاری نئی کتابین مهاتها کاندهی کی وصیت (هندي اور آردو ميل)

لیکھکے۔۔ گالرہی وان کے سانے جانے ردوان: سرركيه شرى منظر على سوخته مفتحے 225 تیمت دو روپیه

كاندهي بابا

(بحول کے لئے بہت دانچسپ کتاب) ليكهكا--قىسية زيدى بهوم كا سيندت جواهر لال نهرو موقًا كَاهَدُ مُوتًا تَانُبُ بِهِت سَى رَنْكَيْنِ تَصُويرِين دام دو روييه

مندت سندرلال جي کي لکھي کتابيس

عيتا أور قران ورياء مفحے دام تفانی روياء

هندو مسلم ایکتا 100 صفحه دام باره آنے

مہاتما کاندھی کے بلیدان سے سبق

قيست بارة ألم

پنجاب همیں کیا سکھانا ھے

بنگال اور آس سے سبق

هندستاني كليجر سوسائتي

ا 14 منی کنے اندادا

सांस्कृतिक साहित्य

سانسكوتك ساهتين

हजरत मोहम्मद स्रीर इसलाम

लेखक-परिडत सुन्दरलाल, मृत्य-तीन रूपया इसलाम के पैग्म्बर के सम्बन्ध में भारतीय भाषाओं में इस से सुन्दर कोई बूसरी पुस्तक नहीं

हजरत ईसा और ईसाई धर्म लेखक-पन्डित सुन्दरलाल, मूल्य-डेढ़ रूपया मह।रमा जरथुस्त्र और ईरानी संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, क्रीमत—दो रूपया यहूदी धर्म श्रीर सामी संकृति

लेखक—विश्वमभरनाथ पांडे, क्रीमत —दो कपया

प्राचीन मिस्र की सभ्यता और संकृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, क्रीमत—दो रु।या

सुमेर बाबुल और असुरिया की प्राचीन संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, क्रीमत—दो कृत्या

प्राचीन यूनानी सभ्यता और संस्कृति

लेखक-विश्वम्भरनाथ पांडे, क्रीमत-दा रूपया

गंगा से गोमती तक

(प्रगतिशील कहानी संग्रह) लेखक—श्री मुजीब रिजवी, क्रीमत—दो रूपया

आग और आँस्

(भावपूने सामाजिक कहानियाँ) लेखक-डाक्टर श्रक्तर हुसेन रायपुरी, क्रीमत-डेढ़ रूप्या

.कुरान और धार्मिक मतभेद

लेखक-मौलाना श्रबुलकलाम श्राजाद, क्रीमत-डेढ़ मपया

भंकार

(प्रगतिशील कवितात्र्यों का संप्रह) लेखक--रघुपति सहाय फिराक, क्रीमत - तीन रुपया حضوت محمد اور إسلام

لیہ کے ۔۔۔ پندت سندر لال' مولیہ۔۔۔تین روپیہ اِسٹم کے پہنمور کے سمبندھ میں بیارتیہ بھاشاؤں میں اِس سے

سندر کوئی دوسری پستک نہیں

حضرت عيسي اور عبسائي دهرم ليمك بندت سندر الله موليه تيره رويه

مهاتها زر تهستر اور ایرانی سنسکرتی اینها در رویه

یهودی دهرم ارد سامی سنسکرتی لیکهک رشرمهر ناته بانذے

وراچین مصر کی سبهیتا اور سنسکرتی ایکهک و رویه

سمير بابل اور اورياكى براچين منسكرتى ليهك درويه

دراچیس بونانی سبهدتا اور سنسکرتی اینهک—رشومبهرنانه باندے نیست—در رویه

گنگا سے گومتی تب

(پرگتی شیل کهانی سناوه) لیهک شری مجیب رفوی نیمت د روهه

أگ اور انسو

(بهاوپورن سمآجک کهانیان)

لهمهک ستانتر اختر حسین رائے پوری تیس قیره رویه

قرأن اور ن هارمک مت بهید لیمهک مران ابرکلم آزاد نیمت قرید زریده

, Wigs

پرگتی شیل کویتاؤں کا سنکرہ) لیکھک سرگھوپتی سہائے فراق ' قیدست ستین روپھ

मिलने का पता

مائے کا پتھ

कंट्चितानी कलचर सोसायटी व्यापाल अन्तर होरा अंदिर किन्दुस्तानी कलचर सोसायटी

145 मुद्रीगंज, इलाहाबाद अर्गं थें न्यं 145

सौर सपने अहंकार को भूतकर गाँक गाँक में खुमीन की सातकियत मिटाने में, गाँक गाँक का मामदान कराने में कुट्ट जायें. अगामी दूसरी अक्तूबर को ही, वापू-जबन्ती के दिन इस काम की पूर्ति हो सकती है. सत्तावन माई का आसीर्वाद इसार जाय है. भगवान खुद हमारे साथ है.

22. 6. 57

—सरेश राममाई

بسمويش وأم بهاثي

22 8 57

700 PAGES, 42 ILLUSTRATIONS 2 COLOURED MAPS

"CHINA TODAY"

PRICE

BY PANDIT SUNDARLAL

Rs. 7. 8. 0

A vivid narration of the glorious and wounderful achievements of New China...A picture of China which is both convincing and authentic...the best book that has come out so far on New China in the English language ...the most objective in approach and comprehensive in treatment.

—National Herald, Luckness.

Highly informative...throws vivid light on conditions obtaining in that country...a book which deserves to be widely known

Encyclopsedic...characterized by scate observat...n of detail as well as by...instinctive grasp of the fundamental perspective...To read it is veritably like assempanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New Chins.

——Bitts, Bombey

A mine of information which gives a picture of China as nothing else dose...the best guide to New, China...Those who would like to understand what is happeing in New China can do not better than to study it,

—Bharat Jyeti, Bombay

The wealth of information it gives on China rew and old...makes fascinating reading...is comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs.

—Indian Express, Madras

China Today is an elequent tribute to his (Fandit Sundarlai's) shrewd understanding of men and matter... brings to the lighty mighty endeavour of the Chinese People to rebuild their rest nation on firm new foundations for a tomorrow which is theirs.

चुनाई कृत

(46,)

10

जैसे क्ल्बों के काम करके उनको सही अद्धां अति है सकेंगे ? वह तो अपनी कायरता का, अपनी निवंतता का, अपनी लाचारी का ही प्रतीक होगा. बीर पुरुषों की खीलाद जगर हमारे जैसी डरपोक व कायर निकती तो फिर खीलाद कहलाने के अपने दावे को ही खो बैठेगी.

लेकिन नहीं, हमें हिम्मत नहीं हारनी है. जमीन की मालकियत मिटाने का काम उतना मुश्किल नहीं है जितना कि भास होता है. जमीन की मालकियत की दीवारें उह रही हैं, जो बाक़ी हैं वे भी हिल रही हैं. एक-दो नहीं, दस-बीस नहीं; सी-सवासी नहीं—डाई हजार गाँव में जमीन की मालकियत मिट चुकी है! मिट चुकी है!! मिट चुकी है!! मिट चुकी है!!! हमेशा के लिये खत्म. पुराने जमाने की एक सत्यता रह गई है. उन गाँवों में उसका कोई आत्तित्व नहीं बचा. तो जो बात डाई हजार गाँवों में हो सकती है, वह देश के छल के छल साढ़े पाँच लाख गाँवों में क्यों नहीं हो सकती? क्या उन डाई हजार गाँवों के लोग देवता या फरिशते हैं और बाकी के उनसे गये बीते हैं?

नहीं, नहीं, कभी केवल अपने परुशार्थ की है, बल्क हम कहेंगे कि कभी अपनी अद्धा की है. जो अद्धा हमारे पूर्व जो को अमेजों की हुकूमत मिटाने में थी, वह हमको जमीन की भावकियत मिटाने में अभी तक नहीं आई है. अद्धा कोई पद्दों नहीं है जो इधर-उधर होते. अद्धा दीवार की तरह है जो या तो गिरी है या खड़ी है. या तो है या नहीं है. अपना दिल टटोल कर हम देखें कि हम कहाँ है, वह अद्धा हम में कितनी है, है भी कि नहीं ?

जहाँ हमारे अन्दर वह श्रद्धा आई, जमीन की मालिकयत मिटने की आवश्यकता और 'अनिवायता पर यक्कीन आया कि देखते देखते यह मालिकयत दूट कर चकनाचूर हा जायेगी. जिस तरह सिद्यों का अंधेरा एक छोट-सा विराग श्राप भर में कला कर देता है, उसी तरह सिद्यों की जमीन का व्यक्तिगत स्वामित्व एक दिन में, निश्चित घड़ी पर ख़रम हो सकता है. फिर यह तीसरी चीज नहीं जो अनहोनी हां. संता ने कहा है "सबै भूमि गोपाल की". पिछले दो-ढाई सौ साल में हम इस पाठ का भूल से गये थे. इसे फिर से याद कर चस पर अब अमल कर डालना है. देखते देखते यह माल-किवत मिट जायेगी और अपने मुरबी बुजुरों को हम सच्ची श्रद्धांजित अर्थित हर सकेंगे.

यही है सत्तावन माई की असली पूजा करने की विधि-सत्तावन के झः महीने पूरे हो रहे हैं, झः ही वर्ष हैं. 'बीती बाहि विसार दें, आगे की सुधि ले'—अभी कुछ नहीं विगड़ा के अब भी सब चीज संभल सकती है. हम अब बेत जायें बाहि सह विसादर—अपने वाकि-मेदः मावा-मेद, पश्च-भेद وهام به بهرس کے کام کو کے گئی کو منتیع شردهالجاتی ہے۔
سنیں کے آ وہ تو آپلی کابرنا کا اپنی تربلنا کا اپنی الجاری کا
ھی پرتیک ہوا۔ وہو پوشوں کی لوات اگر ہمارے جیسی
ترورک و کابر تملی تو پور آواد کہانے کے اپنے دعوے دو ھی کھو
بھٹے گی ۔

لیکن نہیں میں مدت نہیں عارنی ہے ومین کی مائیت مائی ہے ، ومین کی مائیت مثالے کا کام آتنا مشکل نہیں ہے جتنا کہ بیاس ہوتا ہے ، ومین کی ومین کی مائیت کی دیواریں تھ رھی ھیں جو باتی ھیں رسے بھی عل رھی ھیں ، ایک دو نہیں دس بیس نہیں سواسو نہیں — تعاثی عزار گاؤں میں زمیں کی مائیت مت چکی ہے اا مت چکی ہے اا همیشہ کے لئے ختم ، برائے زمانے کی ایک ستیتا رہ کئی ہے . اُن گاؤں میں اُس کا کوئی نہیں استتو نہیں بچ ، تو جو بات تعاثی هزار گاؤں میں میں عو سکتی ہے وہ دیھی کے کل کے سارھے کل باتیج لائم گاؤں میں عور کیوں نہیں هو سکتی ہے کہ کا کے سارھے کل باتیج لائم گاؤں میں کیوں نہیں هو سکتی ہے کیا آن تعاثی مؤار گاؤں کے لوگ دیوتا یا فرشتے ھیں اور باتی آن سے گئہ بیتے ھیں ہ

نهیں' نہیں' نہی کیول آپنے پرشارتو کی فے ، بلکه هم کہیں گے کہی آپنی شردها کی فے ، جو شردها همارے پوررجوں کو آنگریزوں کی حکومت مثالے میں تھی' رہ همکو زمین کی مالکیت مثالے میں آئی فے ، شردها کرئی پردا نہیں فے جو اِدھر اُدھر تولے ، شردها دیوار کی طرح ف جو یا تہیں فے ، اپنا دل تول کو هم دیکییں که هم کہاں هیں' وہ شردها هم میں کتنی فی فے بھی که نہیں ؟

جہاں همارے اندر وہ شردها آئی، زمین کی مالعیت مقانے کی آرشیکا اور انہوارتا پر یقین آیا که دیکھتے دیکھتے یه مالعیت لوق کر چکنا چور مو جائیگی ، جس طرح صدیوں کا اندیما ایک جھڑا سا چراغ چین بور میں ختم کر دیتا ہے، اسی طرح صدیوں کی زمین کا ویکئی گت سوامتو ایک دن میں، ایک شعیب گہری پر ختم هو سکتا ہے . پھر یه تیسری چیز ایش بھو انبوئی هو ، سنتوں نے کہا ہے "سید بھومی کوبال کی " بیچیلے دو تھائی سو سال میں هم اِس پائه نو بھول سے گاہ تھے ، بیچیلے دو تھائی سو سال میں ہم اِس پائه نو بھول سے گاہ تھے ، اُنہ پھر سے یان کر اُس پو اب عمل کر ڈالنا ہے ، دیکھتے دیکھتے یہ مائیکی اور اپنے مربی بزرگوں کو هم سچی شردھانتجلی مائیکی اور اپنے مربی بزرگوں کو هم سچی شردھانتجلی اُنہتی کو سکیں گو ۔ .

یهی هے ستاری مائی کی املی پوچا کرنے کی ودھی۔
ستاری کے چہ مہیئے پردے هو رقع هیں، چہ هی بچے هیں ،
الیکی نامی بسار دیے، آگے کی سدہ نہا۔۔۔ابھی کچے مہیں بگڑا
شنا آپ بھی سب چیز سنبیل سکتی ہے . هم آپ چیت جائیں
آئی سنب مل کو۔۔اپنے جاتی بہید، بھاشا بہید، پکھی بھیدہ

(: 45.)

167 34

कुदाकर गाँव गाँव में पहुंचा दे. तभी समाज बतवान होगा और हर इन्सान में भी आत्म-शक्ति निखर उठेगी. क्या ब्यक्ति, क्या समाज, दोनों गुणवान बनेंगे.

सवाल है कि यह हो कैसे ? बहुत ही कठिन सवाल है कि गाँव गाँव किस तरह बलवान और .खुद सुक्तयार बने. जरा ध्यानपर्वक विचार करेंगे तो सहज पता चलेगा कि देश भर में, गांव गांव के अन्दर जिस चीज ने हमको निस्तेज और निर्वीर्य बना दिया है, जिसके कारण हममें न चात्म-सम्मान बचा है न सहद्यता, जिसकी वजह से हमने आत्म विश्वास और मानवता को उठा कर मानो ताक पर रख दिया है, वह है धरती को व्यक्तिगत स्वामित्व या निजी मालकियत. व्यक्तिगत स्वामित्व के श्रष्टकार से मू-स्थामी भू-माता की अपने हाथ से सेवा करना अनादर ही नहीं, अधर्म सममता है. दूसरी तरफ व्यक्तिगत स्वामित्व के पूर्ण अभाव में, भूमिहीन मज़बूरों की भू-सेवा निष्प्राण और ज़ब् बन गई है, और जब तक जमीन की यह निजी मालकियत कायम रहती है, जब तक जमीन की ख़रीद बिरी चलती है. जब तब धरती माता की पुत्रवत् उपासना कुल श्रीलाद नहीं करती, तब तक कैसा स्वराज्य, कैसी स्वाधीनता और कैसी बदांजित ॥

इस बास्ते सत्तावन माई की पूजा के लिये सबसे पहली खरुरत इस बात की है कि धरती माता व्यक्तिगत स्वामित्व के बन्धनों से मुक्त होनी चाहिये. उसकी खरीद-विकी सदा-सर्वदा के लिये बन्द होनी चाहिये. उसका इन्साफ से और एक राय से गाँव गाँव में फिर से बंटवारा होना चाहिये. देश में न कोई मूमिहीन रहे न मूमि-स्वामी. सब मूमि-पुत्र बनें. पुत्र बनकर माता की यथा शक्ति सेवा करें और प्रेम से एक दूसरे का सहयोग लें. अगर हम ऐसा न करके, इधर-उधर की बीसियों बातें करें, सैकड़ों कार्य-कम रचें, व्याख्यान माड़ें, कूल मालायें स्नारकों को पहनायें तो उसका कोई असर न हमारे जीवन पर पड़ेगा, न समाज पर पड़ेगा और न उन पावत्र आत्माओं को संतोष ही होगा. इन छुट-पुट कामों में अपनी ताक्तत न खर्च कर हमको अपनी पूरी ताक्षत बुनियादी और पहला काम करने में लगानी चाहिये.

जाहिर बात है कि काम मुश्किल है. दूर दूर से देखने में नामुमकिन भी लगता है. लेकिन क्या अंग्रेजी राज को निकाल बाहर कर देना भी कोई आसान काम था १ जिस अंग्रेज की परखाई देखकर ही हम भाग खड़े होते थे, उसका शासन उसाइ फेंकना कोई हँसी-खेल था १ वीर आसान काम के लिये नहीं, मुश्किल काम करने के लिये पैदा होते हैं. वो जिन बीरों ने अंग्रेजी राज्य से मुक्ति के जैसा मुश्किल काम उठाया, क्या हम केवल फूल-माला या ज्यास्यान देना چھوڑا کو گؤں گؤں میں بہلچانے ، تبھی ساج بلوان ہوگا اور عر انسان میں بھی آتم شکتی نکور اٹھے گی، کیا ریکٹی' کیا سکے دونیں کاران بلیکے .

سوال هے که یه هو کیسے لا بہت هی تنہی سوال هے که پوروک وہا گوں کس طرح باوان اور خود مختار بنے . ذرا دهیان پوروک وہا وہا کریں گے تو سہج پته چلیگا ته دیش بهر میں گاوں گوں کے الدر جس چیز نے هم کو نس تیج اور نرویریه بنا دیا ها جس کے گارن هم میں ته آنم سمان بچا هے نه سهردیگا جس کی وجه سے هم نے آنم وشواس اور مانونا کو آنها کر مانو طاق پر رکه دیا هے وہ هے دهرتی کا ویکٹی گت سوامتو یا نجی مالکیت . ویکٹی گت سوامتو کے اهنکار سے بهرسراسی بهو مانا کی اپنے هاتو سے سیوا کرنا آنادر هی نهیں اُدہ رم سنجهتا هے . اور جب دوسروی طرف ویکٹی گت سوامتو کے پورن ابہاؤ میں اُبھومی هیں مزدوروں کی بهو سیوا نش بران اور جز بن گئی هے . اور جب نک زمین نکی زمین کی یه نجی ملکیت قایم رهتی هے جب تک زمین کی خوید بکری چلتی هے جب تک دهرتی مانا کی پٹروت کی خوید بکری چلتی هے جب تک دهرتی مانا کی پٹروت گیاسا کل اولاد نہیں کرتی تب تک کیسا سراجیء کیسی سوادهیئا اور کیسی شردها نجلی !!!

اِس واسطے ستاون مائی کی پوچا کے ائے سب سے پہلی ضوروت اِس بات کی ہے کہ دھرتی ماتا ویکتی گت سوامتو کے بندھنوں سے مکت ھوئی چاھئے ۔ اُس کی خوید بکری سدا سرودا کے لئے بند ھوئی چاھئے ۔ اُس کا انصاف سے اور ایک رائے سے گاؤں گاؤں مھن پھر سے بلقوارہ ھونا چاھئے دیھی میں نہ کوئی بھومی ھین رہے تہ بھومی سوامی ، سب بھومی پتر بنیں ، پکو بین کو مانا کی یتھا شکتی سفوا کریں اور پریم سے ایک نبوسرے کا سپیوگ ایس ، اگر ھم ایسا نہ کر کے ادھر اُدھر کی بیسیوں ہاتیں کریں سیکرن کاریم کریے اُدھر اُدھر کی بھول مالائیں اِسمارکوں کو پہلائیں تو اس کا کوئی اُدر نہ ھمارے بھول مالائیں اِسمارکوں کو پہلائیں تو اس کا کوئی اُدر نہ ھمارے جھون پر پڑیگا اُدر نہ اُدا تی پوتر اُناؤں کو سنتوھی ھی ھوگا ۔ اِن چہم پر پڑیگا اور نہ آن پوتر اُناؤں کو سنتوھی ھی ھوگا ۔ اِن چہم پر پڑیگا اور پہلا کام کرنے میں لگانی ھم کو اُپنی پوری طاقت بنیادی اور پہلا کام کرنے میں لگانی

ظاهر بات ہے کہ کام مشکل ہے' دور دور سے دیکھنے میں انسکن بھی لکتا ہے۔ لیکن کیا انکریزی راے کو نکال باہر کر دیکا دیکھ کینا بھی کرئی آسان کام تھا ؟ جس انکریز کی پرچھانیں دیکھ لیا ھی ہم اوگ بھاگ کوئے ہوتے تھے' اُس کا شاسن آنہار پھٹکنا کرئے ملسی تعیل تھا ؟ ویر آسان کام کے لئے نہیں' مشکل کام کرئے گے گئے پیدا ہوئے ہیں ۔ تو جس ویوون نے آنکریزی راے سے مکتی کے تعیدا منطق کام آٹھانا' کیا ہم کیول پھرل مالا یا ویائییلی دینا

() ()

सत्तावन माई की पूजा कैसे हो?

पिद्धली वस मई से देश भर में, खासकर हिन्दी भाषाभाषी इलाके में, सन् 1857 के अपने प्रातः स्मरणीय शहीतों,
बीरों और योद्धाओं के प्रति श्रद्धांजलि की धूम मची है.
शहरों में तो इस कार्यक्रम को मनाने के लिये सभायें होती
हैं, जुलूस निकलते हैं, स्मारकों पर फूल-मालायें चढ़ायी
जाती हैं. लेकिन दूर देहात में इस श्रद्धांजलि ने सत्तावन
माई की पूजा का नाम लिया है. आजकल देहातों में चेचक
की यानी देवी माई का जोर वैसे ही है, माई की पूजा होती
है. इसी तरह दशहरे पर काली माई की और दूसरे मीकों
पर दूसरी माईयों की पूजा होती है. तो सत्तावन शताब्दि
समारोह भी माई बनकर सामने आ रहा है. पर धीरे-धीरे
वह राकल निकल भी आयेगी. क्या शकल निकलेगी, कोई
नहीं कह सकता—पर उसकी दिशा क्या हो, इस सम्बन्ध
में कुछ सुमाव यहाँ पर नम्रतापूर्वक पेश किये जा रहे हैं.

ध्यमें बुजुर्गों को श्रद्धांजिल अपित करना हर किसी का धर्म है. वह पूजा सचमुच अपने समाधान और सन्तोष के लिये होती है. फिर, जब हमारे जैसे देश में, जो आत्मा को रारीर, मन और बुद्धि से श्रलग मानता हो, इस पूजा का प्रयोजन अपने हित के लिये ही है, न कि दिवंगत पूज्य आत्माओं के लिये. और कीन नहीं जानता कि श्रात्मा की शान्ति सहगुण के विकास में, सदमावना के निर्माण में है. इसलिये सच्ची श्रद्धांजिल वही है जिससे पूजा करने वाले आदमी या समाज के अन्दर सद्गुण या सदमावना जाग जावे. अगर ऐसा नहीं होता तो सारी पूजा बाहरी आहम्बर बन कायेगी और दकोसला साबित होगी. सत्तावन माई की पूजा इस दृष्टि को ध्यान में रसकर ही होनी चाहिये.

जाहिर है कि सन सत्तावन में जो बीड़ा उठाया गया वह था स्वाधीनता के लिये. किस की स्वाधीनता ? देश भर की—देश भर के गांव गांव में रहने वाले हर बच्चे की. अंग्रेजी सरकार उसमें सबसे बड़ी बाधा थी, इसलिये उसका हटाना पहला जरूरी काम सममा गया. इसी कामना ने स्वराज्य का नाम लिया. 1857 में हमारी वीर आत्माओं ने जो बीज बोया, 1947 में उसमें फल आया और देश को स्वराज्य मिला. देश स्वाधीन हुआ. लेकिन कहने की जरूरत नहीं कि इस स्वाधीनता का अर्थ केवल यही है कि शासन का पारसल लंदन से छुड़ाकर दिस्ली ले आया गया. देश का नियंत्रया, संचालन, संयोजन आदि सब कुझ दिस्ली से होता है. गाँव वहीं के बहीं हैं. इस तरह है सक्तर स्वाधीन है, पर गाँव पराधीन है. सत्तावन मार्र बही पूजा सार्थक कही जायेगी जो इस पराधीनता को किस के मही शासन के पार्यक को दिस्ली से

ستاون مائی کی پوجا کیسے هو ؟

پچھائی دس مئی سے دیھی بھر میں' خاص کو ھندی بہاشا بھاشی عاتبے میں' سن 1857 کے آپنے پراتم آسمرنیت شہدوں' ویورں اور یودھاؤں کے پرنی شردھا نجلی کی دعوم معتبی ہے ، شہروں میں تو اِس کاریت کرم کو منانے کے لئے سبھائیں معتبی ہیں' جلوس نکاتے ھیں' سمارکوں پر پھول مالئیں چجھائی جاتی ھیں ، ایکن دور دیہات میں اِس شردھا نجلی نے سکاوں مائی کی پوجا کا نام لیا ہے ، آجکل دیہائوں میں چرچک کا یعنی دیری مائی کا زور ریسے ھی ہے' مائی کی پوجا ھوتی ہے ، اسی مائی کی پوجا ھوتی ہو دوسری مائیوں کی پوجا ھوتی ہو میں اس پوجا کی آبھی کوئی بو دوسری مائی ہیں کر سامنے آ رھا ہے ، مگر اِس پوجا کی آبھی کوئی تھوس شکل نہیں نکل بھی آئیکی ، کیا شکل بھی آئیکی ، کیا شکل نہیں نکل بھی آئیکی ، کیا شکل بھی آئیکی ، کیا شکل نہیں کہے سیندہ میں کچے سوجھاؤ بہاں پر آس کی دشا کیا ھو' اِس سیندہ میں کچے سوجھاؤ بہاں پر آس کی دشا کیا ھو' اِس سیندہ میں کچے سوجھاؤ بہاں پر آس کی دشا کیا ھو' اِس سیندہ میں کچے سوجھاؤ بہاں پر آس کی دشا کیا ھو' اِس سیندہ میں کچے سوجھاؤ بہاں پر آس کی دشا کیا ھو' اِس سیندہ میں کچے سوجھاؤ بہاں پر آس کی دشا کیا ھو' اِس

الید بررگوں کو شردہ انجلی اربت کرنا ہو کسی کا دھرم ہے۔
وہ پوچا سے مچ اپنے سماده ان اور سفتوش کے لئے ہوتی ہے۔
پہرا جب ہمارے جیسے درش میں جو اتما کو شریر من اور
بدھی سے انگ مانتا ہوا اِس پوچا کا بربوجن اپنے ہت کے لئے
ھی ہا نہ کا دونکت پوچیہ آنماؤں کے لئے۔ اور کون نہیں
چانکا کہ آنما کی شانتی سدگی کے وکاس میں سد بھاؤنا کے
نرمان میں ہے۔ اِس لئے سچی شردها نجلی وہی ہے جس سے
پرچا کرنے والے آدمی یا سماج کے احدر سدگن یا سد بھاؤنا جاگ
چائے۔ اگر ایسا نہیں ہوتا تو ساری پوچا باعری آخمبر بین
چائیگی اور تھکو سال نابت ہوگی ۔ ستاری مائی کی پوچا اِس
چائیگی اور تھکو سال نابت ہوگی ۔ ستاری مائی کی پوچا اِس

ظاءر هے کہ سن ستاوں میں جو بیرا انہایا گیا وہ تھا سوادھینتا کے لئے۔ کس کی سوادھینتا آ دیش بھر کی۔ دیش بھر کی گاؤں گاؤں گاؤں میں رھنے والے ھر بچے کی انگریزی سرکار اس مهں سب سے بڑی بادھا تھی' اِس لئے اس کو ھٹانا پہا ضروری کام سبجھا گیا ۔ اِس کا منا نے سوراجیہ کا نام نیا ۔ 1817 میں اس میں ھماری ویر آنماؤں نے جو بھیے ہویا' 1947 میں اس میں کہنے کی ضرورت نہیں کہ اِس سوادھینتا کا اُرتو کھول بھی ہے کہ شکتی و شاس کا پارسل لندن سے چھروا کر دانی اے آیا گیا، دیش کا نیانٹرن استجالی سنھوجی آدی سب کچھ دائی سے ھونا ہے۔ گاؤں وابیش کے وہیں میں اِس طرح دیش ضرور سوادھیں ہے اور گاؤں پولیھیں ہو گاؤں پولیھیں ہے وہیوا سارتھک کھی جائیگی جو پولیس پولیھیں کے رہیں مائی کی رھی پرچا سارتھک کھی جائیگی جو پولیس پولیھین کے بارسل کو دائی سے پولیس کو دولی سے پولیس کو بارس کو دائی سے پولیسی پولیس کو بارس کو دائی سے پولیس کو بارس کو دولی سے پولیس کی دولیس کو دولی سے پولیس کی دولیس کو دولی سے پولیس کو بارس کو دولی سے پولیس کو بارس کو دولی سے پولیس کو پولیس کو دولی سے پولیس کو بارس کو دولی سے پولیس کی بارس کو دولی سے پولیس کو پولیس کو دولی سے پولیس کو پولیس کو دولی سے پولیس کو پولیس

جرائبي 57و

施沙沙车



हिन्दुस्तान की दौनत बढ़ी है!

पिश्रले पाँच बरसों में पहली पंचसाला योजना के जरिये हिन्दुस्तान की त्रामदनी में कुछ न कुछ इजाका हुआ है माहिरों का खयाल है कि हर फर्व पीछे यह इजाफा मुल्क की माली तरक्षकी को जाहिर करता है. माहिर जब कोई बात करता है तो मुल्क कैसे उसकी सन्नाई से इनकार कर सकता है ? आल इन्डिया कांग्रेस कमेटी के जनरल सेक्रेटरी आचार्य अमत्राल भी इस सबाई से इनकार नहीं करते लेकिन वे कहते हैं कि दौलत के इस इजाफे से मुल्क के अमीरों की तिजोरियाँ और ज्यादा भरी हैं. वे बड़े दर्द के साथ कहते हैं कि "श्रमीर ज्यादा श्रमीर होते जा रहे हैं श्रीर रारीव दिनों दिन क्यादा ग़रीब होते जा रहे. अमीरों और ग़रीबों का यह फर्क दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है." अगर इसी रफ्तार से यह कर्क बढ़ता गया तो मुल्क में समाजवादी समाज कैसे कायम होगा ? एक ओर जबकि उत्पादन बढ़ा है दूसरी स्रोर लोगों की खरीदारी की ताक़त दिनों दिन घटती जा रही है. दूसरी पंचसाला योजना को पूरा करने के लिये और क्यादा धन की जरूरत है. इस धन का एक बड़ा हिस्सा टैक्सों से ही इसट्टा करना पड़ेगा. माहिर कहते हैं कि जनता को खशहाल बनाने के लिये ये टैक्स जरूरी हैं. और जनता इन टैक्सों के बोम से दिन बदिन जिन्दगी के बुनियादी स्तर से भी नीचे गिरती जा रही है.

हमें वसल्की है कि इस मसने पर वे लोग भी अब संजीवा तौर पर गौर करने लगे हैं जो इस दर्शनाक कै फियत के लिये जिम्मेवार हैं.

هندستان کی دولت برهی هے!

رجیلے پانچ برسوں میں پہلی پنچسالد برجنا کے ذریعہ هنستان كي آمدتي مين كيم نه كيم افافه هرا هي ماهرون كا خيال هے كه مر فرد پيچه يه ألمانه ملك كي مالي ترقي كو ظاهر كرنا هي ماهر ظاهر جب كوئي بات كرنا هي تو ملك كيس أس كي سجائي سه انكار كر سكتا هه ؟ أل انديا كانكريس کیھٹی کے جنرل سیکریٹری آچاریہ اگررال بھی اِس مجائی سے الکار فہوں کرتے لیکن رے کہتے میں که درات کے اِس اضافے سے ملک کے امہروں کی تعجزیاں اور زبانہ بھری عیں . وے بڑے درد کے ساتھ کہتے دوں که "امیر زبانة امیر هوتے جا رقے هیں اور غریب دنوں دی زیادہ غریب هوتے جا رقے هدن ، امهروں اور غريبس مكا يه فرق دنوں دور بوهنا جا رها تھ ." اگر اِسي رفتار سے یه قرق برها گیا تو ملک میں سمام وادی سام کیسے قایم هوا ایک اور جب که انهادی بوها هے درسری اور لوگوں کی خریداری کی طالت دنیں دن گیٹنی جا رهی هے . دوسری ینیساله پیجا کو پیرا کرنے کے لئے اور زیادہ دھوں کی ضرورت ه . إس دهن كا ايك برا حصه تيكسون سه هي التها كرنا يويكا . ملعر كها نديس كه جنانا كو خوشحال بناني كي اله يه قیکس فروری هیں . اور جنکا أن تیکسوں کے ہوجہ سے دن بدن وندگی کے بنیادی استر سے بھی ندھیے گرتی جا رهی ہے .

همیں تسلی ہے کہ اِس مسئلے پر وسے لوگ بھی اب سلمجیدہ طور پر فور کرتے لیے ھیں جو اِس دردناک کینیت کے لئے ومعدار ھیں ۔

-वि. ना. पांडे

حسرى فا. يانت

जुमार् '57

एक टोबी होगी. तुम्हें चनका स्थाल होगा ! तुम्हें बंगलों भीर भोहरों से प्यार होगा ! जरा सोचो तो सही. समाज के बेशुमार जीव जिनकी माएँ बहिनें तद्य-तद् न कर प्राण दे रही हैं, जिनके बच्चे रोटी के दुकड़ों के न मिलने पर सीधे स्वर्ग चले जाते हैं, तो सोचा ! अगर समाज को उठाने के काम में, इसे चेतनमय कर डालने में भगर कष्ट आ पड़ें, जेलों की हवा खानी पड़े, अगर तुम्हें फाँसी का हर भी दिसाया जावे तो इतना याद रक्लो, हमारे समाज के हजारों लाखों को इस नरक से बचाने के काम में अगर तुम सहायक हो सको ता तुम चेतनामय हो, उठ चुके हो.

ऐसी कठिनाई में याद करों राष्ट्रिपता महात्मा गान्धी की, दरिद्र नारायण के उस सच्चे पुजारी को, रारीव हिन्दुस्ता-नियों के उस सच्चे वकील को, अपने आत्म बल से तोपों का मुकाबला करने वाले उस फुकीर को. उनका रास्ता तुम्ह।रा रास्ता रहे, उनका प्रेम भरा दिल तुम्हारा दिल हो तो

तुम अजय हो.

बाज का समाज जिसमें बभी ,शोषण है, दोहन है, रारीबी है, उसमें पिसने वाले, उसको भुगतने वाले बेशुमार साथियों वठो ! इसिलये कि तुम्हारा काम आज वठना है, तुम्हारा काम आज इन्सानियत की स्थापना करना है, पर उसका रास्ता क्या हो ? उसका रास्ता यही है कि समाज को चठने दो. ठेकेदारों को इजारेदारों को, समाजकी इजारेदारी से अजन करो, अपने प्रेम और बलिदान के सहारे अलग करो ! क्यों ? इसलिये कि अब तुम भी सोच सकने का मादा रखते हो, धौर पहले मी तुम में मादा था, पर इस समय इसपर परदा था !पर्दें हटा दो, लम्बी नींद से जाग बठो. भीर उठकर एक काम करो ! पैसे कि रालामी और खीना म्हपटी से इनसान को मुक्त करो ! शोषण का-मेहनत के शोषण का-रास्ता बन्द करो, विचार की आजादी दो !यही पुन्य काम है ! समाज की कुरूपता को भिटा दो !

क्टो, मेहनत का लाभ उसे क्टाने दो जिसकी मेहनत

है, जिसका जिस्म है, जिसकी मशक्तकत है!

أيك ثولي هركي . تبهين أن كا خيال هو كا ! تبهين بالعرف أوراً عبدس سے بیار ہوگا! درا سو چو تو سہی ، سمام کے بےشمار جھو جن کی مالوں بہلیں توپ توپ کر پران دے رهی هیں جن کے بعجے روئی کے ٹاتوں کے نع مللہ پر سیدھ سررگ چلے جاتے هيں" تو سو چو ۽ اگر سماج کو اتبانے کے کلم میں اُسے چيتن سے كر ةالله ميں اگر كشت أيرين جيليں كى هوا كهاني پرت، اگر تهوی پهانسی کا در بهی دکهایا جارت در اتنا یاد رکهو مارت سماے کے هواروں لاکھوں کو اِس نوک سے بحیالے کے کام میں اگر تم سهایک هو سکو تو تم چیتنا سے هوا أنه چکے هو إ

أيسى كقهدائى مين يادكرو راشقر يتامهاتما كاندهى كوادردونرائن کے اُس سچے بجاری کو' غریب هندستانیوں کے اُس سچے وکیل كوا اين أتم بل سے توبين كا مقابله كرنيوا لے أس فقير كو . ان كا راسته تمهارا راسته رها أن كا يريم بهرا دل تمهارا دل هو تو تم

آج کا سماج جس میں ابھی شوشن فے درھن فے فریبی ه أس مين يسلم والي أس كو بيكنف والم يشمار ساتهم أثمو أ اس الله كد تمهارا كام آج الهذاهة تمهارا كام آج انسانيت كي استهایدا کرنا هے؛ پر اُس فا راسته کیا هر 9 اُس کا راسته یهی هے که سمای کو اقهای دو . تهیکیداروں کو اجارے داروں کو سمای کی اِجاریداری سے الگ کرو' اپنے پریم اور بلیدان کے سہارے الگ كرو ! كيون ؟ أس لله كي أب تم يهي سربي سكنم كا مادة وكهتم هوا أور بہلے بھی تم میں مادہ تھا پر اُس سمنے اُس پر پردنہ تھا ا پردنے مقا دو لمبی نیند سے جاک اُنور اور اُنْ کر ایک کام کرو ! پیسمکی غالمی آور چهینا جهیاتی سه انسان کو مکت کرو. شوشن کاسمحات کے شوشن کا۔۔راستہ بند کرو وچار کی آزادی دو! یهی پیکلم ها اسماج کی کوروپتا کو مثا دو!، الهو امتحنت کا لایه آسا آنهانے دو جس کی محنت ها

نجس کا جسم ف جس کی مفتت فے ا

पर में भूत गया, तुम भी तो कांज भूखे हो ! वेकार हो. वेकसी के मजार पर खड़े हो ! पर भूखे मरना, गुलामी स्वी-कार करना, यह भी तो हिंसा है ! कोरी करना, समाज की रोटी कीनना, बहुत बड़ी हिंसा है ! दूसरों की मेहनत पर जीवित रहना, पिस्सू और खटमलों की कोटि में झाता है ! पर पिस्सू और खटमल जानवरों की गिनती में हैं और तुम आदमी हो ! विशवास के साथ डठो, इस जघन्य अपराध को छोड़ दो !

खठो ! जवानो विश्वास करो ! अब इनसान गुजाम नहीं रहनेवाला है, उठो, अब मेहनत करके भी आदमी भूखा नहीं सोने वाला है ! घोखादेही और यह असत्यता का स्थापार अब मरजाने वाला है. यह महाजनी सभ्यता का समाज, दम घोंदू समाज अब मर जानेवाला है ! खठो ! आज इन्सान की आजादी की रोटी और मकान की बात पर खठो ! यह माँग अटपटी नहीं, यह माँग जियादा नहीं ! इतना तो सबका हक है कि आदभी का बेटा, आदमी की तरह ही रह सके, वह मजबूरियों का मारा जानवरपन को अंगीकार न करले ! जवानो ! तुम्हारी जवानी जिन्दाबाद !

डठो !लेखका ! बहुत लिखा जा चुका है प्रेम श्रीर इश्क के थोथे किस्सों पर, अपनी क़लम को अब मोड़ दो. तुन्हारे सामने ही दम तोइते अनाथ बच्चों, माताओं और दुखिया समाज की तरक ! मानता हूँ, इसमें तुन्हें कठिनाई होगी, पर बाद करो, टाल्सटाय की, याद करी गोकी की, श्रीर याद करो बभी-बभी ही मरे हमारे साहित्य के देवता प्रेम बन्द को ! प्रेमचन्द् ने जो कुछ लिखा, वह बेजोड़ है ! पर प्रेमचन्द् बाज बमर है, हाँ जासूसी कहानियाँ लिख जानेवालों को जमाना याद न रख सकेगा ! हिन्दुस्तान के जागीरदारों के बारा शोषित किसान आज प्रेमचन्द पर गर्व कर सकता है, विधवाएँ, व बीच के दरजे के पिसे हुए जवान आज भी प्रेमचन्द्र को याद करके उठ सकते हैं. क्योंकि प्रेमचन्द्र उन किसानों का था, उन रारी में का था, जिनका कोई न था! प्रेमचन्द् ने श्रात्मा न बेची, गुजामी को तोड़ फेंका, साहित्य की धारा उसने वहाँ मोद दी जहाँ समाज का अहि-चन बर्ग, समाज का सर्वहारा बर्ग, सो रह था ! च्ठो, लिखना हो तो लिखो धनपर जो सताए हुए हैं, जो धनराए हुए हैं. जो पीइत हैं. तुम पीड़ामय हो जाओ, अपनी वाणी और कलम को उनके ऊपर न्योझावर कर दो ! यही तुन्हारा चठना है !

पर तुन्हारी एक दलील हो सकती है कि यह सब शायद कुछ सरकारी लोगों को पसन्द न होगा, यह सब समाज का बहु बग पसन्द न करेगा जोकि जाज पढ़ लिख सकता है. जीर इस जगह जाकर मुक्ते रोना चाजाता है. हाँ, तुन्हारे भी माँ होगी, वहिन होगी, पत्नी होगी, फुदकने वाले बच्चों की

ید میں بھول گیا تم بھی تو آج بھوکے ہو ا بیکا ہو۔
بیکسی کے مزار پر کھڑے ہو! پو بھرکے مرنا ظامی
سرٹیکار کرنا یہ بھی تو هنسا ہے! چوبی کرنا سماج کی
روٹی چھیننا بہت بڑی هنسا ہے! دوسروں کی محصات پر جھرت
رهنا پسو اور کھٹمارں کی کوٹی میں آتا ہے! پر پسو اور کھٹمل
جاٹیورں کی گنٹی میں جیں اور تم آدمی ہو! وشواس کے ساتھ
آٹھو اس جاھنیہ ایرادہ کو چھوز دو!

اتهو إ جوانو رشواس كرو إ اب انسان غلم نهيل رها والا هـ اتهو اب محنت كر كے يوى آدمى بهركا نهيل سولے رالا هـ يك دهوكاديهى اور يعالماستينا كا وبابار اب مر جائے والا هـ يك مهاجتى سبهينا كا ساج ور كورتى اور مكان كى بات ور الاهـ إله الهو الها أج انسان كى آزادى كى روتى اور مكان كى بات ير اثهو إله مانگ اتابتى تهول يه مانگ زيادة نهيل إ انفا تو سب كا حق هـ كه آدمى كا بينا أدمى كى طرح هى رة سكه ولا مجوريوں كا مارا جانور بن كو انابيكار نه كو له ا جوانو إ تمهارى جوانى زندة باد إ

الهر! ليكهكو! بهت لكها جا چكا هـ بريم أور عشق كم تهوته قصوں پر اینی فلم کواب موز درہ تعیارے سلماء هی دم توزیر اناته بحور ماناؤں اور دکھیا سماج کی طرف ا مانۃ ھوں اِس میں تمہری نقبنائی ہوگ ، پر یاد کرو السقالے کو یاد کرو گورکی کو، اور یاد کرو آ.هی ابهی هی سرے همارے ساهتهہ کے دیونا پریم چاد کو ا پریم چاد لے جو کچھ لکھا' وہ بےجرز ہے ! پر پریم چاد آبے امر ہے، علی جاسرسی کہانیاں لکھ جالے والرس کو زمانے یاد نہ رکم سکوکا ! هندستان کے جاگیرداروں کے دوارا شوشت کسان آج پریم چند پر گرو در سعنا هے ودهوائیں ، و بنے کے درجے کے یسے هوئے جوان آج بھی پریم چند کو یاد کر کے الله سکتے عیں . کیونکه بریم چند ارکسانوں کا تھا ان غریبوں کا تھا جن کا کوئی نه تها إ بريم چلد نے آلما نه بيچي، غلامي دو توز پهيدكا سستيه دي دھارا اس لے وہاں مرز دی جہاں ساچکا آذائجوں ورک ساچ کا سروهاراورک سو رها تها، اتهو إ انهانا عو تو لهو ان پر جو ستائه هوئه هين' جو گيبرائے هنا اهين' جو پيزت هيں . تم پيزا مے هوجاؤ' اینی وانی اور قلم کو ان کے ارور نصیارر کو دو ا یعی میارا

हुड़ी। सोटे सीटे गर्दों पर, की के विद्योगों पर, वसी की डढी हवा के नीर्चे, संसकी दहियों की यहकती हवा के नीचे, करसी तोड धनकबेर ! थैलियों के मालिक ! बैंक के रक्षक. हरों! अनाज का भाव मेंहगा करने के लिये नहीं: इसिविये भी नहीं कि सह और फाटके में गरीबों की सक़दीर के साथ सिवाबाद करो ! इसलिये भी नहीं कि चार बाजारी... और दपयों का ढेर जमा करो, पर इसलिये क्हो कि तुन्हें समाज की बगुवाई करनी है, शोषया की, खून चूसने की कता से आजाद होना है और सबको आजाद करना है! इनसान और समाज एक दूसरे के पूरक हैं. इनसान को बाजादी दो, इनसान को रोटी मिलने दो, उसे रोटी बाँटो मत, वह तो ख़द रोटी पैदा करता है. फिर उसे तुम क्या रोटी बाँटोंगे ! उसे मकान दो, क्योंकि वह खुद मकान बनाता है. यह सब होने दो, समाज अपने आप बढ़ेगा. एठो! इनसान की बाजादी के नाम पर समाज में फैली हुई इन खन्दकों और खाइयों को पाट दो ! शोषण के शेष-नागो ! आज फुफकारना बन्द करो, कमजोरों को काटना रोक दो ! उठा ! तुम्हारा समाज बदल रहा है, इनसान श्रीर श्राज का धर्म, मजहब, विश्वास बदल रहा है ! उस बद्लते हुए इनसान, विश्वास और समाज सबका साथ वो ! अपनी मानसिक गुलामी के इटाने के लिये दिमारा के रोशनदान खोल दो, फिर तुम महसूस करोगे सङ्क पर पद भूओं की कराइट, खेत में बिलखते पेट की रोटी की माँग ! पर एक को उठाकर दूसरे को न गिराक्रो—सबका धर्म है डठना ! डठो ! इस विश्वास के साथ टठो कि इनसान को चठना है, इसलिये चठना है कि वह पतन की सीमा लाँच चुका है, वह आत्महत्या करने पर उतार है आज ! पर क्या तुम जानते हो कि भेदियों को छपदेश देने से .खन की तुप्ति नहीं होती, उन्हें .खून की ही चाह होती है ! वोशर्म करो, तुम इनसान हो, मेडिये नहीं. अपनी सभ्यता और संस्कृति पर आज बहुत गर्व करते हो, तुम जीव ब्या धर्म के प्रचारक हो, इस भेड़ियेपन से आजाद होओ ! शोषस का जामा उतार फेंको ! उठो ! सबको उठने दो ! उठना सब का श्रमिकार है.

जवानो छठो ! तुन्हारायह सबसे बढ़ा काम है ! तुम तो सृष्टि के सम्बे हो ! छठो ! हर देश की लाज है तुम पर ! विश्ववाओं की आहों को सुनकर घठा, वस्तीकी मारी माँ की बीक्स सुनकर छठो ! छठो ! इन्सानियत को भी शर्मा देने वाली बेरमा कही जाने बाली माँ बहिनों की लाज की खातिर छठो ! छहो ! शोषण की बक्की के पाटों से पिस रहे समाज को बाह्यो बढ़ाकर शोषणा गुरू कर देने का काम तुम पर है, आबो छठो ! बुहने मत देको ! ईमान मत बेचो ! बाबो, बुहामी को स्वीकार मत करो !

اليرة بيوسيد الدن يرا ارثى كا اجياس يرا الا عی لیلٹی موا کے لیتھے خس لی تایاں لی مہلی موا کے الیکھے کوئی اور دھن کو بیر ! تیکاروں کے مالک ! بیلک کے ركفك الهر ا أناج كا يهاو مهنكا كران ك لله تبيين ها أس اله ہے نہیں که سالے اور بھائے میں فریبوں کی تقدیم کے ساتھ کیلوار کرو ا اس الے بھی تبھی که چور بازاری اور رویفوں کا تھیر جمع کرو' پر اس لئے آئیو که تمهیں سماج کی آگوائی کوئی ھ، شرشن کی' خون چوسلے کی کا سے آزاد مونا کہ آور سب كو آواد كرنا هـ 1 انسان اور سايج ايك دوسيسكم يورك هيں ، إنبيان كو أزادى دو' انسان كو روثي ملته دو' أعه روثى باللو مت و تو خود روثى پيدا كرتا هـ. پهر أمه تم كيا روتی بانقو کے ? اسے مکان دو کیونکد وہ خود مکان بناتا ہے . یه سب هول دو ٔ ساج اپنے آپ بڑھے کا . اٹھر ا انسان کی آزادی کے نام پر سالے میں پھیلی ہوئی ان خندةوں اور کھاٹھوں دو یات در ! شوشی کے شیعی ناگر ! آج پیپیکارنا بند کرو کمؤوروں كو كالله روك دو إ الهوا تمهارا صماح بدل رها هـ، انسان أور أج كا دهرم منهب وشواس بدل رها هم إ الس بدناء هويم انسان وشواس اور سماج سب کا ساتھ دو ! اپنی مانسک عامی کے مثالے کے اللہ دماغ کے روشندان کہول دو' چور ام محسوس کرو کے سوف پر بڑے بورکوں کی کراهمی، کهیت میں بلکیا۔ پیمی کی روئی کی مانگ ! پر ایک کو اُٹیا کر دوسرے کو اے عراؤسسب كا دهرم هم أثبنا ! أثهر ! إس وشواس كم سانه ألمر كه إنسان كو الهنا هـ الس الله الها هـ كه رة يالي كي سيدا النام چكا هـ؛ وه أتم هنيا كراء ير أنارو هـ أج إ ير كها تم جائيه هو كه بهيزيون كو أيديض دياء سه خون كي الريكي نہیں مرتی، انہیں خون کی هی چاہ موتی هے ا تو شرم کور، نم اِنسان هوا بهار په نهادل اپني سبهينا اور سنستوني پر آي بہت گرو کرتے ہوا تم جدو دیا دعوم کے پرچارک ہوا اِس بھوریکے ين سه أول هرؤ ! شوشن كا جامه أنار يهدنكو ا أثهو ! سب كو أَنْهِلُو در إ أَنْهَا سب كا الحيكار في .

جوانہ آئھو اِ تبھارا یہ سب سے بڑا کام ہے اِ تم تو سرشلی کے کہدے ہو اِ آئھو اِ ہر دھش کی ہے ہے تم پر ا ودھوائیں کی آموں کو سن کر آئھو اِ انسانیت کو بھی شرما دیائے والی وبھیا کھی جائے والی ماں بہاوں کی ہے کی خاطر آئھو اِ آئھو اِ آئھو اِ شیشن کی ہے کی خاطر آئھو اِ آئھو اِ شیشن کی جس رہے سماے کو آگے بڑھا کو شوشن کی جس کی جس کی گئیے میت آئیکو اِ آیائی میت کرو اِ

A THE

यह एउन ने इसे बताया कि मेरी गर्दन पर तत्तवार का पढ़ हाथ मारो." बनिये ने इहा—"बच्हा", धौर तत्तवार बपटो इरके उसकी गर्दन पर धीरे से मारी. इस पर बिगद इस पठान ने कहा—"मई तुम तो बिल्कुल बनावी माल्म होते हो. करन करना एक जरा सी बात है, वह भी तुम नहीं जानते।"

बनिये ने तलवार फेंक दी ब्यौर कहा—"मई, मैंने तेरी वैंगलियों से खून तो बहा दिया. खून बहने से तेरे बाप

की बात पूरी हो गई."

بلیگے نے تلوار پھنک دی اور کہا۔ "بھای میلہ تیزی انگلیس سے خوں تو بہا دیا ، خون بہلے سے تیرہ باپ کی بات

يورف هو گئي ."

उठो !

एक छाहिन्दी भाषी भाई

ण्ठो ! क्यों ? इसिलये कि बहुत सो जुके हो ! पर सोना, और उठना तो नित्य का काम है ! नहीं, मैं तुम्हारी चेतना को जगाना चाहता हूँ, मैं तुम्हें मकमोर देना चाहता हूँ ! क्यों ? तुम जांगते हुए भी सो रहे हो ! यह मींद नहीं— तन्द्रा है. यह जब आदमी पर छा जाती है, तो आदमी सो जाता है, और फिर समाज भी सो जाता है.

चाज घटने की बेला है, बिलदान की घड़ी है चठो ! पूजा का सामान बाँघ लो ! पर सामान नहीं, बाँघना नहीं, पूजा भी नहीं—यह सब पुराना हो चुका ! आज सामान बांघो नहीं, उसको विखेर दो ! बाँटने की भी धावश्यकता नहीं, सबको पाने हो ! पूजा की थाली को धाज मन्दिर में नहीं वहाँ जाने दो, जहाँ मूख की चटपटाइट है, लाचारगी का मातम है, मीत का तांडव नाच है !

को ! पूजा करा इन्सान की, वही देवता है, नरनारायन है, बही राज है, वही बनाने बाला है। मजदूरी के संसार का, मेहनत की दुनिया का, गगन-चुन्धी महलों और घटारियों का, बड़े-बड़े धन के बखारों का !

धठो ! कारकाने की चिमनी के धुएँ में दम तोड़कर मेर जाने चाले मंजादूर घठो ! जेठ की दुपहरी में वसीने में लथपंथ भूकों किसानों घठो ! मेहनत की चट्टान से लड़ने वाले मग-चान के चारें, घठो ! छोइ ! तुम सोए ही कब ! हाँ, तुम बोए नहीं, पर वेवसी से हार खाकर पड़ गये, तुम रोएं शहीं, चोंटों की मार से चायल हो कर तन्त्रामय हो गये !

أتهو!

أيك هادى بهاشى بهاثى

أثهر إكبرس إلى إلى الله كه بهت سو چكه هو إ پر سونا أور إثبها تو نت كا كام هـ إ نهين مين تمهاري چيتنا كو جكانا چاهئا هرن مين تمهين جهنجهور دينا چاهنا هون إكبرن إلى تم جاكله هوئه يهي سو ره هو إ يه نياد نهين ستندرا هـ . يه جب آدمى بر چها جاتى هـ تو آدمى سو جانا هـ أور پهر سعاج بهي دو جاتا هـ .

آج آئینے کی بیٹا ہے' بلیدان کی گوری ہے' آئیو! پوجا گا مامان بائدھ لو! پر سامان نہیں'بائدھائییں' پوجامی نہیں۔ یہ سب پرانا ہو چکا! آج سمان بائدھو نہیں' اسکو بائیو دو! پرجا کی بائٹنے کی بھی آرشیکتا نہیں' سب کو پائے دو! پرجا کی تہائی کو آج مندر میں نہیں' رہاں جائے دو' جہاں بھرک کی جہتہاہت ہے لاچارگی کا ماتم ہے' مرت کا تالدوناج ہے!

الہو ا پوچا کرو آنسان کی' وہی دیوتا ہے' نونوائن ہے۔ وہی راج ہے' وہی بدانے والا ہے' مزدوروں کے سنسار کا' متعلت کی دنیا کے اگلی چمبی متعلوں اور آثاریوں کا' بڑے۔بڑے دھن کے بہاروں کا !

آئیو! کارخانے کی چملی کے دھوٹیں میں دم تور کر مو حوالے والے مؤدور اٹھو! جیٹم کی دوبھری مدں پسینے میں لاج بھت کی بھانے اور کا میں اٹھو استعامت کی جیٹان سے لولے والے بھکوٹی کے پہلے اٹھو! آوہ اُ تم سرک ھی کی اِدھاں تم سوئد قیادل اُ پر یہ بھتی سند قال کیا کو پر گئی تم روئد تمیش چوٹوں کی مثر تھ گئی ہوگی دوئد تمیش چوٹوں کی مثر تھ

"是我们的一个"

लिये उनके पास पहुँचा और बोला-"लो, सारो मुसे इस से." सेठ जी ने डर के मारे दोनों हाथों से आँखें मूँद ली और दुहाई देने लगे.

पठान के समन्ताने-बुन्धाने पर जब सेठ जी के होश जरा ठिकाने आये, तो पठान ने उनसे माफी माँगी और कहा -"भाई, तू वो मेरी जान का मालिक है. तू अभी मेरी गर्न काट ले. इतनी दूर से चलकर जिस काम के लिये तू

धाया है, वह तू पूरा कर."

अब सेठ जी की समक्त में आया कि द्र असल मामला जल्टा है. सेंठ जी सोच में पड़ गये कि क्या जवाब दें ? श्रगर इनकार करते हैं, तो .बैर नहीं, और मंजूर करते हैं तो करल का गुनाह होता है. कहने लगे—"अच्छा भाई, कुछ ठहर कर तुम्हें मारूँगा, क्योंकि मैं नही जानता, तुम हां कीन १ तुन्हारे घर पर चलकर पहले तुन्हारे माई से पूछ लूँ, फिर मारूँगा."

भाई का नाम सुनते ही पठान ने कहा-"उस दुरमन का मेरे सामने नाम न लो. हाँ, अगर घर पर चलकर

मारना चाहते हो, तो चलो, वहीं सही."

दोनों घर आये. सेठ जी ने कहा-"भाई, मैं तुमे तब मारू गा जब कि तू अपने भाई से मेल कर के, वर्नी सब यही कहेंगे कि मैंने तुमे तेरे भाई के मागड़े के सबब मार डाला.' तेरे भाई से भी लोग यही कहेंगे कि आपसी कगड़े के सबब अपने मुँह बोले धर्म माई का बुलबाकर उससे संगे भाई को मरवा डाला. जो तू मेरी बात नहीं माने तो फिर तू हो मुक्ते मार डाल."

हारकर पठान अपने भाई से जाकर मिला. दोनों में सुलह हो गई. आखिर में छोटे भाई ने सेठ से कहा कि "अप तू मुक्ते मार डाल, ताकि मेरे बाप की बात भी पूरी हा जाय." पर सेठ ने पहले दिन तो यह बहाना बताया कि आज सुलह का दिन है, इसलिये मरना-मारना ठीक नहीं. दूसरे दिन सेठ जी ने कहा-"मई, मैंने हुके माफ किया.

भव तू भी मेरी जान बखरा."

ं छोटे माई ने कहा- 'यह नहीं हो सकता. तुम मेरी जान बख्श कर मुक्ते नालायक वेटा कहलबाओं ? यह किसे नहीं मालूम कि तुम्हारे आते ही मैं तुम्हें मारने को दीड़ा था १ यह हो नहीं सकता कि तुम मेरा .खून न करो. में अपने बाप की बात को किसी तरह टालने न दूँगा."

वह किसी तरह भी न माना और अंजर बनिये के हाथ में देखर, गर्दन मुकाकर आगे बढ़ा. बनिये ने उसकी उँगली में संजर की नोक लगाई. वह विगक्कर बोला-"यह तुम स्या कर रहे हो १" वनिये ने इँसकर कहा-तुन्हें क्रला - परेता हैं." पराने कहा-"हम भी बढ़े पाजीब बादमी हो." इस पर पनिया बोला-फिर सुमें बताओ, मैं तो वह सब क्रम क्रम के महाबे जानता नहीं."

ينوان کے سمجھالے-بجہالے پر جب سیاہ جی کے مبھی فرا ٹیکانے آئے' تو یٹھاں نے اُن سے معادی سانکی اور کیا۔۔ "المالي أنو تو ميري جان كا مالك هـ . تو أيهي ميري گردين كانته لي . أنفى دور سے چل كر جس كام في ليلم تو أيا في ولا تو يبرا كر ١٠٠

أب سهام جي کي سمجم مين آيا که درامل معامله اللا هي. سیتم جی سرچ میں پر گئے که کیا ۔ جواب دیں 8 اگر انکار کرتے هين أو خير نهين أور منظور كرتے هين أو قال كا گناه هوتا الها، كها لكي-" اچها بهائي كچه لهر كر تمهيل مارونكا كيونكه میں نہیں جانتا' تم هو کون ا تمہارے گرر پر چل کر بیلے تموارے بھائی سے یوچھ اوں بھر مارونگا ."

بھائی کا نام سنتے ھی پٹھان نے کہا۔۔۔''اس دشمن کا میرے سامنے قام تع لو ، هاں ' اگر کير پر چل كر ماون چاهتے هو تو چلوا وهیں سہی ."

درقين گهر آي، سيته جي له کهاسادايهائي مين تجه تب مارونگا جب که دو اینے بھائی سے میل کر لیا رونه سب یہی کہیلا کہ میلے تجے تیرے بہائی کے جہارے کے سبب مار ڈالا ، تیرے بھائی سے بھی لوگ یہی کہینکہ که آیسی جہاڑے کے سبب اینے منہ بولے دھرم-بہائی کو بلوا کر اُس سے سکے بھائی کو سروا قالا . هو تو میری بات تهیں مالے تو یار تو هی مجے مار

ھار کو پٹھان اپنے بھائی سے جا کو ملا۔ دونیں میں ملم هو گئی ، آخر موں چبوٹہ بہانی نے سیٹھ سے کہا که أب تو معجھے مار دال ناکه میرے باپ کی بات بھی پوری هو جائے ." پر سيقه لے پہلے دي تو يه بهائه بنايا كه آج صابح كا دي هے، اس لئه مولا مارنا ٹییک نہیں . دوسرے دیں سیٹھ جی نے کہا۔"بیٹی ا میلے تعجمے معاف کیا . آب تو بھی میری جان بخش . ا

چھوٹے بھائی نے کہا ۔۔ "یہ نہوں ھو سکنا ۔ تم مھری جان بخش کر متجے نالات بیڈا کہاراؤکے آ یہ کسے نہیں معلوم که تمهارد آتے هی میں تمهیں مارلے کو دروا تها لا یه هو تهیں ستدا که تم میرا خون نه کرو . میں اپنے باپ کی بات کو کسی طرح للله نه دونگا."

وہ کسی طرح بھی نہیں مانا اور خنصور بنیے کے عاتم میں دینے کو کردن جوکا کر آگہ ہوھا ، بلوے نے اُس کی انگلی میں خلعور کی قوک لگائی و به بکر کر بولا-"یه تم کیا کر رہے مر 9 المام لے هلس كر كيا سالنيوں قتل كرتا هوں ، ا أس له كهاستانم بيى بؤد عجيب أدمى هو . " إس يو يتها وراساليور سجه يداو مين تو يه سب فكل وال ع جهار جانتا نہیں ،"

पठान बोला—"भाई, और तो कोई बात नहीं, सिवाय इसके कि तुम्हें उसके हमले का ख़तरा है."

सेंठ जी ने कहा-"हाँ, और कोई बात नहीं."

पठान बोला—"िकर तुम बेघड़क मेरे साथ चलो. किसी बात की फिक्र मत करो. जरा भी न घबराओ, वह अगर मेरा एक मेहमान मार डाले तो मैं उसके दो मेहमान मार डालूँगा. तुम चलो, देखें अगर वह तुम्हारा बाल भी बीका करे."

उसने सेठ जी को लाख सममाया कि उन्हें अपने बारे में डरने की क़तई ज़रूरत नहीं, पर उनकी समम में कुछ नहीं आया. पठान ने उनकी बड़ी मिन्नत .खुशामद की, मगर सब बेकार. सेठ जी वहाँ से दूर जाकर ऐसी जगह ठहरे कि उसके जालिम भाई को उसका पता न चले. लांटा, होर और चादर भी गँवाई, पर जान बची लाखों पाये.

पठान के छोटे भाई ने लोटा-होर के साथ एक चार्र भी पाई, जिसमें एक गाँठ लगी थी. उसने उसे खोला, तो उसमें से उसके बाप का खत निकला, जिसमें सेठ जी को लिखा था कि आप आकर मेरे छोटे लड़के को मार अपने भाई के .खून का बदला लें. था वह सपूत. खत पदकर बहुत सोच विचार में पड़ गया. आखिर ते किया कि वह अपने बाप की बात पूरी करके ही दम लेगा. उसने सोचा, सेठ दर असल मुक्ते मार ही डालने को आया था. लेकिन वह तो मेरे बाप का बुलाया हुआ आया था और मैंने उत्ता उसे ही मार डाला हाता ! बड़ा राजव होता. .खैर, अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है. सेठ जी को तलाश कर कीरन उनके हाथों करल हो जाना चाहिये. वह तो बदला केने आवें और मैं जान चुराऊ, यह पठान के लड़के को शोआ नहीं देता.

पठान सेठ जी का पता लगाने में रात भर हैरान होता रहा.

सुबह होते-होते वह ठीक जगह पर पहुँच गया. सेठ जी डस
वक्त जंगल गये थे. वह भी डयर हो गया. सेठ जी डघर से
लीट ही रहे थे कि सामने पठान का भाई आता हुआ दिखाई
दिया. वस देखते ही सेठ जी सरपट भागे तो वह भी उनके
पीछे खजर हाथ में लिये यह कहता हुआ भागा कि "पारे
भाई, तुमे कसम है, भाग मत, मुझे मार डाल और मेरे वाप
की बात पूरी कर." मगर जनाब, वहाँ होश किसे, कौन सुने
और बीन सममे १ पठान हाथ म खंजर लिये चीख़ता ही
रहा. उसने सोचा, वे निकल न जायें, वर्ना उसके वाप की
बात अधूरी रह जायगी. वह और तेजी से उनके पीछे मागने
लगा. न वह खाई देखता और न खन्दक. भागते-भागते सेठ
जी के पैर थक गये थे और सौस फूल रही थी. आलिर
बेचारे शिर ही तो पढ़े. उनके गिरते ही पठान खंजर हाथ में

بٹیان پرلا۔۔'ایہائی' اور تو کوئی بات نہیں' سرائے اِس کے ۔ که تنہیں اس کے حیلے کا خطرہ ہے ۔''

سیات جی نے کہا ۔۔۔ 'هَاں' أور كوئى بات نہيں ،''

یقیان براسدایهر تم پردهرک میرد ساته چلو ، کسی بات کی فکر ست کرو ، ذرا بهی نه گیبراو و اگر میرا ایک مهمان مار دالونگا ، تم چلو دیکهه س اگر وه تمیارا بال بهی بیکا نرد . "

أس نے سيتھ جى كو لائھ سمجھايا كد انھيں اپنے بارے ميں ترخے كى قطعى ضرورت نہيں ور ان كى سمجھ ميں كچھ نہيں ايا . پتھان نے ان كى برى منت خوشامد كى مكر سب بيكار . سيتھ جى رهاں سے دور جاكر أيسى جكد ٹھيرے كد أس كے ظالم بيائى كو اس كا پتد نہ چنے . لوتا دور أور چادر بھى گنوائى پر جان بچى لاھور پائے .

پتھان کے چھوٹے بھائی نے لوٹا تور کے ساتھ ایک چادر بھی پائی' جس میں ایک کانٹھ لکی تھی ۔ اس نے اسے کھولا تو اُس میں سے اس کے باپ کا خط نکلا' جس میں سیٹھ جی کو لکھا تھا کہ آپ آئر میرے چھوٹے لڑکے کو مار اپنے بھائی کے خون کا بدلہ لیس ، تھا وہ سپوت ، خط پڑھ کر بہت سوچ وچار میں پڑ گیا ، آخر طے کیا کہ وے اپنے باپ کی بات پوری کر کے ھی دم لے گا ، اس نے سوچ' سیٹھ دراصل مجھے مارھی ڈالنے کو آیا تھا ، لیکن وہ تو میرے باپ کا بھیا ھوا آیا تھا' اور میں نے اللا اسے بھی مار ڈالا ھوا آیا تھا' اور میں نے سیٹھ جی کو نقش کر فوراً ان کے عاتبوں قتل شہیں بکڑا ھے ، سیٹھ جی کو نقش کر فوراً ان کے عاتبوں قتل ھو جانا چاھئے ، وہ تو بداء لیانے آویں اور میں جان چراؤں' یہ پٹھار کے لڑکے کو شوبھا نہیں دیتا ،

بتہاں سیتھ جی کا پتہ لگانے میں رات بہر حیران ہوتا رہا ۔

صبح ہوتے ہوتے وہ ٹھیک جگد پر پہنچ گیا ۔ سیتہ جی اس
وقت جنکل گئے نہے ۔ وہ بھی ادھو ھی گیا ، سیتہ جی ادھو
سے لوت ھی وہ نہے که ساملے پتھاں کا بھائی آنا ہوا دبھائی
دیا ۔ اسے دبعہتہ ھی سدتہ جی سربت بھاگے تو وہ بھی ان کے
پیدھے دسم ہے بھائی مست منجے مار ڈال اور میرے باپ بی
بات پورو کر ۔'' مگر جنائی وھاں ھوش کسے کون سبے اور
کرن سمجے کا پتھاں مات میں خنجورائے چیخت عی رہا۔ اس لے
سوچا رہے نمال نے جائیں ورنہ اس کے باپ کی بات ادھوری
وہ چائیکی ۔ وہ اور تیزی سے ان کے پینچھے بھاگئے لگا ، نہ وہ
رہ چائیکی ۔ وہ اور تیزی سے ان کے پینچھے بھاگئے لگا ، نہ وہ
سیت گئے تھے اور سانس پھول رہی تھی ۔ آخر بھیچارے
سیک گئے تھے اور سانس پھول رہی تھی ۔ آخر بھیچارے

इषर बद्दिस्सती से से ठजी पर उनके गाँव में आफत आई, द्राक्तिय रहमत काँ बड़ा अच्छा हाकिम था. रिआया उससे निहायत खुरा थी. मजाल नहीं जो रिआया पर कोई जुल्म हो. पर नवाथी जो हुई सो सरकारी अफसरों ने चुन-खुनकर वपये वाले सठ-साह्कारों को हरा-अमका कर द था पंडना हुक किया और उन्हें इतना परेशान किया कि वे देश छाड़-छोड़कर पठानों की हकूमत में बसने लगे. मगर पठानों के पास अब रह ही क्या गया था ? सेठजी ने सोचा — चलां, अब उस शहर में चलकर रहें जहाँ हमारा धर्म-माई बठान रहता है. चादर और लाटा-डोर कंधे पर रखकर सेठजी चल खड़े हुए. पठान का नाम तो मालूम था ही, पता मालूम न था, सो सोचा, किसी से पूझकर मालूम कर लेंगे.

बाजार में जा हो रहे थे कि अवानक यह पठान धर्म-भाई मिल गया. दोनों बड़े प्रेम से मिले, पठान बोजा— "बलो हमारे घर चल कर ठहरो." उन्हांने कहा—"तुम को बेकार तकलीफ होगी!" पर पठान न माना और ले जाकर अपने घर में टिकाया और .खुद उनके खाने-पीने का सामान लेने चला गया.

सेठ जी तो लम्बी सकर के मारे थक गये थे और वृसरे ठहरे बिल्कुल कमजोर. सामने झाँगन में कुँआ जो दिखाई पड़ा तो सोचा—चलो हाथ-मुँह धो लें. बस लोटा-डार किकर चल पड़े उधर ही. उनकी समभ में न झाया कि बीच झाँगन में यह रस्सी कैसे तनी है. कुँए पर पहुँचे झौर लगे पानी निकाल कर हाथ-मुँह धोने.

पठान का भाई छत पर बैठा था. उसने आब देखा न ताब, संजर लेकर नीचे उतरा और सेठ जी पर मपटा. सेठ जी ने देखा कि एक खूनी आदमी एक खंजर हाथ में लिये उन्हें मारने आ रहा है, ता लाटा होर वहीं छाड़ सर पर पैर रखकर भागे. पठान भी बड़ी तेजी से दौड़ा उनके पीछे पर वे साफ निकल गये. बद हवास वे भागे जा रहे थे कि सामने से पठान का बड़ा भाई—उनका दोस्त—आता हुंडी मिल गया. बह उनके लिये खाने पीने का सामान लेकर लीट रहा था. सेठ जी का इस बुरी तरह भागते और परेसान देखा तो बाला—"अरे भाई, कहाँ भागे जा रहे हो आखिर? खेर तो है ? माजरा क्या है ?"

'ख़ेर १ कैसी खैर १ यहाँ तो जान पर बन आई है"— सेठ जी बोले. उन्होंने सारी घटना कह सुनाई और मागने पर उतर जाए.

पडान ने कहा—बारे, तुम क्यर गये ही क्यों ? तुम्हें रख्यी नहीं लांघनी चाहिये थी."

अ सेंड जी ने कहा-"जो छड़ हुआ, सी हुआ, मगर

ادھر بنقستی میں میں پر ان کے کارں میں آئی اس سے آئی ، حافظ رحمت خاص ہوا اچھا حاکم تھا ، رعایا اس سے نہایت خوش ہی ، متجال نہیں' جو رعایا پر کوئی بھی ظام مو ، پر ٹرابی جو ہوئی تو سرکاری انسراں لیے چن چن چن کو رویاء والے سیتھ ساھوکاروں کو قرا دھمکا کررویاء آینتھانا شروع کیا اور آئیس اِنفا پریشان کیا کہ وے دیش چھرت چھرت نر پتھانیں کی حکومت میں بسنے اکے ، مکر پتھانیں کے پاس آب و ہمی کیا گیا تیا 9 سیتھ جی نے سوچا—چلز' آب اس شیر میں چل کو رهیں جہاں ھارا دھرم بھائی پتھان رھتا ہے ۔ چادر اور لوتا قور رهیں جہاں ھارا دھرم بھائی پتھان رھتا ہے ۔ چادر اور لوتا قور معلوم تھا ھی' پکھ معلیم تک تھا' سو سوچا' کسی سے پوچھ کر معلوم معلوم تھا ھی' پکھ معلیم تک تھا' سو سوچا' کسی سے پوچھ کر معلوم کو اینکے ۔

بازا میں جا می رہے تھے کہ اچانک وہ بٹیان دھوم بھائی مل گھا ، دونوں ہڑے وریم سے لے ، پٹھان ہوا۔"چلو' ھمارے گھر چل کو ٹیرو ۔" انھوں نے کہا۔"نم کو بیکار تکلیف ھوگی ا " پر بٹیان نے مانا اور سرتی جی کو لے جاکر اپنے گھر میں تکایا اور خود اُن کے کہائے بینے کا سامان لینے چلا گیا .

سیته جی ایک تو لعبی سفر کے ماریہ تیک گئی تھے اور دوسورے تیرے بالکل کمزور ، سامنی آنگی میں کلواں جو دکھائی پوا تو سوچاسسچلو' هاتم منه دهو لیں ، بس' لوٹا دور لیے کر چل پوت آدمو هی، آن کی سمجیسیں نه آیا که بیچ آنگی میں یه رسی کیسی نلی هے ، رسی بانده کو وے کلویں پو پہلتچے لور لکے پائی نکال کو هاتم منه دهوئے ،

ر بیتیان کا بھائی ساسنے چھت پر بیتھا تھا ، اُس نے آؤ دیکھا نہ تاؤ خنجر لے در ندیچے انوا اور سیتھ جی پر جبھتا ، سیتھ جی فی دریکھا کہ ایک خونی آدسی ایک خنجر ھاتھ میں لام انہیں مارلے آ رہا ہے' تو لوتا ذور وہیں چھبر سر پر پہر وہ رکھ کی پہتھاں بھی بوتی تدوی سے دورا اُن کے بیدچے؛ پر رہے صاف نکل گئے ۔ بدحواس رہے بھاگہ جا ہے کہ سامنے پٹھان کا برا بھائی ۔ اُن کا درست ۔ آنا ھوا مل گیا ، وہ اُن کے لائے کھانے بھائی اُن لوت رہا تھا ، سیتھ جی کو اِس بری طرح بھائی اور پریشان دیکھا' تو بولا۔''ارے بھائی کہاں بھاگے جا بھائے اور پریشان دیکھا' تو بولا۔''ارے بھائی کہاں بھاگے جا رہے ہو اخر آل خیر نو ہے آل ماجرا کیا ہے آلا ''

"خهر 9 کیسی خیر 9 بہلی تو جان پر بن آئی ہے" سیٹھ جی بہلے ۔ اُنھوں نے ساری گیٹنا کہت سنائی اور بھاگنے پو اُئے ۔ اُنھوں نے ساری گیٹنا کہت سنائی اور بھاگنے پو اُئے ۔

ی پہان نے کہا۔۔۔''ارے' تم ادھر گئے ھی کنوں 🖁 تمہیں رسی نہیں لائکیتی چاھیے تھی ۔''

سية جي نے كيات (جيو كنچه هوأ) سو هوا) سار اب مهي

नहीं." इसी रात पठान ने जाकर चुपचाप वनिये के भाई को मार डाला. लौटकर पठान ने सेठजी को यह खुशकावरी सुनाई, फिर कहा—"बाब उन कज दारों का भी नाम बताब्यो, जिन्होंने उसके बररालाने से बुम्हारा रुपया मार लिया है."

"हाय भाई ! हाय " … कहते हुए बनिया पहाड़ खाकर गिरा और गिड़गिड़ा कर बाला "यह तुमने क्या किया ?" पठान घबराया कि माजरा क्या है ? उसने कहा—"भाई बात क्या है ? मैंने अगर तुम्हारे भाई को मारकर बुरा किया, तो तुम मेरे भाई को मार डालो. चलो, किस्सा खत्म. अब राने-धोने से क्या हासिल ? यह कहकर उसने सेठजी का हाथ पकड़ा और कहा कि "चलो मेरे घर अपने भाई के .जून का बदला लेने."

सेठजी ने सोचा, रानीमत यही है कि इसको उखसत किया जाय. उन्होंने उसे कुछ उपया नकृद देकर उख्सत किया और सोचा कि चलो, आफत कटी, पठान ने चलते-चलते कहा कि, "मैं अपने बाप और भाई से मिलकर बदला लेने के लिके तुमको -खबर दूँगा."

पठान को घर छोड़े साल भर हो गया था. इसिनये इसके बाप ने समका कि शायद मर-खप गया होगा. उसे फिर घर लौटा देखकर बुड़े को खुशी हुई. पठान ने बिनये के यहाँ का सारा कि स्सा अपने बाप से कह सुनाया. उसके बाप ने कहा—''पठान की बात नहीं जाना चाहिये.'' और दोनों बदले के लिये राजी हो गये. .खुद उसके भाई ने कहा कि मुक्ते .खुशी से जान देना मंजूर है सेठजी आकर .खुशी से अपने भाई के बदले में मुक्ते मार डालें."

पठान के बाप ने एक चिट्ठी सेठजी को आकर बदला जैने के लिये लिखा. उसमें अपन लड़के के साथ की गढ़ इसकी मेहरबानी का गुकिया अदा किया और लिखा कि दूसरा बेटा हाजिर है, जब .खुशी हो, आकर उसे अपने भाई के .खुन के बदले में मार हालो.

बाप-बेटों ने महीनों इन्तजार किया, मगर न ता सेठजी आए और न उनकां कोई जवाब ही श्राया, महीनों तक बन्होंने अपने कई काम रोक रखे और यह मान लिया कि द्वोटा बेटा अब मरने वाला है, लेकिन सेठजी की कुछ .साबर न शाई. श्रास्तिर में सब नाउम्मीद हो गये.

थाड़े दिनों में पठान भाइयों का बाप मर गया. जाय-दादकी बाट पर दोनों भाइयों में बड़ा मगड़ा हुआ. घर का भी बँटबारा हो गया. आधा छोटे भाई को मिला और आधा बड़े को. बीच ऑगन में चारपाई की खद बान कोलकर इस सिरे से उस सिरे तक जमीन पर खूँटी गाड़ कर बाँध दी गई. यही घर के दो भागों की हद बनी थी. 'खगर एक दूसरे की सरहद में क़दम रखते, ती बस जंग! قیمیں ،'' آسی رات یاوان کے جاکو چپ جاپ بلید کے بھائی کو مار ڈالا ۔ لوت کو یقون کے ساتی کو مار ڈالا ۔ لوت کو یقت خوشطبری ساتی کی مار دیا ۔ اس کا بھی تام بتاؤ جاہرں نے اس کے ورطانے تام تمہارا رویدہ مار لیا تھ ۔''

" هائے بھائی ! هائے'' نسب کہتے هوئے بنیا پیچھار کیا کو گرا اُور گوگرا کر بولا که "یه تم نے کیا کیا ؟ پتھاں گیبرایا که ماجرا کیا ہے ؟ اُس نے کیا۔۔۔"بھٹی' بات کیا ہے؟ میں نے اگر تبھارے بھائی کو مار کر برا کیا' تو تم میرے بھائی کو مار تااو . چلو' قصہ خام . اُب روئے دھوئے سے کیا حاصل ؟'' یه کہه کر اُس نے میٹھ جی کا هاتھ پہرا اور کہا که "چلو میرے گھر اپنے بھائی کے خوری کا بدلا لینے ۔"

سیتھ جی نے سوچا' غلیمت یہی ہے کد اُس کو رخصت کیا اور کیا جائے ۔ اُنہوں نے اُسے کچے روپیٹ نقد درے کر رخصت کیا اور سوچا که چلو' آفت کتی ۔ پٹھاں نے چلتے چلتے کہا که ''مهں اپنے باپ اور بھائی سے ملکر بدلا لیلے کے لئے تم کو خبر دونگا ۔''

یقیاں کو گھر چھڑے ۔ ل بھر ھو گیا تھا ۔ اِس لئے اُس کے باپ نے سمجھا که شاید سر کیپ گیا ھوگا ۔ اُس بھر گھر لوٹا دیکھ کر بدھ کو خوشی ھوئی ، بتھاں نے بلیٹے کے بہاں کا سارا قصہ اپنے باپ سے نہم سلایا ۔ اُس کے باپ نے کہا۔۔"پتھاں کی بات تہیں جانی چاھیئے ،" اور دونوں بدلے کے لئے راضی ھو گئے . خود اُس کے بھائی نے کہا کہ"مجھے خوشی سے جان دنیا منظور ہے ۔ سیٹھ جی آئو خوشی سے اپنے بھائی کے بدلے میں مجھے مار قالیں ."

پہوئی کے باپ نے ایک چہتی سیٹھ جی کو آئر بداله لینے کے لئے لکھا ۔ اس میں اپنے لاکے کے ساتھ کی کئی اس کی مہریائی کا شکریہ ادا کیا اور اکھا که دوسرا بدتا حاضر ہے، جب خوشی ہو، آئر آے اپنے بھائی کے خون کے بدلے میں مار قالو ۔

باپ بیتوں نے مہینوں افتظار کیا مکر نا تو سیتھ جی آئے اور ثام ان کا کوئی جواب ھی آیا ، مہینا کی نک انہوں نے اپنے کئی کام روک رکھے اور یہ مان لیا کہ چھوٹا بیتا آپ مو نے والا ہے لیکھی ساتھ جی کی کچھ خبو نام آئی ، آخر کو سب تالمیں ھے گئے ،

تہورے دن میں پتیان بھائیوں کا باپ مر گیا ۔ جائیداد کی بائمہ پر دونوں بھائیوں میں بڑا جھکوا ھوا ۔ کور کا بھی بقرارا ھو گیا ۔ اُدھا چھرٹے پھائی کو مقارر اُدھا بڑے کو ۔ بھچ آنکن میں چرپائی کی اُردوان کھول کر اِس سرے سے اُس سرے تک رمیں پر کھرنگی کو کو باندھ دس گئی ۔ یہی کے دو بھاگوں کی جد بھی تھی آگر ایک دوسرے کی سرحد میں قدم رکھ دے ۔ بھی چھک اُ

خاتد هو جائے که آدهو سے آیک بنیا تکا ، بنیا تکا ، بنیا کاو پر کہیں سے آناج بیچ کو آرها تھا . اُس نے دور سے دیکا اور قریب آتے هوئے ڈا؛ مکر آخیرکار آیا تو گیدو فرا هد گئے . اُس نے دیکا که خال صاحب کے پیر گیدورل نے نوچ ڈالے هیں . خال صاحب نے بنیہ سے کو سے تیائی یا تو تم محدوم مارڈ لو نہیں تو اِن گیدورل سے بچاؤ ." پہلے تو وہ بہت قرا مکر پھر اُس سے نہ رها گیا . اُس نے پتیان کو آپنے تاثو پر آس سے نہ رها گیا . اُس نے پتیان کو آپنے تاثو پر اُن کی بوربوں میں چیپا کو لان آبا ، اُس نے پتیان کو آپنے تاثو پر سوچا کی بوربوں میں چیپا کو لان آبا ، اگر ورن کے آدمی درهیلوں کوئی دیکھ نہ ایا کو رہے تھے ۔ جنگل میں اور اُن کے ساتھوں کا برابر پیچیا کو رہے تھے ۔ جنگل میں اور اُن کے ساتھوں کا برابر پیچیا کو رہے تھے ۔ جنگل میں خور آس کو مشکل میں پہنس جانے کا خطرہ نے آدمی وہ رادم دل تیا ۔ سوچا گور هی لے چلو ، اور چیپا کو خطرہ تھا . آدمی وہ رادم دل تیا ۔ سوچا گور هی لے چلو ، اور چیپا کو خان صاحب کو آپی گور لے آیا .

بنیہ کی بی بی کی خاص صاحب کو دیکھ کو گھبرائی که یہ کیا نئی انت گہر لے آئے ۔ لیکن بنیہ لے کہا کہ اِس کی سیوا کرو اور اِسے چھپا کو رکھو ۔ پتھان کو گھر کے اندر ایک کوٹھری میں چھپا کو رکھا اور چیکے سے اُن کی موھم پتی اور علاج کرایا گیا ۔ مہیلوں میں جاکو کہیں پتھان اچھا ھوا ۔ پتھان نے جب چلنے کی بات کہی ' تو بنیہ نے کہا' ''ابھی تم کیزور ھو' ذرا دودھ کی بات کہی کیا کر موثے تازے ھو او' تب جانا'' پتھان'مان گیا اور وھیں رہ کو خوب دودھ گھی کھا کے مودھ گھی کھا کے مودھ گھی کھا کے مودھ گھی کھا کے مودھ گھی کھانے لگا ۔

(2)

پتهان کو اِس بات کا برا خیال آیا که بلیئے نے اُس کی جان بچائی ہے۔ اُس نے بلیے کو اپنا دھرم بھائے بنا نیا ، وہ دن رات اِسی سوچ میں رھنا که باؤے کی بھلماساست کا کیا بداء چکاؤں ، اُس کے قرض سے کیسے چھنکا اِ باؤر ہی بتیان اُچھا ھو چکا آیا اور جانے ھی رالا آیا که ایک عجیب معامله پیش ھوا ۔ بنیے کا ایک بھائی تھا جس سے اُس کی اوائی آئی اُس ایک روز بنیا بڑا اُداس تیا ، اسے اُداس دیکھ کر پتھان نے پوچھا ایک روز بنیا بڑا اُداس تیا ، اسے اُداس دیکھ کر پتھان نے پوچھا نے بہ یا کہ ''میرے اپنے بھائی سے دشمنی ہے ، اُس نے جینا نے بہ یا کہ '' اُس مشکل کو رکھا ہے ، سارے قرضداروں کو رونظ دیا ہے کہ بقیم قرض میت ادا کرؤ ، میرے خلف اس نے پوری یارٹی بنا لی ہے ، میں اُن کرؤ ، میرے خلف اس نے پوری یارٹی بنا لی ہے ، کی برسی سے تنگ تو کرتا تھا' پر اب تو منجے بالکل تباہ کی ہونے پرنگ ہے اور سنجھ میں نہیں آتا کہ اُبھی کھا کیا کو پرنگ ہے اور سنجھ میں نہیں آتا کہ اُبھی کھا کیا کو درے کا آگا کو درکھا ہے اور سنجھ میں نہیں آتا کہ اُبھی کھا کیا کو درکھا اُور کہا ' ''گھیواؤ

खात्मा हो जाये कि स्थर से एक बनिया आ निकता. वनिया टह पर कहीं से बानाज बेचकर का रहा था. उसने दूर से देखा और क़रीवं बाते हुए बरा; मगर बाखिरकार बाया, तो गीवड़ .जरा हट गये. उसने देखा कि .साँ साहब के पैर गीवड़ों ने नाच डाले हैं. खाँ साहब ने बनिये से कहा-"भाई या तो द्वम मुक्ते मार डालो, नहीं तो इन गीवड़ों से बचाओ." पहले तो वह बहुत हरा, मगर फिर उससे न रहा गया. उसने पठान की अपने टहू पर अनाज की बोरियों में छिपाकर लाद लिया, ठाकि कोई देख न सके. सीचा, कहीं लेजाकर छोड़ दूँगा, मगर यह हर था कि कहीं कोई देख न ले. क्योंकि नवाब और अंभेजों के आदमी रहेलों और उनके साथियों का बराबर पीछा कर रहे थे. जंगल में छोड़ने से खाँ साहब की जान का खतरा था और बस्ती में ले जाने ने खुद उसको मुश्किल में फँस जाने का खतरा था. बादमी वह रहमदिल था. सोचा घर ही ले चलो. और ब्रिपाकर खाँ साहब की अपने घर ले आया.

बिनये की बीबी खाँ साहब की देखकर घबराई कि
यह क्या नई आफत घर ले आये. लेकिन बिनये ने कहा
कि इसकी सेवा करो और इसे छिपाकर रखा और चुपके से
घर के अन्दर एक के।ठरी में छिपाकर रखा और चुपके से
उसकी मरहम पट्टी और इलाज कराया गया. महीनों में
जाकर कहीं पठांन अच्छा हुआ. पठान ने जब चलने की
बात कही, तो बिनये ने कहा, "अभी तुम कमजोर हो, जरा
दूध-घी खाकर मोटे-ताजें हो लो, तब जाना." पठान मान
गया और वहीं रहकर खु दूध-घी खाने लगा.

(2)

पठान को इस बात का बड़ा ख्याल था कि बनिये ने उसकी जान बचाई है. उसने बनिये को अपना धर्म-भाई बना लिया. वह दिन-रात इसी सोच में रहता कि बनिये की भुतमनसाहत का क्या बदला चुकाऊँ ? उसके कर्ज से कैसे छुटकारा पाऊँ १ पठान अच्छा हो चुका था और जाने ही बाला था कि एक अजीव मामला पेश हुआ. बनिये का एक माई था, जिससे उसकी लड़ाई थी. इसलिये कि वे एक दूसरे का प्राहक तोड़ते और विगाइते रहते थे. एक रोज बनिया बड़ा उदास था. उसे उदास देखकर पठान ने पूझा--"सेठजी, मामला क्या है ? आप रामगीन क्यों हैं ?" एसने बताया कि "मेरे अपने माई से दशमनी है. इसने जीना मुश्कल कर रखा है. सारे कर्ज दारों को बरराजा दिया है कि बक्रीया क्रज मत अदा करो. मेरे खिलाफ उसने पार्टी बना ली है. कई बरसों से तंग तो करता ही था, पर अब तो मुक्ते विस्कृत तबाह करने पर तुला 📲 बौर समम में नहीं अता कि अभी क्या-क्या करेगा ?" पदान ने बनिये को दिलासा विया और कहा, "घवराओ

खन का बदला !

خوں کا بدلہ !

मिरजा अजीमबेग चराताई

مرزأ عظهم بيك چغتائي

सन 1761 की पानीपत की लड़ाई के बाद यू० पी० में रुहेलों का जोर हुआ. वे 'गंगोत्री से गंग' इलाके के मालिक हो गये. रहेलों की हकूमत सरदारों के हाथ में थी, जिनका मुखिया था हाफिज रहमत खाँ. हाफिज रहमत खाँ एक जगजू और अच्छे हाकिम थे. वे अपने हिन्दू वजीर की मदद से मिरजद में बैठकर हकूमत का सारा काम करते थे. रिआया भी उनसे खुश थी.

سن 1761 کی ہائی ہت کی لڑائی کے بعد یو. ہی، میں روهیلوں کا زور ہوا ۔ وے 'گلکوتری سے گنگ' علاقے کے مالک عو گئے۔ روهیلوں کی حکومت سرداروں کے هاتھ میں تھی جن کا معهدا تها حافظ رحمت خان . حافظ رحمت خان ایک جنگهو اور اچھے حاکم تھے ، وے اپنے هندو وزیر کی مدد سے مستجد میں بیٹو کو حکومت کا سارا کام کرتے تھے ، رعایا بھی اُن سے خرش تهي .

जब अवध के नवाब और रहेलों में अनबन हो गई. तब रहमत खाँ ने अवध के नवाब को जंग के लिये ललकारा चौर बुरी तरह हराया. तब नवाब ने खँमेचों की मत्द ली. अप्रेज़ों और रहमत में वैसे तो सुलह थी; मगर अप्रेज़ों ने बहेलों का बढ़ता हुआ जोर तोड़ने का यह अच्छा मौक्रा देख सुलह को बालाए ताक रख दिया. उन्हें डर था कि अकेले अवध के नवाब को .फुरसत के वक्त यह आसानी से भून सायोंगे. लिहाजा अवध के नवाब से ठपया लेकर वे पसकी तरफ से मगर अपने मतलब के लिये, लड़ने आ गये.

جب اردھ کے نواب اور روھیلوں میں ان بن ھو گئی، تب حست خاں نے اودھ کے نواب کو جنگ کے لئے الکارا اور برق طرے ہرایا ، تب نواب نے انگریزوں کی مدد لی ، انگریزوں اور رحمت میں ویسے تو صلح تھی؛ مکر انگربزوں نے روهیلوں كا يومنا هوا زور توزل كا يه أجها موقع ديكم علم كو بالاء طاق رکھ دیا ، انھیں قر تھا که ائیلے اودہ کے نواب کو فرصت کے رفت یہ آسانی سے بھوں کھانیں گے ، لہذا او ع کے نواب سے روپیہ له كر وي أس في طرف سه مكر ايني مطلب كے اله الوا

अवध और अंप्रेजों की कीजों रहेलों की तरफ वढीं. षधर से हाफिज रहमन भी अपने रहेला सरदारों को लेकर बढा. दजोड़ा के मैदान में दोनो तरफ की फौजों में घमासान जंग हुई. एस जंग में रहेले बड़ी बहादुरी से लड़े और जीत गये; मगर दुश्मन का पीछा करने के बदले वे उनके कैम्प जूटने जगे, श्रीर रहमत खाँ उन्हें रोकते ही रह गये. श्रंप्रेजी .फीज, जो खेतों में छुप गई थी, लौटी घीर जमा होकर .फीरन रहेलों पर दूट पड़ी. फाँसा उलट पड़ा. जीत के बदले बहेलों की द्वार हुई, हाफिज रहमत खाँ मैदान से न हटे भीर बड़ी बहादुरी से लड़कर कट मरे.

اودہ اور انگریووں کی فوجوں روھیارں کی طرف ہوھیں ۔ ادعر سے حافظ رحمت بھی اپنے روهیا سرداروں کو لے کر بڑھا . دجورا کے میدان میں دونوں طرف کی فوجوں میں گھاسان جنگ ھوئی . اُس جنگ میں روھیلے بڑی بہادری سے لڑے اور جیت گئے؛ مکر دشمن کا پرسچھا کرنے کے بداء وے اُن کے كييب لوثنه لكي أور رحمت خال أمهيل روكته هي ره كنه . انگریزی نوج' جو کهیترں میں چہپ گئی تھی' لوئی اور جمع هو کر نوراً روهیلوں پر ٹوے پڑی . پانسه الت بڑا . جیت کے بدلہ روعیلیں کی ھار ھوئی ، حافظ رحمت خان میدان سے تھ ھٹے اور بڑی بہادری سے او کر کٹ مرے .

रहेलों की तरफ से लड़ने वालों में दो पठान भाई भी भाये थे, जिनमें से एक तो लड़ते-लड़ते मारा गया और दूसरा चायल होकर मैदान में अधमरा पड़ा था. असल में यह तीन माई थे. इनका बाप जिन्दा था. उसने एक भाई को रोककर और दो भाइयों को लड़ने के लिये भेज विया था.

روهیلوں کی طرف سے او یہ والوں میں دو پٹھان بیالی بھی آئے تھے، جون میں سے ایک تو لوتے لوتے مارا گیا اور دوسرا کھائل ھو کو او کی کے میدال میں ادھ موا ہوا نیا ، اصل میں یہ تین بھائی تھے . اِن کا باپ زندہ تیا . اُس نے ایک بھائی کو روک کو آور دو بھائیوں کو لوٹے کے نام بھیج دیا تھا ،

रात का बक्त था. गीद्द और कुत्ते मैदान में लाशों को सा रहे थे और घायल .साँ साहब पड़े-पड़े अपने को गीदड़ों से बचा रहे थे. मगर गीव्ड बड़े चालाक थे. उन्हें नोच-नोचकर भागते थे. इस तरह सुबह हो गई और गीदड़ बदस्तूर खाँ साहब को नोचते रहे. क़रीब था कि उनका

رات کا وقت تها . گیدو اور کته میدان میں اشوں کو کھا رہے تھے ، اور گھائل خان صاحب بڑے بڑے اپنے کوگیدوں سے بھیا رہے تھے ، مگر گیدر بڑے چالاک تھے ، انہیں نوج نوچکر بھاگا۔ تھے ۔ اِس طرح صبح هو گئی اُرد گيدر بدستور خان ماهب کو نوچته ره . قریب تبا که أن کا

आफ़ताबों के सिलसिले

श्री सलाम महलीशहरी

जमीं पर अगर देवता कुछ न होते तो इन्सान शायद परीशाँ ही रहता.

> नजारे तो होते, बहारें तो होतीं, मगर गुलशने फिक वीराँ ही रहता.

इंक्रीक़त का मफ़हुम वाजे न होता धगर दिलनशीं कल्पनायें न होतीं.

> कोई खास मंजर निखर ही न पाता जो उसके लिये कुछ फिजायें न होती.

इक्रीकृत की इन जुकिशाँ र मंजिलों में इसीं ख्वाब अब मुस्कराने लगे हैं,

> बजुर्रों ने जो दीप रौशन किए थे वही दीप फिर जगमगाने लगे हैं.

कता और संगीत के दीप फिर से मुक्तइम३ फिजाओं में जलने लगे हैं.

जहें अहदे हाजिर कि "ढाफिज" के बरबत्र वै नरमे मचलने लगे हैं. 4 सुवारिक कि वादीये गंगोजमन में फला को नई जिन्दगी मिल रही है.

मुबारिक कि फिर "त्तीये हिन्द खुसरो" के अफ़कार६ की रौशनी मिल रही है.

नई रौशनी में नये ताज महलों. अजन्ताओं का जन्म होने लगा है,

हमारे कला मन्दिरों से करीब आन रूठा हुआ धर्म होने लगा है. मिली है अयादार जाबीर = जिसकी

वही ख्वाब पहले भी देखा गया था.

मुबारिक बनन की सहर कह रही है

कि यह बाफताबों का एक सिलसिला था.

नोट :--यह नजम 19 मई 1957 की इदाराये निजामिया, दिल्ली में यौम ख़ुसरी के मुवारिक मौक्रे पर पढ़ी गई. انوت : سید نظم 19 مئی 1957 کو آدرارۂ نظامیم دلی میں یوم خسرو کے مبارک موقع ہو بڑھی گئی ،

१. मतलब, २. चमकदार, ३. पहले की, ४. बालहारी, ४. एक प्रकार का बाजा, ६. कार्यों, ७. चमकदार, ब. फ्ल ६. प्रभात.

أنتابوں کے سلسلے

شرى سالم مجهلي شهرى

رميل يو اگر ديونا کچه نه هوتيه تو إنسان شايد يريشان هي رهكا

نظارے تو هوتے بہاریں تو هوتهن، مكر كلشي فكر ويرأن هي رها،

> حقيقت كا مضهوم واضع نه هونا أگر دلنشين كاينائين ته هرتين

كرثى خاض منظر نهر هي نه يانا جرأس کے لئے کیچو فقا پن نے ہوتیں ۔

> حقيقت كي إن فرنشان مازلون مهن حسون خواب أب مسكراني لكم هين ا

ہزرگوں لے جو دیب روشن کئے تھے رهی دیب بهر جکنگانے لکے هیں .

> كا أور سلكيت كے درب يور سے مقدم فقداؤن مهن جللم لكم ههن

زهے عبد حاض که "حانظ" کے بربط یه الم ورأاء كے تغمر مجلل لكے هيں .

> مبارک که وادئی گنگ و جمن مهن کلا کو نئی زندگی مل رهی هے،

میارک که هر "طوطی هاد خسرو" کے ادکار کی روشلی مل رعم ہے۔

نئی روشنی سیں نئے تابے معطول ' اجنداوں کا جنم مونے اکا ھے،

هماره الا مندرون سے قریب أب روتها حواً دهرم هولے لگا ہے۔

ملي هے فيابار تعبير جس كى وهی خواب پہلے بھی دیکھا گھا تھا،

مبارک وطن کی سعدر کہدرهی ه كه يه أنتابول كا ايك سلسله تها.

कहा कि मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ. यह सालूम होता था कि वे बर्रा रहे थे. मगर थोड़ी देर में वे समफ की बातें करने लगे. हरेक का दुआ दी और आखिरी रुखसत ली.

....जब सुबह मैंने उन्हें बिस्तर पर पड़े देखा तो वे मरे हुए नहीं मालूम होते थे. उनके चेहरे पर खामोशी थी. उनकी पेशानी पर अब भी वही शान मौजूद बी, लेकिन बह शिख्यत कहाँ थी, सिर्फ एक बेजान खोल बाकी रह गया था.

उनका इन्तकाल 80 बरस की उम्र में हुमा. उनके साथ एक नसल का ख़ारमा हो गया. बहु उन लोगों में से ये जिनको हिन्हुस्तान की जन्ने आज़ादी ख़ूब याद थी, जिसे हमारे अंग्रेज़ तारख़ीदाँ सन् 1857 ईस्वी का गृदर कहते हैं. उन्होंने अपने भाइयों, प्यारों, बुजुगों और इमवतनों को बदर्री से कृत्ल होते देखा. हर रोज़ भागने वालों की लाशों खंबहरों और गाँवों में पड़ी मिलती थी और हर रोज़ ने एक कृतार में अदे किये जाते और उनके सर काट लिये जाते. उन्होंने औरतों को बेग्रावर होते हुए, बच्चों को कुवले जाते और हज़ारों को मूखों मरते देखा था. उन्होंने बादशाह को गिरफ़तार होते हुए और मुल्क से निकाले जाते देखा था. उनकी आंखों के सामने शहज़ादे ज़बह किये गये और उनके सर दिल्ली दरवाज़े पर लटकाये गये, जो अब भी खूनी दरवाज़े के नाम से मशहूर है. उन्होंने अपने बतन और अपने शहर पर अंग्रेज़ों को काबिज़ होते देखा. उनके हाथों उन्होंने हिन्दुस्तान की तहज़ीब और उसकी अज़मत को ख़ाक में मिलते हुए देखा था.

फिर क्या ताज्जुव कि अंग्रेजों के लिये उनके दिल में नफ रत थी और इस कद्र कि हम भी इतनी नफ रत नहीं कर सकते. उन्होंने अपने सबसे बड़े बेटे को, जब उन्होंने अंग्रेजी पढ़ना गुरू किया, घर से निकाल दिया और उनको अपने चचा के घर पनाह लेनी पड़ी, ताकि वे अपना पढ़ना जारी रख सकें. अंग्रेजों की हर ची. ज के साथ इस कद्र नफ्रत गालियन उनके बढ़े हुए तास्सुव की बिना पर थी. लेकिन आज हम इसको समम सकते हैं और पसन्द करते हैं. उनके बेटों की नसल ऐसी थी जो गालियन न अंग्रेजों से नफ्रत करते थे और न मोहब्बत ही करते थे. वे अंग्रेजों के नीचे काम करते थे, क्योंकि अंग्रेज इनको मुगजिमत देते थे. लेकिन अब पहिंचे ने पूरा चक्कर ले लिया. आज हमारा मुल्क आजाद है. यह ऐसी आजादी है जो पहले नहीं हासिल हो सकती थी, निसका अन्दाजा भी हमारे बुजुर्ण न कर सकते थे.

ان کا انتقال 80 برس کی عمر میں ہوا ۔ ان کے ساتھ ایک نسل کا خاتمہ ہو گیا ۔ وہ ان لوگوں میں سے تھے جن کو ھندوستان کی جنگ آزادی خوب یاں تھی' جسے عمارے انگریز قاریخ داں سن 17 18 عیسوی کا غدر کہتے ھیں ۔ آنہوں نے اپنے بھائیوں' پیارس' بزرگس اور هموطنوں کو بیدردی سے فتل مہتے دیکھا ، هر روز بھاگنے والوں کی لاشیں کھندروں اور گاؤں میں پڑی ملتی تہدں اور هر روز رہے ایک فطار میں کھڑے کئے جاتے اور ان کے سر کات لئے جاتے اور هزاروں کے عورتیں کو بے آبرو میں انہوں نے بادشاہ کو گرفتار ہوتے ہوئے اور ملک سے نکالے جاتے دیکھا تھا ، ان کی آرکھوں کے سامنے شہزادے ذبح کئے گئے اور ان کے سر دای د وازے پر لٹکائے گئے' جو اب بھی خونی اور ان کے سر دای د وازے پر لٹکائے گئے' جو اب بھی خونی دروازے کے نام سے مشہور ھے' آنھوں نے اپنے وطن اور اپنے شہر پر انگریزوں کو قابض ہوتے دیکھا ، ان کے هاتھوں آنھوں نے هندستان دروازے کے نام سے مشہور ھے' آنھوں نے اپنے وطن اور اپنے شہر پر انگریزوں کو قابض ہوتے دیکھا ، ان کے هاتھوں آنھوں نے هندستان کی تہذیب اور اس کی عظمت کو خاک میں ملتے عونے دیکھا تیا ۔

پھر کیا تعجب کہ انکریزررں کے نئے اُن کے دل میں نفرت تھی اور اِس قدر کہ هم بھی اِتنی نفرت نہیں کو سکتے ، اُنھوں نے اپنے سب سے ہوئے بیٹے کو' جب اُنھوں نے انکریزی پڑھنا شورع کیا' گھر سے نکال دیا اور اُن کو اپنے چچا کے گھر پناہ لینی پڑھی' تاکہ وے اپنا پڑھنا جاری رکھ سکیں ، انکریزوں کی ھر چوز کے ساتھ اِس قدر نفرت غالباً ان کے بڑھے ھوئے تعصب کی بنا پر تھی ، لیکن آج هم اس کو سمجھ سکتے ھیں اور پسند کرتے ھیں اُن کے بیٹوں کی نسل ایسی تھی جو غالباً نے انگریزوں سے نفرت کرتے تھے ، اور نہ محتبت ھی کرتے تھے ، اسکریزوں کے نہیتے کام کرتے تھے ، اور نہ محتبت ھی کرتے تھے ، دیتے نام کو بیٹوں کے ایکن انکریزوں کے نہیتے کام کرتے تھے ؛ کیونک انکریز اِن کو مظرمت وی جو پہلے نہیں حاصل ھو سکتی آزادی ہے جو پہلے نہیں حاصل ھو سکتی آزادی ہے جو پہلے نہیں حاصل ھو سکتی تھے ، جس کا اندازہ بھی ھمارے بزرگ نے کر سکتے تھے ،

वनके प्यारों को विखाते हैं. वादा अवना का बूढ़ा और कमजोर जिस्म सिस्कियों से काँप रहा है.

लोग क्रंत्र में किट्टी डाल रहे हैं. दादा अब्बा अपने काँपते हुए हाथों में थाड़ी सी मिट्टी उठाते हैं. कहार डोली को क़त्र के क़रीब ले जाते हैं. आँ लों से दो क़तरे आँ सू के उस ताजा मिट्टी पर गिर पड़ते हैं जो वे हाथों में लिये हुए हैं. वे बेबसी से हाथों की मिट्टी .कत्र में गिरा देते हैं और बहरा ढक लेते हैं.

\$ \$ \$

बेटे की मौत के तीन बरस बाद दादा और जिन्दा रहे, हालाँकि वे जिन्दगी से थककर आजिज हो गये थे. वे अक्सर राते थे, लेकिन उनका खारमा बहुत खामोशी से हुआ. उन पर एक मर्तना फालिज गिर ही चुका था. एक मर्तवा और गिरा. उनका दाहिना हाथ और दाहिना पाँउ पहले ही बेकार था, अवकी बार बाँए हाथ और पैर पर असर हआ.

मरने से कुछ पहले ने बहुत विड्विड़े हो गये थे और हर तीमारदार को उनकी खकगी का सामना करना पड़ता था. सिर्फ एक बूढ़ी मामा उनको चुप करा सकती थी और उनकी तिबयत के मुआफि.क काम कर सकती थी. दादा अब्बा अपने लड़के क मरने के बाद जनानखाने में पहुँचा दिये गये थे. यह मामा भी अपनी जवानी के जमाने से हमारे ही यहाँ मुलाजिम थी और लोग कहते थे कि वह दादा की दाशता थी. इनसे एक लड़का भी हुआ था, जो बचपन में ही मर गया था. वही दादा की राक थाम कर सकती थी, क्योंकि न तो वह उनकी बातों की परवाह करती और न उनके मिज़ाज की. यह देखकर तकलीफ. होती कि वह अपने बूढ़े मालिक से कितनी बेपरवाही से पेश आती है. दादा अपनी कमजोर आवाज में कुछ कहते, लेकिन वह न सुनती. अगर कोई उसे कहता कि सुनो देखों क्या माँग रहे हैं, तो वह जवाब देती:—

"उनकी यही आदत है. उनको किसी चीज की जरूरत नहीं. वे सिफ मुक्ते परेशान करते हैं"... लेकिन किसी का कुछ बस न चलता क्योंकि वही उन्हें खामोश कर सकती थी. फिर इसमें शक नहीं कि अब वह सब बोक महसूस कर रहे थे.

बह रात में शान्ति के साथ गुजर गये. उनकी .जुबान आितरी वक्त तक उनके क़ाबू में रही और मीत से कुछ पहले उन्होंने सबको दुआएँ दी और अपने तमाम प्यारों को.जो वहाँ नहीं ये या मर गये थे, याद किया.

मीत से कुछ ही पहले वह राफलत में थे और कुछ -बड़बड़ाते थे. एक मर्तबा उन्होंने किसी को मुखातिब किया, जो अर्घा हुआ मर चुका था और उससे बुलन्द यावाज, में اُن کے بھاروں کو دکھاتے ھیں ۔ دادا آیا کا بورھا اُور کمؤور جسم مسکیوں سے کانب رہا ہے ۔

لوگ قبر میں بھی قال رہے ھیں ، دادا ایا اپنے کامپتے ھوئے عاتبوں میں تھوڑی سی ملی آئیاتے ھیں ، کہار تولی کو قبر کے قریب لے جاتے ھیں ، آنکھوں سے دو قطرے آنسو کے اس قارہ ملی لئے ھوئے ھیں ، وہ رہے ھانھوں میں لئے ھوئے ھیں ، وہ یہ یہ یہ سی سے ھانھوں کی ملی قبر میں گرا دیتے ھیں اور چھرا قدائک لیتے ھیں ،

\$ \$ \$ \$ \$

ہیا ہے کی موت کے نہیں برس بعد دادا اور زندہ رہے اللہ درتے حالمہ وسے زندگی سے تھک کر عاجز ھوگئے تھے، وسے اناثر روتے تھے لیکن اُن کا خانمہ بہت خاموشی سے ھوا ۔ اِن پر ایک مرتبه فالمج گر ھی چکا تھا ۔ ایک مرتبه اور گرا ، اِن کا داهفا اور ماهف پاؤں پہلے ھی بیکار تہا اب کی بار بائیں ھانھ اور پیر یہ اثر ھوا ۔

مرنے سے کچے پہلے وہ بہت چڑجڑے ہو گاہ تھے اور هر تیماردار کو اُن کی خعتی کا سامنا کرنا پڑتا تھا . صوف ایک ہوڑھی ماما ان کو چپ کرا سکتی تھی اور اُن کی طبیعت کے موافق کی مرف کے بعد زئران مون پہنچا دیئے گئے تھے . یہ ماما بھی اپنی جوائی کے خالے میں پہنچا دیئے گئے تھے . یہ ماما بھی اپنی جوائی کے زمانہ سے هدارہ هی یہاں مالزم تھی اور لوگ کہتے تھے که وہ دادا کی داشتہ تھی . اِن سے ایک لڑکا بھی ہوا تھا جو بھچپن دادا کی داشتہ تھی . اِن سے ایک لڑکا بھی ہوا تھا جو بھچپن کیونکہ نہ تو وہ اُن کی باتوں کی پرواہ کرتی اور نہ اُن کے مزاج کی . یہ دیکھ کر تکلیف ہوتی کدرہ ایک بوڑھے مالک سے کتنی بے بوڑھے مالک سے کتنی بے بوڑھے مالک سے کتنی بے بوڑھی سے پیش آتی ہے . دانا اپنی نمزور آواز میں کھچھ بے بوڑھا ھیں ، تو وہ جراب دیتی سے کہتا کہ سفو دیکھو کیا مینی وہ نہ سنتی . اگر کوئی اسے کہتا کہ سفو دیکھو کیا مینی۔

''ان کی یہی عادت ہے ، اُن کو کسی چیز کی ضرورت نہیں ، وے صرف مجھ پریشان کرتے ھیں...'ایکن کسی کا نچھ پس نہ چلتا کیونکہ وھی اُنھیں خاموش کر سکتی تھی ۔ پھر اِس مہی شک نہیں تہ آپ رہ سب بوجھ محسوس کی ہے تھے ۔

وہ رات میں شانتی کے ساتھ گذر گئے ۔ اُن کی زبان آخری وقت تک اُن کے قابو میں رھی اور موت سے کچھ پہلے اُمھوں لے سب کو دعائھں دیں اور اپنے تمام پیاروں کو' جو وہاں نہیں تھے یا مر گئے تھ' یاد کیا ۔

مرت سے کچھ ھی پہلے ولا غفات میں تھے اور کچھ بربراتے تھے ایک مرتبہ انھوں نے کسی کو مخاطب کیا جو عرمہ ہوا مر چکا تھا اور اس سے بللد آواز میں वे 70 बरम के थे जब मेरे वालिद, जो उनके छठे बेटे थे, बीमार हुए. हर तरह का इलाज किया गया. तमाम डाक्टरों और हकीमों ने जवाब दे दिया. बहुत से मीलिवयों ने अपने अक्ती गहे लड़ाए और अपने तजुर्वे के मुताबिक जादू टोने और आसेब वरीरा का इलाज किया; मगर उनकी हालत खराब होती गई.

गुरू-गुरू में तो वालिद दादा श्रव्या के साथ मकान के मरदाने हिस्से में ही रहते थे, क्योंकि इसी में सहूलियत थी. दूसरे पुराने जमाने के लोग .जनानखाने में ज्यादा देर तक रहना पसन्द न करते थे. दादा के सूफी और फ्क़ीर दोस्त आते और दुश्राएँ माँगते. मगर उनकी हालत राज बरोज खराब होती गई. तब वह मकान के श्रन्दर पहुँचा दिये गये, तािक उनकी तीमारदारी श्रच्छी तरह हो सके. दादा पर फािलज गिर चुका था श्रीर वह हर दूसरे तीसरे श्रपने बेटे को देखने एक छाटी सी चारपाई पर चार श्रादमियों की मदद से लाये जाते और कुछ घन्टे गुजर जाने के बाद वह उसी तरह बाहर ले जाये जाते.

बालिद की हालत जब और ख़राब हो गई, तो ताजा हवा के ख़ातिर उन्हें कोठे पर ले जाया गया, दादा अब्बा ने देखा कि उनकी हालत मायूस करने वाली है और वे जब उन्हें देखने के लिये कोठे पर लाये गये, तो .जीने की तंगी की वजह से बड़ी दिक्कत हुई. यह देखकर कि उनके लाने लेजाने में कितनी दिक्कत होती है, वह फूटकर रो पड़े. मैंने उन्हें जिन्दगी में पहले पहले रोते देखा. वे एक बेबस और बुढ़े आदमी के खामोश और दर्द से भरे आँसू थे. उन्होंने जुवान से इड़ न कहा लेकिन सब समम गये कि वे बहुत मायूस हैं.

आखिर एक दिन वालिद का इन्तकाल हो गया. मुमे याद है कि दादा अपने पलंग पर पड़े रोते थे. मेरे सामने उस वक्त की उनकी तस्वीर है—वे जार-जार रो रहे हैं. उनकी सिसकियों से पलंग हिल रहा है. यह एक बूदे आदमी की सिसकियाँ हैं, जो महसूस करता है कि उसकी इस्ती अब दुनिया में सिक्ष एक फजूल की बद है.

मुक्ते याद है कि फिर वे जनाजे के पीछे-पीछे एक डोली में क्रांब्रस्तान ले जाये गये. उनकी आँखों सुर्ख थीं. वे सिस-कियाँ लेते और जिन्दगी के फना होने की शिकायत करते. अपनी इस बेचारगी पर रोते कि बेटे के जनाजे को कन्धा भी न दे सकते थे. मैयत क्रब्र में उतारी जा रही है. खोदी हुई मिट्टी के ढेर पर दादा अन्दा डोली में बैठे हुए हैं. लेकिन वह क्रब्र के अन्द्र नहीं देख सकते, क्योंकि उनके आगे आदमियों की भीड़ है.

भीड़ ख़ँडती है. मैयत क्रम में है. कहार डोली को क्रम तक लाते हैं. लोग मरहूम बालिद का चेहरा आखिरी बार وے 70 بیس کے تھے جب میرے والد' جو اُن کے چھٹے بیٹے تھے' بھار ہوئے ۔ ہر طرح کا علاج کیا گیا ۔ تمام قائقروں اور حکیموں نے جواب دیے دیا ، بہت سے مولویوں نے اپنے عقلی کدے لوائے اور اینے تجربه کے مطابق جادو ڈوئے اور اسیب وغیرہ کا علاج کیا؛ مکر اُن کی حالت خواب ہوتی گئی .

شروع شروع میں تو والد دادا اہا کے ساتھ مکان کے مردانے حصے میں ھی رہتے تھے کھونکہ اِسی میں سہولیت تبی . دوسرے برائے زائے زائے کے لوگ زنانخانہ میں زیادہ دیر تک رھنا پسند نہ کرتے تھے ، دادا کے صوفی اور نقیر دوست آتے اور دعائیں مانکتے ، مکر اُن کی حالت روز برروز خراب ہوتی گئی . تب رہ مکان کے اندر پہنچا دیئے گئے ' تاکہ اُن کی تیمارداری اُچھی طرح ہو سکے ، دادا پر نالج کر چکا تھا اور وہ ہر دوسرے اُچھی طرح ہو سکے ، دادا پر نالج کر چکا تھا اور وہ ہر دوسرے تیسرے اپنے بیاے کو دیکھنے ایک چھوٹی سی چارہائی پر چار آسی طرح باہر لے جائے اور کیچھ گھنتے گذر جانے کے بعد وہ آسی طرح باہر لے جائے جاتے اور کیچھ گھنتے گذر جانے کے بعد وہ آسی طرح باہر لے جائے جاتے .

وال کی حالت آب اور خراب هو گئی' تو تازه هوا کے خاطر انھیں کوتھے پر لے جایا گیا ، دادا ایا لے دیکھا که اُن کی حالت مایوس کولے والی هے اور وے جب اُنھیں دیکھنے کے ایئے کوتھے پر لائے گئے' تو زینے کی ننگی کی وجہ سے بڑی دقت عوثی ، بعد دیکھ کر که اُن کے لانے لیے جانے میں کنئی دقت عوت هوت هے؛ وہ پھوت کر رو پڑے ، میں نے اُنھیں زندگی میں پہلے بہل دوت دیکھا'، وے ایک بے بس اور برزهے آدمی کے خاموش اور درد سے بھرے آنسو تھے ، اُنھوں نے زبان سے کچھ نه کہا لیکن سب سمجھ بھرے آنسو تھے ، اُنھوں نے زبان سے کچھ نه کہا لیکن سب سمجھ گئے کہ وے بہت مایوس هیں .

آخر ایک دن والد کا اِنتقال هو گیا . منجه یاد هے داد اینے پانگ پر پڑے روتے تھے مهدے سامنے اُس وقت کی اُن کی تصویر هے ۔ وار زار رو رهے هیں ، اُن کی سسکموں سے پلنگ مل رها هے . یه ایک بوڑھے آدمی کی سکیاں هیں جو محسوس کرتا هے که اُس کی هستی اب دانها مهر صرف ایک بغیرل کی مد هے .

مجھے یاں ہے کہ پھر وے جنازے کے پنجھے پبنچھے ایک تولی میں قبر، کان اے جائے گئے۔ اُن کی آنکھیں سرخ تھیں ، وے سکیاں اہتے اُر زندگی کے ننا ہونے کی شکارت کرتے ، اپنی اِس بہجارگی پر روتے که بیٹے کے جنازہ کو کندھا بھی دے سکتے تھے ، میت قبر میں آناری جا رہی ہے ، کھردی ہوئی متی کے تھے ، مین دادا آبا ذولی میں بیٹھے ہوئے میں المکن وہ قبر کے اندر نہیں دیکھ سکتے کھونکہ اُن کے آگے آدمیوں کی بھیز ہے ،

بییر چیناتی ہے میت قبر میں ہے کیار دولی کو قبر ایک لاتے میں الوگ مرحم والد کا چہرہ آخوی بار

लाता. इस दरमियान में दादा अन्या हमारा सबक्क दोहराते या हरूफ, कहलाते. और जब हम में से कोई सबक्क भूल जाता, तो हम सब डर जाते, क्योंकि दादा अन्या को गुस्सा आ जाता और वे बिगड़ने लगते, हालाँकि आम तौर पर वे मेहरबान रहते.

एक मर्तवा मैं और कुछ मेरे वह भाइयों ने वही चची का एक रुपया चुरा लिया. दरअसल रुपया लुदक गया था मार हमने चुपके से उसे उठा लिया था. हमने उसका जाकर भुना लिया और उसके चौंसठ पैसे कर लिये. हमने हो पैसे के बिस्कृट और मिठाई खरीबी, वस जमाने में चीजें काफी सस्ती मिलती थीं, और बाकी पैसों को पोशीदा जगह पर रख दिया. लेकिन किसी ने उसको देख लिया. अब तो हम सब बहुत डरे कि कहीं दादा को इसका पता न चल जाये. , लेकिन जिस बात से डरते थे वही हुई. दादा ष्पद्या को बेहद गुरसा आया और उन्होंने कहा कि मैं तुम सबको मार डालँगा. उन्होंने अपनी तलवार के निकाले जाने का हुक्म दिया, जो एक बड़े लकड़ी के सन्दूक में वन्द रहती थी. यह सन्दक्ष एक अंधेरी कोठरी में रखा हुआ था, जिस के अंदर जाने के लिये लाल्टैन की जरूरत पड़ती थी: सब उन्होंने मेरे बढ़े भाइयों को बुलाया श्रीर उनकी श्राँखों के सामने तलवार वमकाई. दोनों ने पानामे में पेशाब कर दिया और खीफ के मारे उनका रंग उड़ गया. शायद मेरे कमसिन होने के ख्याल से उन्होंने मुक्तको तलवार से नहीं धनकाया, लेकिन उनकी श्रावाज ही मेरे हवास उड़ा देने के लिये क्या कम थी. हम सबने वादा किया कि आइन्दा षोरी न करेंगे और अच्छे लड़कों की तरह रहेंगे.

मगर जब हम चाय के लिये भूखे कुत्तों की तरह दादा अब्बा के चारों तरफ बैठे रहते थे. तो हमका काई खीफ नहीं होता था. वह आम तीर से मजे मजे की बातें करते, मोहब्बत से पेश आते और कहानियाँ सुनाते. जब चाय तैयार हो जाती, तो उसको बह चीनी की छोटी प्यालियों में डालते. यह चीनी के प्याले आजकल की प्यालियों की तरह न थे, यह बहुत खूबस्रत असली चीनी के थे. इनमें हस्ता न था. उनका पेंदा तंग और मुंह चौड़ा था. चाय दूर से महकती थी. अक्सर वेसबरी में हम अपने होंठ हिला लेते थे. हमको छोटे-छोटे, फूले फूले विस्कुट दिये जाते, जिनको हम चाय में डवोकर चमचे से खाते. चाय ऐसी मजेदार होती थी कि उसके बाद कभी ऐसी मजेदार चाय पी ही नहीं और न मैं इसका मजा कभी चस्स सकूँगा.

दादा की चन्द और बातें मुक्ते याद हैं. यह याद एक - अच्छी मज, जूब आदमी की है, जिसे जिन्दगी के बोक ने स्थम कर दिया. الا الله الله و درمهای میں دادا ایا همارا سبق دهراتے یا حررف کہاتے اور جب هم هم سے دوئی سبق بهرل جانا تو هم سب در جاتے کونکه دادا ایا کو غصه آجانا اور وسے باکرتے الکتے کالانکه عام طور پر وسے مهربان رهتے .

ایک مرنبہ میں اور کھے میرے اوے بھاٹیوں نے بڑی چھے كا ايك رويه چرا ليا . درامل رويه، لوهك گيا تها أور هم له جہ کے سے اُسے اُنہا ایا تھا . هم نے اُس کو جاکر بھنا لیا اور اُس کے چونستھ پیسے کو لئے . هم نے دو پوسے کے بست اور متهائے خريدي. أس زمانيمون چيزس كاني سستى ملتى تهين؛ أور ياقي یہسوں کو بوشیدہ چکہ پر رکھ دیا ، لیکن کسی نے این کو دیکھ لها . اب تو هم سب بہت درے که کہیں دادا کو اِس کا پته نه چل چائے . لاکن جس بات سے ذرتے تھے رھی ھوئی . دادا ایا کو رحد فصہ آیا اور اُنھوں نے کہا که میں تم سب کو مار قااونگا . أنهوں نے اینی تلوار کے نکالے جانے کا حکم دیا جو ایک بڑے لکڑی کے مندرق میں بند رہتی تھی ۔ یہ صندرق ایک الدهیوی کوتھری میں رکھا ہوا تھا کجس کے اندر جانے کے ایم لااتھوں کی ضرورت برتی تھی ؛ تب اُنھوں لے مھرے بڑے بھائیوں کو بالیا اور اُن کی آنکھوں کے سامنے تلوار چمکائی . دونوں نے پاچامے میں پیشاب کر دیا اور خرف کے مارے اُن کا رنگ اُو گیا۔ شاید میرے کمسور ہولے کے خیال سے اُنھرں نے مجھکو تلوار سے نہوں دھمکایا کو لور کی آواز ھی مہرے حواس آزا دینے کے · الله كيا كم تهي . هم سب في وعدة كيا كه أنفدة چوري نه كريس كه اور اچھے او وں کی طرح رھینکے .

مکر جب هم چائے کے لئے بھرکے کتوں کی طرح دادا ابا کے چاروں طرف بیٹھے رہتم ' تو هم کو کوئی خوف ٹیپیں ہوتا تھا، وہ عام طور سے مؤے مزے کی باتیں کرتے' محبت سے پدش آتے اور کہائیاں سناتے . جب چائے تیار ہو جاتی' تو اس لو وہ چینی کہائیاں سناتے . جب چائے تیار ہو جاتی' تو اس لو وہ چینی نہالیوں کی طرح نہ تھے . یہ بہت خورصورت اصلی چینی کے بھالیوں کی طرح نہ تھے . یہ بہت خورصورت اصلی چینی کے تھے . اِن میں دستم نح تھا . اُن کا پنیدا ننگ اور منه چوڑا تھا ، چائے دور سے مہمتی تبی انثر بے مبری میں ہم اپنے ہوئت مقالیتے نہیں دور سے مہمتی تبی انثر بے مبری میں ہم اپنے ہوئت میں دور ہے کوئٹ چھرٹے بھولے بسمت دیئے جاتے' جن کو ہم چائے میں دور کر چمچہ سے کھاتے ، چائے ایسی مزیدار ہوتی تھی کہ اُس کے بعد کبھی ایسی مزیدار چائے ہی ہی نہیں اور نہ میں اِس کا مزا کبھی چکھ سکونگا .

دادا کی چند اور بانیں مجھے یاد ھیں ، یہ یاد ایک اچھے محددب آدمی کی ہے، جسے زلدگی کے بوجھ لے ختم کر دیا ،

था और उनमें से बदबू आती थी. फर्श को भी गन्दा कर देता और अपनी उँगली को गन्दगी में तर करके सूँघता, मगर लोग उसे पागल न समऋते. उनके छयाल में वह एक मज्जूब था.

दोदा के पास और भी फ़क़ीर खाया करते थे. लेकिन वे कुछ एक दो तो थे नहीं. चुनांचे मैं बहुतों से नावाक़िफ़ था.

दादा की सब से ज्यादा दिलपसन्द चीज उनकी
मजेदार दवाइयाँ थी. यह दवाइयाँ वे हम लोगों को बाँटते
थे. दिलचस्पी के साथ वे उन्हें बनाते थे. सब लड़कों में, जो
मेरे भाई होते थे, मैं ही सब से छोटा था छौर मुमको सबसे
ज्यादा चाहते थे. इसलिये सब लड़के मुमको दादा अब्बा
के पास चूरन लेने के लिये भेजते. मैं बेघड़क उनके पास
चला जाता और कहता—"दादा अब्बा, मुमे जरासा चूरन
दे दीजिये."

वे मोहब्बत से मुस्कुराते और अपने पुराने नौकर को, जो बरसों से उनकी खिड्मत में रहा करता था, पुकारते— ''राफ़र, इस बोतल को अस्मारी से निकाल ला-"

राकर, जो अपने स्वामी की तरह खुद भी बुदा हो गया था, लड़खड़ाता हुआ अल्मारी तक जाता और रालती से दूसरी बोतल उठा लाता.

"यह नहीं, दूसरी बोतल जो मैंने तुमसे कहा था"— दादा अब्बा ऊँची आवाज कर के कहते. फिर बोतल से एक जुटकी चूरन निकालकर मेरी हथेली पर रख देते.

"थोड़ा सा भीर दादा अब्बा?"

"बस श्रव नहीं, यह ज्यादा नहीं खाया जाता."

"लेकिन फ़लाँ फ़लाँ भाई भी भाँग रहे हैं"—मैं गिड़-गिड़ा कर कहता और वे कुछ चुटिकयाँ चूरन और दे देते. मैं उसे ज़ुबान से चाटता हुआ बाहर निकल जाता. मेरे भाई बाहर की तंग गली में मेरा इन्तजार करते और दौड़कर मुक्ते पकड़ लेते.

लेकिन चाय पीने में हम सब को बड़ा मजा आता. शाम को हम सब चार या पाँच लड़के, जो पाँच सात साल की उन्न के थे, दादा अन्वा के बड़े कमरे में जमा हा जाते. कभी कभी हम लोग बुलाए जाते और कभी ख़ुद से पहुँच जाते. दादा अन्वा आराम करते और सोते होते और हम सब अपनी छोटी छोटी मुट्टियों से उनके पाँच पर मुक्तियाँ लगाते. तब रा फूर 'समादार' जलाता. मुमे नहीं मालूम कि क्यों उस जमाने में चाय तैयार करने के लिये समादार इस्तेमाल किये जाते थे, राफूर समादार लाता और पास रखता. जब पानी सनसनामें लगता तो दादा अन्वा इसमें दारचीनी और इलायची डाल देते ताकि उसमें .खुशबू आजाय. वे किसी दूसरे को चाय न बनाने देते. जब चाय तैयार हो रही होती, तो रा फूर चीनी के प्याले और चमचे

تھا اور آن میں سے بدہو آتی تھی ۔ وہ فرھی کو بھی گندا کر دیٹا اور اپنی آنکلی کو گندگی میں تر کر کے سونکھتا ، مگر لوگ آسے پاگل ته سمجھتے ، آن کے خیال میں وہ ایک مجذرب تھا ،

دادا کے پاس اور بھی فقیر آیا کرتے تھے، لیکن وے کچھ ایک دو تو تھے نہیں ، چنانچہ میں بہتن سے ناواتف تھا ،

دادا کی سب سے زبادہ دل پسلد چیز آن کی مزیدار دوائیاں تھیں ۔ یہ دوائیاں وے هم لوگرں کو بانٹتے تھے ، حالا کے ساتھ وے انھیں بناتے تھے ، سب لوگوں میں جو مهرے بھائی ہوتے تھے ، میں هی سب سے چھرٹا تھا اور مجھکو سب سے زیادہ چاہتے تھے ، اِس لئے سب لوکے مجھ کو دادا ابا کے پاس چورا لینے کے لئے بھیجتے ، میں پردھوک اُن کے پاس چھ جاتا اور کہتا۔"دادا ابا مجھے ذرا سا چوران دے دیجائے ."

وے محصبت سے مستراتے اور اپنے پرائے نوکر کو جو برسوں سے اُن کی خدمت میں رہا کرتا تھا پکارتے۔۔''غفور' اُس بوئل کو الداری سے نکال لا ''

غور جو اپنے سواسی کی طرح خود بھی بورها ہو گیا تھا لوکھڑاتا ہوا الباری تک جانا اور غلطی سے دوسری بوتل اُٹھا لانا .

"یہ نہیں' دوسری برتی بوتل جو میں نے تم سے کہا تہا۔ " دادا آبا اُونچی آواز کو کے کہتے ۔ پھر بوتل سے ایک چھرن ٹکال کو میری ہتھیلی پر رکھ دیتے .

"تهررا سا اور دادا ابا 9"

"بس أب نهين يه زياده نهين كهايا جاتا ."

الیکن نقل نقل بهائی بهی مانگ ره هیں۔'' میں گرگرا کر کہتا اور ورے کچھ چٹکیاں چورن اور درے دیتے میں آسے زبان سے چاتتا ہوا باہر لائل جاتا میرے بھائی باعر کی تنگ گلے میں میرا انتظار کرتے ہوتے اور دور کر مجھے بکر لیتے ۔

لیکن چائے پیلے میں هم سب کو بڑا مزا آنا تھا . شام کو هم سب چار یا پانچ لڑک' جو پانچ سات سال کی عمر کے تھے' دادا آیا کے بڑے کمرے میں جمع هو جاتے . کبھی کبھی هم لوگ بلائے جاتے اور کبھی خود سے پہنچ جاتے . دادا آیا آرام کرتے اور سر قریب اور سے پہنچ جاتے . دادا آیا آرام کرتے اور سر قریب اور سمان لگاتے تب غفور 'سمان اور جلانا . مجھے نہیں معلوم که کیوں اس زمانے میں چائے تار کرنے کے لئے سماد ار استمال کئے جاتے تھے . غفور سماد ار لاما اور پاس رکھتا جب پائی سنسلانے لگتا تو دادا آیا ایس میں دار چینی اور الانچی قال دیتے تک آس میں خوشبو آجائے . وے کسی دوسرے کو چائے دہ بتانے دیتے .

मज्जूब कहना चाहिये. यह वे लोग हैं जिन पर रहानियत का एक ऐसा दौरा खाता है, जिसके कारन उन पर एक खास रंग छा जाता है. वे दुनिय। से मुँह मोड़ लेते हैं. कहा जाता है कि दुनिया का कारखाना स्कियों की बदौलत चल रहा है. हर स्की का एक खास हस्क्रए खसर होता है. यह लोग बेगरज फ़क़ीर होते हैं और स्कियाना जिन्दगी बसर करते हैं. कोई उनके रुतबे को नहीं जानता; लेकिन बह खपने खसर ब ले हस्के की देख भाल करते हैं. हम मामूली लोग उनको नहीं जान सकते. सिर्फ उँचे दर्जे के स्की उनको पहचान सकते हैं.

बहुत से ऐसे लोग हमारे घर आया करते थे, हालाँ कि दादा कोई सूफी नहीं थे. अलबत्ता वह सूफियों और फ़कीरों की कदर बहुत किया करते थे. मगर उनके सूफी दोस्त सब के सब की सिया बनाने में बहुत दिलचस्पी लेते थे. वह अजी वा रारीब जड़ी बूटियों के ,नायाब नुस्के रखते थे और साँपों बरोरह के बारे में उनको बड़ी जानकारी थी. मेरे दादा भी साँपों के बारे में बहुत कुछ जानते थे और उन्हें हाथ से पफड़ लेते थे.

बाज और दूसरी तरह के फक़ीर भी हमारे घर आया करते थे. उनमें एक चालीस बरस की उम्र का श्रंधा था. बह 'श्रंधा हाफिन्न' के नाम से मशहूर था. वह हमेशा नंगा भीर गन्दगी में लुथड़ा हुआ रहता. उसकी ढाढ़ी की तरह सर श्रीर जिस्म के बाल भी उल्मे रहते. वह हमेशा हाथ में एक बड़ी लाठी लिये रहता और हमारे घर पर आम तौर पर रात को डोली में बैठकर आता. वह शायद ही कभी सोता श्रीर सारी रात, चाहे जाड़ा हो या गर्भी, इधर डधर घूमा करता था, लोग उसे बहुत पहुँचा हुआ फक्रीर सममते. असती मज्जूब ! उनके छ्याल में उसे इल्मेरीब भी हासिल था. वह बहुत बचपने से मञ्जब हो गया था श्रीर कहा जाता है कि उसने बहुत सी करामातें भी दिखाई थीं. वह कभी कोई जुबानी बात न कहता. उसकी गुप्तग्र सदा उलकी हुई होती थी. जब लोग उससे अपने मुसतक-बिल की बात पूछते या कांई खास मुश्किल मामला सममना चाहते तो सवाल को अपने दिमारा में लेकर हाफिज जी के पास बैठ जाते और अक्सर उसकी उलमी हुई बात चीत चौर इशारों में अपने सवाल का जवाब पा लेते.

जंगे अजीम के जमाने में अधे हाफ़िज पर गुस्से और गजब की हालत तारी रहती और वह अपना बन्डा जमीन पर बार बार पटकता. जब तक वह घर में रहता किसी फिक़ में इधर बघर घूमता फिरता और एक घड़ी भर भी दम न जेता. लोग कहते कि वह जंग का सब हाल जानता है कि इस वक्त कहाँ लड़ा हो रही है, कीन जीत दा है और कीन हार रहा है. मैं कभी नहीं भूल सकता कि वह अपनी ही गन्दगी में लथहा हमा फर्श पर पड़ा रहता

مجازی کہا چاہئے ۔ یہ وہ لوگ میں، جن ہر روحانیت کا ایک ایسا دورہ آنا ہے، جس کے کرن اُن پر ایک خاص رنگ چھا جانا ہے ۔ وہ دنیا کارخانہ صونیوں سے منہ مور ایتے میں ، کہا جانا ہے کہ دنیا کا کارخانہ صونیوں کی بدولت چل رہا ہے ۔ هر صونی کا ایک خاص حلقۂ اثر مونا ہے ۔ یہ لوگ بے خرض نقور ہوتے میں اور صونیانہ زندگی بسر کرتے میں ، کوئی ان کے رتبہ کو نہیں جانڈا؛ لیکن وہ اپنے اثر والے حلقہ کی دیکھ بھال کرتے میں ، هم معمولی لوگ اُن کو نہیں جان سکتے ، صونی اُن کو پہنچان میں میں ۔

بہت سے ایسے لوگ ھمارے گھر آیا کرتے تھے کالانکہ دادا کوئی صوفی نہیں تھے ، البتہ وہ صوفیوں اور فقیروں کی قدر بہت کیا کرتے تھے مگر اُن کے صوفی دوست سب کے سب کیمیا بلائے میں بہت داچہھی لیتے تھے ، وہ عجیب و غریب جتری بوتیوں کے نایاب نسخے رکھتے تھے اور سانیوں وغیرہ کے بارے میں اُن کو بتی جانکاری تھی ، میرے دادا بھی سانہوں کے بارے میں بہت کچھ جانکاری تھی ، میرے دادا بھی سانہوں کے بارے میں بہت کچھ جانگاری تھی ، میرے دادا بھی سانہوں کے بارے میں بہت کچھ جانگاری تھی ، میرے دادا بھی سانہوں کے بارے میں بہت

بعض اور دوسری طرح کے نقیر بھی همارے گھر آیا کرتے تھے . أن مين ايك چائيس برس كي عمر كا اندها تها ، ولا اندها حافظ کے ذام سے مشہور تھا . وہ همیشه نبکا اور گلدگی میں لارقا ھوا رھکا، اُس کی داڑھی کی طرح سر اور جسم کے بال بھی الجھے رمتے ، وہ همیشه هاته میں ایک بڑی اللهی الله رهتا اور همارے گهر پر عام طور پر رات کو درلی میں بیٹھ کر آتا . وہ شاید هی كبهي سُوتاً اور ساري رات چاف جازاً هو يا تُرمي إدهر أدهر گهرما كرفا تها . لوك أس بهت يهليجا سوا فقير سمجهتم . اصلي معددوب! أن كم خيال مس أسا علمغيب بهي حاصل تها. وه بہت بحوید سے معجدرب دو گیا تھا اور کہا جاتا ہے کہ اُس لے بهت مه کراه اتین بهی دکه لی تهین ، ولا کبهی کوئی زبانی بات نه كهذا . أس كي كذاكو سدا أنجهي دوئي هوتي تهي . جب ارک أس س الين مستقبل كي بات بوچبته يا دوئي حاص مشال معامله سامعهنا چاهته تو سوال كو اپنے هماغ ميں له كو حانظ جی کے یاس بیٹھ جاتے اور انثر اُس کی اُنجہی هوئی بات چیت اور اشاروں میں اپنے سوال کا جواب یا لیتے .

جنگ عظیم کے زمانے میں اندھے حافظ پر غصه اور غفی کی حالت طاری رهتی اور وه آبنا تندا زمین پر باربار پٹکتا ، جب تک وه گهر میں رهتا کسی فکر میں اِدھر اُدھر اُدھر گهرمتا پورتا اور ایک گهری بهر بهی دم نه لیتا ، لوگ نهته که وه جنگ کا سب حال جانتا هے که اِس وقت کہاں لوائی هو رهی هے کون جیت رها هے اور کون هار رها هے ، میں کبھی فہیں بهرا سکتا که وه اپنی هی گلدگی میں لاہوا هوا فرش ہر یوا رهتا

में कभी कामयाबी नहीं हुई, अलबता माँ से मुक्ते मालूम हुआ था कि मेरे नाना, जो मेरे दादा के चचेरे भाई थे, एक मर्त्या कामयाब हो गये थे. किसी फक्कीर ने उन्हें एक शीशी में कोई चीज दो थी, जिसके जरिये उन्होंने एक ताँबे के पैसे को सोने में बदल दिया था और जिससे मेरी माँ के लिये सोने की बालियाँ बना ली गई थीं. इसके बाद उन्होंने इसको सन्दक्त में बंद करके रख दिया. लेकिन उनके दोस्त कलन्दर शाह सकी को जब यह मालुम हुआ कि मेरे नाना के हाथ कीमिया लग गई है, तो उन्होंने इसको बरबाद करने का हुक्स दिया; क्योंकि इससे आदमी लालची हो जाता है श्रीर उसका दिल खदा श्रीर सुकियों की तरक से फिर जाता है. मेरी माँ को, जो इस वक्त बहुत छोटी थीं, इस नायाब चीज के बरबाद हा जाने का बड़ा दुख हुआ, जो ताँबे को सोने में बदल देती थी-लेकिन मेरे नाना, जो एक सूफी बुजर्ग थे और कलन्द्रशाह से मोहब्बत करते थे, आपस के ताल्लुकात को बिगाइना न चाहते थे और उन्होंने क़लन्दर शाह की दिलशिकनी के डर से दौलत की क़ब्जी को बरबाद कर दिया-दोस्ती के खातिर कौन अपनी दौलत के एक हिस्से की भी करवानी गवारा करेगा श्रीर फिर आजकल ?

मुमे अपने दादा के एक दोस्त खूब याद हैं. उनका नाम नादिरशाह था. वे फ़क़ीर थे. हमेशा एक काला कम्बल लपेटे रहा करते थे. वे बूढ़े थे मगर शानदार. जब कभी हम उनकी मौजूदगी में घर से बाहर निकलते, तो वे हमारे सर पर हाथ फेरते और हमको आशीर्बाद और दुआ देते. वे दादा के सब से ज्यादा गहरे दोस्त थे, उनकी ख़ितर दादा अब्बा बहुत कुछ कर डालते. जब कभी किसी परेशानी में फँसे होते तो फ़ौरन नादिरशाह को बुलाते. उन्होंने मुफको कुछ ताबीज दिये थे, जो दस ग्यारह बरस की उम्र में चाँदी के खोल में सिले हुए मेरे गले में पड़े रहते.

दादा के एक और कीमियागर दोस्त थे. लेकिन मैं उनसे घबराता था क्योंकि वे मुमे दोबारा खतना का डर दिलाकर यमकाते थे. हालाँकि यह सब मजाक ही मजाक था, लेकिन मैं सहम जाता था. एक दिन उन्होंने मेरा कान काट खाया. वे एक लड़के की कहानी सुना रहे थे, जिसने अपने बाप के दोस्त की तरफ से बेपरवाही बरती थी. उन बुजुर्रा ने उस वक्त तो कुछ न कहा, लेकिन एक दिन लड़के का बुलाया और उसके कान में कुछ कहने के बहाने से मुफकर उसके कान की लो काट ली. उन्होंने वाकेश बताते बताते मेरा कान भी काट खाया. मैं सोचता हूँ कि कहीं मैंने तो कभी जानते हुए उनकी तरफ से बेपरवाही नहीं बरती थी.

इसी तरह और बहुत से लोग अन्सर मेरे दादा से मिलने आया करते थे —बहुत से गम्भीर और पागल किस्म के लोग. लेकिन इनको पागल कहना हिमाकत होगी. उनको

مهن کیهی کامریایی نهین هرنی البته مان سے مجه معلوم هوا نها که مورد فافا جو مورد دادا کے چمچورد بهائی آهے ایک مرتبه کامیاب عو گئے تھے . کسی فقیو لے افہوں ایک شیشی میں کوئی چوز دی تھی، جس کے ذریعے أنهوں نے ایک تانیے کے یہسے کر سونے میں بدل دیا تھا اور جس سے میری ماں کے لئے سولے کی بالیار بنا لے گئی تھیں . اِس کے بعد اُنہوں نے اِس کو صندری میں بند کر کے رکا دیا . لیکن أن كے دوست قلندر شله صونى كر جب يه معلوم هوا که میرے دانا کے هاتھ کیدیا لک گئی هے؛ تو أنهوں نے إس كو يرباد كرنے كا حكم ديا؟ كيونكه إس سه أدمى الاسعى هو جاتا ھے اور اُس کا دل خدا اور صرفیوں : کے طرف سے بھر جاتا ہے . ميري مال کو جو أس وقت بهت چهودي تهين إس ناياب چیز کے برباد ہوجائے کا ہوا دکھ ہوا جو نانیے کر سرلے میں بدل دیتی تھی۔۔لیکن مہرے نا،ا جر ایک صوفی بزرگ تھے ارر قلادر شاہ سے محبت کرتے تھے ایس کے تعلقات کو بگازنا نہ چاہتے تھے اور اُنہوں لے اللدر شاہ کی دل شعنی کے در سے دولت کی کنجی کو برداد کر دیا - درستی کے خاطر کرن اینی دولت کے ایک حصمکی بھی قربائی گوارا کرے گا اور ،ور آجکل ؟

مجھے اپنے دادا کے ایک، دوست خوب یاد ھیں . أن کا دام نادرشاہ تیا . وے نقیر تھے . ھا ھیمہ ایک کالا عمل او تے رھا کرتے تھے ، وے بروھے تھے سکر شاندار . جب کبھی ہم أن کی مرحودگی میں گورسے باھر نکلتے تو رہے ھمارے سر پر ھاتھ بھیرتے اور هم کو آشهرواد اور دعا دیتے وہے دادا کے سب سے زبادہ گہرے دوست تھے . أن کی خاطر دادا ایا بہت کچھ کر ذائتے . جب کبھی کسی پریشانی میں پہنسے ھوتے تو فوراً نادرشاہ کو بلتے ، انھوں نے سجھکو نچھ تھویز دیئے تھے ' جو دس گیارہ برس کی عمر میں چاندی کے خول میں سلے ہوئے مربرے گلے میں دیتے وہائے .

وادا کے ایک اور کیمیا گر دوست تھے . ایکن میں اُن سے گہراتا تیا' کیونکہ وے منجھے دوبارہ ختنه کا در دلائر دھمکاتے تھے .

حالاتحہ یہ سب مذاق ھی مذاق تھا' لیکن میں سہم جانا تھا . ایک دن اُنھوں نے میرا کان کات کھایا . وے ایک لوک کی کہائی منا رقم تھے' جس نے اپنے باپ کے دوست کی طرف سے دیرواھی برتی تھی . اُن بڑرگ نے اُس وقت در کنچہ نہ کہا' لیکن ایک دن اوکے کو بلایا اور اُس کے کان میں کنچہ کہنے کے بہائے سے جبک کر اُس کے کان میں کنچہ کہنے بتاتے بتاتے میرا کان بھی کات کہا یہ میں سوچتا ھوں کہ کہدں میں نے تو کبھی جانتے میرا کان بھی کات کہایا ، میں سوچتا ھوں کہ کہدں میں نے تو کبھی جانتے ھوئے اُن کی طرف سے دیرواھی نہیں میں د

اِسی طرح ارر بہت سے لوگ ادثر مفرے دادا سے ، الله آیا کرتے تھے۔ بہت سے گمھفر اور پاکل قسم کے لوگ ، اُی کو لیکن اِن کو پاکل کہنا حماقت ہوگی ، اُن کو

बालों के लच्छे थे. वे इस सम्दर्गी से कटे हुए होते थे कि उनका किनारा एक तलवार की तेज बाद की तरह मालूम होती थी. वे एक ताक्रतवर .फीजी की तरह तनकर एक सीध चलते थे खीर उनकी हल्के रंग की कामदार टोगी उनके सर पर जरा आड़ी रखी, रहती थी. उनकी निगाहों और आवाज में बड़ा रोब खीर दबदबा था.

गर्मियों के जमाने में वे हमेशा तनजेब का श्रॅगरखा पहनते थे, जो इस तरह बना होता था कि एक तरफ का सीना खुला रहता था. (उस जमाने में नीचे दूसरा कपड़ा पहनने का रिवाज न था.) जाड़े में वे जामेदार का श्रॅगर-खा पहनते थे, जिसमें श्राम तौर पर स्याह जमीन पर सकेद साद फूल बने होते थे. वे चुम्त मोहरी का चूड़ीदार पाजामा पहनते, पैरों में धुंधलेशोख रग का बूता होता, जिसपर सुनहरे काम का एक फूल बना होता और जिसकी नोक ऊरर को सुदी होती. इस पर जब वे श्रॅगरखा पहन कर खड़े होते तो बेहद शानदार मालूम होते, कभी-कभी जाड़ों में वे साफा बाँधते थे, जिसके पेंच बहुत कसे हुए होते थे और उनकी एक भों को ढक लेते थे. इससे वे चुस्त तो बहुत मालूम होते, लेकिन खीफनाक से हो जाते.

बह जनानखाने में सिवाय खाने के वक्त के बहुत कम श्राते थे. वे श्रपनी चाय खद बनाया करते थे. जब कभी वे घर में आते तो अपने आने की खबर देने के लिये जोर से खखारते ताकि श्रीरतों में श्रचानक न पहुँच जायें. उनकी आवाज सुनते ही बालिश लड़िकयाँ, बहुएँ श्रीर दसरी बीबियाँ अपने इस्ट्रे सभालकर सरों का ढक लेतीं श्रीर अद्ब से बैठ जाती. बच्चे खामोश हो हर भाग जाते. उन ही चाल में तो रानाई हमेशा से थी, यहाँ तक कि 76 बरस की उम्र में उन पर लक्षवा गिरा; इसके बाद से वे बगबर विस्तर पर पड़े रहते. या ता किसी से बातें कि म करते या अकेले राम खाया करते; लेकिन उन ही निगाहों और आवाज में श्रव भी वही रांव दाव था. उनके शौक कीमिया, मञ्जली का शिकार, पुराने चीनी के बरतनों का भंडार जमा करना, द्वायें तैयार करना बरीरा थे. हर तरह के कक़ीर श्रीर सूकी **इनके,पास,स्राया करते और घन्टों उनसे नाया** जड़ी बृटिथों के मुताल्लिक बातें किया करते. मकान का मरदाना हिस्सा पौधों से भरा हुआ या और उनमें ब्रांटे बड़े अजीव-अजीब पत्तियों के काँटेदार पंधे थे, जो एक कीमियागर के साज और सामान का दिस्सा होते हैं. अल्मारियों में बहुत से परथर, हर किस्म की द्वायें, खुश्कजड़ी बूटियाँ और फूल भरे हुए थे.

दादा अन्या अपने बिस्तर पर पड़े-पड़े भी तजुर्जा किया करते और इमेशा नये नुस्ते की तलाश में रहते, रोज शाम को नौकर जामा मास्जिद जाया करता और नई बूटियाँ काता. लेकिन जहाँसक सुमको याद है, उनको सोना बनाने بالن کے احجه تھے ، وسے اِس عمدگی سے کیے ہوئے ہوئے موتے تھے که اُن کا کلارہ ایک تلوار کی تیز بازہ گی طرح معلوم ہرتی تھی ، وسے ایک طافتور فوجی کی طرح تن کو ایک سددہ سوں چلتے تھے اور اُن فی ہاتے رنگ کی کا حار ڈوپی اُن کے سرپر ذیرا آزی رکھی رہتی ٹھی ، اُن کی نگاھوں اور آواز میں ہوا رعب اور دیدہ تھا ،

وہ زنانخان میں سوائد کھانے کے وات کے بہت کم آتے تھے ، وے اپنی چائے خود بنایا کرتے تھے ، جب کبھی وے گھر میں آتر، تو آینے آلے کہ خبر دینے کے یمے زو سے کھھارتے تاکہ عورةون مين اچ ندى نه بهنيج جائين . أن كي آواز سنته هي بالغ لوکیاں ' بھرٹیں اور دوسری بیبیاں اپنے دویتے سنبھال کر سروں کو دمک ایتیں اور ادب سے بیٹھ جانیں . بھے خامرش هو کو بھاگ جاتے ۔ اُن کی چال میں تو رءنائی همیشه سے تھی اُ بہاں تک که 76 برس کی عمر میں اُن پر لقوۃ گرا اِس کے بعد سے وے برابر بستر پر پڑے رہتے . یا تو کسی سے باتیں کیا کرتے یا اکیلے غم کھایا کرتے؛ لیکن أن كى نگاهوں أور أواز ميں أب بھى وہ ور رعب راب تھا ، اُن کے شرق ' کیمیا مجھای کا شکار ' برائے چینی کے درتنوں کا بھندار جمع کرنا دوانیں تیار کرنا وغیرہ تھے. مدر طارح کے فقیر اور صوفی اُن کے پاس آیا کرتے تھے اور کھٹرں أن سے نايب جرى برئيس كے متعلق باتيں كيا كرتے . مکلی کا مردانه حصه یردوں سے بھرا هوا تھا اور اِن میں چھوٹ بڑے عجیب عجیب ہتیں کے لائتے دار بردے تھ ، جو ایک کیمهاگر کے سار اور سامان کا حصم هونے نقیں ، الماریوں میں بہت سے یتہ ، عر قسم کی دوائیں کشک جری برقیاں اور يول بورے هوئے تھے .

دادا ابا اپنے بستر پر پڑے پڑے بھی تعجریہ کھا کرتے اور ھیشہ نئے نستجے کی نقش میں رھتے ' روز شام کو نوکر جامع مستجد جایا کرنا اور نئی ہوٹھاں لانا لیکن جہاں نک متجہد یاد ہے' اُن کو سونا یانانے

मेरे बचपन की सब से ज्यावा जीती जागती तस्वीर मेरे दादा की याद है. वे एक बड़ी भारी उम्र के बुजर्ग थे और उन लोगों में से थे जो अब क़रीब क़रीब नायाब हैं. बर्तानिवी साम्राज के दौर दौरे और आमदनी और खर्च के प्रजीवादी तरीक्षों के शरू होने के साथ ही जागीरदारी जमाने के इस तरह के लोग श्रव बहुत कम नजर श्राते हैं. कभी-कभी देहली या लखनऊ जैसे शहर की किसी तंग गली में हमें ऐसे दो-चार लोग दिखाई दे जाते हैं. वे अपने श्रास पास की चीज से मुँह मोड़ लेते हैं श्रीर मरारिबी तहजीब और ख्याल को मंजुर करने से परहेज करते हैं. सडकों पर चलते हुए शायद उनको खद मेंप मालम होती है. वह अपने को कुछ बीते हुए जनाने का महसूस करते हैं. ग़ालिबन वह तहजीव के इस नये दौर को पसन्द नहीं करते, जो उनपर लाद दिया गया है. लेकिन फिर भी व श्रपना सर ऊँचा रखते हैं, शायद यह सोचकर कि वे भी कभी कुछ थे और उनकी आँखों ने भी बहुत कुछ देखा है. इन्होंने अभी अपने लिवास को नहीं छोड़ा है और अब भी मलमल का अँगरखा श्रीर पुराने तर्श के सुर्ख रंग के जुते पहने नजर आते हैं. उनकी दादियाँ बनी सबरी और चढ़ी हुई होती हैं, या बड़ी शान से सीनों पर गिरी रहती हैं. उनकी दादियाँ मौलवियों की उन दादियों से जुदा होती हैं, जो गंदी और उलकी हुई होती हैं श्रीर जिनमें कोई .खूब-सुरती और शान नहीं हाती. पुराने शरीकों की दादी में एक शान होती थी. वे पट्टे रखते थे, उनमें तेल लगाकर कंघी से सँवारते थे श्रीर बीच से माँग निकालते थे. देहली में वे कड़ी दीवार की गोल कामदार टोपियाँ पहनते श्रीर लखनऊ में सफेद चिकन की ब्रोटी-ब्रोटी टोपियाँ, जो उनके सर पर बीचो बीच बड़ी सहाई से रखी रहतीं.

तखनऊ वालों की आदत और तर्ज तरीकों में कुछ जनानापन पाया जाता. उनकी चाल ढाल में एक जनाना लोच होता, जैसा पुराने .जमाने की मोहिष्ज्ञित्र तबाइफों में पाया जाता था. जब वे सलाम करते, तो उनकी पतली कमर बल खा जाती, उनके हाथों में एक नाचने वाली की सी अदा आजाती. ऐसा मालूम होता है कि ऊरर गर्दन के खम और नीचे हाथों की अदा को मिलाकर वे हवा में एक मेहराब बना रहे हैं. इसके बरखिलाफ देहती के लोगों में मरदानगी ज्यादा है. मैं यहाँ पुराने शरीफों का जिक कर रहा हूँ.

मेरे दादा का क़द छै .फुट दो इंच था. वह बढ़े डील डील के थे और उनकी रोबदार शकाश्चियत थी. उनकी दादी सफेद थी और बीच में से इघर-उघर चढ़ी रहती थी. इनका सर गंजा था, मगर चारों तरफ सफ़ेद और नरम

میرے بچوں کی سب سے زیادہ جیتی جاگتی نصوبر میرے دادا کی یاد ہے ، وے لیا ہوی بھاری عمر کے بزرگ تھے اور أن لوگور مين ساتهه جو آب قريب قريب ناياب عين. برطانوي سامراہ کے دور دورے اور آمدئی اور خرچ کے بونجی وادی طریقوں کے شروع ہونے کے ساتھ ھی جاگیرداری زانے کے اِس طرے کے اوگ آب بہت کم نظر آتے میں ، کبھے کبھی دھلی یا لکھنا جیسے شہر کی اسی تنگ کلی میں مدس ایسے در چار لوگ داہائی دے جاتے دھیں . وے اپنے آس باس کی چیز سے مله مرز لیال هیں اور مغربی تهذیب اور خدال کو مظور کرنے سے پرهيو کرتے هيں .- ترکوں پر چلتے هوئے شايد أن کر خود جهينب معاوم هوتي هے . ولا اپنے كو كنچھ بيتے هوئے زمائے كا متحسوس كرتے ھیں ۔ غالباً وہ تہذیب کے اِس نگے دور کو پسند نہیں کرتے ، جو أن پر لاد ديا گيا هے . ليكن پهر بهى و اپنا سر أونعچا ركهتم هیں' شاید یه سرچ کر که وسم بھی کبھی کنچو: سے اور اِن کی آسکھوں نے بھی بہت کنچھ دیکھا ہے . اِنھوں نے ابھی اید لبنس کو نہیں چھرزا ہے اور اب بھی ملمال کا انکرکھا اور پرالے طرز کے سرے رنگ کے جوتے یہانے نظر آتے ھیں . آن کے قارهیاں بنی سنوري اور چرتهي هوئي هوتي هيي ايا بري شان سے سنيين يو گری رمتی هیں . اُن کی دارهیاں مواویوں کی اُن دارهیوں سے جدا ہرتی میں ، جو گندی اور اُنجھی ہوئی موتی عیں اور جن میں کوئی خوبصورتی اور شان نہیں ہوتی ، پرالے شریفوں کی قارهی میں ایک شان هونی تهی ، وے پائے رکہتے تھے' اُن مين تيل لكا در تنكبي سے سلوارتے تھے اور بيبے سے مانگ فكالتے تھے . دہلی میں وے کوی دیوار کی گول کا مدار قوپیاں بہنتے اور لکھنی میں سفید چمن کی چھوٹی چھوٹی ڈویداں' جو اُن کے سر پر بیجوں بیچ بڑی صفائی سے ربھی رعتیں .

لکھنٹو والوں تی عادت اور طوز طویقے میں کچھ زمانہ پن پایا جاتا ۔ ان ئی چال تعال میں ایک زنانہ اوچ ہوۃ ' جیسا پرانے رسانے کی مہذب طرانفوں میں پالا جاتا تھا ، جب وے سلام فرتے' دو ان کی پتلی کمو بل کیا جاتی' اُن کے ہاتھوں میں ایک ناچنے والی کی سی ادا اُجاتی، ایسا معلوم ہوتا ہدہ اوپر گردن کے خم اور ندھے ہاتوں کی ادا کو ملا کر وے ہوا میں ایک محراب بنا رہے ہیں ، اِس کے برخان دھلی کے لوگوں میں مردانگی زیادہ ہے ، میں یہاں کے برائے شریفوںکا ذکر کو

میں دادا کا قد چھ دے دو انبے تھا، رہ دو۔ قبل قبل کے تھے اور اُن کی رعبدار ۱ خصیت تھی، اُن کی داتھی سلید تھی اور اُن کی رعبی نھی ، اُن کا اور پیچے میں سے اِدھر اُدھر چڑھی رعبی نھی ، اُن کا سر تلجے تھا مکر چاروں طرف سفید اور نرم

मेरे दादा अब्बा

[सन् 1857 के जमाने के लोगों का एक खाका] प्रोकैसर बहमद बली एम. ए.

जिन्दगी एक दिया की तरह बहती है और उसके बहाव को कोई नहीं रोक सकता. जब हम जिन्दगी के एक छास दौर से गुजरते हैं, तो उसके बहाब को देख नहीं सकते, क्योंकि हम ख़ुद उसकी रौ में बहते होते हैं, उसके मँबर में फँसे हुए खिचे खिचे चले जाते हैं और हमको जिन्दगी का यह बहाब महसूस तक नहीं होता. दरस्त हवा में भूगते हैं. उनकी नाचती हुई परछाँ ह्याँ सतह पर अपना अक्स डालती हैं और उनकी पत्थाँ सर धुनती दिखाई देती है. जीवन की सतह पर हमारी मिसाल भी इन्हीं थरथराती हुई परछाइयों की तरह है—मगर दिया बहता जाता है, हमारी परछाइयों से लापरवाह और पत्तियों के नाच की तरफ बरीर हुख किये.

कभी-कभी हमें यह ख्याल श्राता है कि हम क्या हैं श्रीर क्या हो सकते थे, लेकिन जब तूफान सर से गुजर जाता है, तब हम श्रपनी नजर उसपर जमा सकते हैं. उसी वक्त हम ह्यालों से श्राजाद हाकर उसकी तफसीली जाँच कर सकते हैं.

जिन्द्गी एक मूमता हुआ दरकत है, जिसकी तस्वीर कोई कैमरा नहीं उतार सकता. हम तो सिर्फ उसकी जिन्द्गी ही महसूस कर सकते है. उसके लुभावने नाच से लुक उठा सकते हैं.

गुजर जाने के बाद ही हम ची जों की कल्पना श्रीर उनकी जाँच कर सकते हैं. उनकी .खूबसूरती को जान सकते हैं. उसकी जबरदस्त गहराई को महसूस कर सकते हैं.

याद्दारत में तूफान की याद नहीं रहती. राजनैतिक उथल पुथल का निशान तक नहीं होता और हम पर आज-कल जो गुजर रही है, उसकी याद हम से बहुत दूर होती है. खाने कमाने के लिये कशमकश, इनसानियत का शान-दार जीवन-संप्राम और अपनी हालत की बहतरी और हक के लिये जंग, हमारी याद्दारत से सब बहुत दूर होते हैं. याद दिल के सारे .जक में को भर देती है. सब मत भेद मिट जाते हैं क्योंकि याद, जो थके हुए दिलों को लोरियाँ देकर सुला देती है, इनसाफ को अजीज है.

میرے دادا ابا

[سن 1857 کے زمانے کے لوگیں کا ایک خاکم] پرونیسر احمد علی، ایم اے،

زندگی أیک دریا کی طرح بہتی هے ارد اس کے بہاؤ کو تی نہیں روک سکتا ، جب هم زندگی کے ایک خاص دور سے نرتے هیں' تو اُس کے بہاؤ کو دیکھ نہیں سینے' کیونکہ هم خود س کی رو میں بہتے هوتے هیں' اُس کے بهنور میں پہنسے هوئے باتھے کیا تھے جانے هیں اور هم کو زندگی کا یہ بہاؤ محسوس کی نہیں هوتا ، درخت هوا میں جهوستے هیں ، اُن کی اُدِ تو طوئی یہ چھائیاں سطح پر اینا تکس دالتی هیں اور اُن اُدِ تیان سودهنتی هوئی دکھائی دیتی عیں ، جیوں کی سطح ر بنیان سودهنتی هوئی دکھائی دیتی عیں ، جیوں کی سطح ر بنیان سودهنتی هوئی دکھائی دیتی عین ، جیوں کی سطح نیان ماری مثال بھی انہیں تور تهرانی عوثی پرچہائیوں کی طبح نہیاں کی خاج کی طرف بغیر رہ بئے ،

کبھی کھی ہمیں یہ خیال آنا ہے کہ عم کیا ھیں اور کیا ھو کتے تھے ایکن جب طوفان سرسے گذر جاتا ہے نب ھم اپنی طور آس پر جما سکتے ھیں ۔ اُسی وقت عم خیالوں سے آزاد و کر اُس کی تفصیلی جانبے کر سکتے ھیں .

زندی ایک جهوستا هوا درخت هے جس کی تصویر کوئی یمرا نهیں آثار سکتا ۔ هم تر صرف آس کی زندگی هی محصوس کو سکتے هیں ۔ آس کے لبهاو نے نابے سے لطف آنها مکتے هیں ،

، گذر جانے کے بعد هی هم چیزوں کی کلیفا اور اُن کی باتی کو سکتے هیں اُن کی خوصورتی کو جان سکتے هیں اُس فی زوردست گہرائی کو متحسوس کر سکتے هیں .

یادداشت میں طوفان کی یاد نہیں رھای . راجلیتک بہل پاہل کا نشان تک نہیں ہوتا اور ھم پر آجکل جو گذر رھی ہے اُس کی باد ھم سے بہت دور ہوتی ہے . کہانے کمالے کے انے لشت کی انسانیت کا شاندار جیوں ساکرام اور اپنی حالت کی بہتری اور حتی کے لئے جنگ ماری یاداشت سے بہت دور ہوتی ہور حتی ہے ، سب مت ہوت میں دیاد دل کے سارے زخموں کو بھر دیتی ہے ، سب مت بھید مت جاتے ھیں کھونکھ یاد' جو تھے ھوٹے داوں کو لوریاں دیتی ہے ، شدت کو عویز ہے .

. 8

*

جولني 57'

डाक्टर श्रसर मीनाई

कल सरे राह् १ जमाने ने तमाशा देखा, एक इन्सान को फा़क़ों से तद्वपता देखा. पेट तलवार की मानिन्द खिचा ीठ तलक,

ऐसी तस्वीर कि था लर्जा बरश्चन्दामः फलकः

जिन्दगी कर्ब भ से दम तोड़ रही थी ऐसे, राहे उल्स्ता में तड़पता हुआ बिस्मिल ६ जैसे.

ऐसी तस्वीर का हर शख्स तमाशाई था, मरता इन्सान भी जिन्दों का मगर भाई था.

मीत का था ये तक्काजा कि रगे जाँ न रहे, वहशी धताने हुए तजवार कि इन्साँ न रहे.

बहरे इम्दाद १ - कोई दस्ते हमैयत ११ न बढ़ा, श्रीर बिस्मिल का उधर खात्मा बिल्खेर १२ हुआ.

मेरे दिल पर वह असर था कि .जुवाँ थी खामोश, मुजमहिल १३ हो गए आजा १४ कि रहा कोई न होश. किसने मुफ़लिस १४ यों ही रोजाना गुजर जाते हैं,

यानी इफ़्लास १६ से बेमीत ही मर जाते हैं.

कशमकशहाए १० जुनूँ चाहिये जीने के लिये, एक तूफान है दरकार १० सफीने १६ के लिये.

वो जुनूँ सेजियेर॰ पैहमर जो सलासिल २२ तोड़े, मीजे त्फान है जो सीनए साहिल २३ तोड़े. श्राहल वेदारर है इन्सान सममदार है आज

अक्रल बदारर है इन्सान समन्त्रार है आज अपने बस में है 'असर' ऐसी तबाही का इलाज

تاكلر أثرمينائي

کل سر راہ زمانے نے تعاشا دیکھا؟ ایک اِنسان کو فاقوں سے توپتا دیکھا۔

پیت تاوار کی مانند کهنچا پیته تلک ا ایسی تصویر که تها لرزه براندام فلک .

زندگی کرب سے دم آور ،هی تهی ایسے؛ راه الفت میں تربیتا هوا بسمل جیسے.

ایسی تصویر کا هو شخص تماشانی تها، مرتا اِنسان بهی زندرس کا مکر بهائی تها .

موت کا تھا یہ تقاضا که رگ جاں نے رهے؛ وحشی تالے هوالہ اللوار که انسان نے رهے ،

بهر إسان دوئى دست حديث نه برعاء الخير موا ... اور بسيل كا أدهر خاتمه بالخير موا ..

مهرے دل پروہ اثرتهاکه زبان تھی خاموش، مضمحل هوگئے انضا که رها کوئی نم هوش .

کتنے مفلس بونہی روزانہ گنر جاتے ھیں' یعنی اِفلاس سے بےموت ھی مو جاتے ھیں۔

کشمکشہائے جنوں چاھئے جینے کے لئے؛ ایک طرفان ہے درکار سفینے کے لئے. وا جاوں خیزئی یہم جر سالسل نہرے؛

موج طونان ہے جو سینۂ ساحل توزے و عقل بیدار ہے اِنسان سمجھدار ہے آج اپنے بس میں ہے'اثر' ایسی تباعی کا عالج

१—मार्ग में, २—थरीया हुआ, ३—आकाश, ४—बेचेनी, ४—पेम, ६—धायल, ७ तगादा, =—प्राण की नस, ६—जङ्गली, १०—सहायता के लिये, ११—सहायता का हाथ, १२—सृत्यु, १३—ढीले, १४—अंग, १४—निर्धन, १६—निर्धनता, १५—सीच तान, १=—आवश्यकता, १६—वेड्रा, २०—पागलपन, २१—लगातार, २२—वंधन, २३—तट १४—जाप्रत.

मचमों और अन्यों में सन चहारह सी सनावन

यह वह पृष्ठ मूमि थी जिसपर सन् 1857 की झा.जादी हो क्रान्ति का सिरमन हुआ. एक मोजपुरी कवि इसकी स्वीर सीचता हुआ कहता है:—

बदा अकाल रोग देखना मा बाटे, बिपता के बादता गदगद बोले! दुखना के नदिया अगम जल पनिया, जुलुम के इन्हां सन् सन् बोले!

खीर तब यह मामकवि साहस बटोरकर पेशोनगोई रता है कि.—

> श्चव तोर नहया न बिचहै बिदेखिया, 'राम नाम सत्त' श्चव निदया में होले!

आज जब हम सन् 1857 की आ.जादी की लड़ाई का साला जश्न, शताब्दी समारोह, मना रहे हैं तो वह रीनगोई कितना सच बनी हुई है.

[इस लेख के लिखने में हमें भाई प्रकाश चन्द्र जी गुष्त, । मिठाई लाज जायसवाल, श्री सुरेश सिंह, श्री वचनेश र श्रीमती सुशीला देवी आदि से अनमोल सहायँता मिली —लेखकी

गुलामी के साथ मानवता की मित्रता

श्री अब्दुलह्लीम अन्सारी

श्राजादी श्रागई, श्राजादी श्राने के मानी गुलामी चली गई. लेकिन मालूम ऐसा हाता है कि गुलामी के साथ मानवता भी गई. क्या गुलामी ऐसी ही श्रच्छी चीज थी कि मानवता जैसी शुद्ध और सुन्दर चीज को वह श्रपने साथ ले जाये या मानवता खुद उसके साथ हो गई केवल उसकी श्रच्छाई, के कारण—हागी उसमें जरूर कोई खूबी श्रीर अच्छाई वरना मानवता को तो श्राजादी का ही साथदेना चाहिये था.बिना मानवता के श्राजादी कैसी स्नी स्नी और वेरीनक्र सी है! कितना भयानकपन है उसके वातावरन में!

मानवता ने अपने असर से .गुलामी को इन्सानियत के कालिब में ढाला था. तहजीब का जामा पहनाया था. जब .गुलामी मानवता, के रक्त रूप में अच्छी तरह ढज गई तो इसने उससे दोस्ती गाँठी. इसकी दोस्ती भी दो सी बरस पुरानी और तारीखी दोस्ती थी. इस पुरानी दोस्ती के नाते यह उसके छाथ हो ली. दोस्ती का हक्त भी अदा किया और मशारकी रवादारी को भी निभाया. इस पेसा उयाल मी नहीं कर सकते ये मगर यह एक नये प्रकार का अनुभव जो इस को हुआ है उसकी बिना पर कोई शक और शंका की गुन्जाइश नहीं रह जाती है अब. یہ وَلا پرشقہ بھوسی تھی جس پر سن 1847 کی آزادی کی کوانٹی کا سرجن ہوا ، ایک بھوجھددی کوی اِس کی تصویر کینچھا ہوا کہنا ہے:—

ہوا اکال روگ دیسوا ساہائے ا بھتا کے بادل کو گو ہواتہ ! دکھوا کے قدیا اگم جل پنھا' جلم کے عودا س سن قولہ !

اور تب یه گرام کوی مناهس بقور نو بیشینگوئی کوتا

اب تور نیا نه بچیه بدیسیا ا ارام نام ست اب ندیا میں عولی ا

آج جب هم سن 1857 کی آزادی کی لزائی کا سوساله جشن شکاردی سماروه منا رق هیں تو ولا پیشینگوئی سے بنی هوئی هے .

[اس لیمه کے انمہنے میں ہمیں بہائی پرکاش چندر جی گہت شریم آبائی الل جیسوال' سری سریھی سنکھ' شری و چندھی' شریمتی سوئدلا دیوی آنی سے انسول سہایتا ملی المعمک]

غلامی کے ساتھ مانوتا کی مترتا

شری عبدالتحلیم انصاری ازادی آئے کے معلی غلامی چلی گئی .

آزادی آ گئی . آزادی آئے کے معلی غلامی چلی گئی . کیا لیکن معلیم ایسا ہوتا ہے کہ غلامی کے ساتھ مائوتا بھی گئی . کیا غلامی ایسی هی اچھی چیز تھی که مائوتا جیسی شدہ اور سلامر چیز کو وہ اپنے ساتھ لے جائے یا مائوتا خود اُس کے ساتھ ہو گئی کھول اُس کی اچھائی کے کارن—ھرگی اُس میں ضرور کوئی خربی اور اچھائی ' ورنہ مائوتا کو تو آزادی کا هی ساتھ دینا چاہئے تھا . بنا مائوتا کے آزادی کیسی سوئی سوئی اور پروئش سے ہے ! کتنا بھیائک یو ہے اِس کے واتاورن میں !

مانونا نے اپنے اثر سے غلامی کو اِنسانیت کے قااب میں تعالا آھا ۔ تہذیب کا جامع پہنایا تھا ، جب غلامی مانوتا کے رنگ روپ میں اچھی طرح تعل گئی تو اِس نے اُس سے دوستی کانتھی ۔ اِس کی دوستی بھی دو سو برس پرانی اور تاریخی دوستی تھی ۔ اِس پرانی دوستی کے ناتے یہ اُس کے ساتھ ھو لی ، دوستی کا حق بھی ادا کیا اور مشرقی رواداری کو بھی نبھیا ، ھم ایسا خیال بھی نبھی کر سکتے تھے مگر یہ ایک نئے پرکار کا انوبھو جو ھم کو ھوا ہے اُس کی بنا پر کوئی شک اور شکا کی گنجااہی نبھی رہ جاتی ہے اُس

होइ गइले कंगाल हो बिदेसी तोरे रजना में । टेक । सोनवा के भाली उद्दर्ग जेनना जनत रहलीं, कठना के डोकिया के होइ गइल मुहाल हो ॥विदेसी तोरे०॥ भारत के लोग भाज दाना बिना तरसे भैगा।

लन्दन के कुला उड़ावें मन्न माल हो।। विदेशी तोरे॰।। ऐसी अकाल की सूरत में सन् 57 की तहरीक छुरू हुई. उसे दबाने के लिये कम्पनी की सरकार ने ना .जुलम और अनीति की उससे तहरीक वो दब गई, हिन्दुस्तानियों के विल में डर तो बैठ गया लेकिन भुखमरी दूर न हो सकी. रसराज किव कहते हैं:—

गृदर गृनीम ,गुनार उठयो, सतावन में सिगरे जग जानी। केते अनीति अनीति कियो, सब हिन्द प्रजा दिय में भय मानी।। देश की उस समय की हालत पर समकालीन कवि 'प्रेम धन' तिखते हैं:—

भागो भागो अब काल पदा है भारी
भारत पे घेरी घटा बिपत की कारी.
सब गये बनज-व्यापार इतें सो भागी,
उद्यम पौरुष निस दिये बनाय अभागी.
अब बची खुवो खेती हूँ खिसकन लागी,
वारहुँ दिसि लागी है मँहगी की आगी,
सुनिये चिलायँ सब परजा भई भिखारी,
भागो भागो अब काल पदा है भारी.

श्रंगरेजी राज में भारत की द्रिद्रता की एक दूसरी माँकी भारतेन्द्र के शब्दों में देखें:—

कल के कलबल छलन सों छले इते के लोग, नित नित धन सों घटत है, बाढ़त हैं दुःख सोग. मारकीन मलमल बिना चलत कछू नहिं काम, परदेसी जुलहान के मानहु भए गृलाम. बस्त्र काँव काग्ज़ कलम चित्र खिलोने आदि, आवत सब परदेस सों नितृहिं जहाजन लादि.

उस .जमाने के बंगाली देशभक्त बजाय क्रान्ति के महज लेकचर और तक़रीरों के .जरिये देश की हालत सुधारने पर एतक्काद रखते थे, जनपर फज्ती कसते हुए प्रतापनारायन मिश्र कहते हैं:—

सर्वस लिये जात अंगरेज़, हम केवल 'स्यक्चर' के तेज.
अम बिनु बार्ते का करती हैं, कहुँ टेटकन गाजें टरती हैं.
अपनो काम आपने ही हाथ मल होई, प्रदेशिन प्रधमी ते आशानहीं कोई.

> بهاگو بهاگو آب کال پرزا هے بهاری ا بهارت در گهیری گهتا بهت کی کاری . سب گئے بنج ریاپار اِنیں سو بهاگی اُ اُدیم ورزوش نسی دیئے بنائے ابهاگی . آب بنچی کهچی کهیتی هوکهستی لاگی ا چار هوں دس لاگی هے مہنگی کی آگی . سنیئے چائیں سب درجا بهئی بهکاری اُ

انکویزی راج میں بھارت کی دردرتا کی ایک دوسری جھانکی بھارتیدو کے شبدوں میں دیکھیں: --

کل کے کلبل چھان سوں چہلے آتے کے لوگ'
نت نت دھن سوگھت ہے، ہاڑھت ھیں دیم سوگ۔
مارکین ململ بنا چلت کچھو نہیں کلم'
پردیسی جھی کے مانہو' بھئے غلم .
وسٹر کانچ کافذ قلم چٹر کھلولے آدی'
ارت سب پردیس سوں نت ھیں جہارن لادی .
اس زمانے کے بنگالی دیش بھمت بجائے کرانتی کے محض
لیکچر اور تقریروں کے ذریعے دیش کی حالت شدھارنے پر اعتقاد
رکھتے تھے ۔ اُن پر پھیٹی کسٹے ہوئے پرتابی ناراین مشر کہتے

سرہس لئے جات انکریز' هم کیول 'لکنچر' کے نیز ۔ شرم بن ہاتیں کا کرتی هیں' کہرں ٹیٹکن گلجیں ڈرتی هیں ، اپلو کام اُپنے هی هاته بیل هوئی' پردیشن پردھرمی تے آشا نہیںکوئی ، "जिस मजनूती और घीरज हे साथ तात्या इस बताबत की रहतुमाई कर रहा है वह सचमुच हैरतनाक है. वह हमारा सबसे चतुर शत्रु साबित हुआ. पिछले एक बरस से उसने मध्य भारत और मध्य प्रदेश में तहलका मचा रखा है. वह हमारे फीजी पड़ावों को रींद डालता है, खजानों को खूट लेता है और हमारी मैगजीनों को खाली कर देता है. उसने .फीजें जमा की और खोई हैं. लड़ाइयाँ लड़ी हैं और हारी हैं, तोपें हासिल की हैं और उन्हें खाया है. उसके .फीजी कूच इतने तेज होते हैं जैसे बिजली कींध जाय. अठवारों वह तीसतीस और चालीस-चालीस मील के हिसाब से कूच करता है, कभी नर्मदा के इस पार और कभी उस पार. हमारी दर्ज नों फीजों के कभी वह बीच से निकल जाता है, कभी पाझे से, कभी दायें से और कभी वायें से, कभी घाटियों से और कभी दलदलों से. हमारी एक लाख .फीज उसे पकड़ने की कोशिश कर रही है पर वह हाथ नहीं आता."

जाहिर है ऐसा अद्मुत बीर किवयों के लिये प्रेरणा का स्रोत बन जाता. लेकिन अफ्सोस है अब तक हमें सिवाय एक किवता के तात्या से सम्बन्धित कोई समकालीन किवता नहीं मिली. किव ने, जो कानपुर का निवासी है, भारत वासियों से तात्या की पुकार अर्ज की है. किव के शब्दों में तात्या कहते हैं कि एक कमान, एक मंडा, एक हुक्म या अनुशासन का पालन करने से ही देश का उद्धार हो सकता है. हम देश का मान बचाने के लिये अपनी जानों को गँवाने के लिये तैयार रहें तभी विदेशियों का संहार होगा और तभी सक्वी शान्ति या अमन कायम होगा. गीत के बोल हैं:—

सुनो वीरो, तात्या की पुकार हो !

एकै निसनवाँ हो रामा,

एकै हुकुमवा हो रामा,

एकै हुकुमवा हो रामा,

तबै देसवा के होई उदार हो !

जाये परनवा हो रामा

बचै देसवा के मानवा हो, रामा,

तबै हाई अमनवा हो रामा,

तबै हाई भ्रमवा हो रामा,

सन् 1757 की प्लासी की लड़ाई के बाद 1857 तक ईस्ट इन्डिया कम्पनी की आर्थिक या इक्तसादी नीति ने सारे देश को कक्काल बना दिया था. आये दिन भुखमरी और मीत सर पर नाच रही थी. सन 1765 में जब से दीवानी के अधिकार कम्पनी को मिले थे उसकी लगान नीति ने अनगिनत किसानों को खेत छोड़कर भाग जाने पर मजबूर कर दिया था. उद्योग-अन्धे नष्ट हो रहे थे और कहत सर पर मंडरा रहा था. देश की इस आर्थिक रिथति की तस्वीर खींचते हुए एक कि कहता है:—

البس مفیوطی اور دهیوے کے ساتھ تانیا اِس بخاوط کی هدارا سب سے چتر شترو ثابت هوا ، بچھلے ایک برس سے آسی نے مدھته بھارت اور مدھیت پردیش میں تہادہ محیا رکھا ہے ، وہ همارے فہمی براؤی کہ روفد تانیا ہے 'خواتیں کو لوت لیتا ہے اور هماری میکوینوں کو خالی کر دیتا ہے ، اُس نے فوجیں جمع کیں اور کھرئی هیں' تریش حاصل کی هیں اور آنیس کو یا ہے ، اُس نے فوجیں جمع کیں اور کھرئی هیں اور آنیس کو یا ہے ، اُس نے فوجی کوچ اِنلے تیز ور چالیس جالیس میل کے حساب سے کوچ کرتا ہے' کبھی نرمدا کے اِس پار اور کبھی اُس پار ، هماری درجاوں فوجوں فوجوں نوجوں نوجوں مائیس سے اور کبھی درجاوں فوجوں دائیس سے اور کبھی دائیں سے اور کبھی دائین سے ، هماری آئی لائی فوج اُس پاری کھانے کی کہشش کو رہی ہے پر دو ھاتھ نہیں آئی لائی فوج اُس پاری کھانے کی کہشش کو رہی ہے پر دو ھاتھ نہیں آئی ۔''

ظاهر هے ایسا ادر ہت ویو کویوں کے لئے پریرنا کا سروت ہیں چاتا ۔ لیکن انسوس هے اب نک همیں سوائے ایک کویتا کے تاتیا سے سمبلدهت کوئی سمکائیں کویتا نہیں ملی ، کوی نے جو کانہور کا نواسی هے بہارت واسوں سے ناتیا کی پکار عرض کی هے ، کوی کے شہدوں میں تاتیا کہتے هیں که ایک کمان ایک جہنڈا ایک حکمیت انوشاسی کا پان کوئے سے هی دیهی کا أدمار هو سکتا هے ، هم دیش کا ماں بعجانے کے لئے اپنی جانوں کو گنوالے کے لئے تیار رهیں تبھی ودیشیوں کا سنکھار ہوگا اور تبدی سعجی شانتی یا امن قایم هوگا ، گیت کے بول هیں :۔۔

ساو ويرو[،] ناتها كى پكار هو! إيكه تساوا هو راما[،] إيك_ه كماوا هو راما[،] إيكه شكموا هو راما[،]

تیے دیسوا کے ہوئی آدمار مو! جائے پرنوا ہو ! جائے پرنوا ہو راما عصور سواکے منوا ہو راما علیہ کھائی امنوا ہو راما علیہ کھائی کھائی کھائی کھائی کے انتہائی کھائی کھائی کھائی کھائی کھائی کھائی کے انتہائی کھائی کے انتہائی کھائی کے کھائی کھائی

تهم هوئی فرنگیا سلهار هر!

(17)

سی 1757 کی پلاسی کی اوائی کے بعد 1857 تک ایسٹ اسڈیا کہلی کی آرتهک یا انتصادی نیٹی نے سارے دیش کو کنگال بنا دیا تھا۔ آنے دین بھکمری اور مرت سر پر ناچ رہی تھی۔ سن 1765 میں جب سے دیوانی کے ادھیکار کہلی کو ملے تھے آس کی لگان نیٹی نے انگلت کسانوں کو کھیت چھرو کر بھاگ جانے پر مجبرر کر دیا تھا ۔ ادیوگ دھلاے نشت ہو رہے تھے اور قحط سر پر منذرا رہا تھا ۔ دیش کی اِس آرتهک اسٹھٹی کی تصریر کھیلچتے ہوئے ایک کوی کہتا ہے:۔۔۔

مدهیم بهارت یر انگریزوں لے جب پهر سے تیضم کیا اور نتوجه میں دیش واسیس کو ظام سولم پڑے اُسے مالوی لوگ، گیتوں میں ایک 'افت' اور 'کالی بدلی' کہر یاد کیا گیا

> ديس بر أنت انهكئي هوا دیس پر آنت آنیکی هرا هررر پهرنگی راج' بادلی کالی چیئے کی مو

آوادی کی جنگ موں جب اپنی طافت کو کافی نہیں سنجها گیا تو دیوی دیوتاؤں کی مدد کے نئے بھی دعا سادی کٹی ، اِس طرح کی ایک مثال همیں مدعیہ پردیش کے کوی کے بول میں ملتی ہے ، باہو کنور سنکھ کے پروتساعی سے جیاؤور کے گونڈ راجه شاکر شاہ اور ان کے جیٹے نمار میدان جنگ میں کود پڑے ، کوی اُن کی کامیابی کے لئے کالی مائی سے پرارتھا كرتا أور كهنا هے كه شنكر شاه كا أيك أيك سه عي أيسا طائعور ہیں جائے که ،وار دشملوں کا مقابلد کر سکے ، ہوا کے شید

> تو في شترو وثاشي سائي در شقرو سکهار مها ا شنعرشاه هے داس تہارا داس کا رکھ لے مان میا اِ آج فرنکی مدیدے نه یائے گهه كو ميل قاوار ميا ! شنكر كا ايك ايك مهيا كو تو أسے عزار ميا! ماں کا کا بنے رن چندی بھے رودعر کی دعار میا ! اب ديري كا كلم نهبل ه بهارت کرے یکار مها! سور کر آرت گرهار میا اب تو لے ارتار میا ا

کالکا نے کرمی کی یکار سنی یا نہیں لیکن بلیدان کی دیوی لے فاکر شاہ کی یکار سلی ، جبلہور کے برید کے میدان میں شنکر شاہ اور اُن کا یتر اور سیکووں دیھی بھکت سینک ترپ کے مله سے بالدهنر أرا ديم كاء . جن لوكس نے أس نظارے كو دينها ه وے سویکار کرتے ہیں که شفکر شاہ اور اُن کے سانھی جب ترب کے منہ سے اُڑائے گئے نو اُن کے هرائه بن پر مسکرامت نھی .

اِتہاس لیکھک سرجان کے کے انوسار تانیا ڈویے' سنگرام کے قابل سے قابل سیمسالروں میں سے تھے ، آزادی کی اوائی شروع ھونے سے لیکر اپنی پہانسی کے دن تک معنی 18 ایریل سن 9 18 تک تاتیا بنا رکے اور بنا تھکے انکر رو حکومت سے مورچه لیتے رہے . 17 جنوری سن 1859 کو لندن ڈائیس نے لكها تها :---

सध्य भारत पर अप्रेजों ने जब फिर से क्रब्जा किया श्रीर नतीजे में देशवासियों को .जुल्म सहने पड़े, उसे मालवी लोक गीतों में एक 'आफत' धीर 'काली बदली' कहकर याव किया गया है :-

देस पर आफृत अइगी हो, देस पर आपता आहगी है. हवी फिरंगी राज,

बादली काली खुइगी हो. आवादी की ज'ग में जब अपनी ताक़त की काफी नहीं समभा गया तो देवी देवतात्रों की मदद के लिये भी दुशा माँगी गई. इस तरह की एक मिसाल हमें मध्यप्रदेश के कवि के बोल में मिलती है. बाबू कू अरसिंह के प्रोत्साहन से जबलपर के गोंड राजा शंकर शाह और उनके जेठे क्रमार मैदाने जक्र में कृद पड़े. कवि उनकी कामयाबी के लिये कालीनाई से प्रार्थना करता है और कहता है कि शंकर शाह का एक एक सिपाही ऐसा ताक़तवर बन जाय कि हजार दुरभनों का मुकाबला कर सके. बाल के बर हैं :-

तू है शत्रु विनाशिन माई। कर शत्रु संदार महया! शंकरशाह है दास तिहारा दास का रखले मान मध्या ! भाज फिर्गा बचने न पाये गह कर में तलवार महया! श'कर का एक एक सिहहिया कर त उसे हज़ार महया ! माँ कालिका बने रखचन्डी बहे रुधिर की धार महया ! अब देरी का काम नहीं है भारत करे पुकार महया। सनकर आर्त गुहार मह्या श्चन तू ले अनतार माया!

कालिका ने किन की पुकार सुनी या नहीं लेकिन बिलदान की देवी ने शंकरशाह की पुकार सुनी. जबल-पुर के परेड के मैदान में शंकरशाह और उनका पुत्र बीर सैकडों देशभक्त शैनिक ताप के मुँह से बाँधकर उड़ा बिये गये. जिन लोगों ने उस नजारे का देखा है वे स्त्रीकार करते हैं कि शंकरशाह और उनके साथी जब ताप के मुँह

से रहाये गये ता उनके भोठों पर मुस्कराहद थी.

इतिहास लेखक सर जान के के अनुसार तात्यारापे, जिनका असली नाम रामचन्द्र पाएडुरङ्ग था, सन् 57 के स्वाधीनता संपाम के क़ाबिल से क़ाबिल सलाइकारों में से थे. आजादी की लड़ाई गुरू होने से लेकर अपनी फाँसी के दिन तक, यानी 18 अप्रैल सन् 1859 तक ताल्या बिना इके और बिना थके अप्रेजी हुकूमत से मोरचा लेते रहे. 17 जनवरी सन् 1859 को लन्दन टाइम्छ ने लिखा था:-

नषमां और बन्दों में सन बठारद सी सत्तावन

राजस्थान में सन् 1857 की आजादी की तहरी के के नेता आडवा जागीर के ठाकुर .सुशाससिंह थे. मारवाइ के उस रिक्षत्ते में, होली के मौक्षे पर, आडवा ठाकुर के यशगान की पुरानी धुन अब भी सुनाई देती है:—

ढोल बाजे, धाली बाजे, भेलो बाजे बाँकियो, -अर्जट ने को सारने दरवाजे नाकियो, जुंभी आउवो.

है भो जूँ में भाउवो, आउवों मुल्काँ में चावो श्रो, जूँ में आडवो,

25 अगस्त सन् 1857 को एरनपुरा और डीसा की हिन्दुस्तानी फीजों ने बराावत करदी श्रीर मारवाड़ से होकर कृव शुरू किया. इन फीजों ने .खुशहालसिंह का अपना नेता श्रीर कमारहर बनाया. जोधपुर के राजा ने पोलिटिकल एजेंट, सर हेनरी लाटेन्स को कौजी मदद मेजी. देशभक्त ठिकानेदारों में आसोप-गूजर, आजनियावास, सांग्या और भिवालिया और सामन्तों में मेगाई के सल-म्बर व रूपनगर के सामन्तों ने .खुशालसिंह का साथ दिया. जोधपुर का पालिटिकल एजेंट कैप्टेन मेरान .फोज लेकर आडवा गया लेकिन मारा गया. अप्रेजी सेना ने आउवा पर फिर धावा बोला लेकिन .खुशालसिंह के आगे उसकी एक न चलां. दुश्मन के दां ह बार सै निक काम आये. अग-रेजों की इस हार ने आउवा को सन 57 के आजाद हिन्दुस्तान के नक्षशे में चमका दिया. अजमेर, नसीराबाद, नीमच श्रीर मक की छावनियों को हिन्दुस्तानी .फीजों ने श्राजादी का बिगुल बजाकर आडवा की तरफ कूच किया. लेकिन इन .फीजां के पहुँचने के पहिले ही तीसरी बार के जबर्दस्त हमले में महाराजा जोधपुर की मदद से आउवा की प्रानी गढ़ी धूल में मिला दी गई. .खुशहालसिंह ने जङ्गलों में पैठकर छापामार लड़ाई का तरीका श्रक्तियार किया. कोठारिया के रावत जोधसिंह ने .खुशहालसिंह का पूरा साथ दिया. राजस्थान के तत्कालीन चारण कवियों ने .खुशहालसिंह की कीर्ति को गाँव-गाँव में पहुँचा दिया. उन्हीं का एक दोहा देखें :--

थर रण भटियां योगणो, नचपुर पूगो नाम, भाउनो खुसियाल इल, गाने गाँमो गाँव, .खुशालसिंह के साथ साथ जोधसिंह की भी तारीक राजस्थानी कवियों ने गाई. बानगी का एक छप्पय सुनें:—

मारे दोय अजंड ख्न मदघर रो कीनो, फिर फौजां बहुं ओर जोर अंगरेजां दीनो सगरां बिच फिरतो, सहर सब्दम्बर आयो, स्वशां रावत स्पीं, कथन नराकार के वायों. पलटिया देय दूजी दसा, सगा सरब ही पलटिया! इस धन्न स्वसाल बांपा-तिलक, रावत जोचे राक्षिया.

فطمن اور چهادوس میں سی انهارہ سو سالوں

راجہ تھاں میں سن 1857 کی آزادی کی تحریک کے تیتا آؤوا چاگیر کے تھار خوشحال سنکھ تھے ماروار کے اس خطہ میں مولی کے موقع پر' آؤوا ٹھاکر کے بھی کان کی پرانی دھن اپ بھی سنائی دیتی ہے:۔۔۔

قهول باچ تهالی باچ بهالو باچ بانکیو، اجنت فی أو مارن درواچ نا کهو . جونجه أورو به أورو ملكال ميں چارو أور ملكال ميں چارو أور مدكال ميں چارو أور بونجه أورو مدكال ميں جارو أور

25 اگست من 1857 كو ايرنهره اور تيسا كي هادستاني فرجوں لے بغاوت کردی اور ارواز سے هو کرکوچ شروع کیا. اِن فوجوں لے خوشحال سنکم کو اینا نیتا اور کمانڈربنایا ،جودھپور کے راجا نے دولیتما ایجنت سرهیاری لائینس کو فوجی مدد بهیجی ديهي بهات تيكانيدارون أسرب مين گرار ألنياواس المبيا اور بهنوالها اور سامنتوں میں میواد کے سلومبر و روپ نام کے سامنتوں نے خوشحال سنکھ کا ساتھ دیا . جودھپور کا پولیڈ کل ایجات کهپتن مهدن درج لهکر آورا کها لیکن مارا گها . انگویزی سینا نے آورا پر یہر دھارا ہولا لیکن خرشحال سنکم کے آگے اس کی ایک نے چلی . دشمن کے دو ہزار سینک کم آنے ، انگریزوں کی اِس ھار نے اورا کو سن 57 کے آراد ھندستان کے نقشہ میں چمکا دیا . اجمیرا نصیرابادا نیمچ اور مگر کی چهاونیوں کی ھندستانی فرجوں نے آزادی کا بکل بجا کر آؤرا کی طرف کوپم کیا . لیکن اِن فرجوں کے پہونچنے کے پہلے ھی تیسری بار کے زبردست حمله میں مہاراجه جردعهور کی مدد سر آورا کی پرانی کنمی دعول میں ملا دی گئی . خوشحال سلکم نے جنگلس میں بیٹھ کر چھایا مار لوائی کا طریقته اختیار کیا . کوٹھاریا کے رارت جودہ سنکھ نے خوشحال سنکھ کا دورا ساتھ دیا . راجستهان کے نتکالهن چارن اویوں نے خوشتدال سنک کی کھرتی كو گاؤں گاؤں ميں پېرنچا ديا . انهيں كا ايك دوها ديكهيں:-

> تهر رن أريال يركنه، نديه پور پوگر نام، آؤوو كهرسيال هل، كارے كاسو كلم.

خوشحال سلکے کے ساتھ ساتھ جردھ سلکھ کی بھی تعریف راجستھانی کویوں نے گائی . بانکی کا ایک چھیدہ سلیں :—

مارے دویہ اجنت کھون مرو دھر روکیلو' پھر پھرچاں چھوں آورنجور آنگریجاں دینو ۔ منکراں بچے پھر تو' سھر سلومبر آیو' سرونا راوس منیں' کتھی نرکار کے وایو ۔ پلٹیا دیو دوجی دسا' سکا سرب ھی پلٹیا' کم دھیجکھو سال چانیا نلک'راوت جودھ راکھیا۔ चगरे सिपहियों को पेका अलेकी, आपने चकाई गुक्धानी, आरे काँसी वाली रानी, ,ख्व लड़ी मश्दानी, छोक मोरचा भागे फिरंगो हुँ हेंद्रु मिली नहिं पानी, आरे काँसी वाली रानी, ख्व लक्षी मरदानी.

उस जमाने के इसी तरह के एक गीत के बोल पर श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान ने श्रपनी मशहूर कविता लिखी हैं:—

> सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने सृक्टी तानी थी, बूदे भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी, गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी, बूर फ़िरंगी की करने की सबने मन में ठानी थी, बमक उठी सन समावन में वह तलवार पुरानी थी, बुनदेते हर शेलों के मुख हमने सुनी कहानी थी, खब लड़ी मरदानी वह तो फॉसी वाली रानी थी!

इसी कविता के वजन पर एक दूसरे ऋाधुनिक कवि ने कुँ अरसिंह पर एक तराना लिखा:—

मह्ती की थी ख़िड़ी रागिनी आज़ादी का गाना था! भारत के कोने कोने में होता यही तराना था! उघर ख़बी थी लक्ष्मीबाई और पेशवा नानाथा! इधर बिहारी वीर बाँकुड़ा खड़ा हुआ महताना था! अस्सी बरसों की हुड़ी में जागा जोश पुराना था! सब कहते हैं कुँवर सिंह भी बड़ा वीर मरदाना था!

1857 के कुछ बरस पहले राजस्थान की अदबी या साहित्यिक दुनिया में बूँदी के महाकवि सूर्यमल भीसए सूरज की तरह चमक रहे थे. उन्होंने राजस्थान के राजाओं, सरदारों और जागीरदारों को जगाने के लिये अपनी मशहूर किताब 'बीर सतसई' की रचना की. सन् 1856 में उन्होंने एक खत में ठाकुर फूलसिंह को लिखा:—'…म्हारो बचन राज याद रखोगा कि जै अबके अभेज रहयो तो ई' को गायो ही पूरो करसी. जमी को ठाकर कोई भी न रहसी. सब ईसाई हो जासी. तींसों दूरन्देसी विचार तो कायदो कोई के भी नहीं, परन्तु आपणा आछा दिन होय तो बचार जीर पात जिसो सुहत म्हारे होय तो बड़ाई तरीके लिखी जावे, तींसूँ थोड़ी में बहुत जाए लेसी."

'बीर सतसई' में चन्होंने बेखीक होकर राजाओं से कहा:—

> इक रंकी गिया एकरी, भूती कुल सामाय, सूरों बालस ऐस में, बक्ज गुमाई बाब.

यानी तुमने तो विदेशियों की फरमावरदारी को ही सब कुछ मान लिया. आजादी का अपना रास्ता भूलकर उनके बताये हुये रास्ते को ही अपना रास्ता समक लिया. अरे भो शूरवीये! तुमने आलस और पेशो आराम में ही अपनी उम्र सो दी!

ارے جھانسی والی رائی خوب اوی مردائی .

چھور مورچہ بھائے پھرنگی دھوندھ ملے ناھیں یائی اے جھانسی والی رائی خوب اوی مردائی .

اس زمانے کے اِسی طرح کے ایک گیت کے یول پر شریبتی میرا کماری چوھان نے اپنی مشہور کویٹا لکھی ہے :—

سنگھاس ھل آئے راج ونشس نے بھرکتی تائی تھی ،

ہرھے بھارت میں بھی آئی پھر سے نئی جوائی تھی ،

گعی دوئی آزادی کی قیمت سب نے بھچائی تھی ،

دور فرنگی کو کرنے کی سب نے میں میں نیائی تھی ،

جمک آئھی سی سٹاوں میں رہ ناوار پرائی تھی ،

ہندیلے ھردواں کے مکھ ھم نے سنی کہائی تھی ،

ہندیلے ھردواں کے مکھ ھم نے سنی کہائی تھی ،

بندیلے ھردواں کے مکھ ھم نے سنی کہائی تھی ،

اسی کویٹا کے وزن پر ایک دوسرے آ۔ھونک کی نے گذرد اسی کورات کی ایک تران کھا :—

مستی کی تھی چھڑی راگنی آزادی کا گانا نھا'
بھارت کے کوئے کوئے میں ھوتا بھی ترابا تھا'
اُدھر کھڑی تھی لکشمی بائی اور پیشوا نانا تھا'
ادھر بھاری ویر بائکوا کھڑا ھوا مستانا تھا'
اسی برسوں کی مذی میں جاگا جوش پرانا تھا'
سبکرتے ھیں کذر ویر سنتھ بھی بڑاویر مردانا تھا۔

18.77 کے لچھ برس پہلے راجستھان کی ادبی یا ساھتھک نیا میں بوندی کے مہاکوی سویته ل بھیشن سورج کی طرح بحک رہے تھے ۔ اُنھوں نے راجستھان کے راجاؤں' سرداررں' اور عاکورداررں کو جگانے کے لہ اپنی مشہور کتاب 'ویرست سٹی' ی رچنا کی ۔ سن 1856 میں اُنھوں نے ایک خط میں اُنھاکو ہول سنکھ کو لکھا :۔۔''....مھارو وچن راج یاد راکھو کا که بول سنکھ کو لکھا :۔۔''....مھارو وچن راج یاد راکھو کا که بھی اب کے انگریز رھیؤٹو اِس کو گایوھی پورو کرسی ۔ جسیس کو بارک کوئی بھی نہیں' پرنتو اپنا پارٹدیسی وچارہ تو فایدو کوئی کے بھی نہیں' پرنتو اپنا آچھو دن ھوئے تو وچارہ اور راجیہ جسو سوعت مھارہ ھوئے تو ہوائی ترو کے لکھی جارہ' تیسوں تھوڑوں میں بہت جان ہوائی ترو کے لکھی جارہ' تیسوں تھوڑوں میں بہت جان

وربرست سلی، میں آنهرں نے بنطوف هو کو راجاؤں سے

اک تاعی کن ایعری بهراء کل سابهار ا سوران آلس ایس میں اکیے گمائی آؤ ۔

یمنی تم نے تو ودیشیوں کی فرمانبرداری کو هی سب کچے مان لیا ۔ آزادی کا اپنا راسته بهواکر اُن کے بتائے ہوئے راستے کو هی اپنا راسته سنچے لیا ۔ ارب شور ویرو ! تم نے آلس اور عیش و آرام میں هی اپنی عمر کھو دس !

इरते हैं. इनके बिहार पहुँचने पर एक के बाद एक मराहूर इंगरेज कमान्डरों के मातहत अङ्गरेजी सेनायें उन्हें हराने के लिये भेजी जाती हैं. कप्तान डनवर, मेजर आयर, मेजर मिलमैन, कर्नल डेम्स, लाई मार्क, जनरल लगई, जनरल हगलस, और जनरल लीगैंड—सब को जिल्लत के साथ हारकर पीछे हटना पड़ा. इनमें से एक मारचे का जिक करते हुये एक अंगरेज कमान्डर .खुद लिखता है—"इम मैदान छोड़कर भागे. कुँ बर सिंह पंछे से बरावर इमला करते रहे. हमारी जिल्लत की कोई हद नहीं रही, हमारी विपता का वारापार न रहा. हममें से किसी में शर्म तक बाकी न रही. जिधर जिसका सींग समाया वह उधर भागा. जाहिर है ऐसा रणवाँकुरा बहादुर वीर किवयों का ध्यान अपनी तरफ खींचता. भोजपुरी में दर्जनों किवताएँ हैं जो कुँ बर सिंह पर लिखी गई है. किव शेखावत के बाल देखें:—

जानत सकल जहान बाबू कुँ अरसिंह भरदान की, शिखावत कहत बखान जेहि विधि लक्यो फिर्गे से.

चरबी के कारतूस का जिक्र करते हुये कुँ अर सिंह अपने भाई अमर सिंह से जो कुछ कहते हैं वह एक दूसरे कवि के बोल में देखें:—

लिखि लिखि पतिया के भेजलन , कुँ अरसिंह, ए सन अमर सिंह, अमर सिंह भाय हो राम! वमका के टोक्वा दाँत से हो काटे कि, अतरों के धरम नसाय हो राम!! बाबू कुँ अरसिंह भी माई अमरसिंह, दोनों अपने हैं भाय हो राम! बतिया के कारन से बाबू कुँ अरसिंह, फिरंगी से देव बदाय हो राम!!

बाबू कुँ अरसिंह की तरह महारानी लक्ष्मीबाई भी पिछली एक सदी से आजादी के दीवानों के लिये उम्मीदों का सरचरमा साबित हुई हैं. रानी लक्ष्मीबाई ने मैदाने जक्ष में आठ आठ अंगरेजी सेनाओं का बहादुरी के साथ मुक्ताबला किया. एक तरक मर हूर अंगरेज जनरैल और दूसरी तरक बाईस बरस की रानी! मगर उसने वह बहादुरी दिसाई कि बड़े से बड़े अंगरेज सूरमा के दाँत खट्टे कर दिये. आजीर में खा लियर के मैदान में रानी लड़ते लड़ते खेन रही मौत की देवी ने रानी के गले में क्यमाजा डाली. भारत. की विविध भाषाओं के कवियों का रानी ने अपनी आर खींचा है. बुँ देलखंड के गाँव-गाँव में चारणों और हरबोलों ने रानी की कीर्ति गाथा गई है. इनमें से एक गीत की लाइने वे हैं:—

.ख्व सबी सरदानी, घरे माँथी वासी रानी, इरजन हरजन तोपें समाय दर्द, योसा बसाए बासमानी, करे माँसी वासी रानी, ख्व सबी सरदानी. کرتے هیں ، آن کے بہار پہرتھتے پر ایک کے بعد آیک مشہور انگریز کمانتھوں کے ماتصت انگریزی سینائیں آنہیں ہوائے کے لئے بھیت جاتی هیں ، کہتان ڈنوز میجر آبر میجر ملمین کرنل ڈیمس ارد مارک جونل ایگرینڈ جونل ڈائس اور جونل لیگرینڈ ۔ سب او ذات کے ساتھ عار کر پیچھے ہتنا پڑا ، ان میں سے ایک مورچے کا ذکر کرتے ہوئے ایک انگریز کمانڈ خود کھتا ہو۔ سے ایک میرابر حملت کے ساتھ کی دنبر سنگ پیچھے سے برابر حملت کرتے رہے ، هماری ذات کی کرئی حد نه رهی ، هماری بہتا کا کرتے رہے ، هماری ذات کی کرئی حد نه رهی ، هماری نیتا کا جدھر جس کا سینگ سمایا وہ ادھر بہاگا ، ظاهر ہے ایسا ری جدھر جس کا سینگ سمایا وہ ادھر بہاگا ، ظاهر ہے ایسا ری بانکوا بہادر ویر کویوں کا دھیاں اپنی طرف کھینچا ، بھوجھوری میں درجنوں کویتائیں هیں جو کنور سنگ پر نکھی گئی هیں ، میں درجنوں کویتائیں هیں جو کنور سنگ پر نکھی گئی هیں ،

جانت سکل جہاں۔ باہو۔ ڈاور سلکھ مردان کو' شکھارت کہت ہکھان جھی بدھی لزبو پھرنگ سے۔

چربی کے کارتوس کا ذکر کرتے ہوئے کنورسنگھ آپنے بھائی اسر سنگھ سے جو کنچھ کہتے ھیں وہ ایک درسرے کوی کے برل میں دیکھیں: ---

لکھ لکھ بتیا کے اویتجابی کدر سنکھ'
اے سی امرسنکھ'امرسنکھ بھائے ہو رام!
چمرا کے ڈوررا داست سے ہو کائےکہ'
چھرری کے دھرم نسائے ہو رام!!
باہر کنور سنکھ آو بھائی امرسنکھ'
دونوں اپنے ہیں بھائے ہو رام'
بتیا کے کارن سے باہو کلورسنکھ'
پھرنگی سے ریوھ بڑھائے ہو رام!!

باہو کنور ملکھ کی طارح مہارانی لکشی بائی بھی پنچہلی ایک صدی سے آزادی کے دروانوں کے لئے امیدوں کا سرچشمہ ڈیت ہوئی ھیں ، رانی لکشمی بائی نے میدان جنگ میں آٹھ آٹھ انگریزی سیناؤں کا بہا رہ کے سانھ مقاباء کیا، ایک طرف مشہور آئس انگریز جرنیل اور درسری طرف لا2 برس کی رانی ! مگر آس لئے وہ بہادری دایائی کہ بڑے سے بڑے امگریز سورما کے دائت کیڈے او دیئے . آخر میں گوائیر کے میدان میں رائی اور لوتے لڑتے لگھے اور دیئے . آخر میں گوائیر کے میدان میں رائی اور لوتے لڑتے بھات رھی ، موت کی دیوی نے رائی کے گلے میں چمالا ڈائی ، بھارت کی وردہ بھائی کے گؤں گؤں میں چاروں اور ھریولوں نے رائی گیت کی لائنین یہ گی کھرتی گانھا گائی ھے ، ان میں سے ایک گیت کی لائنین یہ گئی کھرتی گانھا گائی ھے ، ان میں سے ایک گیت کی لائنین یہ

خوب لوی مرادنی ارب جهانسی والی رانی ا برجن برجن تو پیس لگائه دئیں کولا چلائه اسمانی ا ارب جهانسی والی رانی خرب اوی مردانی ، میکرے سهانهیں دو پیرا جاہی اپنے چہائی گردیاتی ا

موس سے تمہارے پتا کو ہڑا رئیج ھوگا،'' قال پرتاپ نے جواب دیا ہے۔ ''چاچا جی میں اپنے پتا کو جانتا ہوں۔ میرے مرنے پر نہیں بلکھ میرے لہت جانے پر آنہیں دکھ عوگا ، آپ موہ میں پر کر مجھے فرض ادا کرنے سے نہ روکھں ۔'' یعکہکو وہ بہادر نوجوان تلوار لیکر دشماوں پر ٹوٹ پڑا اور لڑتے لڑتے ویر گئی پائی ، چاندے کی ایس مشہور لوائی کا بہان اس کے سمایہ کے جن کوی پراگ نے اپنے اِس جھند میں گیا ہے :۔۔

شريمان الل يرتاب چانده مين جريو رندهير هے، بانکے بسلے بنص کے سنگ سن سیاھی ریر ہے ا يايو حكم جب لال كوا دهايو منه هي كأل كوا لینو چہوں دس گہیر کے دینہو سمورچا یہیر کے ا بحجهوا كتارى نسال هـ؛ كر مين گهيو كروال هـ؛ لینو طمنچه تمک کے برچھی چھبدلی کل ہے! مادھو ہوو رندھیر ھے پہرے کیسریا چیر ھے، ماردو مرو مهدأن مين مركوع نه مورچا وير هے ا گررے جھکے چہوں اور سے دھاوا کریں بہو جرر سے تربيس جنجاليس جهنتيس أرمى أنكنا سر كوتتيس! موهرا پريو پرتاپ کو ار کهن بيرن تاپ کوا أيسم يرتابي لال هے يرنگيو جو بهرن ال هے! بهوشن بسینے بنس کو چهرتا رهری ماتوهنس کو حکمی رههو هنومنت کو چهایر سدا شری کست کو [سو چلی گیؤ سر دهام کو کری گرؤ چک نام کوا برداولي يه چهند هے كوي يراگ كرت يربنده هے [

سن 1857 کے سوانھینتا سکرام کے مہارتھیں میں جگدیش پور کے اُسی برس کے باہو کنور سنک کا نام همیشه عوت سے لیا جائيگا . جس سمتُ دانادور کی هندستانی سینا جگدیش یور یہونچی ہوڑھے کاور سلکھ نے فوراً اپنے محل سے نکل کر اُس سینا کی کمان ہانہ میں لے لی اس دن سے لیکر 26 ایریل سن 19:8 تک یعنی اینی شاندار موت کے دن دک کنور سنتھ ایک فتحیاب سیناپای کے روپ میں اُس انقلاب کی جنگ میں حصه ليتم هواء داهائي ديتم هين شامايان آره اعظم گذه فازی پور وجئے کرنے هوئے کلور سلکھ ریواں کی سرحد تک پہلے جاتے هين. أن كي إس وجيُّه ياترا صه بنارس مين بيتها عوا الرة كينك گہبرا جانا ہے ، جبلهور کے راجه شاعر شاء کنور سنگ کا بهذام ملتے هی میدان میں أتر آتے هیں . ربول كے كنور منكم كالهي پېرنچة، هين . وهان تاتياتري، لاشي بائي، راؤ ماحب ناتا عاهب سے أن كى مقات هوتى هـ . كالهي سم كلور سلكم المهاؤ أتي هين. بيكم حضرت محل سے ملقات كرتے هيں أور تب وایس آرہ پہلجھتے میں ، سرکوں مول کے اِس جنگی کویر میں انگریزی نوجوں کی ممتنهیں بولی که یه کنرر سلک سے مورچه لیں ، کلور سنک واپس بہار بہرنج کر دربارہ جادیص بور پر قبض

मौत से तुम्हारे पिता को बड़ा रंज होगा." लाल प्रताप सिंह ने जबाब दिया :— 'वाचा जी, मैं अपने पिता को जानता हूं. मेरे मरने पर नहीं बल्कि मेरे लीट जाने पर उन्हें दुख होगा. आप मोह में पड़कर मुक्ते कर्ज श्रदा करने से न रोकें." यह कहकर वह बहादुर नीजवान तलवार लेकर दुशमनों पर दूट पड़ा श्रीर लड़ते-जड़ते बीर गित पाई. चाँदे की इस मशहूर लड़ाई का बखान उस समय के जन किव शाग ने अपने इस अन्द में किया है:—

किया हः — श्रीमान लाल प्रताप चाँदे में जुर्यो रनधीर है, बाँके विसेने बंध के संग में सिपाही बीर है! पायो हुकुम जब लाल को, धायो मनी है काल को, लीन्हों बहुँ दिसि घेर के दीन्हों समुरचा फेरि के! बिछुश्रा कटारी ढ ल है, कर में गहयो करवाल है, लीन्हों तमंचा तमिक के बरखी खबीली काल है! माधो बड़ो रनधीर है, पिहरे देसिया चीर है, मारयी मरो मैदान में मुरक्यों न मुरचा वर है! गोरे मुके चहुँ श्रोर से, धावा करें बहु जोर से, तोपें जंजालें छूटतीं श्रार श्रंगना सर कूटतीं! मुहरा परयो परताप को डर कीन बैरिन काल है! मूखन बिसेने बंस को छीना रहयो मानो हँस को, हुक्मी रहयो हनुमन्त को ध्यायो सदा श्रीकन्त को! सो चिल गयो सुरधाम को करिगयो जग में नाम को,

बिरुदावली यह खन्द है कवि प्राग करत प्रबन्ध है! सन् 1857 के स्वाधीनता सप्राम के महारिधयों में जगदीशपुर के 80 वरस के बाबू कुँ बर सिंह का नाम हमेशा इएजत से लिया जायगा. जिस समय दानापुर की हिन्दु-स्तानी सेना जगदीशपुर पहुँची बूढ़े कुँ श्रर सिंह ने फौरन अपने महल से निकल कर इस सेना की कमान ३।थ में ले ली. उस दिन से लेकर 26 अप्रैत सन् 1°58 तक, यानी अपनी शानद।र मौत के दिन तक, कुँअर सिंइ एक फतहयाब सेनापति के रूप में उम इनक्रजान की जक्क में हिस्सा लेते हुये दिखाई देते हैं. शाहाबाद, आरा, आजमगढ़, गाजीपुर निजय करते हुये कुँश्रर सिंह रीवाँ की सरहद तक पहुँच जाते हैं. उन ही इस विजय-यात्रा से बनारस में बैठा हमा लाई कैनिंग घवरा जाता है. जबलपुर के शता शंकरशाद क्कॅ अरसिंह का पैगाम मिलते ही मैदान में उतर आते हैं. रीवाँ से कुँ झर सिंह काल्पी पहुँचते हैं. वहाँ तात्या टोपे, लक्ष्मी बाई, राव साहब, नाना साहब से उनकी मुलाकात होती है. काल्पी से कुँ अर सिंह लखनऊ आते हैं. बेगम इजरत मइल से मुलाकात करते हैं और तब बापस आरा पहुँचते हैं. सैकड़ों मील के इस जड़ी कूव में अंगरेजी की जो की हिम्मत नहीं पड़ती कि वे कुँबर सिंह से मोरचा लें. कुँबर सिंह बापस बिहार पहुँच कर दोबारा जगदीशपुर पर क्रब्जा

नक्मों और छन्दों में सन अठारह सी सत्तावन

राजा बकानी में गोंडा के देशी बक्स महाराज रहे, असी चार चौरासी कीस माँ जाको डंका वाजि रहें! गोंडा से पाती गै फाँसी, फाँसी के राजा रामलला, साथ हमारा दीचे राजा, हमरे राज माँ चोर हला! कहीं कहीं का चलें साँकिया, कहीं कहीं चलते हाथी, देस-देस औ गाँव-गाँव में, राजा लिख मेजी पाती!

यक्दम से घावन पहुँच गया मानो यकीन है, गोंडा सहर से फाँसी मंजिल तीन है! गोंडा सहर से पलटन चिलगै लमती कहैं तकाय रहे, तम्मुक ऊपर तम्मू गिंदगै तम्मू-तम्मू छाइ रहे! जाय फ़ौज लमती माँ पहुँची मार-मार डिंडियाय रहे, पक्का यक-यक मन का गोला साँचा मांडि हराय रहे!

फ़ीन के मानसिंह भी तोप के पुरैया, दान तोप दइउ भस गरजै फाट मरारा नैया! इज्जारों गोरा बढ़ि गये चिल्लाते बप्पा दैया, भंगरेज़ के नेम बोलो राजा धीनधीन तोरी मैया! मागि चलो बिल्लाइत साहव राजा से पार न पैया, भैया परमेसुर का लम्बा हाथ!

सन् 57 के इतिहास में कालाकाँकर की भी एक खास जगह है. जिस वक्त श्राजादी की जक्क चल रही थी काला-काँकर की हुकूमत राजा हनुवन्त सिंह के हाथों में थी. अवध के नवाब के यहाँ उनका खास मान दान था. एक ओर वह श्रंगरेजों के पक्के रात्र और बेगम हजरत महल के बफ़ादार जागीरदार लेकिन दूसरी श्रोर उन्होंने 32 असहाय श्रंगरेज औरतों और बच्चों को श्रपने महत्त में शरण देकर उन्हें सुरक्षित इलाहाबाद भिजवा दिया. बेगम हज़रत महल ने राजा हनुवन्त सिंह के सुपुद किया कि जब श्रंगरेजी कीज सुजतानपुर से लखनऊ की ओर बढ़े तो राजा हनुवंतसिंह श्रमेठी की फीजों के साथ मिलकर उससे मोरचा लें.

राजा ह्नुवन्तसिंह के जेठे बेटे 26 बरस के लाल प्रताप सिंह कलाकाँ कर की सेना के सेनापित थे. राजा ने अपने बेटे को मोरचे के लिये रवाना किया. अपनी जवान बीवी और आठ बरस के बेटे को झोड़कर प्रताप सिंह चले. उनको अकेले जाते देखकर उनके चाचा माधो सिंह भी उनके साथ हो लिये. मुलतानपुर में चाँदा नामक मुकाम पर अंगरेजी फीज के साथ उनकी चमासान लड़ाई हुई. उस लड़ाई का उस जमाने के एक किय ने इन लफ्जों में जिक़ किया है:—

कालाकां इर के विसेनवा रे,

शंगरेजी फीज की तादाद बहुत स्यादा थी. हालत विगइती देखकर चाचा ने कहा—"बेटा ! मैं दुशमनों की बाद को रोकता हूँ तुम कालाकाँकर वापस चले जाओ, तुम्हारी

قطمون أو چهلدون مين سن أتهاره سو ستاون

راجا بکھائو میں گوندہ کے دیوی بکس مہاراے رہے اُ اسی چار چرراسی کوس مان جاکو تذکا باج رہے اُ گوندا سے پاتی گئی جھانسی ' جھانس کے راجاء رام اا ساتھ ھمارا دیجے راجا' ھمرے راج ماں چور ہالا اِ کہیں کہیں کا چلاں سانتریا' کھیں کھیں چاتے ھاتھی' دیسی دیس او کائن گاؤں میں'راجا لکھ بھیجی پاتی اِ یہدم سے دیاری پہونچ گیا مانو یکوی ہے'

گونڈا سہر سے جہانسی منزل تین ہے! گونڈا سہر سے پلٹن چادکئے لمائی نہیں تکائے رہے' تمک اوپر تمو گزیکئے تمو تمو چھائے رہے! جائے نہے امہتی ماں پہونچی مار مار ڈنڈ یائے رہے! یکا یک یک میکا گولا سانچا مانہی قادرائے رہے!

نوچ کے مان سنگھ آر توپ کے پوریا' داکہ ترپ دبو اس کرچے پھائی جھرارا نیا ! هجاروں گوارا یہی کے چلاتے بھا دیا' انگریج کئے نیم ہواو راجا دھن دھن توری میا !

بھ گ چلے بالائت صاحب راجا سے پار تم پیاء بھیا یومهسرو کا اعجا ھاتھ 1

سی 77 کے اِتہاس میں کالا کا نکر کی بھی ایک خاص جگہہ ہے ۔ جس وقت آزادی کی جنگ چل رھی نھی کالکا نکو کی حکومت راجا ھاوابت ساکھ کے ھاتھوں میں تھی۔ اُردھ کے فواب کے یہاں اُن کا خاص مان دان تھا ، ایک اُور وہ انگریزور کے یکم شترو اور بیٹم حضرت محل کے وفادار جاگیردار لایک دوسری اُور انھوں نے 32 اسھائم انگریز عورتوں اور بچوں کو اپنے محل میں شرن دیکر انھیں سرکشت القآباد بھجوا دیا ، بیٹم حضرت محل نے راجا ھنونت سنگھ کے سپرد تیا کہ جب انگریزی فرج ساطانھور سے انکہاؤ کی اُور بڑھے تو راجا عنونت سنگھ کے مورد تو راجا عنونت سنگھ کی مورچا لیں ، سنگھ اور بڑھ تو راجا عنونت سنگھ اور بڑھ تو راجا عنونت سنگھ کی اور بڑھ تو راجا عنونت سنگھ کی مورچا لیں ،

راجا ھنرنت سنکھ کے جدامے دلمہ کو ارس کے لال پرتاپ سلکھ کلا کانکرکی سینا کے سیما پاتی تھے۔ راجا نے اپنے بیانے کو مورچہ کے اللہ ررائے کیا ، اپنی جوان بھوی اور آئے برس کے بہتے کو جورچ کو پرتاپ سنگھ چلے ، اُن کو اکولے جاتے دیکھ کر اُن کے چاچا مادہو سنگھ بھی اُن کے ساتھ ہو لئے ، ساطانھور میں چاندا نامک مقام پر انگریزی فوج کے ساتھ اُن کی گھماسان لرائی موالی موالی موالی کی ایک کوی نے اُن لفظوں میں ذکر میں خانہ میں ذکر اُس زمانہ کے ایک کوی نے اُن لفظوں میں ذکر

کلاکانکو کے بسلوا رہ ا چاندےکارے انسلوا رے ا

انکریزی نوج کی تعداد بہت زیادہ تھی ، حالت بکوتی دیکھ کو چاچا نے کہاسے'' بیٹا ا میں دیمنی کی ہاڑھ کو روکٹا ہوں تم کا کانکو واپس چلے جاؤ ، قمهاری

जै हैं फूट फूट सी तमाम तोप तो दवालों, कुट जैहें का बिल कमाल की ज बाना ते. टूट जैहे देश को दिमारा, जोर छूट जैहे, लूट जैहे लाखन को माल तोप खाना ते. भौन कि कहत खोदाय की ख़बर करी, पीछे पछतावगे खराब खून खाना ते, बैरिन की बनिता सिखावतीं एकान्त कन्त, की जिए न रारि बेनी माधव बक्स राना ते. श्रंगरें ज़ श्रौरतें श्रपने पितयों को एकान्त में सममाती हैं कि--"साजन! बेनी माधो बक्स राना से लड़ाई न छे देथे!"

बेह आगढ़ संडील। के नजदीक एक जागीर थी. गुलाब सिंह उसके दीवान थे. 1857 के इनक्रजाब के अक होते ही गुलाब सिंह नाना साहब से जा मिले कानपुर में उन्होंने नाना साथ अंगरेजों से लड़ाई लड़ी. फिर अपनी फीज के साथ गुलाब सिंह ने लखनऊ में अंगरेजी कीज से मोरचा लिया. फिरंगी उनके .खून के प्यासे बन गये. एक दिन जब वे अपनी गढ़ी में लौटे तो अंगरेजी सेना ने उन्हें रातों रात आ घेरा. गुलाब सिंह ऐसे लड़े कि अंगरेजी कीज को पीछे हटना पड़ा. उनके उस युद्ध को एक किव ने अपनी जानदार किवता में बयान करते हुये कहा है:—

गुलाब सिंह ऐसे लहे, जैसे लंका में लहे इनुमान!

शिकस्त खाई हुई अंगरेजी कौज किर मोरचा-बन्दी करके बेरु आगढ़ आती है. अंगरेजी कौज का कमानदार गुलाब सिंह से बातें करना चाहता है. वह गुलाब सिंह को मिलने की दावत देता है. इस घटना पर एक किन के बोल हैं —

राजा गुलाब सिंह रहिया तोरी हेहाँ, एक बार दरशा दिखाना रे! अपनी गड़ी से यह बोले गुलाब सिंह, सुन रे साहब मोरी बात रे! पैदल भी मारे, सवार भी मारे, मारी तोरी फीज बेहिसाब रे! बाँके गुलाब सिंह रहिया तोरी हेहाँ, एक बार दरश दिखाना रे!

घमासान मोरचे के बाद रात के अँधेरे में अपने एक बहादुर पासी साथी कल्यान का लेकर गुजाब सिंह ने गढ़ी छोड़ दी. बेदआगढ़ के पीछे बाँस का घना धन था. वहीं से गुलाब सिंह जो गायब हुये तो फिर उनका पता नहीं चला.

राना बेनीमाधव सिंह श्रीर गुलाब सिंह की तरह गोंडा के राजा देवी बक्स सिंह भी इतनी बहादुरी के साथ श्रागरेजी सेनाश्रों से लड़े कि उन्होंने श्रपनी बीरता से जन-मन का मोह लिया. उनकी तारी ह करते हुए एक समकालीन कवि कहता है:— جئی هیں پہوٹ بہوٹ سی تمام توپ توروالوا کوٹ جئی هیں قابل کمال دوج بانا تے . ٹوٹ جئی ہے دیش کو دماغ زور چبوٹ جئی ہے، اسٹ جئی ہے لائیں کو مال نوشہ خانا تے . بہوں کوی کہت خدائے کی خبر کروا پیچھے پچھٹاؤگے خواب خرن خانا تے . بیوں کی بلیٹا سمہارتیں ایکانت کنت' کیجئے نے راز بینی مادھو بکس رانا تے ! انگریزی عورتیں اپنے پتیوں کو ایکانت میں سمجہاتی

عیں کئے۔''ساجن ا بیٹی مادھو بعس رانا سے اوائی نه چهنویئے ا'' چهنویئے ا'' برواگڈھ سنڈیٹھ کے نزدیک ایک جاگیر تبی ، گلاب

برواگرد سندیلہ کے نزدیک ایک جاگیر تبی ، گلاب سنکھ اُس کے دیوان تھے ، 1837 کے انقلاب کے شروع مورج میں اُنہیں مورج می گلاب سنکھ نانا صاحب سے جا ملے ، کانپور میں اُنہیں کے نانا کے ساتھ انگریزوں سے نوائی توی ، پھر اپنی فہج کے ساتھ کلاب سنکھ نے انکہاؤ حدی انگریزی فوج سے مورجہ لیا ، فرنگی اُن کے خون کے پھاسے بن گئے ، ایک دن جب وے اپنی گدھی میں لوئے تو انگریزی سینا نے اُنہیں رائوں رات آ گھرا ، گلاب سنکھ ایسے لڑے کہ انگریزی فوج کو پیچھے مانا برا ، اُن کے اِس یدہ کو ایک کری نے اپنی جاندار کوینا میں بیان کرتے ہوئے کہا ہے :—

گانب سنکھ ایسے لڑے' جیسے لکا میں لڑے ہنومان ا

شکست کھائی ہوئی انکریزی فوج ہور مرجہ بندی کر کے مرواگتہ آتی ہے۔ انگریزی فوج کا کہ ندار گذب سنکھ سے باتیں نونا چاھتا ہے وہ گلاب سنکھ کو ملنے کی دعوت دیتا ہے ایس گھتنا یر ایک کوی کے بول میں :—

راجا گلاب سنگه رهیا تدری هدرون اک بار درش دنهاوا رم ! اپنی گذهی سے یه بولی گلاب سنگه سن رمے ماحب مو می بات رمے اپندل بهی مارے سوار بهی مارے ماری دری فوج پے حساب رمے! باتکے گلاب سنگه رهیا تمیری هدرون ایک بار درش دنهاوا رمے!

گیماسان مررچے کے بعد رات کے اندھیرے میں اپنے ایک بہادر پاسی ساتھی کلیان کو لیکو گلاب سنکھ نے گذھی چھرز دی . برواگڈھ کے پیچھے بانس کا گہنا بن تھا . وہیں سے جو گلاب مائک غایب ہوئے تو بھر آرکا پتا نہیں چلا .

رانا بینی مادھو سنگھ اور گلاب سنگھ کی طرح گونڈا کے راجا دیوی، یکس سنگھ بھی اِنٹی بہادروں کے سنھ انکربڑی سیساؤں سے لوے که اُنھوں نے اُپٹی ویرنا سے جن من کو موھ ایا ، اُن کی تحریف کرتے ہوئے ایک سمکالین کوی کہنا ہے:--

नक्षों और बन्दों से सब कठारह सी संवादन

रायबरेली जिले के इमीर गाँव का निवासी एक दूसरा कवि बजरंग जहाभट्ट राना की तारीफ़ में कहता है :---

हिम्मत हाकिम को हजारन में देखि आयो,
खेदिके हटायो अंगरेज हू सकाना है!
बाको तेज तीसन तपत महि मन्यत में
हरिगे उन्नक से न सामत ठिकाना है!
कहै बजरंग बैस वंश अवतंस भयो
कम्पनी विसाहत सकत विस्ताना है!
नेक न देराना झीन सीन्ह्यो तोपसाना
बीर वाँधे बीर बाना बैसराना विरमदाना है!

बैसवाड़ा के इस वीर राना बेनीमाधव सिंह की शूर-बीरता की तारीफ़ करते हुये एक तीसरा कवि ज्वाबाराय कहता है:—

बण्डिका के चेले बैस लड़त हैं अकेले फ़ीजें आया सीना घेरे गोसा खुब ही बजायो है! मारे जरनेल भी कंडेसन को सीद कीन्से.

मारे करनान गोरा मेंट ही चढ़ायो है! राजन में राजा महाराजा बेनीमाधन बक्स.

सबी है सबाई अंगरेज चित्र आयो है! कहत कि ज्वासाराय राजन को काम कीन्हो, बिना अन्न पानी गोसा खुब ही बजायो है!

अवध के किवयों की बानी, ऐसा मालूम होता है, मानो राना बेनीमाधव सिंह की तार्राफ करते हुये थकती नहीं. सर कालिन कैम्बेल की फीजों ने लखनऊ पर कब्जा कर लिया था. बेगम हजरत महल ने आकर राना के यहाँ शरण ली. अपनी मलका महारानी को राना अगर शरण न देते तो दूसरा कीन देता ? सर कालिन ने राना की बहादुरी की तारीफ करते हुये उनसे हथियार डालने के लिये कहा. यह भी वादा किया कि राना को उनकी सब जागीर लौटा दी जायगी मगर आजादी के उस दीवाने ने ब्रिटिश कमाएडर-इन-चीफ के इस पैगाम को हिकारत के साथ दुकरा दिया. एक चौथा किया ना का गुनगान करते हये कहता है:—

राना बहातुर सिपाही अवध माँ, धूम मनाई मोरे राम रे! लिख किख चिठिया लाट ने मेजी, आन मिलो राना भाई रे! जंगी खिलत कन्दन से माँगा दूं, अवध मा सूना बनाई रे! जवाब सवाख लिखा राना ने, हमसे न करो चतुराई रे! अब तक प्रान रहें तन भीतर, तुम कन खोद बहाई रे!

वैसवारा के मशहूर किव भीन, जिनका जिक्र महाकिव 'निराला' ने अपने एक लेख ''भौनु किव" में किया है 1857 में 32 बरस के थे. राना बेनीमाधव बक्स के वे साथी और कह दानों में से थे. राना की श्रूबीरता की तारीक करते हुये भीन लिखते हैं:—

لظمون أور جه دون على سي ألهارة سو حايي

رائے بریلی ضلع کے مدیر کاوں کا نواسی ایک دوسرا کہی بجرنگ بره بہت رانا کی تعریف میں کہتا ہے:-

هست کو حاکم هجاری میں دیکہ آیو
کھید کے مقایر آئکریج هو سکانا هے !
جاکو تیج تیکھی تہت بہٹی ملکل میں
هریٹے آلوک سے نہ لاگت ٹھکاٹا ہے ا
کہے بجونگ بیس بنش ارتئس بھیڈو
کمینی بھٹت سکل بلانا ہے !
نیک نہ درانا چین لینہیو تریکھانا
بیر باندھییر بانا بیسرانا برسرانا ہے !

ہیسواڑہ کے اِس ویو رانا بینی مادہ و سنکہ کی شور ویرتا کی تعریف کرتے ہوئے ایک تیسرا کوی جوالا رائے کہنا ہے :--

چندیکا کے چیلے بیس اوتے ہیں اکیلے نہیے اُللہ کھیری گولا کھرب ہی بجابو ہے ،
مارے جرنیل او کنڈیل کو کید کینہو،
مارے کہتان گورا بینت ہی چتھابو ہے !
راجن میں راجا مہاراجت بینی مادھو بکس
لوی ہے لڑائی انکریز چتھیابو ہے !
کہت کوی جوالا رائے راجن کو کام کینہو بھی بجابو ہے !

اودھ کے کوبوں کی بانی 'ایسا مملرم ہوتا ہے' مائو رانا بینی مادھو سنگھ کی تعرف درتے ہوئے تھکتی نہیں . سرکالی کیمبل کی فوجوں نے لکھنؤ پر قبضہ کر لیا تھا . بیکم حضرت محل نے آکر رانا کے یہاں شرن لی . اپنی ملکه مہارانی کو رانا اگر شرن ته دیتہ تو دوسرا کون دیتا ? سرکائی نے رانا کی بہادری کی تعرف کرتے ہوئے اُن سے متیار ڈالنے کو کہا . یہ بھی وعدہ کیا که رانا کو اُن کی سب جاگیر لوٹا دی جائیگی مگر آزادی کے اِس دیوانے نے برٹھ کمائڈر۔اِن۔چوف کے اِس پیغام کو حقارت کے ساتھ ٹھکرا دیا . ایک چوتھا دری رانا کا گن کان کرتے حقارت کے ساتھ ٹھکرا دیا . ایک چوتھا دری رانا کا گن کان کرتے حقارت کے ساتھ ٹھکرا دیا . ایک چوتھا دری رانا کا گن کان کرتے حقارت کے ساتھ ٹھکرا دیا . ایک جوتھا دری رانا کا گن کان کرتے

رانا بهادر سیاهی آوده ما دهرم محیائی مورد رام را ا له له چتهیا لات نے بهرجین آن مار رانا بهائی را ! جدی کهلت لندن سے ملکادوں اوده ما صوبا بنائی را ! جواب سوال لکها رانا نے شم سے نه کرو چارائی را ! جب نک پران رهیں تن بهداتر " تم کن کهود بهائی را !

بیسوارہ کے مشہور کوی بھوں' جن کا ذکر مہا کوی انوالا' لیے ایک لیکھ ابھونو کوی' میں کیا ہے 1857 میں 32 ہوس کے تھے ، رانا بینی مادھو بکس کے وسے ساتھی اور قدردانوں میں سے تھے ، رانا کی شور ویوتا کی تعریف کرتے ہوئے بھوں لیکے ھیں :۔۔

1

इस स्त्रीफनाक .जुल्मो-सितम के बाद श्रहते बतन की जो कैफ़ियत हुई उसे बयान करते हुये दाग्र कहते हैं:—

.जमीं के हाल पे अब आसमान रोता है: हर इक फिराक़े मकीं में मकान रोता है! बरंगे बूए गुल श्रहले चमन, चमन से चले; ग्रारीब छोड़ के अपना बतन, बतन से चले; मुक्तामे अन्त जो ढूँढ़ा तो राह भी न मिली; ये कहर था कि .खुदा की पनाह भी न मिली!

दिल्ली के वीराने को बयान करते हुये हजरते दारा की आखरी नजम है: ~

ये वो जगह है जहाँ बेकसी भी हर जाये; ये वो जगह है अजल खोफ खाके मर जाये! कहाँ तक आह लिखूँ इसका हाले बरबादी; जिखूँ कहाँ तलक इस आसमाँ की जछादी! किसी को कैंद मेहन से नहीं है आजादी; कि दारा दारा है हर दिल हरेक फरियादी!

खर्दू .जुबान के उस वक्त के और मी बहुत से शायरों ने 1857 पर आने जजबात का इजहार किया है. हमने तो सिर्फ नमूने के तौर पर यहाँ ये चन्द कलाम पेश किये हैं.

(2)

जिस तरह दिल्ली की वीरानगी ने सद् के मशहूर शायरों के दिलों में एक दर्द और तड़प पैदा की वैसे अवध में स्वतंत्रता की लड़ाई हिन्दी के महाकवियों की भावनाओं को न खूसकी. हाँ गाँव के किव का दिल सूरमाओं की बहादुरी और आजादी की तड़प का देखकर मचल पड़ा. उसने शंकरगढ़ के बहादुर राना बेनीमाधव सिंह, गोंडा के राजा देवी बनस सिंह, राजस्थान के सुजान सिंह, सँडीला के गुलाब सिंह, जगदीशपुर के बाबू कुंश्रर सिंह और माँसी की रानी लक्ष्मी बाई को छन्दों का हार पहनाया.

बीरता और शूरता के इन गीतों का सबसे बड़ा खजाना हमें अवध में मिजता है. राना बेनीमाधव सिंह की गिनती सन् सत्तावन के बड़े से बड़े वीरों धीर शहीदों में की जाती है. दुलारे अपनी अटपटी बानी में राना की तारीफ करते हुये कहता है:—

अवध मा राना भयो मरदाना !

पहिल लड़ ई भई बक्सर मा सेमरी के मैदाना, उहाँ से कून भयो पुरवा को तबै लाउ घवराना! नक्षी मिले मानसिंग मिलिंगे मिले सुदर्शन काना, जन्नी वंश एक ना मिलिंहे जाने सकल जहाना! भाय, भनीज भी कुटुम्ब-कबीला सबको करीं सलामा, तुम तो जाय गोरक ते मिलिंगे इसहू को भगवाना! हाथ में भाला बगल सिरोही घोषा चले मस्ताना, कहे दुलारे सुनु पिय प्यारे राना उत्तर कियो पयाना!

اِس تخرفناک علم و ستم ہے بعد اہل رطن کی جو کھلوے ہوئی آت بیان کرتے ہوئے داغ کہتے ہیں :---

زمیں کے حال پہ اب آسمان روتا ہے! ہر ایک فراق معیں میں مکان روتا ہے! برنگ بوئے گل اهل چدن 'چدن سے چلے! فریب چھوڑ کے اپنا رطن' وطن سے چلے! مقام امن جو ڈھونڈا تو راہ بھی نہ ملی! یہ قبر تھا کہ خدا کی پناہ بھی نہ ملی!

دلی کے ویوائے کو بیان کرتے ہوائے حضرت داغ کی آخری نظم ہے:۔۔

یه وہ جکہه هے جہاں بیکسی یہی در جائے؟
یہ وہ جکہه هے اجل خوف کہا کے مو جائے ا
کہاں تک آہ لکھوں اِس کا حال ہربادی؟
لکھوں کہاں تلک اِس آسماں کی جلادی ا
کسی کو قید معجن سے نہیں ہے آزادی ؟
کد داغ داغ ہے مور دل ہر ایک فریادی !

أردو زبان كے أمل وقت كے أور بھى بہت سے شاعروں نے 1857 پر اپنے جذبات كا أظہار كھا ہے . هم نے تو صرف مولے كے طور پر يہاں يه چند كلم يهش كئے ههں .

(2)

جس طح دلی کی ویوائگی نے آردو کے مشہور شاعروں کے داہر میں ایک درد اور ترپ پیدا کی ویسے آودھ میں سونئٹرتا کی اوائی ہندی کے مہاکویوں کی بھاوٹاؤں کو نه چھو سکی ، هن گؤں کے کہی کا دل سورماؤں کی بھادری اور آزادی کی نوپ کو دیکھ کر محچل ہڑا ۔ اُس نے شاعرگڈھ کے بھادر رانا بینی مادھو سائھ گونڈا کے راجا دیوی بکس سائھ راجستھاں کے سجان سائھ سائھ کے جادیھی پورکے بابو کنروسٹھ اور جھانسی کی رانی لکشمی بائی کو چھادری کا ھار پہنایا ۔

ویرتا اور شورتا کے ان گیتوں کا سب سے ہوا خزائے ھمیں اور میں ملتا ہے ۔ راتا بیلی مادھو سلکو کی گنتی میں ستاوں کے بڑے سے بڑے ویروں اور شہیدوں میں کی جا تی ہے ۔ دلوے اپنی اٹیٹی بائی میں راتا کی تعریف کرتے ہوئے کہتا

ارده ما ران بييو مردانا 1

پہلی اوائی بھئی بکسو ماں سمری کے میدان؛ اھاں سے کو یہ بھٹیو پروا کو تبیہ لات گیرانا! فکمی ملے مان سلکھ مل کے ملے سدرشن کانا؛ چھٹری باش ایک نامیائے جائے سکل جہانا! بھایہ؛ بھٹیج او کئیب کبیلا سبکو کروں سلاما! تم تو جائے گرون تے ملائکے ہم ہو کا بھکوانا! ہاتھ ما بھالا بکل سروھی گھوڑا چلے مستانا! کھے دلارے من بہتے بھارے والا آتر کھو بیانا!

नवमों और छन्दों में सन घटारह सौ सत्तावन

दिल्ली शहर की अदिवयात और शायराना महिकल पर इसरत उँडेलते हुये हाली कहते हैं:-

कभी पे इस्मो हुनर घर था तुम्हारा दिस्ली; हमको भूले हो तो घर भूल न जाना हरिगज ! शायरी मर चुकी अब जिन्दा न होगी यारो; याद कर करके उसे जी न कुड़ाना हरिगज ! गालिको शेफ्तको नंथ्यरो आजुदो-ओ जौक, अब दिखायेगा ये शक्लें न जमाना हरिगज ! बजमे मातम तो नहीं, बजमे सखुन है हाली; याँ मनासिक नहीं रो रोके हताना हरिगत !

दाग और 1857

महाकिव दारा, जो सन् 1857 में कुल छन्त्रीस बरस के नौजवान थे और जिन्होंने दिल्ली का बनाव-सिंगार देखा था, और जिनके देखते देखते दिल्ली एक उजड़ा दयार बना दी गई, दर्द से भरकर कहते हैं:—

.फलक जमीने मलायक जनाव थी दिल्ली, बहिश्तों खुल्द में भी इन्तस्ताव थी दिल्ली! जवाब काहे को थी लाजवाव थी दिल्ली; मगर खयाल से देखा तो ख्वाब थी दिल्ली! ये शहर वो है कि हिन्दोस्तान का दिल था; ये शहर वह है कि सारे जहान का दिल था!

मगर दिल्ली जब उजड़ा दयार बन गई तो दाग्र करमाते हैं:-

> खुदापरस्ती के बद्ले जफ्ता परस्ती है; जो मालेमस्त थे श्रव उनको फाक्ने मस्ती है! बजाय श्रवे करम मुफ़ लिसी बरसती है; बतंग जीने से हैं ऐसी तंगदस्ती है!

इस मुक्त लिसी के लिये कलक पर इजजाम मदते हुये वारा करमाते हैं:—

फलंक ने कहरो राज्य ताक-ताक कर डाला; तमाम परदण नामूम चाक कर डाला! चकायक एक जहाँ को हलाक कर डाला; ग्ररज कि लाख का घर उसने खाक कर डाला!

इस सब कैंकियत के लिये सितमगर के ज़ुल्मो-सितम को हसरत के साथ बयान करते हुये दारा कहते हैं :—

> खिलाया जहर सितमगर ने पान के बदले; पिलाया खूने जिगर पेचवान के बदले! नसीब दार हुई है निशान के बदले; मिला न गोर गढ़ा भी मकान के बदले! .जुबाने तेया से पुरिशंश है दादखाहों की; रसन है. तौक है, गरदन है बेगुनाहों की!

نظمون اور جهامون مين سي الهارد سو سااري

دلی شہر کی اداریات اور شاعراته محمل پر حسرت اُنگیلیے هولی حالی کیتے هیں :---

کبھی اے علم و هنر گهر تها تمهارا دلی ؛ همکو بهولے هو تو گهر بهول نه جانا هرگز إ شاعری مر چکی اب زند » نه هوگی يارو ؛ ياد کو کر کے آسے جی نه کوهانا هرگز إ غالب و شيفته و نير و آزده و درق ؛ اب دايائے كا يه شكليں نه زمانه هرگز إ بزم ماتم تو نهيں بزم مختی هے حالی ؛ ياں مناسب نهيں رو رو کے روانا هرگز إ

داغ ار 1867

مہا کوی داغ جو سن 1867 میں کل چھبیس برس کے نوجوان تھے اور جاھوں نے دلی کا بناؤ سنگار دیکھا تھا اور جن کے دیکھتے دیکھتے دلی ایک آجرا دیار بنا دلی گئی درد سے بھر کر کھتے ھیں :—

قلک زمین ملانک جناب تھی دلی ؛

بہشت و خلد میں بھی انتخاب تھی دلی !
جواب کا هے کو تھی لاجواب تھی دلی ؛

مگر خیال سے دیکھا نو خواب تھی دلی ا
یہ شہر وہ هے که هندوستان کا دل تھا؛
یہ شہر وہ هے که هندوستان کا دل تھا؛
یہ شہر وہ هےکه سارے جہان کا دل تھا!

معر دایی جب اُجزا دیا بن کئی تو داغ فرمانے هیں :-

خداپرستی کے بدلے جفا پرستی ہے؛ جومال مست تھے آپ آنکو فادہ مستی ہے! بجائے ابرکرم مفاسی برستی ہے؛ بتنگ جینے سے میں ایسی ننگرستی ہے!

ایس مناسی کے لئے فک پر انزام مرتعتہ ہوئے داغ فرماتے اس

فلک نے قہر و غضب تاک ناک کر ڈالا! تمام پردۂ ناموس چلک کر ڈالا! یکایک لیک جہاں دو ملاک کر ڈلا! غرض که لاکھ کا گھر اُس نے خاک کر ڈالا!

اِس سب کیفیت کے اللہ ستمکر کے ظام و ستم کو حسرت کے ساتھ بیان کرتے ہوئے دائے کہتے ہیں :-

کھایا زور ستمکر نے ہاں نے کے بدایہ ا بھیا خون جگر پیچواں کے بدلے ا نصیب دار ہوئی ہے نشان کے بدلے؛ ملا نہ گور گڑھا بھی مکان کے بدلے ! زبان تونع سپرشش ہےداد خواہوں کی؛ رسن ہے؛طرق ہے؛گردن ہے ہےگناہوں کی! प्लीक जिसको कहें को मक्ततल है;
सा बना है नमूना जिन्दाँ का!
शहर देहली का जर्रा जर्रा खाक;
तिश्नए खूँ है हर मुसलमाँ का!
कोई बाँ से न आ सके याँ तक;
आदमी वाँ न जा सके याँ का!
मैंने माना कि मिल गए फिर क्या;
बही रोना तनो दिलो जाँ का!
गाह जलकर किया किये शिकवा;
साजिशे दाराहाय पिनहाँ का!
गाह रोकर कहा किये बाहम;
माजरा दीदहाए गिरियाँ का!

दिल्ली के ऋरले श्राम पर हसरत का इज़हार करते हुये ग्रालिब ने लिखा है:—

एक अहले द्दं ने सुनसान जो देखा क़फ्स; यूँ कहा आतो नहीं क्यों अब सदाये अन्दर्लाब! बालो पर दो चार दिखला कर कहा सप्याद ने; ये निशानी रह गई है अब बजाये अन्द्लीब!

हाली और 1857

ग्रालिब के शागिद मौलाना अल्ताफ हुसेन हाली, जो पहले 'शैफ्ता' की शागिदी में थे और 1857 में 21 बरस के थे, दिल्ली को मरहूम या स्वर्गीय का ख़िताब देकर शायरों से कहते हैं:—

जितने रमने थे तेरे हो गए वीराँ ऐ इश्कः; आके वीरानों में अब घर न बसाना हरगिज! कृव सब कर गये दिल्ली से तेरे क़द्रशनास; क़द्र याँ आके अब अपनी न गँवाना हरगिज! तजाकिरा दिल्लिए मरहूम का ऐ दोस्त न छेंड; न सुना जायगा हमसे ये किसाना हरगिज! दास्ताँ गुल की खिजाँ में न सुनाए बुलबुल; हँसते हँसते हमें जालिम न कलाना हरगिज!

श्रावादियाँ गिराकर दिल्ली को वीराना बना दिया गया. कला श्रीर अदब की नायाब यादगारें घूल में मिला दी गई. पस कैफियत का चश्मदीद हाल बयान करते हुये हाली लिखते हैं:—

> लेके दारा श्राएगा सीने पे बहुत ऐ सय्याद; देख इस शहर के खँडहर में न जाना हरगिजा! चप्पे चप्पे पे हैं याँ गौहरे यक्ता तहे लाक; दमन होगा कहीं इतना न लजाना हरगिज! बो तो भूले थे हमें हम भी उन्हें भूल गये; ऐसा बदला है न बदलेगा जमाना हरगिज! जिसको जरूमों के हवादिस से श्रष्ठ्वा सममें; नजर शाता नहीं कोई भी घराना हरगिज!

چوک جس کو کہیں وہ مقتل ہے؛

سر ہنا ہے نمونہ زنداں کا !
شہر دہلی کا ذرہ ذرہ ہاکہ:
تشنئہ خوں ہے ہر مسلماں کا !
کوئی واں سے نہ آسکے یاں تک؛
آدسی واں نہ جا بحے یاں کا !
میں نے مانا کہ مل گئے پھر کیا ؛
وہی رونا تن و دل و جاں کا !
گاہ جل کو کیا کیئے شہوہ؛
سوزش داغ ہائے پنہاں کا !
گاہ جل کو کیا کیئے شہوہ؛
سوزش داغ ہائے پنہاں کا !
گاہ حل کو کیا کیئے شہوہ؛
سوزش داغ ہائے پنہاں کا !
گاہ حوال دیدھائے گریاں کا ا

ایک اہل درد نے سنسان جو دیکھا قفس؛ یوں کہا آتی نہیں کیوں آپ صدائے عندلیب ا

یال و پر دو چار دانیا کر کها صاد نے؛ یه نشانی ره گئی هے آب بنجائے عندایہ!

1857

الب کے شاگرد مولایا الطاف حسین حالی' جر پرلے 'شیفتد' گردی میں تھے اور 1857 میں 21 برس کے تھے' دلی کو یا سررگیہ کا خطاب دے کر شاءروں سے کہتے عیں: —

جتنے رمنے تھے ترے ہو گئے دیراں اے عشق؛
آکے دیرانوں میں اب گور نہ ہسانا ہرگز!
کوچ سب کرگئے دای سے ترے قدرشناس؛
قدریاں آکے اب اپنی نہ گنرانا ہرگز!
تذکرہ دلئی مرحوم کا لے دوست نہ چھیز؛
نہ سنا جائے گا ہم سے یہ فسانہ ہرگز!
داستاں گل کی خزاں میں نہ سنائے بلبل؛
منستے ہنستے ہمیں ظالم نہ روانا ہرگز!

ہادیاں گرا کر دای کو ریرانہ بنا ۔ دیا گیا ۔ کلا اور ادب کی ۔ یادگاریں ۔ دھول میں ملا دی گئیں ۔ اِس کنیت کا چثم ۔ ال بیان کرتے ہوئے حالی لکھتے ہیں : —

لے کے داغ آئیکا سینے پہ بہت اے صیاد؛
دیکھ اِس شہر کے کھندر میں نہ جانا ہرگز! چھت چھت پہ ھیں یاں گرھر یکتا تہ خاک؛
دفن ھرکا کہیں اِننا نہ خزانہ ھرگز! وہ تو بھول تھے میں ہمی آنھیں بھول گئے؛
ایسا بدلا ہے نہ بدلے کا زمانہ ھرگز! جسکو رخموں کے حوادث سے اچھونا سجھیں؛
نظر آنا نہیں کوئی بھی گورانا ھرگز!

いんます こうてんだいしょう ハイカー かいはないかい

भी नहीं था. चन्होंने बड़ी इसरव के साथ अपने दाहिने हाथ की हथेली को देखकर कहा :—

> फूल लाया है माली डाली में; इड्ड लकी रें हैं दस्ते खाली में!

अपने महान मुराल पूर्वजों के बक्ष्पन का अहसास बहादुरशाह के दिल में था. वह अपने को मुराल सस्तनत की एक दूटी हुई क्रम की तरह मानते थे. इस खयाल को जाहिर करते हुये जकर ने लिखा है:—

वो जो दूटी क्रम का था निशाँ उसे ठोकरों से मिटा दिया ! ` एक जगह दिखी की आजादी और बरबादी का चित्र खींचते हुये उन्होंनेलिखा है :—

पसे मर्ग मेरे मज़ार पर जो दिया किसू ने जला दिया; ससे आह दामने बाद ने सरे शाम से ही बुमा दिया! कितनी इसरत है इस कलाम में! 1857 के बाक्रयात पर बहादुरशाह की नज़मों से काक्षी रोशनी पहली है. अपने पुरवर्द हक्षीकरते हाल के बारे में वे खुद कहते हैं:—

न पूछ सुकते 'जकर' मेरी तू हकीकते हात; अगर कहूँगा अभी तुसको मैं दला दूँगा!

लेकिन दिल के दर्द से कोई यह न सममें कि उनमें बहादुरी की कमी हो गई थी, वे दुश्मन की संगदिली के मुताल्लिक कहते हैं:—

> बेबका तुमसे शिकायत है सितम की बेजा; कीजिये इससे जो आगाह वका से कुछ हा! सर रहे या न रहे जान बचे या न बचे; मुँह न मोड़ेंगे तेरी तेरी जका से कुछ हो!

सन् 1857 में दिल्ली की जां कैं फियत थी उस पर शहन्शाह के कुछ शेर ये हैं :--

आज देहती में को उसकी अजब सैर हो गई; तलबार चलते चलते रही .खैर हो गई! काबा के सिम्त हमने किया मुँह पए नमाज; बरगश्ता नीश्चत अपनी सूए दैर हो गई! बेगानगी का दिल के गिला क्या है इश्क में; जब जान भी न अपनी रही ग़ेर हो गई! आशिक्ष को जब दिखाई किरंगी पिसर ने ताप; पाया न कुझ बो कहने कि बस कैर हो गई! खंजीर हर गई मेरी बहशत से क्या 'सफर'; जल्दी अलग दो चूम के जो पैर हो गई!

गालिय और 1857

दिल्ली में खास तौर पर मुखलमानों के ऊपर जो जुलम डाये गये चनका जिक अब शायरों के सरताज ग्रालिब से सुनें, जो सन् 1857 में पूरे साठ बरस हे थे:-- تعلنون أور چهلدون مين سن الهارة شو ستاوين

بھی نہیں تھا ، آٹھیں نے بڑی حسرت کے ساتھ اپنے داھنے عاتم کی عاتم اپنے داھنے عاتم کی عاتمیاں کو دیکھ کر کیا :۔۔۔

يهول البا هـ مالى دالى مين؛ كچه لكورين هين دست خالى مين إ

اپنے مہان مغل پرروجوں کے بڑپن کا احساس بہادر شاہ کے دل میں تھا ، وہ اپنے کو مغل سلطنت کی ایک ٹوٹی ہوئی قبر کی طرح مانتے تھے ، اِس خیال کو ظاہر کرتے ہوئے ظفر نے لکھا ہے :۔۔۔

وہ جو ٹوٹی قبر کا تھا نشاں آس ٹھوکروں سے مٹا دیا ! ایک جگه دلی کی آزادی اور بربادی چٹر کا کھنچتے ہوئے آنھوں نے لیا ہے:۔۔۔

پس مرک میرے مزار پر جو دیا کسو نے جا دیا؟ اُس آد دامن باد نے سر شام هی سے بجھا دیا!

کننی حسرت ہے اُس کام میں! 1817 کے واقعات پر بہادرشاہ کی نظمیں سے کامی روشنی پرتی ہے، اپنے پر درد حقیقت حال کے بارے میں وے خرد دہتے ہیں:

نه پوچه مجهسه اظامرا میری تو حقیقت حال؛ اگر کهونگا ایهی تجه کو میں راندرں گا!

لیکن دل کے درد سے کوئی یہ نہ سمجھے کہ آن میں بہادری کی کمی ہو گئی نہے . وہ دشمن کی سنکدلی کے متعاق کہتے ہیں :--

> پرونا تجہسے شکایت ہے ستم کی پہدا؟ کیجئے اُس سے جو آگاہ ونا سے کچھ ہو اِ سر رہے یا نہ رہے جان بچے یا نہ بچے؟ منه نہ مرزبنگے تری تینے جفا سے نچھ ہو اِ

سن 1857 میں دلی کی جو کینیت نہی اُس پر شہنشاہ کے کچھ شعر یہ میں :-

آج دعلی میں جواس کی عجب سور هوگئی!

تلوار چاته چاته رهی خیر هو گئی!

کعبعہ کے سمت عم نے دیا منه رهٔ نمار؛

برگشته ادات اپنی سوئه دیر هو گئی!

بیگانکی کا دال کے کله کیا ہے عشق میں!

جب جان بھی نه اپنی رهی غیر هو گئی!

عاشق کو جب دکھائی فرنکی پسر نے تونیا!

یا با نه کچے وہ کہلیانہ بس نیر هو گئی!

زنجیر تر گئی میری وحشت سے کیا اظفر!

جلدی الگ وہ چوم کے جو پیر هو گئی!

فالب أور 1857

دلی میں خاص طور پر مسلمانوں کے اوپر جو ظلم قعائے گئے اُن کا ذکر اب شاعروں کے سرتاج فالب سے سلیں جو سی 1857 میں پررے ساتو برس کے تھے: कफ़स में है क्या फायदा शोरो गुल से; असीरो करो कुछ रिहाई की बातें! 'जफ़र' अब जमाना बुरा आ गया है; जिधर देखां हैं वाँ बुराई की बातें!

फ़ीज के कमानदारों ने जब एक दूसरे पर तोहमतें मदनी शुरू की तो उन्हें नसीहत देते हुये शहनशाह ने कहा:—

न थी हाल की जब हमें अपने खबर;
रहे देखते औरों के ऐबो हुनर!
पड़ी अपनी बुराइयों पे जो नजर;
तो निगाह में कोई बुरा न रहा!
'जफर' आदमी उसको न जानियेगा;
वह हो कैसा ही साहिबे फ़्हमो ज़का;
जिसे ऐरा में यादे खुदा न रही!
जिसे तैश में खौफ़े खुदा न रहा!

14 सितम्बर 1857 के बाद दिल्ली की जनता पर इतने सितम ढाये गये कि बहादुरशाह का किव हृद्य भी ग्रम से चाक चाक हो गया. मुसलमानों को तो खास तौर पर खोज खाजकर सृली पर लटकाया जाता. एक नष्म में शहन्शाह ने उसे यूँ बयान किया है:—

गई यक बयक जो हवा पलट, निहं दिल को अपने करार है; कह गम सितम का मैं क्या बया, मेरा सीना गम से कितार है. ये रियाया हिन्द तबाह हुई, कहो क्या न इनपे जका हुई; जिसे देखा हाकि में वक्षत ने, कहा ये भी काबिले दार है! कहीं ऐसा भी है सितम सुना, कि दी फाँसी लाखों, को बेगुनाह, कले कलमा गोयों के तक से, अभी दिल में उनके गुबार है!

जंगे आजादी के सबसे बड़े नेता की हैसियत से शहनशाह बहादुरशाह को आजादी की सबसे भारी क्रीमत खुकानी पड़ी. शहनशाह के 24 बेटे और पोते क़ल्ल कर दिये गमे और उनके सर .खूनी दरवाचे पर लटका दिये गये. उन सब दर्दनाक घटनाआं पर अपने दिल की कैकियत शहनशाह ने यूँ बयान किया है:—

रिन्द हूँ मैं या जाहिद हूँ, या सूफी हूँ या मैकरा हूँ; आलिम हूँ या जाहिल हूँ, या मोमिन हूँ या तरसा हूँ! कैसा रंज व कैसी राहत, किसकी शादी किसका राम; ये भी नहीं मालूम मुमे, मैं जीता हूँ या मरता हूँ!

राह्नशाह बहादुरशाह, उनकी चहेती बेगम जीनत महल और युवराज जवाँबस्त को क्रेंद्र करके रंगून भेज दिया गया. वहाँ बेहद ग़रीबी में शहन्शाह को अपने आखरी दिन काटने पड़े. रंगून में उनकी 83वीं सालगिरह के दिन एक माली तोहफें के, तौर पर फूलों की डाली सजा कर लाया. शहन्शाह के पास हनाम देने के लिये कुळ قنس میں ہے کیا نائیہ شہر و غل ہے؟ اُسیرو کرو کنچہ رہائی کی باتیں اُ اطفر' اب زمانہ ہوا آگیا ہے؛ جدھر دیکھوھیں واں برائی کیباتیں!

فوج کے کمانداروں نے جب ایک دوسرے پر تومتیں مرحلی شروع کی تو اُنھوں نصفحت دیتے ہوئے شہنشاہ نے کہا :--

ندتهی حال کی جب همیں اپنے خبر؛
رهے دیکھتے اور کے عیب و هنر!
پڑی اپنی برائھرں پہ جو نظر؛
نو نکاہ میں کوئی برا نہ رھا!
اظفر' ادمی اُس کو نہ جائیے گا؛
وہ کرسا هی هو صاحب نهم و ذکا!
جسے عیش میں یاد خدا نہ رھی؛
جسے عیش میں یاد خدا نہ رھی؛

14 سلمبر 1857 کے بعد دلی کی جنتا پر اِتنہ سلم دَهائے گئے که بہادر شاہ کا کوی هردئے بهی غم سے چاک چاک هو گیا . مسلمانوں کو تو خاص طور پر کھوج کھرج کو سولی پر قاکیا جانا . ایک نظم میں شہنشاہ نے آسے یوں بھان کیا ہے:—

گئی یک ہیک جو ہوا بلت کہیں داں کو اپنے قرار ہے؛ کروں غم ستم کا میں کیا بیاں میرا سینہ عم سے فکار ہے! یہ رعایا ہند تباہ ہوئی کہو کیا تہ اُن یہ جفا ہوئی ؛ جسے دیکھا حکم وقت نے کہا یہ بھی قابل دار ہے! کہیں ایسا بھی ہے ستم سنا کا دسی پھانسی الکھوں کو پے گفہہ ولے کلمہ گویوں کے طوف سے ابھی دل میں اُن کے غبار ہے!

جنک آزادی کے سب سے ہرے نیتا کی حیثیت سے شہنشاہ بہادرشاہ کو سب سے بھاری آزادی کی قیمت چکائی پڑی ۔ شہنشاہ کے 24 بیٹے اور پرتے قتل کر دیئے گئے اور اُن کے سرخونی دروازے پر لٹکا دیئے گئے ۔ اُن سب دردناک گہناؤں پر اپنے دال کی کیمیت شہنشاہ نے یس بیان کیا ہے :۔۔

رتی هوں میں یازاهد هوں'یا صونی هوں یا میدهی هوں! عام هوں یا جاهل هوں' یا مومن هوں یا ترسا هوں! کیسا رتبے و کیسی راحت' کس کی شادی کس کا غم! یہ بھی تمیں معلوم معجے'میں جیٹاهوں یا موتا هوں!

شہلطاہ بہادرشاہ ان کی چہلتی بیکم زبات محل اور براہ جول بخت کو تھد کو کے رنگوں بھیج دیا گیا، وہاں پیدد غریبی میں شہلشاہ کو اپنے آخری دن کاٹنے بڑے برنگوں میں اُن کی 83 ویں سائٹوہ کے دن لیک مالی تحقه کے طور پر پھولوں کی قالی سجا کولیا ، شہلشاہ کے پاس اُلمام دیائے کے لئے کچھ

नक्सों और खन्दों में सन भठारह सी संतादन

क्या क्या करे हैं आशिक़े नाकाम पर सितम; स्त्रीके सुदा कुछ उस बुते सुदकाम को नहीं! रिन्दों पे तानाजन है अवस बाइज ऐ 'जकर'; कोई किसी के जानता अंजाम को नहीं!

जंगे आज़ादी में शामिल हाने के लिये जब -सहन्शाह जकर ने अपना दाबतनामा देशी राजाओं के पास भेजा तो बीकानेर के राजा ने उसे बिना पढ़े ही फाड़ दिया. इस पर शहन्शाह ने लिखा:—

किया खत दुकड़े-दुकड़े तुमने तो क्रासिद से लेते ही; मुनासिब था कि पढ़वाकर हक्षीक्रत यक क्रलम सुनते! मींद के राजा ने तो शहन्शाह का खत लेजाने वाले क्रासिद को ही गोली से उड़ा दिया. इसपर जफ़र का एक शेर हैं:—

ढूँढा निशाँ जो इमने .कासिद का उस शहर में; कुछ पाये सर के दुकड़े श्रीर कुछ बदन के दुकड़े! श्रंगरेजी .फीजों ने दिल्ली के किले का मोहासरा जारी कर दिया था. बक्रीद के त्यौहार के दिन जामा मसजिद में मुश्रिष्जिज शहरियों की.कुर्शनी की गई. इसपर शहन्शाह ने लिखा:—

मुनारकवाद हम देते हैं जनको इंदे .कुर्बी की; गले पे रखके खंजर जनकि वह तकवीर पढ़ते हैं! अपने प्यारे पोते के .कल पर शहन्शाह ने हसरत के साथ लिखा:—

एक वो क्या बिलक उस से रोज लाखों बेगुनाह;
.करल होते हैं तेरे ऐ अप्रविदा जो हाथ से!
यह नहीं रंगे हिना छुट जाय जो दो रोज में;
हश्र तक छुटेगा आशिक का न लोहू हाथ से!
दिल्ली के पतन के बाद बेगुनाहों के .कत्ल का जो
सिलसिला चला उसपर शह-शाह जकर ने लिखा:—

सलासला चला उसपर शहरशाह जकर न लिखा:— जहाँ में सबका इबरत हा गई उस दिन से ऐ कातिल; सरे बाजार तूने लाशाऐ मक़तूल खींचा है! इजारों बेगुनाहों का सितमगर इश्क में तूने; यहाँ सूली पे बेदस्तूर, बेमामूल खींचा है!

दिल्मी में आजादी की जंग चलाने के लिये एक जंगी कींसिल बना दी गई थी जिसके सदर खुद शहन्शोह थे. कींसिल के मेम्बरान आपस में एक दूसरे की बुराई करते और एक दूसरे की टाँगें घसीटते. इसपर छ हों लानत-मला-मत करते हुये शहन्शाह ने लिखा:—

नहीं तुमको खेबा बुराई की बातें; भक्कों को हैं लाजिम भलाई की बातें! ग़जब है कि दिल में तो रक्को कुदूरत; करो मुंद पे इमसे सफाई की बातें!

نها اور چهادری مهن سن الهاره سو ستاون

کیا گیا کرے ہے عاشق ناکام پر ستم! خوف خدا کچھ اُس بت خودکام کو نہیں! رندوں یہ طغاء زن ہے عبث راعظ آے 'ظفر'؛ کوئی کسی کے جانتا انجام کو نہیں!

جنگ آزائی میں عامل ھونے کے لئے جب شہنشاہ ظفر نے اُپنا دعوث نامہ دیشی راجاؤں کے پاس بھیجا تو بھکائیر کے راجہ لے اُسے بنا پڑھ می پھاڑ دیا ۔ اِس پر شہنشاہ نے اکھا :—

کیا خط تکرے تمرے تم نے تو قاصدسے لیانہ هی! مناسب تها که پرهواکر حقیقت یک قلم ساتے !

جہید کے راجہ نے تو شہنشاہ کا خط لے جانیوالے قاصد کو می گوای سے آزا دیا ، آس پر ظاہر کا ایک شعر ہے: --

قەوندا نشان جو هم نے فامد كا أس شهر مين؛ كچھ پانے سر كے تُكرے اور كچھ بدى كے تُكرے ا

انگربزی فرجیں نے رلی کے قلع کا محاصرہ جاری کر دیا تھا ، بقرتید کے نہوار کے دن جامعہ مسجد میں معزز شہریوں کی قربانی کی گئی ، اِس پر شہنشاہ نے اکہا:

مبارکباد هم دیتے ههں أن کو عید قرباں کی؛
گلے پر رکھ کے خلاجر جبکه وہ تکبیر پڑھتے هیں ا
اپنے پیارے پوتے کے قائل پر شہنشاہ نے حسرت کے ساتھ
لکھا :۔۔۔

ایک وہ کیا ہلکہ اُس سے روز لاہوں پرگناہ؛ قال ہوتے ہیں تیرے اے اردا جو ہاتھ سے ا یہ نہیں رنگ حناچہت جائےجوں روز سیں؛ حشر تک چہرٹے کا عاشق کا نادرہو ہاتھ سے ا

دلی کے پتن کے بعد بےگناہوں کے قتل کا جو سلسله چلا آس پر شفیشاہ ظفر نے لیا :-

جہاں میں سبکوعبرت هوگئی آس دن سے آنے قاتل؛ سرے بازار نونے لشئه مقتول کھینچا ہے! هاروں پرگناهوں کو ستمکر عشق میں نونے؛ یہاں سولی په پردستور پرممول کیمنچا ہے!

دای میں آزادی کی جنگ چلانے کے لئے ایک جنگی کونسل بنا دی گئی تھی جس کے صدر خود شہنشاہ تھے۔ کونسل کے معبران آپس میں ایک دوسرے کی برانی کرتے اور ایک دوسرے کی ٹانگیں گھسیٹتے ۔ اس پر آنھیں لعنت مقدت کرتے ہوئے شہنشاہ نے لکھا : ۔

نہیں تمکو زیبا برائی کی باتیں! بھلوں کو ھیں ازم بھائی کی باتیں! فقب ہے کہ دل میں تو رکھو ندورت! کرو ملے یہ ہم سے صفائی کی باتیں! 38 V 100 M 1

को एक दरजे तक घटा विया था. गर्जर जनरल कैनिंग उस रही सहीशान को भी खत्म करने की साजिशों में लगा हुआ था. दिल्जी के इर्द-गिर्द के शासन में भी बहादुरशाह की कोई राय न ली जाती थी. यहाँ तक कि किजे के बाहर किले के सैनिकों के लिये बहादुरशाह को, जिसे नक्षशे के मुताबिक नई बैरकें तामीर करना पसन्द था, श्रंगरेज रेजीडेन्ट ने धन्हें उस तरह तामीर न करने दिया. बहादुरशाह से कौन किस बक्त मुलाक्षात करे इसमें भी रेजें डें ट दखल देने की जुरश्रत करता था. श्रंपनी उस बक्त की दिली केंक्रियत को बहादुरशाह ने एक नजम में यूँ बयान किया है:—

दिया बनाने न मुफको मकाँ मकाँ के क़रीब; बसाये लोग उन्होंने जहाँ तहाँ के क़रीब! निकलते हर दहने मू से हैं इस क़दर शोले; फटकता कोई नहीं तेरे तुक्ता जाँ के क़रीब! फलक के नीचे क़लक और इक नया बन जाए; जो पहुँ चे दूदे जिगर मेरा आसगाँ के क़रीब! कहे है तू कि फटकता नहीं यहाँ कोई; खड़ा था कीन तेरे आज आसताँ के क़रीब! वो हूँ मैं तायरे आतिश नक़स कि थरीय; जो आये बर्क कभी मेरे आशियाँ के क़रीब! क़क्स से छूटके जब हम असीर ऐ सण्याद; चमन में पहुँ चे तो दिन आ गए खिजाँ के क़रीब!

जिस समय नाना धुन्धपन्त और श्रजीमुल्लाखाँ ने शह्नशाह से श्राजादी की जंग में शिरकत करने के लिये कहा तो बहादुरशाह ने श्रपनी रजामन्दी नीचे लिखी नजम में जाहिर की:—

जाँ फ़िदा करने को हाजिर हैं कहा तुम जिस दम; हम हैं जिस काम के, मौजूद हैं उस काम से वक्त ! गरचे रिंदाने तहीदस्त हैं मानिन्द गदा; बक्त के अपने हैं जमशेद मगर जाम के बक्त!

इस बीच गवर्नर जनरल के रवइये श्रीर रेजीडेन्ट के बर्गात्र से बहादुरशाह का दिल, फिरंगियों की तरफ, रहा-सहा भी दृढ गया. श्रपनी उस भावना को बहादुरशाह ने इन सतरों में श्रदा किया है:—

> कहें क्या इन बुतों से ऐ 'जकर' हम हालेदिल अपना; ये काफिर हैं नहीं इक बात अस्ला की कसम सुनत! न करता नृह के तृकाँ का कोई जिक्र मी हरिगज, अगर मरदुम हमारा माजराए चश्मे नम सुनत! न लेते नाम बस्कत का कभी बस्फ़त के जाइन्दे; जो मेरा सब सुनते औं तेरे जुस्मो सितम सुनते!

बहादुरशाह का दिल जिल्लात से तक्ष्प चठा. शहन्शाह की दिली कैंकियत इन शेरों में गौर करें :--- کو ایک درجه تک گیتا دیا تھا ۔ گورٹر جنرل کیننگ اس رھی سہی شان کو بھی ختم کرنے کی سازشوں میں اگا ہوا تھا ۔ دلی کے ارد گرد کے شاسن میں بھی بہادر شاہ کی کوئی رائے تھ لی جاتی تھی ، یہاں تک که فلع کے باہر قاع کے سیائوں کے لئے بہادر شاہ کو جسے نقشہ کے مطابق ٹئی بیرکیں تعمیر کرفا پسند تھا ' انگریز ریڈیڈیئٹ نے آئییں اُس طرح تعمیر نہ کرنے دیا ، بہادر شاہ سے کون کس ونت ملاقات کرے اُس میں بھی ریڈیڈیئٹ دخل دینے کی جرات کرتا تھا ، آپئی اُس وقت کی دلی کینیت کو بہادرشاہ ہے ایک نظم میں یوں بیان کیا ہے :۔۔

دیا بنالے نہ مجھکو مکاں مکاں کے تربب،

ہسائے لوگ اُنھوں نے جہاں تہاں کے تربب!

نکاتے ہر دھی موسے ھیں اِس قدر شعلے؛

پھٹکٹا کوئی نہیں تیرے تفتہ جاں کے قریب!

فلک کے نیجے فلک اور اک نیا ہی جائے؛

جو پہلجے دود جکر میرا اُسماں کے قریب!

کھے ہے تو کہ پھٹکٹا نہیں یہاں کوئی؛

کھڑا تھا کہی ترے آج اُستاں کے قریب!

ولا موں میں طائر آبش نفس کہ تھرائے؛

جو اُنے ہرق کبھی میرے اُشیاں کے قریب!

قفس سے چھوٹ کے جب ہم اسیر اے صیاد؛
چمن میں پہانچے تو دن آگئے خزاں کے قریب!

جس سمئے نانادھندپنت أور عظیم الله خاں نے شننشاہ سے آزادی کی جنگ میں شرکت کرنے کے لئے کہا تو بہادر شاہ نے اپنی رضامندی نیجے لکھی نظم میں ظاہر کی:—

جاں ذیا کرنے کو حاضر ہیں کہو تم جس دم؛ ہمھیں جس کام کے 'موجود ھیںاُس کام کے رقت ا گرچہ رندان تھی دست ہیں مانند گدا؛ وقت کے اپنے ہیں جمشید مکر چام کے رقت ا

اِس بیچ گررنر جنرل کے رویند اُور ریذیدینت کے برتاؤ سے بہادر شاد کا دل ' فرنکیس کی طرف' رہا ہا بھی آرت گیا ۔ اپنی آس بھاؤنا کو بہادر شاہ نے اِن سطروں میں ادا کیا ہے:۔۔۔

کہهں کیا اُن بعوں سے اے 'ظار' هم حال دل اُپنا؛
یہ کافر هیں نہیں اک بات اُللہ کی فسم سنتے اِ
نَّهُ کُرِتَا نُوح کے طوفاں کا کوئی ذکر بھی هرگز؛
اگر مردم همارا ماجرائے چشم نم سنتے اِ
نَّهُ لِيتَهِ نَّامِ الفَّت کا کَبھی الفَّت کے جونگادے؛
جو مہرا صبر سنتے او ترے ظلم و سنم سنتے اِ

بهادر شاہ کا دل ذلت سے نوب أَنْهَا اُ شَنْهِشَاه كى دلى كينيت إن شعروں ميں غور كريں :---

नइमों और छन्दों में सन् भठारहसौ सत्तावन

ودوميهر ثاته باندي

نظموس اور چهندوس میں

سي الهارة سو ستاون

विश्वमभरनाथ पांडे

सन् 1857 की तारीख को किस नाम से प्रकार। जाय- इस पर इतिहास लिखने वालों की राय में काफी मतमंद है. कोई उसे 'बग़ावत' के नाम से प्रकारता है तो कोई 'जंगे आजादी' के नाम से; लेकिन इससे किसी को इनकार नहीं कि फिरंगी हुकूमत की मुल्क से खत्म करने की बह एक शानदार कोशिश थी. सरकारी खरीतों, कौजी अफसरों की चिद्वियों, इतिहासकारों की किताबों, सैलानियों, के रोजनामचों, कम्पनी के देशी श्रक्रसरों की याददाश्तों, गवरनर जनरल के ऐजानों, पार्लिमेन्ट की बहसों, नेताओं के इरतहारों श्रीर शाही करमानों में हमें 1857 की एक सरसरी फाँकी मिलती है. सन् 1857 की कान्तिकारी तहरीक मुल्क की खुदारी की भावनात्रों, रुद्दानी तड़पनों, उम्भीदों श्रीर मायूसियों, कामयावियों श्रीर नकापयावियों, हारों श्रीर जीतों पर तेज रोशनी डालती है. मुल्क की हैसियत से हमारी ख़बियों और हमारी कमजोरियों को भी सन् 57 की तहरीक नुमायाँ कर देती है. इतिहासकारों की तरह उस जमाने के हमारे शायरों श्रीर गाँव के कवियों ने भी हमारी आजादी और इसारी बरबादी की, हमारी उमंगों और हमारी बिपता की पुरजोश और पुरदर्द तसवीर खींची है.

उन्नीसवीं सदी उद् के मशहूर शायरों की माँ कही जाती है. दिस्तो के आखरी बादशाह बहादुरशाह खर एक ऊँचे दरजे के शायर थे. वे 'जफर'के नाम से शायरी करते थे. 'जौक्न' 'गालिब', 'दारा', 'हाली'-सब मुराल दरबार के मशहर शायर थे. इनमें जीक का इन्तकाल तो 1857 के पहले हो गया था लेकिन सालिब, दास श्रीर हाली 1857 में मौजूद थे. 1857 पर इनकी पुरदर्द नजमें हमें अब तक भिलती हैं, दिल्ली की तरह हिन्दू राजाओं के दरबार भी कवियों को खुले दिल से बढ़ावा देते थे. इन कवियों ने 18 7 के नेताओं की कीर्ति-कहानी अपने पुरजोश छन्दों में बयान की है. आइये स्वाधीनता-संप्राम की शताब्दी के मौक्रे पर हम अपने इस ज्माने के शायरों और कवियों के कलामों और छन्दों में बलिदान और त्याग के उस अद्भुत नज़ारे के दश न करें.

1857 के बाक्तयात पर खुद बहादुरशाइ 'जफर' के कलामों से काकी रोशनी पड़ती है, बेएटकू और डलहीजी के रवड्ये ने मुताल शहन्शाह के मान और दरबार की शान

سن 1857 کی تاریخ کو کس نام سے پکارا جائے۔۔ اِس پر إنهاس لتهلي وأاول كي رألي مين كاني مد بهيد هي كوئي أس 'بغارت' کے نام سے پکارتا ہے تو کوئی 'جنگ آزادی' کے نام سے ؛ لهمی أس سے کسی کو انکار نهیں که نرنمی حمومت کو ملک سے خام کرنے کی وہ ایک شائدار کوشھ تھی ۔ سرکاری خریتوں ا فوجی أنسروں کی چتھیوں' إنهاسکاروں کی کتابوں' سیالنیوں کے ررزنا حجون کمپنی کے دیشی انسریں کی یادداشتیں گورنر جنرل کے اعلانوں پارلیمنٹ کی بحدثوں نیتاؤں کے اعلانوں اور شاهی فرمادرں میں همیں 1857 کی ایک سرسوی جهانکی ملتی ہے . سن 1877 کی کرائٹ کری تحریک ملک کی خردداری کی بهاوناوں، روحانی نتوبنوں، امهدوں اور مایرسهوں، کامیابیوں اور ناکامیابیوں فاروں اور جیتوں پر تیز روشنی قالتی ھے ، ماک کی حیثیت سے هماری خوبدوں اور هماری کمزوریوں کو بھی سن 57 کی نحریک نمایاں کر دیتی ہے، أنها سكاروں كى طرب اس زمانے کے ممارے شاعروں اور کلوں کے کویوں نے بھی هداری آزادی اور هماری بربادی کی عماری آمنکرن اور هماری بهتا کی برجرش ارر بر درد تصویر کهینچی هے .

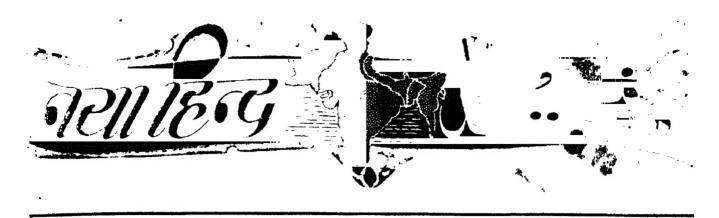
انسویں صدی اردو کے مشہور شاءروں کی ماں کہی جانی ہے . دلم کے آخری بادشاہ بہادر شاہ خود ایک اُونجے درجے کے شاعر تھے وص افار کے فام سے شاعری کرتے تھے .ق افالب اداغ الحالي اسب على دربار كے مشهور شادر ہے . أن مين ذرق كا أنتقال تو 1857 كے بہلے ہو كيا تھا ايمن غالب واغ أور حالي 1857 ميں مرجرد تھے. 1857 ير أن كي بر درد نظمين ھیوں اب نکے ملتی میں . دای کی طرح مدو راجاؤں کے دربار بھی کوبیں کو اپلے دل تے برتھاوا دیتے تھے . اِن کوبیل نے 7 دّ 18 کے نیتاؤں کی کیرنی کہانی اپنے پر جرش چھندوں میں بیان کی فے . آئیہ سوادھیننا سنکراء کی شتابدی کے موقع پر هم اپنے اُس زمانے کے شاعروں اور کویوں کے کالموں اور چہندوں میں بلیدان اور تیاک کے اُس ادبیت نظارے کے

ورشن کریں .

7317 کے وانعات یو خود بہادر شاہ 'ظفر' کے کلاموں سے کافی ررشنی برتی ہے . بیٹنک اور قابوڑی کے رویہ لے میل شہلشاء کے نام اور دربار کی شان

जुलाई 1957 स्थ

47	ग किस से	सका	منتحة	ں 🛥	پها کس
1.	नज़्मों और बन्दों में सन् घठारह सौ ससावन विश्वन्मरनाथ पांडे	1		نظموں اور چهادوں میں سن اتهارہ سو ستاون	,1
2,	गुलामी के साथ मानवता की मित्रता	, I	•••	وگومبھر ناتو یالڈے ظمی کے ساتو ماتونا کی مٹرقا	.2
8.	भी भन्दुल इतीम भन्दारी इफ़्लास (कविता)	. 19	•••	مشرق عبدالعلهم انصاری [،]	70
	—डाकटर श्रसर मीनाई 247	. 20	•••	انلاس (کوبتا) ــــنائقر اثرمینائی	.3
4.	मेरे दादा अन्या!	21		مهوم دادا ابا 1 پروفیسر احمد علی ایم. احم	.4
5.	माफ्रतारों के सिलसिले (कविता)			انتابوں کے سلسلے (کیتا)	.5
6.	-भी सलाम मझलीशहरी ख़ून का बदला (कहानी)	, 31	•••	سشری سام مجهای شهری خون کا بداه ! (نهالی)	6
	—मिरषा अजीम वेग चुराताई	32	•••	سرزا عظیم بیگ چنگائی	.0
7.	उठो ! एक हिन्दी भाषी भाई	38	•••	آئیو ! ــــایک هادی بهاشی بهائی	.7
8.	हमारी राय-	42	•••	هماری رائد—	.8 .
	हिन्दुस्तान की दौलत बढ़ी है—बी. ना. पांडे; सत्तावन माईकी पूजा कैसे हो १—सुरेश राममाई.			هندستان کی دولت بوهی هـــوی، نا، پان ستارن ماتی کی پوجا کیسے هو ¶ـــسریش را	.li p



जिल्द 24 ك

नम्बर

نىبر 1



जुलाई 1957 और

हिन्दुरतानां कलचर नोसायटी डाँगान प्रकृति । 145 मुट्टीगंज, इलाहाबाद

NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

Editorial Board

Dr. Tara Chand M.A., D. Phil. (Oxon)

Mahatma Bhagwan Din

Dr. Syed Mahmud M.A., Ph.D., Bar-at-Law

Pandit Sundarial

Bishambhar Nath Pande

Editor-in-Charge

Bishambhar Nath Pande

Asst. Editor

Suresh Ramabhai

Annual Subscription

Inland Rs. 6/Foreign Rs. 10/Single Copy As. /10/- only or 62 N. P.

Can be had from -

Manager, NAYA HIND

145, MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.

نہاحف۔ ک

इस नम्बर के खास लेख क्यां के खंडर إس نبير كے خاص ليكھ

नवमों और छुद्दा में सन् श्रठारह सौ سه الهارة سر सत्तावन

-- प्रोकेंसर अहमद अली एम० ए० ... على ايراك على الم

श्राफताबाँ के सिलसिले (कविता) . (القربين کے سلسلے (دریتا)

—श्री सलाम मछलीशहरी مرجهای شوری سالم مرجهای شوری

— 31 4014 4941(104 D.1-34- F. B.)

रु न का बदला (कहानी) ﴿ وَبَانَى اللهِ ا

— (मरजा स्रीमबेग चुराताई منگ جندئی —



·		